बापूकी छायामें

बलवन्तसिंह

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद–१४

बापूकी छायामें

बलवन्तसिंह
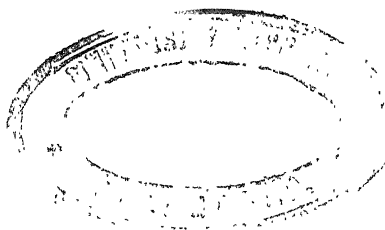
नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद-१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ५०००, १९५७
दूसरी आवृत्ति ५०००

रु० ४.००

दिसम्बर, १९५९

श्रद्धाके फूल

पूज्य दादीजी, माताजी और पिताजीके श्रीचरणोंमें
जिनके परिश्रमी और संस्कारी जीवनसे मुझे
परम पूज्य बापूजीके चरणोंमें रहने
योग्य शुभ संस्कार मिले।

बलवंतसिंह

सेवककी प्रार्थना

हे नम्रताके सम्राट्!
दीन भंगीकी हीन कुटियाके निवासी!
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्राके जलोंसे सिंचित
अिस सुन्दर देशमें
तुझे सब जगह खोजनेमें हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे;
तेरी अपनी नम्रता दे;
हिन्दुस्तानकी जनतासे
अेकरूप होनेकी शक्ति और अुत्कंठा दे।
हे भगवन्!
तू तभी मददके लिअे आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे,
कि सेवक और मित्रके नाते
जिस जनताकी हम सेवा करना चाहते हैं,
अुससे कभी अलग न पड़ जायें।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रताकी मूर्ति बना,
ताकि अिस देशको हम ज्यादा समझें,
और ज्यादा चाहें।

वर्धा, १२–९–'३४ मो० क० गांधी

नहीं करते। हम अुस मलय पर्वतका गौरव गाते हैं, जिसके आश्रयमें सामान्य वृक्ष भी चन्दन बन जाते हैं।" अिसीलिअे भारतीय हृदय राजा-महाराजाओंकी महिमा नहीं गाता, पर सत्पुरुषोंकी महिमा गाते अघाता नहीं। शंकराचार्यका वचन विश्रुत ही है:

> क्षणमिह सज्जन-संगतिरेका।
> भवति भवार्णव-तरणे नौका॥*

बलवन्तसिंहजीकी किताबमें महापुरुषोंके अिस कीमियाका कुछ दर्शन पाठकोंको होगा, अैसा मुझे विश्वास है।

कोअीमुत्तूर जिला,
१०-९-'५६

विनोबा के
प्रणाम

---

* अिस संसारमें क्षणभरके लिअे भी सज्जनकी संगति मिल जाय, तो वह संसार-सागरसे पार होनेके लिअे नौकाका काम देती है।

दूसरी आवृत्तिका निवेदन

आज बापूजीके स्वर्गारोहणका वार — शुक्रवार है। रिमझिम पानी बरस रहा है। सामने साबरमती कलकल करती हुअी वेगसे बह रही है। आश्रमके हृदय-कुंजमें बैठा मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं। यहींसे बापूजीने दुनियाको प्रेम और अहिंसाका सन्देश दिया था और यहीं अुन्होंने अपनी प्रखर तपस्या की थी। अिस पवित्र मकानकी पुरानी स्मृतियां हृदयके तारोंको झंकृत कर रही हैं। अब तो यहां बापूजीके केवल चित्र सजे हुअे हैं। लेकिन मेरा हृदय भर आता है अुन दिनोंकी असंख्य स्मृतियोंसे, जब मुझे बापूजीके चरणोंमें बैठकर हृदयकी अनेक ग्रंथियोंको सुलझानेका अमूल्य अवसर प्राप्त था। यह कहनेमें मैं कोअी अतिशयोक्ति नहीं कर रहा कि यही भूमि मेरे पुनर्जन्मकी पवित्र भूमि है। यहीं बापूजीने मुझे आध्यात्मिक दूध चमचीसे पिला-पिला कर घुटनों चलना सिखाया था और फिर सेवाग्राममें आत्मा और शरीर दोनोंको कटोरों दूध पिलाकर पाला-पोसा और दौड़ना तक सिखा दिया। और अन्तमें जैसे पक्षी अपने बच्चोंको पंख निकल आने पर अुड़ना सिखाकर अुनकी ममतासे मुक्त हो जाते हैं, अुसी प्रकार बापूजी मुझे पंख देकर खुले आकाशमें अुड़ते रहनेका आदेश और आशीर्वाद देकर चले गये।

जिमि जिमि दूरि अुड़ाअुं अकासा।
तहं हरिभुज देखअुं निज पासा।।

अिसी प्रकार बापूजीकी मीठी मीठी चपतोंकी स्मृति मेरा पीछा ही नहीं छोड़ती। यह लिखते हुअे अुनकी प्यारभरी मुसकानकी स्मृतिने मेरे हृदयको भर दिया है। आंखें अिस ठंडी हवाके स्पर्शको भुलानेके लिअे अुमड़ रही हैं और मैं लिखना चाह रहा हूं दूसरी आवृत्तिके निवेदनके दो शब्द।

मोअि भरोस मोरे मन आवा।
केहि न सुसंग बड़प्पन पावा।।

जनता-जनार्दनने मेरी तोतली देहाती वाणीमें लिखी अिस पुस्तकका जैसा आदर किया है और मित्रोंने मुझ पर अिसके कारण जो स्नेह बरसाया

है, अुसके बोझसे मैं दबा हुआ महसूस कर रहा हूं और अभिमानसे बचनेके लिअे मुझे सतत जूझना पड़ रहा है।

पू० विनोबाजी अेक दिन बोले कि आपकी पुस्तक अिसलिअे अितनी अच्छी लिखी गअी है, क्योंकि आप अंग्रेजी नहीं जानते। आपने तुलसीदासजीके जैसा काम किया है, जब कि गोपालरावजीने वाल्मीकिजीके जैसा। तुलसीदासजीने रामकी गुणगाथा लिखी थी। वाल्मीकिजीने अुनका अितिहास लिखा था।

पू० रविशंकर महाराज कहते हैं कि देखो हम दोनों ही बिना पढ़े-लिखे किसान हैं। अिसलिअे आपकी पुस्तक मुझे बड़ी प्रिय लगी है। कविवर मैथिलीशरणजी गुप्त, श्री काशिनाथ त्रिवेदी, श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी आदि सज्जनोंने अिस पुस्तकके प्रति बड़ी ममता व्यक्त की है।

जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं।
सो श्रम बादि बालकवि करहीं।।

मुझे कल्पना नहीं थी कि अिसकी दूसरी आवृत्ति अितनी जल्दी निकलेगी और अिसका गुजराती और अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित होगा। गुजराती अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। अुसका अुठाव हिंदीसे भी बढ़कर है। गुजरातीके अनुवादक मेरे मित्र श्री मणिभाअी देसाअी कहते हैं कि "जितनी जल्दी मैंने यह अनुवाद किया अुतनी जल्दी दूसरा कोअी अनुवाद नहीं किया था; अिस अनुवादमें मेरे हाथ भले थके हों, लेकिन दिल और दिमाग कभी नहीं थके; बापूजीकी महान मानवताका दर्शन करके अनुवाद करते समय अनेक बार मेरे प्रेमाश्रु बहे हैं।"

अंग्रेजीके अनुवादक मेरे परम मित्र स्व० गोपालराव कुलकर्णी अिस पुस्तक पर मुग्ध थे। मुझे अिसका बड़ा दुःख है कि अनुवाद पूरा करनेके पहले ही वे भगवत-शरण हो गये। नहीं तो अंग्रेजी अनुवाद पिछली जनवरीमें पाठकोंके हाथोंमें पहुंच गया होता। लेकिन अब अंग्रेजीका शेष अनुवाद शीघ्र ही पूरा होने जा रहा है।

दूसरी आवृत्तिके लिअे संशोधन और परिवर्धन बहुतसे हुअे हैं और अुन्हें करते समय आश्रमके अपने पुराने साथियोंके साथ बैठकर अुनकी बहुमूल्य सलाह-सूचनाका लाभ मैंने लिया है। भाअी मुन्नालालजीने बड़ी बारीकीसे पुस्तकका अवलोकन करके जो सुझाव दिये हैं अुनसे यह नअी

आवृत्ति सुन्दर बनी है। भाअी ऋषभदासजी रांकाने निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकांचन (पूना) में लगातार १८ दिनका समय अिसके लिअे प्रेमसे दिया था। भाअी कृष्णचंद्रजीके संग्रहमें से बापूजीके अन्तेवासियोंको लिखे गये पत्रोंमें से कुछ चुने हुअे वचन अिसनें जोड़े गये हैं। अुनमें से कुछ तो अैसे हैं जिन पर अलग-अलग पुस्तक लिखी जा सकती है।

कहं रघुपतिके चरित अपारा ।
कहं मति मोरि निरत संसारा ।।

सचमुच ही, कहां बापूका अगाध चरित्र और कहां मैं बिनपढ़ा कोरा किसान? अितना भी जो बन सका है वह बापूजीकी नअी तालीम और अुनके सत्संगकी महिमासे ही हुआ है।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला अेक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ।।

बापूजीके लंबे सत्संगसे अैसा अलभ्य लाभ जिनको मिला अुनको और क्या चाहिये?

हृदयकुंज-प्रार्थनाभूमि,
साबरमती आश्रम,
शुक्रवार, ४-९-१९५९

बलवंतसिंह

पहली आवृत्तिका निवेदन

मुझे सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाअी तथा अन्य मित्रोंने कअी बार कहा कि मैं सेवाग्रामके संस्मरण लिखूं। कमसे कम बापू सेवाग्राम कैसे आये और कैसे सेवाग्राम बसा, अुसका थोड़ासा वर्णन यहां आनेवाले दर्शकोंके लिअे तो जरूर लिख दूं। मैंने अुस दृष्टिसे थोड़ा लिखा भी था, जो पू० मीराबहन द्वारा संशोधित करवाकर श्री चिमनलालभाअीके पास भेज दिया था। लेकिन पूरे संस्मरण लिखनेमें मेरे सामने कअी कठिनाअियां थीं। अेक तो मुझे लिखनेका अभ्यास नहीं था। दूसरे, सेवाग्रामकी खेतीमें मैं अितना फंसा रहता था कि अुसमें से लिखनेके लिअे समय निकालना मेरे लिअे कठिन था। तीसरे, यह विचार भी था कि अगर लिखना ही है तो हम जो लोग सेवाग्राममें थे वे सब मिलकर लिखें तो चीज परिपूर्ण हो। पर वैसा हो नहीं सका। मेरे मनमें यह दुविधा रही कि बापूजीके बारेमें अितने अधिक लोग लिखनेवाले हैं, तब मैं क्या लिखूं? मुख्य शंका मेरे मनमें यह रही कि बापूजीके बारेमें लिखनेका मेरा क्या अधिकार है? सच बात तो यह है कि बापूजीका जीवन लिखकर बतानेका है ही नहीं, आचरण करनेका है। वह स्वयं अितना प्रकाशित है कि अुनके बारेमें कुछ भी लिखना सूर्यको दीपक दिखाने जैसा ही है। बापूजीके स्वर्गवासके बाद अुनके विषयमें लोगोंने अखबारोंमें अपनी श्रद्धांजलियोंके रूपमें बहुत कुछ लिखा और भाषण दिये। अुनको पढ़कर मुझे यह चौपाअी याद आती थी:

सब जानत प्रभु प्रभुता सोअी।
तदपि कहे बिनु रहा न कोअी।

फिर मेरा और बापूजीका बहुत निकटका संबंध था। कोअी अपने पिताके विषयमें कुछ लिखे तो आत्मश्लाघा जैसा ही होता है। मैं अिस बातसे भी हमेशा डरता था कि लिखने लगूं बापूजीका और लिख बैठूं अपना। स्थिति अैसी है कि मैं कितना भी बचाअूं तो भी अपने बारेमें जब तक कुछ न लिखूं तब तक बापूजीका जिस प्रकारका दर्शन मुझे हुआ है अुसको मैं स्पष्ट नहीं कर सकता। बापूजीके बाद मेरे चित्तकी अवस्था अैसी हो गअी है कि जब अुनके बारेमें कुछ लिखनेका प्रसंग आता है तो मेरा

हृदय अुनके स्मरणसे अितना भर जाता है कि मेरी कलम काम नहीं देती। मूक अगर गुड़का स्वाद बता सके तो मैं भी बापूजीके विषयमें कुछ लिख सकूं। कुछ लिखना भी चाहूं तो कहांसे शुरू करूं, यह प्रश्न भी मेरे सामने था।

मेरे लिखनेके विचारको अधिक वेग मिला भक्त-हृदया मदालसाबहनसे। जब मैं सेवाग्राममें राजस्थानके लिअे आ रहा था तो अुन्होंने बड़े प्रेमभरे आग्रहसे कहा कि आपको सेवाग्रामके संस्मरण लिखने ही चाहिये। अुनके आग्रहका मेरे अूपर गहरा असर पड़ा। अुनको तो मैंने कहा कि देखूंगा, लेकिन वह बात मेरे मनमें चलती ही रहती थी। अीश्वरकी कृपासे मुझे लेखक और अिस भावनामें प्रेरक श्री ब्रह्मदत्तजी जैसे साथी मिल गये। गोसेवाश्रमका वायुमंडल भी अिसके अनुकूल था। मेरे मनमें विचार आया कि थोड़ा-थोड़ा समय निकालकर कुछ लिखना चाहिये। जब मैंने यह विचार श्री ब्रह्मदत्तजीको बताया तो अुन्होंने अिसे पकड़ लिया और मेरे लेखक बननेकी अपनी तैयारी बताअी।

अिसके फलस्वरूप ता० २१–११–'५० को सुबहकी प्रार्थनाके बाद पूज्य जमनालालजीकी पवित्र जन्मभूमि सीकर (राजस्थान) में गोसेवाश्रमके पवित्र और शान्त वायुमंडलमें बैठकर जब मैंने अिन पवित्र संस्मरणोंका आरम्भ किया, तब मुझे कोअी स्पष्ट कल्पना नहीं थी कि क्या और कितना लिख सकूंगा। मैंने सोचा था कि थोड़े दिनोंमें थोड़ासा लिखकर रख दूंगा, जो कभी सेवाग्रामके विस्तृत संस्मरण लिखनेवालोंके लिअे अेक अंशमात्र होगा। स्वतंत्र पुस्तकके रूपमें छापनेकी कल्पना तो स्वप्नमें भी नहीं थी। लेकिन जब अिन लेखोंने कुछ रूप लिया और अुन्हें मैंने अपने पुराने साथियोंको दिखाया तो अुनकी पुरानी स्मृतियां ताजी हो गअीं और अुन्होंने अिनके साथ बड़ी ममता बताअी तथा मेरा अुत्साह बढ़ाया। अिन्हें छपवानेका प्रेमभरा आग्रह भी किया। मुझे अुनकी सूचना पसन्द आअी। तो भी छह सालका लम्बा समय गुजर ही गया। मैं कोअी लेखक तो था नहीं, न टाअिप आदिके साधन मेरे पास थे। अिसके लिअे जब जिससे सुविधाके अनुसार जितनी मदद मिल सकी अुतनीसे ही मुझे संतोष मानना पड़ा।

मैं थोड़ेमें बापूजीके साथके अपने ही संस्मरण लिखनेकी दृष्टिसे बैठा था। लेकिन अन्य जिन संस्मरणोंका बापूजीके साथ अविच्छिन्न संबंध था अुनको

लिखना भी मैंने जरूरी समझा। अगर मेरे मनमें पहलेसे ही अिस रूपमें प्रकाशित करानेकी कल्पना होती तो या तो ये लिखे ही नहीं जाते या अिनका कोओी दूसरा रूप होता। जब मैंने अिन लेखोंको पूज्य काकासाहब कालेलकरको बताया और कहा कि लोग अिनको छपवानेका आग्रह करते हैं, तो क्या अिन्हें फिरसे लिखूं? काकासाहबने अेक सुन्दर दृष्टान्त देकर मुझे संतोष करा दिया। वे बोले, "देखो, भगवानने अर्जुनको गीताका अुपदेश दिया। थोड़े दिनके बाद अर्जुनने अुसीको फिर सुननेकी अिच्छा प्रगट की। भगवान बोले, 'अर्जुन, अब वह तो नहीं सुना सकता हूं, क्योंकि मेरे चित्तकी भूमिका वह नहीं है जो महाभारतके समय थी।' भगवानने अर्जुनको 'अर्जुन-गीता'के नामसे थोड़ासा संवाद सुनाया।" तो भी मैंने अिन संस्मरणोंको व्यवस्थित रूप देनेका प्रयत्न तो किया ही है। पाठकोंको अिनमें कहीं कहीं अतिशयोक्ति, पुनरावृत्ति, आत्मश्लाघा, बापूजीके सामने अुद्धतता आदि दोष दिखाओी पड़ना संभव है। लेकिन आखिर तो जैसा रूप होगा वैसा ही चित्र भी आयेगा। मैं जैसा था और जिस रूपमें मैंने बापूजीका दर्शन किया, अुनके कथनका मैंने जो अर्थ समझा, अुस पर किसी प्रकारका रंग चढ़ाये बिना सागरमें से गागर भरनेका नम्र प्रयत्न अिसमें मैंने किया है।

अिन लेखोंके लिखनेमें बापूजीका चिन्तन जितना सतत और गहराओीसे चला, अुसने मेरे विचारोंको स्पष्ट करनेमें और मनके मैलको धोनेमें काफी मदद की। और मेरे श्रमका बदला बापूजीके चिन्तनसे बढ़कर और क्या हो सकता है? अगर अिससे जनता-जनार्दनको भी बापूजीके अपार स्नेह, अुनकी सहनशीलता, अुनका धैर्य तथा अुनकी दूरदृष्टिका कुछ दर्शन मिल सका तो मैं अपने अिस प्रयत्नको धन्य मानूंगा।

अिसमें रही भूलें और दोष जो भाओी-बहन मुझे सुझानेका निःसंकोच कष्ट करेंगे अुनके मैं अनेक आभार मानूंगा। और अगर अिसकी दूसरी आवृत्ति छपने लायक कदर हुओी और तब तक मैं जिन्दा रहा तो अवश्य ही अुनमें सुधार करूंगा।

पूज्य विनोबाने मेरे अिस अल्प-से प्रयासका जो ममताभरा गौरव किया, अुसके आनन्दको प्रगट करनेके लिअे मुझे कोओी शब्द नहीं मिल रहे हैं। अिसके लिअे मैं अुनका अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

जिन मित्रों और शुभेच्छुकोंने बापूजीके पास तक पहुंचनेमें मेरी सहायता की, जिन साथियोंने ये संस्मरण लिखनेकी मुझे प्रेरणा दी और अिनके लिखनेमें सक्रिय सहायता की, अुनका भी मैं हृदयसे आभार मानता हूं। नवजीवन ट्रस्टका तो मैं अुपकृत हूं ही, जिसने प्रेमभावसे मेरे अिन संस्मरणोंको प्रकाशित करनेकी तत्परता बताओ।

मेरे अिस प्रयासमें जो कुछ सफलता मिली है, वह बापूजीके पवित्र स्मरण और अुनके आशीर्वादका ही प्रताप है। अिसमें जो खामियां हैं वे मेरी अपनी खामियोंकी सूचक हैं।

यह दैवयोग ही कहा जायगा कि आज बापूजीकी कुटियामें ही बैठकर अुनकी मासिक पुण्यतिथि पर अपने अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंकी अंतिम पंक्तियां मैं लिख रहा हूं। बापूजीके प्रति तो अपनी नम्र श्रद्धांजलि मैं अिन्हीं शब्दोंमें अर्पण कर सकता हूं:

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।

बापू-कुटी, सेवाग्राम, — बलवन्तसिंह
३०-११-'५६

स्वपरिचय

अपना परिचय देनेमें मुझे संकोच हो रहा है। लेकिन जब मैं किसीका लिखा लेख पढ़ता हूं, तो सहज ही लेखकका परिचय जाननेकी मेरी अिच्छा हो जाती है। मेरे अिन संस्मरणोंको पढ़कर पाठकोंको यह अिच्छा होना स्वाभाविक है। बापूजी कहते थे कि नअी तालीम मांके गर्भसे आरम्भ होनी चाहिये। अिस पर मैंने विचार किया तो मुझे लगता है कि मांके गर्भसे नहीं, बल्कि दादी और नानीके गर्भसे होनी चाहिये। और वह वहींसे आरम्भ होती है। गायके नसल-सुधारमें भी मुझे यही अनुभव आया है। मुझ जैसा साधारण व्यक्ति बापूजी जैसे महान पुरुषका दुलार प्राप्त कर सका, अिसका दर्शन जनताको मिल सके अिस लोभसे थोड़ासा अपना परिचय देना मुझे अनिवार्य लगा है। बापूजीके हृदयको किस हद तक ग्रामीण भारतने घेर लिया था तथा किस हद तक वे अपनी अमूल्य शक्ति, अपार सहनशीलता तथा धीरजके साथ अेक देहातीको अूपर अुठानेका प्रयत्न कर सकते थे अिसका मर्म पाठक क्यों कर समझेंगे, यदि मैं संकोचवश यह भी न बताअूं कि मैं करीब करीब अेक निरक्षर देहाती किसानके सिवा और कुछ न था। अितना-सा आवश्यक लिखनेमें भी यदि किन्हीं पाठकोंको आत्मश्लाघा जैसा लगे, तो मैं अुनसे नम्रतापूर्वक क्षमा-याचना करता हूं।

मेरा जन्म विक्रमी संवत १९५५ की फाल्गुन शुक्ल द्वितीयाको, तदनुसार १३ मार्च १८९९, सोमवारको अेक छोटेसे गांव समसपुर (तहसील खुर्जा, जिला बुलन्दशहर, अुत्तरप्रदेश) में अेक साधारण जाट-परिवारमें हुआ। परिवारका धंधा खेती था। पिताका नाम भागमलसिंह तथा माताका नाम ज्ञानोदेवी था। मेरे पिता चार भाअी थे। सबसे बड़े मंगलसिंह, दूसरे मेरे पिताजी, तीसरे चाचा दयारामसिंह और चौथे चाचा रणजीतसिंह थे। दादाका नाम फूलसिंह और नानाका नाम दलेरामसिंह था। दादाजी और ताअूजीको मैंने नहीं देखा। कनिष्ठ चाचा रणजीतसिंहजीकी थोड़ीसी याद है। मेरे दादा और नाना दोनों ही बड़े गोभक्त थे। नानाजीको गाय चराते मैंने देखा है। मुझे लगता है कि मेरे दादाजी और नानाजीकी गोभक्तिका वारसा मुझे मिला है।

पिताजी और माताजी दोनों ही सीधे-सादे और परिश्रमी थे। मेरी मांने पुत्रकी अिच्छासे बड़े कठोर व्रत-अुपवास किये थे। वे कहा करती थीं कि तेरे लिअे मैंने पांच बरस तक बरतनमें न खाकर ओखलीमें खाना खाया था। मैं करीब दस सालका था तब पिताजीका स्वर्गवास हो गया। मुझसे छोटा भाअी पदमसिंह और बड़ी बहन रघुबीरकौरके पालन-पोषणका भार भी माताजी पर ही आ पड़ा। मेरी दादीजी तुल्सादेवी जिन्दा थीं। वे मेरे चाचा दयारामसिंहके साथ अलग रहती थीं। मेरे जन्मके पहले हमारे घरकी स्थिति अच्छी थी। लेकिन पिताजीके मर जाने पर हालत यहां तक बिगड़ी कि माताजीको पिसाअी करके हमारा पालन-पोषण करना पड़ा। माताजीका शरीर मजबूत था। वे १५–२० सेर मक्का प्रतिदिन पीसनेकी शक्ति रखती थीं। मेरे मामा बड़े सज्जन पुरुष थे। वे हमारी बहुत मदद करते थे। मैं अधिकतर अुनके पास ही रहता था। दुर्भाग्यसे माताजी भी हमें छोड़कर जल्दी ही चल बसीं। तब हमारा भार दादी और चाचाजी पर आ पड़ा। हमारा सारा ही परिवार निरक्षर था। चाचाजीने थोड़ीसी हिन्दी सीख ली थी। मेरी दादी बड़े संस्कारी परिवारकी थीं। अुनको रामायण और महाभारतकी कथायें तथा और भी बहुतसी कथायें याद थीं। मेरा बहुतसा समय अुन्हींके सान्निध्यमें बीता। अुन्होंने मुझे न जाने कितनी बार ये कथायें कहानीके रूपमें सुनाअी होंगी। वही मेरी सच्ची तालीम थी, जो मुझे बापूजीके जैसी महान विभूतिके पास खींच कर ले गअी।

जहां रोटियोंके भी लाले हों वहां पढ़नेका तो सवाल ही नहीं था। हमारे पास जमीन काफी थी, लेकिन कोअी कमानेवाला नहीं था। अिसलिअे गरीबी थी। मेरी पाठशाला तो दादीके आसपास थी या अेकान्त जंगलमें ढाकके वृक्षोंकी छायामें थी। अुसका आरम्भ अेक रोज अिस तरह हुआ। हमारे अेक खेतमें चने बोये थे। अुसकी रखवालीके लिअे चाचाजीने मुझे वहां बिठा दिया था। दिनभर खाली बैठे मन भी तो कैसे लगता? मैंने चाचाजीसे पहली किताब और लिखनेकी पट्टी मंगवा ली थी। अुस समय पहली किताब अेक पैसेमें आती थी। पट्टी पड़ोसीके लड़केसे मांग ली थी। अिस तरह मेरी पाठशाला बिना शिक्षकके सिर्फ अेक विद्यार्थीकी पाठशाला थी। मैं किताबसे पट्टी पर अक्षरोंकी नकल करता रहता और जब शामको घर लौटता तब रास्तेमें जो भी लिखा-पढ़ा मिलता अुससे या घर आकर चाचाजीसे अुन

अक्षरोंके नाम पूछ लेता। रातको सोते समय और सुबह अुठते समय खाटमें पड़ा पड़ा अुन अक्षरोंको घोकता रहता। सुबह अपनी रोटी, किताब, पट्टी आदि लेकर फिर खेत पर पहुंच जाता। रास्तेमें कोअी पढ़ा-लिखा लड़का या आदमी मिल जाता तो अन्य अक्षरोंके नाम पूछ लेता। धीरे धीरे मैंने बारहखड़ी पूरी की। जो विषय मुझे याद होता अुसे पुस्तकमें पढ़ता। मेरी याद अक्षरोंकी सड़क पर चलती। अिस प्रकार मैं कुछ पढ़ने लगा था। जब मैं छोटा ही था तब मेरे अेक चाचाने मेरी मातासे कहा कि यह लड़का ठाला रहता है। क्यों न मेरे ढोर चराया करे? मैं सुन रहा था। अुनकी बोली मुझे अितनी प्यारी लगी कि मैंने मांसे स्वीकार करा लिया कि मैं अिन चाचाजीका काम करूंगा। और फिर अेक साल तक सवा रुपया मासिक लेकर मैंने अुनके ढोर चराये।

१८ वर्षकी अवस्थामें २५ जनवरी १९१७ को मैं फौजके घुड़सवारोंमें २६ नंबर रिसालेमें भरती हो गया और मार्च १९२१ में समरी कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) द्वारा दो मासकी सजाके बाद नाम काटे जाने पर घर आ गया। अिसका जिक्र पुस्तकमें आ चुका है। दादीजी १९१७ के अगस्तमें चल बसी थीं। २२ वर्षकी अवस्थामें चाचाजीने मेरी शादी कर दी और खुद संन्यासी बनकर भगवानके भजनमें लग गये। यहां तक कि फिर अुनके दर्शन भी न मिल सके। मेरी पत्नी जानकीदेवी बड़ी सरल, सुन्दर, अुदार और समझदार थी। लेकिन अुस बेचारीका और मेरा साथ अधिक न रहा। होता भी कैसे? विधाताका विधान तो दूसरा ही था। अिसलिअे वह मुझे लगभग तीन वर्षमें ही मुक्त करके चली गअी। बचपनसे ही मेरी मनोवृत्ति साधु-संगतकी थी। हमारे जिलेका गंगा-किनारा गंगाजीके सारे बहावमें सर्वश्रेष्ठ व रमणीय है। और वहां पर बड़े बड़े साधु-संत साधना करते थे। जब घरसे फुरसत मिलती मैं गंगाके किनारे अुनके सत्संगमें १५–२० रोज जाकर रह आता। अुन दिनों वहां पर अुड़िया बाबा, हरि बाबा, भोले बाबा, दोलतरामजी (अच्युत स्वामी), शंकरानन्दजी, निर्मलानन्दजी, अुग्रानंदजी आदि संतोंसे मेरा परिचय और सत्संग हुआ। अुड़िया बाबाकी मुझ पर खास कृपा रही।

'नारि मुअी घर संपति नासी, मूंड़ मुंड़ाय भये संन्यासी।' अिस न्यायसे कपड़े रंगनेका विचार भी मेरे मनमें आया। लेकिन भिक्षाका अन्न खाना मेरे स्वभावके अनुकूल नहीं था। अिसलिअे वह रंग मुझ पर न चढ़ सका। और पूर्वजन्मके कुछ पुण्योंके प्रतापने मुझे कर्मयोगी बापूजीकी छायामें

पहुंचा दिया, जहांसे बहुत छटपटाने पर भी मैं भाग नहीं सका। 'शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते' अिस वचनके अनुसार मेरे अपने कोअी पुण्य थे या नहीं भगवान जाने। परन्तु मेरे पूर्वजोंके पुण्यप्रतापसे शरीर रहते हुअे भी पूज्य बापूजी जैसे श्रेष्ठ पुरुषके घर मेरा पुनर्जन्म हुआ और मेरा मानव जीवन कृतार्थ हो गया।

मैंने साबरमती आश्रममें कताअी और धुनाअी सीखी। सावलीके खादी अुत्पत्ति-केन्द्रमें बुनाअी सीखी। और सेवाग्राम आश्रममें खेती और गोसेवाका काम सहज ही मुझ पर आ गया। किसान होनेके नाते बापूजी अिसे मेरा 'स्वधर्म' कहा करते थे। वहीं बापूजीकी छत्रछायामें रह कर अुनके पवित्र संकल्प और आशीर्वादके प्रतापसे मैं अिस 'स्वधर्म' के पालनमें थोड़ा कुशल बना।

विनोबाजीके आदेशसे राजस्थानमें बैठकर पिछले ५ वर्ष तक गोसेवा केन्द्रमें मैंने गोसेवाका कार्य किया। और पिछले १ वर्षसे दुर्गापुरा कैम्प (जयपुर) में गोसेवा-संघका कृषि-गोपालन तथा संवर्धन केन्द्र चला रहा हूं। बापूजीके आशीर्वादसे राजस्थानके समस्त रचनात्मक और राजनीतिक कार्यकर्ताओंका प्रेम और सद्भावना प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। अब विनोबाजीने मुझे यह आदेश दिया है कि मैं गोसेवाकी सीधी जिम्मेदारीसे मुक्त होकर केवल यह काम करनेवालोंका मार्गदर्शन करूं और साथ ही आध्यात्मिक अुन्नतिकी साधना करके जीवनको समृद्ध बनाअूं। अब अिसी दिशामें बढ़नेका मेरा प्रयत्न चल रहा है। तुलसीदासजीने कितना सुन्दर कहा है:

प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किये आपु समान।
तुलसी कहूं न रामसे साहिब शील निधान॥

अिन वचनोंका मैंने अपने जीवनमें प्रत्यक्ष अनुभव किया है। सत्संगकी महिमा सुन्दरदासजीने बड़े सुन्दर शब्दोंमें बताअी है:

मातु मिले पुनि तात मिले सुत भ्रात मिले युवती सुखदायी,
राज मिले गजबाज मिले सब साज मिले मन वांछित पाअी।
लोक मिले सुर लोक मिले विधि लोक मिले वैकुण्ठ अुजाअी,
सुन्दर और मिले सबही सुख संत समागम दुर्लभ भाअी।

अैसा दुर्लभ संत-समागम मुझे बापूजीके चरणोंमें बैठ कर सहज ही प्राप्त हुआ। अब अिससे अधिक और मैं भगवानसे क्या चाहूं?

बलवन्तसिंह

अनुक्रमणिका

	प्रस्तावना	विनोबा	७
	दूसरी आवृत्तिका निवेदन		९
	पहली आवृत्तिका निवेदन		१३
	स्वपरिचय		१७
१.	पूर्वभूमिका		३
२.	बापूका प्रथम दर्शन		८
३.	सविनय प्रतिकारका प्रथम पाठ		१०
४.	निकट सम्पर्क और सन्देहका अन्त		१२
५.	साबरमती आश्रममें		२२–५८

पाखाना-सफाई २२, दिनचर्या व भोजन २३, कुछ परिचय २३, पू० नाथजीके बोध ३०, बापूजीके साथ खादी-विद्यार्थियोंके प्रश्नोत्तर ३४, १९३२ का आन्दोलन और जेल-यात्रा ३६, बापूजीके जेलसे लिखे गये बोधपत्र ४०, आश्रमकी प्रार्थनाके सम्बन्धमें ४३, विचार और प्रवृत्ति ४४, जेलमें अभ्यास ४४, ओश्वरके विषयमें ४४, निष्काम कर्म तथा अन्तर-शुद्धि ४५, जेलमें मिलनेके विषयमें ४५, अनशनकी योग्यताके विषयमें ४५, भिन्न भिन्न धर्मोंके विषयमें ४५, अनासक्तिके विषयमें ४६, जेलमें बापूजीका अुपवास ४६, जेलयात्राके अनुभव ५१, प्रोफेसर कर्वे ५३, सत्याग्रह स्थगित ५५, चिरंजीव बन बैठा! ५५, समाजवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर ५६।

६.	वर्धाको प्रस्थान	५८
७.	मगनवाड़ीके प्रयोग और पाठ	६१–८८

कार्यारम्भ ६१, १. पहला पाठ ६३, २. भगवान कृष्णका स्मरण ६५, ३. पहले खुद फिर दूसरे ६७, ४. किफायतशारीका अनोखा नमूना ६८, ५. जीवनका कार्य और आशीर्वाद ६९, ६. भानूबापा ७०, ७. त्यागका पाठ ७१, ८. काम करो तो खाना मिलेगा ७४, ९. रसोअीघर और सफाअी ७५, १०. गन्नेका किस्सा ७६, ११. विचित्र प्रयोग ७९, १२. बापूके मनकी

वेदना ७९, १३. मद्यशिक्षा और बापू ८०, १४. फूलसे भी कोमल बापू ८१, १५. तुर्की महिलाका स्वागत ८२, १६. अपनेको सबसे बुरा समझो ८३, १७. गांवमें हम शिक्षक बनकर न जायं ८४, १८. कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर ८४, १९. मौनका महत्त्व ८६, २०. सब मिट्टीके पुतले हैं ८७।

८. विनोबाजीके निकट परिचयमें ८९

९. कुछ और संस्मरण १०३–११४

१. भाग्नरीका किस्सा १०३, २. बापू तो बापू ही थे! १०५, ३. नम्रताके सागर बापू १०७, ४. लोगोंका भ्रम दूर करनेका अुपाय ११०, ५. बापूजीकी अीश्वर-निष्ठा १११, ६. 'हम भक्तनके भक्त हमारे' ११२।

१०. स्नेहनिधि बड़े भाअी पू० किशोरलालभाअी ११४

११. सेवाग्राम आश्रमकी नींव १५२

१२. कार्यका आरम्भ और विस्तार १६०–२०१

बापूजीका फैसला १६०, रोगियोंका अुपचार १६१, प्रार्थना १६३, खुलेमें सोनेके लाभ १६४, बापूकी कंजूसी और अुदारता १६५, बापूकी कुटी १६६, नुकसान सहनेकी अद्‌भुत शक्ति १६९, साथियोंकी भूलोंके लिअे क्षमावृत्ति १६९, मच्छर-दानीका किस्सा १७०, अनोखा समभाव! १७१, तुकड़ोजी महाराज १७२, व्यवस्थापकके रूपमें १७६, प्रार्थनामें रामायण १७७, कामका विस्तार १७८, वात्सल्यमूर्ति बापू १८०, गोकुशी कैसे बन्द हो? १८०, अहिंसाकी सूक्ष्म व्याख्या १८१, मनोरंजनमें छिपा आशीर्वाद १८३, श्रेष्ठ तो अेक अीश्वर ही है १८३, अहिंसाका व्यापक क्षेत्र १८४, बापूका सर्टिफिकेट १८४, ज्वरका प्रकोप १८५, मांकी तरह बीमारोंकी सेवा १८६, अहिंसा तथा अन्य विषयोंकी चर्चा १९०, बापूजीकी बीमारी १९२, मेरी बीमारी और बापूका आश्वासन १९४, परस्परावलम्बनकी आवश्यकता १९८, आश्रमवासियोंसे बापूकी अपेक्षा १९९, ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर २००, स्वावलम्बनका पाठ २००।

१३. गोशाला और अुसका परिवार २०२–२१०

बापूका गोप्रेम २०२, मिट्टीका चमत्कार २०२, शुभ भावनाओंका सिंचन २०३, गोशाला और खेतीके लिअे नियम २०५, वर्षाका कष्ट २०६, गोपरिवारकी वद्धि २०७, गायकी समझदारी और स्नेह २०७।

१४. आश्रमका विस्तार २१०–२२१

आश्रम-परिवारमें वृद्धि २१०, नअी तालीम २११, बापू-कूप २१५, आश्रममें विवाह २१६, बाका महल! २१७, कुछ और सदस्य जुड़े २१८, आश्रम-परिवारके दिल पर गहरी चोट २२०।

१५. सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति २२१–२४५

पू० छगनलाल गांधी २२१, काशीबा २२२, चाचा खानसाहब २२२, बालकोबा २२८, मूक सेवक रामदासजी गुलाटी २३४, अप्रकट संतमालिकाके अेक मोती २३६, बापूजीके बेदाग साथी २३८, अनोखा महापुरुष २४१।

१६. बापूके विभिन्न पहलुओंका दर्शन २४६–२६०

हिमालयकी तरह अटल २४६, अजीब मांगोंकी पूर्ति २४६, 'कभी नहीं हारना' २४८, ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति २४९, छोटी-छोटी बातों द्वारा बापूका अुपदेश २५१, गोशालाका चार्ज दिया २५४, राजकोट-प्रकरण और बाका पत्र २५७, लाहौर जानेकी तैयारी २५९।

१७. मेरे गोसेवा-सम्बन्धी प्रवास २६१–२७३

मुझसे बापूजीकी आशायें २६१, लाहौरकी गोशालाका अनुभव २६४, मॉडल टाअुनमें मेरी प्रवृत्ति २६६, शुद्ध दूधकी व्याख्या २६७, अेक भक्त बहनसे भेंट २६८, अेक आदर्श गोसेवकके दर्शन २७०, बापूजीसे भेंट २७१।

१८. विविध प्रसंग २७३–२९७

अेक बोधपाठ २७३, छोटी बातके लिअे बड़ा कदम २७५, लॉर्ड लोथियन सेवाग्राममें २७६, होड़ बदना बुरा है २७७, हृदय-परिवर्तन २७८, सच्ची सलाह न माननेका फल

२७८, फोटो खिचवानेसे अरुचि २७९, 'गाय जहां है वहीं रहेगी' २८०, सेप्टिक टैंकका किस्सा २८१, आश्रम खतम नहीं होगा २८३, जमीनका झगड़ा २८५, मौनका आदेश और अुसका लाभ २९०, समर्पणके विषयमें बापूजीके विचार २९२, [illegible] सूचनाओं २९२, मजूरी गरीबोंका वृक्ष है २९३, जमनालालजी और गोसेवा २९४।

१९. बापूके पांचवें पुत्रका स्वर्गवास — २९७

२०. गोशालासे बिछोह और मेरी बेचैनी — ३०२

२१. सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग — ३१२–३२८

१. खजूर-गुड़ और नीरा ३१२, २. कुम्हार-काम ३१४, ३. चर्म-अुद्योग ३१६, ४. मधुमक्खी-पालन ३२२।

२२. चरखेका चमत्कार — ३२८

२३. बापूजीका हृदय-मन्थन — ३३४

२४. अगस्त-आन्दोलन और आश्रमवासी — ३४०

बापूजीका अुपवास ३४६।

२५. बाका स्वर्गवास और बापूजीकी रिहाओी — ३४८

२६. महादेवभाओी और पूज्य बाके पुण्य-स्मरण — ३६०

२७. कुछ महत्त्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना — ३६६

२८. 'सेवाग्रामके सेवकोंके लिओ' — ३८०

२९. धर्मानन्दजी कौशाम्बी — ३८८

३०. विविध प्रश्नोंका बापूजीका हल — ३९९

३१. शांतियज्ञमें प्राणार्पण — ४०५

३२. बापूके अमूल्य विचार — ४१२

३३. बापूके अन्तेवासी विभिन्न सेवाक्षेत्रोंमें — ४२०

३४. अुपसंहार — ४२९

परिशिष्ट — १

मेरी अभिलाषा — ४३१

परिशिष्ट — २

१. बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना — ४३८

२. वर्तमानकालीन प्रार्थना — ४४३
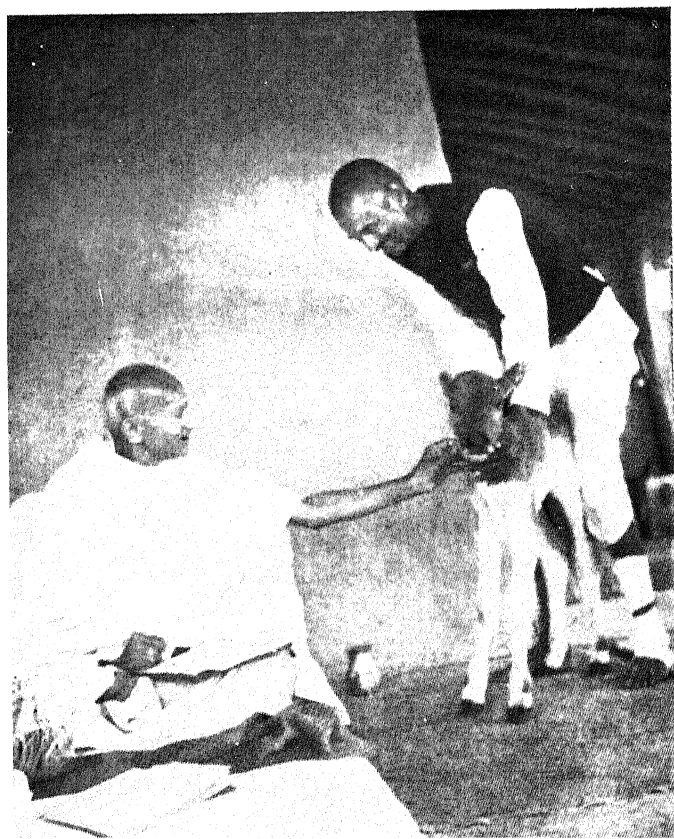
लेखक बापूजीको गायका नया पैदा हुआ बच्चा दिखा रहे हैं।

बापूकी छायामें

१

पूर्वभूमिका

बापूका नाम पहली बार मैंने १९१९ में अदनमें सुना जब कि मैं फौजमें था। अदनमें टर्कीसे लड़नेके लिअे अंग्रेजोंका अेक मोर्चा था। अुसी पर मैं नियुक्त था। अुससे पहले फौजमें तिलक भगवानका नाम तो सुना जाता था। कहा जाता था कि वे अंग्रेजोंके साथ हिन्दुस्तानियोंकी समानताकी सिफारिश करते हैं और जितनी तनख्वाह अंग्रेज सिपाहियोंको मिलती है अुतनी ही हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको मिलनेकी हिमायत करते हैं। लेकिन बापूका नाम नहीं सुना था।

रौलेट अेक्टके नामके साथ-साथ बापूका नाम कान पर आया था। रौलेट अेक्टका विरोध करनेके लिअे जब जलियांवाला बागमें सभा हुअी और अुस पर गोली चली, तो पंजाबमें शांति स्थापित करनेके लिअे बापूजी पंजाब जा रहे थे। अुनको कोसी स्टेशनसे पकड़ कर वापिस भेज दिया गया था। यह समाचार फौजी अखबारोंमें छपा था। फौजी अखबारोंमें सब चीजें अिस ढंगसे छपती थीं कि मिस्टर गांधी और दूसरे कुछ लोग अंग्रेज सरकारके खिलाफ बगावत कर रहे हैं और वे अच्छे आदमी नहीं हैं। बापूके विरुद्ध जितना फौजी अखबारोंमें लिखा जाता था, अुतना ही मेरा चित्त अुनकी ओर आकृष्ट होता था और मुझे लगता था कि यह आदमी अैसा है जो हिन्दुस्तानको अंग्रेजोंके चंगुलसे छुड़ायेगा। क्योंकि फौजमें अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियोंके बीच जो भेदभाव बरता जाता था वह मनको चुभता था। अेक मामूली अंग्रेज, जो अेक हिन्दुस्तानी सिपाहीसे भी कम योग्यता रखता था, अफसर बना दिया जाता था और हिन्दुस्तानी अफसर भी अुसके सामने भीगी बिल्लीकी तरह तुच्छता महसूस करते थे।

जब जलियांवाला बागमें गोलीकांड हुआ तो हमें लगा कि हिन्दुस्तानमें अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियोंके बीच लड़ाअी शुरू हो गअी है और हो सकता है कि हम लोग हिन्दुस्तान न पहुंच सकें। अुस समय हिंसा-अहिंसाका भेद

तो हम कुछ जानते नहीं थे। अिसलिअे आपसमें यह चर्चा करते थे कि जो दो-चार अंग्रेज अफसर हैं अुनको खतम करके हम खुश्कीके रास्तेसे हिन्दुस्तान निकल चलेंगे। १९२० की जनवरीके लगभग मैं हिन्दुस्तान वापिस आया। झांसीमें मैं फौजी अस्पतालमें बीमार था। अुसी समय बापूजी और मौलाना शौकतअली झांसी आये थे। जब अैसे प्रसंग आते थे तब शहर फौजकी हदसे बाहर कर दिये जाते थे और कोअी फौजी आदमी वहां नहीं जा सकता था।

मेरा अेक मित्र अेक अंग्रेज अफसरके यहां अरदली था। वह किसी तरह झांसीकी अुस सभामें पहुंच गया। अुसने वहांका सब वर्णन मुझे सुनाया तो मनमें लगा कि मैं भी वहां गया होता तो अच्छा होता। अुसने मुझे कहा कि वहां लोग 'वन्देमातरम्' बहुत बोलते थे। अुसका क्या अर्थ है? अुसका शब्दार्थ करके मैंने अुसे समझाया। 'वन्देमातरम्' में अितनी भावना छिपी है, अिसका अुस वक्त मुझे पूरा ज्ञान नहीं था। अुस वक्त तो मैं अितना ही समझता था कि बापूजीने अंग्रेजोंसे लड़नेके लिअे हिन्दुस्तानियोंकी अेक स्वतंत्र फौज बनाअी है; वे सदाचारका प्रचार करते हैं, मांस और मदिराके विरोधी हैं, और खादी पहननेके लिअे कहते हैं।

अिस बीच हमारी फौज पेशावर चली गअी थी। जनवरीके अन्तमें मैं भी पेशावर पहुंचा। यह सन् १९२१ की बात है। मैं अिन चीजोंका फौजमें प्रचार करने लगा। क्योंकि फौजमें शराब भी पी जाती थी, मांस भी खाया जाता था और नैतिक जीवन भी कुछ अूंचा नहीं रहता था। फौजके अूपर कड़ा प्रतिबन्ध था। वहां न तो कोअी अैसे अखबार पढ़ सकता था जिनमें कांग्रेस-आन्दोलन और बापूजीकी किसी तरहकी खबरें हों, न शहरकी किसी सभा या जुलूसमें भाग ले सकता था और न फौजमें कोअी अैसा आदमी प्रवेश ही कर सकता था। लेकिन तो भी हवाके जरिये बहुतसे समाचार फौजमें पहुंच जाते थे। हमारी अेक विशिष्ट टोली थी जो अिस प्रकारके सात्त्विक जीवनके लिअे छटपटाती थी। सब लोग मुझसे कहते थे कि तुम अिस्तीफा देकर बाहर जाओ और गांधीजीकी फौजमें हमारे लिअे भी स्थान निश्चित करके हमें खबर दो तो हम भी आ जायेंगे। अेक विचार यह भी चलता था कि कहीं पर अेक आश्रम बनाया जाय। अुसमें दिनभर सब लोग काम करें और रातको अेकसाथ मिलकर प्रार्थना करें,

भोजन करें और स्वाध्याय करें। अिसके लिअे वे लोग मुझे ही अगुवा मानते थे और मुझे 'गांधी' नाम दे रखा था। मेरे अन्दर भी छटपटाहट चलती ही थी। लेकिन पैसे और फौजकी शानका मोह था। अिसलिअे अिस्तीफा देनेकी हिम्मत नहीं होती थी। मनमें लगता था कि किसी तरहसे नौकरी छूट जाय तो अच्छा हो।

अुसी समय मुझे कुछ धार्मिक ग्रंथ पढ़नेका शौक लगा था। अेक रोज पहरे पर कुछ पढ़ते पढ़ते नींद आ गयी और मुझे सोते हुअे अेक सार्जेन्टने पकड़ लिया। रातके बारह बजे मुझे कैद करके 'कोर्ट-गार्ड' में भेज दिया गया। सुबह होते ही फौजमें यह खबर बिजलीकी तरह फैल गअी। मैं चुस्त सिपाही माना जाता था और आज तक अैसी कोअी भी गलती मुझसे नहीं हुअी थी, जिससे मुझे किसी भी अदालतके सामने जाना पड़ा हो। लोग मिलनेके लिअे मेरे पास आने लगे। अैसे मामलोंके लिअे फौजमें दो अदालतें होती थीं। अेक तो सिर्फ बयान लेती थी, जिसको सजा देनेका कोअी अधिकार नहीं होता था। दूसरी 'समरी कोर्ट मार्शल' करनेवाली होती थी, जो जन्म-कैद या फांसी तककी सजा दे सकती थी। और अुसके आगे कोअी अपील नहीं होती थी। अुसके पांच सदस्य होते थे। अेक कमांडिंग अफसर और चार दूसरे अफसर होते थे, जिनमें हिन्दुस्तानी अफसर भी रहते थे। अिनमें अेक मुसलमान अफसर भी था, जो पहले मेरा मास्टर रह चुका था और मुझ पर बहुत प्यार करता था। वह मेरे पास आया और दुःखके साथ मुझसे सब बात पूछी। जब अुसने मुझसे यह पूछा कि मैं कोर्ट मार्शलके सामने क्या बयान दूंगा, तो मैंने कहा कि घटना जैसी कुछ घटी है वैसी ही सच-सच कहूंगा। अपने बचावके लिअे कोअी झूठ नहीं बोलूंगा, यह मेरा निश्चय है। यह सुनकर वह अफसर बहुत खुश हुआ और मेरी पीठ ठोककर चला गया। मैं कोर्ट मार्शलके सामने गया और सारी घटना जिस तरहसे घटी थी वैसी ही मैंने बता दी। अुसमें मेरे बचावके लिअे अेक बड़ा मुद्दा यह था कि मैं तीन रातसे बराबर पहरा दे रहा था और आंखोंमें नींद भरी थी। अिरादतन् जमीन पर लेटा भी नहीं था, लेकिन दीवारके सहारे खड़े खड़े नींद आ गयी थी। और अगर मेरे गार्डका अफसर गलत बयान नहीं देता, तो मैं साफ छूट सकता था। लेकिन अीश्वरको अैसा ही मंजूर था। मुझे दो महीनेकी सजा हुअी और फौजसे मेरा नाम कट गया। अुस समय

सारी फौजमें अेक तहलका-सा मच गया और अैसा प्रतीत होने लगा कि विद्रोह हो जायगा। मैंने निकटके मित्रोंको समझाया और शान्त रहनेको कहा।

अुस समय पेशावर लड़ाअीका मोर्चा समझा जाता था और मोर्चे पर सोनेके अपराधमें गोलीसे मारने तककी सजा दी जा सकती थी। लेकिन मेरे पक्षमें अैसे कारण थे जिनसे मुझे दो महीनेकी नाममात्रकी सजा देकर ही अदालतने अपना रोब रखनेका सन्तोष माना। मैं पेशावर सेंट्रल जेलमें भेज दिया गया। बापूजीके पास पहुंचनेकी जो धीमी धीमी आग मेरे मनमें सुलगने लगी थी, अुसका पहला पाठ मुझे जेलमें मिला। मुझे जेलका अनुभव करानेमें अीश्वरका ही हाथ था, अैसा जेलमें जाकर मैंने अनुभव किया। मैंने भगवानको धन्यवाद दिया कि जिस मोहमें मैं फंसा था अुससे अुसने थप्पड़ मार कर मुझे छुड़ा दिया। 'करूं सदा तिनकी रखवारी, जिमि बालक राखे महतारी।' यह कथन मेरे लिअे सार्थक सिद्ध हुआ।

अुस दो महीनेके जेल-जीवनमें जो कठिन परिश्रम मुझे करना पड़ा और जो शुद्ध विचार मेरे मनमें चले, वह सब सुनाने बैठूं तो अेक लम्बा किस्सा हो जाय। अितना ही कह सकता हूं कि जेलके अुस कठिन जीवन और शुभ विचारोंसे मेरा मन और तन अितना निर्मल हो गया था कि फिर मुझे सत्याग्रहके जेल-जीवनमें किसी प्रकारकी अड़चन महसूस नहीं हुअी।

मैं अपने अन्तरमें यह तो महसूस करता ही था कि भगवानने जो कुछ किया है अच्छा किया है, मगर यह स्पष्ट खयाल नहीं था कि बापूके पास पहुंचनेकी पहली शर्त जेलकी तैयारी और अन्तर-शुद्धिका प्रयत्न है। जेलमें मेरा कांग्रेसके कुछ राजनीतिक कैदियोंसे भी परिचय हुआ। जेलसे छूटनेके बाद मैं पेशावर कांग्रेस कमेटीके सदस्योंसे मिला। घर आते समय लाहौरमें पंजाब-केसरी लाला लाजपतरायसे मिला। राजनीतिक क्षेत्रमें मुझे पहला गुरुमंत्र लालाजीसे मिला माना जा सकता है। अुन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम अपने यहां जाकर कांग्रेसके कार्यकर्ताओंसे मिलो और जैसा वे कहें वैसा काम शुरू कर दो। अीश्वर तुम्हारी मदद करेगा।

लालाजीके दर्शन और आशीर्वादसे मुझे बहुत ही आनन्द हुआ। और मैं १९२१ के मार्च मासके अंतमें घर पहुंच गया। हमारे गांवके पास सीकरा गांवमें विश्वबन्धुजी तिलक राष्ट्रीय पाठशाला चलाते थे। अुनसे मेरा परिचय हुआ। अुन्होंने मुझे बापूजीके लेख और भाषणोंका संग्रह — 'महात्मा गांधी'

नामक पुस्तक पढ़नेको दी। अुसे पढ़कर मुझे बहुत ही शांति मिली, क्योंकि मेरा मन आर्यसमाजके 'सत्यार्थप्रकाश' आदि कुछ ग्रंथ पढ़नेसे तर्क-वितर्कके दलदलमें फंस गया था। बापूजीके लेखोंसे मुझे प्रकाश मिला। मैं 'हिन्दी-नवजीवन' का ग्राहक भी बन गया। मैं खुद पढ़ता और दूसरोंको सुनाता। अुसके ग्राहक भी बनाता। साधु-संगत लगानेमें और बापूजी तक भेजनेमें विश्वबन्धुजीने मेरी बहुत मदद की। ये बड़े त्यागी और विद्वान पुरुष हैं। अिनको बापूजीके पास खींचनेकी मैंने कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। खुर्जामें कांग्रेसके कार्यकर्ताओंसे परिचय करके मैं कांग्रेसके काममें लग गया। लेकिन जो लोग आध्यात्मिक दृष्टिसे बापूजीके भक्त थे, अुनसे मेरा विशेष परिचय और प्रेम बंधा। प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी अुनमें से अेक थे। ये संस्कृतके विद्यार्थी थे। श्री राधाकृष्ण संस्कृत पाठशालामें पढ़ते थे और कांग्रेसका काम भी करते थे। सीकराकी पाठशाला भी अिनकी ही कृति थी। बापूजीके परम भक्त थे। और मेरे गांवमें कांग्रेसका काम जमानेमें भी अिन्होंने ही मदद की थी। विश्वबन्धुजीका हाथ तो था ही। आज तो प्रभुदत्तजीको काफी लोग जानते हैं। अिन्होंने भक्ति पर अनेक ग्रंथ भी लिखे हैं। झूसीमें आश्रम बनाकर वे साधना करते हैं। खुशीकी बात यह है कि हम दोनों ही बालपनके साथी अपने अपने ढंगकी गोसेवामें लगे हुअे हैं।

अिस प्रकार खुर्जामें हमारा अेक सत्संगियों और बापूजीके भक्तोंका मण्डल था, जो अेक-दूसरेको आगे बढ़ानेमें दिलोजानसे मदद करते थे। पत्थर आखिरकी अेक चोटसे ही नहीं, पहलेकी अनेक चोटोंके पड़नेसे टूटता है। अिस प्रकार मनुष्यको अूपर अुठानेमें अनेकोंका हाथ होता है। भगवानने गोवर्द्धन पर्वत भी तो बालग्वालोंके बलसे ही अुठाया था। अुसमें कविकी कल्पना यही रही होगी कि किसी बड़े कामके लिअे कोअी अकेला आदमी अभिमान न कर बैठे। अुसमें अनेकोंका हिस्सा होता है। मैं तो पद पद पर अिसका अनुभव करता हूं कि मुझे बापूजीके पास पहुंचानेमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे न मालूम कितनोंका हाथ रहा है। अिसलिअे मेरे मनमें बापूजीके पास जाने और रहनेका अभिमान कभी पैदा होता ही नहीं, बल्कि साथियोंके प्रति कृतज्ञताका भाव ही बना रहता है।

२

बापूका प्रथम दर्शन

मेरा खयाल है कि १९२१ के अगस्तका महीना था। बापूजी विलायती कपड़ेका बहिष्कार करवानेके लिअे हिन्दुस्तानका दौरा कर रहे थे। अुसी समय अुनके अलीगढ़ आनेकी खबर मिली। जब यह खबर मुझे मिली अुस समय मैं अपने अेक चाचा और चचेरे भाअीके साथ खेतका बांध बना रहा था। हमारे यहां अेक छोटीसी नदी थी, जिसका पानी चढ़ रहा था और खेतमें पानी घुस आनेकी आशंका थी। अिसलिअे हमारा काम जोरोंसे चल रहा था। मेरे सारे कपड़े कीचड़से भरे थे। हमारा खेत स्टेशनके पास ही था। अुसी समय अलीगढ़ जानेवाली अेक गाड़ी आ रही थी। मैंने अपने चाचा और भाअीसे पूछा कि मैं गांधीजीके दर्शन करने जाअूं? वे मेरे अूपर बिगड़े और बोले, देखते नहीं हो, अगर कभी यह बांध नहीं बंधा तो रातको सारा खेत पानीमें डूब जायगा। मेरा दिल द्वन्द्वमें फंस गया। अिधर अिन लोगोंका भय था और अुधर बापूके दर्शनका आकर्षण था। अन्तमें मैं काम छोड़कर स्टेशनकी ओर चल दिया। ज्यों ज्यों गाड़ी नजदीक आती गयी त्यों त्यों मेरा दिल बापूकी ओर खिंचता गया और मैं अुन लोगोंसे दूर हटता गया। मैंने सोचा कि अगर मैं भागकर गाड़ीमें बैठ जाअूं तो ये लोग मुझे पकड़ नहीं सकेंगे। गाड़ी आकर खड़ी होना ही चाहती थी कि मैंने फावड़ा फेंक दिया और कहा, "लो, मैं तो चला।" और दौड़कर गाड़ीमें बैठ गया। टिकट लेनेका न तो होश था, न पास पैसे ही थे।

रातको साढ़े सात बजे अलीगढ़ पहुंचा। भीड़ तो बहुत थी। बापूजीको दो जगह भाषण करना था। मस्जिदमें स्त्रियोंके लिअे प्रबंध था और बाहर पुरुषोंके लिअे। बापूजीके साथ मौलाना मोहम्मदअली और स्टोक्स साहब भी थे। मैंने मंचके नजदीक पहुंचनेकी खूब कोशिश की और अैसी जगह पहुंचा जहांसे बापूजीको स्पष्ट देख सकूं। बहुत बड़ी भीड़ और कोलाहल था। आसमानमें बादल थे और डर था कि पानी बरसेगा। सबकी प्रार्थना यही थी कि पानी न बरसे और बापूजीका भाषण सुनें। यही हुआ। बापूजी मंच पर आये और अुन्होंने लोगोंसे शान्त रहनेको कहा। सब लोग

शांत हो गये। बापूजीके अुस भाषणका सारांश करीब-करीब मुझे याद है। अुन्होंने कहा था :

" भाअियो और बहनो,

" गुलामीसे छूटनेका सबसे बड़ा हथियार है स्वदेशी-धर्मका पालन। स्वदेशीका अर्थ है कि जो चीज हमारे देशमें बनती हो वह परदेशसे न लायें, जो हमारे प्रान्तमें बनती हो वह परप्रान्तसे न लायें, जो हमारे जिलेमें बनती हो वह दूसरे जिलेसे न लायें और जो हमारे गांवमें या घरमें बनती हो वह बाहरसे न लें। चरखा तो घर घर चलाया जा सकता है। गांवका जुलाहा बुन सकता है। तो हम क्यों विलायती कपड़ेके मोहमें पड़ें? विलायती कपड़ा तो जहरके समान है। कोअी भी अपने घरमें जहरको या सांपको नहीं रख सकता। अुसे जला देना चाहिये। लोग कहते हैं कि खादी मोटी और खुरदरी होती है। मैं पूछता हूं कि अेक मांका बच्चा काला और बदसूरत है और दूसरीका गोरा और खूबसूरत है। अगर पहली मांसे कहा जाय कि तुम दूसरीके बच्चेसे अपना बच्चा बदल लो तो क्या वह बदलेगी? हरगिज नहीं बदलेगी, क्योंकि अपने बच्चेमें वह अपना ही रूप देखती है। अिसी तरह हम खादीको छोड़कर विलायती या देशी मिलके कपड़े कैसे पहन सकते हैं? अगर देश विदेशी कपड़े और दूसरी वस्तुओंका सर्वथा त्याग कर दे, तो मैंने जो अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात कही है अुसमें सन्देह करनेका कारण नहीं रह जायगा। दवाका असर परहेज पर निर्भर है।"

मौ० मोहम्मदअली भी बोले, लेकिन वह मुझे याद नहीं है। बापूजीने लोगोंसे विलायती कपड़े मांगे। बातकी बातमें कपड़ोंका ढेर लग गया और अुसकी होली जलाअी गअी। अुस समय बापूजीको मंच पर देखकर अैसा लग रहा था मानो वे अपने ही आदमी हैं और अुनके अधिक नजदीक जाना चाहिये। लेकिन जिस तरह मैं बापूजीके पास पहुंचा, अुसकी किसी स्पष्ट कल्पना या संभावनाका दर्शन अुस समय मुझे नहीं हुआ था, सिर्फ मनकी अेक अिच्छामात्र थी।

३

सविनय प्रतिकारका प्रथम पाठ

अपने गांवमें मैंने ग्राम कांग्रेस कमेटी बना ली थी। बादमें वह सर्किल कांग्रेस कमेटी हो गअी थी। आसपासके गांवोंमें कांग्रेसका असर बढ़ रहा था। मुझे कअी साथी भी मिल गये थे। यद्यपि हम थे तो अिने-गिने ही, तथापि सब निष्ठावान और सत्याग्रहके विश्वासी थे। अेक दिन गांवमें कुछ नाचनेवाले आये। मेरे परिवारवालोंने अुनका तमाशा करानेका निश्चय किया। मुझे दिनमें ही अिसकी खबर लग गअी थी। मैं अिस कार्यक्रमके प्रति अुदासीन रहना चाहता था। लेकिन मेरे घरके सामनेसे तमाशा देखनेवाले आ-जा रहे थे। मेरे कअी साथी मेरे पास आकर बैठे और जब वे चलने लगे तो मैं भी अुनके साथ हो लिया। अिससे अुनको आश्चर्य हुआ। लेकिन मैंने सफाअी कर दी कि चल कर देखें तो सही वहां क्या हो रहा है। जब हम वहां पहुंचे तो कुछ लोग प्रसन्न हुअे और कुछ चौंके। चौंके अिसलिअे कि आखिर हम लोग वहां किसलिअे आये हैं। मैंने हंसकर अपने चाचासे, जिनके यहां यह तमाशा होनेवाला था, पूछा कि तमाशेमें कितनी देर है। वे खुश होकर बोले, 'बेटा, लड़के सज रहे हैं, अभी आते हैं।' तब तक मेरे मनमें नाच बन्द करानेका विचार नहीं आया था। मैंने सहज ही कहा, 'चाचाजी, अिसमें सजनेकी क्या जरूरत है? यों ही भजन होने दो न?' वे बोले, 'बेटा, बिना सजे रौनक कैसे आवेगी?' मैंने कहा कि जनाने कपड़े पहनाकर रौनक करना ठीक नहीं है। अिससे वातावरण गन्दा बनता है। अुन्होंने मेरी बात नहीं मानी। मैंने कहा कि यह नहीं हो सकेगा। वे बिगड़े जिससे मेरे मनमें अुस नाचको बन्द करवानेके लिअे सत्याग्रहकी भावना जागी। मैं तथा मेरे साथी वहांसे चले आये। और मैंने अपने सबसे मजबूत साथी भोलेसिंगको जगाया। वह बोला, 'क्यों नाहक झंझटमें पड़ते हो, गांववाले हमारी बात मानेंगे नहीं और झगड़ा बढ़ेगा।' मैंने अुसे अुत्साह दिलाया कि भाअी अभी तो यह अेक छोटासा काम है। यहां सिर्फ दो-चार गालियां या दो-चार थप्पड़ों तक ही नौबत आनेवाली है। अितनेमें ही यदि हम हिम्मत हार गये तो

अंग्रेजोंको निकालना कैसे संभव होगा, जिनके पास तोप और बन्दूक हैं और जिनके साथ लड़नेमें जानका पूरा खतरा भी है। अंग्रेजोंके खिलाफ सत्याग्रह करनेके लायक हम हैं या नहीं, अिसकी परीक्षा आज हो जानी चाहिये। पहले तो हम समझौता करनेका यत्न करेंगे, अर्थात् जनाने कपड़े न पहनकर वे केवल भजन करें तो करने देंगे। नहीं तो हम सत्याग्रह करेंगे।

योजना बनाअी गअी कि वह साथी पहले जाकर लोगोंको समझाये कि हमारे गांवमें कांग्रेसका काम होता है अिसलिअे यहां नाच कराना शोभा नहीं देता। दूसरे, हमारी बहन-बेटियोंके सामने हम गन्दी बातें सुनें तथा गन्दे हावभाव देखें यह शर्मकी बात है। अितने पर भी न मानें तो हम नाचके स्थानके चारों ओर खड़े होकर 'गांधीजीकी जय', 'भारतमाताकी जय'के नारे लगातार लगाते रहेंगे। अैसा करनेमें हमें गालियां मिलें तो सुन लें। किसी पर मार पड़े तो अुसे बचानेका यत्न न करें। मार खाते खाते जब तक गिर न पड़े तब तक हर कोअी जय-जयकार करता रहे। हमारी ये बातें चल रही थीं तब तक और भी कअी साथी अिकट्ठे हो गये। हमारा साथी भोलेसिंग वहां गया और जब अुसके समझानेका कोअी परिणाम नहीं हुआ तो अुसने हम लोगोंको बुला लिया। हम लोग जय-जयकार करते हुअे वहां पहुंचे। और कअी अुत्साही लड़के भी हमारे साथ हो गये। गांवका मुखिया मेरे चाचाका बेटा था। वह घटनास्थल पर पहुंचा और सब हाल जानकर अुसने कहा कि वह सक्रिय मदद तो नहीं करेगा; लेकिन हमारा विरोध भी नहीं करेगा, क्योंकि हमारा काम अच्छा है। हमारे वहां पहुंचते ही सन्नाटा छा गया। हमने नाचनेवालोंको घेर लिया और बिना अिधर-अुधर देखे जय-जयकार करने लगे। मेरे चाचाने कहा कि काम तो अिन लोगोंने पिटनेका किया है। परिवारका अेक दूसरा व्यक्ति बोला कि यदि यही बात है तो अिनकी अच्छी मरम्मत कर दो। लेकिन अिससे आगे कोअी कुछ न बोला। धीरे धीरे लोग वहांसे खिसक गये। कुछ बहनें गालियां देती जा रही थीं: "आये बड़े गांधीवाले। आज तो स्वांग बन्द करा दिया, कलको ब्याह-बरात भी बन्द करा देंगे। अिनका सत्यानाश हो।" दूसरे मोहल्ले-वालोंने ताना मारा कि आज अपने मोहल्लेमें तो तमाशा बन्द करा लिया है, कल हमारे मोहल्लेमें बन्द कराने आना। मारते मारते कचूमर निकाल देंगे। हमने दूसरे दिनके लिअे भी वैसा ही कार्यक्रम बना लिया था। लेकिन

तमाशा करनेवाले ही राजी न हुअे और गांवमें चले गये। फिर तो आस-पासके गांवोंमें भी स्वांग बन्द हो गये।

मेरे अेक दूसरे चाचा तथा गांववालों पर अिस घटनाका अच्छा ही असर हुआ। वे कहने लगे कि देखो अिन लड़कोंने जब रातको केवल जय बोलकर सारे गांववालोंको भगा दिया, तो अंग्रेजोंको भगा देनेमें भी निश्चित ही ये सफल होंगे। हमारे दिलोंमें भी अिस घटनाके बाद निर्भयता तथा आत्म-विश्वास बढ़ा।

४

निकट सम्पर्क और सन्देहका अन्त

सन् १९२१ से १९२८ तकका समय जिस तरहसे बीता, अुसका सब वर्णन लिखने बैठूं तो अेक बड़ा पोथा ही बन जाये। अिसलिअे अुसको टाल देता हूं। अितना ही कह सकता हूं कि मेरी गति सांप-छछूंदर जैसी थी। अुधर मैं बापूजीकी तरफ खिंचता जा रहा था और अिधर परिस्थिति मुझे घरमें बांध कर रखना चाहती थी। मैंने आन्दोलनमें काम किया, खूब घूमा। बापूजीका 'हिन्दी-नवजीवन' भी पढ़ता रहा। अुनकी 'आत्मकथा' भी पढ़ी। लेकिन बापूजीके पास पहुंचनेका कोअी मार्ग नहीं सूझा।

जहां तक मुझे याद है १९२९ के मार्चकी २९ तारीखको नअी दिल्लीमें बड़ी धारासभाके अध्यक्ष स्व० विट्ठलभाअी पटेलके बंगले पर कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी मीटिंग थी। मुझे पता चला कि बापूजी वहां आ रहे हैं। मैं अपने अेक चाचा ठाकुर टोडरसिंहजीकी सिफारिश लेकर गांधी-आश्रमके व्यवस्थापक श्री विचित्रभाअीके पास गया। अुनसे मैंने कहा कि वे मुझे गांधीजीसे मिला दें। मैंने अुनको पत्र बताया। अुन्होंने मेरे ठहरने आदिकी व्यवस्था कर दी। बापूजीसे मुलाकातकी व्यवस्था तो वे नहीं कर सके, पर स्व० विट्ठलभाअीके बंगले पर, जहां बापूजी ठहरे हुअे थे, अुन्होंने मुझे पहुंचा दिया। दूसरे मित्रगण भी मेरे साथ थे। हम स्व० विट्ठलभाअीके बंगलेके मैदानमें जाकर बैठ गये। वर्किंग कमेटीकी मीटिंग चल रही थी। हमने कअी पुर्जे बापूजीकी मुलाकात मांगनेके लिअे भेजे, लेकिन वे अुन तक पहुंचे ही नहीं। मैं छटपटा रहा था कि मुलाकात कैसे होगी। तब अेक मोटर ड्रायवरसे अुर्दूमें पत्र

लिखाकर भेजा। वह पत्र मौलाना आजाद साहबने पढ़कर बापूजीको सुनाया। बापूजीने कहा, अुनसे कहो कि ठहरें, मैं अभी नीचे आता हूं। मैंने बापूजीका अुत्तर सुना तो बड़ा आनन्द हुआ।

शामको वर्किंग कमेटीकी मीटिंग खतम हुअी और बापूजी नीचे आये। बापूजीके साथ अुनके पुत्र देवदासभाअी भी थे। मैंने बापूजीके चरणोंमें प्रणाम किया और पूछा, "मनुष्यको अपनी आध्यात्मिक अुन्नतिके लिअे क्या करना चाहिये?"

बापूजी बोले, "सच्चा बनना चाहिये। आध्यात्मिक अुन्नतिका यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।"

दूसरा प्रश्न मुझे सूझ ही नहीं रहा था और बापूके पास अितना समय भी नहीं था। श्री विचित्रभाअीने मुझे कहा भी था कि तुमको जो कुछ पूछना हो लिखकर ले जाओ, क्योंकि गांधीजीके सामने जाकर लोग होश-हवास भूल जाते हैं और कुछ पूछ नहीं पाते। लेकिन मैंने तो सीधे ही प्रश्न पूछना ठीक समझा। सोचा अुस वक्त जो सूझेगा पूछूंगा। मेरा प्रश्न सारे भावोंका निचोड़ था। अितने निकटसे बापूका दर्शन, मेरा प्रश्न और अुनका अुत्तर! अुस समयके आनन्दका वर्णन करना मेरी शक्तिके बाहर है। न तो मैं घबराया और न होश-हवास ही भूला। बापूकी प्रेमभरी मुस्कराहटने मुझे मोहित कर लिया।

अुस समय बापूका घूमनेका समय था। बापूके साथ मौ० अबुलकलाम आजाद और पं० मदनमोहन मालवीयजी थे। बापू घूमने चले, मैं भी पीछे पीछे चला; साथमें मेरे दो साथी और थे। अिस प्रकार अेकान्तमें बापूजीके साथ घूमनेका जो अवसर मुझे मिला, अुसके लिअे मैं अीश्वरको अनेक धन्यवाद दे रहा था और अपने आपको कृतकृत्य मान रहा था। अुनकी आपसमें क्या बात चल रही थी, यह तो मुझे याद नहीं है। लेकिन बापूकी आवाज सुनकर मुझे बड़ा आनन्द होता था। बापूके लौटने तक मैं अुनके पीछे ही घूमता रहा। मुझे पता नहीं था कि घूमनेके बाद बापू प्रार्थना करते हैं। अिसलिअे अुनके बंगले पर लौटनेके बाद मैं वापिस दिल्ली चला गया। बादमें पता चला तो प्रार्थनामें शामिल न होनेका मुझे बहुत दुःख हुआ।

सन् १९२१ से १९२८ तकके समयमें मेरे विचारोंमें अनेक प्रकारके अुतार-चढ़ाव आते रहे। मेरा मन कुछ संन्यास-वृत्तिका होता जा रहा था,

और राजनीतिसे मुझे कुछ अुदासीनता-सी होती जा रही थी। परन्तु बापूके दर्शनने जादूका-सा काम किया और मेरा मन फिर कांग्रेसके आन्दोलन और बापूकी तरफ जोरसे खिंच गया।

सन् १९२९ में बापूने यू० पी० में खादी-प्रचारके लिअे दौरा किया था। अुसी सिलसिलेमें अुनका खुर्जा आनेका कार्यक्रम भी था। अक्तूबरका महीना था। मैंने भी कुछ साथी कार्यकर्ताओंको अिकट्ठा करके किसानोंकी ओरसे बापूको अभिनन्दन-पत्र और अेक थैली भेंट करनेका प्रबंध किया। किसानोंके पाससे अेक अेक पैसा मांगकर कुछ रुपये अिकट्ठे किये; अेक अभिनन्दन-पत्र भी लिखा। वह बापूजीको भेंट किया। अभिनन्दन-पत्र अिस प्रकार था:

ॐ

सत्यमेव जयते नानृतम्।

श्रीयुत पूज्य महात्मा गांधीजीको

श्री कृषक कांग्रेस कमेटी समसपुर, जिला बुलन्दशहरकी तरफसे

श्रीमन्, वन्दे।

आपकी प्रशंसाकी गंधसे हम कृषक भी महक अुठे हैं। गंध वाणीका विषय न होनेसे हम ही क्या सभी आपकी प्रशंसा करनेमें असमर्थ हैं। भारतवर्ष ही नहीं सारी दुनिया, अमेरिका अित्यादि देश भी, आपकी प्रशंसाकी गंधसे सुगन्धित हैं। जब जब हम आपके अुपकारोंको याद करते हैं, तब हमको अीश्वरकी करुणाका अनुभव होने लगता है। आपके हृदयमें भगवानके अहिंसा, सत्य, न्याय, शीलादि गुणोंका पूर्णतया प्रादुर्भाव हो गया है, अिसलिअे हम आपके आदेशको अीश्वरका ही आदेश समझते हैं। जब भारतके पूर्वज महान पुरुषोंके कीर्तिपुंजका अितिहास विलायती सभ्यताके अंधकारमें मलिनताको प्राप्त होने लगा तब आपने अपने चारित्र्यबल और सौजन्यके प्रकाशसे अुस आधुनिक सभ्यताके तमपुंजको छिन्नभिन्न कर ऋषि-मुनियोंकी कीर्तिपुंज गाथाको अुज्ज्वल बना दिया।

हे संयमके अवतार! जब तेरी अफ्रीका जैसे असभ्य देश-संबंधी सत्याग्रहकी घटनाओंका स्मरण होता है तब प्रह्लादका चरित्र आंखोंके सामने खिंच आता है और विश्वास होता है कि दुष्ट हिरणाकुशके शासनकी नाअीं आधुनिक दुःशासनको आप छिन्नभिन्न कर देंगे। जब आपका यह वाक्य

'जिसका अीश्वरके सिवा और कोअी अवलम्ब नहीं वह जानता नहीं कि संसारमें पराभव भी कोअी चीज है' याद आता है, तो अैसा साहस होता है कि बड़ेसे बड़ा तिरस्कार भी सत्याग्रहीको नहीं झुका सकता। हे प्रेमावतार! तूने अपना तिरस्कार करनेवालोंकी रक्षा की। तेरी दृष्टिमें सब देश अेक समान हैं, अिसलिअे तू दुनियाका प्राण है। संसारमें तुझको ही लोग सबसे बड़ा महान पुरुष समझते हैं। आध्यात्मिक विषयमें तो आपके वाक्योंको पढ़कर ही हम दक्ष बन जाते हैं। आपके ये वाक्य 'हम स्वाद लेनेको पैदा नहीं हुअे हैं। हम अपने बनानेवालेको पहचाननेके लिअे ही जीते हैं। यह शरीर हमको किराये पर मिला है, अिसलिअे किरायेके बदले अुसकी प्रार्थना करनी चाहिये और अन्त समयमें जैसा मिला है वैसा ही मालिकको सौंप देना चाहिये।' जब हम याद करते हैं, तो संसारके विषय-भोग नीरस प्रतीत होने लगते हैं और हृदयमें अीश्वर-प्रेम अुमड़ने लगता है। जब जब मत-मतान्तरोंकी शंकाओंसे हम दुःखी होते हैं, तब आपके अिस आनन्ददायक वाक्यका स्मरण होता है कि 'राम न रामायणमें है, कृष्ण न गीतामें है, क्राअिस्ट न बाअिबलमें है, खुदा न कुरानमें है, किन्तु ये सब मनुष्यके चरित्रमें हैं, चरित्र नीतिमें है, नीति सत्यमें है, सत्य है सो ही शिवरूप है।' अिसके स्मरणसे हम अिन मत-मतान्तरोंके झगड़ोंसे अलग रहते हैं। जब हमारी आंखें आधुनिक भौतिक अुन्नतिको देखकर चौंधिया गअीं और हम अपने प्राचीन रीति-रिवाजोंको भूलने लगे, तब आपने ही हमको समझाया कि यह अुन्नति मनुष्योंको बेकार और निकम्मा बनाती है, वास्तविक भौतिक अुन्नतिकी अुतनी ही आवश्यकता है जिससे हम जिन्दा और नीरोग रह सकें।

आपने संयमको ही हमारा ध्येय बतलाया और यह भी बतलाया कि ज्यों ज्यों हम संयमी बनते हैं, त्यों त्यों अीश्वरके समीप पहुंचते हैं। हम अपनी वेश-भूषा, खान-पानको भूल चुके थे। परन्तु आपने हमको अज्ञानकी घोर निद्रासे जगाया और चूल्हे, चक्की, चरखेको ही जीवनका मुख्य सहायक बतलाया। हम लोगोंने चर्बी लिथड़े कपड़ोंको पहनकर अपनेको भुला दिया था और अपने पूर्वजोंको हम असभ्य समझने लगे थे। परन्तु आपने हमको शुद्ध खादी पहनाअी और पूर्वजोंका अुच्चादर्श पुनर्वार जाग्रत कर दिया। आप रातदिन हमारी अुन्नतिके लिअे चिन्तित रहते हैं, क्योंकि आप करुणानिधि हैं। आपसे हमारे दुःख नहीं देखे जाते। हम लोग परतंत्रताकी बेड़ीमें

जकड़े पड़े हैं। अुस बेड़ीके काटनेमें आप अैसे लगे हैं कि अब कोअी संदेह नहीं रहा कि वह कटनेवाली है। आपकी यह भारतयात्रा भारतका पुनरुत्थान करनेके लिअे ही है। यह हमारा बड़ा भारी सौभाग्य है कि बिना प्रयासके ही आज आपके दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। आपके दर्शनोंके आनन्दमें हम सारे दुःख भूल गये हैं।

हमारे अन्दर जो छूतछातका मिथ्याभिमान था, अुसको आपने अपने चरित्रबल और पवित्रतासे दूर कर दिया है। क्योंकि चरित्रवान ही सबसे बड़ा और पवित्र मनुष्य है। जो दुश्चरित्र है वही अछूत है, यह शास्त्रका सिद्धान्त है। आप हम दीन-दुःखी कृषकोंके प्राण हैं। हम आपके अूपर निछावर हैं। बारडोलीके कृषक आपके अुपदेशामृतका पान करके अैसी बड़ी सरकारको नीचा दिखा सके, यह आपकी ही असीम कृपा थी। चम्पारनमें आपने कृषकोंको महान कष्टसे मुक्त किया। कहां तक आपके गुणगान करें? रौलेट अेक्ट, जिसको गलेगोट कानून कहते थे, अुसका विरोध आपने ही किया। अिस दीनहीन भारतके लिअे अीश्वरने आपको भेजा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपने सामने ही हमको स्वतंत्र कर देंगे।

हममें कोअी शक्ति नहीं कि हम कृतज्ञता प्रगट कर सकें। हम आपके अुपकारोंको कहां तक याद करें? आपकी गोदीमें हम सब कृषक विराजमान हैं। आपके आज्ञानुसार हम प्रायः सभी कांग्रेस कमेटीके मेम्बर जैसे हैं। जब हम देहली आपके दर्शनोंको गये थे तो आपने यह कहा था कि अै किसानो, सच्चे बनो, यही अुत्तम मार्ग है। सो हमारी रातदिन प्रभुसे प्रार्थना है कि हम महात्माजीके अुपदेशको कभी न भूलें और अुसे अपने कार्योंमें परिणत करके दिखलावें। अब आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम अपठितोंके अिस साधारण अभिनन्दन-पत्रको स्वीकार करें।

३–११–'२९ बिनीत

कृषक कांग्रेस कमेटी, समसपुर

पैसे तो थोड़े ही थे। वे ही पत्रपुष्पके रूपमें हमने बापूजीको भेंट किये। खुर्जाकी मीटिंगमें बापूजी सिर्फ हमारे ही अभिनन्दन-पत्रके अुत्तरमें बोले। अुन्होंने कहा:

"मैं सन् १९०८ से अपने आपको किसान मानता हूं। जन्मसे मैं किसान नहीं हूं, लेकिन कर्मसे किसान बननेका पूरा पूरा प्रयत्न कर रहा

हूं। आज किसानोंकी जो दुर्दशा है अुसे देखकर मुझे दर्द होता है। न अुनको पेटभर खाना मिलता है, न अुनके शरीर पर कपड़ा है। किसान और अुनके बैल हड्डियोंके पिंजरमात्र रह गये हैं। अुनमें मांस और रक्त तो दीखता ही नहीं है। और अुनके कंधों पर अितना बोझा है कि जिसको संभालना अुनके लिअे असंभव हो रहा है। शहरोंके धनी लोग और सरकार अुनके कंधों पर ही चल रही है। अगर वे अपना कंधा हटा लें तो ये दोनों ही गिर जानेवाले हैं। किसान अन्न पैदा करता है, सबको खिलाता है, पर खुद भूखा रह जाता है। अुसके घरमें कपास होती है, लेकिन कपड़ेके लिअे वह दूसरोंका मोहताज रहता है। अपने घरमें सूत कातकर अपना कपड़ा तो वह बना ही सकता है। आज परदेशी सल्तनत हमारे सिर पर बैठी है। अिससे हमारा बहुतसा पैसा विदेश चला जाता है। चरखा हमारा बहुतसा पैसा बचा सकता है।"

अुस समय बापूजीके साथ पू० बा भी थीं, लेकिन अुनके दर्शन मैं नहीं कर सका।

दिसम्बरमें लाहौर कांग्रेस हुअी और अुसमें पूर्ण स्वतंत्रताका प्रस्ताव पास हुआ। सत्याग्रह शुरू करनेकी रूपरेखा बनानेका काम बापूजीने अपने जिम्मे लिया। मैं बड़ी अुत्कंठासे 'हिन्दी-नवजीवन' की राह देखता रहता था। मैं यह जाननेके लिअे अुत्सुक था कि बापूजी किस तरह लड़ाअीका कार्यक्रम बनाते हैं। आखिर अुन्होंने नमक-सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बापूजीने आश्रम छोड़ते समय जो भाषण दिया था अुसमें अुनकी अिस प्रतिज्ञाका मुझ पर बड़ा असर हुआ कि 'मैं स्वराज्य लेकर ही आश्रममें लौटूंगा, नहीं तो मेरी लाश समुद्र पर तैरेगी।' मेरी भी अिच्छा थी कि बापूजीकी टोलीमें शामिल हो जाअूं। लेकिन बापूजीने लिख दिया था कि बाहरसे कोअी आदमी यहां आनेका प्रयत्न न करे। मैं वहां पहुंचनेका रास्ता भी नहीं जानता था। अिसलिअे ६ अप्रैलको अपने अपने स्थान पर नमक-कानून तोड़नेका जो कार्यक्रम रखा गया था, अुसमें मैं शामिल हो गया और मैंने यह भी निश्चय किया कि स्वराज्य मिलने तक घरमें नहीं बैठूंगा। नमक-सत्याग्रह आरंभ होने पर खुर्जा तहसीलको प्रथम स्थान मिला। तहसीलके तेरह सत्याग्रहियोंमें से पांच हमारे गांवके ही थे, जिनके नाम ये हैं:

१. पंडित खेतलराम, हमारे पुरोहित।

२. श्री कमलसिंह, मेरे ताअूजात भाअी और बालमित्र।

३. श्री भूलेसिंह, मेरे चाचाका पुत्र जो बड़ा होकर कांग्रेस कमेटीका मंत्री व खजांची रहा।

४. पंडित ढक्कनलाल, गांवके पासकी रामगढ़ीके रहनेवाले।

५. मैं स्वयं।

अिन तेरह सत्याग्रहियोंके जत्थेके नायक श्री बशीरभाअी पठान खुर्जाके प्रतिष्ठित पठान खानदानके वंशज थे। अुनकी लगन तथा सादा जीवन बड़ा अनुकरणीय था। श्री बशीरभाअीके पकड़े जानेके बाद जत्थेका नायक मैं बना। रोजाना नमक बनाया जाता था और पुलिस देखती रहती थी। कुछ लोग हल-चलके शौकीन थे। अिसलिअे तय किया गया कि तहसीलके सामने नमक बनाया जाय। तहसीलके सामने घासकी गंजियां लगी थीं। और पुलिस किसी न किसी गैर-कानूनी अपराधमें हमें पकड़नेकी फिक्रमें थी। अिसलिअे मैंने तहसीलके सामने नमक बनानेसे अिनकार कर दिया। अिससे डिक्टेटर घबराये कि अुन्होंने अैलान कर दिया है, अब नमक न बनानेसे लाज जायेगी। मैंने कहा कि यदि आसपास भीड़ जमा न हो और घासकी गंजियोंमें आग न लगने देनेका प्रबन्ध कोअी कर ले तो मैं नमक बनानेको तैयार हूं। डिक्टेटर श्री आनन्दस्वरूपजी बिस्मिल राजी हो गये। पुलिसने भी अजीब तैयारी कर रखी थी। जब हमने तहसीलके सामने चूल्हा बनाया तो पुलिसके सिपाही चूल्हेमें पैर रखकर बैठ गये। अिससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। क्योंकि हमारा ही हथियार अुन्होंने अपनाया। लेकिन हमें तो नमक बनाना ही था। हमने दूसरे स्थान पर आग जलाअी और वहीं चूल्हेका आयोजन करके नमक बनाया। पुलिसने वहां भी अहिंसाका बरताव किया। जब अुन्होंने अुबलती हुअी कढ़ाअी अुलटनेकी कोशिश की तो अुबला हुआ पानी मेरे हाथों पर गिर जानेसे मेरे हाथ जल गये, लेकिन और कोअी दुर्घटना नहीं हुअी। अिससे अहिंसामें मेरा विश्वास और भी बढ़ा।

दूसरी घटना मेरी मानसिक अहिंसाकी कसौटीकी दृष्टिसे अूपरकी घटनासे विपरीत ढंगसे घटी। खुर्जाके थानेदार और डिप्टी कलेक्टरने मिलकर खुर्जामें कलेक्टरका जुलूस निकालनेका प्रोग्राम बनाया। वे दिखाना चाहते थे कि कांग्रेस मर चुकी है। जब हमको अिसका पता चला तो हमने कांग्रेसका जुलूस निकालनेका निश्चय किया। हमारे साथी सबके सब जेल जा चुके थे। सिर्फ दो

चार बचे थे, जो पुलिसकी आंख बचाकर अपना काम कर रहे थे। मेरी और श्री खानचन्दजी गौतमकी अेक जोड़ी पैदल दूर-दूर देहातोंमें घूम रही थी। हमने देहातोंमें से काफी लोगोंको जुलूसके लिअे तैयार कर लिया था। जब यह समाचार थानेदारको मिला तो अुसने अेक चाल चली और हमारे अेक कमजोर साथीसे मिलकर कहा कि मैं कलेक्टरका जुलूस मुलतवी कर देता हूं, आप कांग्रेसका मुलतवी करवा दें। अुस समय वे भाअी खुर्जा कांग्रेसके अध्यक्ष थे। जब अुन्होंने अपना प्रस्ताव हमारे सामने रखा तो हमें जंचा नहीं और हम अपने निश्चय पर अटल रहे। हमने लोगोंको समझा दिया था कि शामको छह बजे बाजारमें अिधर-अुधर सौदा लेनेके बहाने दुकानों पर बिखरे रहें और हमारे जय बोलने पर सब जमा हो जायं। मैं और खानचन्दजी ठीक समय पर अनाजकी मंडीमें पहुंचे। और जेबमें से झंडा निकाल कर हाथकी लकड़ी पर फहरा दिया। बस, हमारे जय बोलते ही वानर-सेनाकी तरह हमारे साथी जमा हो गये। सभाका रूप बन गया। मैं पांच मिनट बोला। खानचन्दजीने अेक जोशीली कविता गाअी। बस फिर क्या था, अेक बड़ा जुलूस बन गया। जब तक पुलिस आअी तब तक तो हमारा जुलूस बाजारके मुख्य मुख्य भागोंमें घूम चुका था। बाजारमें जोश पैदा हो गया था। अिसी बीच पुलिस आअी और हम ग्यारह जनोंको पकड़कर थाने ले गअी। थानेदार मुझे पहचानता नहीं था। अंधेरा भी हो चुका था। खानचन्दजीको कुरसी पर बैठाया और हम नीचे बैठे। अुनसे मीठी-मीठी बातें करके हमारा बहुत-सा भेद जान लिया। जीजी हंसमुखदेवीके सत्तर साल बूढ़े पिताजीको भी पकड़ लिया, क्योंकि हमें अुनके घरमें खाना और आश्रय मिला करता था। कांग्रेस अध्यक्ष भी हमारी लपेटमें आ गये।

जब हमारे नाम लिखे जाने लगे और मेरा नाम आया तो थानेदारके तन-बदनमें आग लग गअी। अुसके मनमें था कि यह मेरा ही काम है। बस, मेरे अूपर वह बाजकी तरह टूट पड़ा। वह मेरा गला पकड़-कर छाती पर चढ़ बैठा और अनाप-शनाप गालियां बकने लगा। वह दाढ़ीवाला मुसलमान था। अुम्र भी पकी थी। मोटा-ताजा लाल बुझक्कड़ जैसा था। वह रूपरंगसे राक्षस जैसा ही लगता था। जब मेरे अूपर गुस्सेसे वह टूट पड़ा तो अुसका रूप और भी भयानक बन गया। साथी लोग अिस दृश्यसे कांप अुठे। अुनको लगा कि यह राक्षस मेरे प्राण लेकर ही छोड़ेगा। मुझे न

मालूम किस शक्तिने अहिंसाका बल दिया। बापूजीका स्मरण तो चल ही रहा था। बापूजीके ये शब्द कानमें गूंज रहे थे कि सत्याग्रही मन, वचन और कर्मसे अहिंसाका पालन करे। वचन और कर्मसे तो मैं हिंसा करनेकी स्थितिमें था ही नहीं। लेकिन मनको स्थिर रखना भी कठिन काम था। अुस राक्षसके मेरे अूपर प्रहार हो रहे थे और मैं नीचे पड़ा-पड़ा हंस रहा था। अुससे कह रहा था कि आप अिस तरह कांग्रेसको खतम नहीं कर सकते। खुद ही खतम होनेवाले हैं। ज्यों-ज्यों अुसका गुस्सा बढ़ता, त्यों-त्यों मुझे अुस पर दया और हंसी आती। आश्चर्यकी बात तो यह थी कि वह भारी भरकम लाल बुझक्कड़ मेरी छाती पर सवार था और अेक हाथसे गला दबाकर दूसरेसे मार रहा था। लेकिन न तो मुझे अुसका वजन महसूस होता था, न कहीं मार ही लग रही थी। या तो वह अपना वजन अपने घुटनों पर साधकर मुझे मारनेका नाटक कर रहा था। या अुसके हाथोंमें दम ही नहीं था। या मेरी रक्षा कोअी दैवी शक्ति कर रही थी। दृश्य तो बड़ा ही भयानक था। मेरे मूल स्वभावके अनुसार अगर मेरे हाथमें बन्दूक आ जाती तो मैं अुसे गोलीसे अुड़ा देता। मैं अुससे बहुत अच्छा बन्दूक चलाना जानता था, लेकिन मेरे मनमें हिंसाका भाव या क्षोभ तक नहीं था। मैं अन्त-तक हंसता ही रहा। मेरे जीवनकी वह अद्भुत घटना कही जायगी। यह बापूजीकी अहिंसाकी ही नशा था। मनमें यह विश्वास था कि 'जाको राखे साअियां, मार सके ना कोय'। भाअी खानचन्दजी अिस घटनाकी याद करके अुस थानेदारकी तरह दांत पीसकर अुसका नाटक करके मेरी हंसी अभी भी अुड़ाते रहते हैं। लेकिन मैं मानता हूं कि अिसमें मेरा पुरुषार्थ नहीं था। बापूजीके स्मरणने ही मेरी रक्षा की थी। मुझे आज भी आश्चर्य होता है कि मैं अुस समय अितना शान्त कैसे रह सका।

आगे चलकर आन्दोलन कुछ ठंडा पड़ा, जिससे मुझे सत्याग्रहकी लड़ाअीके सफल होनेमें सन्देह हो गया। मैं देहातोंमें घूम रहा था। अेक रोज अकेला अेक नहरकी शाखाके किनारे बैठकर भगवानसे प्रार्थना करने लगा। मैंने फौजमें रहते हुअे अंग्रेजोंकी सारी फौजी ताकतको देखा था। मेरे सामने अुनके हथियार, अुनकी फौज और अुनकी किलाबन्दीका चित्र नाचने लगा। बड़े बड़े जमींदार, व्यापारी, अफसर सब अंग्रेजोंके पक्षमें हैं। कांग्रेसमें बहुत थोड़े आदमी हैं, जिनके पास न खाने-पीनेका ठिकाना है,

न लड़ाअीके कोअी साधन हैं। तो अैसी सल्तनत पर बापूजीकी विजय कैसे होगी? अिस संदेहने मेरे मनको घेर लिया। परन्तु न मालूम किस शक्तिने मुझे सुझाया :

रावन रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयअु अधीरा।।
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा।।
नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना।।
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होअि सो स्यंदन आना।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे।।
अीस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर विज्ञान कठिन कोदंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद विप्र गुरुपूजा। अेहि सम विजय अुपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके।।

महा अजय संसार रिपु, जीति सकअि सो बीर।
जाके अस रथ होअि दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर।।

सचमुच मेरी अधीरता विभीषणके जैसी थी और मैंने रामके अुत्तरके सब गुण बापूमें देखे। बस, मेरे मनमें निश्चय हो गया कि बापू अिस लड़ाअीमें विजयी होंगे। और बापूके आन्दोलनके प्रति मेरी निष्ठामें जो कमी आअी थी वह फिरसे दृढ़ हो गअी। मुझे अटल विश्वास हो गया कि बापूका जन्म अिस रावणशाहीका नाश करनेके लिअे ही हुआ है।

५

साबरमती आश्रममें

गांधी-अिरविन-पैक्टके बाद जेलसे छूटने पर मेरे मनमें विचार आया कि अब तो व्यवस्थित रूपसे रचनात्मक काममें जुटनेकी योग्यता प्राप्त करनेके हेतुसे मुझे साबरमती आश्रममें पहुंच जाना चाहिये। मैंने आश्रमके मंत्री श्री नारणदास गांधीको* पत्र लिखा और अुन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मैं १९३१ की ५ जुलाअीको साबरमती आश्रम पहुंच गया और खादी-विद्यालयमें दाखिल हुआ।

पाखाना-सफाअी

मैं आश्रममें ता० ५ को पहुंचा और ता० ६ को ही मुझे पाखाना-सफाअीमें सम्मिलित होना पड़ा। आश्रममें रहनेवालोंके लिअे, चाहे वे विद्यार्थी हों या स्थायी सदस्य, सफाअीका काम स्वयं सीख लेना और करना अनिवार्य था। श्रद्धालु दर्शकोंको भी, जो तीन दिन आश्रममें ठहर सकते थे, अेक बार अिस काममें सम्मिलित होनेकी सलाह दी जाती थी। अितना कर लेनेके बाद ही अुनका आश्रम देखना संपूर्ण माना जाता था। अपना पहले दिनका अनुभवमें यहां देता हूं। मेरे साथी अेक बिहारी भाअी थे, जिनको सफाअीके काममें मुझे सहायता करनी थी, अथवा यों कहें कि जिनसे मुझे यह काम सीखना था। वे कअी दिनोंसे सफाअी करते आ रहे थे और सिखानेकी योग्यता रखते थे। बाल्टियां मैलेसे मुंह तक भरी हुअी थीं। अुन्हें बांसोंमें लटका कर खेतमें ले जाया गया। वहां मुझे सारी क्रियाअें बड़े प्रेमसे समझाअी गअीं। बदबू तो खूब आअी। लेकिन कुछ तो अुन भाअीके समझानेका ढंग आकर्षक था और कुछ मेरे मनकी पूर्व-तैयारी थी, अिसलिअे मुझे पहले दिन भी भंगीकामसे घृणा नहीं हुअी। और सफाअी पूरी करके जब मैंने साबरमती नदीमें स्नान किया तब तो बड़ा ही आनन्द आया। फिर तो यह काम मुझे प्रिय हो गया।

---

* नारणदास गांधी, बापूजीके भतीजे, साबरमती आश्रमके तत्कालीन मंत्री। सारे आश्रमवासियोंकी जवाबदारी बापूजीके बाद अुन पर थी। आजकल वे राजकोटमें रहते हैं और सौराष्ट्रके सब रचनात्मक कार्योंके सूत्रधार हैं।

जब जब मेरा नम्बर आता तभी मनमें प्रसन्नता होती। यह विचार भी मनमें आता कि बाहरकी सफाअीसे जब अितना आनन्द होता है, तो यदि अन्तरको धोना, पोंछना और स्वच्छ करना आ जावे तब तो न मालूम कितना आनन्द हो सकता है। वास्तवमें पाखाना-सफाअी आश्रमके जीवनका अेक अविभाज्य अंग है।

दिनचर्या व भोजन

आश्रममें अैसे ही विद्यार्थी या कार्यकर्त्ता टिकने पाते थे जिन्हें पाखाना-सफाअीके काममें जरा भी झिझक नहीं होती थी। शेष स्वयमेव चले जाते थे। पाखाना-सफाअी स्वतः किसीका भी पूरे दिनका काम नहीं था, वह शारीरिक श्रमके दैनिक कार्योंमें से अेक था। और सब लोगोंका बारी बारीसे अिसमें भाग लेना अनिवार्य था। आश्रमके पाखाने भी शहरोंके संडास जैसे नहीं थे। सफाअी करते समय क्वचित् ही मलमूत्रका हाथोंको स्पर्श हो पाता था। अिसमें मुख्य बात सिर्फ मनकी घृणा निकाल देनेकी थी। और मनसे यह घृणा निकाल देना आश्रममें रहनेकी अेक अनिवार्य शर्त थी। जो सिर्फ खादीका काम सीखनेके लिअे आश्रममें आते थे, अुनके लिअे भी यही नियम था।

आश्रममें भोजनका क्रम अिस प्रकार रहता था :

प्रातः ६॥ बजे — राब, डबल रोटी, दूध।

दोपहरको १०॥ बजे — रोटी, दाल, साग, चावल।

सायंकाल ५॥ बजे — खिचड़ी, डबल रोटी, साग।

दूध-घीके कूपन खरीदे जाते थे और अुनके बदलेमें जितना दूध जिसे आवश्यक हो मिल जाता था। खादी-विद्यार्थियोंको १२ रुपये मासिक छात्रवृत्ति मिला करती थी। भोजन-खर्च करीब ५ रुपये मासिक आता था। करीब २॥ रुपये फुटकर खर्च होते थे। शेष दूध-घीके लिअे बच रहते थे। कोअी विद्यार्थी अस्वस्थ हो गया हो तो विशेष मात्रामें दूध-घीकी व्यवस्थाकी जाती थी। कोअी कोअी तो दूध-घीका त्याग करके कुछ पैसे बचाते और अपने माता-पिताकी सहायताके लिअे भेजते थे।

कुछ परिचय

पुराने आश्रमवासियोंमें से कुछका परिचय यहां दिया जाता है।

श्री सुरेन्द्रनाथ गुप्ता १९१६ में बापूजीके आश्रममें प्रविष्ट हुअे। तबसे अेकनिष्ठ आश्रमवासी रहे। साबरमती आश्रम छोड़नेके बाद वे गुजरातके खेड़ा

जिलेके बोरियावी गांवमें ग्रामसेवाका काम करते रहे। आजकल वे समन्वय आश्रम, बोधगया (बिहार) में काम करते हैं। अिनसे मेरा परिचय आश्रममें विशेष कारणसे हुआ। आश्रममें पानी पीनेकी प्रथा अैसी थी कि पात्रको मुंहसे अूंचा रखकर बिना औक लगाये पानी सीधा मुंहमें गिराते थे। अैसा करनेमें पात्र कभी कभी मुंहसे छू भी जाता था। अिसलिअे मैं सार्वजनिक बरतनसे पानी पीना पसन्द नहीं करता था। दूसरे, आश्रममें आम तौर पर गुजराती भाषा बोली जाती थी, अिससे हिन्दीमें बातें करनेकी मेरी भूख पूरी नहीं होती थी। कोअी हिन्दी बोलनेवाला मिलता तो मुझे बड़ी खुशी होती। बरेलीके श्री शीतलसहायजी अेक बार आश्रममें आये। अुन्हें जब मेरी अुपरोक्त कठिनाअियोंका पता चला, तो अुन्होंने मेरा परिचय श्री सुरेन्द्रजीसे कराया और कहा कि आप अपनी पानीकी प्यास और हिन्दीमें बोलनेकी भूख दोनों अिनके पास आकर मिटा सकते हैं। तबसे हमारा परिचय दिनों-दिन बढ़ता गया।

मीराबहनका थोड़ा अधिक परिचय यहां देता हूं। वे ७ नवंबर, १९२५ को बापूजीके पास आअीं और बड़े प्रेम और श्रद्धासे बापूजीको पिता ही नहीं वरन् अिस जीवनका मार्गदर्शक बनाकर अुनकी सेवामें तल्लीन हो गअीं। बापूजीने भी सगी लड़कीकी तरह अुनकी संभाल की। बापूजीके साबरमतीके निवास-स्थान 'हृदयकुंज' के पासवाली नदीतटकी दो कोठरियोंमें से अेकमें वे रहती थीं। जब वे भोजनके समय अपनी कोठरीमें आतीं और मैं अुनके हाथों परसे दो पक्षियोंको, जो अुनके पासवाले नीम पर रहते थे, किशमिश खाते देखता, तो मुझे सहसा प्राचीन कालके अुन आश्रमोंका स्मरण हो आता था, जहां मनुष्य अन्य प्राणियोंके साथ भयरहित वातावरणमें रहा करते थे। मीराबहनका सेवाग्रामका हाल तो अिस पुस्तकमें आगे बहुत आया है।

आश्रममें दोनों समयकी प्रार्थना स्व० पंडित नारायण मोरेश्वर खरे कराया करते थे। वे संगीतशास्त्री थे और बड़े प्रेम व तल्लीनतासे भजन गाया करते थे। अेक दिन रामायणके पारायणके समय, जो प्रातः ५।। बजेसे आरंभ होकर रातके १० बजे समाप्त हुआ, मैं भी अुनके साथ शरीक था। बीचमें सिर्फ १ घंटा आराम किया था, तथा ३५ मिनट फलाहारमें लगे थे। मैंने अिस पारायणके समय अुनकी गहरी भक्ति और कोमल हृदयके भरपूर

दर्शन किये। बार बार प्रसंग आने पर अेकाध मिनट तक अुनका गला रुंध जाता था और आंखोंसे आंसू बह निकलते थे। अुनके पुत्र रामभाअू तथा सुपुत्री मथुरी दोनों संगीतमें प्रवीण निकले। पंडितजी पूज्य नाथजीके भक्त थे। हरिपुरा कांग्रेसके अवसर पर वे वहीं अचानक बीमार पड़ गये और अधिवेशन पूरा होनेके पहले ही अुनका स्वर्गवास हो गया।

पूज्य जमनालालजी बजाजका भी प्रथम परिचय मुझे साबरमती आश्रममें ही ता० ३०–७–'३१ को हुआ था। अुन्होंने हम विद्यार्थियोंको आश्रमसे सत्य, अहिंसा, त्याग, सेवाभाव आदि सद्‌वृत्तियां सीखकर जानेकी सलाह दी थी।

पूज्य राजेन्द्रबाबूसे भी प्रथम परिचय यहीं हुआ था। अुन्होंने हमसे कहा कि वे अपनेको अुपदेश देनेका अधिकारी नहीं मानते, बल्कि स्वयं हम जैसे बननेकी वृत्ति रखते हैं। अुन्होंने हमें यह सलाह दी कि जो कुछ हम यहांसे सीख कर जायें, अुसे जीवनमें अुतार कर अुससे जनताको लाभ पहुंचायें।

पू० गंगाबहन वैद्य मांकी तरह आश्रमकी बहनोंके स्वास्थ्यकी संभाल बड़े ही प्रेमसे करती थीं। अुनका स्वभाव बड़ा ही सरल और दयालु था। सचमुच वे गंगा मैया-सी शीतल और पवित्र थीं। सब भाअी-बहनोंको शीतलता पहुंचाती थीं। आज भी ७५ सालकी अुम्रमें वे गोमाताकी हाथसे सेवा करती हैं। अुनको गोसेवामें मगन देखकर सहज रूपसे अुनके चरणोंमें हमारा सिर झुक जाता है। अुनकी प्रत्येक बात और कार्यसे पद-पद पर बापूजीका स्मरण हो आता है। अुनका अुत्साह और कार्यक्षमता देखकर चित्तमें प्रसन्नता होती है। अैसा अुदार दिल और स्वस्थ शरीर प्रभु सबको दे यही प्रार्थना है।

आश्रमका दैनिक कार्य प्रातः ४ बजेसे रातके ८ बजे तक घड़ीकी सुअियोंके साथ चला करता था। अुसे करते हुअे रातको दो घंटेकी चौकी देना मुझे अखरता था। मैंने आश्रमके मंत्री श्री नारणदास गांधीसे यह प्रश्न किया था कि अस्तेय-व्रतका पालन करनेवाले जहां रहते हों वहां चोरीकी आशंका क्यों हो? अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझे समझाया था कि आश्रमकी संपत्ति किसीकी निजी संपत्ति न होकर सार्वजनिक संपत्ति है। अुसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। अिस प्रकारकी अनेक चर्चाअें अुनसे हुआ करती थीं और वे बड़ी योग्यता और प्रेमसे हमारी शंकाअें निवारण करते थे। वे अपना सारा बचा हुआ समय कताअीमें लगाते थे। अुनके यहां अुनके हाथकते सूतकी खादीका ढेर

लगा रहता था। सुना है कि अुनकी कताअीका क्रम कभी टूटा नहीं और आज भी वैसा ही जारी है।

महिलाओंमें अुल्लेखनीय परिचय कुमारी प्रेमाबहन कंटकसे हुआ था। वे अुस समय लड़कियोंके छात्रालयकी व्यवस्थापिका थीं और लड़कियोंको पढ़ाती भी थीं। अुनका स्वभाव, रोब, चाल-ढाल सब फौजी अफसरके सदृश थे। अुनकी कठोरताके खिलाफ शिकायतें खूब होती थीं, लेकिन बापूजी तथा श्री नारणदासभाअी अुनके तेज स्वभावको जानकर भी अुनकी शक्तिका विकास अपने ढंगसे करना चाहते थे। अिसलिअे विद्यार्थियोंको और प्रेमाबहनको समझाते थे। प्रेमाबहनकी बापूजी तथा नारणदासभाअी पर अत्यन्त श्रद्धा थी। अुन पर भी बापूजीके समझानेका परिणाम हुआ और अुनका जीवन आज अूंचे शिखर पर जा पहुंचा है। आजकल वे पूनाके पास सासवड़ नामक स्थानमें रचनात्मक कार्यका बड़ा सुन्दर आश्रम चला रही हैं।

अेक दिन शामको विद्यालयकी छुट्टी होने पर जब मैं बाहर आया तो देखा कि अेक मुसलमान आगन्तुक यह पूछ रहे हैं कि यहां अिमाम साहब नामके जो प्रसिद्ध मुसलमान रहते हैं अुनका घर कहां है। अुनकी बोलीसे मैंने जाना कि वे अुत्तरप्रदेशके हैं। पूछने पर अुन्होंने अपनको बुलन्दशहरका वकील बताया और कहा कि मैं अिस वक्त नवाब छतारीको गोलमेज कान्फरेन्सके लिअे बम्बअीसे बिदा करके लौटा हूं और आश्रम देखने यहां चला आया हूं। लेकिन अब अिमाम साहबसे मिलनेके लिअे वक्त कम रह गया है, अिसलिअे बिना मिले ही चला जाअूंगा। मैंने सोचा कि अपने जिलेका आदमी है, अुसके काम आ सकूं तो अच्छा है। अिसलिअे मैं अुन्हें आग्रहपूर्वक हाथ पकड़कर अिमाम साहबके बंगले पर ले गया। अिमाम साहबने अुनका यथोचित सत्कार किया। मैंने भी अुनके प्रथम दर्शन किये। अुनके चेहरेको देखकर मेरे मनमें बड़ा आदरभाव पैदा हुआ। बातों बातोंमें खादीका प्रसंग छिड़ गया। वकील साहबने फरमाया कि यों तो खादीकी बात ठीक है, लेकिन हिन्दुओंका रुख हमारे लिअे अच्छा नहीं है। अितना कहना था कि अिमाम साहब बिजलीकी तरह कड़ककर बोले, "खादीमें हिन्दू-मुस्लिमका सवाल कैसे अुठता है? क्या खादी हिन्दुओंकी बपौती है? अगर असा ही हो तो मैं क्या यहां झख मारनेको पड़ा हूं? खादी तो हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अीसाअी सभीके लिअे अेकसी है। हिन्दू स्त्रियां तो बाहर निकलकर और भी काम कर सकती हैं, लेकिन

मुसलमान पर्दानशीन औरतोंके लिअे तो चरखा रोजीका बड़ा अच्छा जरिया है। मुसलमान धुनते हैं और बुनते भी हैं। अगर हिसाब निकाला जाय तो खादीसे मुसलमानोंको पहुंचनेवाला फायदा हिन्दुओंसे कम नहीं पाया जायगा। आप जैसे पढ़े-लिखे लोग यह बात नहीं समझते और खादीमें भी हिन्दू-मुस्लिम सवाल खड़ा करते हैं यह अफसोसकी बात है।" वकील साहबका मुंह अुतर गया। वे कुछ भी अुत्तर दिये बिना सलाम करके चलते बने। मैंने अिमाम साहब जैसे तेजस्वी और विवेकशील स्पष्टवक्ताके दर्शन करके अपने भाग्यको सराहा और साथ ही खादीका और भी अधिक महत्त्व समझा।

अिमाम साहब अपने परिवारके साथ जीवनभर साबरमती आश्रममें रहे और वहीं सेवामय जीवन बिताते बिताते अुनका अवसान हुआ। अुनकी मृत्युके विषयमें बापूजीने यरवडा मंदिरसे ता० ३०–५–'३२ के पत्रमें आश्रमवासियोंको लिखा था: "अिमाम साहबका अकेला ही मुसलमान कुटुम्ब अनन्य भक्तिसे आश्रममें बसा। अुन्होंने अपनी मृत्युसे हमारे और मुसलमानोंके बीच न टूटने-वाली गांठ बांध दी है। अिमाम साहब अपने आपको अिस्लामका प्रतिनिधि मानते थे और अुसी रूपमें आश्रममें आये थे।"

अुनकी पुत्री अमीनाबहन और जामाता श्री गुलामरसूल कुरेशी (कुरेशीभाअी) से मेरा आज भी घनिष्ठ संबंध है। दोनों साबरमती आश्रममें अुसी मकानमें रहते हैं। जब कभी मैं अुधर जा निकलता हूं तो वे मुझे अपने पास ही ठहरने, खाने-पीने वगैराका आग्रह करते हैं। मुझे भी अैसा किये बिना संतोष नहीं होता। अिसलिअे जाते ही कह देता हूं कि यहीं भोजन करूंगा। कभी अुधर जाकर भी अुनसे मिलना न हो तो पता चलने पर वे दोनों दुःखी होते हैं। अमीनाबहनके सेवाभावका मेरे मन पर बहुत असर रहा है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता। अुनके जैसी सेवाभावी बहन मैंने आश्रममें दूसरी नहीं देखी।

पंडित तोतारामजी सनाढ्यने आश्रममें ही रहते रहते अपना शरीर छोड़ा। और यह लिखते हुअे आनन्द होता है कि अन्तिम दिनोंमें शक्तिके अभावमें जब अुन्हें सेवा तथा देखरेखकी जरूरत हुअी, तब अमीनाबहनने ठीक वैसे ही श्रद्धा तथा प्रेमसे अुनकी सेवा की, जैसे अेक पुत्री अपने पिताकी करती है। अिससे मेरे हृदयमें अिस बहनके लिअे गहरा आदर है।

पंडित तोतारामजी साबरमती आश्रमकी खेतीके संचालक थे। अुन्होंने देशके लिअे कितना कष्ट सहन किया था, अिसका सही पता अुनकी 'फीजीमें

मेरे २१ वर्ष' नामक पुस्तक पढ़नेसे चल सकता है। अुनके साथ मेरा परिचय तो तब हुआ जब १९३१ में मैं आश्रममें खादीका विद्यार्थी था। अुसी समय बंगालमें तूफानके भारी प्रकोपसे लोग संकटमें पड़ गये थे। अुनकी मदद करनेके लिअे अेक देशव्यापी अपील निकली। आश्रमके पास अैसी कोअी पूंजी तो थी नहीं, जिसमें से दान देनेका अधिकार आश्रमको हो। अिसलिअे यह तय हुआ कि आश्रमवासी अेक रोज मजदूरी करें और जो पैसा प्राप्त हो अुसे अुनकी सहायताके लिअे भेजें। काम खेती और गोशाला विभागमें करना था। दूसरे दिन सब आश्रमवासी काममें लगे और पंडितजीने सबको काम बांट दिया। काम ठेकेसे दिया गया था; मुझे अेक कुअेंकी टूटी हुअी दीवारके मलबेसे अींट साफ करके अलग चट्टा लगानेका काम मिला था। अुस रोजकी मेरी मजदूरीके ३ रुपये १० आने हुअे। मैंने अितना जी-तोड़ परिश्रम किया कि अुसकी थकानसे दूसरे दिन मुझे बुखार आ गया। आश्रमके मंत्री श्री नारणदासजी गांधीने अिसके लिअे मुझे मीठा अुलाहना भी दिया था। पंडित तोतारामजी अुत्तरप्रदेशके फैजाबाद जिलेके थे। अुनकी और मेरी भाषा अेक थी, अिसलिअे भी अुनसे परिचय करनेमें मुझे देर न लगी। वे ठेठ देहाती हिन्दी बोलते थे। जब सन् १९३३ के आन्दोलनके समय बापूजीने सरकारको सौंपनेके लिअे आश्रम छोड़ दिया और सरकारने भी आश्रम पर कब्जा नहीं किया, तब अुसकी रक्षा पंडितजीने की थी।

अुनकी पत्नी श्री गंगाबहनकी मृत्यु पर बापूजीने लिखा था कि "गंगाबहनने आश्रमको अपनी सेवासे शोभायमान किया है। अुनके स्मरणोंको याद करते करते अब भी मैं थका नहीं हूं। वह लगभग निरक्षर होने पर भी ज्ञानी थीं। जो बच्चे अुन्हें मिले अुनकी सार-संभाल अुन्होंने अपने बच्चोंकी तरह की। अुन्होंने किसी दिन किसीके साथ तकरार की हो या किसी पर वे नाराज हुअी हों अिसकी जानकारी मुझे नहीं है। अुनको न तो जीनेका अुल्लास था, न मरनेका भय था। अुन्होंने हंसते-हंसते मृत्युको गले लगाया। अुन्होंने मरनेकी कला हस्तगत कर ली थी।"

पंडित तोतारामजी कुशल किसान तो थे ही, साथ ही बड़े सरल, प्रेमी, मिलनसार, लेकिन अपनी बात पर डटे रहनेवाले थे। वे कबीरको अपना गुरु मानते थे और अुनके भजन बड़ी श्रद्धा और प्रेमसे गाया करते थे। पंडितजीका कहना था कि दिन कामके लिअे और रात भगवानके भजनके लिअे है। सच-

मुच ही वे रातका बहुतसा समय भगवानके भजनमें बिताते थे। अुनका कहना था कि काम पूरा करनेके बाद मेरे चित्त पर दिनके कामका कोओी भार या लगाव नहीं रहता है। मैं रातको बिलकुल मुक्त रहता हूं। जब वे भजन गाते तो आसपासका सारा वातावरण सात्त्विक आनन्दके भावोंसे भर जाता था। अेक भजन 'सखी सैर करूं अुस देशकी मोह नदीसे पार बसे' गाते गाते वे आत्म-विभोर हो जाते थे। जब मेरे मनमें किसी प्रकारकी बेचैनी होती तब अुनके पास जानेसे मनको आराम मिलता। वे कहते, "अरे लगा रहे दिल किनारेसे, कभी तो लहर आयेगी। तुम तो क्षत्रिय हो और फौजमें भी तो निशाना लगाना सीखा है। तो संयमकी ढाल लेकर विचारके तीरोंसे अिन संसारके काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर शत्रुओंके सीनेमें अैसे तानके मारो जो आरपार निकल जायं। लला, हिम्मत क्यों हारत हो? बापूजीसे और सीखना ही कहा है। जा डोकराके पास और है ही तो कहा। बस, रामनामकी लूट है लूटी जाय तो लूट, अन्तकाल पछतायगो प्राण जायंगे छूट। बगलमें ठोसा और मजलका भरोसा। जा मन रूपी मक्काकी रोटी खूब मसल डारो और जामें भगवान गुनगानको गुड़ डारि द्यो। नेक सो ज्ञानको घी छोड़ द्यो। बस, मलीदा बनायके कांखमें दबाय ल्यो। जब काम, क्रोध, लोभ, मोहकी भूख सतावे तब नेक सो काढ़िके खाय ल्यो। जब थको तो संतरूपी वृक्षकी छायामें थोड़ो सो विश्राम कर ल्यो। रामनामकी कथा रूपी पानी पीते चलो। और तुम्हें का चाहिये?" जब पंडितजी अपने अिन देहाती मंत्रोंका अुच्चारण करते करते गद्गद हो जाते, तब मैं भी चित्रवत् अुनके अिन अमृत-वचनोंका पान करके आत्म-विभोर हो जाता था।

बापूजीके सिद्धान्तोंको पंडितजीने समझ-बूझ कर अपने जीवनमें अुतारा था। अुनके जीवनमें लेशमात्र भी आलस्य या अिधर-अुधरकी किसी चमक-दमकका दाग नहीं था। अुनका मन स्फटिक जैसा निर्मल था। आश्रमके किसी प्रकारके आपसी मनमुटावसे अुनका कोओी संबंध नहीं रहता था। वे भले और अुनका काम भला। जब मैं बापूजीके साथकी पुण्यस्मृतियोंका स्मरण करता हूं, तो पंडित तोतारामजीके मेरे प्रति पुत्रवत् स्नेहको कैसे भूल सकता हूं?

पंडितजीने आखिरकी घड़ी तक आश्रमकी अमूल्य सेवा की और अपने क्षणभंगुर शरीरको भी आश्रमकी ही पवित्र भूमिको अर्पण कर दिया।

'राम ते अधिक राम कर दासा' अिस भावनासे मैं पंडितजीके चरणोंमें अपनी नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

पू० नाथजीके बोध

साबरमती आश्रममें आध्यात्मिक दृष्टिके लोगोंसे परिचय करनेकी मेरी सहज वृत्ति रहती थी। अैसे परिचयोंमें से प्रमुख परिचय पूज्य केदारनाथजीका हुआ। पूज्य नाथजी आश्रममें कभी कभी आया करते थे। पूज्य किशोरलालभाअी, रमणीकलालभाअी, सुरेन्द्रजी, गंगाबहन वैद्य अित्यादि अुनके शिष्य हैं। मेरे आश्रममें रहते हुअे पूज्य नाथजी जब पहली बार आये तब सुरेन्द्रजीने अुनसे मेरा परिचय कराया और अुनके सत्संगके लिअे भी प्रेरित किया। मैं समय मांग कर अुनके पास जाकर अपनी आध्यात्मिक शंकाओंका निवारण करने लगा। अिसकी अति संक्षिप्त झांकी मैं पाठकोंको यहां कराता हूं।

प्रश्न: 'तृण सम सिद्धि तीन गुण त्यागी' अिसका आप क्या अर्थ करते हैं?

अुत्तर: अिसका अर्थ अैसा नहीं समझना चाहिये कि किसी भी दशामें तीन गुणोंका नितान्त अभाव हो जाता है। यदि वैसा हो जाय तो जड़ अवस्था प्राप्त हो जाय। अिसलिअे त्रिगुणातीतका अर्थ तमोगुण और रजोगुणका अत्यन्त कम होना और सत्त्वगुणकी प्रधानता होना अितना ही है।

पूज्य नाथजीके सामने मैंने अपनी सारी दुर्बलताअें अर्थात् मनकी चंचलता, क्रोध, अभिमान, अपमानकी असहिष्णुता, किसी संस्था या व्यक्तिकी अधीनतामें न रह सकना, नम्रताकी कमी अित्यादि ब्यौरेवार स्पष्ट शब्दोंमें रखनेका प्रयत्न किया तथा अुनसे कअी आध्यात्मिक प्रश्न अिस आशयके किये कि अीश्वर-प्राप्ति किस अवस्थाका नाम है, अुसका साधन क्या है, शान्तिमय जीवन जीनेकी कला कैसे हाथ लग सकती है, अित्यादि। अुनके अुत्तरोंका सार यहां मेरी बुद्धिके अनुसार देता हूं। पूज्य नाथजीका ज्ञान तो अगाध है। मेरी अिन पंक्तियोंसे कोअी पाठक वाद-विवाद अुत्पन्न न करें। केवल सामान्य ज्ञानके हेतुसे ही यहां मैं अुसे पाठकोंके समक्ष रखता हूं।

अीश्वर कोअी अैसी शक्ति नहीं है, जिसे जानकर ही मनुष्य पूर्ण हो जाता हो। परन्तु वह अेक प्रकारका ज्ञान है। अीश्वरके साथ तद्रूप हो जानेकी कल्पनासे मानव-समाजका कल्याण होता हो अैसा भी नहीं है। जो लोग

अीश्वरको सर्व-शक्तिमान तथा सर्वव्यापी तो मानते हैं, लेकिन पाप करनेसे नहीं चूकते, अैसे लोगोंका कल्याण कैसे हो सकेगा? अीश्वरकी कल्पना और अुसकी प्राप्तिके नाम पर बहुतसा दम्भ और स्वार्थ दुनियामें चलता है। अीश्वर जगतको चलानेवाला परम तत्त्व है। अुसकी प्राप्तिकी या अुसमें तद्रूप होनेकी आवश्यकता ही क्या है? अीश्वरमें मिलकर जन्म-मरणसे मुक्त हो जाना, अुसके स्वरूप-चिन्तनमें ही मग्न रहना, ये दोनों बातें केवल कल्पनाके आधार पर खड़ी हैं। जो वस्तु या तत्त्व प्रत्यक्ष अनुभव या ज्ञानमें न आ सके अुसकी कल्पना करना, अुसके लिअे प्रयत्न करना व्यर्थ ही शक्तिका व्यय करना है। जो ज्ञान पुस्तकोंमें अीश्वरका प्रतिपादन करता है वह कल्पनासे लिखा गया है। अीश्वर वह तत्त्व है जिससे जगतको चेतना मिलती है। अुसका भले-बुरेसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। जगतका कार्य व्यवस्थित चले अिस तरहका हमारा जीवन होना चाहिये। जगतका कार्य तभी व्यवस्थित चल सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अपना अपना कार्य ठीक रीतिसे करता रहे। काम, क्रोध, मोह, लोभ, द्वेषादि — जो मनुष्यके प्रकृति-धर्म हैं — मर्यादामें रहें। अुनका समूल नष्ट होना असंभव है। अुनमें शुद्धि लानेका प्रयास करना चाहिये और अुन्हें सात्त्विक बनानेका भी प्रयत्न करना चाहिये। जैसे क्रोध दूसरेकी रक्षाके लिअे किया जाय तो वह सात्त्विक माना जायगा। कोअी भी गुण जब केवल स्वार्थके लिअे होता है अथवा मर्यादासे अधिक होता है तब हानि करता है। वस्तुका मूल्य अुसके अुपयोगमें है। जिस अन्न-जलसे शरीर पुष्ट होता है अुसीके अमर्यादित सेवनसे मृत्यु तक हो जाती है। विवेकसे काम लेना चाहिये। खुद कमसे कम कष्ट अुठाओ और दूसरोंको देना पड़े तो कमसे कम कष्ट दो। दूसरोंके लिअे अधिकसे अधिक परिश्रम करो। अपने प्रेमका घेरा सदा बढ़ाते रहो। किसीके साथ हुअे प्रेमको कम न होने दो, अुसे बढ़ाते ही रहो। जैसे हम अपने शरीरकी चिन्ता रखते हैं वैसे ही कुटुम्बकी, ग्रामकी, देशकी, मानव-जातिकी, प्राणीमात्रकी, जड़-चेतन संपूर्ण जगतकी यथार्थ चिन्ता करना, अुसके साथ मेल साधना तथा अुसका रक्षण करना हम सीख जायं, तो आज जगतमें अव्यवस्थाके कारण जो दुःख व्याप्त हैं वे टल जायं। दिनमें अेक या दो बार ही नहीं, बल्कि प्रतिक्षण अीश्वरको सामने रखकर विचारपूर्वक बरताव करना चाहिये। यदि कोअी गलती हो जाय तो तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिये। और अैसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे कभी

अैसी भूल न होने पाये जिसके लिअे बादमें पश्चात्ताप हो। जीविकाका साधन शुद्ध, स्वाश्रयी और जगतके लिअे कल्याणकारी होना चाहिये। हम अपने अुद्योग द्वारा जो कुछ अुत्पन्न करें अुसमें जगतका पोषण व श्रेय होना चाहिये। जैसे अन्न, वस्त्र, अीख, गोपालन अित्यादि। किसी प्रकारके मादक द्रव्य जैसे तम्बाकू, अफीम, शराब, अित्यादि अुत्पन्न न करें।

ज्यों ज्यों सद्‌गुणोंकी वृद्धि होगी, त्यों त्यों दुर्गुण मिटते जायंगे। अिसलिअे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अपरिग्रह, प्रामाणिकता, दया, करुणा, मैत्री, सरलता आदि सात्त्विक गुणोंकी वृद्धि करनी चाहिये।

गीताके निष्काम कर्म पर पूज्य नाथजीने विशेष भार दिया और कहा: अपने कार्यसे जो संतोष मिल जाय वही सच्चा सुख है। अिसकी तुलनामें आत्मानंद, परमानन्द वगैरा सब कोरी कल्पनाअें हैं। अपनेमें आकर्षण-शक्ति पैदा करनेकी आवश्यकता है। अुन्होंने नेपोलियन बोनापार्टका छूटती तोपके पीछे गहरी नींद लेनेका अुदाहरण देकर मनको अेकाग्र करने पर जोर दिया और कहा, समाजके संघर्षमें रहकर अपनी मनोवृत्तियां अंकुशमें रहें, तब समझना चाहिये कि हमारा कुछ विकास हुआ है। अेकान्तमें शान्त रहना कोअी पुरुषार्थ नहीं है। लेकिन समाजमें मर्यादाओंमें रहना चाहिये। जो कार्य अंगीकार किये हों अुनको ठीक तरहसे पूरा करना चाहिये।

दूसरेकी बातका अच्छेसे अच्छा अर्थ लेना चाहिये। थोड़ीसी बात पर नाराज होकर किसीसे मिलनेवाले लाभसे वंचित हो जाना भूल है। गलतफहमी हो तो बात करके अुसे दूर कर लेना चाहिये।

सुबह शाम स्वस्थ चित्तसे बैठकर जिस तत्त्वसे हमें चेतना मिलती है अुस अीश्वर-तत्त्वका विचार करना चाहिये। अुसी तत्त्वसे मुझे शक्ति मिले, मेरी शुद्धता बढ़े, मेरे कुसंस्कारोंका नाश हो, अैसे शुभ संकल्प करने चाहिये। अपनी मनोवृत्तिका निरीक्षण करना चाहिये। और जो कमी ध्यानमें आये अुसको दूर करनेका निश्चय करना चाहिये। अिस प्रकारकी प्रार्थनाकी परम आवश्यकता है।

सन् १९०२ में अेक प्रकारकी निराशा छाअी हुअी थी तब मेरे मनमें (पूज्य नाथजीके मनमें) अैसा विचार आया कि अैसी शक्ति प्राप्त की जाय जिससे राष्ट्रका कल्याण हो, मानव-समाज सुखी और व्यवस्थित हो। अिस अुद्देश्यसे घर छोड़कर मैं साधनामें जा लगा। हिमालयमें तथा अन्य स्थानोंमें

कुछ ध्यान-धारणा तथा वेदान्तका अभ्यास किया। परन्तु अुससे कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ। कअी साधुओंके पास अभ्यास किया। फिर जब प्राप्त किये हुअे ज्ञान तथा अभ्यासकी नींव पर मैंने स्वतंत्र विचार करना शुरू किया तब मुझे समाधान हुआ। मैंने जो समझा अुसका दूसरोंके साथ विचार किया। लोगोंको मेरा विचार पसंद आया। अब जिन लोगोंके साथ संबंध हो गया है अुनके आध्यात्मिक समाधान तथा सामाजिक कार्यके लिअे अिधर-अुधर जाता हूं। किसी खास प्रकारका अुद्देश्य नहीं है।

* * *

धीरे-धीरे पूज्य नाथजीके साथ मेरा संबंध अितना गाढ़ हो गया कि बापूजी मुझे नाथजीका आदमी समझने लगे। अब जब कभी मुझे समय मिलता है मैं अुनके पास जाकर दस बारह दिन रह आता हूं। मुझे बापूजीके पास टिकाये रखनेमें पूज्य नाथजीका बहुत हाथ रहा है। जब कभी मैं बापूजीके सामने अपना चले जानेका अिरादा प्रगट करता, तब वे यही कहते, "जाओ, नाथके पास।" और मैं चला भी जाता। थोड़े ही दिनोंमें नाथजी मुझे समझा-बुझाकर बापूजीके पास भेज देते और कहते कि तुम्हारे लिअे बापूजीके सान्निध्यसे अधिक अच्छा स्थान और कहीं नहीं है। और अुधर बापूजीके समक्ष मेरी यह वकालत करते कि अिसका रोष क्षणिक होता है और आपके पास रहनेसे ही अिसकी शक्तिका सही अुपयोग हो सकेगा। पूज्य नाथजीका स्वभाव बड़ा ही प्रेमल है। अुनके अंतरमें भक्तिका झरना सतत बहता रहता है। प्रातःकालमें जब वे तुकारामके अभंगोंमें मग्न होते हैं और ज्ञानेश्वरीकी ओवियोंकी झड़ी लगाते हैं, अुस समय महात्मा तुलसीदासजीकी यह चौपाअी याद आ जाती है:

सत संगति मुद मंगल मूला।
सोअी फल सिधि सब साधन फूला॥

वे बहुत कम बोलते हैं और बहुत कम लिखते हैं। लेकिन जो कुछ वे बोलते और लिखते हैं वह 'कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी' अर्थात् सत्य और प्रिय तथा विवेकयुक्त बोलते और लिखते हैं। अुनके अिन्हीं विचारोंमें से 'विवेक और साधना'* नामक पुस्तककी रचना हुअी है, जो आध्यात्मिक

* नवजीवन प्रकाशन मंदिरसे प्रकाशित। कीमत रु० ४.००; डाकखर्च रु० १.१९।

साधकों और विचारकोंके लिअे बड़ी ही मनन करने योग्य है। अुनका सहज झुकाव निवृत्ति-मार्गकी ओर है। लेकिन भाअियोंकी गुत्थियां सुलझानेकी, रोगियोंकी सेवा करनेकी और आजकल व्यवहार-शुद्धिकी बड़ी प्रवृत्तिकी जिम्मेवारी अुन्होंने अपने सिर पर ले रखी है। पूज्य किशोरलालभाअी जैसे बुद्धिशाली अपने वैराग्यके हथियार जमीन पर रखकर अन्तिम श्वास तक सेवामय प्रवृत्तिमें डूबे रहे, अुसमें पूज्य नाथजीका ही प्रभाव काम करता था।

*　　　*　　　*

बापूजीके साथ खादी-विद्यार्थियोंके प्रश्नोत्तर

जिस समयकी यह बात है अुस समय बापूजी आश्रममें नहीं रहते थे। बारडोली या बाहर रहते थे। जब कभी अहमदाबाद आते थे तो गुजरात विद्यापीठमें ठहरते थे। आश्रममें केवल बीमारोंको देखनेके लिअे ही आते थे। अेक दफा आये तब हम खादीके विद्यार्थियोंको मंत्रीजीके आग्रहसे अुन्होंने समय दिया। बापूजीने कहा कि कुछ पूछना हो तो पूछो। श्री अब्बासभाअी[1] ने प्रश्न पूछा: "आप आसमानी और सुलतानीकी बात बार बार किया करते हैं। आसमानीका अर्थ क्या है?"

बापूजीने कहा, "अंतरात्माकी आवाज ही आसमानी है। ज्यों-ज्यों तुम बाहरकी आवाजसे मनको हटाते जाओगे, त्यों-त्यों तुम्हें आत्माकी आवाज सुनाअी पड़ेगी। समझ लो कि सारंगीकी आवाज मधुर होने पर भी ढोलकी खराब आवाजमें नहीं सुन पड़ती। अैसे ही अंतरकी आवाज सच्ची और मधुर होने पर भी सांसारिक विषयोंकी ढोलरूपी आवाजमें नहीं सुन पड़ती। बस यही आसमानीका अर्थ है। विषयोंसे मनको हटाते जाओगे तो आसमानी सुननेकी शक्ति पैदा हो जायगी। तुम अपनी निर्दोषतासे दूसरोंके दोषोंको दूर कर सकते हो।"

अेक भाअीने प्रश्न पूछा, "क्या आप नाटक पसंद करते हैं?"

बापूजीने कहा, "यदि भगवद्बुद्धिसे किया जाय तो बच्चोंके खेलके बतौर करनेमें मैं कोअी हानि नहीं समझता।"

---

१. श्री अब्बासभाअी सौराष्ट्रके थे। आश्रममें आश्रमवासीके रूपमें रहकर खादी-विद्यालयमें खादी-शिक्षकका कार्य करते थे।

अुसी दिन आश्रममें अेक भाअीने सांप मारा था।[1] बापूजीसे अेक आश्रम-वासीने पूछा कि क्या आश्रममें अैसा कर सकते हैं? बापूजीने कहा, "हरगिज नहीं। परन्तु मैं रामदास[2] को दोषी नहीं कह सकता। क्योंकि मेरे मनमें सांपके लिअे अितनी दया नहीं है। सांपके काटनेसे किसी बच्चेकी मृत्यु हो जाने पर मुझे जितना दुःख होता अुतना सांपके मरनेसे नहीं हुआ। यदि मुझे सांपके मरनेका भी अुतना ही दुःख होता जितना बच्चेके मरनेसे होता, तो मैं रामदाससे कह देता कि तुम आश्रमसे भाग जाओ। परन्तु मैं भी अभी सांपसे डरता हूं, फिर तुमको निर्भय कैसे कर सकता हूं? हां, अैसा बनना जरूर चाहता हूं। वैसे तो हम और सांप सब संसाररूपी बड़े सांपके मुखमें खड़े हैं, जिसको काल या मृत्यु कहते हैं। अैसी अवस्थामें हम किसीको क्यों मारें? मैं सांपको दुष्ट नहीं कह सकता, क्योंकि अुसका तो स्वभाव ही अैसा है। हां, मनुष्य दुष्टता करता है तो अपने शुद्ध स्वभावको छोड़ देता है। तुम अहिंसा और सत्यको समझो। जाओ भागो।"

विद्यार्थियोंके सामने प्रवचन करते हुअे बापूजीने कहा:

"यह आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम है। ब्रह्मचर्यका अर्थ है सब अिन्द्रियोंको वशमें करके ब्रह्ममें लगाना। यहां पर जवान लड़के-लड़कियां, स्त्री-पुरुष सब रहते हैं। अिस विषयमें मुझसे कअी मित्रोंने कहा था कि अैसा कैसे हो सकता है कि स्त्री-पुरुष अेक जगह रहकर ब्रह्मचर्यका पालन कर सकेंगे। परन्तु मैंने तो अिस जोखिमको अुठानेका साहस किया। सफलता भी मिली है। मैंने

---

१. आश्रम पहले १९१५ में साबरमती नदीके पश्चिमी तट पर कोचरब नामक गांवके समीप बना था और बादमें साबरमती सेन्ट्रल जेलके समीपकी भूमि पर बनाया गया, जो अब तक विद्यमान है और हरिजन-आश्रमके नामसे प्रसिद्ध है। पहले वह स्थान निपट जंगलमें था। अब तो वहां भी काफी बस्ती हो गअी है। वहां सांप अकसर निकला करते थे। सामान्य नियम यह था कि सांप पकड़नेके लिअे लाठीके अेक सिरे पर अेक छेद करके अुसमें रस्सी डालकर अेक फांस बना ली जाती थी। अुससे सांपको बिना मारे पकड़ लिया जाता था और आश्रमसे दूर चन्द्रभागा नदीके विस्तारमें छोड़ दिया जाता था। बहुधा अैसा ही होता था। सांपके मारे जानेकी यही अेक अनूठी घटना थी।

२. पूर्व खानदेशका अेक खादी-विद्यार्थी।

अिसका प्रयोग सबसे पहले दक्षिण अफ्रीकामें किया था। लेकिन वहां अितनी सफलता नहीं मिली थी जितनी यहां मिली है। स्त्रियोंके छात्रालयमें कोअी पुरुष नहीं जा सकता। बीमार अवस्थामें सेवाके लिअे यदि अुसके संबंधी जाना चाहें तो जा सकते हैं। अिस नियमका सब लोग स्वयं पालन करें और जो अैसा न कर सकें वे घर चले जायें, तो अुनके लिअे और आश्रमके लिअे अच्छा होगा। अगर कोअी दोष हो तो सत्यतासे बता दो।"

अुस समय मैंने भी बापूजीसे कुछ पूछा था। आश्रममें मेरा मन नहीं लग रहा था और कुछ घरकी चिन्ता भी थी। मैंने यह सब बात बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा: "घरका मोह छोड़ो और निश्चिन्ततासे यहांके काममें अेकरूप हो जाओ, तो मुझे विश्वास है कि तुम्हें अवश्य शान्ति मिलेगी। यहांकी हवामें कोअी अैसी चीज जरूर है जो शान्ति देती है, अैसा मेरा खुदका अनुभव है। अब तो मैंने आश्रम छोड़ दिया है। लेकिन बाहर घूमते हुअे मुझे जब कभी अशान्ति मालूम होती थी मैं शांतिके लिअे यहां दौड़ आता था और मुझे शान्ति मिलती थी।"

१९३२ का आन्दोलन और जेलयात्रा

बापूजी राअुंड टेबल कान्फरेन्समें जायें या न जायें अिसका निर्णय वाअिसरॉयसे मिलने पर ही होनेवाला था। अिसलिअे बापूजी शिमला जा रहे थे। अुनके पास समय बहुत कम था। चलते समय दस मिनिटके लिअे वे आश्रममें आये। हम सब आश्रमवासियोंने भारी दिलसे प्रणाम करके अुन्हें बिदा दी।

शिमलामें वाअिसरॉयके साथ चर्चा होनेके बाद अुनका राअुंड टेबल कान्फरेन्समें जाना तय हुआ और वे सीधे शिमलासे बम्बअी गये। वहींसे विलायत रवाना हुअे। राअुंड टेबल कान्फरेन्समें जो चर्चा होती थी वह और खास कर बापूजीके भाषण हम लोग बड़ी अुत्सुकतासे व ध्यानपूर्वक पढ़ते थे। जिस तरहसे राअुंड टेबल कान्फरेन्सका अंत हुआ और समाचारपत्रोंमें जो खबरें आने लगीं, अुनसे लगा कि बापूजी आते ही पकड़ लिये जावेंगे। बापूजी ४ जनवरीको सबेरे वर्किंग कमेटीके साथियोंके साथ पकड़ लिये गये।

यह नये प्रकारके आन्दोलनकी चेतावनी थी। आश्रममें खलबली मची। शामकी प्रार्थनाके बाद आश्रमके मंत्री नारणदासभाअी गांधीने कहा कि जिन भाअी-बहनोंको आन्दोलनमें शामिल होना हो वे जा सकते

हैं, पर जो शामिल न होना चाहें वे यहां रहनेका पक्का निश्चय कर लें, जिससे कि आश्रमके कामकी वैसी व्यवस्था की जा सके, और यहां रहनेवालों पर निश्चित कामकी जिम्मेदारी सौंपी जा सके। जिसका जो विचार हो वह मुझे आकर कह दे। सत्याग्रहके लिअे लोग अेक अेक करके जाने लगे। आश्रम धीरे धीरे खाली होने लगा। हिन्दी-भाषियोंकी अेक टोली अजमेर जा रही थी। अुसमें चलनेका अेक भाअीने मुझे अिशारा किया। लेकिन अुस समय आश्रम छोड़नेका मेरा अिरादा नहीं था; और सत्याग्रहमें शामिल होना हो तो गुजरातमें ही होनेका निश्चय था। अिसलिअे मैंने अिनकार कर दिया। मैंने अेक दो दिन तो मंत्रीजीसे कुछ भी नहीं कहा। श्री सुरेन्द्रजी, माधवजी विश्राम तथा अुनकी धर्मपत्नी महालक्ष्मी बहन कराड़ी सत्याग्रहमें जानेको निकले तो मेरे मनमें दांडी-कूचमें शामिल न होनेका जो असंतोष था वह जाग्रत हुआ और मैंने मंत्रीजीको कराड़ी जानेका अपना अिरादा बताया। अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझे जानेकी अिजाजत दी। मैं सुरेन्द्रजीके साथ कराड़ीके लिअे रवाना हुआ। हम लोग नवसारी स्टेशन पर अुतरे और हरिजन-आश्रममें पहुंचे, जिसे हरिवदनभाअी और खंडेरिया चला रहे थे। हमने आश्रमको हमारी छावनी बनानेका और कराड़ीमें सत्याग्रह करनेका तय किया। कुछ बहिनें और भी आ गअीं। हमने बारी बारीसे सत्याग्रही टोलियां जायं अैसी योजना बनाअी। नवसारी बड़ौदा राज्यमें था, अिसलिअे वहां तो गिरफ्तार होनेका खतरा ही नहीं था। लेकिन रेलवे लाअिन पार करने पर जहां अंग्रेजी राज्यकी हद लगती थी, वहां कराड़ी पहुंचनेसे पहले पकड़े जानेका डर था। अिसलिअे हमने रातमें कराड़ी पहुंचनेका निश्चय किया।

नवसारीसे कराड़ी ८—१० मील दूर है। हम लोग रातको १० बजे पगडंडीसे निकले। हमारे साथ महालक्ष्मीबहन, मधुबहन, कलावती खंडेरिया, शान्ताबहन पटेल और लीलावतीबहन आदि थीं। अंधेरा था और रास्ता भी अूबड़-खाबड़ था। शान्ताबहनके पैरमें मोच आ जानेसे अुनको कराड़ी ले जानेमें बड़ी कठिनाअी हुअी। हमने रातको कराड़ी पहुंचनेकी सूचना दे रखी थी। वहां लोग हमारी राह देख रहे थे। हम लोग जैसे तैसे सबेरे ४ बजे कराड़ी पहुंचे। बहनोंने चाय ली। और मैंने बापूजी १९३० के नमक-सत्याग्रहके समय जिस कुटियामें ठहरे थे अुसके दर्शन किये। बड़ी प्रसन्नता हुअी। यह जनवरीकी कोअी १० या ११ तारीख रही होगी।

जनता तो रातको ही अेकत्र हो सकती थी। दिनमें लोग खेतों पर कामके लिअे चले जाते थे। शामको जुलूस निकालनेका तय हुआ, जिसका नायक मैं होनेवाला था। नोटिसमें माधवजी भाअीने मेरे फौजमें होनेका भी अुल्लेख किया था, जिससे पुलिसने अधिक सतर्कतासे तैयारी की थी। शामको अंधेरा होने पर ३००–४०० बच्चों और अितने ही भाअियोंका जुलूस निकला। पुलिसकी दो लारियां पहुंच चुकी थीं। पुलिसवालोंने अैसा मोरचा बनाया कि जुलूस पर आगे और पीछे दोनों तरफसे लाठी चलाअी जा सके। कुछ पुलिसवाले आगे खड़े हो गये और कुछ रास्तेके दोनों तरफकी गलियोंमें छिपकर बैठ गये। जब जुलूस वहांसे गुजरा तो दोनों तरफसे लाठियां चलने लगीं। मैं और महालक्ष्मीबहन आगे चल रहे थे। मेरे हाथमें झंडा था। जब लाठी चलने लगी तो लोगोंको पता ही नहीं चला कि किधरसे लाठीचार्ज हो रहा है। दोनों तरफ कांटोंकी बाड़ थी, अिसलिअे लोग अिधर-अुधर जा भी नहीं सकते थे। लोगोंको काफी चोटें आअीं। और जुलूस तितर-बितर कर दिया गया। मुझे हलकी मार मारकर भगानेकी कोशिश की गअी। लेकिन मैं अपने स्थान पर ही खड़ा रहा। तब पुलिसने मुझे पकड़ कर लारीमें बैठा दिया। मैंने समझा कि मैं पकड़ लिया गया हूं। लेकिन जब सारा जुलूस बिखर गया तब पुलिस लारीके पास आअी।

पुलिसका मुखिया बरजोरजी नामक थानेदार था, जो क्रूर और शराबी था। अुसने मुझे नीचे अुतारा और पुलिसके घेरेमें खड़ा करके मारनेका हुक्म दिया। चारों ओरसे मुझ पर डंडोंकी मार पड़ने लगी। मेरी तो आंखें बन्द हो गअीं। अेक लाठी सिर पर भी पड़ी, जिससे मेरा सिर फूट गया। मैं चक्कर खाकर बेहोश जमीन पर गिर पड़ा, तब अुस नर-राक्षसको भी दया आअी और अुसने पुलिसको मारनेसे रोका। मुझे कुछ देरमें होश आया। आंखें खोलकर देखा तो पुलिस मुझे घेरे खड़ी थी। मुझे होशमें आते देखकर अुसने मुझे भाग जानेका कहा। मैंने कहा कि जब तक आप लोग यहां हैं, तब तक मैं हटनेवाला नहीं हूं। आप लोगोंको सूझ नहीं रहा है कि आप पापी पेटके लिअे कितना द्रोह कर रहे हैं। मुझे वहीं छोड़कर पुलिस लारीमें बैठकर चली गअी। मैं बड़ी कठिनाअीसे अुठा। लाठी मेरी आंखके अूपर लगी थी और वहांसे खून बह रहा था। डंडोंसे सारा शरीर कुचला गया था। रास्ता भी सूझ नहीं रहा था। मैं थोड़ी दूर

चला कि अितनेमें कराड़ीके जो लोग मुझे ढूंढ़ रहे थे वे आ गये। अितनी मार लगने पर भी मुझमें अुत्साह भरा था। मैंने कहा कि सभा की जाय। लेकिन लोग मुझे अेक दवाखानेमें ले गये, जहां मेरे घावोंकी मरहम-पट्टी की गअी। अुसके बाद मुझे मणिभाअीके घर ले जाया गया। वहां ज्यों ही मुझे बिस्तर पर सुलाया गया मैं फिर बेहोश हो गया।

जुलूसके साथ पीटा जाना अेक बात थी और अकेलेमें अिस तरह निर्दयतासे पीटा जाना, जिससे भीतरी चोट पहुंचे, बिलकुल दूसरी बात थी। जीवनमें पहली ही बार मुझ पर अितनी सख्त मार पड़ी थी, लेकिन फिर भी मेरे मनमें शांति थी और मैं अुत्साहसे भरा था। यह बापूजीकी तालीमका ही फल था।

श्री मणिभाअीकी दो पत्नियां थीं। दोनोंने रातभर मेरे शरीरकी सेंक की। दर्द असह्य था। परन्तु सेंकसे मुझे बड़ा आराम मिला। दूसरे दिन मुझे नवसारी ले जाया गया। वहां डॉ० खंडुभाअीने मेरा अिलाज किया। वहां कुछ दिन मुझे अस्पतालमें रहना पड़ा।

अच्छा होनेके बाद मैं फिर सुरेन्द्रजीके साथ कराड़ी गया। महिलायें सब गिरफ्तार हो चुकी थीं। श्री माधवजीको गिरफ्तार करके दो सालकी कैदकी सजा दी गअी। हम बापूजीकी कुटियामें ठहरे। जब पुलिसने यह सुना तो पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, जो अपनी क्रूरताके लिअे प्रसिद्ध हो चुका था, वहां अपने दलको लेकर आया और हमें धमकी देने लगा। अपमान और तिरस्कारके स्वरमें वह बोला: "तुम सब बेकार लोग हो। वल्लभभाअी वकीलके नाते कामयाब नहीं हुअे अिसलिअे वे आन्दोलनमें शरीक हो गये। गांधी अफ्रीकासे अपने देशमें आकर अच्छी कमाअी करके सुखसे नहीं रह सके, अिसलिअे अब वे बड़े नेता बन गये हैं और स्वराज्य लेनेकी बात कर रहे हैं। सिर्फ जवाहरलालने त्याग किया है और अुनमें थोड़ी बुद्धि है। दूसरे सब धोखेबाज हैं, दिखावा करनेवाले हैं।" फिर मेरी ओर मुड़कर अुसने कहा: "तुम यहां क्यों आये हो? यहांसे चले जाओ, वर्ना मैं तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़कर समुद्रमें फेंक दूंगा।" मैं हंसा और बोला: "आपमें कोअी विवेक नहीं है और आप बड़े बड़े नेताओंके बारेमें बेहूदी बातें करते हैं। आप जी भर कर मुझे पीट सकते हैं। मैं यहां अपनी हड्डियां तुड़वाने ही आया हूं।"

अिसके बाद पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट चला गया। मैं गांवमें अुन महिलाओंको देखने गया जिन्हें जुलूसमें चोट आओी थी। करीब १०० महिलायें घायल हुआी थीं। अुनमें से करीब १५ अभी भी बिस्तरमें थीं। जब मैं अुनके कष्टके लिअे हमदर्दी दिखाने लगा तो अुन्होंने कहा: "अिसकी क्या परवाह है? हमारे पति भी तो हमें कभी कभी मारते हैं। और फिर हमने अपने देशके खातिर मार खाओी है। हमें अिसके लिअे गर्व है।" मैं अुन स्त्रियोंकी यह भावना देखकर बहुत खुश हुआ। अेक विधवा बहनने हमें अपने घरमें ठहराया और खाना खिलाया।

अुसी गांवमें श्री पांचाकाका भी थे। अुन्होंने सरकारको जमीन महसूलकी अेक पाओी भी नहीं दी थी, हालांकि अुनकी सारी जमीन जब्त कर ली गओी थी। जब जब्त की गओी जमीन स्वराज्य मिलनेके बाद अुन्हें लौटाओी गओी, तो अुन्होंने अपनी जायदाद वापिस लेनेसे अिनकार कर दिया। आजकल अुनकी अुस जमीन पर अेक खादी-केन्द्र चल रहा है। श्री पांचाकाका अुन थोड़ेसे सत्याग्रहियोंमें से थे जिन्होंने सरकारके साथ कभी समझौता नहीं किया। अैसे अडिग और दृढ़ सत्याग्रहियोंके कारण ही भारत स्वतंत्रता प्राप्त कर सका है। श्री पांचाकाकाने जायदाद जब्त हो जानेके बाद बुनाओी-काम करके अपना निर्वाह किया था।

दो दिन बाद १२ फरवरीको मैं और सुरेन्द्रजी कराड़ीके अन्य कओी लोगोंके साथ फिर पकड़ लिये गये। जलालपुरकी अदालतमें हम पर मुकदमा चला, जिसमें मुझे ढाओी सालकी और सुरेन्द्रजीको दो सालकी कैदकी सजा दी गओी। कुछ समय तक हमें सूरतकी सब-जेलमें रखा गया। फिर साबरमती जेलमें ले जाया गया। अुसके बाद हमारी बदली दूसरे २०० राजनीतिक कैदियोंके साथ बीसापुर कैम्प जेलमें हो गओी। बीसापुरकी आबहवा अितनी खराब थी कि कओी कैदी मोतीझिरेकी बीमारीसे मर गये। पीनेका पानी गंदा था। मैं वहां १७ महीने रहा और बड़े आनन्दमें मेरे दिन बीते। वहां कओी लोगोंके साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध बंधे, जो धीरे धीरे घनिष्ठ मित्रतामें बदल गये।

बापूजीके जेलसे लिखे गये बोधपत्र

अब तक बापूजीको न तो मैंने कोओी पत्र ही लिखा था और न अुनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय ही हुआ था। सामान्य परिचय जरूर था। बीसापुर

जेलसे मैंने बापूजीको प्रथम पत्र लिखा। लेकिन वह गुम हो गया। अुसकी नकल मेरे पास थी अिसलिअे दुबारा लिखा। अुनका यह अुत्तर आया :

सेंट्रल जेल,
यरवडा, पूना

भाअी बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला है।

१. गुरुमें स्थितप्रज्ञके गुण होने चाहिये। अैसा सर्वगुण-संपन्न कोअी मनुष्य मुझे नहीं मिला है। थोड़े-बहुत अंशमें अैसे गुण तो कअियोंमें प्रत्येक देशमें मिले हैं।

२. सुख-दुःखमें, मानापमानमें, सम रहनेका तात्पर्य यह है कि अपमान होनेसे खिन्न नहीं बनना, मान मिलनेसे फूल नहीं जाना। अपमानका अथवा दुःखका अिलाज न करना अैसा कभी नहीं है।

३. भक्तके गुण प्रयत्नसाध्य है, प्रयत्न कैसे किया जाय यह भी अुसी अध्यायमें बताया गया है। लेकिन अुससे भिन्न प्रयत्नसे भी अैसे गुण प्राप्त हो सकें तो रुकावट नहीं है।

४. निद्रा प्रयत्नसे निर्दोष हो सकती है। निर्दोष निद्रा अुसका नाम है जिसमें जागनेके पश्चात् निद्राके सिवाय और किसी वस्तुका ज्ञान नहीं रहता है और सुखका अनुभव होता है। यद्यपि गीतादिका पाठ किया जाता है तो भी अनजानपनमें अनेक विचार आते-जाते हैं। जब आत्मा गीतामय अथवा कहो भगवानमय हो जाता है तब शुद्ध निद्राका संभव होता है। अिसलिअे आज जो प्रयत्न गीतामय होनेका चलता है अुसीको श्रद्धापूर्वक कायम रखा जाय।

५. रामायणे पर भी लिखनेका विचार तो रहता ही है, किन्तु समयाभावसे रह गया है। यों तो अब कोअी आवश्यकता भी नहीं रही है। जो अनासक्तियोगका अभ्यास अच्छी तरह करेगा वह रामायणका अर्थ भी अपने-आप घटा लेगा।

६. रामायणमें यदि अितिहास है तो वह गौण वस्तु है, अध्यात्म प्रधान वस्तु है। अितिहासके निमित्तसे धर्मका बोध दिया गया है। अिस कारण रामको आत्मा और रावणको अीश्वर-विमुख शक्ति समझकर

सारी रामायण पढ़ना। समझो राम कृष्ण हैं, अुनका दल पांडव सेना है, रावण दुर्योधन है। महाभारत और रामायणमें अेक ही दृष्टि है।

गुरुमुखी ग्रंथोंका अभ्यास कर रहे हो सो भी अच्छा है। गीता कंठ करनेकी प्रतिज्ञाका पालन किया जाय।

भाअी फूलचन्दके पत्रका अुत्तर दिया गया है। आशा है यह पत्र मिल जायगा। हम सब अच्छे हैं।

५–२–'३३

सबको
बापूके आशीर्वाद

१९३२ के आन्दोलनमें बम्बअी प्रेसिडेंसीमें बीसापुर कैम्प जेल खुला था। अुसमें करीब २००० राजनीतिक कैदी थे। बापूजी अुस समय यरवडा जेलमें थे। हम लोग बीसापुर कैम्प जेलमें थे। यरवडा कैम्प जेलमें भी बहुतसे साथी थे। सब साथियोंके साथ बापूजीका पत्रों द्वारा लगातार संबंध रहता था। वे कितनी मधुरतासे हमारी खोज-खबर रखते थे, अिसका आभास नीचे दिये गये अुनके पत्रसे मिलेगा। फूलचन्दजीको बापूजीने लिखा था:

भाअी श्री फूलचन्द,

आपका पत्र मिलनेसे हम सबको बहुत आनन्द हुआ। कैदी हैं अिसलिअे जितनी पली पानी पीने दें अुतना ही पीयें। अैसा भी समय था जब कैदीको न पत्र लिखने देते, न पढ़ने देते, न पूरा खाना खाने देते थे; चौबीसों घंटे बेड़ियां पहिनाये रखते और घास पर सुलाते थे। अिसलिअे हम तो जो कुछ भी मिले अुसीके लिअे अीश्वरका अनुग्रह मानें। मान् भंग हो तब मर मिटें, देहको कष्ट मिले अुसे सह लें।

आप सब वहां सुखी हैं, यह जानकर हमें आनन्द हुआ है। अन्तमें तो सुख-दुःख मानसिक स्थिति है। आप और मामा नियमोंका पालन करते हैं, कराते हैं, स्वच्छता रखाते हैं, यह सब शोभा देता है।

मैं अुम्मीद रखता हूं कि वहां हरअेक भाअी समयका अच्छासे अच्छा अुपयोग करते होंगे। अैसा अेकान्त और अैसी फुर्सत बार-बार नहीं मिलेगी। पढ़नेकी सुविधा हो तो पढ़ना, विचार करना तो है ही। और भी अनेक प्रवृत्तियां हैं। अुनमें से कोअी न कोअी ले लेनी चाहिये। अेक गंभीर भूल हम सब करते हैं। वह यह है कि

सरकारी समय और वस्तु कौन जाने अपनी नहीं है अैसा समझकर हम अुन्हें अुड़ाते हैं। थोड़ासा विचार करनेसे मालूम होगा कि सरकारी वस्तु और समय प्रजाके ही हैं। अभी वे सरकारके कब्जेमें हैं, अिसलिअे यदि हम अुन्हें अुड़ावें तो प्रजाका ही धन और समय अुड़ाया कहा जायगा। अिसलिअे हमारे पास जो कुछ आवे अुसका हम सदुपयोग करें। जेलोंमें हम जो कुछ भी अुत्पन्न करें वह प्रजाके धनमें वृद्धि करनेके बराबर ही है। सरकार विदेशी है अिससे अिस विचारश्रेणीमें कुछ अन्तर नहीं पड़ता। अब अिससे आगे जाअूं तो राज्य-प्रकरण आता है और अुसमें हम कैदीकी भांति ही वर्तन कर सकते हैं। अिसलिअे यह बात मैं यहीं पूरी करता हूं।

जानेवालोंमें वहां कौन कौन हैं, यह लिखना। अथवा जिसका पत्र लिखनेका समय आया हो वह लिखे। दीवान मास्तर वहीं हैं? आश्रमके माधवलाल वहां हैं? हम तीनों जन तो यहां मौज अुड़ा रहे हैं अैसा कह सकते हैं। खाने-पीनेमें हम संयम रखें। वही अंकुश सोने-बैठनेमें भी। कातना धुनना ठीक चल रहा है। पढ़ना तो चलता ही है। अखबार भी ठीक ठीक मिलते हैं। पुस्तकें तो रोजाना किसी न किसीके पाससे आती ही हैं। प्रार्थना नियमित चलती है। यही हमारा कार्यक्रम है। सबको हमारा यथायोग्य।

बापू

बापूजीके अन्य पत्रोंमें से नीचे लिखे अुद्धरण सर्वसामान्यके लिअे लाभकारी होंगे अिस दृष्टिसे यहां मैं अुन्हें देता हूं:

आश्रमकी प्रार्थनाके सम्बन्धमें

"प्रार्थनामें साकार मूर्तिका निषेध नहीं किया है। लेकिन निराकारको प्रथम स्थान दिया है। सम्भव है अैसा मिश्रण करना किसीको ठीक न लगे। मुझे निराकार ज्यादा जंचता है। पूजामें परिस्थिति या स्थान-विशेषका असर साकार पूजामें होता माना गया है। होना नहीं चाहिये, क्योंकि आखिरकार अुसके पार जाना होता है। अनुभवके विषयमें अैसा नहीं है। अेक अुदाहरण शरीर तथा आत्माका लें। शरीर तथा आत्मा अेक-दूसरेके अत्यन्त निकट होनेसे देहसे अलग आत्माका भास नहीं होता। शरीरको

भेदकर जिस अृषिने आत्माका अनुभव किया और सर्व प्रथम यह अुच्चार किया कि 'नेति नेति' अर्थात् यह शरीर आत्मा नहीं है, अुस अृषिसे अब तक कोअी आगे नहीं जाने पाया है।"

विचार और प्रवृत्ति

"मैंने गहराअीसे विचार करके यह निश्चय किया कि जो विचार अमलकी कसौटी पर कसे न जा सकें, वे निरर्थक तथा भारस्वरूप गिने जावें। दूसरे शब्दोंमें कहा जाय तो यह कि विचारके साथ प्रवृत्ति जरूर ही हो, लेकिन केवल पारमार्थिक तथा निष्काम, अन्य नहीं। यह बात अीशोपनिषद्‌में चमत्कारिक रीतिसे कही गयी है। विद्या-अविद्या, संभूति-असंभूतिका वर्णन किया है। अिनके अर्थके विषयमें बहुत मतभेद हैं। सुरेन्द्र (श्री सुरेन्द्रजी) से यह समझना।"

जेलमें अभ्यास

"वल्लभभाअीकी लगनका मैं कहां तक बखान करूं? संस्कृतकी सातवलेकरकी पाठमाला तो चल ही रही थी। अिसमें गीताके ३० श्लोक कण्ठ करनेका क्रम और जुड़ गया। कातना भी नियमित चलता है। ४० अंकका सूत वे कात रहे हैं। अिन सबमें विशेषता यह है कि ज्यों ही जरासे खाली हुअे कि संस्कृत अुठाअी, मानो कोअी विद्यार्थी परीक्षाकी तैयारी कर रहा हो। महादेवभाअी ८० अंकका सूत कात रहे हैं। मेरा भी परसों तक ४० अंकका निकल रहा था। परन्तु फिर बाअीं कोहनीको आराम देनेके लिअे गांडीव चक्र छोड़कर मगन-चक्र अपनाया है और अुस पर ४० अंकका कातना संभव नहीं है।"

अीश्वरके विषयमें

"जो सेवा करे या जो सेवा ले, दोनोंको ही मैं अीश्वर मानता हूं। लेकिन ये दोनों अीश्वर काल्पनिक हैं। जो सच्चा अीश्वर है वह कल्पनासे परे है और वह न सेवा करता है, न लेता है। अीश्वर नहीं है, यह कहना गलत है। यदि हम हैं तो अीश्वर है। यदि अीश्वर नहीं है तो हम फिर क्या हैं? अीश्वर हमारे अन्तरमें व्याप्त है, अिसलिअे हमें प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना अर्थात् स्मरण। ज्यों ही हमने स्मरण किया त्यों ही काल्पनिक अीश्वर पैदा हुआ। आस्तिकता अन्तमें बुद्धिका विषय न होकर श्रद्धाका है।"

निष्काम कर्म तथा अन्तर-शुद्धि

"कोअी यह माने कि अन्तर-शुद्धि बाह्य कर्म करते करते नहीं साधी जा सकती तो यह भ्रम है। अिससे ठीक अुलटी बात सच है कि बाह्य कर्म अंतर-शुद्धि अर्थात् प्रतिक्षण अीश्वर-परायण बुद्धि जाग्रत रखे बिना निष्काम हो ही नहीं सकता। दोनों सहचर हैं। कर्म अर्थात् गतिका नियम जड़-चेतन सभीको लागू है। मनुष्य निष्काम भावसे अिसके वश रहे यही अुसका ज्ञान और विशेषता है। भगवान बुद्धकी मैं टीका नहीं कर सकता। मैं अुनका पुजारी हूं। मेरी मान्यता यह है कि बौद्ध साधु और अुनके संघ अिस नियमका अुल्लंघन्न करनेसे ही अर्थात् कर्मोंका त्याग करनेके कारण ही जड़वत् हो गये, जैसे कि वे आजकल भी लंका, ब्रह्मा तथा तिब्बतमें देखे जाते हैं।"

जेलमें मिलनेके विषयमें

"यह शरीर मिट्टीका पुतला है। अिससे मिलना निरर्थक है। अिसके अन्दर जीव रम रहा है। अुससे मिलनेकी अिच्छा सबसे बड़ा मोह है, जिसे दूर करनेमें कअी जन्म भी कम पड़ेंगे। सच्चा मिलन तो मनका मनसे और हृदयका हृदयसे होता है और ये तो हजारों मीलके फासले पर होने पर भी अेक क्षणमें मिल लेनेकी शक्ति रखते हैं। परन्तु यदि मन नहीं मिलते हों तो मिट्टीके पुतलोंका तो आमने सामने तो क्या अंक भर कर मिलना भी निरर्थक होता है।"

अनशनकी योग्यताके विषयमें

"हृदयमें पूर्ण सत्य तथा पूर्ण अहिंसा हो, अन्तःप्रेरणा मिली हो, किसीके प्रति द्वेष हृदयमें न हो, हेतु स्वार्थी न होकर पारमार्थिक हो। अन्तर्नाद सुननेके कान बिना संयमके नहीं अुघड़ते, अिसलिअे अभ्यस्त तथा चुस्त संयमी हों।"

भिन्न भिन्न धर्मोंके विषयमें

"मैं हिन्दू धर्मको सत्यके सबसे निकट मानता हूं। यदि मैं अैसा न मानता होअूं तो मैं सत्यका पुजारी होनेसे जिस धर्मको सत्यके अधिक निकट समझूं अुसीमें चला गया होअूं। यह मान्यता मोहजन्य भी हो सकती है, लेकिन अैसा मोह क्षन्तव्य है। अन्य धर्मावलम्बियोंके लिअे अुनके अपने धर्म सत्यके

सबसे नजदीक होंगे। अुनके वैसा माननेमें मुझे कोअी द्वेष नहीं है। सब धर्म मुझे समान प्रिय हैं। सर्वधर्म-समभावका मेरा विचार मौलिक है और अिसीसे मेरे लिअे यह संभव हुआ है कि स्वयं चुस्त हिन्दू रहते हुअे भी मैं अन्य धर्मोंकी भी पूजा कर सकता हूं और अुनमें जो श्रेष्ठ हो अुसे निःसंकोच ले सकता हूं। और वैसा करता भी हूं।"

अनासक्तिके विषयमें

"अनासक्तिका अर्थ जड़ता नहीं है। निर्दयता भी नहीं है। चूंकि सेवा तो करनी ही होती है, अिसलिअे दयाकी भावना तो और भी तीव्र हो जाती है। कार्यदक्षता तथा अेकाग्रता भी बढ़ती है। मेरी भावना जगतमात्रकी सेवा करनेकी है। अिसमें कुटुम्ब भी आ ही जाता है, अर्थात् कौटुम्बिक सेवा रह जाती हो सो भी नहीं। अिसलिअे अनासक्तिपूर्वक सेवाकार्य अपना लेनेसे मैंने अपना कुछ भी नहीं खोया और मुझे बहुत कुछ मिला है।"

* * *

जेलमें बापूजीका अुपवास

बापूजीने ता० २–५–'३३ से यरवडा जेलमें २१ दिनका अुपवास आरंभ किया। श्री सुरेन्द्रजी हमारे साथ बीसापुर जेलमें थे। अुनके नाम बापूजीने हम सबके लिअे पत्र लिखा। मूल पत्र गुजरातीमें था। यहां अुसका अनुवाद दिया जाता है।

यरवडा मंदिर
६–५–'३३

चि० सुरेन्द्र,

रामदास कहता था कि जब अुसने तुमसे मेरा संदेशा कहा तब तुम्हारी आंखोंमें आंसू आ गये थे। मैं अैसा मानता हूं कि तुम्हारी आंखोंमें आंसू तो हर्षके ही होंगे, दुःखके तो कदापि नहीं। यह अुपवास किये बिना कोअी चारा ही न था। और यह समय अुसके लिअे योग्य मुहूर्त था। यह मुझे बिलकुल स्पष्ट लग रहा है। अस्पृश्यता जैसे भयानक राक्षसका नाश मुझे अन्य किसी प्रकारसे अशक्य लगता है। रावणके तो केवल दस सिर थे। अिस राक्षसके हजार मस्तक हैं। ये

मस्तक कैसे हैं यह तुम्हें समझानेकी जरूरत नहीं। अिस राक्षसका मूलसे नाश करना हो तो वर्तमान साधनोंसे नहीं हो सकेगा। अिसके लिअे प्राचीन परन्तु विस्मृतप्राय अमोघ साधनकी जरूरत है। यह बात मुझे अुतनी ही सीधी मालूम हो गअी है, जितना किसी प्रश्नका अुत्तर। करोड़ रुपये अिकट्ठे कर लें तो भी क्या सवर्णोंका हृदय पलटेगा? कुन्दन जैसे सेवकोंके बिना हजारों संघ भी किस कामके? जिस आश्रमके द्वारा मुझे यह काम सिद्ध कराना है, अुसी आश्रममें दरार पड़ी हुअी कैसे देखूं? हरिजन आजकल दिङ्मूढ़ हो गये हैं, वे भयभीत हैं। जिन्होंने भय छोड़ दिया है वे अुद्दंड बन गये हैं। अुनके क्रोधका रूप भीषण हो जाय अिसमें आश्चर्य ही क्या?

अिस सब अनिष्टोंका सामना कर सकनेके लिअे ही अपनी सारी आध्यात्मिक पूंजी खर्च कर दें। अिसके अतिरिक्त कोअी चारा नहीं है। अीश्वर करे मेरे अकेलेके अितने ही यज्ञसे काम चल जाय तो मेरे हर्षकी सीमा न रहे। परन्तु मैं यह नहीं मानता कि मेरे अन्दर अितनी अधिक पवित्रता है। अैसे सैकड़ों, हजारों अुपवास जब हम करेंगे तब ही यह हजारों वर्षोंका प्राचीन पाप धुलेगा। तुमसे और तुम्हारे ही जैसे दूसरोंसे अिस यज्ञमें बड़े भागकी आशा रखता हूं। परन्तु मेरे अिस अुपवासके दरमियान कोअी कुछ न करें, शान्त रहें और मन, वचन, कर्मसे जितनी शुद्धता साध्य हो अुतनी साधें। यह पत्र महादेवने लिखा है। वह रोजाना अिसी प्रकार लिखता रहेगा और जब तक शक्य होगा मेरे दस्तखत लेता रहेगा। सरकारकी आज्ञा मिल गअी है कि मैं रोजाना तुमको अिस प्रकारसे पत्र लिख सकूंगा और तुम भी मुझे लिख सकोगे।

सबको
बापूका आशीर्वाद

बापूका यह पत्र हमको ८ तारीखको मिला। अुपवासकी खबर तो पहले ही मिल गअी थी और जेलमें काफी गंभीर वातावरण हो गया था। सब लोगोंने २४ घंटेका अुपवास और प्रार्थना की थी। हम सबकी तरफसे श्री सुरेन्द्रजीने बापूजीको यह पत्र लिखा:

वीसापुर कैम्प जेल,
८–५–'३३

परम पूज्य बापूजी,

आपका कृपापत्र आज मिला। सबने पढ़ा, खूब प्रेरणा मिली। यह गंभीर प्रसंग होते हुअे भी आनन्द हुआ। [illegible] जब आपका रहस्यपूर्ण संदेश सुनाया तब हृदय भर आया। मेरे आनन्दाश्रुओंको किसीने न देखा होगा, पर मुझे कबूल करना चाहिये कि वे दुःखसे सर्वथा मुक्त न थे। गत सात दिनमें खूब आत्म-निरीक्षण किया है। आपके अुपवासका समाचार मिला। अुसकी महत्ता, व्यापकता और आवश्यकता मैं समझ सकता हूं और मैं मानता हूं कि यह अुपवास आपने मेरे लिअे, मेरे समान सब साथियोंके लिअे किया है। आपके अिस दिव्य सूर्यके प्रचण्ड, सौम्य, शीतल प्रकाशमें मैं अपने अन्दरकी सभी गुप्त-प्रगट त्रुटियोंको देखता हूं। मुझमें हरिजनोंके लिअे वह अुत्कटता नहीं, वह समर्पण नहीं, वह कुशलता नहीं, जैसी कि आपके सेवकमें होनी चाहिये। जैसा आदमी अेक क्षेत्रमें होता है अुससे भिन्न दूसरे क्षेत्रमें कैसे हो सकता है? मैं चमार बना। आपके चमारमें जो समर्पण, कुशलता, अुत्कटता होनी चाहिये वह मुझमें नहीं। अैसी अनेक बातें यहां लिख सकता हूं। आप मुझे मुझसे अधिक जानते हैं। आज सात दिनके मंथनके बाद प्रातःकालमें अुठते ही मैं प्रफुल्लित और शान्त था। खड्डा फाअिल[1] से आनेके बाद आपका पत्र मिला। आपकी आशा मैं पूर्ण कर सकूं अिससे विशेष मुझे कोअी प्रसन्नता नहीं है। जिस बलिदानकी आप मुझसे आशा रखते हैं, वह मैं आपके आशीर्वादसे अर्पण कर सकूं अैसी प्रभुसे प्रार्थना है। आपसे पू० नाथजी मिल गये। अुनसे मिलनेकी अिच्छा है। मेरा आश्रमके पंडितजीके नाम लिखा पत्र आपको मिल गया? श्री फूलचन्दभाअीका ४–५–'३३ का वहांसे लिखा पत्र आपको मिला होगा। वे अब जल्दी छूटकर नहीं जायेंगे, परन्तु १७ तारीखको आपके पास आयेंगे और दर्शन करके वापस लौटेंगे। आज वहां १२ बजे सबने अपने अपने स्थान पर प्रार्थना की है और आत्म-संतोषके लिअे २४ घंटेका अुपवास किया है। हम वीसापुर मंदिरवासी

१. वीसापुर कैम्प जेलमें मलमूत्र गाड़नेके लिअे खड्डे खोदनेवाली टोली।

आपको आध्यात्मिक खुराक किस प्रकार भेज सकते हैं, अिस बारेमें मैंने ये सूचनायें की हैं :

१. जेलमें आदर्श सत्याग्रहीका-सा जीवन व्यतीत करना।

२. संयमी और प्रार्थनामय जीवन पर विशेष भार दिया जाय।

३. धार्मिक साहित्यके अतिरिक्त आपके ही साहित्यका वाचन, श्रवण, मनन और चर्चा करें।

४. प्रत्येक व्यक्ति अपने गत सामाजिक जीवनका निरीक्षण करे और भविष्यके जीवनके लिअे शुद्धतर संकल्प करे।

ये सूचनाअें केवल दिशासूचक हैं। बाकी प्रत्येक व्यक्ति अुन पर अपनी रीतिसे विचार करेगा।

श्री गोकुलभाअी भट्ट, श्री अेस० के० पाटील, श्री फूलचन्दभाअी, श्री रमणीकलालभाअी, श्री मोहनलाल भट्ट, श्री दरबारी साधु, श्री गोडसेजी, श्री दीवाण साहिब और श्री बलवंतसिंहजी वगैरा सब आश्रमवासी और सब अन्य भाअियोंकी ओरसे आपको सादर प्रणाम। हम सब प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि जैसे भगवान कृष्ण कालियमर्दन करके हंसते हुअे बाहर निकल आये, वैसे ही आप भी निर्विघ्न बाहर निकल आवें और आत्मशुद्धिके यज्ञमें हमको लंबे समय तक मार्ग-सूचन करते रहें।

आपका कृपापात्र
सुरेन्द्र

अेक-दो दिनमें ही बापूजीके अुपवासके सम्बन्धमें पूज्य नाथजीका मराठीमें लिखा पत्र मिला। यहां अुसका अनुवाद दिया जाता है।

पूना
८–५–'३३

श्री सुरेन्द्रजी,

सप्रेम आशीर्वाद। मैं परसों यहां आया। पूज्य बापूजीसे मुलाकात हो गअी। यद्यपि मेरा अुनके साथ संभाषण नहीं हुआ, तथापि अुनकी लिखी हुअी बातें तथा और लोगोंकी बातचीत सुनी। अुनका आज तकका जीवन, अुनका ध्येय, अुस ध्येयको प्राप्त करनेके लिअे अुनका

साधन-मार्ग, आजकी अुनकी मानसिक स्थिति अित्यादि विषयोंकी जो कल्पना मुझे हुअी तथा अुस विषयमें मैं जितना चिंतन कर सका हूं, अुस परसे मुझे अैसा लगता है कि आज बापूजी जो कर रहे हैं वह अुचित ही कर रहे हैं। मुझे यह भी लगता है कि अुनके साधन-मार्गमें अिस अिक्कीस दिनके अुपवासके अतिरिक्त और कोअी अुपाय नहीं है। पिछले अुपवासके समय मैंने अिस प्रकारसे अुनकी विचारशैलीका चिन्तन नहीं किया था। अिससे अुनका अुपवास करना मेरी समझमें नहीं बैठा था। अुनका निश्चय सुनकर आप सब लोगोंके दिल अस्वस्थ हो गये होंगे। कारावासके बंधनोंके कारण तो आप लोगोंका और भी ज्यादा अस्वस्थ बन जाना संभव है। लेकिन जब आप सब लोगोंने अपनी खुदकी तथा औरोंकी चित्तशुद्धिका यह महान कार्य आरम्भ किया है, तो अुनके अिस कामसे आप लोगोंको अस्वस्थ नहीं बन जाना चाहिये।

पूज्य बापूजीका स्वास्थ्य अच्छा है। अुनमें खूब अुत्साह है। अिससे लगता है कि वे अिक्कीस दिन पूरे कर सकेंगे। अुन्होंने आप सब लोगोंको अितना तो जरूर ज्ञान दिया है जिससे चिन्ताकी बात होते हुअे भी चिन्ता करना आप अुचित न मानें। अुपदेशक अुपदेश करता है तब श्रोता लोग सुनते रहते हैं, लेकिन ज्यों ही अुपदेशक अुन्हीं अुपदेशोंके अनुसार व्यवहार शुरू कर दे त्यों ही यदि श्रोताओंको दुःख होने लगे तो यही मानना होगा कि श्रोताओंने अुपदेशको समझा नहीं। श्रोता और वक्ताकी अपेक्षा आप लोगों तथा पूज्य बापूजीके बीचका संबंध तो अत्यन्त निकटका है तथा हार्दिक है। हमीं लोगोंने बुद्धि-पूर्वक समझ कर जब अेक कामको अुठा लिया तो अुसे करते हुअे कभी मनको विचलित नहीं होने देना चाहिये, यह तो आप लोग जानते ही हैं। न जानते हों तो अब जान लें। अिसके सिवा और कोअी चारा नहीं है। पूज्य बापूजी जब आज व्रत कर रहे हैं तब यह आवश्यक है कि आप लोग अपने मनोंको शान्त रखकर अुनके कार्यमें मानसिक सहानुभूति पहुंचायें। मनुष्य कैसी भी असह्य परिस्थितिमें पड़ा हो, अितना तो वह जरूर कर सकता है।

आज यह पत्र मैं लिखनेवाला नहीं था, लेकिन कल जब मैं काकाके यहां गया तो वहां अेक सज्जनने आपको पत्र लिखनेकी सूचना की।

अिसलिअे लिखा है। श्री दरबारीजी, बलवन्तसिंह, गोकुलभाअी, गोडसे, सब परिचित मित्रोंको नमस्कार। श्री रमणीकलालभाअीको तीन चार दिन पहले पत्र भेजा था। मुझे नहीं लगता कि बापूजीके बारेमें अुनको लिखकर समझानेकी जरूरत है। वे खूब समझदार हैं और गंभीर हैं। अुनको यह पत्र दिखाना और आशीर्वाद कहना।

शुभचिन्तक
नाथ

जेलयात्राके अनुभव

अितनेमें ही बापूजीको छोड़ दिया गया। लेकिन बापूजीके साथ हमारे पत्र-व्यवहारका बीसापुरके जेल-अधिकारियोंके दिल पर यह असर हो गया कि कहीं हम लोग बीसापुरमें भी अुपवास आरम्भ न कर दें। अिसलिअे अुन्होंने अेक युक्ति निकाली। कहा कि हमको आश्रमवासियोंके नाम चाहिये, क्योंकि हम अुनको कोअी जवाबदारीका काम देना चाहते हैं। नाम तो बहुतसे आये, लेकिन अुनमें से ८ आदमी छांट लिये गये, जो अुनकी दृष्टिसे अधिक खतरनाक थे और जिनके अुपवासमें भाग लेनेका डर था। मुख्य तो श्री सुरेन्द्रजी थे, लेकिन चनेके साथ घुन पिसनेके न्यायके चक्करमें हम भी फंस गये। आठके नाम थे: १. श्री दरबारी साधु, २. रमणीकलाल मोदी, ३. माधोभाअी शाह, ४. विट्ठल, ५. गोडसेजी, ६. गोपालरावजी कुलकर्णी, ७. सुरेन्द्रजी, ८. मैं। श्री तुलसीदासजी जाधो (शोलापुरका अेक कार्यकर्ता जो पेचिशसे पीड़ित था) को भी हमारे साथ ढकेल दिया। वहां डॉक्टर अिलाज नहीं कर पा रहे थे, अिसलिअे हम सबको बीसापुरसे यरवडा जेलकी बदलीका जब हुक्म मिला और बिस्तर बांधनेको कहा गया, तब पता चला कि हमको कितनी बड़ी जवाबदारीका काम मिला है। बीसापुरसे पूना आते समय रास्तेके किसी स्टेशन पर मेरे पुराने फौजी साथी मिल गये। अुन्होंने तो मुझे नहीं पहिचाना, लेकिन मैंने अुन्हें पहिचान लिया। जब अुनसे बातचीत की तो वे भौंचक्के रह गये। कुछ करुणा और कुछ तिरस्कार मिश्रित भाषामें बोले: "अरे आप किस अपराधमें फंस गये?" जब मैंने अुन्हें सब हाल बताया तो अुनके सिर शर्मसे झुक गये और बोले: "भाअी, हमसे तो गुलामीकी बेड़ी नहीं कट पा रही है। आपने देशके लिअे बेड़ियोंका

अवसर था। वहां मैं रातको घण्टों ध्यानमें बैठा रहता था। चिन्तन भी खूब होता था। बादमें तो पुस्तकें भी मिल गअी थीं। मेरे पास करीब ३० पुस्तकें थीं, जो मुझे सबकी सब मिल गअी थीं। दूसरे दिन ही कटेली साहबने हमें बैरकोंमें बांट दिया। मैंने अिसका विरोध भी किया, लेकिन जेलका कानून ठहरा। मैं जिस बैरकमें गया अुसमें दिल्लीके अेक मुसलमान हकीमजी थे और वे कुछ लोगोंको अुर्दू पढ़ाते थे। मेरा बिस्तर अुनके साथ ही लगा। मैंने कहा: "हकीमजी, आप मुझे भी अुर्दू पढ़ा सकते हैं?" हकीमजी बोले: "देखो आजसे मेरे छूटनेका १ माह बाकी है। अितने रोजमें आपको अुर्दू किताब पढ़ना सिखा दूंगा।" और सचमुच ही हकीमजीने मुझे १ मासमें ही पुस्तक पढ़ना सिखा दिया। मैं और गोपालरावजी कुलकर्णी अेक ही बैरकमें थे। हमारे बीच खूब घनिष्ठता बढ़ी, जो अब तक वैसी ही बनी हुअी है। दैवयोगसे अिस पुस्तकका अंग्रेजी अनुवाद भी अुनको ही सौंपा गया है। चूंकि मेरा और अुनका निकटका संबंध रहा है, अिसलिअे मेरी भाषाका भाव ठीकसे व्यक्त करना अुनके लिअे आसान होगा। अुनका स्वभाव बड़ा ही सरल और मिलनसार है।

यरवडा जेलका पानी बहुत अच्छा था। अुससे तबीयत सुधरी। लेकिन खटमलोंने अुतना ही खून पीकर बराबर कर दी। वहां पर स्वाध्यायका अच्छा कार्यक्रम बन गया था और लगता था कि १०-१२ साल तो जेलमें रहना ही होगा। २५ मास तक जेलमें बन्द रहनेके बाद १२ मार्च, १९३८ को मैं यरवडा जेलसे छूटा।

प्रोफेसर कर्वे

जेलमें प्रोफेसर कर्वे साहबका आत्म-चरित्र पढ़कर अुनके प्रति मेरी बड़ी श्रद्धा हुअी और अुनसे मिलनेका आकर्षण पैदा हुआ। जेलसे छूटते ही मैंने अुनकी खोज की। अीश्वर-कृपासे वे अकेले मिले और खूब दिल खोलकर बातें कीं। मैं आश्रमवासी हूं यह जानकर अुनको बड़ी खुशी हुअी। वे बोले: "देखो, महात्माजीने अिस देशकी सर्वांगीण सेवा की है। अुनका क्षेत्र विशाल है तो भी दलित वर्ग और स्त्री-जातिके प्रति अुनकी करुणा अपार है। अुनके मुकाबलेमें मेरे कामकी क्या गिनती? तो भी मुझसे स्त्री-पुरुषकी जो सेवा बन पड़ी है अुससे गांधीजी मुझसे खुश हैं। अब तो मैंने

देहातोंमें प्रौढ़-शिक्षणका काम आरम्भ किया है। देहातोंमें पैदल जाता हूं और घर घरसे दो आने लेकर अुसी गांवमें पढ़ाअीका प्रबंध कर देता हूं। अिससे मुझे बड़ी शक्ति मिलती है। अब मेरी अुमर ८० सालसे अूपर है तो भी मुझे बुढ़ापेका अनुभव नहीं होता।" मैंने पूछा: "अिसका कारण क्या है?" कर्वेजीने कहा: "अिसका मुख्य कारण तो यह है कि मैं आगेपीछेकी चिन्ता नहीं करता हूं। जो आजका काम मुझे सहज भावसे मिला हो अुसे पूरा करके आरामकी नींद सो जाता हूं। षड्विकारों पर काबूकी भी मेरी कोशिश रही है और अिसमें मुझे काफी सफलता भी मिली है। जिन लोगोंने मेरा अपमान किया अुनकी याद भी मैंने भुला दी है। लोग कुछ भी कहें, मुझे जो ठीक लगता है सो मैं करता हूं और अुससे मुझे सन्तोष मिलता है।" मैंने पूछा: "आध्यात्मिक दृष्टिसे आपकी क्या साधना चलती है?" अुत्तर: "स्त्रियों और गरीबोंकी सेवा ही मेरा अध्यात्म है। अिसीमें मैं अीश्वरके दर्शन करता हूं। या यों समझो कि यही मेरा अीश्वर है। आप यहांकी संस्था जरूर देख जायं। जो कुछ सुधार सुझाना हो वह जरूर सुझायें।" कर्वेजीकी सरलता, नम्रता और स्पष्टवादिता देखकर मेरा सिर अुनके चरणोंमें झुक गया और नमस्कार करके मैंने बिदा ली। अब जब कभी पूना जानेका प्रसंग आता है तो अुनका दर्शन भी मेरे लिअे अेक बड़ा तीर्थ बन जाता है। अभी १९५७ में अुनसे मिला तो बालककी तरह खुश होकर वे बोले कि अब मेरे सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। मैंने पूछा: "अितनी लम्बी अुमरका कारण आप क्या समझते हैं?" कर्वेजी: "संयम, षड्विकारों पर विजय, चिन्तामुक्ति, अच्छी नींद।"

सचमुच ही अुनके सीधे सादे जीवनके ये अनुभव-मंत्र सुनकर किसे आनन्द न होगा? अैसे महान पुरुषोंकी आज हमारे देशको बड़ी जरूरत है।

अेक बार प्रो० कर्वे साहब अपनी सहधर्मिणीके साथ बापूजीसे मिलने सेवाग्राम आये। बापूजी और अुनके मिलनका दृश्य अद्भुत था। अुनकी छोटीसी सफेद दाढ़ीमें से अुनकी मधुर मुस्कान, अुनकी नम्रता, बापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा, बापूजीके प्रति अुनका आदर और प्रेम बिखरा पड़ता था। यह देखकर अुनके चरणोंमें सिर झुक जाता था। बापूजीसे अुनकी क्या बात हुअी अिसका मुझे पता नहीं है। लेकिन आश्रममें अुनके चरण पड़नेसे आश्रमकी शोभा जरूर बढ़ी थी।

सत्याग्रह स्थगित

बापूजीने सविनय सत्याग्रह स्थगित कर दिया था। अिस विषयमें मैंने बापूजीको पत्र लिखा कि मैं दुबारा जेल जानेकी तैयारी कर रहा था और आपने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। अैसा क्यों किया? बापूजी अुड़ीसामें हरिजन-यात्रा कर रहे थे। पुरीसे अुनका जवाब आया:

भाअी बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। तुमको आहिस्ते आहिस्ते मेरे निर्णयकी योग्यता प्रतीत हो जायगी। तुम्हारे अैसे सरल सविनय भंग करनेवाले काफी थे। साथियोंकी त्रुटियोंसे भिन्न भी आध्यात्मिक कारण निर्णयके लिअे थे। अनुभव नित्य बता रहा है कि निर्णय बहुत ही योग्य था। अब तुम्हारे सिर पर ज्यादा जिम्मेवारी आयी है। तुम्हारी रचनात्मक शक्तिकी, तुम्हारी श्रद्धाकी और तुम्हारी दृढ़ताकी अच्छी परीक्षा होगी। नारणदास कहे वही करो। रचनात्मक कार्य करते हुअे कोअी कुछ बाधा डाले तो अुसका अुत्तर देना। फिर भी जेल जाना पड़े तो सहन करना। अनिवार्य कारण पैदा होनेसे सविनय भंग योग्य और कर्तव्य भी हो सकता है। मेरे जेल जानेके बाद तो बाहरवाले अपने मतके अनुसार करेंगे। अिसमें भी नारणदास कहे अैसा ही करना। अितना याद रखो कि जेल जानेका कोअी स्वतंत्र धर्म नहीं है और अुसके लिअे योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। वजनका पता नहीं है। मेरी पैदल यात्राकी कथा तो पुरानी हुअी।

पुरी, ६–५–'३४ बापूके आशीर्वाद

चिरंजीव बन बैठा!

बापूजी मुझे 'भाअी' संबोधन करके पत्र लिखते थे। मैंने अिसके खिलाफ शिकायत की कि आप अैसा कैसे लिखते हैं। क्योंकि जिनको वे चिरंजीव लिखते थे अुनसे मुझे अीर्ष्या होती थी। अिस बारेमें बापूजीका जवाब आया:

भाअी बलवन्तसिंह,

भाअी अथवा चिरंजीव अथवा और कोअी विशेषणसे कुछ फर्क नहीं पड़ता जब तक भाव अेक है। मुझे जिसका ठीक परिचय नहीं है,

जिसकी अुम्र अित्यादि नहीं जानता हूं अुसको प्राय: भाअी लिखा करता हूं। तुमको सुरेन्द्र अपने साथ रखे तो मुझको अच्छा लगेगा। नारणदास राजकोट है। वह कहे अैसा करो।

४–६–'३४ बापूके आशीर्वाद

अिसके बाद मैं जबरदस्ती बापूजीका 'चिरंजीव' बन बैठा और फिर कभी बापूजीने मुझे 'भाअी' नहीं लिखा।

समाजवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर

अिसके पश्चात् मैं ता० २९–६–'३४ को साबरमती हरिजन-आश्रममें[१] बापूजीसे मिला। बापूजीने मुझे राजकोट नारणदासभाअीके साथ काम करनेकी सलाह दी। लेकिन वहां मुझे अच्छा न लगा और मैं अपने घर वापिस आ गया। १ जनवरी, १९३५ को बापूजी हरिजन-आश्रमकी नींव डालने दिल्ली आये थे। मैं बापूजीसे मिलने गया और जब तक वे दिल्ली रहें, तब तक अुनके साथ दिल्ली ठहरनेकी अिच्छा मैंने प्रकट की। बापूजीने अनुमति दे दी और मैं वहां ठहर गया। यहां पर बापूजीको और निकटसे देखा। अुनके पास अनेक प्रकारके लोग आते थे, चर्चा करते थे और मैं सुनता था। अेक रोज समाजवादी पार्टीके लोग बापूजीके पास आये और चर्चा करने लगे कि किसानों पर बहुत कर्ज है, अुससे अुन्हें कैसे मुक्त किया जाय। अुन्होंने यह भी पूछा: "खांड़के लिअे गन्ना बेचनेमें अधिक पैसा मिलता है, गुड़में कम। तब किसान क्या करें? स्वराज्यमें पूंजीवाद रहेगा या नहीं? आपके ग्रामोद्योगमें राजनीति है या नहीं?"

बापूने कहा: "किसानोंको कर्जसे मुक्त तो मैं आज नहीं कर सकता हूं। अगर आज स्वराज्य भी हो जाय तो मैं अैसी घोषणा नहीं कर सकता कि किसानों पर जो कर्ज है वह कम कर दिया जाय। लेकिन मैं तो किसानोंको आलस्यसे व फिजूलखर्चीसे बचानेका प्रयत्न कर रहा हूं। किसानों पर कर्ज क्यों होता है? कोअी कहता है, मैंने शादी की थी; कोअी कहता है, मैंने पिताका श्राद्ध किया था। मैं कहता हूं, लाओ मैं तुम्हारा पंडित बन जाअूं, श्राद्ध और शादी दोनों करवा दूं। अुसमें पैसेकी क्या जरूरत है?

---

१. सन् १९३४ में बापूजी हरिजन-यात्रा कर रहे थे और अुस दिन साबरमती हरिजन-आश्रममें आये थे।

"किसानोंको गुड़ बनाकर अधिक पैसे लेने चाहिये, क्योंकि लोगोंको समझना चाहिये कि खांड़से गुड़ अच्छा है। खांड़में से सब तत्त्व चले जाते हैं और गुड़में वे सब रहते हैं।

"स्वराज्यमें भी कुछ तो व्यक्तिगत संपत्ति रहेगी ही। अैसा कोअी देश नहीं है जहां अैसा न हुआ हो।"

बीचमें अेक सज्जनने कहा कि रूसमें अैसा नहीं है।

बापूने कहा, "क्या तुम रूस गये हो?"

अुसने कहा, "हां जी।"

बापूने हंसकर कहा, "तब तो मैं हारा।"

खूब हंसी हुअी। बापूने पूछा, "क्या अेक भी समाजवादी अैसा है जिसके पास व्यक्तिगत संपत्ति कुछ भी न हो?"

सत्यवती[1] बहनने कहा, "हां, मैं अैसी हूं।"

बापूने कहा, "यह शरीर तो तुम्हारी संपत्ति है ही।"

सत्यवती, "ना जी, शरीर भी समाजका है।"

बापू गंभीर हो गये और बोले, "देखो संभलकर बात करो। अगर कोअी आदमी तुम्हारी तरफ बुरी निगाहसे देखे तो तुम पिस्तौल लेकर खड़ी हो जाओगी न?"

सब लोग खूब हंसे और सत्यवतीबहन झेंप गअीं।

चौथे प्रश्नके अुत्तरमें बापूने कहा, "ग्रामोद्योगमें राजनीतिक भावना लेकर कोअी कार्यकर्ता नहीं आयेगा। लेकिन अुसका परिणाम तो वही आयेगा जो कांग्रेस चाहती है।"

* * *

अेक रोज अेक भाअीने बापूजीसे तत्त्वज्ञानके बारेमें चर्चा करते हुअे कुछ पूछा। बापूजीने कहा, "यह काम तो अीश्वरका है। अिसका ठेका तुम क्यों लेते हो? तुम करोड़ोंमें अेक क्यों बनते हो? करोड़ोंमें ही रहो। तत्त्वज्ञान अनुभवगम्य है और खुदके अनुभवसे आनेवाली अवस्था है। तुम तो सेवा करो। लोगोंको अच्छा गुड़, अच्छा आटा, अच्छा तेल, अच्छा चमड़ा, अच्छा चावल दो और अच्छा दूध पिलाओ। अगर अुसमें कुछ पाप हो तो मेरे अूपर छोड़ दो और पुण्य हो तो तुम लो।"

---

१. स्वामी श्रद्धानन्दजीकी पौत्री और दिल्लीकी अेक प्रमुख कार्यकर्त्री।

ये मेरे अेक मित्र थे। अिनके लिअे मैंने बापूजीसे समय मांगा था। बापूजीने मेरी तरफ गंभीरतासे देखकर कहा, "मेरे पास अैसी बातोंके लिअे समय कहां है?"

६
वर्धाको प्रस्थान

खुर्जामें अुस समय श्री रामस्वरूपजी गुप्ता खादीकार्य चला रहे थे। अुनकी अिच्छा मुझे अपने साथ काममें ले लेनेकी थी। मैं बापूजीकी अनुमतिसे ही अपना काम निश्चित करना चाहता था। अतः हम दोनों अुनके पास गये। सारी बातें सुनकर बापूजीने कहा, मुझे लगता है कि तुम मेरे साथ वर्धा चलो। अिसीमें तुम्हारा हित है। मेरी मानसिक तैयारी बापूजीके साथ जानेकी नहीं.थी और मनमें आशा थी कि बापूजी यहां रहनेके लिअे आशीर्वाद दे देंगे। लेकिन अीश्वरको कुछ और ही मंजूर था। मेरी अितनी हिम्मत नहीं थी कि बापूजीके निर्णयके बाद कह सकूं कि मेरी वर्धा चलनेकी अिच्छा नहीं है। अिसलिअे मुझे अुनके साथ जाना मंजूर करना ही पड़ा। गुप्ताजीको बापूजीके निर्णयसे निराशा तो हुअी, लेकिन क्या करते? मैं अेक रोजके लिअे अपने घर जाकर सामान ले आया और बापूजीके साथ हो लिया। २८ जनवरी, १९३५ को बापूजी वर्धाके लिअे निकले और मैं भी अुनके साथ गया। अुस समय मेरे मनकी स्थिति अेक कैदी जैसी ही थी। जब आज बापूजीके अुस रोजके निर्णयका विचार करता हूं, तो लगता है कि बापूजीमें कोअी अैसी अजीब शक्ति थी जिससे वे मनुष्यके अनेक दोषोंमें से भी अुसके थोड़ेसे गुणोंको परख कर और अुसे अपने निकट रखकर दोषोंका निवारण और गुणोंका विकास कर लेते थे। कितनी दूरदृष्टि, कितना स्नेह, कितनी अुदारता, कितनी क्षमा, मांकी तरह खुद कष्ट सहन करनेकी कितनी अटूट शक्ति अुनमें भरी हुअी थी!

वर्धा जाकर बापूजीने मगनवाड़ीमें अपना डेरा जमाया और वहांकी भोजनादिकी सारी व्यवस्था, जो ग्रामोद्योग-संघके हाथमें थी, अपने हाथमें ले ली। वहांका रसोअीघर नौकरोंसे चलता था। बापूजीने कहा कि अब

तो आश्रमके ढंगका रसोआीघर हमें अपने सहयोगसे चलाना चाहिये। अुसकी जिम्मेदारी हममें से कोअी ले ले। श्री महादेवभाअीके साथ विचार करके बापूजीने वह जिम्मेदारी मुझे देनेका निश्चय किया। मैंने कहा कि भोजनालयके लिअे बाजारसे सामान खरीदना मेरे स्वभावके अनुकूल नहीं है। बापूजी गंभीरतासे बोले :

"अैसी बात क्यों करते हो? जो काम मिल जाय अुसीको कर्तव्यप्राप्त समझकर करना चाहिये। अिसीको भगवानने गीतामें 'योगः कर्मसु कौशलम्' कहा है। किसी कामकी प्राप्तिकी लालसा भी न हो। मैं तुमको यही सिखा देना चाहता हूं कि किसी भी काममें हमको संकोच न होना चाहिये। कार्य तो बाहरकी चीज है और अीश्वर अंतरकी चीज है। बाहरी पूजा तो भक्त कर सकता है और दंभी भी। परन्तु अन्तरकी पूजा तो भक्त ही कर सकता है। बस, अगर हम अंतरके पुजारी बन जायं तो हमारा काम निबट जाता है।"

बापूजीके ये अुद्‌गार प्रेम और सहृदयतासे ही सने हुअे नहीं थे, बल्कि अुनमें कल्याणकी कामना थी और वे जोखिम अुठाकर भी मेरा सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। मुझे यह सुनकर खूब आनन्द हुआ और मैंने अपनी बातको वापिस ले लिया। लेकिन बापूजीने बाजारसे सामान खरीदनेका काम मुझे न देकर श्री ब्रजकृष्णजी चांदीवाला[१] को दिया। बापूजीने आगे कहा, "यह ग्राम-व्यवसाय मेरे जीवनका आखिरी कार्य है। अिसको सुशोभित करना मेरा धर्म है। जो लोग मेरे पास रहना चाहते हैं, वे आश्रम-जीवन बितायें और अिस काममें मेरी मदद करें।"

श्री सत्यदेवजी शास्त्री[२]से निष्काम कर्मके बारेमें बात करते हुअे बापूजीने कहा कि "कर्तव्यप्राप्त कर्म अपनेको निमित्त मात्र समझकर करना चाहिये। जगतमें अनेक शक्तियां अपना काम कर रही हैं। हम तो अुन शक्तियोंमें से क्षुद्रसे क्षुद्र शक्ति रखते हैं। यह अहंभाव रखना तो मूर्खता है कि मैं करता हूं।" बापूजीने यक्ष और पांडवोंका दृष्टान्त दिया।

---

१. दिल्लीके अेक प्रसिद्ध कार्यकर्ता।

२. साबरमती आश्रममें बापूके पास आये थे। अुस समय महिलाश्रममें शिक्षक थे।

मैं भोजनालयके काममें कड़ाअीसे नियमोंका पालन करता था। अिसलिअे भोजनालयमें मेरा रहना कुछ आदमियोंको अखरता था। जब मैं भोजनालयके अिस कामसे अूबने लगा, तब मैंने अपनी मन:स्थिति बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा:

"सच्ची पाठशाला तो पाकशाला ही है। साबरमती आश्रमके आरंभमें पाकशालाका काम मेरे, काकासाहबके तथा विनोबाके हाथमें रहा। यह काम कठिन तो है ही। परन्तु अिसमें लोगोंकी मनोवृत्ति पहचाननेका अच्छा अवसर मिलता है। मानापमान सहन करना ही तो बड़ीसे बड़ी साधना है। मेरा धर्म है कि तुमको हारने न दूं। अगर तुम भागना चाहो तो भागनेके लिअे स्वतंत्र हो; परन्तु तुम्हारा भागना मुझे अच्छा न लगेगा। और आखिर तो जहां जाओगे वहां भी मनुष्य ही रहते होंगे और अुनसे भी संघर्ष होगा तो क्या करोगे? मेरा मार्ग तो लोगोंके बीचमें रहकर सेवा करनेका है। पहाड़ोंमें, जंगलमें भाग जानेका मेरा मार्ग नहीं है। और वह मुझे पसन्द भी नहीं है, क्योंकि अुसमें दंभ भी हो सकता है। यह जगत हिंसामय है। अिसमें अहिंसामय बनकर रहना ही पुरुषार्थ है। तुम नाथके और सुरेन्द्रके पुजारी हो, यह समझकर ही मैंने तुमको अितनी जिम्मेदारीका काम सौंपा है। अिसीमें अीश्वरका दर्शन करना और हरअेक कामको सफाअी और सूक्ष्मतासे करना बहुत बड़ी साधना है। जब तक मेरे मनमें न आ जाय कि अब तुमको किसी गांवमें जाकर सेवाकार्य करना चाहिये या तुम्हारे मनमें निश्चयपूर्वक न आ जाय, तब तक यहांसे तुम्हारा हटना मुझे अच्छा न लगेगा। मानापमानका सहन करना तो बड़ा तप है। तब ही हम गीताके बारहवें अध्यायको अपने जीवनमें अुतार सकते हैं। किसी बकरेको न मारना ही अहिंसा नहीं है, सबसे प्रेम करना ही अहिंसा है। तुम्हारे कामसे मैं खुश हूं। तुम्हारा सब काम मेरी नजरमें है। तुम प्रसन्नतापूर्वक रहो और अपना काम करो।"

* * *

सेवाग्रामके रसोअीघरका काम कुछ समयके लिअे श्री गोविन्द रेड्डीजीने किया था। अुनके नाम बापूजीने जो पत्र लिखा था अुसमें भी यही भाव व्यक्त हुअे हैं।

चि० गोविन्द रेड्डी,

तुम्हारा पत्र मिला था। अुत्तर न दे सका। काम जो तुम कर रहे हो अुसे नअी तालीमका समझो। रसोअीका काम सबसे कठिन है अैसा कहा जाय। अनेक स्वभावके लोगोंको प्रसन्न रखना, फिर भी नियम पालन करवाना आसान नहीं है। अिस कामके लिअे स्थितप्रज्ञ चाहिये। यह कार्य कैसे करना सो तो मैं नहीं बता सकता हूं। अनुभवसे तुम सीखोगे। अितना है, तुम्हारेमें अुदार दिल, संयम, शान्ति, विचारशीलता चाहिये।

—बापूके आशीर्वाद

७

मगनवाड़ीके प्रयोग और पाठ

कार्यारम्भ

सन् १९३४ में बापूजीके मनमें जब ग्रामोद्योग-संघकी स्थापनाका विचार आया, तो प्रश्न अुठा कि अुसका मुख्य केन्द्र कहां रखा जाय। जमनालालजीके मनमें बहुत दिनोंसे चल रहा था कि किसी तरह बापूजीको वर्धामें बसाया जाय। बस, अिस अवसरका लाभ लेकर अुन्होंने तुरन्त हाथ फैला दिया और कहा कि अुसके लिअे वर्धा सबसे अच्छी जगह है, क्योंकि वह हिन्दुस्थानके मध्यमें है और ग्रामोद्योग-संघके लिअे मैं अपना बगीचा तथा मकान और सब प्रकारकी सुविधा देनेको तैयार हूं। बापूजीने अुसे स्वीकार किया और जमनालालजीने अपना सुन्दर बगीचा और मकान ग्रामोद्योग-संघको समर्पण कर दिया। अुसका नामकरण मगनलालभाअी गांधीके नामसे मगनवाड़ी किया गया। अिसलिअे मगनवाड़ी बापूजीका मुख्य क्षेत्र बना और ग्रामोद्योग-संघको व्यवस्थित और लोकप्रिय बनानेकी दृष्टिसे बापूजीने अपना डेरा मगनवाड़ीमें डाला। बापूजी मगनवाड़ीमें करीब डेढ़ साल रहे। अितने समयमें ग्रामोद्योगोंके पुनरुद्धार, ग्राम-सफाअी, भोजनके प्रयोग, रचनात्मक कार्यकर्ताओंके साथ हुअी चर्चाअें — अनेक अैसे प्रसंग हैं जिनसे बापूजीके मगनवाड़ी निवासका

अेक स्वतंत्र बड़ा ग्रंथ बन सकता है। अिन प्रसंगोंको सुन्दर ढंगसे तो महादेवभाअी[1] ही लिख सकते थे। शायद अुनकी डायरीमें से कुछ मिलें भी। कुमारप्पाजी[2] कुछ लिख सकते हैं। मेरा तो सिर्फ भोजनालयके कारण या घरेलू कारणोंसे बापूजीके साथ जो थोड़ा-बहुत सम्बन्ध आता था अुसीके बारेमें मैं कुछ अुदाहरण यहां दूंगा।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, बापूजीने कार्यारंभ वहांके रसोअी-घरका चार्ज अपने हाथमें लेकर किया। अुन्होंने लोगोंको हाथ-पिसा आटा, हाथ-कुटा चावल, घानीका तेल अित्यादि खानेका और अपने हाथसे ही रसोअी बनानेका पाठ देना आरम्भ किया। अिस प्रकारका रसोअीघर चलानेका मेरे जीवनमें यह पहला प्रसंग था। विविध प्रकारके लोग आते थे, समय-बे-समय भी आते थे। अुन सबका आतिथ्य करना और अुन सबको संतोष देना बड़ा कठिन काम था। मगनवाड़ीमें भिन्न भिन्न रुचिके लोग थे। आटा सब लोगोंको बारी-बारीसे पीसना पड़ता था। खाना बनाने और बरतन मलनेकी भी बारी थी, लेकिन अुसमें बहुत बाधाअें आती थीं।

बापूने तेलकी घानी भी वहीं शुरू कर दी थी, जिसकी व्यवस्था श्री छोटेलालजी[3]ने की थी। बादमें अुसका चार्ज प्रकाशबाबूको दिया गया था, जो 'ट्रिब्यून' के अुपसंपादक थे, लेकिन अुसे छोड़कर सत्संगके लिअे बापूके पास आ गये थे। लोगोंको रहनेके लिअे जगहकी भी तंगी थी। पश्चिमके दरवाजेके अुत्तरवाले कमरेमें सब लोग रहते थे। और अुसका नाम धर्मशाला पड़ गया था। कुछ दिन काकासाहब कालेलकर भी अुसमें रहे थे। भंसालीभाअी[4] का

---

१. श्री महादेव देसाअी, बापूजीके सेक्रेटरी।

२. श्री जे० सी० कुमारप्पा, प्रसिद्ध अर्थशास्त्री। अुस समय ग्रामोद्योग-संघके मंत्री।

३. १९१७ से साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख आश्रमवासी। अिनका विस्तृत परिचय 'सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग' नामक प्रकरणमें आयेगा।

४. श्री जयकृष्ण भंसाली। साबरमती आश्रमसे बापूजीके साथी। अुन्होंने १२ बरसका मौन लिया था। अुन्होंने कअी लंबे लंबे अुपवास व भोजनके विचित्र विचित्र प्रयोग किये हैं। सन् १९४२ के आन्दोलनमें अुन्होंने सबसे लम्बा अुपवास किया था, जो ६३ दिन तक चला था। अिसका वर्णन 'अगस्त-आन्दोलन और आश्रमवासी' नामक प्रकरणमें आयेगा।

कर्मयोग वहींसे शुरू हुआ था। जब वे भटकते भटकते बापूके पास आये तब अुनकी शारीरिक अवस्था बहुत खराब थी। पैर सूजे हुअे थे। दांत बिलकुल निकम्मे हो गये थे, क्योंकि वे केवल कच्चा आटा ही घोलकर पीते थे। बापूने अुनको धूपमें सिकी हुअी रोटी खाने और चरखा कातनेको राजी कर लिया और वहीं रहनेके लिअे कहा। वे रह गये, किन्तु अुस समय वे बापूसे ही बात करते थे और बाकी समय मौन रखते थे।

छोटे-छोटे कामों पर भी बापू बहुत बारीकीसे ध्यान देते थे। मीराबहन बापूकी व्यक्तिगत सेवा करती थीं। रसोअीघरमें नित-नये अैसे प्रश्न आते थे, जिनके लिअे मुझे बापूके पास जाना पड़ता था। मेरे खिलाफ शिकायतें भी बापूके पास काफी जाया करती थीं। भोजनका क्रम यह था:

सुबह — नाश्तेमें दलिया और १० तोला दूध।

दोपहरको — २० तोला दही या छाछ और रोटी तथा साग।

शामको — २० तोला दूध और खिचड़ी या चावलके साथ साग।

* * *

अब मैं यहां कुछ अैसे प्रसंग देता हूं, जिनसे मुझे बापूके विविध पहलुओंका ज्ञान हुआ, जीवनमें मैंने बहुत बहुत सीखा और अुसके प्रकाशमें अपने जीवनको गढ़नेका प्रयत्न किया।

१. पहला पाठ

अेक रोजकी बात है। दलिया खतम हो गया था। श्री तुलसी मेहरजी नेपालसे कुछ खानेकी चीजें लाये थे। अुन्होंने कहा कि सवेरे नाश्तेमें सब लोगोंको बांट देना। दलिया था नहीं और ये चीजें मिल गअीं, अिस कारण मैंने दूसरे दिन नाश्तेमें लोगोंको दूध तथा मेहरजीकी लाअी हुअी चीजें दीं। शामको घूमते समय बहनोंने बापूके सामने बात निकाली कि आज सुबह नाश्तेमें दलिया नहीं बना था। बापू चौंके कि यह कैसे हो सकता है?

शामकी प्रार्थनाके बाद मेरी पेशी हुअी। बापूने पूछा, "क्यों बलवंतसिंह, आज दलिया क्यों नहीं बना था?" मैंने सब परिस्थिति और कारण बताया। अिस पर बापूने लम्बा भाषण सुनाया। कहा, "देखो मैंने ग्रामोद्योग-संघका रसोअीघर जिस तरहसे चलता था वह बन्द कर दिया है और सबको खाना

खिलानेकी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली है। अुनको मैंने बता दिया है कि मैं तुमको क्या क्या खिलाअूंगा, और वह सब मैं तुम्हारे मारफत करवाना चाहता हूं। मैंने अुन्हें खिलानेका जो वचन दिया है अुसमें अगर अुनकी अनुमति लिये बिना कुछ परिवर्तन करूं तो मेरे लिअे यह अुचित नहीं है। तुलसी मेहरकी चीजें भोजनके समय या नाश्तेमें अूपरसे दे सकते थे, लेकिन दलिया तो लोगोंको देना ही चाहिये था। दलियाके बदलेमें दूसरी चीजें देकर हम दलिया न बनानेका बचाव नहीं कर सकते। जो लोग दलिया ही पसंद करते हैं और दूसरी चीज नहीं लेते, अुनके लिअे तुम्हारे पास क्या जवाब है? अगर दला हुआ दलिया नहीं था तो मुझसे तो कहना था। मैं खुद दलनेमें मदद करता।"

शिकायत करनेवाली बहनों पर मुझे गुस्सा तो आया, पर बापूका कहना ठीक लगा। मैंने अपनी भूल कबूल की और कहा कि आगे जब कभी अैसा प्रसंग आयेगा तब आपकी मदद जरूर लूंगा, पर आगे अैसी भूल नहीं होगी।

लोग ठीक समय पर अपने हिस्सेका आटा नहीं पीस पाते थे। अेक रोज आटा खतम हो गया तो मैं सीधा बापूके पास गया और बोला कि आज आटा नहीं है और कोअी पीसनेवाला भी नहीं है। मैं चाहता तो खुद पीस सकता था और कोशिश करके किसी दूसरेकी मदद भी ले सकता था। लेकिन मेरे मनमें तो अुस रोज बापूने कहा था अुसकी कुछ चिढ़ थी। अिसलिअे मैं अुनकी परीक्षा लेना चाहता था। बापूने कहा, "चलो मैं चलता हूं पीसनेके लिअे।" बापू आये और मेरे साथ चक्की पर बैठ गये। बस, हमारी चक्की चलने लगी!

बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे थे, अिसलिअे अेक ओर तो मनमें अिस बातकी खुशी हो रही थी कि मैं बापूको चक्की पर कैसे घसीट लाया; आज बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे हैं। परन्तु दूसरी ओर मनमें दया और शर्म आ रही थी। यह तो मैं भी कर सकता था। बापूजीको क्यों कष्ट दिया? अुस समय श्री काले, जो अेक लाखके अिनामवाले चरखेका प्रयोग कर रहे थे, वहीं थे। वे अेक कैमरा लेकर बापूजीका फोटो लेने लगे। मैं नहीं जानता कि वह चित्र कहीं आया है या नहीं, या आया है तो कैसा आया है। लेकिन मेरे मनमें अुसे प्राप्त करनेकी अिच्छा सदा बनी रही है।

सचमुच ही मेरे लिअे यह बापूजीका दिया हुआ अेक बड़ा पाठ था। जगतके अेक महान पुरुषके साथ चक्की पीसनेका सौभाग्य मुझे मिला। बापूजीकी कर्तव्य-निष्ठाका और छोटे छोटे कामोंको भी वे कितना महत्त्व देते हैं अिसका ज्ञान मुझे अिस बातसे हुआ। थोड़ी देरमें मैं हारा और मैंने बापूजीसे कहा कि आप जाअिये, मैं खुद ही पीस लूंगा। बापूजीके पास कामका तो पहाड़ पड़ा था। बोले, "हां, मेरे पास तो बहुत काम पड़ा है।" और वे चले गये। अुस रोजसे मैंने अिस बातकी सावधानी रखी कि अिस प्रकारका प्रसंग कभी न आवे। लेकिन अैसे प्रसंग और भी आये, जब बापूजीने कामकी भीड़में भी दूसरोंके काममें हाथ बंटाया।

२. भगवान कृष्णका स्मरण

अेक दिन बापूजीने अेक योजना निकाली कि सबके जूठे बरतन बारी बारीसे दो-तीन आदमी मलें और रसोअीघरके पकानेके बरतन दो आदमी बारी बारीसे अलग मलें। अिससे लोगोंमें आपसमें प्रेमभाव बढ़ेगा, अेक-दूसरेके बरतन मलनेमें जो घृणा होती है वह मिट जायगी और सबका समय भी बचेगा। अुन्होंने अिसका महत्त्व मुझे समझाया। लेकिन अुनकी यह बात मेरे गले न अुतरी। मैंने कहा कि सबके जूठे बरतन अेकसाथ मलनेमें काफी अव्यवस्था होनेका डर है। बापूने कहा कि अव्यवस्थामें व्यवस्था लाना ही हमारा काम है। चलो, पहली बारी मेरी और बाकी। बस, बाको लेकर बापूजी बरतन मलनेकी जगह जाकर बैठ गये! सबसे कह दिया कि थाली यहां रख दो और हाथ धोकर चले जाओ। पहले तो लोग घबराये, लेकिन बापूका रुख देखकर सब बरतन रखकर चले गये। बस, बापू और बा दोनों बरतन मलनेमें जुट गये। मैं रसोअीघरके चार्जमें था। मुझे वे ना नहीं कह सकते थे। अिसलिअे मैं अुनकी मददमें चला गया।

जब बापू और बा सबके जूठे बरतन साफ कर रहे थे, तब मेरे मनमें भगवान कृष्णकी याद आ रही थी और मैं सोच रहा था कि युधिष्ठिरके यज्ञमें भगवान कृष्णने जूठन अुठानेका काम क्यों लिया होगा। मनमें आनन्द और लज्जाका द्वन्द्व चल रहा था। लेकिन बापूजी और बाको हम अुस कामसे कैसे विरक्त करें, अिसका रास्ता नहीं सूझ रहा था। साथ ही साथ मनमें यह भाव भी पक्का हो रहा था कि जब बापू और बा भी अिस तरहका काम कर सकते हैं, तो हमारे मनमें किसी भी कामके लिअे छोटे-बड़ेका भेद नहीं

रहना चाहिये। बीच बीचमें बा और बापूका मनोरंजन भी चल रहा था। दोनोंमें होड़ लग रही थी कि देखें कौन अच्छा साफ करता है। बापूजी बरतन साफ करते जाते और कहते, "क्यों बलवन्तसिंह, कैसा साफ हुआ है? तुम क्यों हिम्मत हारते हो? आदमी निश्चय करे तो दुनियामें कौनसा अैसा काम है जो वह न कर सके? आखिर हमारे घरोंमें क्या होता है? स्त्रियां ही घरके सब जूठे बरतन साफ करती हैं न? यह हमारा बड़ा कुटुम्ब है। और हमें स्त्री-पुरुषका भेद मिटाना है, अिसीलिअे तो मैंने रसोअी-घरका चार्ज किसी बहनको न देकर तुमको दिया है। साबरमतीमें भी मैंने रसोअीका चार्ज विनोबाको दिया था। मैं मानता हूं कि स्त्री-पुरुषके कामोंके विषयमें जो भेद है वह हमारे आश्रममें तो रहना ही नहीं चाहिये। और खास तौर पर रसोअीघर तो पुरुषोंको ही चलाना चाहिये। मैंने अपने जीवनमें अिस प्रकारके अनेक प्रयोग किये हैं। और मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सामूहिक रसोअीघर चलानेमें जो कुटुम्ब-भावना बढ़ती है वह अन्य प्रकारसे नहीं बढ़ती। जो रसोअीघर चलाता है असकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी होती है। सब चीजोंको व्यवस्थित और स्वच्छ रखना और जितने भोजन करनेवाले हैं अुनको भगवान समझकर प्रेमसे खिलाना यह आध्यात्मिक प्रगतिकी बड़ी साधना है। तुम अिसमें पास होगे तो मैं समझूंगा कि तुम सेवा कर सकते हो।"

मेरे मनमें अेक तरफ तो यह चल रहा था कि जल्दीसे जल्दी बापूजी बरतन छोड़कर यहांसे चले जायं और दूसरी तरफ यह चल रहा था कि बापूजी जितनी देर तक यहां रहें अुतना ही अच्छा है। क्योंकि मुझे दोनों प्रकारके पाठ मिल रहे थे। अगर मैं चित्रकार होता तो अुस दिनका चित्र बनाकर लोगोंके सामने रखता। बापूका अिस प्रकारका चित्र मैंने अेक भी नहीं देखा है; और शायद किसीके पास होगा भी नहीं।

यह लिखते समय मेरे मनमें जो भाव अुठ रहे हैं, अुनको शब्दबद्ध करना मेरे सामर्थ्यसे बाहरकी बात है। बापू कहां और हम कहां? हमको अुन्होंने कितने कितने कष्ट सहन करके कैसे कैसे अुपयोगी और महान पाठ पढ़ाये! लेकिन हम पूरी तरहसे अुनके पाठोंको हजम नहीं कर पाये। अब मनमें आता है कि दो-चार सालके लिअे बापूजी फिर आ जायें तो अुनसे खूब सीखें। परन्तु 'अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गअीं खेत?' गया

समय हाथ नहीं आता। मेरे मनमें यह कल्पना आती ही नहीं थी कि कभी बापूजी हमसे अलग होनेवाले हैं। लेकिन जो सारी दुनियाका नियम है, वही हम पर भी लागू हुआ।

३. पहले खुद फिर दूसरे

तेलघानी बापूजीके कमरेके पीछे ही चलती थी और तिल आदिकी सफाओी बापूजीके सामनेके बरामदेमें होती थी। तिलकी सफाओीका काम बा और दूसरी बहनें करती थीं। अेक रोज पूज्य बाने मुझसे कहा, "बलवन्त, देखो यह तिल बहुत बारीक है और अिसमें बारीक कचरा है। मेरी आंखसे नहीं दीखता है। तुम अेक बाओीसे सफाओी करा दो न।" मैंने बड़े अुत्साह और आनन्दके साथ हां कहा।

अुस समय अेक बोरेकी सफाओी करनेके लिअे मजदूरनी दो या चार आने पैसे लेती थी। मैंने तुरन्त ही अेक बाओीको तिल साफ करनेके लिअे लगा दिया और मनमें खुश होने लगा कि मैंने बाकी मदद की। मुझे पता नहीं था कि थोड़ी ही देरमें बाके और मेरे दोनोंके अूपर बापूका हंटर पड़नेवाला है।

बापू स्नानके लिअे या अन्य किसी कामके लिअे कमरेसे बाहर निकले। मजदूर बाओीको तिल साफ करते देखकर बोले, "अिस बहनको किसने लगाया?" अब बिल्लीके गलेमें घंटी बांधनेका सवाल खड़ा हो गया। जवाब कौन दे?

मैंने डरते डरते धीरेसे कहा, "बापूजी, मैंने लगाया है।"

बापू बोले, "क्यों? मैंने तो यह काम बाको और दूसरी बहनोंको सौंपा है। तब तुम अिसके बीचमें क्यों पड़े?"

मैंने शरमाते हुअे कहा कि तिल बहुत बारीक हैं और अुनमें बारीक कचरा है। यह कचरा बाको नहीं दीखता है। फिर अिसकी सफाओीके पैसे भी ज्यादा नहीं लगेंगे।

बापू गंभीर हो गये और बोले, "ठीक है, तो दूसरा सब काम छोड़ कर मैं पहले तिल साफ करूंगा।" वे सूप लेकर तिल साफ करने बैठ गये। यह देखकर मैं तो पसीना पसीना हो गया।

पासवाले कमरेमें बा हमारा संवाद सुन रही थीं। शायद अुनके मनमें भी मेरे अूपर दया और बापूके अूपर गुस्सा आ रहा होगा। वे थोड़ी देरमें बाहर आअीं और दुखी मनसे बापूके हाथसे सूप छीनकर बोलीं, "आप अपना काम करें। हम साफ कर लेंगे।" बापू चले गये और बा तिल साफ करने लगीं। अुस समय मुझे भी यह सोचकर बापूके अूपर बड़ा गुस्सा आया कि छोटीसी बातके लिअे वे बाको कितना कष्ट देते हैं। लेकिन जिसको मैं छोटी समझता था, वह बापूके लिअे बड़ी बात थी। वे तो गृह-अुद्योग और ग्रामोद्योगके लिअे ही वहां बैठे थे। अगर अुसको सबसे पहले बासे न कराते या खुद न करते, तो दूसरोंसे करनेके लिअे कहनेका बल कहांसे लाते?

४. किफायतशारीका अनोखा नमूना

अेक बार बजाजवाड़ी, वर्धामें कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक हुअी। बापूजीने भोजनके लिअे सबको निमंत्रण दिया। मुझे बुलाकर कहा कि देखो आज अितने मेहमान आनेवाले हैं। अुनके भोजनका प्रबंध करना है।

मैंने कहा, "मेरे पास अितनी थाली-कटोरी नहीं हैं।" वे बोले, "बड़के पत्ते तोड़ लाओ और अुनकी पत्तलें बना लो। कटोरियोंके स्थान पर मिट्टीके सकोरे अिस्तेमाल करो। आखिर देहातके लोग क्या करते हैं? जब अुनके यहां मेहमान आते हैं तो क्या वे नये बरतन खरीदते हैं? हम भी तो यहां गरीबीका व्रत लेकर ही बैठे हैं न? हम तवंगर तो हैं नहीं जो नये नये बरतन खरीदते रहें। और देखो, जो मिट्टीके सकोरे हैं वे भी खानेके बाद फेंक देनेके लिअे नहीं हैं। अुन सबको धोकर, साफ करके फिर अग्निमें शुद्ध करके रख देना।"

पत्तलकी बात तो मेरी समझमें आ गअी, लेकिन मिट्टीके सकोरोंको काममें लेकर और अग्निमें शुद्ध करके फिर काममें लेनेकी बात मेरे मनको नहीं पटी। क्योंकि अुत्तर-प्रदेशमें तो यह रिवाज है कि मिट्टीका बरतन अेक बार काममें लिया और फेंक दिया। और यही संस्कार मेरे चित्त पर जमा हुआ था। अिसलिअे अुसे फिर काममें लानेसे मुझे घृणा थी। अिस पर बापूजीने अेक लंबा भाषण सुनाया।

बापूजीने कहा, "देखो, कुम्हार अुस पर कितनी मेहनत करता है! अुसे बनाता है, तपाता है, अुस पर रंग चढ़ाता है। और हम अेक ही बार अिस्तेमाल करके अुसे फेंक दें यह तो हिंसा है। सामानकी बरबादी तो है

ही।" मुझे अब ठीक याद नहीं है, लेकिन पेरिनबहन या गोसीबहनका नाम लेकर बापूने कहा कि "अुन्होंने मुझे बताया है कि अिस तरहसे मिट्टीके बरतनका अुपयोग हो सकता है और वे करती भी हैं। तो हम भी क्यों न करें?"

बापूजीकी बात पूरी तरह तो मुझे नहीं जंची, लेकिन मैंने प्रयोग करना कबूल किया। सकोरे दिल्लीसे हमारे साथ आये थे। जब सब लोग खाने बैठे तो मैंने सूचना की कि मिट्टीके बरतन कोअी फेंक न दें। धोकर अेक तरफ रख दें। अुनका फिर अिस्तेमाल किया जायगा। अिस पर राजेन्द्रबाबू चौंक कर बोले, "अुन्हें फिर अिस्तेमाल किया जायगा?" बापू अुनके पास ही बैठे थे। अुन्होंने कहा, "हां, अिनको फिरसे अग्निमें तपाकर शुद्ध किया जायगा। तब दुबारा अिनका अुपयोग करनेमें कोअी हर्ज नहीं है।" बापूकी यह बात अुनको अटपटी लगी, लेकिन वे कुछ बोल नहीं सके। मैंने सब बरतन अिकट्ठे किये और फिरसे अुन्हें अग्निमें तपाकर अुनका अुपयोग किया। अनुभव यह आया कि जिन बरतनोंमें दूध या दहीका अुपयोग किया गया था, अुनकी शकल भद्दी हो गयी; क्योंकि अुनमें चिकनाअीका शोषण हो गया था, और अिस कारण अुन पर रोगन-सा फिर गया था। पानीके बरतनोंमें कुछ फर्क नहीं हुआ और वे बिलकुल कोरेकी तरह निकले। तबसे मिट्टीके बरतनोंका अकसर मैं पानीके लिअे ही अुपयोग करता था। और वे शुद्ध कर लिये जाते थे। सकोरों-पत्तलोंका अुपयोग मगनवाड़ीमें अकसर होता था।

५. जीवनका कार्य और आशीर्वाद

मैं प्रारम्भमें अेक बात कहना भूल गया। जब हम वर्धा पहुंचे तब पहले तो बापूजीने मेरे साथ घूम कर मगनवाड़ीकी सारी जमीन मुझे बतायी और कहा कि बैलके बिना हाथ-पैरसे तुम जितना काम कर सको अुतनी जमीन ले लो और अुसमें हाथसे खोदकर सागभाजी पैदा करो। तुम तो किसान हो न? और सब किसानोंके पास बैल भी कहां होते हैं? हम तो गरीब किसान हैं। अिसलिअे हमारे पास कुछ भी न हो तो भी हम अपनी सागभाजी कैसे पैदा कर सकते हैं, यह हमें सीख लेना चाहिये।

मगनवाड़ीके कुअेंके पास ही जमीनका अेक छोटासा टुकड़ा खाली पड़ा था। अुसे मैंने और बापू दोनोंने पसन्द किया और मैं फावड़ा लेकर

अुसमें जुट गया। आज सोचता हूं तो ध्यानमें आता है कि बापूने अुस जमीनके टुकड़ेमें कार्यका आरंभ करानेके साथ साथ मेरे जीवनका कार्य और अपना आशीर्वाद दोनों ही मुझे दे दिये थे। महान पुरुषोंकी दृष्टि कितनी दीर्घ होती है, अिसकी कल्पना अुस समय तो नहीं हुआी थी। किन्तु आज हो रही है। लोग किसी बड़े कामका श्रीगणेश करनेके लिअे और आशीर्वाद लेनेके लिअे किसी बड़े आदमीको बड़े प्रयत्नसे बुलाते हैं। लेकिन मेरे कामका श्रीगणेश बापूने खुद आग्रहपूर्वक प्रेमभरा आशीर्वाद देकर कर दिया। बापूकी छोटी छोटी बातोंमें कितना रहस्य भरा था, यह अुस समय ध्यानमें नहीं आता था। अब जब अुनका स्मरण आता है तो अेक अेक चीज स्मृतिपट पर चलचित्रकी तरह आकर सामने नाचने लगती है। अिससे आनन्द व दुःख दोनों होते हैं। आनन्द अिस बातका कि भगवानने हमको अैसा सुअवसर दिया कि बापूजीके अितने निकट रहकर हमें सब सीखनेको मिला; और दुःख अिस बातका कि तब हमने अुस बातको आजकी तरह क्यों नहीं समझा। सचमुच भगवान मनुष्यके जीवनमें कैसे कैसे खेल खेलता है? लेकिन हम अुनका रहस्य नहीं समझ पाते।

मैं अुस टुकड़ेमें रोज खोदता, क्यारी बनाता, खाद डालता और कुछ न कुछ सागभाजी लगाता। जब वह अुग जाती तो बापूको दिखाने लाता। बापू देखते और आनन्दसे मुक्त हास्य करते। कहते, "मेरे खाने लायक कब होगी?' मैं अुतावला हो जाता और रात-दिन चिन्ता करता कि जल्दी बढ़ जाय तो बापूको खिलाअूं। जब थोड़ी बढ़ जाती तो मैं पत्ते लेकर जाता और कुछ धोकर बापूजीके सामने रख देता। अुस समय बापूजीको और मुझे जो आनन्द होता था अुसकी तुलना मां और बच्चेके पारस्परिक प्रेमसे ही की जा सकती है।

६. भानूबापा

बापूजीके आसपास शिवजीकी बरात तो थी ही, लेकिन अुसमें भानूबापामें तो सचमुच शिवजीके ही मुख्य गुण थे। वे कच्छके थे। बापूजीके प्रति अुनकी अगाध श्रद्धा थी। अुम्रमें ६० से अूपर थे। बापूजीके पास आये और बोले, "मुझे तो आपके पास सेवा करना है। जिस कामको कोअी न करे अैसा काम मैं करूंगा और सबके बाद जो बच जायगा अुससे अपना गुजर कर लूंगा।" अुनके पास कुछ पैसा था। वह भी अुन्होंने बापूजीको

देना चाहा। अुसका क्या हुआ मुझे पता नहीं चला। बापूजीने कहा, "आप मगनवाड़ीमें चलनेवाले कामोंमें से अपनी अनुकूलताका काम पसन्द कर लें।" अुन्होंने सफाअीका काम पसन्द किया। सुबह झाड़ू और बाल्टी लेकर निकलते और मगनवाड़ीके कोने कोनेमें फिर जाते। जहां भी कचरा और गंदगी पाते वहींसे अपनी बाल्टीमें डालकर अुसे अुचित स्थान पर पहुंचा देते। जब सब लोग भोजन करके चले जाते तो मेरे पास आकर कहते, "भाअी, जो कुछ बचा हो मुझे दे दो।" मैं अुनका ध्यान तो रखता ही था। लेकिन मगनवाड़ीमें मेहमानोंकी अितनी अनिश्चितता रहती थी कि कब कितने मेहमान आ जावेंगे अिसका कोअी ठिकाना नहीं था। अिसलिअे कभी कभी मैं कठिनाअीमें पड़ जाता था। लेकिन वे तो अवधूत ठहरे। कहते, अरे किसीका जूठा तो बचा होगा? और जूठन डालनेकी बाल्टीसे जूठन निकाल कर ले जाते। मुझे अिससे दुःख और घृणा भी होती। कपड़ा मात्र लंगोटी रखते थे। ओढ़ने-बिछानेके बिस्तरका तो सवाल ही नहीं था। चटाअीका ही कोअी टूटा टुकड़ा लेकर अुसी पर कहीं पड़े रहते। और सारी मगनवाड़ीका समाचार बापूजीको सुना आते। अुनके भोजनकी अिस अव्यवस्थासे मुझे बुरा लगता। मैंने बापूजीसे कहा। बापूजी बोले, "भानूबापा तो अवधूत है। अुसकी सादाअी और असंग्रहकी तो मुझे अीर्षा होती है। लेकिन अुसके भोजनकी अव्यवस्था मुझे पसन्द नहीं है। मैंने अुसे समझाया भी। लेकिन वह बेचारा भी क्या करे? अपनी आदतसे लाचार है। अुसकी सेवा और त्याग कितना बड़ा है! अगर व्यवस्था भी अुसके जीवनमें आ जाय तो सोनेका आदमी है।"

७. त्यागका पाठ

अुसी समय बापूजीके ज्येष्ठ पुत्र हरिलाल गांधी भी बापूजीके पास आ गये थे। वे कहते थे कि मेरी भूल मेरी समझमें आ गयी है और अब मैं बापूजीके पास ही रहूंगा। बापू तो महान पुरुष थे। मैं और हरिलालभाअी अेक ही कमरेमें रहते थे। अुस कमरेमें मैं पहलेसे रहता था, अिसलिअे मैं अुस पर अपना ज्यादा हक समझता था। हरिलालभाअीने चाहा कि वह कमरा अुनके लिअे खाली कर दिया जाय और मैं कहीं दूसरी जगह चला जाअूं। मैंने कहा कि यह नहीं हो सकता। यह शिकायत बापूजीके पास गयी। अुस समय बापूका अेक महीनेका मौन चल रहा था।

बापूने मुझे बुलाया और पूछा, "तुम्हारा और हरिलालका क्या झगड़ा है?" मैंने सब बताया। बापूने लिखा :

"चि० बलवन्तसिंह,

मेरे साथ रहना और मेरे साथ रहनेवालोंसे प्रेम और परिचय नहीं रखना यह कहां तक निभ सकता है? यदि यहां रहनेसे आनन्द आता है तो तुमको सब अच्छ लगने चाहिये, और हैं भी अच्छे। मेरे साथ रहनेमें और सीखना ही क्या है? सबकी सेवा करना है, अिसलिअे सबसे प्रेम करना है अैसा निश्चय करो। आप भले तो जग भला। अेकान्तवासके लिअे कमरा कैसा? अेकान्तवास तुम्हारे लिअे वृक्षोंके नीचे, हृदयकी गुफामें है।

"तुम अुसको कमरा दे दो, क्योंकि तुम तो पेड़के नीचे भी रह सकते हो। तुम मुझे छोड़कर भागनेवाले नहीं हो, लेकिन हरिलाल तो मुझसे दूर दूर भागता है। अब अुसके दिलमें राम बैठा है और मेरे पास आया है, तो छोटी छोटी बातोंके लिअे मैं अुसको तंग करना नहीं चाहता हूं। अगर वह टिक जाय तो बहुत बड़ी बात होगी। सबसे बड़ा संतोष तो बाको होगा। बाकी यह बड़ी शिकायत है कि मैं हरिलाल पर ध्यान नहीं देता। लेकिन मैं अपने ढंगसे ही ध्यान दे सकता हूं। मेरे मनमें मेरे और परायेका भेद नहीं है। जो मेरे रास्ते चलता है वह मेरा है। दूसरे रास्तोंसे चलनेवालोंका मैं द्वेष नहीं करूंगा, लेकिन अुनकी मदद भी नहीं करूंगा। अिसलिअे तुमसे मैं त्यागकी आशा रख सकता हूं। हरिलालसे नहीं।"

४–४–'३५ बापूके आशीर्वाद

मैं बापूकी बात समझ गया और वह कमरा हरिलालभाअीके लिअे मैंने खाली कर दिया। अुस दिनसे मैं सचमुच ही पेड़के नीचे रहने लगा। बापूजीने मुझे पेड़के नीचे रहनेके लिअे क्यों कहा, अुसका मर्म मैं पेड़के नीचे रहकर समझा। वास्तवमें जिस चीजकी योग्यता मुझमें नहीं थी अुसकी आशा और शुभ संकल्प मेरे विषयमें करके बापूजीने मुझे किस तरह प्रोत्साहन दिया, अिस बातका जब मैं विचार करता हूं तो मेरा हृदय गद्गद हो जाता है और मेरा मस्तक बापूजीके चरणोंमें झुक जाता है।

बापूजीने मुझे जापानी साधु श्री केशवभाओी[1] और श्री राजकिशोरी[2] बहनको हिन्दी पढ़ानेका काम सौंपा। केशवभाओी टूटी-फूटी अंग्रेजी तो जानते थे, लेकिन वैसे जापानीके अलावा और कुछ नहीं जानते थे। मैं भी हिन्दी और गुजरातीके अलावा और कुछ नहीं जानता था। अिसलिओे अुसी पेड़के नीचे अिशारोंसे काम लेकर हमारी हिन्दी पाठशाला शुरू हुओी।

अिसी अनुसंधानमें बापूजीने अेक ही रोजमें दो पत्र और लिखे। भोजनालयका काम कितना कठिन था और मुझ पर क्या बीतती थी अिसका दर्शन अिन पत्रोंसे होता है:

चि० बलवन्तसिंह,

१. शामके लिअे रोटी न रहे तो दोपहरको हमेशा थोड़ी बननी चाहिये। कल जो हुआ वह हमारे लिअे शोभाप्रद नहीं था।

२. अब जो लकड़ी जलती है अुसमें और कुकरके पहले जलती थी अुसमें कुछ फरक है?

३. राजकिशोरीको आध घण्टा या अेक हिन्दी सिखानेमें दे सकते हैं?

४. कालेवाले कमरेके बारेमें क्या है?

५. बड़े प्लाटमें भाजी होगी?

४–४–’३५ बापूके आशीर्वाद

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारी अस्वस्थता अच्छी नहीं लगती है। यदि तुमको यहांका जलवायु अनुकूल नहीं है और मन आनन्दित नहीं रहता है, तो मैं बलात्कारसे रसोड़ेमें तुमको रखना नहीं चाहता हूं। कहो तो कोओी दूसरा काम दे दूं। सुरेन्द्रके साथ मशविरा करो।

---

१. जापानी साधु जो बापूजीके परम भक्त थे।

२. श्री चन्द्र त्यागी मेरठ जिलेके निवासी थे और साबरमती आश्रममें बहुत दिनोंसे रहते थे। राजकिशोरीबहन अुनकी पुत्रवधू थीं।

अेकांतवासके लिअे कमरा कैसे? अेकांतवास तुम्हारे लिअे वृक्षोंके नीचे — हृदयकी गुफामें है। विश्वबन्धुजीका लिखना अुचित है। अुनका यहां आना निरर्थक समझता हूं।

४–४–'३५ बापूके आशीर्वाद

८. काम करो तो खाना मिलेगा

अेक रोज अेक नौजवानने आकर मुझसे कहा कि "मुझे दो तीन रोज ठहरकर यहां सब देखना है। बापूजीसे मिलना है। मेरे पास खाने-पीनेके लिअे कुछ भी नहीं है। यहीं भोजन करूंगा।" मैंने जाकर बापूजीसे कहा। बापूजीने अुनको बुलाया और पूछा कि वे कहांके रहनेवाले हैं और अिस समय कहांसे आ रहे हैं। अुन्होंने कहा, "मैं बलिया जिलेका रहनेवाला हूं और कराची कांग्रेस देखने गया था। मेरे पास पैसा नहीं था अिसलिअे कभी गाड़ीमें बिना टिकट, कभी पदल मांगते-खाते गया और अैसे ही आया।" बापूजीने गंभीरतासे कहा, "तुम्हारे जैसे नौजवानको यह शोभा नहीं देता। अगर पैसा पास नहीं था तो कांग्रेस देखनेकी क्या जरूरत थी? अुससे लाभ भी क्या हुआ? बिना मजदूरी किये खाना और बिना टिकट गाड़ीमें सफर करना चोरी और पाप है। यहां बिना मजदूरी किये खाना नहीं मिल सकता।" अुनका नाम अवधेश था। देखनेमें अुत्साही और तेजस्वी मालूम होते थे। वहांकी कांग्रेसके कोअी कार्यकर्ता थे। अुन्होंने कहा, "अच्छा, मुझे काम दीजिये। मैं काम करनेके लिअे तैयार हूं।" बापूजीने मुझसे कहा, "अुनको कोअी काम दो। जो आदमी हृष्टपुष्ट है और काम मांगने आता है अुसको काम मिलना ही चाहिये। और अुसके बदलेमें खाना मिलना चाहिये। यह काम सल्तनत और समाज दोनोंका है। लेकिन सल्तनत तो आज पराअी है। समाजका ध्यान भी अिस तरफ नहीं है। लेकिन मेरे पास जो आदमी आकर काम मांगता है, अुसे मैं ना नहीं कह सकता। हमारे पास अैसे काम पैदा करनेकी शक्ति होनी चाहिये कि हम लोगोंको ना न कह सकें।" बापूने अुनसे कहा, "अच्छा अवधेश, तुम यहां काम करो। मैं तुमको खाना दूंगा और आठ आने रोजके हिसाबसे अूपर मजदूरी दूंगा। जब तुम्हारे किरायेका पैसा हो जाय तो टिकट लेकर घर चले जाना।" अवधेशजीने बड़ी खुशीसे कबूल किया।

मैंने अुनको रसोअीघरमें काम दे दिया। वे भाअी बड़े मेहनती और श्रद्धालु थे। मेरा खयाल है करीब डेढ़ महीना अुन्होंने खूब काम किया और टिकटके लायक पैसा हो जाने पर अपने घर चले गये।

९. रसोअीघर और सफाअी

बापूजी रसोअीघरके छोटेसे छोटे काममें खूब रस लेते थे। कभी कभी तो घंटों चक्की दुरुस्त करनेमें चले जाते थे। चावल और अनाजकी सफाअी अुनके ही कमरेमें होती थी। वे सब लोगोंको अिकट्ठे करके काम करने और ग्रामोद्योगकी चीजें खानेका महत्त्व समझाते थे। रसोअीघरमें जाकर सब चीजोंकी सफाअी और व्यवस्था देखते थे।

अेक दिन हम लोग बिना धुले आलू काट रहे थे। अितनेमें बापू आ गये। बोले, "बलवन्त, बिना धोये आलू काटना तुम कैसे सहन कर सकते हो? अुनमें चारों तरफ मिट्टी लग जाती है। पहले अुनको खूब रगड़कर धोना चाहिये और फिर काटना चाहिये।" मेरा तो अिसकी तरफ बिलकुल ही खयाल न था। मैं शरमाया और आगेसे धोकर ही काटनेका निश्चय किया।

अेक रोज बापू रसोअीघरमें आये और बड़े ध्यानसे चारों ओर देखने लगे। रसोअीघरके अेक अंधेरे कोनेकी छतमें मकड़ीका जाला लगा था। बापूने अुसे देख लिया। अुसकी तरफ अिशारा करके मुझसे कहने लगे, "देखो, वह क्या है? रसोअीघरमें जाला हमारे लिअे शर्मकी बात है।" मैं तो शर्मसे गड़-सा गया। मेरे मनमें कभी आया ही नहीं था कि अुस ओरसे रसोअीघरकी छत भी साफ करनी चाहिये। और यह भी नहीं समझता था कि बापू अैसी अैसी चीजोंको भी देखेंगे। मैं हैरान था कि बापू अितने विविध कामोंका भार अुठाते हुअे भी अिन चीजोंमें बारीकीसे अितना समय कैसे दे सकते हैं!

भोजनके अनेक प्रयोग चलते थे। बनानेका समय कैसे बचाया जा सकता है, चूल्हा अैसा हो जिसमें लकड़ी कम जले और धुआं न हो, क्या चीज बनानेसे समय कम लगेगा और पोषण भी पूरा मिलेगा — अिन प्रश्नों पर विचार होता था। भंसालीभाअी नीम खाते थे और अुसकी बड़ी तारीफ करते थे। अिसलिअे बापूजीने खुद भी नीम खाना शुरू किया और दूसरोंको भी खिलाने लगे। अिमलीका प्रयोग भी चलता था। बापूके पास दो-चार बीमार तो बने ही रहते थे, जिनका अिलाज बापू खुद करते थे। अुस समय चार मुख्य रोगी थे। मदालसाबहन, भाअू पानसे, हरजीवन कोटक और सुमंगल

प्रकाश। भाअू पानसेके पेटदर्दका कारण ढूंढ़नेके विचित्र प्रयोगका वर्णन मैं आगे करूंगा।

पू० बा रसोअीघरके बारेमें बापूजीसे भी अधिक व्यवस्था और सफाअी पसंद करती थीं। जब रसोअीघरमें आ जातीं तो दोष बतानेकी झड़ी लगा देतीं। यह ठीक नहीं है, वह ठीक नहीं है; यह गन्दा है, वह गन्दा है। अपने हाथसे भी काम करने लगतीं। यह मुझे अच्छा नहीं लगता था। अैसा लगता था कि बा मेरी आलोचना कर रही हैं। अेक रोज मैंने बापूजीके पास जाकर शिकायत की। बापूजी खूब हंसे और बोले, "बाकी वाणी जितनी सख्त है हृदय अुतना ही कोमल है। तुम जानते नहीं हो। अव्यवस्था और गंदगी बासे बिलकुल सहन नहीं होती। तुमको तो बाके कहनेसे अुपदेश लेना चाहिये और अपने कामको स्वच्छ और व्यवस्थित करना चाहिये, जिससे बाको कहनेका अवसर न मिले। 'निंदक बाबा वीर हमारा' कबीरका यह भजन जानते हो? आलोचना तो हमारे दोष बताकर हमें निर्दोष बनानेमें सहायक होती है।" अिस पर बापूजीने बाके और अपने पिछले जीवनकी लम्बी कथा सुना डाली।

बाके कहनेसे मुझे जितना दुःख हुआ था अुससे अधिक बापूकी सान्त्वनासे आनन्द हुआ। गुस्सेमें रुआं-सा मुंह लेकर म बापूके पास गया था और हंसता हुआ लौटकर बड़े अुत्साहसे अपने काममें लग गया।

१०. गन्नेका किस्सा

लगातार २५ मास जेलमें रहनेके कारण मेरे दांत खराब हो गये थे। डॉक्टरकी सलाह थी कि मुझे गन्ना, हरी भाजी और दूध काफी मात्रामें लेना चाहिये। दूध और भाजी तो भोजनमें मिलते ही थे। गन्ना बापूजीके रसके लिअे आता था, जो . . . बहनके हाथमें रहता था। मैंने अुनसे गन्नेकी बात की। अुन्होंने मुझे ४–५ रोजका बचा सूखा गन्ना दिया, तो मेरे आते-पीते जल गये और अुनका मुंह फिरते ही मैं गन्ना अुसी जगह पर रख आया। और सोचने लगा कि जिस संसारको तू छोड़कर भागा था वह तेरे आगे आगे चल रहा है। तब कहां जाना? कहीं भी भाड़में सीरा नहीं है। मन ही मन मैंने काफी पीड़ाका अनुभव किया और सोचने लगा कि अैसी जगह रहना ही क्यों? भाग चलूं। अपने खाने-पीनेकी बात बापूजीसे भी कैसे करूं? काफी संयम रखनेका प्रयत्न करने पर भी मेरा विद्रोही मन नहीं माना और

सारा किस्सा मैंने बापूजीके सामने रख दिया। बापूजी गम्भीर होकर बोले, "तुमने मुझे बता दिया यह अच्छा किया। मैं जानता हूं। मेरे निमित्तसे आये हुअे फल आदि भी कितने खराब होने पर लोगोंको मिल पाते हैं। वह बहन तो मेरे लिअे चिन्ता रखती है। अुसका हेतु शुभ है। तुमसे अुसका द्वेष था अैसी बात नहीं है। लेकिन अुसका अज्ञान जरूर था। जिस सूखे गन्नेका रस मेरे लिअे नहीं निकाला जा सकता है, वह तुम्हें कैसे दिया जा सकता है? वैसे रस तो थोड़े सूखेका भी निकालनेमें हर्ज नहीं है। हां, अुसके रसमें भी कुछ तो विकृति आ ही जाती होगी। लेकिन चूसनेके लिअे तो ताजा गन्ना ही अुत्तम है। सूखने पर चूसनेमें भी दांतोंको कष्ट होता है। अिसमें सत्य और अहिंसा दोनोंका सूक्ष्म भंग होता है। सत्य और अहिंसाकी डोरी बहुत बारीक है। अगर मेरे साथ रहनेवाले अिसको न समझ सकें तो दूसरा कौन समझेगा? प्रकृति देवी हमको जो चाहिये वह रोज पैदा करती है। तो हम संग्रह क्यों करें? अगर गन्ना सूखता है तो अधिक लेना ही क्यों चाहिये? अगर मेरे निमित्तसे अधिक आया हो तो सूखने पर भी अुसका रस मुझे ही देना चाहिये था, लेकिन तुमको हरगिज नहीं। अब अिसमें दुःख माननेकी बात नहीं है। अिससे सबक सीखनेकी बात है। जो व्यवहार दूसरेका हमें पसन्द न आये वैसा व्यवहार हम किसीके साथ न करें। दूसरेके दोषोंके प्रति अुदारता और अपने दोषोंके प्रति कठोरता रखनी चाहिये। तब ही हम अूंचे चढ़ सकते हैं। अगर हम दूसरोंके दोषोंको देखते रहें और मन ही मन कुढ़ते रहें तो हमको शान्ति कैसे मिल सकती है? तुलसीदासजीने कहा है न कि जो दूसरेके पहाड़ जैसे दोषको रजकण जैसा और अपने रजकण जैसे दोषको पहाड़ जैसा देखता है वह अूंचा चढ़ता है। तुम तो रामायणके भक्त हो न? अब तुम अुसको कह दो कि मुझे तो ताजा ही गन्ना चाहिये। बासी नहीं लूंगा। अगर गुस्सा करके गन्ना छोड़ोगे तो अपने शरीरको बिगाड़ोगे। शरीर तो भगवानकी दी हुअी अमानत है। जो अुसकी अुपेक्षा करता है, वह भगवानका द्रोह करता है। हां, स्वादके वश होकर हम कुछ भी न खायं। स्वादके वश होकर कुछ भी खाना चोरी और सत्यका भंग है। अिसकी पहिचान भी संयम और तपसे ही ध्यानमें आती है।"

बापूजीका प्रवचन लम्बाता ही जा रहा था और मुझे लग रहा था कि गन्नेकी बात बापूजीको बताकर मैंने अेक आफत मोल ले ली। अिसलिअे

बापूजीकी बात काटकर मैंने कहा, "बापूजी, ठीक है। अब मैं सब कर लूंगा। मुझे जो दुःख पहुंचा था सो अब नहीं रहा है। अगर आपको न कहता तो शायद चुपचाप यहांसे भाग ही जाता और आपके सत्संगका लाभ भी खोता।"

बापूजी फिर बोले, "मुझसे कह दिया यह तुम्हारी सरलता है। अिसीसे तुम्हारी रक्षा भी हो जाती है। बातको मनमें रखना भी तो चोरी है न? अब जाओ और अुस बहनके प्रति मनमें जो रोष आया था अुसे भी निकाल दो और आनन्दसे अपना काम करो। और गन्ना खाना कभी न भूलना।"

मैंने बापूजीको प्रणाम किया और बापूजीका मीठा थप्पड़ खाकर अुसका स्वाद लेते हुअे चला आया।

मुझे सत्यके खातिर कबूल करना चाहिये कि अुन बहनके अुस व्यवहारकी जब भी याद आ जाती है, तब मेरा मन अुत्तेजित हो अुठता है। लेकिन अुनके साथ मेरा बड़ा ही मधुर संबंध है। वे भी मुझ पर बहुत प्यार करती हैं। अुन्हें तो अिसका पता भी नहीं चला होगा और अपने अिस व्यवहारका भान भी नहीं होगा। लेकिन मैंने अुस प्रसंगसे काफी सीखा और अन्तमें तो सेवाग्राममें गोशाला और खेतीकी व्यवस्था मेरे ही हाथमें आअी। और गन्नेकी खेती खास तौरसे मुझे प्रिय रही। बापूजीको गन्नेके गुड़की अपेक्षा खजूरका गुड़ और नीरा पसंद था और मेरी गन्नेकी खेतीके खिलाफ बापूजीके पास शिकायत भी होती थी। लेकिन बापूजीने गन्नेकी खेती न करनेके लिअे मुझसे कभी भी नहीं कहा। और मेरे चले आने पर भी आश्रमकी भूमिमें आज भी गन्ना होता है। मैंने लोगोंको खूब गन्ना खिलाया, खूब रस पिलाया। मेरे दांत, जो काफी खराब हो गये थे, गन्ना खानेसे फिरसे वैसे ही मजबूत हो गये। लेकिन बापूजीकी व्याख्याके अनुसार मेरे गन्नेके रसमें तबीयतका कितना और अुसके रसका कितना रस रहा है यह कहना कठिन काम है। मनका बारीकीसे निरीक्षण करने पर स्वादका पलड़ा ही भारी अुतरेगा, यह नम्रतासे मुझे कबूल करना चाहिये। नहीं तो चोरीके अपराधमें सजा हुअे बिना न रहेगी। हां, यह भी कबूल करना चाहिये कि बापूजीके प्रेमके पुटके बिना अब वह रस नीरस जरूर बन गया है।

११. विचित्र प्रयोग

अेक रोज भाअू पानसेने जाकर बापूसे कहा कि मेरे पेटमें दर्द है। बापू विचारमें पड़ गये कि दर्द क्यों हुआ? अुनसे पूछा कि तुमने क्या खाया है? अुन्होंने भोजनमें खाअी हुअी चीजें बताते हुअे गन्नेका नाम भी लिया। बापूने कहा, "बस, गन्नेसे ही दर्द हुआ है।" मैं पासमें ही खड़ा था। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं बोला, "बापू, गन्नेसे दर्द कैसे हो सकता है?" बापूने कहा, "गन्ना चूसते समय अुसके छोटे छोटे रेशे पेटमें चले जाते हैं और वे कमजोर आंतोंमें पहुंचकर चुभते हैं।" बापूजीकी यह बात मुझे अेक बच्चेकी-सी लगी और बिलकुल नहीं पटी। मैंने आश्चर्यसे पूछा, "भला गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे कैसे अन्दर जा सकते हैं?" बापूने दृढ़तासे कहा, "जा सकते हैं। अिसकी परीक्षा करके मैं तुम्हें अभी बता देता हूं।"

भाअूको बापूने अेनीमा दिया और मलको कपड़ेसे छनवाया। फिर मीराबहनको बुलाया और बोले, "देखो, मेरी तो नाक नहीं है, पर तुम सूंघकर देखो अिसमें कैसी बदबू आती है?" मीराबहनकी नाक बहुत तेज मानी जाती थी। जब यह सारी क्रिया चल रही थी और बापूजी मीराबहनको मल सूंघनेके लिअे कह रहे थे, तब मैं मन ही मन हंस रहा था कि आखिर बापू सब क्या कर रहे हैं। बापूकी अिस बारीकीका महत्त्व मैं बादमें समझा और अिस घटनाको कभी नहीं भूला।

मीराबहनने मलको सूंघकर क्या राय दी, यह मुझे याद नहीं है। बापूने मीराबहनसे कहा कि अिस मलको धूपमें सुखाओ और मक्खियां अुड़ाती रहो। जब मल सूख गया तो बापूने मुझे बुलाया और कहा, "तुम कहते हो कि गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे पेटमें नहीं जा सकते। अब देखो।"

मैंने देखा तो सचमुच ही अुसमें गन्नेके रेशे थे। मेरे लिअे यह नयी बात थी। मैं खुद भी गन्ना चूसता था, पर खयाल नहीं था कि पेटमें रेशे चले जाते हैं। अब ध्यान दिया तो मालूम हुआ कि अच्छे नरम गन्नेके कुछ रेशे पेटमें चले ही जाते हैं।

१२. बापूके मनकी वेदना

अिसी समय बापूजीने कार्यकर्ताओंसे ग्राम-सफाअी और सेवकोंके ग्राममें रहनेके बारेमें कहना शुरू किया।

बापूजी खुद भी पासके सिन्दी गांवमें सुबह सफाअीके लिअे जाया करते थे। दूसरे लोग और मेहमान भी बापूजीके साथ जाते थे। वहांसे मैलेकी बाल्टियां भरकर लाते थे और अुसका मगनवाड़ीमें खाद बनाया जाता था। सिन्दी जाते और आते समय अनेक प्रकारकी चर्चायें चलती थीं।

अुस समयके बहुतसे प्रसंग मेरी डायरीमें अधूरे-से दर्ज हैं। आज जब सोचता हूं तो मन मसोस कर रह जाता हूं कि मैंने पूरे-पूरे प्रसंग क्यों नहीं लिख लिये। लेकिन अुस समय मैं न तो आजके जैसा लिखना ही जानता था और न मुझे अितनी समझ ही थी। मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने जितना लिख लिया वह भी मैं कैसे लिख सका। साबरमतीमें जब मैं लोगोंसे कोचरब आश्रमके बारेमें सुनता था कि बापूजीने आश्रम कैसे शुरू किया और कैसे सब कामोंमें सबके साथ भाग लिया, तो मेरे मनमें मलाल हुआ करता था कि मैं अुस समय क्यों नहीं रहा। लेकिन अीश्वरकी कृपासे मगनवाड़ीमें भी वही सब चल रहा था। दिनमें अेक बार तो मुझे बापूकी सलाह लेना और अुन्हें रसोअीघरका सब हाल बताना ही पड़ता था। अनेक बार अैसे भी प्रसंग आते थे जब दिनमें कअी बार बापूजीसे पूछना पड़ता या बापूजीको रसोअीघरमें आना पड़ता। अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा है कि मैं किसी गांवमें जाकर बठूं और वहां काम करूं। बापूजीने कहा, "मैं भी तुमसे यही आशा रखता हूं और तुमको ग्राममें भेजनेका ही मेरा विचार है। तुम्हारी शक्तिका अच्छा अुपयोग ग्राममें ही हो सकता है। साबरमतीमें भी मैंने लोगोंको अिसी दृष्टिसे जमा किया था। परन्तु आज तो मैं देखता हूं कि आश्रमका प्रयत्न निष्फल ही गया। आज कोअी भी आश्रम-वासी गांवमें जानेको राजी नहीं है, सिवा दो-चारके। सो भी मैं कहूं तब। अिसलिअे अब तो मैं अपने पास अैसे ही आदमियोंको जमा करना चाहता हूं जो बादमें ग्रामोंमें जाकर बस जायें। तुम्हारे लिअे जब मेरे मनमें आ जायगा तो तुम्हें गांवमें भेज दूंगा। गांवका चुनाव भी तुम ही करोगे।"

१३. सहशिक्षा और बापू

अिन दिनों शामकी प्रार्थना बापूजी महिलाश्रमकी लड़कियोंके आग्रह पर महिलाश्रममें ही करते थे। मगनवाड़ीसे महिलाश्रम काफी लंबा पड़ता था। अुस समय लोग भी काफी थे। महिलाश्रमकी लड़कियां बापूजीको लेने बजाजवाड़ी तक आ जाती थीं और वहांसे बापूजीके साथ महिलाश्रम लौट

जाती थीं। बीचमें अनेक प्रकारकी चर्चायें होती थीं। अेक रोज किसी लड़कीने पूछा कि लड़के और लड़कियां अेकसाथ पढ़ सकते हैं?

बापूजीने कहा — नहीं।

लड़कीने पूछा — क्यों?

बापूजीने कहा — अब तक जो परिणाम आये हैं अुनसे मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जो स्वभाव-सिद्ध वस्तु है, अुसे संघर्षमें रखना अुचित नहीं है। बड़े बड़े विचारक अिसी निर्णय पर पहुंचे हैं कि अिससे लाभके बदले हानि ही अधिक होती है।

लड़की — तब आप अेक ही संस्थामें लड़कों और लड़कियोंके अेकसाथ रहनेका समर्थन क्यों करते हैं?

बापूजी — यह कोअी बुरी बात नहीं है। अेक ही छप्परके नीचे हम सब रह सकते हैं।

लड़की — तब साथ पढ़नेमें ही क्या हर्ज है?

बापूजी — तो साथ कसरत करनेमें क्या हर्ज है?

खूब हंसी हुअी। अिसी प्रकारकी बहुतसी चर्चा हुअी। बापूजीने अेक मजेदार किस्सा कहा: "अेक रोज मैं आठ आनेकी शर्तमें घरकी सब रोटी खा गया था।" बापूजी और हम सब खूब हंसे।

१४. फूलसे भी कोमल बापू

बापू जहां भी रहते थे वहां वे आश्रमके सब नियमोंका पालन करानेका पूरा पूरा प्रयत्न करते थे। अस्वाद-व्रतका तो दिनमें तीन बार अनुभव करनेका प्रसंग आ जाया करता था। लेकिन जो लोग बापूजीको सूक्ष्मतासे नहीं समझे थे, अुन लोगोंके मनमें बापूजीकी कअी बातोंसे दुविधा खड़ी हो जाती थी।

श्री ब्रजकृष्ण चांदीवाला कुछ अस्वस्थ थे और दिल्लीमें अुनका अिलाज चल रहा था। मुझे ठीक याद नहीं कि बापूजीने अुन्हें बुलाया था या वे खुद बापूजीके पास आना चाहते थे। लेकिन अैसा कुछ याद पड़ता है कि बापूजीने अुनको लिखा था कि दिल्लीमें तुम्हारा जैसा अिलाज चलता है वैसे अिलाजकी व्यवस्था यहां कर दी जायगी। वे आ गये। बापूजीने अुनसे सारी बातें पूछीं। अुन्होंने बताया कि मुझे रोज अितनी मलाअी खानेकी डॉक्टर या वैद्यकी सलाह है। बापूजीने कहा, "तो बस यहां अुसका प्रबंध हो जायगा। तुम अेक कढ़ाअी लाकर बलवन्तको दे दो। वह अुसमें दूध गरम करके मलाअी

तैयार कर देगा।" लेकिन ब्रजकृष्णजी बेचारे संकोचके मारे कढ़ाओी नहीं लाये, क्योंकि आश्रममें मलाओी खाना अुन्हें ठीक नहीं लगा।

अैसे ही अेक दिन निकल गया। बापूजीने मुझसे पूछा — क्यों ब्रजकृष्णके लिअे मलाओी तैयार की?

मैंने कहा — बापूजी, अभी तक कढ़ाओी नहीं आयी।

बापू — अच्छा, ब्रजकृष्णको बुलाओ।

मैंने अुन्हें बुलाया।

बापूने कहा, "क्यों ब्रजकृष्ण, अभी तक कढ़ाओी क्यों नहीं लाये? और तुम्हारे लिअे मलाओी क्यों नहीं बनी?

अुन्होंने कहा, "नहीं बापू, आश्रममें अितनी खटपट करनेमें संकोच होता है।"

बापूने कहा, "यह तुम्हारी मूर्खता है। शरीरके लिअे जो आवश्यक है वह अुसको देना धर्म है। जाओ, अभी जाओ शहरमें और कढ़ाओी लेकर आओ।"

वे बेचारे गये और कढ़ाओी ले आये। अितनेमें शाम हो गओी। बापूजीने मुझसे कहा कि सवेरे ब्रजकृष्णको अितनी, शायद २० तोला, मलाओी मिलनी ही चाहिये।

मैंने कढ़ाओीमें दूध चढ़ा दिया और धीमी आंचसे मलाओी बनाना शुरू किया। मेरा खयाल है रातमें तीन चार दफा जागकर मैंने मलाओी अुतारी और सुबह तक जितनी मात्रा जरूरी थी अुतनी तैयार हो गओी। यह देखकर बापूजीको बहुत आनन्द हुआ और ब्रजकृष्णजीको मलाओी खानेके लिअे कहा। फिर तो यह सिलसिला चलता रहा। अुस दिन करीब करीब मुझे सारी रात जागना पड़ा था। लेकिन बापूकी अिच्छाके अनुसार मलाओी तैयार कर देनेका मनमें अितना अुत्साह था कि अिस जागरणसे भी थकानका अनुभव नहीं हुआ। बापूमें जहां संयमके बारेमें पत्थरसे अधिक कठोरता थी, वहां साथियोंके स्वास्थ्यके बारेमें फूलसे अधिक कोमलता और अुदारता भी थी।

संत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन पर कहि नहिं जाना।
निज परिताप द्रवहिं नवनीता, पर दुख द्रवहिं सुसंत पुनीता।
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परहिं कहु काहि।

तुलसीदासके अिन वचनोंकी बापू साक्षात् मूर्ति थे। मुझे अिसका पद पद पर अनुभव हुआ था।

१५. तुर्की महिलाका स्वागत

मगनवाड़ीमें टर्कीकी अेक बहन खालिदेखानूम आनेवाली थीं। बापूजीने अुनके लिअे जो तैयारियां और सफाअी आदिका प्रबन्ध किया था वह देखने लायक था। वे कहां बैठेंगी, कहां सोयेंगी, कहां स्नान करेंगी, तथा अुनका कमोड कहां रहेगा — आदि सारी बातोंकी व्यवस्था बापूजीने अपनी आंखोंके सामने कराअी थी। वे आअीं। बापूजीने अुनका प्यारसे वैसा ही स्वागत किया जैसा कि कोअी मां बेटीके आने पर किया करती है। अुनकी छोटीसे छोटी बातका बापूजी ध्यान रखते थे। अपने पास बिठाकर अुन्हें खिलाते और बीच बीचमें पूछते जाते कि खाना कैसा लगता है। नीमकी पत्तीकी चटनी, अिमलीकी लुगदी, कच्चा साग, न मालूम छोटी छोटी कितनी बानगियां बापूजी अुनके सामने परोसते। नीमकी चटनी भले ही कड़वी हो, लेकिन अुसमें बापूके प्रेमका पुट लगा रहता था। अिसलिअे वह बहन अुसे बड़े स्वादसे खातीं। अुनकी बापूजीके साथ काफी चर्चायें होतीं। मैं अंग्रेजी नहीं जानता था अिसलिअे मेरी समझमें तो नहीं आती थीं। लेकिन अुनकी आवाज अितनी नम्र और अितनी मधुर थी कि वे जब बोलतीं तब अैसा लगता था मानो अुनके मुंहसे फूल बरस रहे हों।

हमारे परिवारमें वे अितनी घुलमिल गअी थीं कि जब १०–१५ रोजके बाद वे जाने लगीं तो अुनको और हमको वह बिछोह कष्टदायी मालूम हुआ। बापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा और भक्ति अद्‌भुत थी। आज भी वे तुर्किस्तानमें बापूजीकी दृष्टिसे काम कर रही हैं। आश्रममें वे अपनी मधुर स्मृतियां छोड़ गअी हैं। आज भी अुनकी यादसे चित्तमें प्रसन्नताका अनुभव होता है।

१६. अपनेको सबसे बुरा समझो

रसोअीघरकी खटपट और लोगोंकी छोटी छोटी शिकायतोंसे मैं अितना तंग आ गया था कि मनमें अनेक बार मगनवाड़ी छोड़कर जंगलमें भाग जानेका विचार आता था। अेक रोज बापूजीके पास जाकर मैंने कहा, "मेरा यहांसे जंगलमें भाग जानेका विचार होता है। लेकिन आपके पास रहनेका लोभ भी नहीं छूटता। अब आपके आखिरी दिन हैं और सारे

जीवनके अनुभवका निचोड़ आपसे मिलता है। मुझे यह लाभ सहज प्राप्त हुआ है। अिसे कैसे छोडूं?"

बस बापूने समझाना शुरू किया: "तुम मेरे पास मौन धारण करके रहो। जड़भरत जैसे बन जाओ। जगतमें अपने आपको सबसे बुरा समझो। मेरा मार्ग जंगलमें भाग जानेका नहीं है। अुसको मैं अुचित नहीं मानता हूं। आज सच्चे संन्यासी तो गृहस्थोंकी तरह घरोंमें रहते हैं और सबकी सेवा करते हैं। अगर मुझे छोड़कर भाग भी जाओगे तो मुझे बुरा नहीं लगेगा। लेकिन यह तुम्हारी कमजोरी होगी। आनन्दसे रहो। तुम्हारा सब भार तो मैंने अुठाया है न?" बापूके प्रेमभरे वचन सुनकर मैं सब दुःख भूल गया।

१७. गांवमें हम शिक्षक बनकर न जायं

अेक रोज मैंने कहा, "बापूजी, अच्छा तो यह है कि ग्रामसेवक ग्राममें रहकर अपनी आवश्यकताके लिअे कमा लें और बादमें कुछ सेवा कर दें। क्योंकि संस्था जमाना और अुसके लिअे अुन लोगोंसे पैसा मांगना, जो अुन्हीं साधनोंसे पैसा कमाते हैं जिनका कि हम विरोध करते हैं, ठीक नहीं है। दूसरे, ग्रामवासी गांवमें बसनेवाले सेवकको भाररूप समझते हैं। फिर, अिसमें यह भी डर है कि बुद्ध भगवानके भिक्षुओंकी तरह ग्रामसेवकोंका समुदाय भी कहीं जनताके लिअे भाररूप न हो जाय।"

बापू बोले, "यह बात तो तुमने नया अवतार धरनेकी कही। सेवक अपने लिअे कमा लेना चाहे यह तो अुसका अभिमान है। अगर सच्ची सेवा करनेकी भावना सेवकमें होगी तो निर्वाहके लिअे ग्रामवाले अुसे देंगे। हां, परिवारके लिअे नहीं मिलेगा। बुद्धके सेवकों और आजके सेवकोंमें अंतर है। वे लोगोंको ज्ञान देने जाते थे, जब कि हम अुनकी सेवा करने जाते हैं। अगर ग्राममें हम गांववालोंके शिक्षक बनकर जायेंगे और अुनसे कहेंगे कि हमारे लिअे यह लाओ, वह लाओ, तो ग्रामके लोग हमसे अवश्य अूब जायेंगे। सेवक नम्र बनकर सेवा करता रहे और अपने निर्वाहके लिअे अुसी ग्राममें से मांग ले तो अुसको अवश्य मिल जायगा।"

१८. कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर

बापूजी अेक मासका मौन लेनेवाले थे। मैंने कहा, "बापू, मेरे पांच मिनिट आपके पास धरोहर हैं।" बापूने कहा, "अच्छा, गंगाबहनके बाद आ जाना।"

मैं भोजनालयकी चौखट पर बैठ गया। बापूजीके आवाज देते ही हाजिर हो गया। मैं प्रश्न पूछता था, बापूजी अुत्तर देते थे।

प्रश्न — आपने लोक और परलोक दोनोंका समन्वय किया है। स्त्री, पुरुष, लड़के, लड़की, अपने, पराये सबको आप अच्छी तरह संभाल सकते हैं। बड़ीसे बड़ी कठिनाअी आने पर भी आप प्रसन्नचित्त रहते हैं। क्या जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्ति आपकी कल्पनामें अिससे भी आगेकी चीज है?

अुत्तर — हां, मुझमें जो प्रसन्नता रहती है अुसे देखकर बहुतसे लोग चकित हो जाते हैं। परन्तु यह मैं भी नहीं जानता कि यह प्रसन्नता कैसे प्राप्त हुअी; हां, रहती अवश्य है। जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्तिकी कल्पना तो मेरी बहुत आगे बढ़ी हुअी है। जीवन्मुक्तमें रागद्वेषकी गंध भी न होनी चाहिये। मैं देखता हूं कि मेरे अन्दर काफी राग है; और जहां राग है वहां द्वेष तो है ही। और जब तक रागद्वेष हैं तब तक मैं अैसा दावा नहीं कर सकता कि जो कुछ प्राप्त करना था वह मैंने प्राप्त कर लिया, या मैं जीवन्मुक्त हो गया हूं। हां, मेरा प्रयत्न अवश्य है। कोअी भी मानव अैसा दावा नहीं कर सकता; और अगर करता है तो यह अुसका अभिमान है।

प्रश्न — मनुष्य जितना अुन्नत हो सकता है अुतनी अुन्नति तो आपने कर ही ली है न?

अुत्तर — यह भी कैसे कहा जा सकता है? कोअी मनुष्य अिससे भी आगे जा सकता है।

प्रश्न — क्या जीवन्मुक्तिके निकट पहुंचकर भी मनुष्यके पतनकी संभावना रहती है?

अुत्तर — पूरी पूरी। (बापूने चटाअीके किनारे पर हाथ रखकर कहा) देखो, अुस किनारेसे जो तिलभर अिधर है वह अिधर ही है। अुसका दूसरे किनारे तक लौट आना पूरी तरह संभव है। किनारेसे जो तिलभर भी पार गया सो गया।

प्रश्न — आपकी अीश्वरके बारेमें क्या कल्पना है? हमारे शास्त्रोंमें अवतारवाद और अव्यक्त दोनों प्रकारसे अीश्वरका वर्णन है। आपने लिखा है कि सत्य ही अीश्वर है। ये तीनों बातें किस प्रकार अेक-दूसरेसे संबंध रखती हैं?

अुत्तर — तीनों ही सही हैं। हम सब ओश्वरके ही अवतार हैं। जैसा कि गीताके ग्यारहवें अध्यायमें विराट् पुरुषका वर्णन है। और ओश्वर अव्यक्त है यह बात भी सत्य है। क्योंकि अुसको पूरी तरह जाना नहीं जा सकता। अव्यक्त तत्त्व अितना सूक्ष्म है कि शरीरधारी अुसे पूरी तरहसे शरीर रहते हुअे प्राप्त नहीं कर सकता। ओश्वर सूक्ष्मसे सूक्ष्म तत्त्व है। जो सत्य है वह है ही, अितना ही कह सकते हैं। और जो है वही ओश्वर है।

मैं जब कुछ और आगे बढ़ने लगा तब बापूने कहा — अरे, भीष्म पितामहकी तरह मैं मरता थोड़े ही हूं, जो सारा तत्त्वज्ञान आज ही पूछने लग गये।

मैं — अेक मासके लिअे तो आप मर ही रहे हैं न?

बापूजी — (हंसकर) अरे, तो फिर अेक मासके बाद तो जिन्दा होनेवाला हूं न? बस, अब भागो। देखो, दूसरे लोग गाली देते होंगे कि अिसने क्या तत्त्वज्ञान छेड़ दिया है। तुम्हारा ओश्वर तो रसोड़ेमें है। मैं तो टट्टीघरमें जाते समय भी ओश्वरका ही दर्शन करता हूं।

मैं — हां, जब जब मैं हारता हूं और भोजनालयके कामको झंझट समझता हूं, तब तब मैं हिन्दू धर्मके अुस अुच्च आदर्शका स्मरण करके मनको समझा लेता हूं, जिसके अनुसार प्राचीन कालमें लोग ॠषियोंके आश्रमोंमें बारह बारह वर्ष तक धैर्यपूर्वक गाय चराने, लकड़ी बीनने और गोबर पाथनेका काम करते रहते थे। अुसके बाद कहीं वे अुपदेशके अधिकारी समझे जाते थे। पर मेरा तो आप जैसे महापुरुषसे सहजमें ही अितना घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है।

बापूजी — हां, अैसा ही समझना चाहिये। मनको खूब प्रसन्न रखो और अपने काममें ही ओश्वरका दर्शन करो। यही सच्ची साधना है।

बस, मैंने बापूके चरणोंमें प्रणाम किया, बापूका प्रेमभरा थप्पड़ खाया और भोजनालयकी राह ली।

१९. मौनका महत्त्व

ता० २१–३–'३५ को बापूका मौन आरंभ हुआ और ता० १९–४–'३५ को खुला। अुस समय बापूजीने यह प्रवचन दिया:

"आज मेरे मौनको २९ दिन हो गये। अिसलिअे आवाज तो कुछ बैठ-सी गअी है। आशा है आज सारे दिनमें खुल जायगी। सब लोग कुछ

सुननेकी अिच्छासे यहां आ गये हैं। यह मौन मैंने आध्यात्मिक हेतुसे नहीं लिया था, कामके कारणसे ही लिया था। मुझे संतोष है कि अिन दिनोंमें मैंने अपना काम बहुत कुछ निबटा लिया। डाकका काम मैं रोज निबटा लेता था। मौन कामके लिअे लिया था तो भी अुसका जो कुछ आध्यात्मिक लाभ होनेवाला था वह तो हो ही गया। अितने दिनके अनुभवसे मुझे मौनकी महत्ता मालूम हो गअी। जो सत्यका पालन करना चाहता है अुसके लिअे मौन साधनामें सहायक अेक अमोघ अस्त्र है। मौनसे सत्यकी बहुत रक्षा होती है। मौनका अर्थ है चेष्टामात्रका न होना। मौनमें अिशारा या लिखना भी नहीं होना चाहिये। सत्यके अुपासकको बोलकर अपना काम करने या विचार बतानेकी आवश्यकता नहीं है। अुसका तो आचरण ही दुनियाको अुपदेश-रूप होना चाहिये। जैसे जो अच्छी पूनी बनाता है वह किसी अुपदेशके बिना ही अपने कार्यकी छाप दूसरों पर डाल देता है। अितने दिनोंमें मुझे कोअी दिन अैसा याद नहीं आता है, जब कि मेरी बोलनेकी अिच्छा हुअी हो। ज्यों ज्यों मौन छूटनेकी अवधि निकट आती जाती थी, त्यों त्यों मुझे भार-सा लगता जाता था। मेरी बोलनेकी अिच्छा नहीं होती थी। मौनमें सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि वह क्रोधको जीतनेका बड़ा अच्छा अुपाय है। मुझे भी गुस्सा तो आता है, मगर मैं अुसे पी जाता हूं। यों तो क्रोध चेहरेसे भी प्रतीत हो जाता है। परन्तु अुसका परिणाम बहुत कम होता है। क्योंकि मौनके कारण बहुत कुछ नहीं कर सकता और लिखते लिखते तो क्रोध शान्त हो जाता है। अिसलिअे मैं अिसका यह सार खींच लेता हूं कि सत्यके अुपासकके लिअे मौन बहुत ही आवश्यक होता है।"

२०. सब मिट्टीके पुतले हैं

भोजन परोसनेमें दो अन्य भाअी मेरी मदद करते थे। वे मुझसे पंक्तिमें बैठकर भोजन करनेका अर्थात् परोसते समय मेरी थाली भी परोसवानेका आग्रह करते थे। दो-चार बार मैंने अुनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी। लेकिन अुनका आग्रह बढ़ता ही गया। तब मैंने अुनको स्पष्ट कह दिया कि भोज-नालयकी जवाबदारी जब तक मेरी है, तब तक मैं पंक्तिमें बैठ नहीं सकता। क्योंकि यदि किसी दिन भोजन खतम हो गया और अेकाध व्यक्ति भूखा रह गया तो मैं अुसे क्या खिलाअूंगा। यदि भूखे रह जानेका प्रसंग आवे तो मुझे ही भूखा रहना चाहिये। मैंने सबके साथ खा लिया हो और बादमें किसीको

भूखा रहना पड़े, तो यह मेरे लिअे शर्मकी बात होगी। अिन भाअियोंके मनमें सन्देह था कि मैं पीछेसे कुछ अच्छी चीजें खाता होअूंगा। यह बात मेरे कान पर आअी। अिससे मुझे दुःख हुआ। मैंने बापूजीसे कहा कि मैं तो समझता था कि आपके पास सब देवता बसते होंगे। अिसी आशासे आपके पास सत्संगके लिअे मैं आया था। लेकिन मैं देखता हूं कि यहां भी वैसे ही लोग हैं जैसे संसारमें अन्यत्र हैं। अुन भाअियोंको बुलाकर बापूजीने पूछा तो अुन्होंने अिनकार कर दिया। लेकिन यह सब अेक आश्रमवासी श्री भगवानजी-भाअीने सुना था। अुन्होंने बापूजीके सामने मेरी बातकी पुष्टि की।

अिस प्रसंग पर बापूजीने कहा, "देखो, मेरे पास आखिर तो सब मिट्टीके ही पुतले हैं। मैं खुद भी मिट्टीका पुतला हूं। मनुष्यमें जो कमजोरियां हो सकती हैं वे सब अिन लोगोंमें भी हैं। अिनमें से निकलनेका प्रयत्न करनेके लिअे ही तो हम सब अिकट्ठे हुअे हैं। दूसरेके गुण और अपने दोष देखनेसे आदमी अूंचा चढ़ता है। जो दूसरेके दोष देखता है अुसका अर्थ यह होता है कि वह अपनेमें अुससे ज्यादा गुण देखता है। यह दृष्टि खतरनाक है। मैं किसीको बुलाने तो जाता नहीं हूं। जो सहज रूपसे मेरे पास आ जाते हैं और मुझे रखने जैसे लगते हैं अुनको रख लेता हूं। मैं विश्वामित्र तो नहीं हूं कि रोज नयी नयी सृष्टि रचता रहूं। अिसलिअे मेरा तो अैसा ही चलता है। तुम सबके गुण और दोष देखनेका निश्चय करो तो मेरे पास रहकर कुछ पा सकोगे, नहीं तो मेरा और तुम्हारा समय व्यर्थ जायगा। तुम्हारे मनमें जो आता है वह मुझे कह देते हो यह मुझे प्रिय लगता है। क्योंकि अिस परसे मैं तुम्हें कुछ कह सकता हूं। सबके साथ प्रेम करना सीखो और प्रफुल्लित चित्तसे रहो। हारनेकी बात नहीं है। जाओ, भाग जाओ।"

मैं बापूजीके पाससे चला तो आया, लेकिन मगनवाड़ीके रसोअीघरकी व्यवस्था करनेमें शुरूसे ही अैसी खटपटोंके कारण मेरा मन अूब गया था। मेरे मनमें यह विचार धीरे धीरे घर करने लगा था कि मैं यहांसे और कहीं चला जाअूं। अिस अंतिम प्रसंगने मेरे अिस विचारको बिलकुल पक्का कर दिया और मगनवाड़ी छोड़कर चले जानेकी मेरी पूरी पूरी मानसिक तैयारी हो गअी।

८

विनोबाजीके निकट परिचयमें

बापूजीको छोड़कर चले जानेकी मेरी तैयारी पूरी हो चुकी थी। बापूजीने भी आज्ञा दे दी थी। लेकिन जानेके पहले विनोबाके आश्रमका अनुभव लेनेकी मेरी अिच्छा थी। मैंने बापूजीसे कहा तो वे बोले, "हां, विनोबाके आश्रमका अनुभव तो लेना ही चाहिये। अुनके पास बहुत कुछ सीखा जा सकेगा।"

बापूजीने विनोबाजीसे बात करके यह व्यवस्था कर दी कि जब तक मैं अुनके पास रहना चाहूं तब तक रह सकता हूं। विनोबासे मेरा परिचय भी करा दिया। ता० २६–४–'३५ को मैं मगनवाड़ीसे नालवाड़ी गया। बीच बीचमें बापूजीसे मिलता रहता था और नालवाड़ीके अपने अनुभव सुना आता था। जब कभी मैं वहांके जीवनकी तारीफ करता तो बापूजीका मुख आशा और प्रसन्नतासे खिल अुठता था। अुन्हें लगता होगा कि मैं अुनके फंदेसे तो छटक रहा हूं, लेकिन यदि विनोबाके फंदेमें फंस जाअूं तो अच्छा हो। अन्तमें जीत बापूजीकी हुअी। संभव है कि विनोबाजीके सहवास और अुनके प्रवचनोंने मेरे भ्रमकी रस्सीके बलोंको कुछ ढीला कर दिया हो। नालवाड़ीके थोड़ेसे अनुभव पाठकोंके लाभके लिअे मैं यहां अुद्धृत करता हूं।

नालवाड़ीमें अुस समय ८–१० सेवक थे और विनोबाजी भी अुन दिनों वहीं रहते थे। अुन्हीं दिनों अुनका ८ घंटे सूत कातनेका प्रयोग भी चल रहा था। नालवाड़ी आश्रमका कार्यक्रम और दिनचर्या व्यवस्थित और मगनवाड़ीसे कुछ कठोर थी। प्रातः ४ बजेसे रात्रिके ८॥ बजे तकका समय कार्यक्रमसे ठसाठस भरा रहता था। चक्की पीसना, पानी भरना, पाखाना साफ करना, भोजन बनाना आदि सब काम आश्रमवासी ही करते थे। अेक विचित्र नियम यह था कि अगर कोअी सेवक किसी काम पर निश्चित समय पर न पहुंचे तो अुसे कुछ न कहकर आश्रमका व्यवस्थापक अुस दिन प्रायश्चित्तके रूपमें अुपवास कर लेता था। श्री वल्लभभाअी (वल्लभस्वामी) आश्रमके व्यवस्थापक थे। मुझे अिस नियमका ज्ञान न था। अेक दिन न

अुसको निमोनिया है। आजकी समाज-रचना अितनी बिगड़ गअी है कि लोग अेक-दूसरेकी चिन्ता नहीं करते। अिस समाज-रचनाको सुधारनेके विषयमें मैंने खूब विचार किया है। आज तक मैं निष्काम प्रेममें ही पला हूं। अिसलिअे मेरे लिअे यह कहना कठिन है कि समाज निष्ठुर है। परन्तु अुसमें जड़ता अवश्य है। यदि कोअी प्रयोग करना चाहे तो अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरोंकी चिन्ता करके देख ले कि क्या परिणाम आता है। मुझे कैसे सुख मिले, मुझे कैसे प्रतिष्ठा मिले, मैं किस प्रकार विद्या प्राप्त करूं, अित्यादि चिन्तायें छोड़कर दूसरोंकी चिन्ता करके देखो। अुसमें कैसा आनन्द आता है! जो अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरोंकी चिन्ता करने लगता है, अुसकी भगवानको चिन्ता करनी पड़ती है। पुस्तकोंमें भी खर्च न होना चाहिये। जिसको जैसी पुस्तक चाहिये वह वैसी लिखकर अपने पास रख ले। मेरा प्रयत्न ब्रह्मचर्य-पालनका है। यदि अिस जन्ममें सफलता न मिली तो चाहे १० जन्म भी क्यों न लेने पड़ें मैं धीरज नहीं छोडूंगा। यह बोलते हुअे विनोबाजी आत्म-विभोर हो गये और हम लोग भी शून्यवत् होकर अुनके अिन अुद्‌गारोंका पान करते करते अघा नहीं रहे थे। फिर आगे बोलते हुअे अुन्होंने कहा: जो अपनी चिन्ता करने लगता है, मैं अुसकी चिन्तासे मुक्त हो जाता हूं। मैं ही सब लाभ क्यों प्राप्त कर लूं? जो दूसरोंके पास है वह भी तो मेरा ही है। अगर अेक जेबमें पैसे थोड़े हुअे और दूसरी जेबमें अधिक हुअे तो क्या हम घबराते हैं? दोनों जेबें हमारी ही तो हैं। जो ज्ञान दूसरोंके पास है वह हमारे पास भी होना ही चाहिये, यह हमारी संकुचित वृत्ति है। अपने अपने शरीरकी चिन्ता बहुत लोग किया करते हैं। यदि वजन कम हो गया तो घबरा जाते हैं। वजन जाता कहां है? अगर मैंने आम और केले अधिक खा लिये तो बाहरका वजन मेरे अूपर लद गया; यदि कम खाये तो अितना भार कम अुठाना पड़ा। अेक मित्रने मुझसे कहा कि जवानीमें पैसे कमाकर बुढ़ापेके लिअे रख लेना चाहिये। मैंने अुससे तो कुछ न कहा। परन्तु कौन कहेगा कि यह विचार योग्य है? जो जवानीमें सेवा करेगा अुसकी सेवा बुढ़ापेमें समाजरूपी परमेश्वर करेगा। अगर किसीको विश्वास न हो तो करके देख ले। सेवामय जीवन बितानेमें जो आनन्द है वह अपने लिअे चिन्ता करनेमें नहीं है। माता अपने बच्चे पर प्रेम करती है। परन्तु वह प्रेम निष्काम नहीं होता। अिसलिअे अुसका अुदाहरण यहां नहीं देता हूं।

अेक मित्रने मुझसे कहा कि दूसरोंकी चिन्ता करना भी तो अेक प्रकारका मोह ही है। परन्तु अैसा नहीं है। मोह तो अपने शरीरके आसपास अपना डेरा डाले बैठा है। अगर अपने शरीरके आसपासके बन्धन तोड़ दिये जायं तो बाहर और बन्धन हैं ही नहीं। जिसकी शरीर पर आस्था है वह तो गड्ढेके किनारे पर ही खड़ा है। अेक कदम आगे बढ़ते ही अुसका जीवन समाप्त समझिये। तुलसीदासजीने अपने अनुभवसे कितना सुन्दर लिखा है:

परहित बस जिनके मन माहीं,
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं।

यह बोलते बोलते विनोबाजीका हृदय भर आया और वाणी रुक गयी। हम सबके हृदय भी गद्‌गद हो गये। कितना पावन था वह दिन!

* * *

शामके भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया। बापूजी दूरसे देखकर ही हंसे और अुन्होंने पूछा "क्यों, वहां कैसा लगता है?" मैंने कहा, "अच्छा लगता है।" बापूजीने कहा, "हां, अच्छा तो लगना ही चाहिये। गुड़ तो मीठा ही लगता है, लेकिन रोगीको गुड़ भी कड़आ लगने लगता है न? अुसको तो मिर्च मीठी लगती है। ये लड़कियां भी तो मन ही मन कहती होंगी कि बापू हमको अुबली भाज़ी खिलाते हैं। मिर्चका साग देखकर अिनकी जीभ कैसे पानी डालती होगी?" यह कहते हुअे लड़कियोंकी ओर देखकर वे खूब हंसे और आगे बोले कि यह तो मैंने मजाक किया। लेकिन सच बात तो यह है कि मनका रोग शरीरके रोगसे भी भयानक होता है। शरीरके रोगका अिलाज करना आसान है। यदि कोअी रोगी दवा न खाय तो आजकल अिंजेक्शनसे भी काम चल जाता है। लेकिन मनके रोगीकी दवा कैसे हो? अुसकी दवा तो अुसीके पास होती है। दूसरे लोग केवल थोड़ा सहारा लगा सकते हैं। मुझे आशा है कि विनोबाके साथ तुम्हें कुछ सहारा जरूर मिलेगा। अुनसे तो मैं भी बहुतसी बातें सीखता रहता हूं। तुम दत्तात्रेयकी बात जानते हो? अुन्होंने कुत्तेको भी अपना गुरु माना था। वहां क्या कार्यक्रम रहता है? काममें तो तुम किसीसे हारनेवाले हो नहीं। लेकिन किसीके साथ झगड़ा नहीं करना और तबीयत अच्छी रखना। जब जब वहांसे छुट्टी मिले तब मेरे पास आनेकी तुम्हें छूट है।

मैंने प्रणाम किया और बापूजीकी अेक थप्पड़की प्रसादी लेकर चला आया। मनमें सोचता जाता था कि कहीं सचमुच ही मेरी हालत अुस रोगीके जैसी न हो, जिसे दूध कड़ुआ लगता है और खट्टी छाछ भाती है। मैंने बापूजीकी आंखोंमें मेरे लिअे ममता देखी। लेकिन न मालूम मेरा मन बापूजीके साथ रहनेसे क्यों अुचट गया है। देखें, ओश्वर कहां ले जाता है।

दैवयोगसे विनोबाजीने भी अपने प्रवचनमें बीमारकी ही बात कही।

३–५–'३५

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने कहा : हम सूत भगवद्-बुद्धिसे ही कातते हैं। अिसलिअे अिसके साधन भी अत्यन्त व्यवस्थित होने चाहिये। हमारी धुनकी और तांत सितारकी तरह मधुर आवाज देनेवाली हो। तकलीकी गति बढ़ानेके लिअे जो सुधार करने हों अुनकी शोध होनी चाहिये। धुनते और कातते समय हमारा आसन योगियोंका-सा होना चाहिये। पूनियां अितनी बढ़िया होनी चाहिये कि कातनेमें बिलकुल श्रम न पड़े। हमें आध्यात्मिक साधना और दैनिक कर्मयोगका समन्वय कर लेना चाहिये। जगतमें केवल कर्म और केवल साधना करनेवाले बहुत हैं। लेकिन दोनोंमें मेल साधनेका रास्ता हमें बापूजीने दिखाया है। यही वह मार्ग है जिस पर सब चल सकते हैं। यह आश्रम अैसी ही साधनाका अेक केन्द्रमात्र है, और कुछ नहीं।

सायंप्रार्थनामें विनोबाजी अिस प्रकार बोले : जगतमें सेवा करनेके दो मार्ग हैं। स्वाभाविक रूपसे सेवाकार्य सम्मुख अुपस्थित हो जाय अुसे करना, यह अेक मार्ग है। और दूसरा है संस्था खोलकर लोगोंको अेकत्र करके अुनकी सेवा करना। दोनों मार्ग श्रेष्ठ हैं। दोनों ही सुरक्षित हैं। लेकिन दोनोंमें धोखा हो सकता है। पिता अपनी संतानकी जवाबदारी जैसे संभालता है अुससे भी अधिक जवाबदारी संस्थाके संचालककी होती है। माता-पिता तो अिस बातसे संतोष मान लेते हैं कि अुनकी संतान शक्तिशाली और सुखसे अपना जीवन व्यतीत करनेवाली हो जाये। परन्तु संस्थाके संचालक पर यह दुहरी जवाबदारी आती है कि वैसी शक्ति किस प्रकार प्राप्त हो और प्राप्त होने पर वह ओश्वरार्पण कैसे हो। मैं दिनभर अिसी विचारमें रहता हूं कि किस सेवककी कितनी प्रगति होती है। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि जिस कामकी जिम्मेदारी मैं ले लेता हूं अुसके सिवा दूसरे कामोंके लिअे मेरे पास समय ही नहीं बचता। 'गीताओी' लिखते समय मुझे दूसरा विचार ही नहीं आता

था। अब अिस संस्थाकी जवाबदारी मैंने ली है तो पूरी शक्तिसे अुसे निभानेका प्रयत्न करना मेरा धर्म है। मुझमें चारसे अधिक सेवक संभालनेकी शक्ति नहीं है। अधिक संख्या देखकर मेरा जी घबरा अुठता है। यहां जितने आदमी हैं अुन्हें प्रतिदिन आत्म-निरीक्षण करना चाहिये और यह देखते रहना चाहिये कि रोज कितनी प्रगति होती है। अेक-दूसरेके साथ प्रेम रखना और अेक-दूसरेकी प्रगतिमें सहायता करना सबका धर्म है। शक्ति प्राप्त करना और अुसे अीश्वरार्पण करना यह मूलमंत्र है। जितने दोष स्वार्थमें हो सकते हैं — जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि — ठीक अुतने ही परमार्थमें भी हो सकते हैं, यदि परमार्थ अीश्वरार्पण बुद्धिसे न किया जाय। बस यही सीखना है। सब लोग अिस पर विचार करें।

४–५–'३५

मनुष्य तीन प्रकारकी खुराक सृष्टिसे लेता है: जीवसृष्टि, वनस्पति और खनिज। जीवसृष्टिमें दूध, वनस्पतिमें फल-साग तथा खनिजमें नमक आदि आते हैं। परन्तु अीश्वर-तत्त्व तो सर्वत्र भरा हुआ है। यह बात स्पष्ट है। जिसमें अीश्वर प्रत्यक्ष दीखता है, अैसी ही जीवसृष्टि है। मुझे तो कभी कभी पत्थरमें भी अीश्वरका दर्शन होता है। जब पहाड़ों पर चला जाता हूं तो वहां मुझे स्पष्ट शिवरूपका भास होता है। अिसलिअे खुराकके विषयमें भी मनुष्यके सामने अहिंसाका प्रश्न आकर खड़ा रहता है। मनुष्यका शरीर केवल खनिज पर तो निभ नहीं सकता। परन्तु वनस्पति पर तो जरूर निभ सकता है। दूधकी कल्पना मांस छुड़ानेके लिअे ही हुअी है। अिसलिअे मनुष्यको जहां तक संभव हो खुराकके बारेमें अहिंसक बननेका प्रयत्न करना चाहिये। नमक शरीरके लिअे आवश्यक नहीं है। यह प्रयोग करके देखने जैसी बात है। यदि अिसे छोड़ा जा सके तो अपने अस्वाद-व्रतको बहुत बल मिलेगा।

* * *

सच्चा अर्थशास्त्र यह है कि हरअेकको कामकी समान मजदूरी दी जाय।

* * *

शामको मैं बापूजीसे कन्या-आश्रममें मिलने गया। बापूजीने दूरसे ही देखकर पूछा, "कैसा चलता है?" मैंने प्रणाम किया और कहा, "ठीक

चल रहा है।" बापूजीने पूछा, "तीन-चार दिन क्यों नहीं आये?" मैंने कहा, "यों ही छोटे-मोटे काममें लग जाता था।" बापूजीने कहा, "हां, काम छोड़कर मेरे पास आना ठीक नहीं है। विनोबासे कुछ चर्चा होती है?" मैंने कहा, "आजकल अुनके प्रवचन बड़े अच्छे होते हैं। अुस दिन आपके पाससे गया तो अुन्होंने भी करीब-करीब वही बात कही जो आपने कही थी।" बापूजीने कहा, "ठीक है। विनोबा जब बोलता है तब अपने आपको भूल जाता है और श्रोताओंके साथ अेकरूप हो जाता है। तभी तो अुसके आसपास अितने सेवक पड़े हैं। मैंने अनुभवसे देखा है कि विनोबा जैसा बोलता है वैसा आचरण करनेमें अपनी सारी शक्ति लगा देता है। हम जैसा बोलते हैं वैसा ही आचरण करें तो सारा प्रश्न ही निबट जाय।" मैं बापूजीको प्रणाम करके लौट आया।

६-५-'३५

पहले जमानेमें अेक भक्तिपक्ष और अेक सेवापक्ष, अिस प्रकार दो पक्ष थे। सेवापक्षमें हिंसा करना भी शामिल था। अेककी सेवाके लिअे दूसरेको मारने तककी नौबत आ जाती थी। ओश्वर-प्राप्ति करनेवाले अिस झंझटसे अलग रहते थे। परन्तु आज हमारा जो प्रयोग चल रहा है, वह भक्ति और सेवाका अेकीकरण करनेका प्रयोग है। अिसमें वीरत्व और साधुत्व दोनोंका समावेश हो जाता है। अनुभवसे जो कार्यरूपमें आ सके वही शास्त्र है। आजका शास्त्र यही है कि भूखोंको रोटी कैसे मिले, अिसका विचार और अुपाय करना। खादीका अर्थशास्त्र अिसी विचारमें से निकला है। बापूजी अिसीको दरिद्र-नारायणकी सेवा कहते हैं।

८-५-'३५

प्रश्न: ब्रह्मचर्यके पालनके लिअे क्या-क्या साधन चाहिये?

अुत्तर: संक्षेपमें कहूं। खुली जगहमें शारीरिक श्रम करना, खुली जगहमें ही सोना, सात्त्विक भोजन, ओश्वरका सतत चिंतन, सत्संग और जितनी देर स्त्रीका साथ मिले अुतनी देर अुसके लिअे पूज्यभाव रखना। स्त्री है ही पूजने योग्य। लोगोंने बुरी कल्पना करके अुसको भयानक स्वरूप दे दिया है। परन्तु वह वास्तवमें अितनी भयानक है नहीं। कुछ हद तक तो है, नहीं तो पुरुषार्थ ही क्यों?

प्रश्न : लड़कों तथा लड़कियोंको अेकसाथ शिक्षण देना आपके विचारसे कैसा है ?

अुत्तर : अिस समय अैसी परिस्थिति है कि मैं कहूंगा कि अलग रखना चाहिये। परन्तु अेक जगह रखनेसे अेक-दूसरेको लाभ ही होगा। साथमें अेक जाग्रत और योग्य व्यवस्थापक होना चाहिये।

प्रश्न : क्या ध्यानयोग द्वारा मनुष्यकी पूर्णता हो सकती है ? अिस विषयमें आपका क्या अनुभव है ?

अुत्तर : पूर्णता तो नहीं हो सकती, परन्तु अेक अंगका विकास हो सकता है। मनुष्यके पास तीन शक्तियां हैं : कर्म करनेकी, बोलनेकी और विचार करनेकी। ध्यानसे विचारका विकास होता है। परन्तु कर्म तथा वाचा अधूरे रहते हैं।

प्रश्न : तब पूर्णता किस प्रकारसे प्राप्त होती है ?

अुत्तर : चित्तशुद्धि, योग्य कर्म तथा शुद्ध भाषणसे। जब चित्त शुद्ध हो जाता है तब ध्यानसे योगसिद्धि हुअी समझनी चाहिये। क्योंकि चित्तशुद्ध मनुष्य जिस कामको करेगा अुसीसे ध्यानयोग सिद्ध हो सकेगा। नम्रतापूर्ण सरल चित्तसे प्रभुकी भक्ति, सबके साथ प्रेमभाव रखना, यही अुत्तम मार्ग है।

सायंकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीका प्रवचन :

आज हिन्दुस्तानमें या सारे जगतमें जो संस्थायें हैं वे सब बन्द कर देने योग्य हैं। कुटुम्ब-संस्था सगुण है। अन्य संस्थायें निर्गुण। जिस संस्थामें सगुणता नहीं है वह निकम्मी है। सगुणता अर्थात् आपसमें प्रेम, अेक-दूसरेकी आत्माको पहचानना। अवगुण देखने हों तो अपने ही अवगुण देखो, दूसरेके अवगुण न देखो। सूर्य भगवान कभी अन्धकारके दर्शन नहीं करते। आजकलके स्कूल-कॉलेज सभी निर्गुण हैं। मैं नहीं जानता कि कोअी भी प्रोफेसर किसी विद्यार्थीके जीवनके साथ परिचय करता हो। मुझे याद नहीं आता कि किसी शिक्षकका अच्छा असर मेरे मन पर हो। माताका अच्छा असर है। दादाका भी है। बापूका है, मित्रोंका है, विद्यार्थियोंका है, ज्ञानदेवका है। पर किसी शिक्षकका नहीं है। अिस प्रकारकी निर्जीव संस्थायें बन्द कर दी जानी चाहिये। मैं जब घर छोड़कर अेक दिन निकल पड़ा अुस दिनकी मुझे याद है। अुस दिन अैसा अनुभव हुआ जैसे बाघके मुखमें से शिकार निकल कर भागा हो और आनन्दका अनुभव करता हो। लेकिन कुटुम्ब-संस्था

फिर भी अच्छी है। वहां सब आपसमें प्रेमसे रहते हैं और अेक-दूसरेको आत्म-विकासमें मदद करते हैं। रेल्वे स्टेशनके मुसाफिरोंकी भांति नहीं कि थोड़ी देर पास पास बैठे और फिर भिन्न दिशाओंमें चले गये।

*   *   *

अभिमान नौ प्रकारके होते हैं। १. सत्ताका, २. संपत्तिका, ३. बलका, ४. रूपका, ५. कुलका, ६. विद्वत्ताका, ७. अनुभवका, ८. कर्तृत्वका, ९. चरित्रका। परन्तु यह मानना कि मुझे अभिमान नहीं है, अिसके बराबर भयानक अभिमान दूसरा नहीं।

*   *   *

शामको भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया आर अपनी दो कल्पनायें अुनके सामने रखीं। अेक खेती करनेकी और दूसरी खादीकी। बापूजीने खेतीकी कल्पना पसंद की और कहा: "दोनों ही काम पवित्र और अुपयोगी हैं। मुझे तो अेकसे अेक अधिक प्रिय हैं। लेकिन गीतामाता कहती है कि स्वधर्ममें मरना भी अच्छा है, और परधर्म अच्छा हो तो भी खतरनाक है। अिसका कारण यह है कि मनुष्य अपने स्वाभाविक कर्मको जितनी खूबीसे कर सकता है अुतनी खूबीसे दूसरा काम नहीं कर सकता। तुम्हारा स्वधर्म खेती है। खेतीके साथ गाय तो आ ही जाती है, क्योंकि गायके बिना खेती हो ही नहीं सकती। आजकल लोग खेती मशीनसे करनेकी बात करते हैं, लेकिन हमको तो घी, दूध, खादके लिअे गोबर और चमड़ा भी चाहिये हाड़-मांसका अुत्तम खाद भी चाहिये। क्या मशीन यह सब देगी? अिसलिअे मैं कहता हूं कि हिन्दुस्तानको मशीन नहीं, गाय चाहिये। तुमको मैं और क्या कहूं? तुम तो जन्मसे ही किसान हो। आज किसान गायको छोड़कर भैंसके पीछे भाग रहा है। गुजरातमें तो भैंसें तेजीसे बढ़ रही हैं और अुनके पाड़ोंकी हिंसा होती है। कहीं कहीं किसान खेतीमें पाड़ोंका अुपयोग भी करते हैं। लेकिन मोटे तौर पर यही कहा जायगा कि पाड़े अपने भाग्य पर ही छोड़ दिये जाते हैं। जिस प्रकार गाय या बैलका अुपयोग सर्वत्र होता है, वैसा पाड़ेका नहीं होता। अिसलिअे मैं फिर कहता हूं कि तुम्हारे लिअे गोपालनके साथ खेती अुत्तम मार्ग होगा।" मैंने अनुभव किया कि महापुरुष कितने दूरदर्शी होते हैं। मैंने खादीका काम सीखा। बापूजीने मुझे सावलीमें

खादीके काममें लगानेकी कोशिश की। लेकिन अन्तमें पानी अपने ठिकाने ही आकर रुका।

११–५–'३५

प्रेमके विषयमें बोलते हुअे विनोबाजीने कहा कि हम लोगोंमें प्रेमकी कमी है। अेक-दूसरेके साथ अेकरूपताका अनुभव होना चाहिये। जब तक हम यह मानते हैं कि हम तो काफी प्रेम करते हैं तब तक हमारा प्रेम कम है यह बात साफ है। जब हमको यह प्रतीत हो कि हमें जितना प्रेम करना चाहिये अुतना नहीं करते, तब ही कुछ प्रेम समझा जाय। पूर्ण प्रेम तो शरीरके रहते हुअे हो ही नहीं सकता। पूर्ण प्रेम अर्थात् विश्वप्रेम, ओश्वर-प्रेम। जब प्रेम पूर्णताको प्राप्त होगा तब यह शरीररूपी जेलखाना क्षणभर भी नहीं ठहर सकेगा। आत्मारूपी प्रेम तुरन्त ही सारे विश्वमें मिल जायगा। जब तक शरीर है और जब तक अहंभाव है, तब तक प्रेम पूर्ण नहीं हो सकता। प्रेमका अुदाहरण देनेके लिअे हम राम-लक्ष्मणका नाम लेते हैं। आश्रमका अुदाहरण क्यों नहीं लेते? अहंकार सेवा करनेमें भी हो सकता है और सेवा लेनेमें भी। मैं सेवा करता हूं यह विचार तथा मैं बड़ा हूं, मेरी सेवा होनी चाहिये, यह विचार दोनों ही दोषपूर्ण हैं।

* * *

आश्रममें बाहरसे आनेवालोंकी कभी अुपेक्षा न होने पावे।

* * *

पानीके विषयमें बोलते हुअे विनोबाने कहा कि जब कोअी मुझे पानी पिलाता है तब मैं पानीमें भगवानका स्वरूप देखता हूं। गीतामें कहा गया है, पानियोंमें मैं रस हूं।

१२–५–'३५

आज बुद्धसेनने मौन रखा है। यह मुझे अच्छा लगता है। मौन रखनेसे बहुतसी शक्ति खर्च होनेसे बच जाती है। मनकी वासनाओंसे लड़नेका अवसर मिलता है। वासना प्रतिक्षण चोरकी भांति हमारे अन्दर प्रवेश करना चाहती है। अिसलिअे जो सदा जाग्रत रहता है अुसीके घरमें वासनाका प्रवेश नहीं हो सकता। बहुतसे लोग कहते हैं, मनमें वासनाका अुद्भव हो

तो अुसका भोग करना चाहिये। लेकिन मैं कहता हूं, यह रास्ता गलत है। अुसका अर्थ तो यही होगा कि वासनाओंके सामने कायरोंकी भांति हथियार डाल दें। यदि मनुष्य शरीरसे बचा रहे तो मन भी सुधर जायगा। शर्त अितनी ही है कि जो विषय-विचार मनमें आये अुसे पोषण न मिले।

* * *

पूनीका दान अुत्तम है। मुझे जो पूनी मिलती है अुसमें मैं भगवानका दर्शन करता हूं।

* * *

मद्रासमें कोअी अेक कुटुम्ब जलकर मर गया था। अुसके विषयमें विनोबाजीने कहा कि अिस प्रकार मर जाना हमारी गरीबीका चिह्न तो है ही। लेकिन अिसका अेक और भी कारण है मजदूरीमें अत्यन्त असमानता। कॉलेजोंमें प्रिन्सिपाल और प्रोफेसर १ घंटा प्रतिदिन और वर्षमें ६ मास काम करके मासिक १२०० या १००० या ६०० या ५०० रुपये लेते हैं। परन्तु वे पढ़ाते क्या हैं? थोड़ीसी मेहनत करके मैं वही अुनसे भी अच्छा पढ़ा सकूंगा। अुनको अितने पैसे लेनेका क्या हक है? और पढ़ानेकी कीमत लेना तो स्वयं अपना अपमान करना है। सबको मेहनत करके खानेका हक है, नहीं तो चोरी है। अेक संन्यासी ही अपवाद माना गया है। लेकिन वैसा संन्यासी मैंने अब तक कहीं नहीं देखा है। अुसकी तो हम कल्पना ही कर सकते हैं। हमें पहले अेक-दूसरेके कंधेसे अुतर जाना चाहिये। पीछे सेवाका नाम ले सकते हैं। नहीं तो सेव्य कहेगा कि भाअीसाहब, पहले हमारे कंधेसे नीचे अुतरो, फिर हमारी सेवा करना। हम अपने मनमें यह सोचें कि हम तो ज्ञानका अुपदेश देते हैं तो यह दम्भ होगा। ज्ञानका मूल्य पैसा नहीं, प्रेम है। यदि हम आश्रमवाले अपना बोझ दूसरों परसे अतार लें, तो अुतने पापसे बच जावेंगे।

१३–५–'३५

प्रतिदिन माता जैसे बच्चेको जगाती है, वैसे ही प्रभु हमको जगाता है कि अुठो, मेरा स्मरण करो और अपने काममें लग जाओ।

जैसे अपने लिअे धन कमाना स्वार्थ साधना है, वैसे ही केवल अपने ही लिअे पढ़ना भी स्वार्थ है। हमारे पास जो ज्ञान हो वह अपने साथीको देना धर्म है।

* * *

सेवासे जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह दूसरे प्रकारसे नहीं हो सकता।

१६–५–'३५

कर्तव्य-त्रयी : १. सत्यनिष्ठा, २. धर्माचरणका प्रयत्न, ३. हरिस्मरण-रूप स्वाध्याय। सन्तकी अपेक्षा सत्य श्रेष्ठ है। सत्यके अंशमात्रसे संत निर्माण होते हैं। ज्ञानी जो कर्म करता है वह तो करता ही है, लेकिन जो नहीं करता वह भी करता है। परन्तु कर्म-संन्यस्त पुरुष जो नहीं करता वह तो नहीं ही करता और जो कुछ वह करता है वह भी नहीं करता तब कर्म-संन्यासी होता है।

* * *

मेरा नालवाड़ीमें रहनेका समय पूरा हो चुका था और दूसरे दिन मैं मगनवाड़ी बापूजीके पास लौट जानेवाला था। अिसलिअे शामकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीसे मिलकर मैंने चर्चा की कि नालवाड़ीसे मैंने क्या सीखा और यहांका मेरे दिल पर क्या असर पड़ा। अिससे अुनको भी बहुत आनन्द हुआ और मुझे भी परम संतोष मिला। विनोबाजीमें मैंने अेक प्रखर विचारक, अुत्कट साधक, अूंचे दर्जेके वैराग्य-निष्ठ, अद्भुत श्रमशील तथा साथियोंको अूंचा अुठानेका सतत प्रयत्न करने और तीव्र अिच्छा रखनेवाले पुरुषके दर्शन किये। मुझे लगा कि बापूजीके बाद अगर कोअी कुछ प्रकाश दे सकता है तो वह यही पुरुष हो सकता है। मैंने अपने दिलकी सब बातें अुनके साथ करके रातको ही अुनसे बिदा ले ली थी।

१७–५–'३५

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद प्रवचन करते हुअे विनोबाजीने कहा : बलवंतसिंहजीने रातको जो बातें कीं अुनसे मुझे बड़ा संतोष हुआ। मेरा और अुनका संबंध जीवनभरके लिअे बंध गया है। अुनकी बातें मुझे बड़ी ही प्रिय लगी हैं। अुन्होंने यहांसे बहुत कुछ लाभ अुठाया है और सबके साथ अच्छा परिचय कर लिया है। यह बात बहुत महत्त्व रखती है। मेरा

परिचय अिसी प्रकारसे होता है और वह सदाके लिअे कायम हो जाता है। मैं चाहता हूं कि आश्रमका अिस प्रकारका लाभ अधिकसे अधिक लोग अुठा सकें। आश्रमके सब लोगोंको अपनी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिये।

* * *

मैंने नालवाड़ीसे बिदा ली और बापूजीके पास मगनवाड़ी आ गया। मैं तो बापूजीको भी छोड़कर जानेकी पूरी योजना बना चुका था, तब विनोबाजीके साथ संबंध बांधे रहनेका तो सवाल ही नहीं था। लेकिन सत्पुरुषोंके मुखसे जो वचन सहज ही हृदयकी गहराअीसे निकल जाते हैं, अुनके आगे-पीछेकी स्पष्ट कल्पना वे खुद भी नहीं कर सकते। तो दूसरा कोअी कैसे कर सकता है? सत्पुरुषोंके आशीर्वाद और अुनके वचनों पर हमारी जो निष्ठा है, अुसके पीछे कोअी अव्यक्त शक्ति काम करती है यह अनुभवसे सिद्ध हो चुका है। विनोबाजीके अिस वचनको कहे अेक जमाना गुजर गया है। लेकिन सचमुच ही मेरा और अुनका संबंध दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है और जीवनभरके लिअे बंध गया है। बापूजीके बाद जब आश्रमका मार्गदर्शक नियत करनेकी बात अुठी, तो मैंने ही विनोबाजीके नामकी सूचना की। आज यहां (सीकरमें) भी मैं अुन्हींके आदेशानुसार गोसेवाका पवित्र काम कर रहा हूं।

भले ही अुनके साथ मेरे कुछ विचारोंकी पटरी न भी बैठती हो और बापूकी तरह कभी कभी मैं अुन्हें भी कड़ी बातें कह देता हूं, फिर भी अुनकी परिधिसे बाहर निकलनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। 'मिलि न जाअी नहिं गुदरत बनअी' — ठीक यही दशा मेरी विनोबाजीके संबंधमें है। गोसेवासे हटकर पूरी तरह अपने आपको मैं भूदानमें नहीं लगा सकता, अिसका कारण मेरी गोभक्ति ही है।

* * *

अुसी दिन विनोबाजी कहीं बाहर चले गये थे। जब मैंने बापूजीको आकर प्रणाम किया तो अुन्होंने हंसकर कहा, "विनोबाको भगाकर भाग आये?" मैंने कहा, "जी हां।" बापूजीने पूछा, "विनोबासे खूब सीखकर आये हो न?" मैं संकोचमें पड़ गया। क्योंकि विनोबाजीने जो कुछ कहा और मैंने सुना, अुसे अगर सीखा हुआ माना जाय तो मेरा बापूजीको छोड़कर जानेका सवाल खतम हो जाना चाहिये था। लेकिन वह तो ज्योंका त्यों खड़ा था। मैंने बापूजीको अेक लम्बा पत्र लिखा। अुसमें बताया कि मैं

जानता हूं कि आपको मेरे जानेसे दुःख होगा, लेकिन अब तो मुझे जाना ही है। क्या करूं? मेरे भाग्यमें आपका सत्संग नहीं बदा है। अिसलिअे दुःख तो मुझे भी हो रहा है।

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा, "आदर्श गांवकी आपकी कल्पना क्या है?" बापूजीने कहा, "आदर्श गांवमें सब धर्मोंके लोग परस्पर प्रेमसे रहते हों, कोअी अछूत न समझा जाता हो, कुअें-मंदिर पर सबका समान अधिकार हो। सब खादी पहनते हों। ग्रामकी सफाअी आदर्श हो। हर प्रकारसे गांव स्वावलम्बी हो।"

प्रश्न — ग्रामसेवकोंको ग्राममें होनेवाले भोजोंमें, जो शादी या मृत्युके समय होते हैं, शामिल होना चाहिये या नहीं?

अुत्तर — हरगिज नहीं। धार्मिक क्रियाओंके सिवा ग्रामसेवक किसीमें हिस्सा नहीं लेगा। धार्मिक क्रियाओंमें खर्चकी तो आवश्यकता होती ही नहीं।

प्रश्न — ग्रामसेवक कांग्रेसकी किसी समितिका सदस्य बन सकता है या नहीं?

अुत्तर — न बनना अच्छा है। क्योंकि अुसमें से रागद्वेष पैदा होता है और कार्यमें विघ्न पड़ना संभव है।

प्रश्न — क्या मैं कोअी संस्था बनाकर काम करूं?

अुत्तर — अभी नहीं। बिना संस्थाके संस्था जैसा कार्य करो। अगर संस्था बननेवाली होगी तो अपने-आप बन जायगी। सेवा करना अपना धर्म है।

अंतमें बापूजीने कहा कि "अब जो विचार किया है अुसके अनुसार तुमको किसी गांवमें स्थिर हो जाना चाहिये। मेरा आशीर्वाद तो है ही। ग्रामवासियोंकी सेवा मनसे, वचनसे और कर्मसे करो। अेकादश व्रतोंका पालन तो करना ही है। मेरे पास जब आना जरूरी लगे तब आनेकी अिजाजत है। लेकिन अितना समझ लो कि हमारा अेक भी पैसा रेलभाड़ेमें व्यर्थ खर्च न हो। जब तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जाय और अैसा लगे कि बापू ठीक कहते थे, तो यह आश्रम तो तुम्हारा घर है। जब चाहो यहां आ सकते हो। यहांसे जो भी पाया है वह व्यर्थ नहीं जा सकता। भगवानका वचन है कि किया हुआ शुभ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। अिसका अर्थ अगले जन्मका भी हो सकता है। लेकिन अिस जन्ममें जब विचारका नया जन्म

हो तो किया हुआ या समझा हुआ शुभ कर्म या शुभ विचार काम आता है। वह नष्ट नहीं हो जाता। तो यहांसे सीखा हुआ तुम्हारे काम क्यों न आयेगा? लेकिन अिसके लिअे समय चाहिये। मेरा और तुम्हारा जो सम्बन्ध बन गया है वह टूट कैसे सकता है? तुम शान्त चित्तसे जाओ और जहां भी काम करो वहांके सब हाल लिखते रहो।"

९

कुछ और संस्मरण

१. भाखरीका किस्सा

खूब प्रयत्न करने पर भी और बापूजीकी अत्यन्त प्रेमवर्षा होते हुअे भी मेरा मन मगनवाड़ीसे अूब गया था और मैं वहांसे भागना चाहता था। घर जानेका निश्चय हो चुका था। दूसरे दिन जानेकी तैयारी थी। अमतुस्सलाम बहनने रसोअीघरका चार्ज ले लिया था। मैंने अमतुस्सलाम बहनसे रास्तेके लिअे भाखरी बनानेकी बात कही। मैं तेल नहीं खाता था, अिसलिअे मोवनमें घी डालनेको कहा। अुन दिनों नाश्तेमें आम मिलते थे, अिसलिअे भाखरीके साथ आम रखनेको भी कहा। अमतुलबहनने मुझसे पूछा कि भाखरी कितनी चाहिये। मैंने कहा कि चौबीस घंटेका रास्ता है। दो समय खानेको चाहिये। अुन्होंने चौबीस घंटेका अर्थ किया चौबीस भाखरी और बापूजीसे जाकर कहा कि बलवंतसिंह २४ भाखरी चाहता है, घीका मोवन देनेको कहता है और साथमें आम भी मांगता है। यह सुनकर बापूको धक्का-सा लगा। अुन्होंने मुझे बुलाया और बोले, "तुम रास्तेके लिअे २४ भाखरी मांगते हो? घीका मोवन भी चाहिये और साथमें आम भी चाहिये?" मैंने हंसकर कहा, "बापू, २४ भाखरीकी बात तो मैंने नहीं कही। हां, घीके मोवन और आमकी बात जरूर कही थी। क्योंकि मैं तेल नहीं खाता और आम तो नाश्तेमें मिलता ही है। स्टेशनसे मैं कुछ खरीदता नहीं हूं। जेलसे छूटते समय कैदीको जो भत्ता मिलता है अुससे ज्यादा मैंने कुछ नहीं मांगा।"

बापूने कहा — अितनेकी भी क्या जरूरत है? तुम तो नीमके पत्ते खाकर रह सकते हो। अेक-दो दिन भूखे रहनेमें क्या है? मैं यहां किसीको

खाना नहीं देता हूं। और अेण्ड्रूज साहब वगैराके कअी दृष्टांत मेरे सामने बापूने रख दिये।

मैंने कहा — मैं तो लोगोंको साथके लिअे भी खाना देता था और असमें मुझे अपनी भूल नहीं लगती है।

बापूने कहा — ठीक है, अब तो मेरे पास समय नहीं है और मैं कल गुजरात जा रहा हूं। तुम भी कल मत जाओ। वहांसे लौटने पर बात करेंगे।

बापूजी करीब दस दिन गुजरातमें रहे। अिस बीच तीन-चार पत्र बापूजीके आये और मेरे गये। अुन्होंने लिखा:

> चि० बलवन्तसिंह,
>
> तुम्हारी २१ तारीखकी अव्यवस्था देखकर मैं परेशान हुआ। लेकिन अच्छा हुआ कि मैंने तुम्हारी अितनी निर्बलता जान ली। अब तुम्हें स्थिरचित्त होकर अपनेको समझ लेना चाहिये। किशोरलाल और काकासाहबसे बात करो।
>
> बोरसद, २३–५–'३५ बापूके आशीर्वाद

दरअसल बापूजीकी मान्यता यह थी कि मैं कोअी धनी आदमी हूं और अपने ही खर्चसे आश्रममें रहता हूं; दिल्लीसे भी अपने ही खर्चसे आया था और अपने ही खर्चसे जा भी रहा हूं। लेकिन जब मैंने टिकटका पैसा मांगा तो जिन भाअीके हाथमें पैसेका काम था अुन्होंने भी बापूजीके सामने कुछ अिसी प्रकारसे कहा होगा, जिस प्रकारसे अमतुलबहनने २४ भाखरीकी बात कही थी। अुससे बापूजीको अेकदम धक्का-सा लगा और वे परेशान हो गये। अगर यह बात दिल्लीमें ही साफ हो जाती तो बापूजी परेशान नहीं होते। क्योंकि मैं तो साबरमतीमें ही अकिंचनके रूपमें दाखिल हुआ था और अुसी रूपमें अपने आपको देखता था। अिसलिअे मुझे स्पष्टीकरण देनेकी जरूरत नहीं थी और मैं अपनी बात पर अड़ा था। अपना दोष मेरा मन कबूल नहीं करता था। तो भी बापूजीके दुःखके कारण मुझे भी दुःख तो हो ही रहा था। अपने मनकी यह वेदना मैंने बापूजीको लिखी, तो बापूजीका अुत्तर आया:

> चि० बलवन्तसिंह,
>
> तुमको जब दोष-दर्शन नहीं हुआ है तो क्लेश क्यों? भले ही कोअी महात्मा भी हमारा दोष बतावे। लेकिन जब तक हमको प्रतीति न

हो तब तक न शोक होना चाहिये, न प्रायश्चित्त। मैंने तुममें असत्य नहीं पाया है, लेकिन विवेकशून्यता पायी है। जब तुम्हें आश्रमके पैसेसे जाना था तो जानेका कारण ही नहीं था। दिल्लीसे आना भी अुचित था या नहीं, यह सोचनेकी बात है। अैसे ही रोटी व आमकी बात है। लेकिन अिन सब बातोंमें दुःख माननेकी बात नहीं है। सिर्फ समझनेकी बात है, मन पर अंकुश रखनेकी बात है। अधिक मिलने पर। अुम्मीद है कि ७ दिन जो मिल गये हैं अुनका तुमने पूरा सदुपयोग किया होगा।

तुम्हारा कागज वापिस करता हूं।

२७–५–'३५ बापूके आशीर्वाद

मैं पैसेवाला नहीं हूं यह बात सुरेन्द्रजीने बापूजीके सामने स्पष्टतासे रख दी, अिसलिअे मुझे स्पष्टीकरण देनेकी जरूरत ही नहीं पड़ी और न बापूजीने ही अिस विषयमें मुझसे कभी कुछ पूछा। मुझे तो बापूजीके अिस विचारका श्री सुरेन्द्रजीसे ही पता चला था। जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि बापूजीका यह विचार मेरे बारेमें कैसे बना? अिस डांटके बाद बापूजीने मुझ पर अुतना ही प्यार बरसाया जितना मां बच्चेको धमकानेके बाद अुस पर बरसाती है। यह नीचेके प्रसंगसे स्पष्ट हो जाता है।

२. बापू तो बापू ही थे!

बापूको लगता था कि मैंने रास्तेके लिअे खाना क्यों मांगा। और मुझे लगता था कि जेलके कैदीको भी जो रास्तेका भत्ता दिया जाता है वह मुझे देनेसे बापूजीने अिनकार क्यों किया? जब बापू गुजरातसे वापिस आये तो अिस विषय पर हमारी घंटों चर्चा हुअी। लेकिन न तो बापूने ही मुझे क्षमा किया और न मैंने ही अपनी भूल कबूल की। बापूने निर्णय दिया कि अब तुम घर नहीं जा सकते। मैंने अपना निर्णय बताया कि अब मैं आपके पास नहीं रह सकता।

बापूने कहा — अच्छा, मेरे पास नहीं तो मेरे आसपास रहो, किशोर-लालके पास रहो, विनोबाके पास रहो और बीच-बीचमें मुझे मिलते रहो।

मैंने कहा — सत्संगके लिअे मुझे किसीके पास नहीं रहना है। हां, कुछ काम सीखना हो तो अलग बात है।

बापूने कहा — क्या सीखना चाहते हो?

मैंने कहा — मेरा बुनाअी-काम अधूरा है। मैं बुनाअी सीखना चाहता हूं।

बापू बोले — अच्छा तो विनोबाके पास नालवाड़ीमें बुनाअीका काम भी चलता है और मेरे पास भी रहोगे। विनोबासे मैं बात कर लूंगा। मैं मानता हूं वहां तुम्हारा मन लग जायगा। विनोबा तो बड़ा संत पुरुष है।

बापूजीने विनोबासे बात की, अुन्होंने कबूल किया और नालवाड़ीमें मेरे रहने और बुनाअी सीखनेकी व्यवस्था कर दी। अिस प्रसंगको याद करके मेरे हृदयकी क्या स्थिति हो सकती है यह पाठक समझ सकते हैं। कोअी अुपद्रवी लड़का मूर्खताभरे गुस्सेसे मांको छोड़कर भागता हो और मां अुसके पीछे पीछे दौड़ती हो, यही मेरी और बापूकी स्थिति थी। मांका तो बच्चेके साथ कुछ निजी स्वार्थ भी होता है, लेकिन बापूका मेरे प्रति शुद्ध वात्सल्य और प्रेमके सिवा दूसरा भाव ही नहीं हो सकता था। बापूके पाससे भागनेकी मेरी आकुलता और बापूका मेरे प्रति अगाध प्रेम और मुझे अपने पास रखनेकी छटपटाहट — अिसकी तुलना मैं किसके साथ करूं? भगवान कृष्णने गीतामें कहा है कि 'प्राप्य पुण्यकृतान् लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।' मैं नहीं जानता कि मैंने पिछले जन्ममें कुछ पुण्य किये थे या नहीं। लेकिन मेरा तो अिसी शरीरसे श्रेष्ठ पिताके घर जन्म हो गया। यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव करता हूं। अिससे अधिक तो मैं क्या कहूं? लेकिन मांको प्रसवके समय जो पीड़ा होती है, अुससे कम पीड़ा मुझे अपने पास पकड़ रखनेमें बापूजीको नहीं हुअी। मैं बापूजीको अपनी माता कहूं, पिता कहूं, गुरु कहूं — ये सब विशेषण मुझे फीके-से लगते हैं। अितना ही कह सकता हूं कि बापू बापू ही थे। अुनके जैसा प्रेम और अुदारता किसी भी शरीरधारीमें मुझे नहीं मिली। मुझे अिस पितृऋणसे अुऋण होनेकी भगवान शक्ति दे यही प्रार्थना है।

मुझे मगनवाड़ीसे भागते समय किसीने शुभ हेतुसे रोकनेका प्रयत्न नहीं किया था। लेकिन मेरे खिलाफ अमतुलबहनने शिकायत की और मैं रुक गया। मैं अुनका मजाक किया करता हूं कि देखो, तुमने मेरी रोटीके बारेमें बापूजीसे शिकायत की थी। वे भी हंसकर कहती हैं, अजी, अुसका तो आपको आभार मानना चाहिये। अुसीके कारण तो आप बापूजीके पास ठहर गये, नहीं तो आप तो भाग रहे थे।

यह बात तो बिलकुल सच्ची है कि वे मेरी रोटीकी शिकायत न करतीं तो न मालूम आज मैं कहां होता? अीश्वर अपना काम अजीब ढंगसे करता है। क्योंकि अुस समय कोअी समझानेकी कोशिश भी करता तो मेरा मन किसी बातको समझनेके लिअे तैयार नहीं था। सिर्फ यही अेक घटना असी घटी जिसके कारण मुझे अुस वक्त लाचारीसे रुकना पड़ा। अुस अीश्वरको मैं कोटिशः धन्यवाद देता हूं जिसने अैसे अनोखे ढंगसे अमतुस्सलाम बहनको निमित्त बना कर मुझे बापूजीके पाससे भागने नहीं दिया। फिर तो अैसे अनेक प्रसंग आये और गये। लेकिन ज्यों ज्यों मैं बापूजीके नजदीक पहुंचता गया, त्यों त्यों मैं आश्रमके जीवनका महत्त्व समझता गया और अुत्तरोत्तर वह मेरा घर जैसा बनता गया।

३. नम्रताके सागर बापू

बापूके साथ या बापूके आसपास रहनेका मेरा अेक सालका करार हुआ था। अिसीलिअे नालवाड़ीको पसन्द किया गया था। लेकिन नालवाड़ीमें बुनाअीका काम व्यवस्थित नहीं चलता था, अिसलिअे किसीने मुझे सावली जानेकी बात सुझायी। तीसरे दिन मैं बापूजीसे मिलने महिलाश्रम गया। बापूजीने हंसकर कहा, "क्यों, दिन गिनते हो? तीन दिन तो कम हो गये न?"

मैंने कहा, "अपील करने आया हूं।"

बापू — अच्छा करो।

मैंने बताया कि नालवाड़ीमें बुनाअीका काम व्यवस्थित नहीं है। मुझे सावली भेज दीजिये। बापूजीने कहा, "ठीक है। जाजूजीसे बात करूंगा।" जाजूजी साथ ही घूम रहे थे। बापूजीन अुनके साथ बात की और मैं दूसरे ही दिन सावलीके लिअे चल दिया और वहां जाकर अपने काममें लग गया। बापूजीके साथ मेरा पत्रव्यवहार तो चलता ही रहा।

अेक रोज बापूका चमत्कारी पत्र मिला:

चि० बलवन्तसिंह,

चार दिन हुअे जेठालाल अनन्तपुर गये। अुनको रास्तेमें घीके मोवनकी भाखरी चाहिये थी। स्टेशनसे वे कुछ लेते नहीं हैं। अमतुस्सलामने मुझे पूछा। मैंने कहा, हां भाखरी बना दो। तुम्हारा किस्सा

याद आया। तुमको मैंने डांटा था। स्मरणने मुझे दुःख दिया। मैं जानता हूं तुम्हारा तो भला ही हुआ। लेकिन मेरा दोष मिथ्या नहीं हो सकता। मेरा हेतु निर्मल था, लेकिन यह बात मुझे मुक्त नहीं कर सकती। क्षमा करना। अैसा अपूर्ण बापू है! बाकी तो किशोरलालभाअीने लिखा है न?

१५–८–'३५ बापूके आशीर्वाद

बापूजीको अपना रजकण जैसा दोष भी पहाड़ जैसा लगता था तथा दूसरेके पहाड़ जैसे दोषको भी रजकण जैसा समझ कर अुसे क्षमा करके अपनानेकी अद्‌भुत अुदारता अुनमें भरी थी। मुझे अुन्होंने शुद्ध हेतुसे मेरे ही हितके लिअे डांटा था। और अुस डांटने ही मेरे जीवनकी दिशा बदल दी। अुस डांटने मुझे घोर अंधकारसे बचानेमें प्रकाश-स्तंभका काम दिया। आज मैं जो भी हूं वह अुस डांटका ही मीठा फल है। गीतामें भगवान कृष्णने जो 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्' कहा है, वह मेरे लिअे सत्य सिद्ध हुआ। लेकिन मेरे और जेठालालभाअीके बीचका भेद बापूजी सहन नहीं कर सके। यह बात चार दिन तक अुनके हृदयको व्यथित करती रही। अिसमें बापूको मेरे प्रति अन्याय लगा। भेदभाव अुनसे कैसे हुआ? अिस विचारने अुन्हें मुझ जैसेसे, जो अुनका ही था, क्षमा मांगनेको मजबूर कर दिया। अपना सूक्ष्मसे सूक्ष्म दोष भी अुनकी नजरसे ओझल नहीं हो सकता था। अुनका हेतु निर्मल होते हुअे भी अुनको अैसा लगा कि मेरे विचारों पर आक्रमण हुआ है, अैसा करनेका अुन्हें अधिकार नहीं था। अिसी विचारने अुन्हें अत्यन्त दुखी बना दिया। बापूजीका हृदय अितना निर्मल और मस्तिष्क अितना जाग्रत था कि अुसमें लेशमात्र भी मैल या विचारकी शिथिलता टिक ही नहीं सकती थी। 'जो अनीति कछु भाषहुं भाअी, तो मोंहि बरजअु भय बिसराअी' रामचन्द्रके अिस वचनके अनुसार अुनकी साधना थी।

किसीको लग सकता है कि अेक छोटीसी बातको बापूजीने अितना तूल क्यों दिया होगा? लेकिन किसी बाहरी यंत्र या औषधिके संशोधनमें बाल बराबर भी फर्क पड़ जाय तो सारी मेहनत बेकार हो जाती है, तब हृदय-संशोधनमें यदि फर्क पड़े तो वह कैसे सहन हो सकता है? यह दृष्टि

बापूजीके सामने थी। अुनकी साधना दासानुदास बननेकी थी। अिस पत्रमें अुनकी महानताके साथ साथ मेरे प्रति जो ममत्वकी भावना छिपी थी, अुसने मुझे अैसा जकड़ कर बांधा कि मैं बापूजीके चरणोंसे अलग हो ही नहीं सका। अिस प्रकारकी साधना बिरले ही महापुरुषोंके जीवनमें देखनेको मिल सकती है। अेक छोटेसे बच्चेके सामने भी अपनी भूल कबूल करनेकी क्षमताने ही बापूको राष्ट्रका बापू बनाया और मेरे जैसे कितने ही लोगोंको प्रेमकी रस्सीमें अुन्होंने अैसा कस कर बांधा कि आज भी अुसके बंधन ढीले नहीं बल्कि और भी दृढ़ हो रहे हैं।

आज भी जब मैं यह पत्र पढ़ता हूं तो मेरा हृदय बापूजीकी अपार नम्रताके सागरमें डूब जाता है और मैं तुकारामकी ये पंक्तियां गुनगुना अुठता हूं:

"तुं माअुलीहूनी मवाल। चन्द्राहूनी शीतळ। पाणियाहूनी पातळ। कल्लोल प्रेमाचा।। देअूं कशाची अुपमा। दुजी तुज पुरुषोत्तमा।... कांही न बोलनी आतां। अुगाच चरणे ठेवितो माथा। तुका म्हणे पंढरिनाथा। क्षमा करी अपराध।।"

—तू मांसे भी प्रेमल है। चन्द्रमासे भी शीतल है। पानीसे भी पतला है। और क्या कहूं, तू प्रेमका कल्लोल है (सागर है)। हे पुरुषोत्तम, तुझे दूसरे किसकी अुपमा दूं? कुछ न बोलकर अब मैं चुपचाप तेरे चरणों पर सिर रखता हूं। तुकाराम कहते हैं, हे पंढरीनाथ, मेरे अपराध क्षमा कर। (तुकाराम-गाथा, अभंग ३९०५)

अिस पत्रके जवाबमें मैंने अेक लम्बा पत्र बापूको लिखा, जिसमें यह भी लिखा:

> "मैं जानता हूं कि आपका मेरे अूपर कितना प्रेम है। आप मुझसे अितने त्यागकी आशा रखते हैं कि मुझे रास्तेके लिअे अपने खाने वगैराकी चिन्ता भी न हो। मैं अितना भी संग्रह करके क्यों चलूं? मैं आपकी अिस आशाको पूरी नहीं कर सका और अपने हठके कारण अपनी बातको सही समझता रहा अिसका मुझे दुःख है।"

बापूका अुत्तर आया:

चि० बलवन्तसिंह,

ओश्वरभाओका खत अुसे दे दो, कान्तिका कान्तिको। तुम्हारे खत मिले हैं, हिसाब पढ़ लिया। पैसे तो हैं ना? चाहिये तब लिखो। हिसाब अच्छा है। भाजी अित्यादिकी शोध की सो अच्छा किया। मैंने माफी मांग ली वह तो आत्म-कल्याणके लिअे। अुसका असर तुम्हारे पर गहरा पड़ा यह समझकर मुझे आनन्द होता है। तुममें काम करनेकी शक्ति तो काफी है ही। सावलीमें तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जायगी।

वर्धा, ३०-८-'३५

बापूके आशीर्वाद

४. लोगोंका भ्रम दूर करनेका अुपाय

सावलीमें अेक विशेष दिन देवीके सामने बकरेकी बलि चढ़ानेकी विधि सामूहिक रूपसे होती थी। सब लोग गांवमें अेक अेक बकरा लेकर जाते थे और देवीके निमित्तसे वहीं पर अुसे काटकर और अुसका मांस बनाकर खाते थे। अिसका पूरा वर्णन मैंने बापूजीको लिखा था। बड़ा भयानक दृश्य था। पेड़ पेड़ पर बकरे टंगे थे। दूसरी घटना थी अेक बहनकी। अुस बहनने कुछ चुरा लिया था और लोग अुसको सता रहे थे। भाजीके कुछ बीज भी भेजनेके लिअे मैंने लिखा था। अुसके जवाबमें बापूने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

देवीके सामने बकरोंके भोगका बयान दु:खद है। हम अिस सदियोंकी भ्रमणाको क्षणमें दूर नहीं कर सकते। लोग समझ सकें अैसी सेवा जब तक हमने नहीं की है, तब तक हमारी बात सुननेके लिअे अुनके हृदय तैयार नहीं होंगे। बुद्धिका विकास अिससे भी कठिन है। और अहिंसक प्रवृत्तिमात्र कम हृदयस्पर्शी है। हृदयस्पर्श नि:स्वार्थ सेवासे बहुत जल्दी हो सकता है। अिसलिअे आज तो हमें अिन देवियोंको बकरोंका भोग चढ़ानेवालोंमें सेवाकार्य करना है। और मौका मिलनेसे हम अुनका भ्रम दूर करायेंगे। याद रखो कि जो दृश्य तुमने अनपढ़ लोगोंमें देखा वही दृश्य पढ़े हुअे लोगोंमें कलकत्तेमें देखा जाता है — और वहां बहुत बड़े पैमानेमें।

दूसरी घटना भी अुसी प्रकार समझो, अगरचे अितनी दु:खद, अितनी असह्य नहीं है। अुसमें भी अिलाज वही है। मुझे पता नहीं कि कृष्णदास बीज अित्यादि ले गया है कि नहीं। तुम्हारा खत अुसके जानेके बाद मेरे हाथमें आया।

* * *

मगनवाड़ी, वर्धा
ता० १७–९–'३५

बापूके आशीर्वाद

५. बापूजीकी अीश्वर-निष्ठा

बापूजीकी तबीयत खराब थी। मैंने बापूजीको लिखा:

सावली,
६–१०–'३५

परमपूज्य बापूजी,

सुनता हूं आपकी तबीयत दिन पर दिन खराब होती जा रही है। आप पूरा आराम भी नहीं ले पाते हैं। हम बीमार पड़ते हैं तो आप डांटते हैं। आप बीमार पड़ें तो आपको कौन डांटे? आपको पूरा आराम लेकर तबीयत अच्छी रखनी ही चाहिये। नहीं तो मैं आपके साथ झगड़ा करनेवाला हूं। हमको नहीं तो आपको बीमार पड़नेका क्या अधिकार है? मुझे बीच बीचमें बुखार आ जाता है। अिसकी शरम आती है। यहां मच्छर बहुत हैं।

कृपापात्र बलवन्तसिंहके
सादर प्रणाम

बापूजीका अुत्तर आया:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारी बात सच्ची है। मैं कोशिश करूंगा। 'बिगड़ी कौन सुधारे, राम बिन बिगड़ी कौन सुधारे?' देखें रामजी क्या कराते हैं।

वर्धा, १५–१०–'३५

बापूके आशीर्वाद

अिस पत्रको पढ़कर मेरा हृदय गद्‌गद हो गया। बापूजीकी अीश्वर-निष्ठा और नम्रताके सामने मेरा सिर झुक गया। आज भी अिस पत्रको

पढ़कर आंसू रोकनेकी कोशिश कर रहा हूं, लेकिन रोक नहीं पाता। रोनेसे दिल कुछ हलका हो जाता है। अिसलिअे रोना सस्ता पड़ता है।

६. 'हम भक्तनके भक्त हमारे'

१२ दिसम्बर, १९३५ से ८ जनवरी, १९३६ तक नागपुरमें कांग्रेसकी पचासवीं जयन्ती मनाअी जा रही थी। अुसमें खादी-प्रदर्शनीके लिअे मैं सावलीसे बुनकर और कातनेवालोंकी अेक टोली लेकर वहां गया था। अुन दिनों बापूजी बीमार थे और अुनसे मिलने-जुलनेकी मनाही थी। मैंने पूज्य किशोरलालभाअीसे पत्र लिखकर पूछा कि मैं बापूजीके दर्शनके लिअे आ सकता हूं क्या? अुन्होंने मेरा पत्र बापूजीको दिखाया और बापूजीने आनेके लिअे कहा। पूज्य किशोरलालभाअीका पत्र पाकर मैं १–१–'३६ को नागपुरसे वर्धा गया। बापूजी मगनवाड़ीमें मकानकी छत पर रहते थे। मैंने पूज्य महादेवभाअीसे कहा कि मैं बापूजीसे मिलने आया हूं। अुन्होंने रुखाअीसे कहा कि बापूजी तो बीमार हैं और अुनसे मिलने-जुलनेकी मनाही है। मैंने भी कड़ाअीसे कहा कि यह तो मुझे मालूम है। आप तो मेरे आनेकी सूचना मात्र बापूजीको कर दें। अगर वे मुझे नहीं बुलायेंगे तो मैं खुशीसे वापिस चला जाअूंगा। महादेवभाअीके पास बापूजीको खबर दिये सिवा कोअी रास्ता नहीं था। अिसलिअे बेचारे मन मारकर अूपर गये और मेरे आनेकी खबर बापूजीको दी। बापूजीने मुझे तुरंत ही अूपर बुलाया।

बापूजी बिस्तर पर पड़े थे। मैंने जाकर प्रणाम किया। बापूजीने मुस्कराते हुअे प्रेमकी अेक मीठी चपत लगाअी और बोले, "तू आ गया यह अच्छा किया। अितने नजदीक आकर अगर तू मुझसे बिना मिले चला जाता तो पता लगने पर मुझे दुःख होता। तेरा बुनाअीका काम तो ठीक चल रहा है, अैसा तेरे पत्रोंसे पता चलता है। लेकिन तू बार बार बीमार क्यों पड़ता है?" मैंने कहा, "बापूजी, वहां मच्छर बहुत हैं, और भोजनमें भी कुछ अव्यवस्था होती है। बुनाअीका काम अैसा है कि जिसमें कभी कभी पांजन करनेमें अनिश्चित समय चला जाता है और कअी बार बासी रोटी खानी पड़ती है।" बापूजीने कहा, "यह तुम्हारी भूल है। तबीयत अच्छी रखनेके लिअे मच्छरदानीका अुपयोग करना चाहिये और भोजन तो समय पर ताजा ही खाना चाहिये। बासी तो कभी नहीं। गीतामाता कहती है कि सात्त्विक भोजन सात्त्विक पुरुषका आहार है। देखो १७वें अध्यायका ८वां श्लोक। अच्छा यह तो बताओ

कि तुम कुनैन भी लेते हो या नहीं?" मैंने कहा, "बापूजी, कुनैनसे मुझे नींद नहीं आती और कान बहरे हो जाते हैं, अिसलिअे मैं अुससे बचता हूं।" बापूजी बोले, "कुनैनके बुरे असरको मारनेका अेक तरीका है। वह मैं तुमको समझा देता हूं और अेक बार तुम्हारे सामने करके बता देता हूं। फिर अिसी तरह लोगे तो कुनैनका बुरा असर नहीं होगा।" पासमें ही प्रभावतीबहन बैठी थीं। बापूजीने अुनसे कहा, "प्रभा, जा सोडा-बाओी-कार्ब, नीबू और पांच ग्रेन कुनैन ले आ और अिसको मेरे सामने बनाकर पिला दे।" प्रभावतीबहन तुरंत ही सब सामान ले आओीं। बापूजीने कहा, "अच्छा, प्यालेमें पहले नीबू निचोड़ो और अुसमें पांच ग्रेन कुनैन डालो। अुसीमें सोडा डालो और मिलाकर अिसको पिला दो। चार-पांच खुराक कुनैन और सोडा अिसके साथ दे दो।" प्रभावतीबहनने तुरंत ही कुनैन तैयार करके मुझे पिला दी और मेरे साथमें भी दे दी।

बापूजी बोले, "देखो, सेवकके लिअे बीमार पड़ना गुनाह है। तुम्हारे मनमें आ सकता है कि बापू मुझे अुपदेश करता है और खुद बीमार पड़ा है। मैं भी अिस गुनाहका बचाव नहीं कर सकता हूं। हम जब तक प्रकृतिमाताके नियमोंका अुल्लंघन नहीं करते हैं, तब तक बीमार पड़ ही नहीं सकते हैं। यह ध्रुव सत्य है। कहीं न कहीं हमसे भूल होती है, अुसकी सजा देनेके लिअे कहो या हमको सावधान करनेके लिअे कहो, बीमारीके रूपमें प्रकृतिदेवीका संदेशा हमको मिलता है। तुम मच्छरदानी नहीं लगाते हो यह संकोच मैं समझ सकता हूं। क्योंकि अभी हम खादीकी मच्छरदानी जैसी चाहिये वैसी नहीं बना सके हैं। रामदाससे कहो कि वह अिसका संशोधन करे। कृष्णदास भी कुछ सोच रहा है। अकसर मच्छर सुबह-शाम काटते हैं। अुस समय खुले बदन पर मिट्टीका तेल लगा लिया करो। और जब तक मच्छरदानी न मिल सके तब तक रातको सोते समय भी मुंह पर और खुले बदन पर तेल लगा लिया करो। बिलकुल हलका-सा लगानेसे कोओी नुकसान नहीं होता है। आसपास जो पानीके छोटे छोटे खड्डे हों अुनमें थोड़ा थोड़ा मिट्टीका तेल डालनेसे मच्छर पैदा नहीं होते हैं। घास-फूसकी सफाओी तो करनी ही चाहिये। किसी प्रकारकी गन्दगी होती है तभी अिस प्रकारके अुपद्रव पैदा होते हैं। हमें तो बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकारकी सफाओीकी साधना करनी है।"

बापूजी बोलते ही जा रहे थे और मैं घबरा रहा था कि महादेवभाओी और दूसरे लोग मेरे अूपर नाराज हो रहे होंगे कि मैं बापूजीका अितना समय क्यों ले रहा हूं। सचमुच बापूजीका समय लेनेकी मेरी बिलकुल अिच्छा नहीं थी और मैं वहांसे अुठनेके लिअे अुतावला हो रहा था। लेकिन मैं क्या करता? तो भी मैंने साहस किया और बोला, "बापूजी, मैं सब समझ गया हूं। अब आपसे अधिक बुलानेकी अिच्छा नहीं है। मैं तो सिर्फ आपको देखने आया था।" मैं झटसे अुठा और बापूजीके चरणोंमें प्रणाम किया। बापूजीने अेक चपत लगाओी और बोले, "अगर सचमुच समझ गया है तो अब मेरे पास बीमारीका समाचार नहीं आना चाहिये।" मैंने कहा, "ठीक है।" मैंने बापूजीकी आंखोंकी तरफ देखा तो अुनके चेहरे पर मुसकराहट और करुणामय प्रेमकी अेक अद्भुत रेखा चमक रही थी। मैं झटसे नीचे अुतर आया। बापूके अुस प्रेममें मैं अपने आपको भूला-सा अनुभव करता हुआ नागपुर आया और मैंने बीमार न पड़नेकी पूरी पूरी सावधानी रखी। गीताके सत्रहवें अध्यायका आठवां श्लोक तो मेरे लिअे आशीर्वाद-रूप सिद्ध हुआ। मैं गीताजीकी दूसरी सिखावन मानूं या न मानूं, परंतु अुस श्लोक पर पूरा पूरा अमल करता हूं। क्योंकि "आयुः-सत्व-बलारोग्य-सुख-प्रीति-विवर्द्धनाः। 'रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।" किसे प्रिय न होंगे?

१०

स्नेहनिधि बड़े भाओी पू० किशोरलालभाओी

सावलीमें रहते समय मेरा पूज्य बापूजीके साथका पत्रव्यवहार पूज्य किशोरलालभाओी ही किया करते थे और मैं भी अुनको बहुतसे पत्र लिखा करता था। यहां पू० किशोरलालभाओीका अत्यंत अल्प-सा परिचय कराये बिना तथा अुनके कुछ बहुमूल्य पत्रोंको प्रकाशमें लाये बिना आगे बढ़ना अशक्य-सा लगता है।

बापूजी तो मेरे बापू थे ही, लेकिन पू० किशोरलालभाओीने मेरे आश्रम-जीवनमें बड़े भाओीका स्थान ले लिया था। जिस प्रकार मैंने बापूजीको सताया और बापूजीने मेरा दुलार रखा, अुसी प्रकार बड़े भाओीका जो फर्ज

होता है अुसे किशोरलालभाअीने अंतकी घड़ी तक निभाया। और मेरी भी अुनके प्रति वैसी ही श्रद्धा बनी रही जैसी कि छोटे भाअीकी बड़े भाअीके प्रति होती है। मैंने अुनको बहुत नजदीकसे देखा। अुनके जैसी सहनशीलता, अुनके जैसा धीरज, अुनके जैसा प्रेमल-स्वभाव और शारीरिक पीड़ा होते हुअे भी अुनके जैसी प्रसन्नचित्तता मैंने अपने जीवनमें अन्य किसीमें नहीं देखी। जब १९३४ में पू० नाथजीने मेरा परिचय किशोरलालभाअीसे कराया था, तब कहा था कि देखो, अुस घरमें किशोरलालभाअी रहते हैं। तुम बीच बीचमें अुनसे मिलते रहना। लेकिन अेक बातका ध्यान रखना। अुनकी तबीयत कमजोर है और अुनका स्वभाव अैसा है कि कोअी अुनके पास चला जाय तो अुसके साथ बातें करनेमें वे अपने स्वास्थ्यको भूल जाते हैं और जब तक मिलनेवाला चला न जाय तब तक बातें करते ही रहते हैं। मैंने पू० नाथजीकी अिस सूचनाका हमेशा ध्यान रखा। लेकिन कुछ समय बाद मैं अुनके साथ अितना घुलमिल गया कि मौका आने पर वे मेरे और बापूजीके बीचमें पड़ते थे। यहां तक कि मैंने भी अुनको बीचमें डालनेका अपना अधिकार-सा मान रखा था। मैं अुनके साथ मजाक तक करनेमें नहीं चूकता था और अुनका भी स्वभाव अैसा ही था। अेक बार अुन्होंने मेरे खराब अक्षर सुधारनेकी सूचना बड़े मनोरंजक ढंगसे की, तो मैंने लिखा कि आपकी तरह मैं सफेदको काला करना भले न जानता होअूं, लेकिन सूखी और खाली जमीनको हरीभरी करनेमें मेरा कुदाल काफ़ी सुन्दर रेखायें खींचना जानता है। आपकी काली रेखाओंके बिना मेरा काम चल सकता है, लेकिन मेरी रेखाओंके बिना आप भूखे ही रह जायेंगे।

विवेक और स्नेहके तो वे भंडार थे। वे अत्यन्त कठोर सत्य कह सकते थे, लेकिन 'कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी' — अुनका वचन सत्य, प्रिय और विचारयुक्त होता था। किसी साथीको कितना भी कठोर सत्य स्पष्ट कहनेकी अुनमें हिम्मत थी। अुनको जो लगता था अुसे मनमें न रखकर सामनेवालेको वे सुना देते थे, लेकिन अुसके प्रति स्नेहमें जरा भी फर्क नहीं आने देते थे। जिन्हें अुनका परिचय हुआ था वे सब अैसा ही अनुभव करते थे। वे जितने विचारक और गंभीर थे, अुतने ही विनोदी भी थे। अगर मैं अुनके साथके मधुर संस्मरण लिखने बैठूं तो जैसी पू० नरहरिभाअीने बहुत मेहनतके बाद 'श्रेयार्थीकी साधना' लिखी है, वैसी अेक-दो पुस्तकें सहजमें लिख सकता हूं।

लेकिन अुनका और मेरा सम्बन्ध अितना घनिष्ठ था कि अुनकी मृत्यु पर सिवा पू० गोमतीबहनको अेक तार देनेके मेरी कलम ही अुनके बारेमें नहीं अुठी। तारमें मैंने लिखा था: 'पूज्य गोमतीबहन, भाअीके स्वर्गवासके समाचार सुने। अन्त समयमें अुनके दर्शन और सेवासे वंचित रहा, अिसका मुझे दुःख रह गया। भाअी तो जीवन्मुक्त थे। हंसते-हंसते गये होंगे — बलवन्तसिंह।' अिससे भी बड़े दुःखकी बात यह थी कि बेचारी गोमतीबहन भी अंतिम क्षणोंमें अुनकी सेवा और दर्शनसे वंचित रह गअीं। वे किसी कामसे घरके अन्दर गअीं, अितनेमें ही किशोरलालभाअीके प्राणपखेरू अुड़ गये।

बापूजीके बाद वे ही हमारी ढाल थे। वे भी जब अुठ गये तो रोनेसे क्या लाभ? लेकिन जब मैं बापूजीके साथके संस्मरण लिखने बैठ गया हूं और कलमने अिंजनकी तरह अपनी पटरी पकड़ ली है, तो सबसे बड़े जंकशन पर किशोरलालभाअीके मधुर संस्मरणरूपी थोड़ासा पानी लिये बिना अिंजन आगे कैसे चल सकता है? अुनके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ और जो चर्चाअें हुअीं, अगर अुन सबका संग्रह मैंने संभालकर रखा होता तो अितनी बड़ी पूंजी बन जाती कि अुससे मैं अनेकोंका भला कर सकता था। लेकिन थोड़ेसे कण कंजूसकी तरह मैंने अपनी गुदड़ीमें छिपाकर रख ही छोड़े थे। अगर मैं आज भी अुन्हें छिपे ही रखकर चला जाअूं तो कंजूसीकी हद हो जायगी और कितने ही लोग भूखे रहकर मुझे गालियां देंगे। सबसे अधिक गाली तो पू० गोमतीबहन ही देंगी; अुनसे भी छिपाकर रखनेका मैंने अति-लोभ किया है। जहां बापूजीके परिवारमें मेरे जैसे क्षणभरमें आपेसे बाहर हो जानेवाले लोग थे, वहां किशोरलालभाअी जैसे हिमालयकी तरह अचल और शीतल रक्षक भी थे।

सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती।
सरल सुभाअु सबही सन प्रीती।।

शंभुके संघमें जहां वीरभद्र थे वहां गणेशजी भी तो जरूरी थे। किशोर-लालभाअीका स्वभाव जहां आकाशकी तरह खुला था, वहां अपनी व्यक्तिगत सुविधा और सेवा लेनेमें संकोची भी था। मर्यादाका पालन वे कड़ाअीसे करते थे। अेक बार जमनालालजीने अुनके सामने गोमतीबहनको अिलाजके लिअे वियेना भेजनेकी बात निकाली, तो अुन्होंने कहा कि जो सुविधा मैं अपने व्यक्तिगत जीवनमें प्राप्त नहीं कर सकता, अुसका लाभ सार्वजनिक जीवनमें

अुठानेका मुझे क्या अधिकार है? जमनालालजीका अुनके प्रति अगाध स्नेह था। वे अपनी बात कितने प्रेम और आग्रहके साथ रखनेकी योग्यता रखते थे अिसका सबको अनुभव है। वियेना जानेकी बात मेरे सामने ही चल रही थी और मैं दोनोंके मुंहकी तरफ देख रहा था। मुझे लगता था कि ये अगर कबूल कर लें तो कितना अच्छा हो। प्रर किशोरलालभाओी बोले, "देखिये, अगर मैं वकालत करता तो अितना पैसा नहीं कमा सकता था कि गोमतीको वियेना ले जाकर अिलाज करा पाता। तो आज मैं कैसे भेज सकता हूं? आपका प्रेम और भावना मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अपनी मर्यादाका भी तो भान है। आप किस किसको वियेना भेजेंगे?" बेचारे जमनालालजी चुप हो गये।

अुनका धीरज और सहनशीलता तो गजबकी थी। यों तो वे हमेशा बीमार ही रहते थे, लेकिन अुनकी बीमारीका अेक दृश्य मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। १९३८ की बात है। हरिपुरामें कांग्रेस हो रही थी। अुसमें मैं भी गया था। बापूजीके कैम्पमें ही ठहरा था। किशोरलालभाओीको बुखार चढ़ा। बुखार १०४ डिग्री था। अुधर गोमतीबहनको भी बुखार चढ़ गया। अब कौन किसकी सेवा करे? दोनोंके सेवक और डॉक्टर तो बापूजी ही थे। वे दोनोंकी संभाल करते थे। दोनोंकी खाटें अेक ही तंबूमें थीं। दोनों अेक-दूसरेकी तरफ देखकर हंसते थे। मैं सोचता था कि दोनों जानेकी तैयारी कर रहे हैं तो भी कितने प्रसन्न हैं। हरिपुराकी हवा अितनी खराब हो गयी थी कि वहां १०-१५ लोग मर चुके थे। साबरमती आश्रमके पं० नारायण मोरेश्वर खरे वहीं चल बसे थे। बापूजीको डर हो गया था कि कहीं अिनको भी वे न खो दें। अिसलिअे दोनोंको अुन्होंने बारडोली भेज दिया। अच्छे हो जाने पर मैंने अेक रोज किशोरलालभाओीसे पूछा कि आप बीमारीमें भी अितने कैसे हंस लेते हैं? वे बोले, "देखो, जहां चमड़ा कमाया जाता है वहां अगर तुम जाते हो तो कैसा लगता है? तुम नाक बन्द क्यों करते हो? लेकिन चमड़ा कमानेवालेसे पूछो। वह क्या कहता है? अिसी प्रकार बीमारी तो मेरी साथिन है। अेक रोज थोड़ी अधिक हुआी तो क्या और थोड़ी कम हुआी तो क्या?" यह थी अुनकी सहनशीलता और धीरजकी पराकाष्ठा।

अुनके शरीरमें कितनी पीड़ा होती रहती थी, अिसका पता अुनके ही पत्रसे चलता है। मैंने अुनको लिखा था कि आपको शारीरिक सेवा लेनेमें

संकोच नहीं करना चाहिये। तब अुन्होंने लिखा, "देखो, मेरे शरीरको जितना दबानेकी जरूरत है अुतना दबानेवाला मुझे कोअी नहीं मिला, और न मिलनेकी आशा है। तो फिर थोड़ासा अुपकार लेकर ही मैं क्या करूं?" यह अुनका अंतिम पत्र था। जब अुनका स्वर्गवास हुआ तब मैं राजस्थानमें बांसवाड़ा जिलेके अकाल-पीड़ित क्षेत्रोंमें घूम रहा था और यह सोच रहा था कि बहुतसे समाचार अेकसाथ ही अुन्हें लिखूंगा। अितनेमें अेकाअेक मुझे अुनके चले जानेका समाचार मिला और मेरे दिलमें यह दर्द रह गया कि मैंने अुनको पत्र लिखनेमें देर कर दी।

अेक बार मैं कुछ नाराज-सा हो गया तो वे बोले, "देखो, अपने सुरेन्द्र और तुमको मैं अिसलिअे कुछ सुना देता हूं कि तुम लोग मेरी बात सुनते हो।" अुस दिन मुझे पता चला कि अुनके दिलमें मेरे प्रति कितना स्नेह था।

अब मैं अुनके कुछ कीमती पत्रोंके नमूने पूर्वापर संदर्भके साथ यहां पेश करता हूं।

१

सावलीसे मैंने बापूजी और किशोरलालभाअीको पत्र लिखे। अक्षर तो खराब थे ही। सावलीमें दूध और घी मिलनेमें कठिनाअी थी। सागभाजी भी नहीं मिलती थी। दातुनके लिअे नीमके वृक्ष भी नजर नहीं आते थे। वहांका पानी भी खराब था। मैंने ५ रुपये मासिकमें गुजारा चलानेका भी लिखा था। अिस पर अुनका विवेचनापूर्ण पत्र आया।

वर्धा, ८-७-'३५

भाअी श्री बलवन्तसिंहजी,

मेरा पहला पत्र मिला था न?

पू० बापूका कलका पत्र मिला होगा। साथ मेरी चिट्ठी भी। पू० बापू आपका सब पत्र ठीक निकाल न सके थे। अिससे अुन्होंने वह मेरे पास फिरसे सुना। बाद अपने पत्रकी पूर्तिमें यह पत्र लिखनेकी आज्ञा दी है।

अिधर-अुधर तलाश करनेसे दूधकी व्यवस्था हो जाना संभव है। कुछ श्रम ले करके अुसको प्राप्त करनेका प्रयत्न करें। पर्याप्त

दूध मिल जाय, तो अुसका दही बना कर अुसमें से मक्खन आप ही तैयार कर सकेंगे। मक्खनका घी बनानेकी आवश्यकता नहीं है। ज्यादा दिन मक्खन रह नहीं सकता अिससे हम अुसका घीमें परिवर्तन करते हैं। परन्तु ताजे मक्खनकी अपेक्षा घीके गुण कम ही हैं। मक्खनमें जो प्राणतत्त्व रहते हैं, वे घीमें नहीं पाये जाते। अैसा भी हो सकता है कि रोज तो दूध खायें और हफ्तेमें अेक या दो दिन दूधकी छाछ कर डालें और मक्खन तैयार करें। थोड़ासा ज्यादा दूध मिल जाय तो अुस दिन मक्खन निकाल कर केवल छाछका ही अुपयोग करें। और अिस सब झंझटमें से बच सकते हैं, यदि काफी दूध मिला लें और अलग मक्खनकी अिच्छा ही न रखें। दूधमें वह प्राप्त हो ही जायगा।

अिन दिनोंमें घासके बीचमें अनेक प्रकारकी भाजियां अपने-आप पैदा होती हैं। अुनमें खाने लायक अनेक पत्तियां रहती हैं। अुनमें ढूंढ़ी जाय तो आपको अवश्य भाजी प्राप्त होगी। देहातियोंने अब तक भाजीकी आवश्यकता ही कम समझी है। वे मानते हैं कि भाजीकी आवश्यकता धनिकोंको ही रहती है। वह आवश्यक आहार नहीं है। अिसके सिवा जहां पर जो भाजी बेची जाती हो अुसीको वे भाजी समझते हैं। अपने-आप जंगलमें अुगती हो अुसे नहीं जानते। आप खोजेंगे तो जरूर मिलेगी।

नीमके वृक्ष वहां नहीं पाये जाते, यह जानकर कुछ आश्चर्य होता है। सामान्यतः हिन्दुस्तानमें सब जगह नीम होता है।

पानी चाहे कितना ही गंदा हो, अुसे २०–२५ मिनट अुबालकर, छानकर अुपयोगमें लाया जाय तो अुसमें जन्तु नहीं रहने पाते। बरसात आती हो तब अेक बरतनके अूपर शीशीमें तेल भरनेके लिअे जैसा नलीदार फूल होता है वैसा फूल रखकर बरसातमें खुलेमें छोड़ दी जाय तो पीनेके लिअे स्वच्छ पानी मिल जाना संभव है। लाल दवाअीका अेकाध कण पानीमें छोड़ दिया जाय तो वह पानी जन्तुहीन हो जायगा। और निर्मलीका अेक छोटासा टुकड़ा पानीमें थोड़ी देर हिलाया जाय तो सब मैल जल्दी नीचे बैठ जायगा। फिर अूपरसे पानी दूसरे बरतनमें निकाल लिया जाय।

अिनमें से कअी सूचनाअें मेरी हैं। कुछ पू० बापूजीकी हैं। अिन्हें पढ़कर कदाचित् आप यह महसूस करें कि अितना सब मैं करूं कौनसे समय? परन्तु संभव है धीरे धीरे यह सब व्यवस्था हो सकती है।

पू० बापूजीने लिखाया है कि स्वास्थ्यको बिगाड़कर पांच रुपयेकी मर्यादामें रहनेका आग्रह न रखें।

आप प्रसन्न होंगे।

आपका
किशोरलाल

२

मैंने अपने जीवनमें पहली बार सावलीके साप्ताहिक बाजारमें जितने अर्धनग्न स्त्री-पुरुषोंको देखा, अुतनोंको अेक ही जगह पर अितनी संख्यामें पहले कभी नहीं देखा था। वहांकी गरीबी, अपनी कठिनाअियां और संतोषका समाचार मैंने किशोरलालभाअीको लिखा था। अुनका अुत्तर आया:

वर्धा, २१–७–'३५

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र परसों मिला। भाअी दौलत आज सावली जा रहे हैं। अिससे अुनके साथ ही पत्र भेज रहा हूं। पू० बापूजीको आपका पत्र पढ़कर सुनाया। वे कदाचित् आज ही अुत्तर न दे सकेंगे।

आपका काम ठीक चल रहा है और आपको वहां संतोष है, यह जानकर खुशी हुअी। यहांकी अपेक्षा वहां जीवनकी कठिनाअियां ज्यादा हैं। परन्तु मानसिक अुत्साहके कारण वे आपत्तिरूप नहीं मालूम होंगी।

वहांकी गरीबीका वर्णन पढ़कर दुःख होता है। आजकल पू० बापूजी भी अिसीका विचार करते हैं। शीघ्र ही वहांकी कार्यप्रणालीमें परिवर्तन होनेका संभव है। जिसको अत्यधिक लिखना पड़ता है अेवं जिसको क्वचित् ही लिखना पड़ता है — अिन दोनोंके हस्ताक्षर खराब हुआ करते हैं। पहले मनुष्यका दिमाग अितना जोरसे चलता रहता है कि हाथको बहुत वेगसे चलाना पड़ता है। अिससे हस्ताक्षर बिगड़ते हैं। दूसरेको अक्षर लिखनेकी आदत न होनेके कारण आकृति

बिगड़ जाती है। स्याहीसे रोज थोड़ा थोड़ा लिखनेका अभ्यास करनेसे अक्षर सुधर सकते हैं। अभ्यास करनेमें अितनी सावधानियां रखनी चाहिये: (१) लकीरोंवाले कागज पर ही लिखना। (२) छापे हुअे नमूनेके अनुसार ठीक आकृति निकालनेका प्रयत्न करना। (३) लपेटवाले अक्षर, अेक-दूसरेसे जोड़े हुअे अक्षरोंको कलम अुठाये बिना लिखनेका आग्रह न करना। हाथको मुहावरा हो जाने पर लपेट अपने-आप मिल जाती है। (४) लपेट सीखनेमें सुन्दर अक्षर लिखनेवालोंके हस्ताक्षरों पर ध्यान देना चाहिये। (५) आपको कदाचित् मालूम न होगा कि हस्ताक्षर और चरित्रका सम्बन्ध है। हस्ताक्षर परसे मनुष्यके चरित्र और स्वभावको पहचाना जा सकता है। अिससे हमारे मन और बुद्धिकी व्यवस्था और अव्यवस्था हमारे हस्ताक्षरोंमें भिन्न भिन्न तरहसे अुठती है।

श्री सुरेन्द्रजी, पूज्य नाथजी और श्री गंगाबहनके पत्र २–३ दिनमें ही आये हैं। सब आपको याद करते हैं और खबर पूछते हैं। सुरेन्द्रजी आचार्य या पंडितजी बननेके रास्ते पर हैं।

मैं अभी तक बहुत परेशान नहीं हूं। गोमती भी साधारण ठीक है। जल्दीके सबबसे आज न लिखेगी। आपको प्रणाम लिखाती है।

आपका
किशोरलाल

३

मैंने अपने पत्रमें कअी बातें लिखी थीं, जिनका अुत्तर अुन्होंने प्रथम दिया था। मुझे बापूजीका पत्र मिलनेमें देर हुअी थी। अबकी बार मैंने अक्षर सुधार कर लिखनेकी कोशिश की थी। खराब अक्षरोंका कारण भी बताया था। दूसरे, मैंने लिखा था कि:

अिन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवांभसि।।*

---

* विषयोंमें भटकनेवाली अिन्द्रियोंके पीछे जिसका मन दौड़ता है, अुसका मन वायु जैसे नौकाको जलमें खींच ले जाता है वैसे ही अुसकी बुद्धिको जहां चाहे वहां खींच ले जाता है।

गीताके अिस श्लोकसे मेरा अनुभव अुलटा है। अशुभसे शुभकी तरफ खींचनेवाली शक्ति अधिक बलवान है। तीसरे, जिस बुनकरके घरमें मैं बुनाअी सीखता था अुसके घरकी मोरी गंदी थी। स्त्रियां खुलेमें बैठकर स्नान करती थीं। मैंने सफाअी करके घास-फूसका स्नानघर बना दिया था। चौथे, सावलीमें कुष्ठरोग बहुत ही फैला हुआ था। अुसका वर्णन लिखा था और बचनेका अुपाय पूछा था। पांचवें, मुझे वहांके देहातियोंका सहज और स्वाभाविक जीवन प्रिय लगता था। छठे, सावलीके खादी-अुत्पत्ति केन्द्रके कुअेंके पास मैंने जो भाजी अुगाअी थी वह बापूजीके पास भेजी थी। अिसके अुत्तरमें किशोरलालभाअीने लिखा:

वर्धा, १०–८–'३५

भाअी श्री बलवन्तसिंहजी,

सप्रेम प्रणाम। आपका ता० ५ का पत्र मिला। पू० बापूजीका अेक भी पत्र आपको आज तक नहीं मिला यह आश्चर्यकी बात है। पू० बापूजीने मेरे सामने ही आपको अेक विस्तृत पत्र लिखा था, अैसा मुझे और अुन्हें दोनोंको याद आता है। हां, अभी थोड़े दिनोंमें आपको अुन्होंने पत्र नहीं लिखा है। मेरे खयालसे तो आपका जो पिछला पत्र था वह अुन्हींके पत्रके अुत्तरमें था। खैर। यह पत्र अुनका और मेरा दोनोंका आप समझियेगा।

अिस समयके आपके हस्ताक्षर पढ़नेमें कुछ भी तकलीफ नहीं हुअी। पू० बापूजीने स्वयं ही सब पत्र पढ़ लिया। लिखनेका कम मुहावरा होनेसे अक्षरोंमें सुरूपता और लिखनेकी गतिमें शीघ्रता कम रहती है यह बात ठीक है। परन्तु सुरूपता और सुवाच्यता ये भिन्न गुण हैं। अिससे सुरूप न हों तो भी सुवाच्य अक्षर निकाले जा सकते हैं, यदि अक्षरोंकी आकृतिका अच्छा परिचय हो।

लिखनेमें शीघ्रता अभ्याससे ही आती है, तो भी शीघ्र लेखनसे अक्षर बहुत बिगड़ भी जाते हैं। अिससे सुवाच्य अक्षर लिखते लिखते जितनी शीघ्रता प्राप्त हो अुतनीसे ही संतोष रखना चाहिये।

परन्तु आप लिखते हैं कि दिमाग जोरसे चलता है और हाथ पीछे रह जाता है। यद्यपि अनेक लोग अिस प्रकार अपना अनुभव बतलाते हैं, पर पू० बापूजी मानते हैं कि अिसमें दोष हाथका नहीं है,

दिमागका ही है। दूसरेको लिखाते समय यदि वह धीरे धीरे काम कर सकता है, विचारोंको स्थगित रख सकता है और लिखनेवालेकी गतिके साथ चल सकता है, तो अपने हाथके साथ भी चलनेका अुसको सुलभ होना चाहिये। अिस पर हम प्रयत्न नहीं करते, अिसीसे यह भ्रान्ति अुत्पन्न होती है कि अपना हाथ अपने दिमागसे कुछ पीछे ही रह जाता है। और यही कारण है कि विचारोंमें अव्यवस्था अुत्पन्न होती है। अच्छे लेखकोंमें भी यह दोष प्रायः दिखायी देता है, और यही कारण है कि अुन्हें अपने लेखोंमें बारंबार संशोधन करना पड़ता है।

अशुभकी अपेक्षा शुभकी तरफ खींचनेवाली शक्ति अधिक बलवान है, यह आपका अनुभव बहुत हर्षप्रद है। यह अनुभवजन्य श्रद्धा ही आपका शुभ करती रहेगी। बिना कोअी बड़े अुदात्त और बलवान संकल्पके यह अनुभव होना दुष्कर है। आप भाग्यशाली हैं। सामान्य जनताका अनुभव वही रहता है जो कि गीतामें लिखा है। और यह भी तो गीतामें ही लिखा है न:

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितो हि सः।।
शीघ्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्ति निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।*

पू० बापूजी आपके पत्रसे बहुत प्रसन्न हुअे। आपके पत्रका कुछ अंश मैं कदाचित् 'हरिजनसेवक' में दूंगा।

आपने जिस तरह अपने गुरुकी फीस देनेका मार्ग निकाला है वह अनुकरणीय है। गुरुके घरका पानी भरना और लकड़ी फाड़ना अितना तो पुराने जमानेमें भी कहा गया था। आपने अुसकी मोरी साफ करना वगैरा सेवा ठीक ही की है। आपको धन्यवाद है।

---

* भारी दुराचारी भी यदि अनन्य भावसे मुझे भजे तो अुसे साधु हुआ ही मानना चाहिये। क्योंकि अब अुसका संकल्प अच्छा है। अुसकी अनन्य भक्ति दुराचारको शान्त कर देती है।

वह तुरन्त धर्मात्मा हो जाता है और निरन्तर शांतिको पाता है। हे कौन्तेय, तू निश्चयपूर्वक जान कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता।

और मांत्रिकके ढोंगको भी आपने अच्छी तरहसे सिद्ध कर दिया।

महारोगका प्रश्न बड़ा विकट है। चारों ओर वह महत्त्वका बन गया है। अुसको केवल खानगी संस्थायें तय नहीं कर सकतीं। न केवल सरकारी संस्थायें ही कर सकती हैं। दोनोंका और साथमें जनताका सहयोग होना आवश्यक है।

फिलहाल तो बापूजीकी ओरसे अितनी ही सूचना दे सकता हूं:

(१) महारोगियोंको दूसरोंके संसर्गमें न आनेके लिअे सतत समझाते रहना चाहिये। कुछ बुरा भी मान लें तो भी संकोच छोड़कर अुन्हें दूर रहनेका अभ्यास करा देना चाहिये।

(२) लोगोंको भी समझाना चाहिये कि वे खुदको और अपने बच्चोंको अुनके संस्पर्शसे बचाकर रखें।

(३) संयोग अुनके और समाजके लिअे हानिकारक है, यह अुन्हें बारंबार समझाया जाय। यद्यपि यह बात समझानेसे ही अमलमें लायी जा सके अितनी आसान नहीं है। वीर्यको दग्धबीज करनेका अेक ऑपरेशन होता है। परन्तु अिससे केवल संततिकी अुत्पत्ति अटकायी जा सकती है। दूसरे व्यक्तिको रोगी होनेसे बचाया नहीं जा सकता। और फिर अैसा मनुष्य प्रायः अधिक कामातुर बनता है, अिससे अनेक स्त्रियोंको अुससे धोखा होनेका डर रहता है। अिससे अिस अुपाय पर विचार नहीं बैठता। यदि वैसे मनुष्य अपनी खुशीसे नपुंसक बनें तो अलग बात है। परन्तु अैसा करनेके लिअे तैयार हो अैसा व्यक्ति मिलना कठिन है।

(४) नीमके तेलकी मालिश अिन रोगियोंके लिअे अच्छी है, अैसा वैद्यक-ग्रन्थोंमें कहा जाता है। पू० बापूजीको अिस विषयमें कोअी साध्य कारण तो मालूम नहीं है। परन्तु अिसमें कोअी दोष नहीं हो सकता अितना जरूर है।

(५) चोल मोगरेके तेलके अिंजेक्शन यह आयुर्वेदिक अुपाय है। अिसकी प्रशंसा बहुत सुनी गअी है। यूरोपीय डॉक्टर अिसीको आज अच्छेसे अच्छा अुपाय बता रहे हैं। अिससे रोग बिलकुल अच्छा हो जाता है, यह तो नहीं कहा जा सकता। लेकिन रुक जाता है।

और जिसने यह अुपाय लिया है अुसके द्वारा रोग फैलनेका संभव कम होता है। अितने वे जन्तु निर्बल हो जाते हैं। प्रारंभिक दशामें रोग-निवारण होना भी संभव है। ये अिंजेक्शन सरकारी अस्पतालोंमें कहीं कहीं दिये जाते हैं। वर्धा जिलेमें अिसके लिअे कुछ प्रबन्ध है। वहांके सरकारी दवाखानेमें तपास करनी चाहिये। अिसके अतिरिक्त पू० बापूजीने डॉ० महोदयको अिस रोगका विशेष अध्ययन करनेके लिअे प्रेरणा की है। अुनके द्वारा स्थानिक कार्यकरोंको अिसकी जानकारी देनेका प्रबन्ध, होनेकी आशा है।

(६) कार्यकरोंको अपने शरीरको संसर्गसे अवश्य बचा लेना चाहिये। अिसके लिअे बापूजीने निम्न अुपाय बताये हैं:

(क) महारोगियोंके स्पर्शसे बचे रहें।

(ख) स्नानके पानीमें 'कान्डीका फुलअिन' नामक जो औषधि आती है अुसके कुछ चम्मच डाल दिये जायें। गुलाब जैसा पानीका रंग हो अुतनी डालना आवश्यक है। अुस पानीसे स्नान किया जाय।

(ग) सूतको गंधकके धुअेंसे शुद्ध करके फिर छुआ जाय। अेक चलनीमें सूत रखकर अुसको अेक बरतन पर रख देना चाहिये और अूपरसे ढांक देना चाहिये। बरतनके अन्दर थोड़ासा गंधक जलाना चाहिये और अुसका धुआं अच्छी तरहसे सूतमें फैलने देना चाहिये। वह सूत फिर जन्तुहीन हो जायगा। अिसके अतिरिक्त कार्बोलिक अेसिड अथवा मरक्यूरिक परक्लोराअिड नामकी दवाओंकी पिचकारीसे फुंकारनेसे भी जंतु मारे जा सकते हैं।

(घ) और अंतमें हमारा रक्त शुद्ध रखनेकी हर तरहसे कोशिश करनी चाहिये। शुद्ध रक्तमें जन्तुनाश करनेकी शक्ति रहती है।

आश्रमकी अपेक्षा वहांका वायुमंडल आपको अधिक सात्त्विक और शुद्ध मालूम हुआ अिसमें आश्चर्य नहीं है। वहां जो अच्छी या बुरी बातें हैं वे स्वाभाविक हैं। अच्छी बातको विशेष अच्छी बनानेका कृत्रिम अुपाय नहीं किया जाता, न बुरी बातको ढांकनेका। सत्य बोलनेवाला स्वभावसे सत्य बोलता है। असत्य बोलता हो तो बिना संकोच असत्य बोलता है। आश्रममें अच्छी बातें भी हों तो वे प्रयत्नपूर्वक हैं। बुरी बातें न हों तो भी प्रयत्नसे हैं। यह जो

निष्कपट — नैसर्गिक — जीवन है वह आपको आनन्द दे रहा है। जब तक यही आपका अभिप्राय रहे तब तक अुसमें से आपको लाभ ही मिलता रहेगा।

आपकी भाजी तो लूणीकी ही जात है। पू० बापूजीने अुसका भोजन किया।

पू० नाथजीकी तबीयत अभी अच्छी नहीं है। पैरका दर्द कष्ट दे रहा है। मैंने यहां आनेके लिअे प्रार्थना की है, परन्तु वे अिच्छा नहीं बता रहे हैं।

सुरेन्द्रजीका बोरियावीमें ठीक चल रहा है। अुन्हें संतोष है। गंगाबहन भी अपने कार्यसे संतुष्ट हैं। रमणीकलालभाअीको अभी पूर्ण स्वास्थ्य नहीं प्राप्त हुआ है, पर तो भी पहलेसे कुछ ठीक हैं।

गोकुलभाअी आपको हरअेक पत्रमें याद किया करते हैं।

अब और कामके कारण यहां पर ही बन्द करता हूं। कुछ रह गया हो तो फिर दूसरे समय लिखूंगा।

आपका सप्रेम
किशोरलाल

पुन: — आपने जिस पुस्तकके विषयमें लिखा है वह अब तक नहीं मिली है। शायद श्री दातार देना भूल गये हों या लाना भूल गये हों। गांधी-सेवा-संघका वार्षिक अधिवेशन आगामी मार्चमें सावलीमें ही रखनेका अिरादा है। तब आपका केन्द्र सब लोग अच्छी तरह देख सकेंगे।

४

सावलीमें अेक त्यौहारके अवसर पर सब लोग अपने बकरे देवके सामने खड़े करके अुनकी पूजा करते, अुनका वध करते और जंगलमें करीब करीब सारा गांव मांसाहारका वन-भोजन करता था। अिसका रोमांचकारी वर्णन मैंने पू० बापूजी और किशोरलालभाअीको लिखा था। और भी प्रश्न पूछे थे। अुनके जवाबमें अुन्होंने पत्र लिखा। बापूजीने भी लिखा था, जो पीछे पृष्ठ ११० पर दिया गया है। किशोरलालभाअीका पत्र अिस प्रकार है :

वर्धा, २१-९-'३५

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

सप्रेम वन्दे। आपके सब पत्र बराबर मिले। मुझे अभी बिलकुल आराम तो नहीं हुआ है, लेकिन पहलेसे कुछ ठीक है। अभी थोड़ा थोड़ा ज्वर, थोड़ी खांसी आदिकी शिकायत है। २-४ रोजमें आराम हो जानेकी आशा है।

बकरोंकी हिंसाका प्रश्न यों भी जटिल तो है ही, परन्तु कदाचित् हमारी अुस प्रश्नके प्रति देखनेकी दृष्टिमें भी कुछ दोष होना संभव है।

जो मांसाहार नहीं करते परन्तु देव-देवीको भोग चढ़ानेमें मानते हैं और कुछ कामना सफल होने पर अमुक प्रकारका भोग देनेकी प्रतिज्ञा करते हैं, वे मानिये कि देवके लिअे मिष्टान्न ले जावें तो आप अुन्हें मना करेंगे? क्योंकि हमारे वैष्णव-मंदिरोंमें भक्त लोग बड़े दिनों (त्यौहार) के रोज भांति भांतिके मेवा, मिठाअी, मिष्टान्नके भोग बनाकर ठाकुरजीके सामने रखते हैं। देव बकरा, हेला (भैंसा) आदि नहीं चाहता तो क्या मिष्टान्नोंको भी चाहता है? हजारों लोगोंको खानेको अेक समयका भी अन्न नहीं मिलता, तब मंदिरोंमें कितना नैवेद्यके नाम पर व्यय किया जाता है? दोनोंमें से कौन ठीक करता है यह कहना मुश्किल है।

बात तो यह है कि यदि देवको कुछ भोग चढ़ानेमें हमको श्रद्धा हो, तो वही पदार्थ हम ला सकते हैं जिसका आहार हमें विशेष प्रिय है। जो त्यौहार पर मिष्टान्न खाता है, वह मिष्टान्न बनाकर देवके आगे रखता है। जो मांसाहार करता है वह मांस लाता है।

अिससे मुझे तो यह लगता है कि यदि हम मांसाहार छुड़ा नहीं सकते, तो हम प्राणि-बलिदान भी बन्द नहीं करा सकते।

हां, यह हो सकता है कि हम लोगोंको कहें कि मांसाहार अच्छी बात नहीं है; फिर भी यदि आप मांसाहार नहीं छोड़ सकते तो कमसे कम त्यौहारके पवित्र दिनको वह नहीं करना चाहिये। अैसे दिन निरामिष भोजनके व्रतके लिअे रखने चाहिये। संभव है कि जिस पदार्थको वे स्वयं चख नहीं सकेंगे अुसका नैवेद्य भी न हो। यह भी

लिखा था — 'बाओसे (आपने) चोरी कबूल करायी। अगर पुलिस अुसको फंसानेमें आपकी ही गवाही दे तो?' लेकिन अैसा कुछ नहीं हुआ। यह भी मैंने अुनको लिख दिया था। मांसाहारका प्रश्न तो चल ही रहा था। अिस पर अुनका अुत्तर आया :

वर्धा, १२-१०-'३५

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपके सब पत्र मिले हैं। परन्तु बहुत दिनसे आपको अुत्तर भेज नहीं सका। मेरी तबीयत अब पहलेसे अच्छी तो है, फिर भी दमेकी शिकायत अभी बन्द नहीं हुआी।

अुस चोरीके विषयमें पड़नेसे कुछ खतरा नहीं हुआ, यह जानकर खुश हुआ। शुभ निष्ठासे किये हुअे कामका फल शुभ हुआ यह ठीक ही है।

जो लोग स्वयं मांसाहारी न होते हुअे भी मांसका बलिदान चढ़ाते हैं वे कम हैं। अुन लोगोंने कुछ ही समयसे मांसाहार छोड़ा हुआ रहता है। अुनकी २-३ पीढ़ीके पूर्वज मांसाहारी रहे होंगे। अिन लोगोंसे मांसका बलिदान छुड़ानेमें कामयाबी प्राप्त होती है। मैं मानता हूं कि मांसका बलिदान छुड़ानेके पहले मांसाहार छूटनेकी आवश्यकता है। और मांसाहार छुड़ानेकी हम चेष्टा न करें तो बलिदान छुड़ानेमें विशेष सफलता न मिलेगी।

आप अपना बगीचा खूब अच्छा बना लें। हम आवेंगे तब हमको शाकभाजी खिलायेंगे न?

बम्बअीमें गंगाबहनके भतीजे श्री बचुभाओ बहुत बीमार हो गये थे। ऑपरेशन करना पड़ा था और स्थिति काफी गंभीर थी। दूसरे पुरुषका रक्त भी भरना पड़ा। समाचार है कि अब वह भयमुक्त हैं अैसा डॉक्टर मानते हैं। गंगाबहन बम्बअी गओ हैं। पू० नाथजी भी जाया करते हैं।

श्री सुरेन्द्रजीका आपके नामका पत्र बहुत दिन पर आया था। साथमें भेज रहा हूं।

साथका पत्र भाओ दौलतको दीजियेगा।

गोमतीका प्रणाम स्वीकार करें। बहुत करके यह महीना खतम होते ही मैं अेक-डेढ़ महीनेके दौरे पर जाअूंगा। पंढरपुर और भावनगर ये दो निश्चित हैं। बीचका समय जहां जा सकूं वहां ही सही।

आपका
किशोरलाल

६

मेरा बुनाअीका काम पूरा हो चुका था। बुखारके कारण मुझे कमजोरी थी। मैं सावलीके बारेमें अपने पत्रोंमें संतोष प्रगट किया करता था। अुस परसे बापूजीको लगा कि सावली मुझे प्रिय है, अगर सावलीमें ही रहनेकी मेरी व्यवस्था हो जाय तो मुझे पसंद आयेगी। अिसलिअे अुन्होंने अिस प्रकारका प्रबंध करनेका विचार किया और मुझे भी लिखा कि तुमको सावलीमें शांति मिले तो वहां रहनेका प्रबन्ध किया जा सकता है। अिसका अर्थ मैंने यह किया कि बापूजीके मनमें मेरे प्रति असंतोष है और वे मुझे अपनेसे दूर रखना चाहते हैं। बापूजीके आसपास १ साल रहनेकी बात भी पूरी होने जा रही थी। अिस परसे मैंने बापूजीको लंबा पत्र लिखा था। अुसका जवाब किशोरलालभाअीने लिखा:

वर्धा, १–४–'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र कल मिला। आज श्री रामदासभाअीका पत्र भी मिला है। मेरे पहले पत्रसे आपको बहुत शोक हुआ यह जानकर कष्ट हुआ। मैं मानता था कि पू० बापूजीके पत्रसे आपका समाधान हुआ होगा और आप सावलीका काम पूरा करके आपकी अनुकूलतासे वहांसे निकलेंगे। पर श्री रामदासभाअीके पत्रसे मालूम होता है कि पू० बापूजीके पत्रसे आपका असंतोष हटा नहीं है और अुस पत्रके पीछे पू० बापूजीका या मेरा आपके विषयमें कुछ असंतोषका भाव है अैसा आप मानते हैं।

अिस विचारमें भूल है। पू० बापूजीने जो कुछ लिखा है और मैंने भी जो कुछ लिखा था अुसके पीछे आपके विषयमें किसी प्रकारका असंतोष, अविश्वास या प्रेमकी न्यूनता नहीं है। बल्कि आपकी कठि-नाअियां और विचार-पद्धतिको मान्य करके ही पू० बापूजीने सावली

छोड़नेकी बात मंजूर की है। आपने तो मुझे लिखा था न कि मैं पू० बापूजीसे आपकी ओरसे वकालत करूं? मैंने जोरसे आपकी वकालत तो न की, पर सिद्धान्त रूपसे पू० बापूजीने आपको सावलीमें रहनेकी जो सूचना की थी अुसका विरोध किया था। अिसमें मैंने यह मान लिया था कि पू० बापूजी अपनी ही ओरसे आपको सावलीमें रखना चाहते थे। पर पू० बापूजीकी मान्यता थी कि आपको सावलीमें समाधान और संतोष प्राप्त हुआ है, अिससे यदि सावलीमें रहनेके लिअे प्रबन्ध हो जाय तो आपको बहुत हर्ष होगा। अिससे अुन्होंने अुस तरहकी सूचनायें दीं। आपकी तबीयत वहां नादुरुस्त हुआी है सही, पर पू० बापूजीका अुस विषयमें अितना ही खयाल पहुंचा था कि वह अेक प्रासंगिक बीमारी है। कुछ दिनमें ठीक हो जायगी। आपको वहांका जलवायु अनुकूल नहीं है, अितना पू० बापूजीके खयालमें नहीं आया था। मैंने जो पू० बापूजीके पास दृष्टि रखी थी वह केवल स्वधर्माचरणके विचारसे। मेरा अुनसे यह निवेदन हुआ कि सावलीका जलवायु अनुकूल भी हो फिर भी आपका अपने प्रान्तमें काम करना विशेष रूपमें स्वधर्म है, और आपका पहलेसे अैसा विचार भी था। तब आपको सावली रहनेकी सूचना करना अयोग्य है। पू० बापूजीने अिस बातको मान लिया है।

संक्षेपमें, आप बिलकुल अैसा न समझें कि आपको सावली छोड़नेकी अिजाजत देनेमें किसी प्रकारका पू० बापूजीके मनमें असंतोष है। मैं तो अुसको कर्तव्य-सा ही मानता था और मैंने आपसे वैसा कहा भी था। पू० बापूजीको आपसे संतोष है अिसलिअे अुन्होंने लिखा है कि मेरा आशीर्वाद लेकर जाओ। पू० बापूजीके पत्रसे पता लगता है कि आपको सावलीमें ही रहना चाहिये अैसा अुनका स्वतंत्र अभिप्राय न था, बल्कि आपको प्रिय मालूम होगी अैसे खयालसे ही वह सूचना की थी। आपका अपने गांवके पासमें काम करना अुनको बिलकुल पसन्द और प्रिय है।

आशा है अितनेसे आपका समाधान होगा। आप सावलीके कामसे अपनी अनुकूलतासे निवृत्त होकर यहां पर आअियेगा। यहांसे पू० नाथजीके पास जाअियेगा। या पू० बापूजी यहां आवें तब तक

वहीं ठहरियेगा और फिर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर बम्बअीमें पू० नाथजीसे मिलकर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने गांवकी ओर जाअियेगा। मनमें से सन्देहका भाव निकाल दीजियेगा। आपके पत्र तो पू० बापूजीके पास रह गये हैं। पू० बापूजी कांग्रेस तक यहां न आवेंगे और यहां भी थोड़े ही दिन ठहरकर पंचगनी जायेंगे।

आपके पत्रसे हमें कोअी आघात नहीं पहुंचा। पू० बापूजीको अितनी-सी बात पर आघात पहुंच ही नहीं सकता। आपने अैसी कोअी बुरी बात तो कही ही न थी, न दुराग्रह भी बताया था। केवल अत्यंत संकोचपूर्वक, नम्रतासे अपनी कठिनाअियां बताअी थीं। क्या बापू जैसे अुदार पुरुषको अितनेसे ही आघात लग जाय अैसा हो सकता है? आप तनिक भी अिसका विषाद न रखें, और अिसे मनमें से निकाल ही दें।

गोमतीका प्रणाम स्वीकारियेगा। आपका अुस पर पत्र है, पर पत्रका अुत्तर देना तो अुसके लिअे आसान बात नहीं है। वह तो कहेगी कि बातें हो जायंगी फिर सब ठीक हो जायगा।

पू० नाथजीको भी आज पत्र दिया है। आपकी ओरसे लिखा है।

आपका
किशोरलाल

७

बापूजीको कष्ट देनेके कारण मुझे भी कष्ट और ग्लानि होती थी। अिसलिअे मैं अपने पत्रोंमें पश्चात्तापकी भावनासे अपने लिअे कुपात्र आदि विशेषण लिखता था। मैं अपने प्रान्तमें जाना चाहता था, यह तो पुरानी बात थी। बापूजीने तो पहले भी कहा था और अब भी लिखा, लेकिन मुझे संतोष नहीं हो रहा था। अपने मनका सारा हाल मैंने अुनको लिखा था। अुसके अुत्तरमें किशोरलालभाअीने लिखा:

वर्धा, ७–४–'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र मिला। पू० बापूजीको अुनका पत्र अभी नहीं भेजता। वे कांग्रेसके कार्यमें बहुत निमग्न होंगे, अिससे अुन पर

अधिक भार डालना योग्य नहीं है। और आपको जल्दी भी नहीं है। आप शान्त भी हुअे हैं।

शान्त हुअे हैं यह जानकर संतोष हुआ। पर अभी आपकी अुलझन सुलझ गओी हो अैसा मालूम नहीं होता है। पिछले पत्रके बाद आपको कोओी प्रश्न, नहीं अुठना चाहिये था। सावलीकी आबोहवा आपको अनुकूल नहीं आती है यह आपने जो बताया है, वह केवल कल्पना ही है अैसा किसीका अभिप्राय नहीं है। अिस कारण आपको वहां रहनेमें क्या तकलीफ है, अिसका यदि आपने जिक्र किया तो अुसमें आपकी कोओी भूल नहीं है। वह स्पष्ट रूपसे बता देना योग्य ही था।

पर अिसके अलावा आपका जो मूल संकल्प अपने प्रान्तमें, अपने वतनके पास ही कार्यमें लग जानेका था अुसे मैं तो स्वधर्माचरण ही मानता हूं। पू० बापूजी भी वैसा ही मानते हैं। तब आपकी वहां जानेकी अिच्छा होना धर्मानुकूल है। वहां जानेके लिअे पू० बापूजीकी संमति ही है। जब संमति है तब अुनका आशीर्वाद भी है, और अपने समीपसे दूर करनेका भाव नहीं हो सकता है। आपसे किसी प्रकारका असंतोष पू० बापूजीके दिलमें मैंने नहीं पाया है, न मेरे मनमें भी कभी आया है।

मैं जो आपको लिखता हूं वह आपको दोष देनेके लिअे नहीं लिखता हूं। आपके गुण और श्रद्धाको अधिक बलवान करनेके लिअे लिखता हूं। आप अपने पत्रोंमें सदैव आत्मनिन्दा किया करते हैं। खुदके लिअे कुपुत्र, कुपात्र आदि तिरस्कारके शब्द लगाया करते हैं। यह नहीं होना चाहिये। अुसकी जरूरत ही नहीं है। अिस आत्मनिन्दासे हमारा पुरुषार्थ कम हो जाता है। किसी विषयका अपनी बुद्धिसे निश्चय करनेकी ताकत ही चली जाती है। हरअेक विषयमें दूसरेकी तरफसे आज्ञा, सूचना, मार्गदर्शनकी अपेक्षा की जाती है। हम सदैव परावलंबी, पराश्रयी रह जाते हैं। प्रायः हमारे धर्मगुरु भी शिष्यमें अिसी वृत्तिका पोषण करते हैं। अपने शिष्य अपने ही पर हमेशा निर्भर रहें, अपनेको बिना पूछे कुछ भी न करें अैसी वे अिच्छा रखते हैं। पू० बापूजी या पू० नाथजीका यह अभिप्राय नहीं है।

अिसीसे तो वे किसीको अपना शिष्य नहीं बताते हैं। अुनको साथी कहा करते हैं। शिष्य हरअेक बात गुरुको पूछ कर ही करे, यह अुनकी अिच्छा नहीं है। पर समझने योग्य हो वह समझ लिया, पूछने योग्य पूछ लिया, सलाह ले ली — फिर अुस पर विचार करके अपने-आप निर्णय कर ले, अैसा गुरु-शिष्य-संबंध होना चाहिये। गीतामें भी तो श्रीकृष्ण द्वारा अुपदेश दिलाकर आखिरमें यही कहा है कि 'अिस प्रकार मैंने तुझे गुप्तसे गुप्त सब ज्ञान दिया। अब तू अिस पर गौर कर और फिर जैसा ठीक जंचे वह कर।' आज्ञा देनेके प्रसंग हमेशा नहीं होते हैं। जहां आज्ञा देनेसे शिष्यके द्वारा कोअी महत्त्वका कार्य होना, अथवा शिष्यका किसी बड़ी आपत्तिसे रक्षण होना, या किन्हीं दूसरे लोगोंके साथ अपनी आपत्ति निवारण होना संभव हो वहां आज्ञा भी दी जा सकती है। वरना मौके पर धर्म अथवा व्यवहारकी सामान्य राय देकर शिष्यको स्वतंत्रता देना यही गुरुका धर्म होता है। अैसा विवेक न करें तो गुरु और शिष्य दोनोंके लिअे बड़ी आफत हो जाती है। आपमें आत्म-विश्वास बढ़ानेके लिअे और विचार करनेके लिअे यह लिखता हूं। आप अिस पर दुःख न मानें। अपनी अयोग्यता न मानें। आत्मनिन्दा न करें।

श्री रामदासभाअीकी तबीयत खराब हो गअी, यह सुनकर रंज होता है। अुपचार करते ही होंगे। अुन्हें अभिवादन।

आपका
किशोरलाल

* * *

मेरा बुनाअी-काम करीब करीब पूरा हो चुका था, लेकिन सावलीमें गांधी-सेवा-संघका प्रथम अधिवेशन २९ फरवरीसे ६ मार्च १९३६ तक होनेवाला था। अुसमें बापूजीकी तबीयत ठीक रही तो अुनके आनेकी पूरी आशा थी। अिसलिअे मैं अुनके आनेकी राह देख रहा था। कार्यालयके कुअेंके पास जमीनका छोटासा टुकड़ा पड़ा था, जिसको खोद खोद कर मैंने अुसमें साग-भाजी, पपीता, केला आदि लगाकर सुन्दर बगीचा बना लिया था। अुसकी भाजी सावलीसे वर्धा जानेवालोंके साथ बापूजीके लिअे भी मैं भेजा करता था और मनमें सोचा करता था कि जब बापूजी यहां आयेंगे तो अुनको अपने

बगीचेकी भाजी खिलाअूंगा। भाजी खाकर और मेरा बगीचा देखकर बापूजीको कितनी खुशी होगी और बापूजी कैसे हंसेंगे, अिस प्रकारकी कल्पनाओंसे मेरा दिल भरा रहता था। 'जो आनन्द अिन्तजारमें है वह मिलनमें नहीं है' कविके अिस वचनका अनुभव होता ही रहता था। सचमुच ही अगर भगवान मनुष्यको मिल गया होता तो अुसका सारा रस ही सूख जाता। आखिर जब २८ फरवरीको बापूजी आये तो सारा वातावरण खुशीसे भर गया। मेरी खुशीका तो पार ही नहीं रहा। जब मैं प्रणाम करने गया तो बापूजीने हंसकर कहा, "आखिर तुमने मुझे यहां बुला ही लिया। अच्छे तो हो? अब तुम्हारी भाजी खानेको मिलेगी न? लेकिन मुझे अकेलेको खिलानेसे काम नहीं चलेगा। सबको खिलानी होगी। मुझे तो बकरीका दूध दोगे, लेकिन दूसरोंको गायका दूध देना होगा। सुनता हूं कि दूध चांदासे और भाजी नागपुरसे मंगानेवाले हो। यह क्यों? तुम तो क़िसान हो न? तो यहांके किसानोंको तुमने सागभाजी पैदा करने और गाय पालनेका तरीका क्यों नहीं बताया? तुम कह सकते हो कि मैं तो खादीका विद्यार्थी हूं, लेकिन खादीके पेटमें तो सब कुछ समा जाता है। खादीका अर्थ है हमारे देहातोंके समग्र अुद्योग-धन्धे। अगर यह नहीं होगा तो अकेली खादी जिंदा नहीं रह सकेगी। मेरा खादीका विद्यार्थी तो देहातकी सारी जरूरतों और अुनके सारे जीवनको स्पर्श करेगा। अुसीमें स्वराज्यकी चाबी छिपी है।"

अितनेमें ही वहां पूज्य राजेन्द्रबाबू आ गये तो बापूजी अुनसे मेरा परिचय कराते हुअे बोले: "अिसका नाम बलवन्तसिंह है और यह मेरे साथ रहता है। अब यहां बुनाअी सीखता है। जब यहां आया था तो मुझे लिखता था कि यहां सागभाजी नहीं मिलती है, दूध भी नहीं मिलता है। अरे, अिसने तो नीमके झाड़ मिलनेसे भी अिनकार किया था। लेकिन अब अिसने अपने लिअे तो सब व्यवस्था कर ली है। अपने बगीचेकी भाजी मुझे वर्धा तक भेजी है। लेकिन यहां पर नागपुरसे भाजी और चांदासे दूध लाकर आप लोगोंको देनेवाला है। मुझे तो अपनी भाजी खिलायेगा। मेरे लिअे तो बकरी भी रख छोड़ी होगी। लेकिन मेरा काम अिससे थोड़ा ही निबटनेवाला है।"

बापूजी बोलते जाते थे और मैं शर्मके मारे जमीनमें गड़ा जा रहा था। मेरा पहली ही बार बापूजीने किसीसे परिचय कराया हो तो वह

पूज्य राजेन्द्रबाबूसे कराया था। मैं चुपचाप प्रणाम करके अुनके सामनेसे खिसक गया। क्योंकि पाखाना-सफाअीकी व्यवस्था मेरे ही हाथमें थी, अिस-लिअे बापूजीके कमोड आदिकी सफाअीकी व्यवस्था सहज ही मुझे करनी थी। अुन दिनों बापूजी ९ बजे रामायण सुना करते थे। मैं भी अुस समय रामायणमें हाजिर रहता था। अुस समयका भक्तिभावका वातावरण बड़ा ही मधुर रहता था। पूज्य राजेन्द्रबाबूके साथ अुनके व्यक्तिगत मंत्री श्री मथुराबाबू तो, जो रामायणके बड़े ही भक्त थे, अपने आप पर काबू ही नहीं रख पाते थे और हर प्रसंगके अनुसार अुनके हावभाव देखने लायक होते थे। बापूजीकी गम्भीर मुद्राको देखकर सारा वातावरण गम्भीर बन जाता था। ७ रोज तक बापूजीका यह सत्संग अेक अद्भुत प्रसंग था। दूसरे दिन प्रदर्शनीके अुद्घाटनके बाद बापूजीके दिलमें ग्रामोंके लिअे जो प्रेम भरा था वह सारा अुंड़ेलते हुअे अुन्होंने कहा: "लोग देशके भिन्न भिन्न भागोंसे प्रदर्शनीमें रखनेके लिअे जो चीजें लाये हैं अुनका महत्त्व मैं समझ सकता हूं। लेकिन मैं आप लोगोंको बता देना चाहता हूं कि आप लोगोंको तो अुन्हीं चीजों पर जोर देना चाहिये था और अुन्हींको प्राप्त करनेका प्रयत्न करना चाहिये था, जो यहांके आसपासके देहातोंमें मिल सकती हैं या बन सकती हैं। जब कहीं कोअी प्रदर्शनी की जाय तो अिस बातका पता लगाना ही चाहिये कि वहांके देहातोंमें क्या चीजें मिलती हैं और क्या बन सकती हैं और अुन्हीं चीजोंको प्रदर्शनीमें महत्त्व देना चाहिये। अिस बातका भी ध्यान रखना चाहिये कि प्रदर्शनी वस्तु-संग्रहालय न बन जाय। हमारे जीवनसे लुप्त हो जानेवाली प्राचीन वस्तुओंका भी अपना महत्त्व है, लेकिन हमारा काम तो अैसे अुद्योग-धन्धों पर ही जोर देना है जो फिरसे जिन्दा किये जा सकें।

"अेक बातका और ध्यान रखना चाहिये कि जिनके बीचमें हम सम्मेलन और प्रदर्शनी कर रहे हैं अुन गांववालोंकी कितनी भलाअी करेंगे। मुझे जब यह बताया गया कि हमारे लिअे चांदासे गायका दूध और नाग-पुरसे सागभाजी आयी है, जो यहांसे १२० मील है, तो मुझे बड़ा दु:ख हुआ। भला अिस तरह हम सावलीवालोंकी क्या सेवा कर सकेंगे? क्या अिन चीजोंके बिना हम अपना काम नहीं चला सकते थे? सावली हमें नहीं दे सकता और अगर अुसके बिना हम काम न चला सकें, तो हमें

सावली आना ही नहीं चाहिये था। सावली तो गांवोंका अेक नमूना है। ये कठिनाअियां हमारे अधिकांश गांवोंमें मौजूद हैं। हिन्दुस्तानमें गायकी पूजा की जाती है, लेकिन हमारे अधिकांश गांवोंमें गायका घी-दूध मिलता ही नहीं है। अैसी पूजाका क्या अर्थ है? यहांकी आबोहवा अैसी है कि हर देहातमें सागभाजी पैदा की जा सकती है, लेकिन हमारे बहुतसे गांवोंमें ताजी सागभाजी मिलती ही नहीं है। लिखने-पढ़नेके सामानकी तो बात ही क्या कहूं? अुनके पास अितने पैसे नहीं हैं कि वे लिखने-पढ़ने और टिकट आदिके लिअे अितना खर्च कर सकें। गांवोंमें तो निरक्षरताका ही राज्य है। अिस बातकी छानबीन करनेसे कोओी लाभ नहीं है कि हिन्दुस्तानके गांव पहलेसे वैसे ही थे जैसे आज हैं। अगर अिससे अच्छे वे कभी न रहे हों तो यह हमारी अुस प्राचीन संस्कृतिके लिअे लज्जाकी बात है, जिस पर हम फूले नहीं समाते हैं। अगर वे कभी भी अच्छे नहीं रहे होते तो सदियोंसे जिस पतनको हम देख रहे हैं, जिसका सावली तो सिर्फ अेक नमूना है, अुसमें वे टिक ही कैसे पाते?

"प्रत्येक देशसेवकके सामने यह सवाल है कि वह अिस पतनमें किस प्रकारसे रुकावट डाले या अुनका पुनर्निर्माण किस प्रकार किया जाय, जिससे वहां रहना हरअेकके लिअे सुलभ हो जाय। जैसा कि शहरोंमें समझा जाता है, यह संभव है कि गांवोंकी हालत सुधरनेके काबिल ही न रही हो। ग्रामीण सभ्यताके दिन बीत गये हों और सात लाख देहातोंको सात सौ सुव्यवस्थित शहरोंमें बदल जाना पड़े, जिनमें ३० करोड़ ही नहीं बल्कि ३०० करोड़की जनसंख्या हो। लेकिन हिन्दुस्तानकी किस्मतमें यही बदा हो तो वह भी अेक ही दिनमें नहीं हो जायगा। बहुसंख्यक गांवों और अुनमें बसनेवाले ग्रामीणोंका लोप होकर बचेखुचोंको शहरोंमें बदलनेमें कुछ तो समय लगेगा ही। लेकिन जिनका ग्रामोंके पुनर्निर्माणमें विश्वास है अुन्हें तो किसी खयाली बात पर विश्वास करके बैठे रहनेके बजाय सचाओी और युक्तियुक्त रीतिसे अपने कार्यक्रम पर अमल करना ही होगा। सावलीके अनुभवसे अुनकी आंखें खुल जानी चाहिये। किसी भी गांवकी अितनी शक्ति तो होनी ही चाहिये कि ३०० स्त्री-पुरुष अुसमें सुविधापूर्वक टिक सकें। अुन्हें ताजी खुली हवा, हरीभरी जगह, स्वस्थ गायोंका बढ़िया दूध और साथ साथ ताजी भाजी तथा फल भी मिल सकें। अिनमें से अगर

कोअी चीज शहरोंसे खरीद कर मंगानी पड़े तो समझना चाहिये कि मूलमें ही कहीं खराबी है। हमारे पास अैसी जादूकी लकड़ी तो नहीं है कि जिसे फिराते ही यह सब परिवर्तन हो जायगा। हां, धीरजके साथ हम काममें लगे रहें तो कोअी विशेष कठिनाअीके बिना कामको आगे बढ़ाया जा सकता है। लेकिन यह तभी हो सकता है जब लगनशील तथा अुत्साही कार्यकर्ता ठीक ढंगसे अपने गांवोंका पुर्ननिर्माण करनेके दृढ़ निश्चयके साथ अपने गांवोंमें जाकर बैठ जायं। जब तक अैसा नहीं होगा तब तक कुछ भी नहीं होगा।"

सम्मेलनमें पूज्य विनोबाजी भी गये थे। अुसी मौकेका लाभ अुठाकर सावलीके बुनकरोंने मजदूरी बढ़ानेका अेक असंतोषजनक वातावरण निर्माण कर दिया था, जिनको शांत करनेका काम पूज्य विनोबाजीने बड़ी खूबीसे किया था।

पूज्य बापूजीने मुझे चरखा-संघमें खादीकाम करनेकी भी सूचना दी थी। अुनको अैसा लगा था कि सावली मुझे पसंद है। लेकिन वहांकी आबो-हवा मेरे लिअे बिलकुल ही अनुकूल न थी और नौकरके रूपमें किसी भी संस्थामें काम करनेकी मेरी बिलकुल तैयारी न थी। अिसलिअे मैंने साफ अिनकार कर दिया। और सम्मेलनके थोड़े दिन बाद ही मैं मगनवाड़ी (वर्धा) आ गया।

* * *

बापूजीके आसपास मेरे रहनेका करीब करीब अेक वर्ष पूरा हो चुका था। और अब मुझे कहां जाना चाहिये यह प्रश्न मेरे सामने था। लेकिन मेरे मनकी गति बड़ी विचित्र थी। बापूजीको छोड़ना मनको चुभता था और रहनेकी अिच्छा भी नहीं होती थी, क्योंकि अुनके काममें मेरे मनको शांति नहीं मिलती थी। अिसलिअे कहां जाना यही चर्चा बापूजीके साथ चलती थी। मैंने देखा कि बापूजी मुझे छोड़ना नहीं चाहते थे। अूपरसे तो मुझे कहते थे कि जहां जाना चाहो जा सकते हो, लेकिन मेरे जानेसे अुनके मनमें पीड़ा होती है अैसा मुझे लगता था। अिस पीड़ाको न तो बापूजी प्रगट कर सकते थे और न मैं ही अपनी दुविधा अुनके सामने रख सकता था। बापूजी मुझे विचार करनेके लिअे कहते थे और मैं अुनको कोअी निश्चित जवाब नहीं दे सकता था। अुन्होंने किशोरलालभाअीके साथ बात

करनेके लिअे कहा। मैंने अुनके साथ बात की। मेरी बातोंसे अुनके दिल पर अैसा असर हो गया कि बापूजी तो मुझे खुशीसे अिजाजत देते हैं, लेकिन अब मेरे सामने यहांसे गया तो कल रोटी कहां मिलेगी अैसा प्रश्न होनेसे मैं अिधर-अुधरकी बहानेबाजी करता हूं। जब अुन्होंने मुझे यह बताया तो अुनकी बातसे मुझे धक्का-सा लगा और मैं अुनके पाससे चुपचाप चला आया।

"क्यों किशोरलालके साथ मिलकर क्या फैसला किया?" बापूने पूछा।

मैंने कहा, "मैं आपसे अेक प्रश्नका अुत्तर चाहता हूं, अिसके बाद मेरा फैसला हो जायगा।" मैंने किशोरलालभाअीका शक अुनको बताया और कहा कि अगर आपके दिलके किसी कोनेमें अैसा थोड़ा भी शक हो कि मेरे सामने रोटीका सावल है तो मेरा फैसला है कि अिसी वक्त यहांसे चला जाअूंगा। मैं तो सिर्फ अिसलिअे हिचक रहा हूं कि आप मुझे प्रसन्नतापूर्वक अिजाजत नहीं दे रहे हैं और आपको अप्रसन्न करके जाना मुझे जन्मभर दुःख देगा। अिसलिअे आपको छोड़कर जानेकी मेरी हिम्मत नहीं होती। मेरा हित किसमें है अिसे आप भलीभांति समझते हैं और अुसी दृष्टिसे आप विचार करते हैं। आपके अिस प्रेमके कारण ही मैं दुविधामें पड़ा हूं। अगर मेरे मन पर यह असर हो जाय कि आपके मनमें भी किशोरलालभाअी जैसा विचार आया है, तो मैं आपके पास अेक रोज भी नहीं रह सकूंगा।

बापू खूब जोरसे हंसे और बोले:

"हां, मुझे भी किशोरलालभाअीने कहा है। लेकिन तुम्हारे बारेमें मेरे मनमें अैसा लेशमात्र भी शक नहीं है। मैं तो यही देख रहा हूं कि अभी तक तुम्हारा चित्त स्थिर नहीं है और तुम यहांसे जाओगे तो दो महीने भी बाहर शांतिसे नहीं रहोगे। या तो नाथके पास भागोगे या मेरे पास। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम स्थिरचित्त होनेके बाद मेरे पाससे कहीं जाओ तो मुझे निश्चिन्तता रहेगी। जितना तुमको मैं पहचानता हूं अुतना किशोरलाल नहीं पहचानता।"

जिस प्रकारका शक मेरे दिलमें था वही बापूके दिलसे निकला। मैं खुद अपनी अस्थिरता समझ रहा था, और अिसीसे बापू परेशान हैं यह भी समझ रहा था। बापूका अितना प्रेम देखकर भला मैं अुनको छोड़नेकी

हिम्मत कैसे कर सकता था? तो भी मूढ़ताने मुझे अितना घेर रखा था कि मैं कोअी साफ निर्णय नहीं कर पाता था। बापूने कहा, "सोचो और निर्णय करके मुझे बताओ।"

पू० किशोरलालभाअीकी रोटी न मिल सकनेकी बात मुझे अितनी चुभी कि मैंने अुनको अेक भिनभिनाता लंबा पत्र लिखा, जिसमें कहा कि मुझे अब तक पता नहीं था कि अर्थ आप जैसे साधु पुरुषको भी अितना नीचे ले जा सकता है। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने लिखा:

दिनांक, १६–५–'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र कल शामको मिला। मेरे शब्दोंसे आपको बड़ा दु:ख हुआ है। अिस दोषके लिअे क्षमा कीजियेगा। मेरे मनमें जो विचार आ गये वे रख दिये। ये विचार मनमें आने पर भी आपको कह न देता तो और भी अधिक दोष हो जाता। अैसे विचार करनेमें आपके प्रति अन्याय हुआ हो यह संभव है। मुझमें है अुससे अधिक साधुताका आप मुझमें आरोपण न करें। अैसा करनेसे ही आपने मेरे अभिप्रायको ज्यादा महत्त्व दिया और दु:खित हो गये। खैर। अब शान्त हो जाअियेगा। पू० बापूजीकी आज्ञाको अुठाते रहनेमें संतोष रखियेगा। जैसा वे चाहें वैसा ही करते रहियेगा। श्री मीराबहनको प्रणाम। गोमतीने आपको प्रणाम लिखाया है। दोनों कुशलसे प्रवास कर रहे हैं। आज श्री मथुरादासभाअीके मधुबनी आश्रमकी ओर जा रहे हैं।

आपका
किशोरलाल

* * *

पू० किशोरलालभाअी स्पष्टवक्ता थे और कठोर सत्य कहनेकी क्षमता रखते थे। लेकिन अुनका हृदय स्फटिक जैसा निर्मल था। सरलता और नम्रताकी वे मूर्त्ति थे। जिसे वे कठोर सत्य कहकर तिलमिला देते थे, अुसके प्रति अुनकी सहानुभूति और स्नेहमें जरा भी अन्तर नहीं पड़ता था। मेरा और अुनका संबंध सगे भाअीसे भी अधिक घनिष्ठ था, क्योंकि वे नाथजी

और बापूजी दोनोंका प्रतिनिधित्व मेरे प्रति निभानेमें कुछ भी अुठा नहीं रखते थे। और अुसे अन्त समय तक अुन्होंने पूरी तरह निभाया। अुनका नीचेका पत्र अन्तिम और अत्यन्त मननीय है।

बजाजवाड़ी, वर्धा,
१५-३-'५१

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

. . . ये मनमुटावकी बातें क्लेशकारी हैं। जहां देखता हूं वहां सैद्धान्तिक विचार-भेद या मतभेद तो बहुत कम होते हैं। अुसके कारण अेक-दूसरेसे बिलगाव अितना नहीं जितना स्वभाव-भेद, भाषा-विनय और सलूककी कमी, अहंकारकी असंस्कारिता आदिके कारण होता है। अहंकार यह सिर्फ आत्मा-परमात्माके बीच परदा खड़ा नहीं करता। मालूम नहीं वहां कितना कर सकता है या करता है और कहां तक हटाया जा सकता है। परन्तु मित्रों और मानवोंके बीच तो जरूर करता है। . . . ने आपके स्वाभिमानको न पहिचानते हुअे अुस पर आघात किया है और अिसकी आपको बहुत सख्त चोट पहुंची है। . . . से बोलचाल और बरतावमें अैसे दोष हो जाते हैं। वे जान-बूझकर अपराध करना या बुरा मनाना चाहते हैं अैसा तो नहीं। परन्तु वह अेक प्राकृतिक तथा सांस्कारिक दोष है, जो कुछ अंशोंमें . . . आदि सबमें हैं। . . . के लौटने पर देखूंगा कि क्या किया जा सकता है।

दूसरी तरफ हमें भी यदि अपनी अुन्नति करनी है और जन-सेवा भी, तो अपनेमें नम्रताकी पराकाष्ठा करनेकी जरूरत है। बापूजी कहते थे वैसे शून्य बनना चाहिये। हम लोग प्रतिकार-शक्ति न होनेसे सत्ताधारीकी बातें और गालियां सहन कर लेते हैं, पर आपसमें थोड़ी अवहेलना हो गअी है अैसा शक ही आ जाय तो भी अुसे बरदाश्त नहीं कर सकते। परिणाममें मान्य कार्यक्रमोंमें सहयोग नहीं दे सकते और खुले दिलसे बातें नहीं कर सकते। मित्रता बढ़ाने और निभानेके लिअे तीन प्रकारकी विस्मरणशीलता प्राप्त करनी चाहिये: (१) प्रसंग समाप्त होने पर अुसे भूल जाना, दंश न रखना; (२) अपने हाथ हुअे अुपकार या सद्व्यवहारका स्मरण न रखना; (३) गर्मीमें निकले हुअे दूसरोंके कठोर शब्दों या व्यवहारको याद न रखना। दो गायें

सुबह चरते चरते कभी कभी तीव्र मारामारी कर लेती हैं, किंतु शामको अुसका वे कुछ स्मरण नहीं रखतीं और अेक-दूसरेको प्रेमसे चाटती हैं। वैसी हमारी स्थिति होनी चाहिये। वैसे हम सब होंगे तभी हमारे संघ तेजस्वी होनेवाले हैं।

होशियारीबहनको चिट्ठी भेजी सो ठीक किया। अुनका अुत्तर आने पर अधिक विचार कर लेंगे। मनुष्यके मनमें शुरूसे कलि नहीं होता। मौका आने पर वह प्रवेश करता है। और फिर अुसके सामने अमुक तो टिक ही सकेगा, अैसा किसीके लिअे यकीन दिया नहीं जा सकता। नल राजाकी कथामें कहा है न कि संध्यापाठ करते समय वह पैर धोकर पोंछना भूल गया। अुस वक्त कलिने पैरोंके तलवे द्वारा अुसमें प्रवेश कर दिया। ग्रीक पुराणमें कथा है कि वीर अखिलीश (अेकिलीस) का सारा शरीर कवचमय था, सिर्फ पदतल नहीं थे। अुसे मारनेके लिअे अुसके पदतलमें बाण लगे तब वह मरा।

संभव है गोसेवाके प्रकरणके सिलसिलेमें आपका यहां आना हो जायगा तब मिलना भी होगा ही।

सप्रेम
किशोरलाल

* * *

किशोरलालभाओकी कठोर सत्य कहनेकी अद्भुत कला और हिम्मत, स्पष्टवादिता तथा सूक्ष्म निरीक्षणका परिचय सेवाग्रामके सेवकोंके सामने दिये गये अुनके नीचेके प्रवचनसे मिलता है:

"आज कुछ छोटी-छोटी बातें करनेका विचार है। वे देखनेमें तो छोटी हैं, लेकिन गौर किया जाय तो बड़ी भी साबित हो सकती हैं। अिसका मुझे खेद है कि मुझे पूज्य बापूके साथियोंसे ही टीकाका आरम्भ करना पड़ता है। लेकिन यह कोअी न समझें कि ये टीकायें सिर्फ अुनके दायरेके लिअे ही सही हैं, औरोंके लिअे नहीं है। वास्तवमें ये सब हमारे प्रजाकीय दोष ही समझिये।

"बम्बअी, फैजपुर और हरिपुराकी कांग्रेसोंमें मुझे अुनके कैम्पमें रहनेका प्रसंग आया। तीनों समय अुनके कैम्पमें बहुत ही अव्यवस्था, बेपरवाही, अविचार और अपनी ही सुविधा देखनेकी वृत्ति मेरे देखनेमें आअी। और यह

दोष अेक दो अपवादोंको छोड़कर जो अधिक तरुण हैं अुनमें अधिक मात्रामें देखा। हरिपुराकी ही बात करता हूं। पूज्य बापूके साथवालोंके लिअे दो कमरेकी अेक अलग कुटी दी गअी थी। हमारे साथ जवान भाअी-बहन तो काफी थे। पर तीन चार दिन तक मैंने यह देखा कि अुनमें से किसीको यह नहीं सूझता था कि कमरेको कोअी साफ करे। तीसरे और चौथे दिन साथमें जो जापानी भिक्षु थे अुन्होंने रातको सोते समय अपनी आजू-बाजूका भाग झाड़ा। कोअी भाअी-बहन कुटीके बाहर बैठने या सोनेके लिअे चटाअी अुठाकर ले जाते थे। जो चटाअी बाहर जाती थी वह शायद ही अन्दर आती थी। दो दिन जोरसे जो हवा चली अुसमें कुछ अुड़ भी गअीं। अेक ओरसे पूज्य बापूजी चाहते हैं कि ५००० रु० में कांग्रेसके अधिवेशनका सारा प्रबंध हो। दूसरी बाजूसे हम जो अुनके साथ जाते हैं १–१।। रुपयेकी चटाअियां सिर्फ लापरवाहीसे हवामें अुड़ा देते हैं। चीजोंकी और भी काफी खराबी की जाती थी।

"फिर . . . की बात कहूं। अेक तरफ तो महादेवभाअी जैसेको नहाने और खानेके लिअे भी मुश्किलसे समय मिलता था। हम और काशीबहन जैसी वृद्ध स्त्रियां मुश्किलसे दोपहरमें आधा घंटा आराम कर पा सकती थीं और दूसरी तरफ अैसे लोग भी थे जिनके पास नहाना-धोना, खाना और खाकर सोना, अुठकर कुछ जलपान कर लेना और टहलने जाना — अितना ही कार्यक्रम था। खाने वगैरामें समयका कोअी पालन नहीं किया जाता था। कुछ भाअी तो अपनी अिच्छा हो तभी जाते थे। अुनको खयाल ही नहीं आता था कि अिस अव्यवस्थासे वृद्ध काशीबहन, जिन पर स्वागत-समितिकी तरफसे प्रबंधका भार डाला गया था, कितनी असुविधा होती होगी। अगरचे वहां पर जलपान, भोजनादि करनेवाले ८–१० व्यक्ति थे, फिर भी सुबह ६ से ८।। या ९ तक जलपान करनेवालोंकी कतार चलती थी। यह नहीं था कि दूध-चाय पीनेवाले अेकसाथ आकर अेक ही बारमें सबके लिअे दूध-चाय बनाकर पी लेते और दूसरा नाश्ता लेनेवाले अपने अेक मुकर्रर समयमें साथ खा लेते। जिसको जब फुरसत मिली आया, चाय बनाअी, अथवा नाश्ता निकाला और चल दिया। जो लेता था अुसको यह विचार नहीं आता था कि तलाश तो करूं कोअी रह तो नहीं गया है। बादमें साढ़े दस ग्यारहसे लगभग अेक बजे तक किसी न किसीका भोजन चलता था। फिर ढाअीसे

साढ़े चार तक दोपहरके जलपानकी कतार चलती थी और बादमें रातके भोजनकी, जो कभी कभी रातके दस बजे तक भी होता था। मक्खनके तीन तीन डिब्बे खोले हुअे वहां थे। मालूम नहीं कि अेक खतम होनेके पहले ही दूसरा क्यों खोला जाता था? अेक तरफ तो पूज्य बापूजी अितनी किफायत करते हैं कि लेख या चिट्ठियोंके लिखनेमें अेक तरफ कोरे रहे हुअे कागजोंको काममें लाते हैं और अुनके लिफाफे भी बनवाते हैं। और दूसरी तरफ हम, जो अुनके साथ दरिद्र-नारायणकी प्रतिध्वनि अुठाते हैं, कितने अुड़ाअू होते हैं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि कुछ काम निकल पड़ा तो कोअी करनेसे अिनकार कर देता था। पर सबमें यह समझ नहीं दीख पड़ती थी कि अेक जगह हमको आठ-दस दिन ही क्यों न रहना हो तो भी वहां हमारा अेक घर बन जाता है। अुसमें अुसी तरह व्यवस्था, समय-पालन और सबकी सहूलियतका खयाल किया जाना चाहिये, जैसा अेक अच्छे संस्कारी परिवारमें होता है।

"लेकिन अिस प्रश्नकी तालीम ही हम लोगोंको नहीं मिली; दूसरेकी सुविधाका खयाल हम बहुत ही कम करते हैं। कअी बार हमें अतिथि बननेका प्रसंग आता है। जिसके यहां हम ठहरते हैं वह हमारा आतिथ्य करके अपना कर्तव्य बजाता है। लेकिन अतिथिका भी अपने यजमानके प्रति कुछ कर्तव्य है या नहीं? हमारा फर्ज है कि या तो हम अुसे यह कहें कि हमारा समय-पत्रक अिस तरह बना है, अतः कृपया अुसके अनुसार आप नहाने, खाने-पीनेकी व्यवस्था करें; अथवा अुससे यह पूछें कि भाअी, नहाने, खाने-पीने वगैराका आपका अपना समय बताअिये, जिसके अनुसार हम अपना कार्यक्रम तैयार करें। मगर साधारणतया हम लोगोंमें अैसी आदत नहीं होती। घंटों तक यजमान और अुसके परिवारकी स्त्रियां और नौकर बनी हुअी रसोअीको गरम किस तरह रखा जाय अिसकी चिंता और अतिथिकी प्रतीक्षा करते बैठे रहते हैं।

"अिसी तरह पड़ोसियोंके आरामका खयाल भी हममें नहीं है। अिस लापरवाहीका बड़ा ही कष्टप्रद अनुभव हुआ करता है। मैं तो बचपनसे अेक बड़े परिवारमें पला हूं और बम्बअीके सरेआम रास्तों पर रहा हूं। अतः आवाजके बीचमें भी अपना काम कर लेता हूं और आज तक नींद भी ले सकता था। अब तो मुझे भी परेशानी होती है, और जिनकी ज्ञानेन्द्रिय तेज

होती हैं वे तो बीमार-से ही पड़ जाते हैं और नींदसे अेकाअेक जग जानेसे छातीकी धड़कन अनुभव करते हैं। कओी लोग रातमें जग अुठते हैं तब अितने जोरसे पैर पटक कर चलते हैं कि दूसरे सबको जगा देते हैं। कओी भाअियोंको आधी रातमें प्यास लगती है। वे अपने गिलास और ढक्कनको बिना जोरसे टक्कर मारे अुठा या रख ही नहीं सकते। कओी भाओी रातको देरीसे सभा या सिनेमा आदिसे लौटते हैं। आते हैं तब सब पड़ोसियोंकी नींदको तोड़ देते हैं। बिना आवाज किये आना, दरवाजा खोलना और बन्द करना अुनको सिखाया ही नहीं गया। शायद हम मानते हैं कि जब तक हम जगते हैं तब तक किसीको सोनेका अधिकार नहीं है और जब हम जग गये हैं तब दूसरे क्यों सोते रहते हैं!

"जिस चीजके लिअे हमें दाम नहीं देने पड़ते हैं, अुसके प्रयोगमें भी हम अिसी तरहकी लापरवाही रखते हैं। अगर हमारे मकानमें बिजली या पानीका नल हो और स्वतंत्र मीटर हो, तो हम अुसका अुपयोग बड़ी सावधानीके साथ करते हैं। पर अगर अुसकी कीमत निश्चित ही हो तो हम अुसका अधिक व्यय ही नहीं, नाश भी करते हैं। मुझे यदि ठीक याद है तो कुरानमें अेक जगह कहा है: 'सब चीजें खुदाकी हैं, अुनको हिफाजतसे अिस्ते-माल करो।' यह बोध हमें याद रखना चाहिये। मेरे खयालसे किसी चीजका अपव्यय करना अपरिग्रह और अस्तेय-व्रतको न माननेसे भी ज्यादा खराब है।

"लेकिन अपव्ययके विषयमें मुझे यह भी कह देना चाहिये कि बड़े बड़े नेता भी बहुत दोष करते हैं। वे छोटे कार्यकर्ताओंको अुड़ाअूपनकी आदतें सखाते हैं। अेक जमाना था जब अेक या दो पैसेमें पोस्टकार्ड और चार आनेमें तार भेजा जा सकता था। पर अुन दिनोंमें धनिक लोग भी तार नहीं भेजते थे। अुससे कहीं अधिक तार हम लोग आजकल भेजते हैं। बड़े सार्वजनिक मामलोंके लिअे जो तार देने पड़ते हैं, अुनकी बात मैं नहीं कर रहा हूं। सब काम अितने महत्त्वका नहीं होता है कि पोस्टकार्डसे नहीं किया जा सके। लेकिन अुसे छोड़ दें। मगर नेता लोग खानगी तार भी बहुत बड़े प्रमाणमें करते हैं। और गरीब कार्यकर्ताओंसे भी आशा रखते हैं कि वे तारसे प्रत्युत्तर दें। अेक दो मिसालें दूं। यह माना जा सकता है कि अेक आदमीकी बीमारी चिंताजनक हो, तब अुसकी खबर सब रिश्तेदारोंको तारसे देना आवश्यक है। कुछ मित्रोंको अुसके मरनेकी खबर भी तारसे पहुंचाना

आवश्यक हो सकती है। लेकिन आश्वासन देनेके लिअे हमेशा तार ही क्यों भेजना चाहिये? अधिकतर तार तो शिष्टाचारके ही होते हैं। तो भी फौरन तार ही भेजा जाता है। खैर। वह तो मृत्युका नाजुक प्रसंग होता है। अगर नेताके पास पैसा है तो वह खर्च करे। लेकिन मानो कि जमनालालजीके यहां शादी है। आपको आठ दिन पूर्व अुसकी खबर मिल चुकी है। तो फिर क्यों आप अुसकी बधाअी पत्रसे नहीं भेजते हैं, और तारोंकी बरसात करते हैं? अथवा स्वयं नेताका भी विवाह कौनसे सार्वजनिक महत्त्वका अथवा आकस्मिक अुत्पन्न हुआ काम है? मैं तो अितना बेसमझ हूं कि मुझे साधारणतया अैसी बात सूझती ही नहीं है। अेक बार सूझी तो वह देवदासभाअीके विवाहके प्रसंग पर जेलमें। मेजर भंडारीने परवानगी तो दी, लेकिन दो चार बातें भी सुनाअीं।

"अभी मैं हरिपुरा गया तो काकासाहब मुझसे झगड़े कि मैंने वर्धासे निकलते ही मंत्रीको तारसे खबर क्यों न दी? मुझे तो वह बात सूझी ही नहीं थी। और न जाजूजीको सूझी, जो मुझसे अधिक अनुभवी, वृद्ध और बड़े कार्यकर्ता हैं। गाड़ियां चलती थीं, मोटरें चलती थीं। मढ़ी और हरिपुराके रास्तेसे मैं अज्ञान तो था ही नहीं और मेरी अपेक्षा थी कि कहीं पर भी परिचित स्वयंसेवक मिल ही जायेंगे। फिर क्यों तार दूं? अब स्वयंसेवक न मिले और रास्तेमें ही मेरी पत्नीको बुखार आ गया तथा मोटर निवास-स्थानसे बहुत दूर पर खड़ी रखी गअी, ये तो सब आकस्मिक बातें हुअीं। वे तो तार करने पर भी होनी संभव थीं, जैसा बिहारमें मुझे अेक बार हुआ था। अिन तारोंसे गरीब कार्यकर्ताओंको जो मुश्किल होती है, अुसका नेताओंको शायद पता ही नहीं है। अुदाहरणार्थ, समझिये कि श्री शंकरराव देव जैसे नेता बीमार पड़े हैं। वे हैं तो बड़े नेता, लेकिन साथ ही हैं दरिद्र-नारायण। अुपचारके लिअे खर्च करनेमें भी अुन्हें विचार करना पड़ता है। और अिस पर आप नेताओंकी अुन पर यह अवकृपा होती है कि आप सब अुनकी खबर तारसे पूछते हैं। और कोअी जवाबी तार तो भेजता ही नहीं है। शिष्टाचार कहता है कि अुनका कर्तव्य है कि आपकी चिन्ता वे तारसे दूर करें। अन्दरका दरिद्र-नारायण कहता है कि अच्छा होता आपने नौ आनेका तार किया अुसकी अपेक्षा अेक आनेका खत भेजते और बचे हुअे आठ आनेके टिकट अुनको भेज देते। वे

आपको अेक आनेका जवाब देते और सात आने अुपचारके लिअे अुपयोगमें लाते। लेकिन अब वे तार देनेके लिअे पैसे कहांसे निकालें? अैसी परिस्थितिमें मेरे जसा आदमी तो तार करनेकी अशिष्टता कर भी लेता है। सब वैसा नहीं कर सकते। फिर वही बात होती है जो आम लोग कहते हैं। अगर अेक धनिक किसान अपने घर विवाहमें पांच हजार रुपये खर्च करता है, तो अुसके पड़ोसीको भी अुसीमें शिष्टता मालूम होती है। फिर वह जमीन-घर गिरवी रखकर भी अुतना खर्च करता है।

"बात यह है कि हमारे नेताओंने चार खर्चीले व्यसन पोसे हैं और वे ये हैं: अपने बारेमें तार देनेमें किफायत न करना, अपनी हलचलकी खबर हमेशा प्रेसको पहुंचाना और अपनी तस्वीर तथा हस्ताक्षर मांगनेवालों पर सदैव मेहरबानी करते रहना। अकसर मध्यम और छोटे कार्यकर्ताओं पर यह असर होता है कि बड़े नेता बननेके लिअे अिन चार साधनोंका अुपयोग करना जरूरी है। बड़े नेताओंसे मेरी अर्ज है कि वे किसीको तार देनेके पहले अुसकी आर्थिक परिस्थितिका हमेशा खयाल रखें, स्वयं भी बेमतलबके तार और संदेशे (मेसेजेस) भेजनेमें संयम रखें और लड़कों, जवानों और समवयस्कोंमें फोटोग्राफ मांगनेका जो व्यसन बढ़ रहा है अुसे प्रोत्साहन न दें।

"खर्चीले शिष्टाचारों (कर्टसीज़) के बारेमें हम छोटे कार्यकर्ताओंको बहुत विवेकपूर्वक चलना चाहिये। हमने अपने पुराने पेशे छोड़ दिये हैं। हमारी आमदनीकों हमने अपनी खुशीसे घटा दिया है। अुसमें बढ़नेकी गुंजाअिश नहीं है। अुलटा अगर पिछले बीस सालका अितिहास देखा जाय तो हममें से अनेकोंने तो वेतन घटानेका ही अनुभव किया है। दूसरी ओर हम जिन ग्रामोद्योगोंको बढ़ाना चाहते हैं, अुनके कारण हमारी आवश्यकताओंकी कीमत धनके रूपमें ज्यादा देनी पड़ती है। जब हम सेवाकार्यके जीवनमें नहीं थे, तब रिश्तेदारोंके साथ सामाजिक लेन-देनके व्यवहारोंके सम्बन्धमें हमारे कुछ खयालात बने हुअे थे। मीठे भोजनोंसे अतिथि-सत्कार करना, विवाहादि अवसरों पर भेंट देना, घरके शुभ-अशुभ प्रसंगों पर जातिभोज, ब्रह्मभोज आदि करना, बहन-बेटियोंको सौगात देना, व्रततीर्थ आदिमें दान करना, वगैरा वगैरा रिवाजोंका हम अपनी प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे पालन करते थे। अब तो हमने अुस प्रकारका जीवन छोड़ दिया है। फिर भी हमने परिवारको नहीं छोड़ा है। घर अुठा नहीं दिया है। आज भी हमारे यहां ये सब प्रसंग आते ही हैं।

तब अुन व्यवहारोंमें हमें विवेककी किस मर्यादासे काम लेना चाहिये? फर्ज कीजिये कि मेरी लड़कीकी शादी है। जमनालालजी मेरे पुराने मित्र हैं। वे भेंट देते हैं। पूर्व-जीवनमें अिसको स्वीकार करनेमें मुझे कोअी अुज्र नहीं होता, क्योंकि अुनके यहां वैसा प्रसंग आने पर मैं भी अुसके अनुरूप कुछ करनेकी अुम्मीद रखता। अब मैं कहता हूं कि सेठजी, अितनी बड़ी भेंट न दीजिये। लेकिन वे कहते हैं कि वह मेरी लड़की है, मैं क्यों न दूं? और वे आग्रह करके भेंट देते हैं। फिर अुनकी लड़कीका विवाह आता है। अुनकी लड़की मेरे लिअे भी पुत्रीवत् है। तब मुझे क्या करना चाहिये? पचासकी न सही तो क्या मैं २० रुपयेकी चीज अुसे दे सकता हूं? अुतनी रकम तो तीन महीनोंमें भी नहीं बचा सकूंगा। अैसी परिस्थितिमें मैं प्रतिष्ठा और मेरी लड़कीको मिली हुअी भेंटका खयाल करूं? अकसर हम लोगोंमें प्रतिष्ठा और योग्य प्रति-व्यवहार (बदलेमें व्यवहार) का खयाल आ जाता है और कअी बार कर्ज करके भी हम अैसा खर्च अपने अूपर अुठा लेते हैं। मैं अिसे ठीक नहीं समझता। मेरी दृष्टिसे तो मुझे यही विचार करना चाहिये कि अैसे व्यवहारों या लोकाचारोंको ठीक ठीक प्रतिष्ठित रूपमें चलानेका जीवन मैंने तभी छोड़ दिया जिस दिन मैं सेवाकार्यमें लग गया। अब तो अधिकसे अधिक मैं अपनी अेकाध पुस्तककी प्रति अथवा अपने सूतकी खादीका टुकड़ा या मोल लेना पड़े तो चार-आठ आनेकी चीज ही दे सकता हूं। अगर अितनी छोटी भेंट देनेसे जमनालालजी या अुनके परिवारके लोगोंको बुरा लगे तो मुझे समझना चाहिये कि यह अुनकी बेसमझ है, अिसमें मैं क्या करूं? वे बुरा मानेंगे तो दूसरे मौके पर मैं अुठा सकूं अुससे अधिक भार वे मुझ पर नहीं डालेंगे। वह तो बड़ी योग्य बात हो जायेगी।

"अिसी तरह दूसरे खर्चीले भ्रष्टाचारोंमें भी हमको अपनी मर्यादा पहचाननी चाहिये और परस्पर अेक-दूसरेको सावधान भी करते रहना चाहिये। आप जानते हैं कि बंगालका रसगुल्ला बहुत स्वादु होता है। और फर्ज कीजिये कि मुझे प्रफुल्लबाबूके यहां ठहरना है। क्या मैं यह अपेक्षा कर सकता हूं कि प्रफुल्लबाबू मुझे रसगुल्ला खिलायेंगे? और मैं अैसी अपेक्षा करूं भी तो प्रफुल्लबाबूको क्या करना चाहिये?

"अकसर मित्र लोग अितना विवेक हमेशा नहीं रखते हैं और हम लिहाजमें पड़कर अपनी शक्तिसे अधिक दिखावा करते हैं। अभी मैंने अेक

बात सुनी है। अेक सेवकके मित्रका विवाह हुआ। वे सेवक बड़े खानदानके हैं और अेक जमानेमें बड़े धनी भी थे। पर आज तो जैसा मैं और आप हैं वैसे ही वे हैं। विवाहके बाद वह मित्र अुन्हें मिलने आया और अुसने कहा कि आपने मुझे कोओी भेंट नहीं दी है। कार्यकर्ताने पूछा, आप क्या चाहते हैं? अुसने कहा कि यह जो अपनी शाल आप बेच डालना चाहते हैं वही मैं चाहता हूं। अब वह शाल सौ-डेढ़सौकी कीमतकी अेक बढ़िया चीज थी। और सेवकने अुसे अपने कर्जकी सफाओीके लिअे बेचनेको निकाली थी। यह जानते हुअे भी अुस मित्रने अुसे मांगा और खानदानके संकोचके कारण वे हमारे भाओी अुसके अविवेकको न रोक सके। अर्थात् वह मित्र शाल ले गया। अैसे प्रसंगोंमें अनुचित मांगोंका अिनकार करनेकी हिम्मत हममें होनी ही चाहिये; और यह हिम्मत तभी आ सकती है, जब हम अपने जीवन-परिवर्तनसे ठीक अेकरूप हो गये हों।

"अेक और बात विशेषतः तरुण कार्यकर्ताओंसे मैं कहना चाहता हूं। पूज्य बापूजी, राजेन्द्रबाबू, सरदार आदि हमारे अधिकतर सदस्योंसे अुम्रमें बहुत बड़े हैं। फिर भी वे कितने कर्मशील (अेक्टिव) हैं और कितना परिश्रम अुठा सकते हैं? मैं तो अुतना काम करनेकी शक्ति अपनेमें नहीं पाता हूं। दिन-प्रतिदिन वेगसे मेरी शक्ति कम हो रही है। लेकिन मैंने तो पूरा स्वास्थ्य कैसा होता है, अिसका अनुभव सारे जन्ममें शायद ही किया हो। फिर भी जब मुझसे तरुण कार्यकर्ताओंकी ओर मैं देखता हूं तब कुछ बेचैन हो जाता हूं। शरीरसे अच्छे दीखनेवाले और व्यायामकी शिक्षा प्राप्त किये हुअे जवानोंमें भी गर्मी-सरदी वगैरा सहन करनेकी क्षमता कम है। कार्योत्साह भी कम है। दो-चार दिनके कार्यक्रमको तो वे पूरा कर सकते हैं, पर दिन-प्रति-दिन किसी कामको स्थिरतासे करते रहनेमें मुश्किल महसूस करते हैं। नये नये काम सीख लेना, सीखे हुअे कामोंमें अपनी कुशलता बढ़ाना — अिसके लिअे जब मैं २५ या ३० सालकी अुम्रके तरुण-तरुणियोंमें अनुत्साह देखता हूं तो मुझे खेद होता है। अिसका कारण खोजता हूं तब अधिकतर यह पाता हूं कि अुन्हें बचपनसे अिंद्रियोंका परिश्रम करने और शीतोष्णादिकी तितिक्षा करनेकी आदतें नहीं डाली गओी हैं। मैंने कितने ही अतिवृद्ध स्त्री-पुरुष देखे हैं। अुनके शरीरमें तो सिवा हड्डीके कुछ भी नहीं रहा है। वे मुश्किलसे अुठते और फिरते हैं। फिर भी सुबहसे रात तक कुछ न कुछ काम किया ही करते हैं।

बेकार अुनसे बैठा ही नहीं जा सकता। अलबत्ता, अुनके काममें वेग नहीं होता है। वे धीरे धीरे काम करते हैं। लेकिन अपना काम स्वयं करनेका आग्रह रखते हैं। आंखें अच्छी हों और पढ़े-लिखे हों, तो वे कुछ न कुछ पढ़नेका भी अुत्साह रखते हैं। यह जो अुनसे होता है अुसकी वजह यह नहीं है कि अुनके स्नायुओंमें अब तक ताकत रही है, या अुनकी बुद्धि तेज़ है। मगर जिस प्रकार अेक चक्रको त्वरासे गति देकर छोड़ दिया जाय तो वह प्राप्त किये वेगसे फिरता रहता है, अुसी तरह जिन्होंने सारा जन्म अेक प्रकारका परिश्रम करनेमें बिताया है, अुनकी अिंद्रियोंको अैसी आदत ही हो जाती है कि वे अुस कामको बिछौना पकड़ने तक कर सकते हैं। हमारे शरीर और अिंद्रियोंको अैसा वेग प्राप्त होना यह अेक मूल्यवान सम्पत्ति है। वह बचपनसे परिश्रम करनेके मुहावरेसे ही प्राप्त होती है।

"आपने अनुभव किया होगा कि कअी लोग बीमारीके बाद भी, यद्यपि अुनका शरीर अभी दुर्बल ही होता है, काम पर चढ़नेकी शक्ति जल्दी महसूस करते हैं और कअी लोग शरीर पूर्णतया भर जाने पर भी ताकत महसूस नहीं करते। अच्छे कसरतवालोंकी भी अैसी हालत होती है। अिसकी वजह मेरी रायमें सिर्फ पूर्वाभ्यास — मुहावरा है। स्वामी रामदासने कहा है कि जवानीमें अरण्य-वास करो। मतलब कि तारुण्यमें शरीरको नाजुकपनका अभ्यास नहीं, बल्कि कठिन जीवनका अभ्यास कराना चाहिये। सहूलियत होने पर भी गर्मी-सर्दी सहन करने और परिश्रम करनेका मुहावरा कर लेना चाहिये। विद्यार्थियोंके लिअे व्यायामकी शिक्षाका प्रबन्ध करनेकी जरूरत पर आजकल जोर दिया जा रहा है। वह ठीक है। फिर भी यह याद रखना चाहिये कि सिर्फ व्यायाम द्वारा शरीरमें नित्य परिश्रम करनेकी या शीतोष्णादिको बरदाश्त करनेकी ताकत नहीं आती। और न वह कभी कभी अेकाध सप्ताहके स्काअुटिंगके कार्यक्रमकी योजना करनेसे अुत्पन्न होती है। वह तो बचपनसे रोज-ब-रोज नित्यके कठिन काम करते रहनेसे पैदा होती है और फिर वह शरीर तथा अिंद्रियोंका स्वभाव बन जाती है। मैं तो मानता हूं कि बच्चोंको न केवल बुद्धिमय अुद्योग ही सिखानेकी आवश्यकता है, पर जड़श्रमका मुहावरा करानेकी भी जरूरत है। अगर आप अपने बच्चोंकी बाल्यावस्था और अपना तारुण्य शरीर-परिश्रमपूर्वक बितायेंगे, तो अुनकी और आपकी वृद्धावस्था कम पराधीनताकी होगी।

"कार्यकर्ताओंकी दूसरी दो त्रुटियां भी मुझे बार बार अखरती हैं। समय-पालनका आग्रह हमारे स्वभावमें नहीं है। अतः किसी कामको समय पर करनेकी चिन्ता हमें कम होती है, और काम न हुआ तो अुसका बुरा भी कम लगता है। अुलटे, अगर कोओी अुसके लिअे हमें कुछ कहे, तो वह नाहक दोष निकालनेवाला मालूम होता है। अिसी तरह मुंशीगिरीके कामोंमें हम निश्चितताकी बहुत परवाह नहीं करते हैं। अिस दोषका मुझे बहुत अनुभव हुआ है। अतः अब मेरा यह स्वभाव ही बन गया है कि दूसरेके लिखे हुअे कागज पर बिना पढ़े मैं सही करना नहीं चाहता। अिसमें यह अविश्वास नहीं होता है कि लिखनेवाला मुझे धोखा देगा, लेकिन मैं अिसे नामुमकिन नहीं मानता कि अुसने लिखनेमें कुछ गलती या बेपरवाही न की होगी। फिर भी खानगी या दूसरे कामोंमें असावधानी और गलती हो ही जाती है। और जब अैसा होता है तब मुझे कष्ट होता है। लेकिन मुझे अनुभव है कि गलती करनेवाले अितना कष्ट महसूस नहीं करते हैं। आपको अनुभव होगा कि पूज्य बापूजीके पत्रोंमें कभी कभी अिशारा होता है कि 'फिरसे नहीं पढ़ा'। यानी साधारणतया वे अपने पत्र दुबारा पढ़ लेते हैं। लेकिन कुछ कार्यकर्ता अभिमानपूर्वक यह बताया करते हैं कि वे कभी अपने लिखेको दुबारा नहीं पढ़ते हैं। अुनको दो प्रकारका आत्म-विश्वास होता है। अपनी लेखन-शक्तिका और गलती रह गअी तो वाचककी अुसको ठीक कर लेनेकी शक्तिका। मेरी राय है कि अैसे मिथ्याभिमानी स्वभावके कारण हम कुशलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं और हमारा विकास भी थम जाता है। कभी कभी मैं महसूस करता हूं कि हमारे बहुतसे तरुण कार्यकर्ताओंके लिअे यह नियम होना चाहिये कि वे अेक वर्ष किसी बड़े मोदीकी दुकानमें और अेक वर्ष किसी बैंकमें या सालीसिटरकी पेढ़ीमें अनुभव लेने जायें और परिश्रम व सावधानीकी आदतें सीखें।

"कार्यकर्ताओंके जीवन-व्यवहारमें अेक और भी महत्त्वका विषय मुझे जोड़ना है, पर अुसके लिअे आज समय नहीं है। मौका मिला तो दूसरे समय मैं कहूंगा।"

मैं नहीं जानता कि वह दूसरा समय कभी आया या नहीं, लेकिन हम अितनेको भी पचा सकें तो बहुत है।

११

सेवाग्राम आश्रमकी नींव

अिन्हीं दिनों (सन् १९३६) यह तय हुआ कि बापूजी मगनवाड़ीसे जाकर सेगांव रहेंगे और मीराबहन पासके दूसरे गांव वरोड़ामें अपनी कुटिया बनाकर रहेंगी।

मीराबहन बापूको सेगांवमें बसानेकी व्यवस्था करने लगीं। बापूजी सेगांवको देखना चाहते थे। वे वहां ३० अप्रैलको जानेवाले थे। रातको मगनवाड़ीकी छत पर मैं सो रहा था। मुझसे श्री अमृतलालजी नाणावटीने आकर कहा, "आप बापूसे बात करना चाहते थे, अिसलिअे कल बहुत अच्छा मौका है। बापूजी कल सुबह पांच बजे सेगांव जा रहे हैं। अिसलिअे रास्तेमें आपसे सब बात हो जायगी।" अिस कार्यक्रमका मुझे बिलकुल पता नहीं था। बस, मैं बापूजीके साथ हो लिया। बापूजी जब वर्धासे गुजर रहे थे तो जमनालालजीके पुरोहित पं० रूडमलजी मिले। वे पहले जमनालालजीकी मगनवाड़ीकी खेती संभालते थे और बादमें सेगांवमें जाकर अुन्होंने अपना काम जमाया था। बापूजी अुन्हें देखकर हंसे और बोले, "आज सेगांव जा रहा हूं।"

रूडमलजीने कहा, "मगनवाड़ी तो छीन ली, अब सेगांव भी ले लीजिये।"

बापूने कहा, "मेरा और काम ही क्या है?"

अुस समय जमनालालजीके मुनीम श्री चिरंजीलालजी बड़जाते बापूके साथ थे। और लोग भी थे। गाड़ीका साधारण रास्ता था सो भी हम भूल गये थे। साथमें बैलगाड़ी तो थी, लेकिन बापू पैदल ही गये।

मीराबहनने बापूजीके लिअे कुअेंके पास अमरूदके बगीचेमें बांसकी चटाअीकी अेक झोंपड़ी, चलता-फिरता अेक पाखाना और चार खंभोंके आसपास बांसकी चटाअी लपेटकर स्नानघर बनाया था। अेक बकरी भी रखी थी। मीराबहनकी अेक गाय और अेक घोड़ा भी था। घोड़ेका नाम सजीला था। अेक बिल्ली और अेक कुत्तेका बच्चा भी अुन्होंने पाल रखा था। बापूजीके पहुंचने पर अुनके लिअे अेक पेड़के नीचे चटाअी बिछा दी। अुस पर अुनका सब

सामान रख दिया। बापूजीने स्नान किया, सब देखा और अपने काममें लग गये। शामकी प्रार्थना बस्तीमें हुआी। श्री जमनालालजी भी पहुंच गये थे। बापूजीने हिन्दीमें भाषण दिया। अुसका मराठीमें अनुवाद करके लोगोंको सुनाया गया। अनुवाद करनेवाले कौन थे यह मुझे पता नहीं था। लेकिन बादमें सीकरमें पूज्य जाजूजीने बताया था कि यह अनुवाद अुन्हींने किया था। बापूजीने अपने भाषणमें कहा था: "मैं आपके गांवमें आ गया हूं, आप लोगोंकी सेवाकी दृष्टिसे। मीराबहन, जो आप लोगोंके बीचमें रहती हैं, यहां हमेशाके लिअे बस जानेका अिरादा लेकर आअी थीं। मगर मैं देखता हूं कि अुनकी वह मंशा पूरी नहीं हो रही है। कमी अुनमें अिच्छाशक्तिकी नहीं है, पर शायद अुनका शरीर अशक्त है। यह तो आप जानते हैं कि हम दोनों अितने समयसे अेक सामान्य सेवाके बंधनसे बंधे हुअे हैं। अिसलिअे मैंने सोचा कि जो काम मीराबहन न कर सकीं, अुसे पूरा करना मेरा धर्म हो जाता है।

"परन्तु बचपनसे ही मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि मुझे अुन लोगों पर अपना भार नहीं डालना चाहिये, जो अपने बीचमें मेरा आना अविश्वास, सन्देह या भयकी दृष्टिसे देखते हैं। . . . अिस भयके पीछे यह कारण है कि अस्पृश्यता-निवारणको मैंने अपने जीवनका अेक ध्येय बना लिया है। मीरा-बहनसे तो आपको यह मालूम हो ही गया होगा कि मैंने अपने दिलसे अस्पृश्यता संपूर्णतया दूर कर दी है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, महार, चमार सभीको मैं समान दृष्टिसे देखता हूं और जन्मके आधार पर माने जानेवाले अिन तमाम अूंच-नीचके भेदोंको मैं पाप समझता हूं। . . . पर मैं आपको यह बता दूं कि अपने अिन विश्वासोंको मैं आप पर लादना नहीं चाहता। मैं तो दलीलें देकर, समझा-बुझाकर और सबसे बढ़कर अपने अुदाहरणके द्वारा आप लोगोंके हृदयसे अस्पृश्यता या अूंच-नीचका भाव दूर करनेका प्रयत्न करूंगा।

"आपकी सड़कों और बस्तियोंकी चारों तरफसे सफाअी करना, गांवमें कोअी बीमारी हो तो यथाशक्ति लोगोंको सहायता पहुंचानेकी कोशिश करना और गांवके नष्टप्राय गृह-अुद्योगों या दस्तकारियोंके पुनरुद्धारके काममें सहायता देकर आप लोगोंको स्वावलम्बी बननेकी शिक्षा देना — अिस तरह मैं आपकी सेवा करनेका नम्र प्रयत्न करूंगा। आप मुझे अिसमें अपना सहयोग देंगे तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

सभाके बाद सेगांवके दो सज्जनोंने बापूजीके अिस निश्चयका हार्दिक स्वागत किया और सहयोगका वचन दिया। परन्तु बूढ़े पटेल श्री काशीरावने खड़े होकर कहा, "महात्माजी, आप यहां आये हैं अिससे हमें आनन्द होता है। आपकी सब बातें हमें कबूल हैं, लेकिन हरिजनोंके साथ मिलनेकी आपकी बात हमको कबूल नहीं है।" बापूजी खूब हंसे और बोले, "धीरे धीरे आपको सब बात समझमें आ जायगी।"

अुसी दिन गांवमें अेक फौजदारीका केस हो गया था। किसीने अेक आदमीका सिर फोड़ दिया था। जब प्रार्थना हो रही थी तभी लोग खूनसे लथपथ अुस आदमीको बापूके पास लाये। वे लोग मामला पुलिसके हाथोंमें सौंपना चाहते थे। प्रार्थना पूरी होनेके बाद बापूने अुन्हें समझाया कि यह मामला पुलिसके हाथमें देनेसे दोनों पक्ष हैरान होंगे। जिसने अिस भाअीका सिर फोड़ा अुसने बड़ी भूल की। लेकिन आपको अुसे माफ कर देना चाहिये। अपने गांवके झगड़े आप आपसमें शांतिसे निबटा लिया करेंगे, तो ही गांवमें प्रेम और मेल रहेगा और गांव अूंचा अुठेगा। लोग बापूकी बात समझ गये और शान्त हो गये। अिस प्रकार पहले ही दिन बापूको अनुभव मिल गया कि गांवमें कैसी-कैसी समस्याओंका सामना करना पड़ेगा और गांवके प्रश्नोंको किस प्रकार शांति और समझौतेकी भावनासे हल करके गांवके लोगोंमें प्रेम और हेलमेल बढ़ाना होगा।

अुस रोज मैंने सेगांवसे लौटकर महिलाश्रममें अपने मित्र सत्यदेवजीके यहां भोजन किया और सो गया। सुबह फिर सेगांव गया। बापूजीके साथ काफी चर्चा हुअी। जब शामको चलने लगा तो बापूजीने पूछा, "कहां जाते हो?"

मैंने कहा — महिलाश्रम।

बापू — वहां क्या करोगे?

मैं — भोजन करूंगा और वहीं सोअूंगा। कल सुबह फिर आ जाअूंगा।

बापूने कहा — क्यों, क्या सिर्फ भोजन करनेके लिअे जाते हो?

मैंने कहा — हां जी, आपने तो यहां किसीको भोजन न देनेका निश्चय किया है न?

बापूने कहा था कि वे सेवाग्राममें अकेले ही रहेंगे। ज्यादासे ज्यादा बा और लीलावतीबहन अुनके साथ आ सकती हैं। दूसरा कोअी आयेगा

तो वे अुसे खाना भी नहीं देंगे। अिसलिअे मैं खाना महिलाश्रममें खाता था और बात करनेके लिअे बापूके पास आ जाता था।

मीराबहनके पास सेगांवका अेक गोविन्द नामका लड़का था, जिसे वे बापूजीकी सेवाके लिअे तैयार कर रही थीं। क्योंकि मीराबहनको तो वहां रहनेकी अिजाजत नहीं थी। अुन्हें पासके ही वरोड़ा गांवमें जाना था। बापूजी जब गये तब दूसरा अेक लड़का दशरथ बापूजीके पास आया और कहने लगा, "मुझे तकली सीखनी है।" बापूजीने मुझसे कहा, "अच्छा, तुमको रोटी यहीं मिल जायगी। मीराबहनके पास थोड़ा आटा होगा। तुम यहां रहकर अिन दोनों लड़कोंको धुनना और कातना सिखा दो।"

मुझे तो अितना ही चाहिये था। अुन दोनोंको धुनना और कातना सिखाना और अुसके बदलेमें रोटी। दूसरे दिन भाअी मुन्नालालजी बजाजवाड़ीसे बापूजीके पास आ गये थे। अुन्होंने मीराबहनके लेख 'हरिजन' में पढ़े थे और वे मीराबहनके साथ सत्संगके लिअे सेगांव रहना चाहते थे। बापूजीके साथ अुनका परिचय पुराना था। जब अुन्होंने सेवाग्राममें रहनेकी बात की तो बापूने अुनसे कहा कि अगर मीराबहन स्वीकार करें तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। मीराबहनने अुनकी बात कबूल की और वे सेवाग्राममें रहने लगे। अिस प्रकार सेवाग्राममें हम दोनोंका प्रथम प्रवेश हुआ।

अभी बापूजी दो चार दिन रहकर सिर्फ सेगांव देखने गये थे। जिस स्थान पर अिस समय आश्रम है वहां पहले जमनालालजीका बड़ा खेत था और वहां पर अुनकी खेती चलती थी। अुसमें से अेक अेकड़ जमीन अुन्होंने आश्रमके लिअे दी थी। मिट्टीकी दीवारका जो आदि-निवास है अुसकी नींव बापूजीका निवास-स्थान बनानेके लिअे खुदी थी। मीराबहनने बा और बापूके लिअे रस्सीकी दो खाटें बनाकर तैयार कर रखी थीं। खुदी हुअी बुनियादके बीचमें बापू-जीकी खाट बिछायी गअी और बुनियाद पर तख्ता रखकर आने-जानेका मार्ग बनाया गया। बापूजी दिनमें बगीचेमें काम करते और रातको वहां सोते थे। शामकी प्रार्थना सेगांवमें होती थी और प्रातःकालकी वहीं पर। अुन्हीं दिनों पू० काकासाहब और नाणावटीजी भी अेक रोज बापूजीसे मिलने आ गये थे और वहीं सोये थे। मेरे बापूजीके पास रहने न रहनेका कोअी निर्णय नहीं हुआ था। लेकिन बापूजीने कहा कि अभी तो मैं नन्दी हिल जाता हूं, तब तक तुम मीराबहनके पास रहकर मकान और रास्ता

बनवानेमें मदद करो। वहांसे लौट आने पर विचार करेंगे। तुमको भी तब तक विचार करनेका मौका मिलेगा। अिस प्रकार अेक महीना मीराबहनके काममें मदद करनेका निश्चय हुआ। ५ और ६ मअीको पवनारमें खादीयात्रा थी। बापूजी सेगांवसे सीधे पैदल ही पवनार गये और खादीयात्रामें अपना भाषण देकर वर्धा चले गये। वहांसे अुसी दिन या दूसरे दिन नन्दी हिल चले गये। पू० बा भी अुस समय बापूजीके साथ थीं।

मेरा सामान मगनवाड़ीमें था। अुसे लेकर मैं सेगांवमें रहनेके लिअे चला आया।

सेगांवका मकान और रास्ता बनाना था। क्योंकि वर्धासे टेकरी तक तो गाड़ीका रास्ता था, किन्तु अुसको आश्रमके साथ मिलानेका कोअी रास्ता नहीं था। बीचमें लोगोंके खेत पड़ते थे, अिसलिअे सीधा रास्ता तो नहीं बन सका। परन्तु जहां जमनालालजीके अधिकारकी बंजर भूमि थी वहांसे रास्ता बनाया, जो आज भी टूटी-फूटी हालतमें बगीचे और गोशालाके दक्षिणसे घूमकर आता है। मकानका काम मुझे और रास्तेका काम श्री मुन्नालालजीको सौंपा गया। हम दो सिपाही थे और मीराबहन हमारी जनरल! अिस तरह हमारी फौज तैयार हुअी। अेक महीनेमें बापूजीके आनेसे पहले रास्ता और मकान तैयार करना था। अुस समय वहां मजदूर तो काफी मिलते थे। लेकिन चूंकि मकानकी दीवार मिट्टीकी बनानी थी, अिसलिअे अुसके सूखने पर धीरे धीरे काम चलता था। दिन निकलनेसे पहले ही स्त्री और पुरुष मजदूरोंकी जरूरतसे ज्यादा भीड़ हो जाती थी। अधिकांश लोगोंको बड़ी कठिनाअीसे और दुःखसे वापस करना पड़ता था। अुस समय अेक पुरुषकी मजदूरी ढाअी या तीन आने और अेक स्त्रीकी मजदूरी पांच या छह पैसे थी। सुबहसे शाम तक हम काम करते रहते और रातको आठ बजेके बाद हमारा भोजन होता। सचमुच ही हमारे वे दिन अुत्साह और आनन्दके थे। जब आंधी-तूफान व वर्षा होती तो मीराबहनकी गाय और घोड़ेको जमनालालजीके बैलोंके साथ और बापूजीकी बकरीको किसी अेक कोनेमें बांध देते थे और हम तीनोंकी खाटें अुस कोठरीमें रहतीं, जो आज कुअेंके पास अुत्तर-दक्षिणमें बनी हुअी तीन चार कोठरियोंमें से अुत्तरकी अन्तिम कोठरी है। जब हम तीनों अुस कोठरीमें पहुंच जाते तो अैसे आनन्दका अनुभव करते, मानों किसी राजाके महलमें पहुंच गये हों।

आज अुस बेचारीको कोअी पूछता भी नहीं। यों ही टूटी-फूटी हालतमें पड़ी है। समयकी कैसी बलिहारी है!

अुन्हीं दिनों मेरा मीराबहनसे निकट संबंध आया। हम तीनों सगे भाअी-बहनकी तरह काममें जुटे रहते थे। कभी कभी हमारी आपसमें चकमक भी झड़ जाती थी। परंतु अधिकतर दिन तो कामके आनन्दमें और रात नींदके आनन्दमें बीतती थी।

अुसी समय मीराबहनको दौड़-धूपमें बुखार आ गया। बापूजीने अुन्हें वर्धा जानेकी सलाह दी थी, मगर अुन्होंने सेगांव नहीं छोड़ा और हमारी सेवासे ही संतोष माना। अिसका बहुतसा स्पष्टीकरण मीराबहनके पत्रोंसे हो जाता है। बरसात सिर पर झूल रही थी और कभी कभी पानीके झोंके भी आ जाते थे। अेक रोज तो बापूजीके स्नानघरका बना-बनाया काफी हिस्सा पानीसे गिर गया। अगर अुन दिनोंका पूरा वर्णन लिखने बैठूं तो अेक स्वतंत्र पुस्तक बन सकती है। अैसे अुत्साह और आनन्दका फिर अनुभव नहीं हुआ। पू० बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

मीराबहनने खबर दी है कि सेगांव पहुंच गये हो। अच्छा हुआ। अब मीराबहनकी सेवा करो और प्रफुल्लित रहो। मेरी आशा है कि कहीं जानेकी अिच्छा मेरे आने तक नहीं होगी। गोविन्द और दशरथको अच्छी तरह प्यार करो। शरीर अच्छा रखो।

नन्दीदुर्ग, १४–५–'३६ बापूके आशीर्वाद

बाकी पत्र तो मीराबहनके नाम आते थे। अुनमें ही जो कुछ सूचना हमारे लिअे होती थी बापूजी लिखते थे। अुनमें से अेक महत्त्वपूर्ण पत्र जनताके लिअे बोधप्रद होनेसे यहां देता हूं, जिसकी नकल मेरे पास है। अिसके लिअे मैं मीराबहनकी अिजाजत नहीं ले सका हूं। लेकिन मुझे विश्वास है कि मीराबहन आपत्ति तो कर ही नहीं सकतीं। बापूजीने अुन्हें लिखा:

चि० मीरा,

आशा है नन्दीसे भेजे मेरे पत्र तुम्हें मिल गये होंगे। हां, डॉ० अन्सारीकी मृत्यु मेरे लिअे अेक भारी व्यक्तिगत हानि है। जन्म और मृत्यु दोनों ही महान रहस्य हैं। यदि मृत्यु दूसरे जीवनकी पूर्वस्थिति

नहीं है, तो बीचका समय अेक निर्दय अुपहास है। हमें यह कला सीखनी चाहिये कि मृत्यु किसीकी और कभी भी हो, अुस पर हम हरगिज रंज न करें। मेरे खयालसे अैसा तभी होगा जब हम सचमुच अपनी मृत्युके प्रति अुदासीन होना सीखेंगे। यह अुदासीनता तब आयेगी, जब हमें सचमुच हर क्षण यह भान होगा कि हमें जो काम सौंपा गया है अुसे हम कर रहे हैं। लेकिन यह कार्य हमें कैसे मालूम होगा? वह अीश्वरकी अिच्छा जाननेसे होगा। अीश्वरकी अिच्छाका पता कैसे चलेगा? वह प्रार्थना और सदाचरणसे चलेगा। असलमें प्रार्थनाका अर्थ ही सदाचरण होना चाहिये। हम रामायणसे पहले हर रोज प्रार्थनामें अेक गुजराती भजन गाते हैं, जिसकी टेक यह है: 'हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे.' प्रार्थनाका अर्थ अीश्वरके साथ अेक होना करना चाहिये।

खुशी है कि मकान बनानेमें प्रगति हो रही है। कमसे कम फिलहाल वरोड़ाकी जमीन और मकान बनानेके लिअे ३०० रुपये काफी होने चाहिये। मैं चाहता हूं कि तुम बाड़को तंग कर लो। अुसके लिअे मजदूरी देनेकी आवश्यकता न होनी चाहिये। तुम्हारी देखरेखमें बलवन्तसिंह और मुन्नालालको बाड़ लगा लेना चाहिये। सामान पर तो लगभग कुछ भी खर्च न होना चाहिये। बाड़ और थोड़ीसी छाया ही मुख्य चीज है।

सस्नेह
बापू

हमारा मकानोंका काम चल रहा था। जिसको अब आदि-निवास कहते हैं वह मकान बन गया था। अुसके पश्चिम-दक्षिणमें दो छोटी कोठरियां थीं, जिनमें से अेकमें शौचालय और अेकमें स्नानघर था। मकानके ठीक पश्चिममें अेक छोटीसी गोशाला बनाअी, जो दरवाजेके पासके मकान और बड़ी कतारके बीचमें नीचा-सा मकान है। प्रार्थना-भूमि तैयार की, जो आज भी वैसी ही है और जहां आज भी प्रार्थना होती है। वर्षाका मौसम आ रहा था। हम लोग मकान पर छत डालनेकी बहुत जल्दी मचा रहे थे।

ज्यों ज्यों बापूके आनेकी तारीख नजदीक आती जाती थी, त्यों त्यों हमारे कामकी तेजी और घबराहट बढ़ती जाती थी। कहीं अैसा न हो

कि मकान तैयार न हो और बापू आ जायं। १५ जूनको बापूजी नन्दी हिलसे मगनवाड़ी आ गये और हमको खबर दी कि "मैं कल सेगांव पहुंच रहा हूं, रेलवेकी चौकी पर रास्ता बतानेके लिअे अेक आदमीको भेज देना।" मकानके नीचेकी जमीन गीली थी। हमने अुसे रातभर लोहेके तसलोंमें आग जलाकर सुखानेकी कोशिश की। अुसी रातको १० बजेसे भयानक तूफान और बरसात शुरू हुअी और लगातार गिरती रही। हमने सोचा कि अैसे तूफानमें बापूजी नहीं आ सकते। अिसलिअे हमने चौकी पर आदमी नहीं भेजा। अुधर वर्धामें दस पांच मिनटके लिअे पानी थम गया। बापूजीने कनुभाअीसे कहा, "देखो, निकल सकते हैं क्या?" कनुभाअीने कहा, "हां, अब तो पानी बंद है।" लेकिन बापू मगनवाड़ीसे निकले त्यों ही पानी फिर शुरू हो गया। बापूने कहा, "कुछ भी हो, अब वापिस नहीं लौटेंगे।" अिधर हम तीनों मकानके किवाड़ बन्द करके अन्दर बैठे थे। हमें खयाल भी न था कि बापूजी अैसी वर्षामें आ सकते हैं। थोड़ा किवाड़ खोला और रास्ते पर हमारी नजर पड़ी तो हममें से शायद मीराबहन ही चिल्ला अुठीं, "अरे, बापूजी आ गये!"

मैं छाता लेकर दौड़ा। बापूजी बोले, "अरे, अब तेरा छाता क्या करेगा?" बापूजी पानी और कीचड़में लथपथ हो गये थे। अुनके साथ श्री कमलनयन बजाज और मुनीम श्री चिरंजीलालजी बड़जाते भी थे। अुनके पास तो बरसाती कोट थे, परंतु बापूजी अपनी लंगोटीमें ही थे। हमने आदमी नहीं भेजा अिसलिअे बड़ा दुःख हुआ। लेकिन हमको क्या पता था कि अिस तूफानमें भी वे आ सकते हैं। बापूजीने कपड़े बदले और हमने अुनको कम्बल ओढ़ा दिये। अुनको खूब ठंड लग रही थी।

बापूजीने कहा, "यों तो मैंने दक्षिण अफ्रीकामें बहुतसी मुसीबतें अुठाअी हैं, मगर अितने भयंकर तूफानमें अितना लंबा रास्ता तय करनेका मेरे जीवनमें यह पहला मौका है।" मानो गांवमें रहनेकी कठिनाअियोंका प्रथम दर्शन भगवानने बापूको करा दिया। गांवमें रहनेसे किन किन मुसीबतोंका सामना करना पड़ेगा, अिसकी कल्पना अुस तूफानने पहले ही दिन बापूजीको करा दी। अुस दिनका चित्र आज भी जैसाका तैसा मेरी आंखोंके सामने नाच रहा है। बापूजीको हमने कहां लिटाया था, कैसे कम्बल ओढ़ाये थे, वे कैसे कांप रहे थे और हमको भी अुन्हें देखकर कितनी मानसिक

ठंड सता रही थी, यह सब आज भी वैसा ही ताजा है। अगर मैं चित्रकार होता तो आज साराका सारा चित्र खींचकर पाठकोंको बता सकता था।

अिस तरह स्थायी रूपसे बापूजीके सेवाग्राम-निवासका श्रीगणेश हुआ।

१२

कार्यका आरंभ और विस्तार

बापूजीका फैसला

जैसा कि अूपर लिखा जा चुका है, बापूजीकी सेवाके लिअे मीराबहनने गोविन्द नामक अेक हरिजन लड़केको तैयार किया था। बापूजीको कब खाना देना, कब क्या करना, आदि सब बातें अुसे समझा दी गअी थीं। मेरे जिम्मे सहज ही मीराबहनकी गाय और बापूजीकी बकरीकी सेवाका काम आया। पाखाना-सफाअी, बापूजीके कमोड वगैराकी सफाअी भी मैं ही करता था। क्योंकि बापूजीके आते ही मीराबहनका वरोड़ाकी झोंपड़ीमें चला जाना तय हो चुका था। तदनुसार वे वहां चली गअीं और हमने बापूजीका चार्ज संभाल लिया। अभी तक मेरे सेवाग्राम रहनेका कोअी निश्चय नहीं हुआ था। १८ जूनको बापू आगेके कामके बारेमें सोचने बैठे। मुझसे कहा: “मैं तुमसे खुश हूं। मीराबहनको तुमने काफी संतोष दिया है। अिसलिअे मैं तुमको कहता हूं कि तुम्हारी जहां भी जानेकी अिच्छा हो जा सकते हो।” मेरी जानेकी तैयारी तो थी ही, लेकिन अपनी जिम्मेवारी पर मैं जाना नहीं चाहता था। अुसका अर्थ यह होता कि मैं खुद ही बापूको छोड़कर चला गया। अिसलिअे मैं चाहता था कि बापू अपनी तरफसे मुझे कहें कि तुम फलां जगह जाओ तो अच्छा हो। अिससे मुझे अेक प्रकारका अुत्साह रहता। मैं यह भी देख रहा था कि बापूजी मुझे दिलसे छोड़ना नहीं चाहते थे। अिसलिअे मैंने कहा कि मैं अपने लिअे कुछ भी निर्णय नहीं करता हूं। सब आपके अूपर छोड़ता हूं। मेरे लिअे जो ठीक हो आप ही करें।

बापूजी गंभीर हो गये और बोले — अैसी बात है?

मैंने कहा — जी हां।

बापू — देखो, खूब सोच लो।

मैंने कहा — खूब सोच लिया है।

बापू — अगर मैं तुमको काश्मीर या कन्याकुमारी भेजूं तो जाओगे?

मैंने कहा — जी हां।

बापू — और मैं यहां रहनेके लिअे कहूं तो?

मैंने कहा — यहां रहूंगा।

बापूने कहा — तो मैंने फैसला कर दिया। तुमको यहीं रहना है।

मैंने कहा — ठीक है।

बापूने कहा — अब हमको आगेके कामके बारेमें सोच लेना चाहिये। अगर हम अिसी अेक अेकड़ जमीनमें घिरे पड़े रहे तो हमारा यहां आना व्यर्थ होगा। हमको तो देहातकी सेवा करना है। वह हम कैसे कर सकते हैं यह सोचो। अुसके लिअे जो साधन-संपत्ति चाहिये वह मैं जुटा दूंगा। हम देहातके जीवनमें कैसे प्रवेश कर सकते हैं और अुनकी आमदनी बढ़ानेमें क्या मदद कर सकते हैं? सफाअी और आरोग्यके लिअे क्या करना होगा? ये सब बातें सोचनेकी हैं।

रोगियोंका अुपचार

बापूजीने अुस मकानके अेक कोनेमें अपना डेरा जमाया। पूर्व-दक्षिणके कोनेमें बापूजी रहते थे। अिस समय बा बापूजीके साथ नहीं थीं। बापूजीने तय किया कि सुबह रोज अेक घंटा वे सेगांवके रोगियोंको दिया करेंगे। हमने गांवमें खबर कर दी। सबेरे रोगी आते और बापूजी अुन्हें देखते। बापूजीके दवाखानेमें तीन चीजें मुख्य थीं। सोडा-बाअी-कार्ब, केस्टर ऑअिल और अेनीमा। और समझानेके लिअे अुनकी वाणी। रोगी आते, बापू अुनको देखते, हाल पूछते और किसीको केस्टर ऑअिल, किसीको नीबूके साथ सोडा और जिसका पेट बहुत खराब हो अुसे अेनीमा देते थे। किसीसे कहते, भाजी खाओ; किसीसे कहते, छाछ पीओ; किसीको मिट्टीका प्रयोग बताते।

आजका कस्तूरबा दवाखाना भी बापूजीके अुस छोटेसे पौधेका ही रूप है, जिसका आज वटवृक्ष बन रहा है। बापूजीने तो अपने प्राकृतिक साधनोंसे ही अपना प्राकृतिक चिकित्सालय आरम्भ किया था। और वे अैसे प्राकृतिक चिकित्सककी खोजमें थे, जो सेवाग्राममें प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा ही यहांकी

गरीब जनताकी सेवा यहींके साधनोंसे कर सके। सेवाग्राममें डॉक्टर तो अनेक आये और गये। कोअी मालिशका, कोअी रीढ़की हड्डीका, कोअी डिस्टिल्ड वाटर — भापके पानी — द्वारा ही सब रोगोंका अिलाज करनेवाला। डॉक्टर केलकरने भापके पानीके पीछे हृदयसे जितना श्रम किया अुतना किसीने नहीं किया। डॉक्टर दासकी यह मान्यता थी कि भोजनको व्यवस्थित करने यानी अमुक खुराकके साथ किस पदार्थका मेल है और किसका नहीं, अिस तरहसे भोजनकी व्यवस्था होनेसे कमसे कम रोग होंगे। डॉक्टर हीरालाल शर्माको बापूजीने बड़ी आशासे प्राकृतिक चिकित्साका अभ्यास करनेके लिअे अमेरिका आदि देशोंमें भी भेजा था। वे चाहते थे कि शर्माजी सेवाग्राममें रहकर आसपासकी जनताको अपने ज्ञानका लाभ दें। लेकिन अुनकी यह आशा पूरी नहीं हो सकी। शर्माजीने खुरजाके पास देहातमें अेक प्राकृतिक चिकित्सालय खोला, जिसके लिअे बापूजीने गांधी-सेवा-संघसे काफी आर्थिक सहायता दिलाअी। लेकिन वह भी नहीं चल सका।

अगर कोअी सेवाभावी और धुनका पक्का प्राकृतिक चिकित्सक बापूजीको मिला होता, तो आज अुरुलीकांचनमें बालकोबाजीकी देखरेखमें जो निसर्गोपचार आश्रम चल रहा है, वैसा या अुससे भी विशाल प्राकृतिक चिकित्सालय सेवाग्राममें खड़ा होनेका पूरा पूरा अवकाश था।

बापूजीके जीवनका मूलमंत्र यह रहा है कि जिस प्रकारके सेवक अुन्हें मिलें अुनके लिअे अुसी प्रकारका सेवाक्षेत्र तैयार कर दें। यहांके कामके लिअे अुनको सुशीलाबहन मिलीं, जो अेलोपैथीकी अूंची परीक्षा पास करके आअी थीं। बस, बापूजीने अुनको ही यह क्षेत्र सौंप दिया और अुनको जिन साधनोंकी जरूरत महसूस होती गअी, वे सब साधन बापूजी जुटाते गये। पहले तो आश्रममें ही यह दवाखाना छोटे रूपमें आरम्भ हुआ। सुशीलाबहनने अपनी मददके लिअे शंकरन् नायर और प्रभाकरजीको तैयार किया। ज्यों ज्यों रोगियोंकी संख्या बढ़ती गअी, त्यों त्यों मकान और साधनोंकी जरूरत भी महसूस होती गअी। अिसलिअे दवाखाना आज जहां है अुस मकानमें लाना पड़ा। यह मकान घनश्यामदासजी बिड़लाने अपने लिअे और अपने मेहमानोंके लिअे बनवाया था। पूज्य बाकी मृत्युके बाद अिस दवाखानेका नाम पूज्य बाके नामसे कस्तूरबा दवाखाना पड़ा। फिर तो वहां बहनोंको नर्सिंगका शिक्षण देनेकी व्यवस्था की गअी, रोगियोंको रखनेका प्रबन्ध हुआ

और प्रसूतिका प्रबन्ध भी हुआ। कुष्ठरोग और आंखोंके अिलाजका प्रबंध भी हुआ। रोग-प्रतिबन्धके लिअे अिस दवाखानेकी ओरसे देहातोंमें काफी प्रयत्न किया जा रहा है। दवाखानेके आसपासके देहातोंमें कअी अुपकेन्द्र भी हैं। काफी दूर दूरसे रोगी अिलाजके लिअे यहां आते हैं। २४–२५ रोगियोंको रखनेकी स्थायी व्यवस्था भी है। प्रसूतिके लिअे भी १०–१५ स्त्रियोंको रखनेकी व्यवस्था है। लेडी डॉक्टरोंमें प्रथम विजयाबहनने यहां खूब सेवा की। वासंतीबहन और मधुबहनने भी अच्छा काम किया। डॉक्टर वार्देकर जबसे दवाखानेके साथ जुड़े तबसे व्यवस्थामें काफी सुधार हुआ। अेक्सरे और ऑपरेशनकी व्यवस्था भी की गअी। देहातकी गर्भवती स्त्रियोंका पहलेसे ही निदान करके अुन्हें मदद दी जाती है। आजकल डॉक्टर रानडे निष्ठापूर्वक दवाखाना संभाल रहे हैं। अिनका स्वभाव सेवाग्रामके वातावरणके बिलकुल अनुकूल है। यह दवाखाना आज आश्रमकी प्रवृत्तियोंमें से विकसित अेक मुख्य प्रवृत्ति माना जायगा।

प्रार्थना

बापूने सोचा था कि मीराबहनके लिअे अेक गाय रखेंगे और अपने लिअे बकरी। हम लोग गांवमें से कुछ दूध लेते थे। अुस समय सारे सेगांवमें सिर्फ ३ सेर गायका दूध होता था। शामकी प्रार्थना हम सेगांवमें करते थे। लोग आते थे। बापूजीसे कुछ कहते थे। सुबहकी प्रार्थना आश्रममें होती थी। अेक प्रसंग अैसा भी याद है जब कि प्रार्थनामें मैं और बापूजी सिर्फ दो ही आदमी थे। श्लोक बापूजीने बोले थे और भजन 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' मैंने गाया था। गाते गाते मेरा गला रुंध गया था, मानो मैं बापूजीसे क्षमा मांग रहा था। बापूजी रोज सुबह घूमते समय ग्रामसेवा पर चर्चा करते थे और हमारे मनमें जो प्रश्न हों अुनका अुत्तर देते थे। रोज सुबह बापू मीराबहनकी झोंपड़ी तक जाते, अुनकी खैर-खबर पूछते और अुन्हें दूध पहुंचाते थे।

प्रार्थना बापूजी ही कराते थे, क्योंकि हममें बापूजीका ही स्वर अच्छा था। हम अुनका साथ देते थे। गीता भी बापूजी ही बोलते थे। बादमें भाअी मुन्नालालजीने बड़ी मेहनतसे गीता बोलनेका अभ्यास कर लिया था। जहां अुनकी भूल होती बापूजी नोट कर लेते और बादमें बताते थे। बादमें कन गांधीने भी गीताका अभ्यास कर लिया। वर्धाके अेक संस्कृतके पंडित

अिनको सिखानेके लिअे सुबह पैदल चलकर आते थे और जो सीखना चाहे अुसका पाठ शुद्ध कराते थे। मुझे तो समय ही नहीं मिलता था। लेकिन मुन्नालालभाअीने अुनका बहुत लाभ अुठाया और अुनका पाठ काफी शुद्ध हो गया था। बोलनेकी गति भी सवा घंटेमें सारे गीता-पारायणकी हो गअी थी। अुनकी आवाज मेरे कानोंको सहन नहीं होती थी। मैंने बापूजीको अपनी कठिनाअी बताअी। बापूजीने गीतापाठके समय मुझे प्रार्थनासे अुठकर चले जानेकी अिजाजत दे दी। अतः गीता प्रारम्भ होने पर मैं प्रार्थनासे अुठकर चला जाता था। मुन्नालालजीने गीताका अितना अभ्यास किया कि अुससे अुनके कंठमें भी काफी सुधार हो गया और मुझे भी वह अच्छा लगने लगा।

खुलेमें सोनेके लाभ

मैं बापूजीका पीर तो नहीं, लेकिन बबरची-भिश्ती-खर जरूर था। भोजन बनाना, पाखाना-सफाअी करना, बकरीकी सेवा करना, दूसरी सफाअी करना, रातको सोते समय बापूजीके पैरोंकी मालिश भी करना। बापूजी तो खुले आकाशके नीचे सोते थे। जब रातको पानी आता तब अुनका बिस्तर भी मैं भीतर करता और बरामदेमें टट्टे लगाता। कअी बार अंदर-बाहर जानेका कार्यक्रम रातमें तीन चार बार भी हो जाता। क्योंकि बापूजी कहते थे कि खुलेमें दो तीन घंटेकी नींद छतके नीचे ली गअी रातभरकी नींदकी पूर्ति कर देती है। दूसरी बात यह कि खुलेमें थोड़ी जगहमें बहुत आदमी सोयें तो कुछ भी नुकसान नहीं होता। छतके नीचे अधिक आदमी सोयें तो वहांकी हवा खराब होती है। जब मैंने गोशालामें अपने लिअे कमरा बनानेकी बात की, तो बापूजीने कहा, "बरसातसे बचनेके लिअे अूपर छत भले बनाओ, लेकिन आसपासकी दीवारोंकी क्या जरूरत है? खुली छतके नीचे जितने आदमी सो सकते हैं अुतनी जगहमें दीवारोंके अन्दर नहीं सो सकते। क्योंकि खुलेमें सोनेसे हमारे अंदरसे जो गंदी हवा निकलती है वह खुले आकाशमें चली जाती है और हमको ताजी हवा मिलती रहती है। सबसे बड़ा लाभ तो खुलेमें हमको आकाश-दर्शनका मिलता है। वह मन और तन दोनोंके लिअे लाभकारी है। जिनको ब्रह्मचर्यका पालन करना है अुनको तो खुलेमें ही सोना चाहिये। बरसातसे बचनेके सिवा हमको छतकी जरूरत ही नहीं है।"

बापूजीकी बात तो मुझे ठीक लगी, लेकिन मैंने कमरेको बिलकुल खुला नहीं रखा। कमरेमें दोनों तरफ दरवाजे बनाये, जिससे अिधरकी हवा अुधर निकल सके। अिससे भी मुझे तो बहुत लाभ हुआ। अब कहीं भी बन्द मकानमें सोनेका प्रसंग आता है तो मेरा दम घुटने लगता है और गंदी हवासे नाक फटने लगती है।

बापूकी कंजूसी और अुदारता

बापूजी खुलेमें प्रार्थना-भूमि पर सोते और अुनके आसपास दूसरे लोग सोते थे। जब लोगोंकी संख्या बढ़ी तो प्रार्थना-भूमि रेलका मुसाफिरखाना बन गअी। कोअी बापूजीके अिधर, कोअी अुधर, कोअी पैरोंके पास। अितने नजदीक सोते कि वह तो मुझे भी अखरता था। बापूजीकी कुटीमें भी यही हाल रहता था। जो आता अुसीको वे कहते, तुम भी यहां पड़े रहो। दूसरे मकानमें दूसरेके पास जगह भी हो तो बापूजी अुसकी सुविधाका ध्यान रखते, लेकिन अपनी कुटियामें असुविधा होने पर भी आनेवालोंको टिका लेते थे। लोगोंको भी अुनके पास रहने और सोनेमें अड़चनके बजाय आनन्द ही अधिक होता था।

आजकलके बड़े लोगोंके क्या हाल हैं? जिनके पास कोअी डिग्री हो, जो किसी बड़े पद पर हों, जिनके पास अधिक पैसा हो, कोअी बड़े महात्मा भी हों, अुनके लिअे आरामका अलग, कामका अलग, दूसरोंसे मिलनेका अलग और खानेका अलग कमरा चाहिये! लेकिन बापूजीका बिस्तर जितनी जगहमें आता था वहीं पर अुनका सब काम बड़ी आसानीसे हो जाता था। नया मकान बनाने या पुराने मकानमें कुछ सुधार करनेकी अिजाजत वे कठिनाअीसे ही देते थे। आश्रमके मकान बापूजीकी कंजूसी और सादगीकी गवाही दे रहे हैं। अुनकी मरम्मत करने और दीमकसे मुकाबला करनेमें हमको किन किन मुसीबतोंका सामना करना पड़ा है, यह तो हम ही जानते हैं। मैं गायका नाम लेकर जोर-जबरदस्तीसे कुछ करा भी लेता था, लेकिन अपने लिअे कुछ सुविधा मांगनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। बापूजी कहते थे, "हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं। हमको जो पैसा मिलता है वह हमारी सुविधाके लिअे नहीं गरीबोंकी सेवाके लिअे मिलता है। सेवक सेव्यसे अधिक सुविधा पानेका विचार कैसे कर सकता है? मुझ पर विश्वास करके लोग पैसे देते हैं। अुनका हिसाब भी कोअी मुझसे नहीं मांगता। कोअी भले न मांगे, लेकिन भगवान तो मांगेगा।
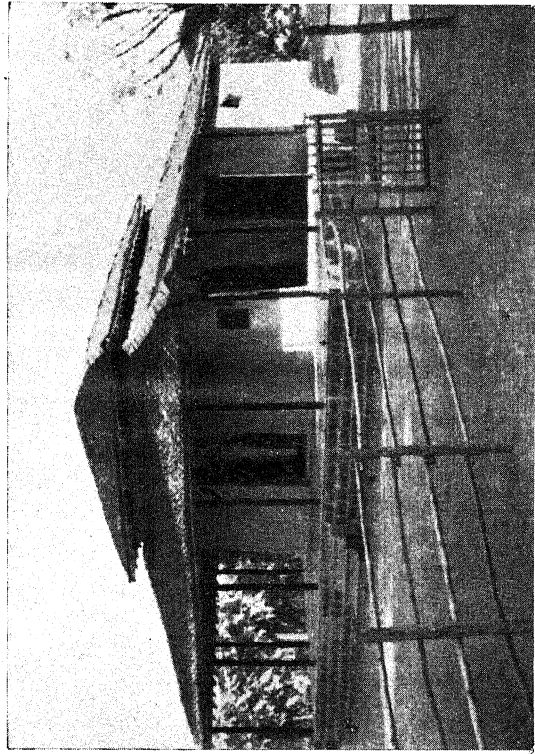
बापूकुटीकी अेक झांकी पूर्वकी ओरसे ।
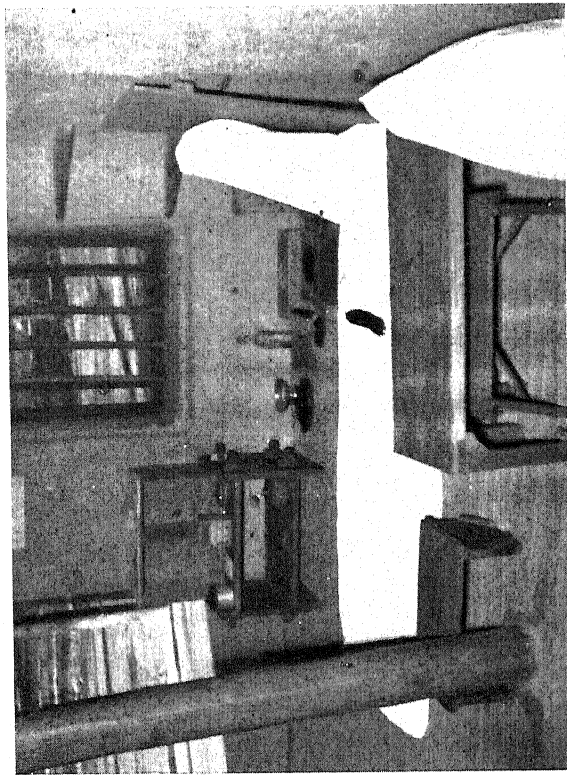
बापूकुटीमें बापूके बैठनेका स्थान, जहां बापूके दैनिक अुपयोगका सारा सामान सजाया हुआ है ।

भी अिसी कुटीमें से बापूजीके हृदयकी गूढ़तम झंकारोंमें से निकला था। आज भी अिसमें बैठकर और अिसका दर्शन करके अनेक लोग बड़ी शान्तिका अनुभव करते हैं। बापूजीकी कुटीमें कुछ वचन लिखे हुअे टंगे हैं, जो अिस प्रकार हैं :

> "असत्य बोलनेका मर्म धोखा देनेमें है, न कि शब्दोंमें। असत्य बोला जा सकता है मौनसे, कूट भाषासे, अेक शब्द पर जोर देनेसे, वाक्यको विशेष अर्थ मिले अैसे आंखके अिशारेसे। ये सब असत्य स्पष्ट शब्दोंमें कहे गये असत्यकी अपेक्षा कअी गुना अधिक बुरे और हेय हैं।" — रस्किन
>
> "अगर आप ठीक रास्ते पर हैं, तो आपको क्रोध करनेकी कोअी जरूरत नहीं है। और अगर गलती आपकी है, तो आप क्रोध कर ही नहीं सकते।" — जी० सी० लारिमेर
>
> "कोअी सज्जन बापूजीके आसन पर भेंट-स्वरूप पैसा या फल-फूल न रखें। शरीर-श्रमके प्रतीक अपने हाथसे कते सूतकी गुंडी अर्पण कर सकते हैं।" — आश्रम व्यवस्थापक

कुटीमें जो बीचका कमरा है वह सामानके लिअे है। और सेप्टिक टैंक पीछे बनवाया गया। सेप्टिक टैंकमें जो थोड़ा सामान है वह भी देखने लायक है। अुसमें लोहेका टमलर तो बापूजी जेलसे साथ लाये थे। टैंकके बाजूका कमरा बापूजीके खास रोगियोंके लिअे था, जिनको वे बिलकुल अपने पास ही रखना चाहते थे। आचार्य नरेन्द्रदेवजी अिसी कमरेमें कुछ दिन रहे थे। आज अुसमें बापूजीके सोने और मालिशके तखत पड़े हैं। बापूजी मानते थे कि हमको खुद हमेशा अड़चनमें ही रहना चाहिये, क्योंकि हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं। आश्रमवासियोंकी अपेक्षा बापूजी अिसका अमल खुद बड़ी कड़ाअीसे करते थे। यह कुटी गरीबीसे रहनेका सुन्दर नमूना है। आश्रमके सारे मकान बहुत ही कंजूसीके साथ लाचारीसे ही बढ़े थे। यह बात आश्रमकी रचनासे ही प्रगट होती है। आदि-निवासमें भी बापूजीने अपने लिअे अेक चटाअीकी जगह ही रखी थी, जिसकी तरफ आज किसीका विशेष ध्यान नहीं जाता है। आखिरी-निवासमें भी बापूजी थोड़े दिन रहे, लेकिन अुसमें भी अुन्होंने अपने लिअे कोअी खास सुविधा नहीं कराअी थी। होता यह था कि जो भी मेहमान आते अुनको पहला स्थान बापूजी खुद अड़चनमें रहकर अपने पास

ही देते थे। अिससे लोगोंको बापूजीका निकट प्रेम और गरीबीसे अड़चनमें रहनेका पाठ सीखनेको मिलता था।

स्वामी परमहंस रामकृष्णजीने कहा है : "साधु क्या कहता है अिस पर ध्यान न देकर साधु कैसे रहता है यह देखनेके लिअे अुसे सोते, जागते, खाते-पीते, दिनमें, रातमें, अरे टट्टी जाते समय भी देखो। अुस परसे अुसके बारेमें राय कायम करो।" सचमुच ही बापूजीका जीवन हमारे लिअे बिलकुल खुला था। जब बापूजी कामकी भीड़में होते थे तब हम आश्रमवासियोंकी बहुतसी मुलाकातें तो पाखानेमें ही होती थीं। लोगोंको यह विचित्र भी लगता था। लेकिन बापूजीके लिअे यह सहज काम था। पाखानेमें कुछ जरूरी पत्र या पुस्तकें भी बापूजी पढ़ते थे। अिसीलिअे पाखानेको बापूजी वाचनालयकी अुपमा देते थे और कहते थे कि हमारे पाखाने अितने स्वच्छ रहने चाहिये कि अुनमें हम बैठ सकें, और आरामसे कुछ अध्ययन भी कर सकें। अिसीलिअे बापूजीने मुझे अेक पत्रमें लिखा था कि भोजनालय और शौचालय हमारे जीवनकी चाबी हैं। ये दो काम करें तो अिनमें सब कुछ आ जाता है। बापूजीके जीवनकी यह अेक अनोखी कसौटी थी।

अनपेक्षः शुचिर्दक्षः अुदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

गीताका यह वचन बापूजीके जीवनका मूलमंत्र था।

संसारीका टूकड़ा नौ गज लम्बे दांत,
भजन करे तो अूबरे नहिं तो काढ़े आंत।

कबीरके अिस वचनका दृष्टान्त बापूजी अनेक बार देते थे। अगर हमसे छोटीसी पेंसिल गुम हो जाय या अेक पैसा भी व्यर्थ खो जाय, तो बापूजीको जवाब देना बिल्लीके गलेमें घंटी बांधनेसे भी कठिन पड़ता था। अिसलिअे बापूजीके पास रहनेका जितना लोभ होता था, अुतना अिस संकड़ी गलीमें से गुजरते समय कहीं फंस न जायं अिसका डर भी बना रहता था। अिस-लिअे बापूजीको कभी किसीसे यह कहनेका प्रसंग भी नहीं आता था कि तुम यहां रहने लायक नहीं हो, चले जाओ। लोग अपने-आप ही अपना माप समझ लेते थे। जो संकड़ी गलीमें से गुजरनेके लिअे अपने शरीरको पतला करनेकी या अुसमें अुलझ गया तो मरनेकी भी तैयारी रख सकता था वही अुनके पास टिक पाता था।

कबिरा माटी प्रेमकी बहुतक बैठे आय,
सिर सोंपै सो पीवअी और पै पियो न जाय।

नुकसान सहनेकी अद्‌भुत शक्ति

अेक दिनकी बात है। सेवाग्रामके नाले पर बड़े बड़े ड्रमोंका पुल बनाया गया था। अिसमें वर्धाकी म्युनिसिपैलिटीके ओवरसियरकी सलाह थी। जब पानी आया तो ड्रमोंके मुंहमें कचरा भर जानेके कारण पानी रुक गया। बस, गांवमें पानी घुसने लगा और लोगोंके घर गिरनेका खतरा पैदा हो गया। शामके भोजनका समय था। मैं कहीं काममें था। मुन्नालालजी भोजन कर रहे थे। जब गांवके लोगोंने अिस खतरेकी सूचना आश्रममें दी तो बापूजीने कहा, "मुन्नालाल, जाकर देखो क्या हो सकता है।" मुन्नालालजी गये और जाकर देखा तो अुनको लगा कि पुलको तोड़कर पानी निकाल देना ही अेकमात्र अुपाय है। अुन्होंने गांवके लोगोंकी मददसे पुल तोड़ दिया और पानी निकाल दिया। जब अिसकी सूचना बापूजीको दी तो अुनको खुशी हुअी। बापूजीने पुल तोड़ देनेके नुकसानकी तरफ ध्यान नहीं दिया। लेकिन गांवके लोगोंको तुरन्त मिलनेवाली संकट-मुक्तिसे अुन्हें आनन्द हुआ। बापूजीके स्वभावमें जहां हद दर्जेकी कंजूसी थी, वहां अुदारता और नुकसान सहनेकी शक्ति भी अद्‌भुत थी।

साथियोंकी भूलोंके लिअे क्षमावृत्ति

अेक रोज बापूजीके पास ही भाअी मुन्नालाल प्रार्थना-भूमि पर सो रहे थे। ३ बजे पेशाबके लिअे अुठे। नींदमें वहीं नजदीक पेशाबके लिअे बैठ गये। दैवयोगसे बापूजी देख रहे थे। जब वे वापिस आये तो बापूजीने पूछा, "मुन्नालाल, वहां क्या कर रहे थे?" मुन्नालालजीके तो देवता कूच कर गये। जड़वत् बनकर चुप रहे। थोड़ी देरमें अुन्हें अपनी भूलका भान हुआ तो बोले, "बापूजी, भूल हो गअी। मैं आधी नींदमें था। आगेसे अैसी भूल नहीं होगी।" बस, बापूजीको अितना ही चाहिये था। मुन्नालालजीको हमेशाके लिअे पाठ मिल गया। अुनके ही हाथसे अेक रोज दूसरी अेक बड़ी भयानक भूल हो गअी। अेक रोज सुबह ४ बजेकी घंटीके बाद बापूजी अुठे। दूसरे लोग भी अुठे। जो बहन बापूजीकी सेवामें थी वह बापूजीका पेशाब-पॉट खाली करने गअी और मुन्नालालभाअीसे कह गअी कि बापूजीको मंजनकी शीशी दे देना। बापूजी सोते समय अपने पास दंतमंजन, पुटाश परमेंगनेट,

चाकू या ब्लेड, थूकदानी, पेशाबका बरतन, मुंह साफ करनेका बरतन अित्यादि जरूरी चीजें रखकर सोते थे। मुन्नालालभाअीको अंधेरेमें पता न चला। जब बापूने मंजन मांगा तो अुनके हाथमें लाल दवाकी शीशी दे दी। बापूजीने अुसे खोलकर जब मंजन करनेके लिअे अुसे मुंहमें डाला तो अुनको अटपटा लगा। अुन्होंने पूछा, "मुन्नालाल, तुमने मुझे कौनसी शीशी दी है?" मुन्नालालभाअीने विश्वासके साथ कहा, "बापूजी, मंजनकी शीशी दी है।" थोड़ी देरमें बापूजीके मुंहने जवाब दिया और लाल दवा थूक दी। अिससे बापूजीकी जीभ और होठ भी जल गये। जिससे पोंछा वह कपड़ा भी खराब हो गया। जब मुन्नालालजीने यह दृश्य देखा तो अुनमें काटे तो खून नहीं रहा। अुनके होश अुड़ गये। अगर यह दवा बापूजीके पेटमें चली जाती तो? परिणामका विचार करके शर्मसे अुनका सिर जमीनमें गड़ गया। अीश्वर-कृपासे दवा बापूजीके पेटमें नहीं गअी थी, क्योंकि मंजन खानेकी चीज तो थी नहीं। तो भी दवा पेटमें जा सकती थी। अगर अुतनी चली जाती जितनी बापूजीने मुंहमें डाली थी, तो बापूजीकी मृत्यु तक हो सकती थी। लेकिन 'जाको राखे साअियां मारि सकै नहिं कोय' के न्यायसे बापूजीको कुछ भी नहीं हुआ। हां, जले मुंहके निशान तीन चार रोज तक बने रहे।

बापूजीसे अिसका कारण पूछा गया तो सहज भावसे अुन्होंने कारण बताया। लेकिन मुन्नालालजीके खिलाफ नाराजीका अेक भी शब्द अुनके मुंहसे नहीं निकला। अिन दोनों घटनाओंका मुझे तो आज तक पता ही नहीं था। जब मैंने मुन्नालालभाअीसे पुस्तकके लिअे कुछ जानकारी मांगी, तो अुन्होंने ये घटनाअें लिख भेजीं। यों तो मेरा और अुनका अेकसाथ ही सेवाग्राममें प्रवेश हुआ। अुनके अनुभवोंकी भी अेक स्वतंत्र पुस्तक बन सकती है। क्योंकि अुनका भी बापूजीके साथ वैसा ही निकट संबंध रहा है जैसा मेरा। वे बापूजीकी रिजर्व फौजके सिपाही थे। जहां कोअी जानेवाला न मिले वहां बापूजी अुन्हें भेजते थे। जब बापूजी प्रवासमें जाते तो स्टेशन तक अुनका सामान पहुंचाना और वापिस आने पर लाना, यह काम तो अुनके लिअे ही रिजर्व था। कभी कभी मैं भी थोड़ी मदद कर देता था।

मच्छरदानीका किस्सा

अेक समय मलेरिया हो जानेके कारण डॉक्टरोंने बापूजीको मच्छरदानी लगानेकी सलाह दी। अुस समय तख्त भी नहीं था। बापूजी बरामदेमें सोनेको

तैयार न थे, वर्ना बरामदेके खम्भोंसे मच्छरदानीकी डोरी बांधी जा सकती थी। मुझे बुलाकर बोले, "देखो, प्रार्थनाकी जगह मच्छरदानी लगानेकी तजवीज कर दो। मुझे मच्छरोंसे तो बचना है, लेकिन मच्छरदानीके सिवा अुसके लिअे कुछ खर्च नहीं करना है। गरीब लोग क्या कर सकते हैं? वही हमको करना चाहिये न?" मैंने कहा, "ठीक है, कर दूंगा।" मैं विचारमें पड़ गया। यदि प्रार्थनाकी जगह पर चार खम्भे गाडूं तो अेक तो प्रार्थनाके स्थान पर बीचमें गड़े खम्भे विचित्र लगेंगे। अुनको रोज गाड़ना और रोज अुखाड़ना भी अच्छा न होगा। कहीं बापूजी खम्भोंकी कीमत और गाड़ने-अुखाड़नेकी मजदूरीका हिसाब पूछ बैठें तो मैं क्या अुत्तर दूंगा। अिससे बचनेका कोअी दूसरा रास्ता खोजना ही होगा। तुरन्त मेरे ध्यानमें जंगली लोगोंके तम्बू आ गये। दो बांसके टुकड़े लिये। अुनको मच्छरदानीके दो सिरों पर बांधकर अुनमें रस्सी बांधी और दोनों तरफ तान कर दो बड़े कीले जमीनमें गाड़ दिये। मच्छरदानी तम्बूनुमा थी सो ठीकसे तन गअी। यह क्रिया मैंने शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीके सोनेके पहले कर दी। मनमें अुसका ढांचा पहले ही बना लिया था। अेक बार तानकर भी देख लिया था। बापूजीने देखा तो बोले, "बस, यही मैं चाहता था। अब जो चाहेगा वही मच्छरदानी चाहे जहां लगाकर सो सकता है।"

अनोखा समभाव!

गोविन्द बापूजीका खाना तैयार करता था। अेक रोज अुसने कहा — मुझे वर्धा जाना है।

बापूने पूछा — क्यों?

गोविन्द — हजामत बनवानेके लिअे।

बापू — तो क्या गांवमें नाअी नहीं है?

गोविन्द — हरिजन नाअी नहीं है और सवर्ण नाअी हमारी हजामत बनाते नहीं हैं।

बापू — तुम्हारी हजामत नहीं बनाते तो मैं कैसे बनवा सकता हूं?

अुस रोजसे सेगांवके नाअीसे बापूजीने हजामत बनवाना बन्द कर दिया और खुद अपनी हजामत बनाने लगे। जब सिरके बाल बढ़ जाते थे तब मैं या मुन्नालालजी काट देते थे।

तुकड़ोजी महाराज

अेक रोज नागपुरसे श्री बाबूराव हरकरे आये और बापूजीसे कहने लगे कि तुकड़ोजी महाराज बड़े ही साधु पुरुष हैं। अुनके विचार राष्ट्रीय हैं और अुनके भजनोंका प्रभाव ग्रामीण जनता पर बड़ा अच्छा पड़ता है। मैं चाहता हूं कि वे थोड़े दिन आपके पास रह जायं तो अुनके विचार और भी परिपक्व हो जायेंगे और देहातमें वे अेक बड़ा लाभकारी काम कर सकेंगे। बापूजीने अिस विचारको पसन्द किया और अुनको रखनेकी मंजूरी दे दी। अेक मास तक रहनेकी बात तय हुअी थी। ता० १४–७–'३६ को श्री तुकड़ोजी महाराज आश्रममें आ गये।

बापूजीने अुनके रहनेकी व्यवस्था आदि-निवासमें अपने पास ही कर ली। हमारे पास दूसरा और मकान भी कहां था? अिसलिअे जो भी मेहमान आते अुनको अुसी मकानमें स्थान देना पड़ता था। तुकड़ोजी महाराजके साथ नारायण नामका अेक सेवक भी था। अुसको भी अुसी मकानमें स्थान मिला। महाराजको सूत कातना तो आता था, लेकिन रुअी धुनना और पूनी बनाना नहीं आता था। अुन्होंने ये क्रियाअें भी सीखनेकी अिच्छा प्रकट की तो बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, महाराजको रुअी धुनना व पूनी बनाना सीखना है। अिसलिअे अुनके साथ बात करके समय तय कर लो। अगर वे धुनना सीख जायेंगे तो अेक बड़ा काम हो जायेगा। अुनका शिष्य-मंडल विशाल है। वे दूसरोंको भी अिसका महत्त्व समझा सकेंगे और सिखा भी सकेंगे।" अगस्तका महीना था। पानीकी झड़ी लगी थी। अैसे मौसममें धुनकी चलाना कठिन था। लेकिन बापूजीके फरमानको टाला नहीं जा सकता था। वे किसी कामके लिअे ना तो सुनना ही नहीं चाहते थे। अिसलिअे मैंने राजीसे या बेमनसे कहा, "जी हां, सिखा दूंगा।" मुझे यह लोभ भी हुआ कि अगर अितना बड़ा सन्त चेला बननेको मिले तो कौन अैसा होगा कि अवसर चूके? अगस्तकी गीली हवामें रुअी तांतसे चिपकनेकी कोशिश करती, लेकिन मैं बहुत सावधानीसे धुनकी चलाता। अिससे मेरी धुननेकी कला बढ़ गअी। करीब दस बारह दिनमें महाराजको भी अच्छा धुनना और पूनी बनाना आ गया। मेरी शिक्षा अैसी फली कि अपने आश्रममें पहुंच कर महाराजने अपने भक्त-कार्यकर्ताओंका अेक शिविर चलाया, जिसमें पचास विद्यार्थियोंने अेक मास तक भजन-कीर्तनके साथ

रुअी धुनना, पूनी बनाना और सूत कातना सीखा। अिस शिविरके लिअे महाराजने मुझे ही वहां बुलाया था। लेकिन मैं बीचमें ही बीमार हो गया और विवश होकर वापस लौट आया। तो भी शिविरका काम निश्चित समय पर पूरा हुआ।

श्री तुकड़ोजी महाराजके कीर्तनमें भक्तिभावसे भगवानका हृदयस्पर्शी गुणगान होता था, जिससे श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे। सेवाग्रामके सैकड़ों आदमी प्रतिदिन प्रार्थनामें अुनका कीर्तन सुननेके लिअे आया करते थे। प्रार्थनाके बाद वे खड़े होकर अपने गुरुदेवकी रोज नियमपूर्वक आरती अुतारते थे। बापूजीका अितनी देर तक अेक आसनसे खड़े रहना हम लोगोंको अखरता था। लेकिन बापूजी तो स्वयं बड़े नियम-पालक थे, अिसलिअे सीधे ध्यानमग्न खड़े रहते थे। बीचमें दो-तीन दिनके लिअे महाराज किसी गांवको चले गये तो सब सूना-सूना लगने लगा था। कुल मिलाकर अुनका यह क्रम अेक मास तक चला और ता० १३–८–'३६ को वे बापूजीसे आशीर्वाद और विदा लेकर अपने आश्रम मोझरी चले गये। बापूजीको अुनका नीचे लिखा भजन बहुत प्रिय था। वे कहते थे कि यह भजन तो मेरी ही जीवन-कथाका द्योतक है।

किस्मतसे राम मिला जिसको, अुसने यह तीन जगा पाअी।
पहले तो धन सुत दार गया, अरु शाल दुशाला छूट पड़ा।
सब मंजिल हाथी घोड़ोंसे, नहीं पास रहा साधन कोअी।
दूजेसे जग अपमान हुआ, अरु आदर तो सब जाय भगा।
नहीं कीमत जात बिरादरमें, साथी न रहा कुछ समझाअी।
तीजेसे आफत तन भोगी, दिन रात रहा जैसे रोगी।
नैनोंसे सुख नहीं देखा, सब अुमरी दुखमें जा खोअी।
ये तीनहुंसे कंगाल हुआ, पर याद अुसीकी करता था।
बिन नाम प्रभुके झूठ सभी, यह भाव हमेशा नैन रही।
ये तीन जगह जिसको न मिलीं, अुसको न कभी दीदार हुआ।
कअी जन्म जरा भरते भरते, तुकड्याको गुरुपद यह छाअी।

अेक दिन बापूजी महाराजसे कुछ बातें कर रहे थे। बीचमें बापूजीने अेक दृष्टान्त सुनाया। अेक गरीब और धनिकका घर पास पास था। अेक दिन गरीबके घरमें चोर आ घुसे। जब गरीब जागा तो अुसने देखा कि

चोर अुसके घरमें कुछ ढूंढ़ रहे हैं। अुसने सोचा कि ये बेचारे व्यर्थ ही परेशान होंगे, क्योंकि अिनको यहां कुछ मिलनेवाला नहीं है। वह अुठा और बड़ी शांति व धीरजसे अुसने चोरोंसे कहा कि आप अधिक परेशान न हों। जो कुछ मेरे पास है वह मैं आपको दिये देता हूं। यह कह कर अुसने चिथड़ोंमें से निकाल कर दस-पांच रुपयोंकी अेक पोटली अुनके हवाले कर दी। चोरोंको बड़ा विस्मय हुआ। लेकिन लोभसे अुनकी आंखें बन्द थीं, अिसलिअे अुन्होंने अधिक धन पानेके लालचसे पड़ोसी धनिकके घर पर हमला बोल दिया। वह धनिक जाग रहा था और अुसने सारी चर्चा सुनी थी। यह सोचकर वह आश्चर्य कर रहा था कि चोर अुस गरीबके घरसे खाली हाथ ही जानेवाले थे, लेकिन अुसने अपने ही हाथसे अपनी संचित रकम चोरोंके हवाले कर दी। तो मैं भी अपनी पूंजी चोरोंके सुपुर्द क्यों न कर दूं? अितनेमें ही चोरोंने अुसके घरका दरवाजा खटखटाया। धनिकने तुरन्त दरवाजा खोल दिया और चोरोंसे कहा, आअिये, आपको जो चाहिये सो मैं दूंगा। चोर घरमें घुस गये, लेकिन अुनके हृदयमें मंथन चलने लगा कि यह क्या हो रहा है। अुस धनिकने अपना सारा धन चोरोंके सामने लाकर रख दिया। बस, चोरोंके मनमें राम जगा और अुन्होंने अुस धनिक और गरीबका सारा धन वहीं छोड़ दिया और भविष्यमें चोरी न करनेकी प्रतिज्ञा करके वे साधु हो गये। मैं हिंसाके मुखमें अहिंसाको अिसी तरह झोंक देना चाहता हूं। आखिर कभी तो हिंसाकी भूख शांत होगी ही। अगर दुनियाको शान्तिसे जीना है तो मेरे ज्ञानमें अिसका दूसरा कोअी रास्ता नहीं है। आप अपनी सीधी-सादी भाषामें अपने मधुर भजनों द्वारा देहातकी जनता तक अहिंसाके अिस संदेशको पहुंचा सकें तो मेरा बहुत बड़ा काम हो।

महाराजने कहा, "आपकी बात तो ठीक है। मेरी श्रद्धा भी अहिंसा पर दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। आपके आशीर्वादसे वह दृढ़ बनेगी और मैं अपनी सारी शक्ति लगाकर आपका संदेश लोगों तक पहुंचानेका प्रयत्न करूंगा।"

जब मैं १८ सालके बाद मोझरी गया तो मैंने देखा कि श्री बाबूरावजीका तुकड़ोजी महाराजको बापूजीके पास लानेका प्रयत्न सफल हुआ। महाराजने बापूजीकी कल्पनाको मूर्तरूप देनेका पूरा पूरा प्रयत्न किया है। अिसका दर्शन अुनके गुरुसेवा मंडलके संगठन और असके सेवाकार्यसे होता

है। आज मोझरीमें सुन्दर खेती और गोशाला चलती है। विद्यार्थियोंका छात्रावास चलता है। प्रसूति-गृह, अस्पताल, नअी तालीमका विद्यालय, हाअी-स्कूल, कताअी, बुनाअी, तेलघानी, पुस्तकालय, प्रार्थना-भवन आदि सारी प्रवृत्तियां देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। आज तो महाराजका स्थान अखिल भारतीय हो गया है। साधु-समाजके अध्यक्षका सम्माननीय पद अुन्हें प्राप्त हुआ है। अुनके विचारोंमें क्रान्तिकारी प्रगति तथा गंभीरता देखकर मेरे सामने अुस दिनका चित्र स्पष्ट हो आया, जिस दिन बापूजीने अुनसे कहा था कि 'आप मेरी बात समझ लें और अपनी सीधी-सादी भाषामें अपने मधुर भजनों द्वारा जनता तक अहिंसाके अिस सन्देशको पहुंचा सकें तो मेरा बहुत बड़ा काम हो।'

अुन दिनों लीलावतीबहन रसोअीका काम संभालती थीं। मेरा अुनसे मतभेद हो जानेके कारण मैंने अपनी रसोअी अलग बनानेके लिअे बापूजीकी अिजाजत चाही। बापूजीने मंजूरी दी और मैं अलग भोजन बनाने लगा। लेकिन आश्रममें जो फल वगैरा आते थे, अुनमें से मेरे हिस्सेके बापूजी किसीके साथ मेरे पास भेज दिया करते थे।

मैं तुकड़ोजी महाराजको धुनना और पूनी बनाना सिखाता था। अुन्होंने अेक दिन कहा, "भाअी, तुम क्या खाते हो, हमको भी खिलाओ।" मैंने अुनको खिलाया। अिसका पता बापूजीको चला तो दूसरे दिन मेरी पेशी हुअी। बोले, "मैंने तो सिर्फ तुम्हारी तंदुरुस्तीकी दृष्टिसे तुमको अलग खाना बनानेकी अिजाजत दी है, तुम्हारे पास दूसरोंको खिलानेके लिअे समय कहां है? तुम्हारा सारा समय गोमाताके लिअे है। अुसमें से अेक मिनट भी दूसरेको देना गोमाताकी चोरी है।" अिस प्रकार बापूजी काफी बोले। मैंने अपनी भूल कबूल की और आगेसे अैसा न करनेका वचन दिया।

विनोबाजी कहते हैं कि मेरे मन पर सबसे अधिक असर बापूजीके प्रेमसे भोजन करानेका पड़ा है। कअियोंको बापूजी भोजनका निमंत्रण दे दिया करते थे। लेकिन मैंने जब तुकड़ोजी महाराजको दो मोटी रोटियां खिला दीं, तो लम्बा भाषण सुनना पड़ा। अगर किसी अन्य प्रसंग पर मैं भी अुनको न खिलाता तो शायद अिससे भी ज्यादा लम्बा भाषण सुनना पड़ता। यही तो बापूजीकी खूबी थी। मुझे तो केवल अनिवार्य कारणसे सिर्फ मेरे लिअे अलग भोजन बनानेकी अिजाजत मिली थी। यदि मैं अिसी

प्रकार लोगोंको खिलाने लगता तो अुसमें समय तो जाता ही, मर्यादाका भी भंग होता। अिसमें तुकड़ोजी महाराजके लिअे भी चेतावनी थी। बापूजीके विविध पहलुओंको समझना बड़ा कठिन काम है। यह तो वही जान सकते हैं जिन पर बीती हो। बांझ क्या जाने प्रसूतिकी पीर?

व्यवस्थापकके रूपमें

बापूजीका यह आग्रह कि मैं सेवाग्राममें अकेला ही रहूंगा पहले ही मेरे व मुन्नालालजीके प्रवेशसे ढीला हो गया था। थोड़े दिनों तक अैसा लगता रहा कि हम तात्कालिक कामके लिअे हैं, लेकिन आखिर हम स्थायी बन गये। शुरू शुरूमें तो बाहरके किसी आदमीके लिअे वहां रातको ठहरनेकी व्यवस्था नहीं थी। पहले दिन किसको रोटी मिली अिसका मुझे स्पष्ट खयाल है। धुलियासे श्री पारनेरकरजी बापूजीसे बात करने आये थे। बात करके जब वे वर्धा लौटने लगे तो बापूजीने कहा कि यहां किसीको खाना नहीं मिलता है, लेकिन तुम्हें मिल जायगा। पूछो बलवन्तसिंहको अगर अुसके पास कुछ आटा हो तो।

अुन्होंने मुझसे पूछा — भाअी मुझे खाना खिलाओगे? मैंने कहा — जरूर। अुस समय हमारे पास आटा भी सेर सवा सेरसे ज्यादा नहीं रहता था। मैंने अुनको खाना खिलाया।

हमें गायोंके लिअे जो चारा वगैरा चाहिये था, वह जमनालालजीकी खेतीमें से मांग लाते थे। जैसे जैसे बापूका परिवार बढ़ता गया वैसे वैसे गायका परिवार भी बढ़ाना पड़ा और अुसके लिअे मकान और अधिक खेतीकी जरूरत पड़ती गयी। शुरूमें तो हमने अुसी अेक अेकड़ जमीनमें जहां खाली जगह थी सागभाजी बोना आरंभ कर दिया था। बापूजीने यह भी निश्चय किया था कि वर्धासे सागभाजी, जो गांवमें पैदा होनेवाली चीज है, न मंगायी जाय। मगर बरसातके शुरूमें तो अैसा मौका आता था जब गांवमें भी कोअी सागभाजी नहीं होती थी। बापूजी कहते, "जंगलमें भी बहुतसी पत्तियां होती हैं, जिनका साग बन सकता है। अुनकी जानकारी करो, तोड़ कर लाओ और साग बनाओ।" देहातके लोग बारिशके प्रारंभमें जो पत्तियां अुगती थीं अुनकी भाजी बनाते ही थे। हम भी टोकरी लेकर निकलते और पत्तियां चुन लाते। अुनसे हमारी भाजी बनती।

आश्रमके नामकरणके बारेमें प्रश्न खड़ा हुआ। किसीने गांधी-आश्रम सुझाया, किसीने मीरा-आश्रम, किसीने सेवाश्रम। अैसे कओी नाम सुझाये गये। आखिर बापूजीने गांवकी सेवाके लिअे आश्रम बना है, अिसके आधार पर सेवाग्राम आश्रम नाम रखा। वास्तवमें सिर्फ बापूजी ही वहां रहते थे और अुनके साथ हम कुछ लोग थे। जब बापूजीसे कोओी वहां आनेके लिअे पूछता तो वे कहते, "यह आश्रम थोड़ा ही है, यह तो मेरा परिवार है। जो लोग मुझसे अलग रह ही नहीं सकते या जिनको मैं छोड़ नहीं सकता, वही लोग मेरे पास रहते हैं। अिसलिअे अिसको संस्था समझना ही नहीं चाहिये। वैसे साबरमती आश्रमके सब नियम यहां लागू हैं। और वही यहां रह सकता है जो आश्रमके सब नियमोंका पालन कर सकता है।"

सचमुच सेवाग्राम आश्रम बापूके आज तकके अनुभवोंका निचोड़ था। वहां कोओी नियम नहीं था और सब नियम थे। आश्रमके व्यवस्थापक, संचालक जो भी कहिये बापूजी ही थे। दूसरे लोग तो सिर्फ हिसाब-किताब रखना, बाजारसे सामान खरीदकर लाना, रसोओी बनाना वगैरा काम किया करते थे। यह काम कुछ रोज लीलावतीबहनने किया, कुछ दिन नाणा-वटीजीने किया। लेकिन दूसरी सब जिम्मेदारी बापूजी पर ही थी। बापूजी आश्रमके छोटेसे छोटे काम पर भी खूब ध्यान देते थे। भोजन परोसनेका काम तो बापूजीका ही था। हम भोजन बनाकर बापूजीके सामने रख देते थे और अपनी अपनी थाली अुनके पास ले जाते थे। बापू अुसमें परोस देते थे। थाली लाने ले जानेकी झंझटसे बचनेके लिअे मैं बापूजीके बिलकुल सामने ही बैठता था। अुस समय बापू परोसते जाते और कुछ मनोरंजन भी करते जाते; साथ साथ भोजनकी मात्रा और अुसके गुण आदिके बारेमें भी सूचनाअें करते जाते। यह क्रम बहुत दिनों तक चला।

प्रार्थनामें रामायण

मैंने मगनवाड़ीमें बापूजीसे पूछा था कि मैं आपको रामायण सुनाया करूं तो कैसा रहे? बापूजीने कहा — "हां, पर मुझे वह स्वर प्रिय लगता है, जिसमें मेरे पिताजीको अेक पंडितजी सुनाया करते थे। अुसको देवदासने ग्रहण कर लिया था, और अुसके पाससे बालकोबा[1]ने। अगर तुम अुसको

[1] आचार्य विनोबा भावेके छोटे भाओी। अिनका ज्यादा परिचय आगे 'सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति' नामक प्रकरणमें दिया गया है।

सीख सको तो मुझे रामायण सुनना प्रिय है।" असलिअे मैं बालकोबाजीके पास गया, लेकिन मुझे संगीतका ज्ञान नहीं था। मुझे अुनका राग अच्छा तो लगा, लेकिन अुस रागको मैं खुद नहीं सीख सका। जब नाणावटीजी मगनवाड़ीमें बापूजीके पास रहने आये तबसे सुबह नौ बजे बापूजीको रामायण सुनाना शुरू हुआ था। कभी कनु गांधी और कभी नाणावटीजी सुनाते थे। लेकिन अभी तक रामायण प्रार्थनामें शुरू नहीं हुअी थी। जब नाणावटीजी सेवाग्राममें जाकर रहने लगे तब मैंने बापूजीको सुझाया कि जैसे सुबहकी प्रार्थनामें गीता पढ़ी जाती है, वैसे सायंप्रार्थनामें रामायणका भी पाठ हो तो कैसा रहे? बापूजीने अिसे पसंद किया और नाणावटीजी द्वारा शामकी प्रार्थनामें रामायण प्रारंभ हुअी।

कामका विस्तार

अब कामकी योजना बनानी थी। मुन्नालालजीको गांवके बच्चोंको पढ़ानेका काम सौंपा गया और नाणावटीजीको ग्राम-सफाअीका। नाणावटीजीने गांवमें चलते-फिरते पाखाने और स्त्रियोंके लिअे आड़ करके और नालियां खोद-कर कुछ पाखाने बनाये। शुरूसे ही गांवकी आम सफाअीके लिअे अेक भंगी भी रखा गया था, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी भंगीका काम संतोषजनक न रहा और अुसको बंद करना पड़ा। अिसी बीचमें चक्रैया नामका लड़का आ गया। अुसको बुनाअी सिखानी थी और आश्रममें बुनाअी जारी भी करनी थी। अिसलिअे नाणावटीजीने बुनाअीका काम भी शुरू किया।

अिस चक्रैयाके आनेके दिन भी बड़ी बोधप्रद घटना हुअी। अेक दिन बापूजीने महादेवभाअीको बुलाकर कहा, 'देखो, सीताराम शास्त्रीका पत्र आया है। अुनके आश्रमका अेक हरिजन लड़का कल सुबहकी गाड़ीसे आनेवाला है। तुम स्टेशन जाकर अुसे ले आना।' महादेवभाअी हां कहकर चले गये। दूसरे दिन सुबहकी मद्रास अेक्सप्रेससे चक्रैया सेवाग्राम पहुंचा और बापूजीको प्रणाम करके बोला, 'मैं आ गया।' बापूजी, 'तुम्हारा नाम चक्रैया है?' 'जी हां।' 'तो महादेव स्टेशन पर पहुंच गया था न?' 'जी नहीं।' बापूजी, 'तो तुम यहां कैसे पहुंचे?' 'पूछते-पूछते।' बापूजी गंभीर हो गये और बोले, 'महादेवको बुलाओ।' महादेवभाअी आये। बापूजी गंभीरतासे बोले, 'क्यों महादेव, तुम स्टेशन नहीं पहुंच सके?' महादेवभाअी चौंक अुठे और बड़ी नम्रतासे बोले, 'बापूजी, भूल गया था।' बापूजीने कहा, 'अैसी भूल

तुमसे कैसे हो गअी? देखो यह तो बच्चा है। यह प्रदेश अिसके लिअे नया है। हमारी भूलके कारण यह कितनी मुसीबतमें पड़ सकता था?' महादेव-भाअी शरमा गये और बोले, 'अिसको कष्ट तो हुआ ही होगा।'

जैसे जैसे हमारी गायोंकी संख्या बढ़ती गयी, वैसे वैसे हमने पैर फैलाना शुरू किया। पहले तो जमनालालजीसे घास-चारेके लिअे थोड़ीसी जमीन और नये कुअेंकी मांग की थी। परंतु अब सबकी सब जमीन मांगनी पड़ी। वे तो अिसके लिअे तैयार ही थे। लेकिन अुनके काम करनेवालोंका थोड़ा ममत्व था, जो स्वाभाविक था। लेकिन क्या करते? जमनालालजीने तो जिस रोज बापूजी सेवाग्राम आये अुस रोजसे ही सेवाग्राम बापूजीको मनसे समर्पण कर दिया था। अिसलिअे अुन्होंने अपना सारा काम समेट लिया और अुनकी सारी जमीनका कब्जा आश्रमने ले लिया।

अब तक वहांके मकान वगैरा पर जो कुछ खर्च होता था, वह सब जमनालालजी ही करते थे। क्योंकि अुनका खयाल था कि कल बापू यहांसे अुठकर चले गये तो सार्वजनिक पैसेका क्या होगा? अिसलिअे मेरी जमीन पर मेरा ही पैसा खर्च हो तो अुसका कुछ किया जा सकता है। अुसको मैं सह लूंगा। लेकिन अब तो स्थायी रूपसे आश्रम बन गया था, अिसलिअे अुनका खर्च बन्द कर दिया गया और बापूजीने सारा खर्च आश्रमसे देना शुरू किया।

पारनेरकरजी भी धुलिया छोड़कर स्थायी रूपसे सेवाग्राम आ गये थे। खेतीका चार्ज अुन्हें दिया गया और गोशालाका मेरे पास रहा। स्कूलके लिअे नअे मकानकी जरूरत पड़ी। तालीमी संघके कुअेंके पास अुत्तर-पश्चिमके जिस मकानमें आज स्कूल है वह मकान आश्रमने स्कूलके लिअे बनाया और तालीमी संघके मकानके पूर्वमें बड़ा हॉल, जिसमें भोजन होता है और सभा वगैरा होती है, बुनाअी-घरके लिअे बनवाया गया। अुस वक्त तालीमी संघकी स्थापना हो चुकी थी और आर्यनायकम्‌जीको अुसका चार्ज देना था, जो १९३७ के नवम्बरमें सेवाग्राम आ गये थे। बापूजी चाहते थे कि नअी तालीमका प्रयोग अुनके नजदीक हो तो अच्छा। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जीको वहां बुलाया गया। तालीमी संघके मकान वगैराके लिअे शिवरामवाली बरड़ी, जिसमें आज संतरे और मोसंबीका बगीचा है, खरीदी गयी। लेकिन आशाबहन और आर्यनायकम्‌जी बापूजीसे अितनी दूर रहना नहीं चाहते थे, अिसलिअे आश्रमसे कुछ ही दूरी पर अुनके मकान बनानेकी व्यवस्था हुअी।

वात्सल्यमूर्ति बापू

सचमुच आज जब अुन दिनोंकी याद आती है तो मनमें अनेक प्रकारके विचारोंकी लहरें अुठती हैं। अुस समय करीब-करीब हम यह भूल-से गये थे कि बापूजी अेक बड़े महापुरुष हैं और अुन पर देशकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, अिसलिअे हम अुनके साथ अमुक मर्यादासे बरताव करें। अैसा लगता था कि बापू हमारे पिता हैं और हम अुनके बच्चे हैं। अुनके साथ हम खेलते थे, खाते थे, झगड़ते थे और आनन्द करते थे। गीताके

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि ।
विहार-शय्यासन-भोजनेषु ॥
अेकोऽथवाप्यच्युत तत् समक्षं ।
तत् क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥*

श्लोकका प्रत्यक्ष दृश्य वहां दीखता था। हमारे आपसमें झगड़े होते तो बापूजीकी अदालतमें हमारी वैसी ही पेशी होती थी जैसे मां या पिताकी अदालतमें बच्चोंकी होती है और हम भी बच्चोंकी तरह ही अपनी बात पेश करते थे। बापूजी पिताकी तरह ही किसीको डांटते, किसीको पुचकारते, किसीको कुछ कहते और किसीको कुछ। अिस तरह हमारा फैसला करते। यह सब करनेके पीछे बापूका अुद्देश्य यही रहता था कि हम सब सत्यका पालन करें, हममें अहिंसा पैदा हो, हम शुद्ध बनें और हमारा विकास हो। बाहरके लोग हम पर नाराज होते कि ये लोग बापूजीको तंग करते हैं और अुनका समय बरबाद करते हैं। मगर अुनको कहां पता था कि हमारी और बापूकी भूमिका क्या है। अगर हममें से किसीके कानमें दर्द हुआ, हमने बापूजीको नहीं कहा और बादमें बापूजीको पता लग गया, तो वे बहुत नाराज होते और डांटते कि तुमने मुझको क्यों नहीं बताया? और अिसी पर अेक लंबा भाषण सुना देते। अिसलिअे बापूके सामने हमारी कोअी बात न छोटी थी न बड़ी।

गोकुशी कैसे बन्द हो?

तारीख २६–७–'३६ की बात है। बापूजीने कुछ विद्यार्थियोंको समय दिया था। अुन्होंने अनेक प्रश्न पूछे और बापूजीने अुनके अुत्तर दिये। मेरी डायरीमें अुनके अेक प्रश्न और अुसके अुत्तरका नोट अिस प्रकार है:

---

* हे कृष्ण, विनोदार्थ खेलते, सोते, बैठते या खाते आपका जो कुछ भी अपमान हुआ हो, अुसे क्षमा करनेके लिअे मैं आपसे प्रार्थना करता हूं

प्रश्न — गोकुशी कैसे बन्द हो?

अुत्तर — गोकुशी होती क्यों है? गायको कसाअीके हाथ बेचता कौन है?

प्रश्न — अुनका मूल्य कम होनेसे हिन्दू ही गायें कसाअियोंको देते हैं और गायें अधिकतर फौजके लिअे काटी जाती हैं।

अुत्तर — बस, सस्ती गायको हम महंगी बना सकें तो गाय बच सकेगी। और अुसको महंगी बनानेका यही अेक तरीका है कि मरी हुअी गायके सब अंगोंका अच्छेसे अच्छा अुपयोग होने लगे। जब तक वह जिन्दा रहे अुसीके दूध व घीका हम अुपयोग करें, अुसकी नसलमें सुधार करके अुसका दूध बढ़ावें और बढ़िया बैल अुत्पन्न करें। हमारे पास पशु-पालनके लिअे अितना चारा-दाना नहीं है कि जिससे भैंसें व गायें दोनों निभ सकें। अिसलिअे हम गायको ही पूरा न्याय दें तो गाय बच सकती है। अगर हम भैंस और गाय दोनोंको बचाने जावेंगे तो अेक भी न बचेगी। हम टीका तो गोकुशीकी करते हैं, लेकिन सेवा भैंसकी करते हैं। जितनी दुर्दशा गायकी आज हिन्दुस्तानमें है अुतनी शायद ही कहीं हो। दूसरे देशोंके लोग चाहे गायको काटकर खा जाते हों, लेकिन जब तक अुसे जिन्दा रखते हैं तब तक पूरे आरामके साथ अुसे स्वस्थ अवस्थामें रखते हैं। हम गोकुशीका विरोध कर रहे हैं, लेकिन हमारी गाय हमारी अुपेक्षाकी शिकार होकर रोज भूखसे तिल तिल करके मर रही है। यह कितना बड़ा अपराध है? आज गायकी दुहाअी देनेवाले काफी संख्यामें हैं, लेकिन अुसकी सच्ची सेवा करनेवाले सेवक बहुत कम मिलते हैं।

अहिंसाकी सूक्ष्म व्याख्या

अुस समय सेवाग्राममें सांप और बिच्छू खूब निकलते थे। बरसातमें नअी छतमें से रोज दस दस बिच्छू निकल आते थे। सांप और बिच्छू पकड़नेके लिअे हमने दो चिमटे बनवाये थे। बापूजी यह पता लगाना चाहते थे कि कितने फी सदी सांप जहरीले होते हैं। अिसलिअे अुनको पकड़कर पिंजरेमें रखते और जहरीले सांपके लक्षणोंसे अुनका मिलान करते। वर्धाके डॉक्टरके पास भी अेक सांप भेजा था। सेवाग्राममें साधारण सांप तो थे ही, लेकिन क्रेट और कोबरा भी मिलते थे।

अेक रोज अेक बड़ा भारी नाग पिंजरेमें बन्द था। अुसने पिंजरेमें अपना सिर मार मार कर अुसे काफी घायल कर लिया था। जब मैं अुसे जंगलमें छोड़ने गया तो अुसे देखकर मुझे काफी दुःख हुआ और मैंने निर्णय किया कि अब मैं सांप पकड़नेमें मदद नहीं करूंगा। सारी घटना कैसे हुअी यह तो मुझे ठीकसे याद नहीं है, लेकिन मेरी डायरीमें जो लिखा है वह यहां देता हूं:

सेगांव, ता० २३–८–'३६ : जब सांपको खोला तो अुसकी हालत देखकर मनको बुरा लगा और यह विचार किया कि अब मैं सांप पकड़नेमें मदद नहीं करूंगा। सांपका प्रकरण लीलावतीबहनने बापूजीसे छेड़ा था। बापूजीने मुझे समझानेका प्रयत्न किया, लेकिन अुनकी बात मेरे गले न अुतरी और मैंने कह दिया कि अब मैं सांप पकड़नेमें आपकी मदद नहीं करूंगा। अुस रोज तो बात टल गअी, लेकिन २६ तारीखको फिर घूमते समय बापूजीने मुझसे कहा, "तुमको सांपकी बात समझा देना मेरा धर्म है। मैं सांपसे डरता हूं। अपनी यह कमजोरी स्वीकार करता हूं, लेकिन मैं सांपके साथ अेकरूप होना चाहता हूं। मैं अभी तक यह नहीं जान सका हूं कि भगवानने सांप और बिच्छूको जहर क्यों दिया होगा। लेकिन सांप-बिच्छूमें जो जहर दीखता है वह तो मनुष्यके स्वभावका प्रतिबिम्ब है। अगर मनुष्य काम, क्रोध, द्वेषका त्याग करे तो सर्पसृष्टि बदल सकती है। मेरा पशुसृष्टिके साथ अेकरूपता साधनेका प्रयत्न है। मैं जितनी अहिंसाकी सूक्ष्मता समझता हूं अुतना अुसका पालन नहीं कर सकता हूं, यह मेरी कमजोरी है। आज लोग जिसको अहिंसाके नामसे पुकारते हैं वह किसीका खून न करना ही है। परन्तु दूसरे प्रकारसे हम खून पी जाते हैं; जैसे गरीबका खून चूसकर रुपया जमा करना और अुस रुपयेसे पिंजरापोल आदि खोलकर अहिंसाका ढोंग करना। 'खटमल चराओ' की बात जानते हो?"

मैंने कहा — जी नहीं।

बापू — बम्बअी आदि शहरोंमें लोग प्रभातमें पुकारते फिरते हैं 'खटमल चराओ'। यानी खटमलोंसे भरी खाट पर भाड़ेसे सो जाओ तो अुसे अहिंसा कहेंगे। अगर मैं अहिंसाका पूरा विकास न कर सका यानी सांप-बिच्छूकी सृष्टिके साथ अेकरूप न हो सका, तो मैं संतोषसे नहीं मरूंगा। अिसका मुझे दुःख रह जायगा।

बापूजीने सांपके विषयमें अपने विचार कहे, पर मुझे सांप पकड़नेको फिरसे नहीं कहा और न मैंने फिर सांप पकड़ा।

मनोरंजनमें छिपा आशीर्वाद

अुसी दिन बापूको दो-चार दिनके लिअे मगनवाड़ी जाना था। पू० बाने बापूजीके साथ मगनवाड़ी चलनेकी बात निकाली। बापूजीने कहा, "जिस प्रकार तुम अपने चलनेकी बात करती हो वैसे बलवन्तसिंहकी क्यों नहीं करतीं?' बाने कहा, "बलवन्तसिंह तो स्वतंत्र है। कल जाना चाहे तो कहीं भी जा सकता है।"

अिस पर बापूजीने खूब जोरसे हंसकर अपनी लाठी अुठाकर बाको दिखायी और कहा, "बलवन्तसिंह जाय तो खरो, अेना टांटिया भांगी नाखुं." (बलवन्तसिंह जाय तो सही, अुसकी टंगड़ी तोड़ दूं।) सब लोग खूब जोरसे हंसे।

बापूके अिस मनोरंजनमें बड़ी गंभीरता थी और मेरे लिअे अेक बड़ी चेतावनी भी।

बाने कहा, "तमारी पासे तो सेंकडो आव्या ने चाल्या गया. हुं तो जीवनभरथी जोती आवी छुं." (तुम्हारे पास सैकड़ों आये और चले गये। यह मैं जीवनभर देखती आयी हूं।)

बापूजी मौन रहे। लेकिन बापूजीका मुझ पर विश्वास देखकर और बाके कटाक्षको सुनकर मैंने अपने मनमें निश्चय किया कि अब मुझे बापूको छोड़कर नहीं जाना चाहिये।

श्रेष्ठ तो अेक अीश्वर ही है

ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बापूजीसे मिलने आये। अेक विद्यार्थीने प्रश्न किया, "गीताके अध्याय ३ के श्लोक 'यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः' का क्या अर्थ है?"

बापूजी, "भगवान कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करता है वैसा ही जनसाधारण करते हैं। अिसका अर्थ यह है कि मानव-समाजका स्वभाव ही अैसा है कि लोग श्रेष्ठ पुरुषोंके आचरणकी तरफ देखते हैं। अिसलिअे भगवानने अैसा नहीं कहा कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा कहते हैं वैसा अन्य लोग करते हैं, बल्कि यह कहा है कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा करते हैं वैसा अन्य

लोग करते हैं। अिसीलिअे भगवानने कहा है कि मेरे लिअे कोअी कर्म बाकी नहीं है, फिर भी मैं लोक-संग्रहके लिअे अतन्द्रित रहकर काम करता रहता हूं। नहीं तो जगतका नाश हो जायगा। सब लोग आलसी बन जायेंगे। अब सवाल यह अुठता है कि श्रेष्ठ पुरुष कौन है? किसके आचरणका अनुकरण करें? मैं, जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाअी जो आचरण करें अुसका अनुकरण करना चाहिये? कदापि नहीं।

"मैं कुछ कहता हूं, जवाहरलाल कुछ कहते हैं। अिस प्रकार अेक-दूसरेमें विरोध है। तब किसका अनुकरण करें? अैसा श्रेष्ठ पुरुष आज दुनियामें मिलना असंभव है। दुःखकी बात तो यह है कि आज मेरी ६७ वर्षकी आयु हो गअी और अभी तक मुझे अैसा पुरुष नहीं मिला, जिसके सामने मैं सिर झुका दूं। तब क्या करें?

"जो अन्तरात्मा और बुद्धि दोनोंसे ठीक जंचे सो करें। श्रेष्ठ तो अेक अीश्वर ही है। अुसको अन्तरात्माके सिवा कहां ढूंढ़ें?"

अहिंसाका व्यापक क्षेत्र

अेक दिन घूमते समय मुझसे अहिंसाके विषयमें बापूजी कहने लगे, "सत्य और अहिंसाकी जितनी खामी थी अुतना ही सत्याग्रह असफल रहा। यही कारण है कि मैं सेगांवमें बैठ गया हूं। यह भी अेक प्रकारका तप नहीं तो और क्या है? अिधर अुधर घूमकर कुछ आन्दोलन कर सकता था, लेकिन मैंने समझ लिया कि जब तक अंतःशुद्धि न हो तब तक सत्याग्रह करना निरर्थक है। यद्यपि अहिंसासे आज तक कोअी लड़ाअी राजनीतिक या सामाजिक ढंगसे नहीं हुअी यह बात सच है। व्यक्तिगत तो अैसे अुदाहरण बहुत मिलते हैं। मेरा काम है अहिंसाका राजकीय और सामाजिक विकास करना। हां, अिस जन्ममें कर सकूंगा या नहीं, यह तो कौन जानता है? अिसीलिअे तो मैंने तुम्हें अपने सान्निध्यमें रखा है कि तुम मेरा तरीका समझ जाओ। और गोसेवा भी तो तुम्हारे ही भरोसे पर आरंभ की है। बस, यह जो आपसके तुम्हारे झगड़े होते हैं अुनको सहन करो और यहां शून्यवत् होकर पड़े रहो।"

बापूका सर्टिफिकेट

हमने आश्रमकी सड़क जहां तक बनाअी थी अुससे आगे अेक अैसा टुकड़ा था जहां बहुत कीचड़ हो गया था। आदमियोंको तो तकलीफ थी ही,

किन्तु गाड़ियां फंस जानेके कारण बैलोंके लिअे भी वह अत्यंत कष्टदायक थी। बापूजीने मुझसे कहा कि यहां अगर सड़क बन सकती है तो बनाना अच्छा है। लेकिन पचास रुपयेसे अधिक खर्च नहीं होना चाहिये। मैंने स्वीकार किया और कार्य आरंभ हो गया। रुपये तो अस्सी खर्च हो गये, लेकिन बापूजी और खानसाहब दोनों अुसे देखकर बहुत खुश हुअे। बापूने मुझसे कहा, "तुम अिंजीनियर तो नहीं हो, लेकिन काम तुमने अिंजीनियरका किया है। तुमको दूसरा कोअी शाबाशी दे या न दे, बैल तो देंगे ही।"

ज्वरका प्रकोप

बापूने मुझसे कहा कि तुकड़ोजी महाराजका पत्र आया है। विद्यार्थियोंको धुनना-कातना सिखानेके लिअे किसीको बुलाया है। लिखा है कि अगर बलवन्तसिंहको ही भेज दें तो अच्छा हो।

मैंने कहा — आपकी अिच्छा।

बापू — मेरी अिच्छाकी बात नहीं है। तुम्हारे जिम्मे जो काम है अुसकी क्या व्यवस्था होगी, अिसका विचार करना होगा। सड़कका काम तुम्हारे बिना न होगा। गाय-बकरीका क्या होगा? अिन सबकी व्यवस्था हो सकती हो तो मुझे अिनकार नहीं है।

मैंने कहा — सड़कका काम दो रोजमें खतम कर दूंगा और गाय-बकरीको चम्पत संभाल लेगा। धुननेवाला तो कोअी भी जा सकता है, परन्तु मैं जाअूंगा तो अुनके समाजसे मेरा परिचय हो जायगा और कुछ विचार-विनिमय भी हो जायगा।

बापूजी — अगर तुम गोशालाकी व्यवस्था कर सको तो मुझे अच्छा लगेगा कि तुम जाओ। तुम बारीकीसे और कामको भी देख सकोगे और मुझे सारी रिपोर्ट दे सकोगे, क्योंकि कुछ लोग तुकड़ोजी महाराजके खिलाफ शिकायत कर रहे हैं।

बापूकी अनुज्ञा लेकर मैं २२ सितंबर, १९३६ को तुकड़ोजी महाराजके मोझरी आश्रममें पहुंचा। अुनका कार्यक्रम बड़ा ही सुन्दर चल रहा था। करीब ५०–६० विद्यार्थी थे। अुनका कीर्तन-सत्संग तो होता ही था, साथ ही कातना-धुनना भी चलता था। वहांसे भेजे हुअे मेरे पत्रके अुत्तरमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। क्या जानूं यह कब मिलेगा? यहां तो सब ठीक चल रहा है। रोज छाछ होती है और मक्खन निकलता है। २।। सेरमें से आज १४ तोला निकला, अुसका घी १० तोला। प्यारेलाल अिस बारेमें अुस्ताद बन गया है। मुन्नालाल दूधकी देखभाल कर रहा है। आज तो बहुत पानी आया। किशोरलालका खत अिसके साथ है। अब तो ठीक है, दुर्बलता काफी है। महाराजसे कहो अुनका खत मिल गया था।

हां, सफाअीका काम भी अच्छी तरह सिखा दो।

सेगांव, वर्धा बापूके आशीर्वाद
२४–९–'३६

वहां मैं मुश्किलसे ८–१० दिन ठहरा कि मुझे बुखार आ गया और वह भी बहुत सख्त। तुकड़ोजी महाराजने तारसे बापूजीको मेरी बीमारीकी खबर दी तो अुनका अुत्तर आया, अुसे तुरन्त सेगांव भेज दो।

मेरी हालत बहुत खराब थी। मोझरीसे सेगांव लगभग ५५ मील है। ३ अक्तूबरको मोटर-कारसे मुझे लाया गया। मोटर आकर खड़ी हुअी और बापूजी तुरन्त मेरे पास आये। (नाणावटीजी टाअीफाअिडसे बीमार थे। फिर मैं बीमार होकर आया। बादमें मीराबहन बीमार पड़ीं।) सोमवारका मौन तोड़कर बापूने हंसते हंसते मुझसे कहा, "क्यों खूब मिर्च खाअी? बीमार क्यों पड़ गये?" मैंने कहा, "मिर्च तो नहीं खाअी। लेकिन वहां खाने-पीनेकी व्यवस्था अच्छी नहीं थी, अिसलिअे मैंने केले खूब खाये, जिससे मुझे कब्ज हो गया। मुझे लगता है कि मेरे पेटमें कुछ जहर पैदा हो गया है। आप अुसे निकालनेका प्रबंध कीजिये।"

मांकी तरह बीमारोंकी सेवा

मैं बापूजीसे बात तो कर रहा था, लेकिन शरीरमें अितनी पीड़ा हो रही थी कि आधा बेहोश-सा था। बापूजी मुझे अुठवाकर अपने स्नानघरमें ले गये और अपने हाथसे अेनीमा दिया। बुखार खूब था। मेरे शरीरसे बदबू आ रही थी। क्योंकि जबसे बुखार आया था तबसे स्पंज नहीं किया गया था। बापूजीने स्पंज किया, मेरे कपड़े बदले। वर्धासे डॉक्टर महोदयको

बुलाया गया। अुन्होंने देखकर बापूजीसे कहा कि अिनका हृदय बहुत कमजोर हो गया है। बहुत संभालकर रखनेकी जरूरत है। कभी भी बन्द हो सकता है। मैंने बापूजीसे कहा कि आपके पास बहुत काम है। मेरे कारण आपके काममें बहुत अड़चन होगी। अिसलिअे मुझे सिविल अस्पतालमें वर्धा भेज दें तो कैसा रहे?

बापूजीने कहा, "कोअी भी मां अपने बच्चेको अपनेसे दूर करना पसन्द करेगी? या कोअी भी लड़का मांको तकलीफ होगी अिसलिअे मांसे दूर जानेका विचार करेगा? तो तुम ही अैसा क्यों सोचते हो? मेरे पास कितना भी काम हो तो भी तुम्हारी सेवामें किसी प्रकारकी कमी नहीं आयेगी। हां, तुमको मेरी सेवामें विश्वास नहीं हो तो मैं तुमको रोकूंगा नहीं। तुरन्त जा सकते हो।"

मैंने कहा, "मुझे तो आपके कामके कारण संकोच हो रहा था; वैसे मैं जाना पसन्द नहीं करता।"

बापूजीने डॉक्टरको दिखाया तो सही, लेकिन अिलाज डॉक्टरका शुरू नहीं किया। प्यारेलालजीको सिर और पेट पर मिट्टीकी पट्टी रखनेका काम सौंपा और खानसाहबको फलोंका रस देनेका। मेरे पास कमोड, पानीकी बाल्टी, पीनेका लोटा, कटोरी, चम्मच सब रख दिया गया तथा किसी बातकी जरूरत पड़े तो बजानेके लिअे घंटी भी रख दी गअी।

मुझे खूब प्यास लगती थी। पेशाब बार बार होता था। मेरे पास सारी व्यवस्था थी। जब जरूरत होती घंटी बजाता और अगर कोअी दूसरा न होता तो बापूजी खुद आते। मुझे खुदको डर हो गया था कि शायद मेरा शरीर चला जायगा। डॉक्टरके कहनेसे बापूजी भी घबरा गये थे। बापूका नर्सिंग, प्यारेलालजीकी मिट्टीकी पट्टी बनानेकी कुशलता, खानसाहबका रस निकालकर और अुसमें मातृस्नेहकी मिठास घोलकर प्रेमपूर्वक पिलाना और मीराबहनकी देखरेख — अिस प्रकार मुझे सेवाके सर्वश्रेष्ठ साधन मिले थे। सर्वोपरि औषधि बापूका प्रेम तो था ही। आज जब अुन दिनोंकी याद करता हूं तो अपने सद्‌भाग्यके लिअे आश्चर्य होता है। अगर अिस प्रकारकी सेवाकी व्यवस्था नहीं हुअी होती तो न जाने मेरा क्या होता। अिस सेवासे मैं जल्दी ही बीमारीके पंजेसे निकल गया और मेरा बुखार अुतर गया।

ज्यों ज्यों मेरी तबीयत सुधरने लगी त्यों त्यों मेरी भूख भी बढ़ने लगी। मैंने बापूजीसे रोटी खानेकी आज्ञा मांगी। बापूजीने कहा कि अगर तुम दस सेर भी दूध पियोगे तो मैं खुशीसे पिलाअूंगा, लेकिन तुम अेक भी रोटी मांगोगे तो मुझे दुःख होगा। मैं चुप हो गया। जब भूख लगती मैं बापूजीके सामने जाकर खड़ा हो जाता। बापूजी पूछते, "क्या बात है?" मैं कहता, "भूख लगी है।" बापूजी कहते, "अच्छा, मोसंबी ले लो, मीठा नीबू ले लो, संतरा ले लो।"

जब मैं कहता कि कोअी ठोस चीज दीजिये, तो वे कहते, "अच्छा सेव ले लो।"

यह क्रम करीब तीन महीने तक चला। अिस बीचमें मैंने पानी भी शायद ही पिया हो। अेक रोज थककर मैंने विजयाबहनसे रोटी मांगी और शायद अुनकी आंख बचाकर मैं आधी रोटी खा भी गया। विजयाबहनने हंसकर बापूजीसे शिकायत की। बापूजी बोले, "अरे बलवन्तसिंह, चुराकर रोटी खाता है?" और हंसे। मैंने कहा, "बापूजी, चोरी नहीं की, लेकिन जोरी जरूर की है। क्या करूं, रोटी खाये बिना मेरा शरीर खेतीका काम नहीं करता है। और अिस तरह बैठा तो कब तक रहूं?" तब बापूजीने अिसको हंसकर टाल दिया। लेकिन रोटीकी अिजाजत नहीं दी। जब बापूजी प्रवास पर जाने लगे तो मैंने कहा कि अब तक आपके लिअे जो फल आते थे अुनसे मेरा भी गुजारा हो जाता था। लेकिन जब आप यहां नहीं होंगे, तो फल कोअी भेजेगा नहीं और मैं भूखों मरूंगा। बापूजीने हंसकर कहा, "बात तो ठीक है, लेकिन जितना फल मिले अुतना खाकर यदि भूख बाकी रहे तो अुतनी रोटी खा सकते हो।" मुझे तो यही चाहिये था।

मेरे बीमार होकर आनेके चार रोज बाद ही मीराबहनको भी बुखार आ गया और वे सख्त बीमार हो गअीं। अुनकी सेवाका भार बापूजीके अूपर ही पड़ा। अुनको टाअीफाअिड था। बापूजी अेनीमा देते, स्पंज करते और अन्य सारी व्यवस्था करते। नाणावटीजीको पहलेसे ही टाअीफाअिड था। अभी मैं कुछ कुछ ही घूमने-फिरने लगा था कि अिन लोगोंको बहुत सख्त बीमारी हुअी। मीराबहन कमजोर तो बहुत हो चुकी थीं, किन्तु बेहोशी तक नहीं पहुंची थीं। नाणावटी बेहोश हो गये थे और भय हो गया था कि कहीं चले न जायं। अुन्होंने भी बापूजीका बोझ देखकर अस्पताल जानेकी बात कही,

किन्तु बापूजीने अुन्हें भी वही जवाब दिया जो मुझे दिया था। सारी दुनियाका काम करते हुअे भी बापूजी बीमारोंकी पूरी सेवा-शुश्रूषा करते थे। अुसके कुछ दिन बाद ही चिमनलालभाअीको टाअीफाअिड हुआ। अिनका टाअीफा-अिड सबसे खतरनाक था। खुद बापूजीको शक हो गया था कि अुनका शरीर चला जायगा। अुनकी पत्नी पू० शकरीबहन अहमदाबादमें थीं। बापूजीको किसीने सुझाया कि शकरीबहनको बुला लिया जाय।

बापूजीने कहा, "मुझे मददकी जरूरत नहीं है और न अुसका आना मैं यहां ठीक ही समझता हूं। हां, अगर चिमनलाल चाहे तो जरूर बुला सकता हूं।" चिमनलालभाअीने अिनकार कर दिया।

मुझे बापूजीकी यह कठोरता अच्छी नहीं लगती थी। मैं सोचता था, चिमनलालभाअी जानेकी तैयारी कर रहे हैं और बापूजी अुनकी पत्नीको अुनके पास नहीं आने देते। लेकिन बापूजीकी मनोभूमिकाको मैं कैसे समझ सकता था? बापूजी बीमारोंकी पत्नी थे, अुनकी मां थे और अुनके डॉक्टर थे। तब फिर दूसरोंकी जरूरत ही कहां रह जाती थी? संबंधी-जन आकर तो मोह ही पैदा कर सकते थे।

चिमनलालभाअीकी तबीयत अितनी कमजोर थी कि बापूजीने मुझे भी पहरा देनेको कहा, यद्यपि मैं कमजोर था। बापूजीने कहा, "हो सकता है आज रातको ही चिमनलाल चला जाय। हम सबको सावधान रहना चाहिये। हमारी सेवामें किसी प्रकारकी कमी न रहे तो हमारे लिअे बस है।" बड़ी सेवा-शुश्रूषाके बाद चिमनलालभाअीकी तबीयत सुधरी।

अिस प्रकार आश्रम पर बीमारीका अेक बड़ा प्रकोप आया, जिसका सामना बापूजीने बड़ी कुशलता और धीरजके साथ किया।

मैं अब भोजनालयमें ही भोजन करने लगा था। बापूजीको यह अच्छा लगा। वे कहने लगे, "तुम जो अलग बनानेका आग्रह रखते थे वह मुझे अच्छा नहीं लगता था। हमको तो सारे जगतके साथ कुटुम्बका-सा बरताव करना है। हर प्रान्तसे आनेवालोंके साथ प्रेमसे रहना सीखना है।"

मैंने कहा, "अबकी बार मैं भोजन अलग बनाना नहीं चाहता था, लेकिन अेक दिन दो-तीन बातें अैसी हो गअीं जिससे मुझे लाचार होकर अलग होना पड़ा।"

बापूने कहा, "अैसी बातोंको तो हंसकर टाल देना चाहिये। तुम अधिकारपूर्वक कह सकते हो कि मुझे यह चाहिये और यह नहीं चाहिये। शरीरको जिस जिस चीजकी आवश्यकता हो वह अुसे देना चाहिये। क्रोधको अक्रोधसे जीतना, कामको संयमसे जीतना और मूर्ख भी कह सकता है कि आगको पानीसे जीतना है। जैसे आग और पानी दीखते हैं वैसे क्रोध और अक्रोध दीखते नहीं हैं। लेकिन वे आग और पानीसे भी ज्यादा प्रत्यक्ष हैं।"

अहिंसा तथा अन्य विषयोंकी चर्चा

ग्रामोद्योग-संघके विद्यार्थी बापूजीके पास अकसर आया करते थे। अेक रोज अुन्होंने प्रश्न किया, "अहिंसात्मक साधनोंसे हम सामाजिक विग्रहको कैसे दूर कर सकते हैं?" बापूजीने अुत्तर दिया :

"सामाजिक विग्रह मिटानेका अर्थ है अपने आपको शुद्ध करना, अपनी दसों अिन्द्रियों और मन पर काबू रखना। हमारी नजरमें मनुष्यमात्रके लिअे समभाव हो, चाहे वह किसी भी मजहबका माननेवाला हो। अुसके दोषोंको जानते हुअे भी अुसके नाशकी बुद्धि हम न करें। अुसके दोषोंको दूर करनेकी प्रभुसे प्रार्थना करें। मेरे चार लड़के हैं मगर मेरे दिलमें अैसा नहीं है कि देवदास मुझे प्यारा है और हरिलाल कुप्यारा। भले वह मेरी और अपने भाअियोंकी नदामत (बदनामी) करता है। अगर मैं हरिलालको खत नहीं लिखता हूं तो अिसका अर्थ यह नहीं है कि मैं अुससे प्रेम नहीं करता हूं। समझो कि देवदासको टाअीफाअिड हो गया है और हरिलाल चंगा है, तो जो खुराक मैं हरिलालको दूंगा वह देवदासको नहीं दूंगा। जहां चंगेको रोटी खूब खिलाना धर्म है वहां बीमारको केवल पानी पर रखना धर्म हो जाता है। अिसका अर्थ यह नहीं है कि दोनोंमें कुछ फर्क है। मैं चाहता हूं कि हरिलालका नाश न हो, अुसके दोषोंका नाश हो। अिसी प्रकार मैं जानता हूं कि . . . में दंगेकी शुरुआत मुसलमानोंने की है। हिन्दू भी निर्दोष नहीं हैं, अुनकी तरफसे भी हिंसा होती है। दोनों अेक-दूसरेको खानेके लिअे अपना अपना संगठन करनेकी फिक्रमें हैं, जिसका नाम गुंडाशाही है। अंग्रेजोंने भी अिसी प्रकार दूसरोंको दबानेके लिअे गुंडाशाहीका संगठन कर रखा है। गुंडे कभी अपने-आप संगठित नहीं होते। फौज गुंडाशाही नहीं तो और क्या है? अिस प्रकारकी गुंडाशाहीका बोलबाला अधिक टिकाअू नहीं होता। कितनी सल्तनतें आअीं और बरबाद हो गअीं। अिसी प्रकार यह

भी बरबाद हुअे बिना नहीं रहेगी। हां, रह सकती है, अगर अंग्रेज लोग समझ जायें और अुनके पास जितने हथियार हैं अुनको फेंक दें, हवाअी जहाजोंको फूंक दें, बारूदमें आग लगा दें और कह दें कि जिन्हें लूटना हो हमको लूट लो। तो अंग्रेज जिन्दा रह सकते हैं, नहीं तो नहीं।"

घूमते समय मेरी बापूजीके साथ चर्चा होती थी। बापू गांवके लोगोंको गोपालनका महत्त्व समझाते थे। परन्तु लोगोंने कहा कि गांवमें कीचड़ बहुत रहता है और चारा भी कम है। बापूजीसे मैंने गांवका दूध खरीदनेके बारेमें पूछा तो अुन्होंने कहा कि जैसा अुचित लगे वैसा भाव ठहरा लो, लेकिन अैसी कोशिश न करना जिससे गांवके लोगोंको अेक पैसा भी कम मिले।

मैंने बापूजीसे आगे प्रश्न करते हुअे कहा, "कल मेरी सत्यदेवजीके साथ बात हुअी थी। अुनका मानना है कि आपने मीराबहन पर अितना प्रेम किया है जितना हिन्दुस्तानमें किसी पर नहीं किया। तो भी अभी तक वे स्वावलम्बी नहीं बन सकीं। अिस प्रकार आपके आश्रित रहना मोहकी निशानी है। ब्रह्मचर्यके बारेमें अुन्होंने कहा कि आज तक आपका जो शिक्षण रहा है वह बाहरी दबाव-सा रहा है। यह बात स्वाभाविक होनी चाहिये, अैसा आश्रमके लड़कोंको देखकर अनुभव होता है।"

बापूजीने कहा, "बात तो सच है, लेकिन मीराबहनका मोह निर्विकार है। वह मेरे पास कैसे आयी और अुसके जीवनमें क्या क्या तबदीली हुअी, यह जानने लायक बात है। अिसीसे आज भी मुझसे सीखनेकी दृष्टिसे वह मेरे पास रहनेका आग्रह रखती है। मैं जानता हूं कि यह दोष है, लेकिन मैं अुसे मरने भी नहीं दूंगा।

"ब्रह्मचर्यके बारेमें मैंने अपना विचार स्पष्ट लिखा है। जिसका मनसे पतन हुआ अुसका पतन हो चुका। यह बात ठीक है कि आश्रमके सब लड़के भाग गये, लेकिन अिससे मैं असफल हुआ हूं अैसा भी नहीं है। जो दो-चार संभले हुअे हैं अुनसे मुझे अिस वस्तुकी सिद्धताका भरोसा हो गया है। मैं खुद अपूर्ण हूं तो दूसरोंको पूर्ण मार्ग कैसे बता सकता हूं? मैं कुछ पारस पत्थर तो नहीं हूं जो दूसरोंको स्पर्श करते ही ब्रह्मचारी बना दूं। मेरा तो नम्र प्रयत्न है। जो लोग काल्पनिक गांधीको मानते हैं अुनको भी लाभ होता है। मेरे पास तो दूर दूरसे खत आते हैं कि आपके लेखोंसे हमको बहुत लाभ हुआ है। जो लोग मेरे नजदीक आ जाते हैं अुनको मालूम हो जाता

है कि मैं तो अेक हाड़-मांसका पुतला हूं। मैंने कभी गुरु बननेका दावा तो किया ही नहीं है। मैं तो अल्पज्ञ हूं। सर्वज्ञ तो अीश्वर ही है।"

दूसरे दिन फिर वैसी ही चर्चा चली। बापूजी कहने लगे, "मैं जो धूलमें से धान पैदा करनेकी बात कहता हूं अुसे तुम ध्यानसे सुनते हो न? तुम तो किसान हो। हरअेक चीजका ध्यान रखना और किसका क्या अुपयोग करना है वैसा जान-बूझकर करना।"

बापूजीकी बीमारी

हम लोग तो बीमार पड़े ही, लेकिन बापूजीको भी बुखार आ गया। जमनालालजी सोचने लगे कि यहां पर मलेरिया है, अिसलिअे बापूजीके लिअे अूपर टेकरी पर मकान बनाना चाहिये। अिसके लिअे वे बापूजीकी अिजाजत लेने आये। बापूजीने कहा, "जब मेरे लिअे बनाओगे तो बलवन्तसिंहके लिअे भी बनाना होगा और जब बलवन्तसिंहके लिअे बनाओगे तो अुसकी गायोंके लिअे भी बनाना होगा। क्योंकि मैं अुसको छोड़कर नहीं जा सकता और वह अपनी गायोंको छोड़कर नहीं जा सकता। अिसलिअे तुम अिस झंझटमें ही मत पड़ो।"

जमनालालजीको बापूकी बात माननी पड़ी। परन्तु बापूजीकी तबीयत अधिक खराब हो गअी। अंतमें बहुत आग्रहसे जमनालालजी बापूको सिविल अस्पताल वर्धामें ले गये। अिसी बीच मेरा कमरा लीपते हुअे प्रह्लाद* के हाथमें सुअी घुस गअी और टूट गअी। अुसे मैंने बापूजीके पास वर्धा अस्पतालमें भेज दिया। मैं सेवाग्रामके सब समाचार बापूजीको भेजता रहता था। मुन्नालालजीको बुखार था। अिसलिअे अुनको भी वर्धा भेजना चाहता था। बापूजीसे पुछवाया तो अुन्होंने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीन कागज मिले हैं। मुन्नालालके खतमें तुम्हारे खतोंकी पहुंच दी है। हां, रमणीकलालका खत भी मिला। मैंने तुमको धन्यवाद भी भेजे ह। मेरी अुम्मीद है कि शायद परसों मैं वहां पहुंच जाअूंगा।

मुझको आराम है।

---

* सेगांवका अेक हरिजन कार्यकर्ता जो आश्रममें काम करता था।

मुन्नालालको अब तो नहीं बुलाता हूं, लेकिन डॉक्टर महोदयको भेजनेकी कोशिश करूंगा। दरमियान वह सिर्फ दूध पर रहे। दस्त साफ न आवे तो दीवेल (अेरंडी) तेल लेवे और कमसे कम दस ग्रेन क्विनीन लेवे। अुसकी सेवा तो तुम करते ही हो।

गंगाबहनका खत नहीं मिला है, न मुन्नालालका। प्रह्लाद या किसीके बगैर मांगे दूध मत भेजो। प्रह्लादको दूध कल भी दिया था और आज भी दिया है मगनवाड़ीसे। प्रह्लाद अच्छी तरहसे है। दस दिन कमसे कम रहना होगा। पुरी (अनन्तराम पुरी) को आज नहीं लिखूंगा। बाकी कल।

दो बोतल तो वापिस आती हैं, बाकी कल भेजनेकी कोशिश करूंगा।

२०-९-'३६, वर्धा अस्पताल बापूके आशीर्वाद

कुछ दिन बाद बापूजी सेगांव आ गये। मुन्नालालभाओीको बुखार आता था। अुनका पेट भी खराब था। बापूजीने अुनको देखा और मुझसे कहा: "अिसको जुलाब दे दो और कमोड आदिकी सब व्यवस्था कर दो।" मैंने हां तो कह दिया, लेकिन मैं दूसरे काममें लग गया। थोड़ी देरके बाद बापूजीने पूछा: "क्यों मुन्नालालको जुलाब दे दिया है न?" मैं तो शरमके मारे जमीनमें गड़ गया। बोला: "बापूजी, मैं तो भूल गया।" बापूजीने लम्बी सांस ली और बोले: "यह तो बड़ा अपराध है।" मैंने अपना अपराध कबूल किया और मुन्नालालभाओीको जुलाब देकर कमोड आदिकी सब व्यवस्था की। अुनका पाखाना साफ करके बापूजीको खबर दी कि पाखाना कितना और कैसा था तथा अुसमें बदबू कितनी थी। बापूजी बोले: "भूलना तो सब प्रकारका ही पाप है। लेकिन रोगीकी सेवामें भूल करना तो अक्षम्य पाप है। समझो समय पर मदद न पहुंचनेके कारण रोगी मर जाय तो अुस भूलको किसी भी तरह सुधारा जा सकता है? लेकिन तुम अपनी भूल कबूल कर लेते हो यह मुझे प्रिय लगता है। कबूल करनेके बाद वह भूल फिर न हो तो मनुष्य अूंचा चढ़ता है। जाओ, अगर वह खानेको मांगे तो थोड़ी छाछ या भाजीका पानी दे दो; फलका रस भी दे सकते हो। अब अुसका बुखार जाना ही चाहिये। अुसको कह दो पूरा आराम करे।"

मैं बापूजीकी बात ध्यानावस्थित होकर सुन रहा था और अपनी भूलका दुःख महसूस कर रहा था। यह भी सोच रहा था कि बापूजीके दिलमें हमारे प्रति कितना प्यार भरा है। अिसका बदला हम कैसे चुका सकेंगे?

(२४–१–'३७ की डायरीसे)

मेरी बीमारी और बापूका आश्वासन

कुछ समयके पश्चात् मेरे पैरमें फोड़े हो गये। अुनके अिलाजके लिअे मैं वर्धाके सिविल अस्पतालमें ड्रेसिंग करा आता था और मगनवाड़ीमें रहता था। अिसीके साथ मुझे ज्वर भी हो आया। मैंने बापूजीको लिखा कि "फोड़े तो थे ही, बुखार और आ गया। मैं रोगी बनता जा रहा हूं। आपने कहा था कि जो सेगांवमें रहकर बीमार पड़ेगा अुसको सेगांव छोड़ना पड़ेगा। अिसलिअे मुझे आपके अुस निर्णयके पालनके लिअे भी सेगांव छोड़ना चाहिये।" वर्धासे मैंने अेक गाय भेजी थी। अुसके दूधका हिसाब रखनेके लिअे भी लिखा था। बापूजीका पत्र आया:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पत्र मिला। गाय आ गअी है। हिसाब रखा जायगा। डॉक्टर कहे सो करना। तुम्हारे सेगांव छोड़नेका प्रश्न अुपस्थित होता ही नहीं है। तुम्हारी व्याधि असाध्य नहीं है। बहुत दिनों तक चलनेवाली भी नहीं है। दो-तीन दिनमें हार क्यों गये? तुम्हारे खतमें मुझे अश्रद्धाकी बू आती है। थोड़े फोड़े हो जाते हैं, अुसका पूरा अिलाज भी नहीं हुआ है। अितनेमें वह न मिटनेका डर पैदा हो जाता है। यह कहांकी बात? तुम्हारे दिलको निश्चित करना है कि मैं अच्छा हो जाअूंगा, शीघ्र हो जाअूंगा। अच्छा होनेके लिअे डॉक्टर-वैद्यकी आज्ञाका पालन भलीभांति करूंगा। दिलमें अमंगल तर्क पैदा नहीं होने देना चाहिये। मेरे निर्णयके पालनकी फिकर तुम क्यों करोगे? और मेरे निर्णयमें कोअी महत्त्वकी बात तो है ही नहीं। माना कि मैंने किसी व्याधिग्रस्तकी सेवा ही करनेके लिअे अुसे सेगांव रखा, तो मेरा कुछ अनिष्ट तो नहीं होगा। तुम्हारे फिकर करनी है अच्छे होनेकी, शीघ्रतासे आ जानेकी और गायोंकी सेवा करनेकी। तुम्हारे फिकर करनी है तुम्हारे स्वभावकी अुग्रताकी।

७–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

मेरी बीमारी मुझे बढ़ती ही नजर आती थी। मैंने बापूको अिस बारेमें लिखा। बापूजीका अुत्तर आया :

चि० बलवन्तसिंह,

व्याकुल होनेकी कोअी बात नहीं है। डॉक्टरके सुपुर्द किया है सो ठीक ही है। वहींसे आराम होगा। धीरज नहीं छोड़ना।

गलतियां तो हकीम, वैद्य, डॉक्टर सब कर लेते हैं। गलती हो ही नहीं सकती अैसी पद्धति सिर्फ नैसर्गिक अुपचारकी ही है। अुसे चलानेकी श्रद्धा बहुत कम लोगोंमें रहती है और अुसके अनुभव भी बहुत कम मनुष्योंमें देखनेमें आते हैं।

१४–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

मैं अस्पतालसे देरमें आता था, अिस कारण अेक भाअी मेरे लिअे रोटी बना देता था। अेक रोज वह सेगांव गया और बापूजीने अुसके कामका हिसाब पूछा। अुसने हिसाबमें मेरी रोटी बनानेका काम भी बताया। बापूजीने अुससे कहा कि तुम्हें रोटी बनानेकी जरूरत नहीं है, वह खुद बना लेगा या किसी दूसरेसे बनवा लेगा। अुसने बापूका यह संदेश कुछ अिस प्रकारसे तोड़-मरोड़कर मुझे कहा कि मेरे दिलको लगा कि बापू यह समझते हैं कि मैं आलस्यके कारण अुससे रोटी बनवा लेता हूं। मुझे बापूके अूपर बहुत गुस्सा आया। मैंने क्रोधभरा अेक पत्र लिखा कि "मुझे आपकी गरज नहीं है। मैं कहीं भी चला जाअूंगा। अपनी रोटी मैं खुद बना सकता हूं और अपना सब काम भी खुद कर सकता हूं।"

यह पत्र लिखते समय मैं क्रोधसे बेहोश-सा हो गया था। जो मेरे मनमें आया वह सब बापूको लिख दिया था। पत्र हाथसे निकलते ही मेरा गुस्सा अुतरा तो मुझे बड़ा अफसोस हुआ। लेकिन तीर कमानसे निकल चुका था। बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे क्रोधकी सीमा ही नहीं है। अेक बेहोश, आलसी लड़केके कहने पर अितना क्रोध, अितना अविनय? सब प्रतिज्ञाओंका भंग? तुमको क्या पता .... के साथ क्या बात हुअी? मैं तुम्हारे खत पर हंसूं, रुदन करूं, कि प्रतिक्रोध करूं? रुदन करने योग्य

तुम्हारा खत है। लेकिन रुदन नहीं करूंगा। क्रोध करना पाप होगा और बुरा दृष्टान्त होगा। बस, तुम्हारी अिस मूर्खता पर हंसूंगा। अगर थकान है तो अवश्य सेगांव छोड़ोगे। लेकिन . . . को साथ लाकर मुझसे सुनो क्या हुआ। बादमें जो करना हो सो करो। आज ही आनेकी आवश्यकता नहीं है। अच्छे हो जाने पर आना। . . . के हाथकी रोटी हराम समझो। चंचल*से कहो।

१५–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

दूसरे दिन फिर बापूका पत्र आया:

चि० बलवन्तसिंह,

कल तो तुम्हारे खत पर हंस दिया। लेकिन अुस खतको भूल नहीं सका। अिसलिअे अभी दुःख हो रहा है। अितने क्रोधकी मैंने कभी आशा ही नहीं रखी थी। मैंने झवेरभाअीके मारफत संदेशा भेज दिया है। अुसके मुताबिक किया होगा। चंचलबहन तुम्हारी रोटी पकायेगी। वह नम्रतासे खाओ।

डॉक्टर कहे वही करो और जल्दी अच्छे हो जाओ। अच्छे होने पर दिल चाहे सो करना। अब तो कुछ अैसा ही मुझको लगता है कि तुम्हारी दुर्बलताका कारण क्रोध ही है। क्रोध और किसीको नहीं जलाता है। क्रोध करनेवाला ही जलता है। अेक नालायक बच्चेकी बातें सुनकर अेक क्षणमें तुमने अपना अनिष्ट कर दिया है और क्योंकि अुसकी बातें तुमने मान लीं।

१६–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

बापूजीके अिस दुःखसे मुझे बहुत दुःख हुआ और शरम भी आअी। लेकिन अब क्या कर सकता था? बापूजीका खत आया:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे खत आते रहते हैं। बेचारा लाखा बछड़ा तुम्हारी अिंतजारीमें रोता है। तो भी डॉक्टर साहब छुट्टी न दें तब तक

---

* श्री झवेरभाअी पटेलकी पत्नी श्री चंचलबहन। श्री झवेरभाअी गुजरात विद्यापीठके स्नातक हैं। मगनवाड़ीमें तेलघानी विभागके संचालक थे। आजकल भारत-सरकारके तेलघानी और अन्य ग्रामोद्योगोंके सलाहकार हैं।

वहीं रहो। हम लोग किसी न किसी तरह निभा लेंगे। मीराबहनकी झोंपड़ी* शुरू हो गयी है।

२०–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

शामको ही बापूजीका दूसरा खत आया:

चि० बलवन्तसिंह,

आज फजरमें दो लाअिन भेज दीं। मैं कुमारप्पाकी गाड़ी रोकूं तो ज्यादा लिख सकता हूं। लेकिन मैंने रोकना दुरुस्त नहीं माना। बायें हाथसे लिखनेकी गति बहुत मंद चलती है।

अधीराअीसे आराम होनेमें देर ही होनेवाली है। धीरजसे ही बन सकता है। सिविल सर्जनका कहना है कि तुम्हारे खूनकी अशुद्धि आज-कलकी नहीं है, बहुत दिनोंकी है। अिसलिअे देर होती है। वहां क्या काम करते हो? समय कैसे व्यतीत होता है? खुराक क्या चलती है? चित्तकी प्रसन्नता भी आराममें मदद देनेवाली वस्तु है। गीताभ्यासीको तो 'येन-केनचित्' संतुष्ट होना चाहिये, यह १२ वें अध्यायका वचन है।

२०–२–'३७, सेगांव बापूके आशीर्वाद

मैंने बापूको लिखा था कि खजूर और शहदसे शायद फोड़े हुअे हों और यह भी पूछा था कि ग्रामसेवकके लिअे अंग्रेजी जानना क्या जरूरी है? बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

खत मिला। शहद या खजूरसे फोड़े होनेका कोअी कारण नहीं पाता हूं। तब भी डॉक्टरसे पूछा जाय। दूध या भाजीका अभाव या अुसकी कमी और अधिक गेहूं ये कारण तो थे ही। और सबसे ज्यादा तुम्हारा अुग्र स्वभाव।

अंग्रेजी जाननेकी ग्रामसेवकोंके लिअे कोअी आवश्यकता नहीं है। यों तो भाषाका ज्ञान अच्छा ही है। तुम्हारा प्रश्न अिस दृष्टिसे पूछा नहीं गया है।

२१–२–'३७, सेगांव बापूके आशीर्वाद

---

* यह झोंपड़ी ही प्रख्यात **'बापूकुटी'** बनी है। प्रथम तो यह छोटे रूपमें मीराबहनके लिअे बनी थी।

आश्रममें दूधकी कमी थी, क्योंकि बापूका परिवार बढ़ने लगा था। असलिअे मैंने गाय वर्धासे भेजनेके बारेमें बापूसे पूछा तो अुन्होंने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

हां, गाय तो दूसरी अवश्य चाहिये, यदि अच्छी हो तो। डॉक्टर कहते हैं जल्दी अच्छे हो जाओगे।

२२–२–'३७, सेगांव बापूके आशीर्वाद

मुझे फिर ज्वर आ गया। मैंने बापूजीको लिखा कि मैं रोगी तो बना हूं, लेकिन राम मिलेगा या नहीं यह कौन जानता है। 'किस्मतसे राम मिला जिसको' अिस भजनका मनन करता हूं। बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

मेरी कलकी चिट्ठी मिली होगी। बुखार आया वह अब तो गया होगा। घबराहटकी कोअी आवश्यकता नहीं है। धीरजसे सब अच्छा ही हो जायगा। हां 'किस्मतसे जिसको राम मिले' भजन अवश्य मनन करने योग्य है। अगर मच्छर कष्ट देते हैं, तो मच्छेरीका अुपयोग करना चाहिये।

२३–२–'३७, सेगांव बापूके आशीर्वाद

परस्परावलंबनकी आवश्यकता

मैं वर्धा अस्पतालके अिलाजसे अच्छा होकर बापूजीके पास सेगांव आ गया और बापूजीके साथ सारी बातें हुअीं। अेक रोज शामको घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा कि मेरे अुस रोजके पत्रमें क्रोध तो था ही, आत्मश्लाघा भी थी अैसा विचार करनेसे पता चला। मैं यह मानने लगा हूं कि मनुष्य दूसरेकी सहायताके बिना अेक क्षण भी नहीं टिक सकता। बापूजीने कहा:

"ठीक है। जो हम खाते हैं जैसे गेहूं किसी दूसरेने पैदा किया, दुकानदारने नहीं। फर्ज करो कि अगर वह हमको पैसेके बदलेमें गेहूं न दे तो हम क्या करेंगे? और किसीने गेहूं भी पैदा कर लिया तो अुसके लिअे औजार किसने बनाये थे? हम अेक-दूसरेके आश्रित हैं। अगर वेदकी दृष्टिसे विचार करें तो हम अेक ही हैं। अितना ही नहीं, जिसको हम जड़ पदार्थ कहते हैं, जैसे लकड़ी आदि, वह और हम सब अेक समान ही हैं।

सब अेक ही जमीनसे पैदा हुअे हैं। जो सेवाभावसे परावलम्बी बनता है, मनसे सेवाके स्वाधीन रहता है वह स्वावलम्बी है। मगर जो सेवा करते हुअे कुछ कष्ट पड़ने पर दूसरोंकी तरफसे सहायता न मिलने पर नाराज होता है वह गिरता है। मान लो कि अेक आदमी प्यासा पड़ा है। अुसके पाससे सैकड़ों आदमी निकल जाते हैं और कोअी आदमी अुसे पानी नहीं पिलाता है। अगर अुसे अुन पानी न पिलानेवालों पर गुस्सा आये तो अुसका अज्ञान है। वह समझ ले कि सब लोग अपने अपने काममें लगे हैं। अगर अीश्वरको मंजूर होगा तो पानी मिल जायगा, नहीं तो पड़ा रहूंगा। आखिर तो कोअी आदमी आता है और पानी पिलाता है। अुसका भी वह अहसान न मानेगा। अहसान तो वह अीश्वरका मानेगा, क्योंकि हम सब अीश्वरके ही अंश हैं।"

आश्रमवासियोंसे बापूकी अपेक्षा

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा कि आप सेगांवके भविष्यके बारेमें क्या आशा रखते हैं? आप बार बार कहते हैं कि मेरे बाद सेगांवमें क्या होगा, कौन जाने? तो यहां जो आदमी हैं अुनसे आप क्या चाहते हैं? बापूजीने कहा :

"सेगांवमें अेक अच्छी दुकान चले। सबको घानीका तेल मिले। और भी आवश्यक वस्तुओंके लिअे वर्धा न जाना पड़े। गोपालन हो, यहांके सब बच्चोंको दूध मिले। भले दो पैसा या अेक पैसा सेरकी कीमतसे लें। खेतीकी पैदावार बढ़ाअी जाय। शायद बा न रहे, लीलावती जाय। तुम हो, मुन्नालाल है, नाणावटी है। अगर सब भाग जाओगे तो मीराबहन तो है ही। वह तो यहीं मरेगी। तुम सबमें अैक्य नहीं है, यह अच्छी बात नहीं है।"

मैंने कहा — अिसी कारणसे तो यह प्रश्न अुठता है।

बापूजीने कहा, "यह भी तो अेक काम है कि हम आपसमें मधुर सम्बन्ध बांधें। तुमको अितना अक्षरज्ञान तो नहीं है, लेकिन बुद्धिज्ञान तो है। व्यवहारज्ञान भी है ही। अक्षरज्ञान भी बढ़ा सकते हो।"

बादमें मीराबहनकी बात चली। बापूने कहा, "मीराबहन बहुत गरीबीसे रह सकती है। अुसकी कहींसे भी शिकायत नहीं आयी कि मीराबहनने हमको तंग किया। खैर, कुछ भी हो मीराबहन सेगांव नहीं छोड़ेगी।"

अितनेमें लीलावतीबहन बीचमें बोल पड़ीं और पूछने लगीं, "क्या बात हुअी?" बापूजीने हंसकर कहा — यह बात हुअी कि मेरे मरनेके दूसरे ही दिन पहले लीलावतीबहन भागेगी या बलवन्तसिंह। यह तो मैं जानता हूं कि पहले रोज तो कोअी नहीं भागोगे और झगड़ा भी नहीं करोगे। अेक अेक लकड़ी तो मेरी चिता पर अवश्य डालोगे। याद रखना, मुझे तो सेगांवमें ही जलाना है। कोअी कुछ कहे तो कहना कि हमको बापूने सेगांवमें जलानेको कहा है।

ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

अिसके बाद ब्रह्मचर्यके अूपर चर्चा हुअी। मैंने कहा, "आप कहते हैं कि संतानके लिअे स्त्रीसंग धर्म है, बाकी व्यभिचार है; और निर्विकार मनुष्य भी संतान पैदा कर सकता है। वह ब्रह्मचारी ही है। लेकिन जिसने विकारके अूपर काबू पाया है वह क्या संतानकी अिच्छा करेगा?"

बापूजीने कहा, "हां, यह अलग सवाल है। लेकिन अैसे भी लोग हो सकते हैं जो निर्विकार होने पर भी पुत्रकी अिच्छा रखते हैं।"

मैंने कहा, "अधिकतर तो संतानकी आड़में कामकी ही तृप्ति करते हैं।"

बापूजी, "हां, यह तो ठीक है। आजकल धर्मज संतान कहां है? मनुकी भाषामें अेक ही संतान धर्मज है, बाकी सब पापज हैं।"

मैंने पूछा, "कुछ लोग वासनाका क्षय करनेके लिअे विवाहकी आवश्यकता मानते हैं। क्या भोगसे वासनाका क्षय हो सकता है?"

बापूजी, "हरगिज नहीं।"

स्वावलम्बनका पाठ

अेक बार ठंडके मौसममें लोगोंकी संख्या अधिक हो गअी और ओढ़नेके कपड़े कम थे। बापूजीने अेक तरकीब निकाली। बहनोंकी पुरानी साड़ियां लेकर अुनके बीच बीचमें कागज रखकर वे रजाअी बना देते और कहते कि कागजसे ठंड दबती है। जो रजाअीकी मांग करता अुसे कागजकी रजाअी दे देते। अिस प्रकार कम खर्चमें काम कैसे चलाया जा सकता है, यही बापूजीका प्रयत्न रहता था। बापूने खुद भी अिस तरहकी रजाअी अिस्तेमाल की थी।

अेक बार अेक शीशीका डाट बनानेके लिअे बापूजीने मुझसे कहा। मैं गया और जो बढ़अी आश्रममें काम कर रहा था अुसको डाट बनानेके लिअे शीशी दे दी। अुसने अेक खूबसूरत-सा डाट बना दिया। मैं शीशी बापूजीको देने गया। बापूजीने डाट देखा तो बहुत खुश हुअे। मैं समझ गया कि बापूजी अिसको मेरा बनाया हुआ मानते हैं, अिसीलिअे अितने खुश हो रहे हैं। मैंने बापूजीसे कहा कि यह डाट मैंने नहीं बनाया है। बापूजी गंभीर हो गये और बोले, "अरे, मैं तो तुझे शाबाशी देना चाहता था, लेकिन तूने तो बड़ा गुनाह किया। मैंने कब कहा था कि बढ़अीसे बनवाना। मैंने तो तुझको बनानेके लिअे कहा था। भले आज खराब ही बनता, लेकिन तेरे हाथमें अेक कला तो आती। औजार पकड़ना सीखता, दुबारा अुससे भी अच्छा बनाता, तिबारा अुससे भी अच्छा और अिस तरह डाट बनानेका कारीगर बन जाता। जो काम अपनेको सौंपा गया है अुसकी जवाबदारी दूसरे पर डालना यह तो अच्छी बात नहीं है।" मैं बहुत शरमाया और मैंने अपनी भूल कबूल की। पहले जो बात छोटी लगती थी वह अब बहुत बड़ी नजर आती है। बापूजीके अुस डाटके सबकको मैं कभी नहीं भूल सका। अब यह चीज मेरे स्वभावमें दाखिल हो गअी है कि जो काम हमें सौंपा जाय वह हमें ही करना चाहिये। अैसी छोटी छोटी बातोंमें बापूजी हमें कैसा अुपदेश देते थे, अिसकी कल्पना आज जितनी आती है अुतनी अुनके सामने आती तो हम अुनसे और भी बहुत कुछ सीख सकते थे।

जब मैं अेक बजे अुठा तो मैंने देखा कि बछड़ी बिलकुल बेहोश पड़ी है, मृत्युके बिलकुल नजदीक है। मैं दौड़ता हुआ बापूके पास पहुंचा और कांपते कांपते बोला, "मुझसे आज गोहत्याका अपराध हो गया।" बापूजीने चौंककर पूछा, "क्या हुआ?" मैंने सारा किस्सा सुनाया। बापूजी अुठकर मेरे साथ आये और बछड़ीको देखकर बोले, "हां, गलती तो हो गअी है, लेकिन क्या किया जाय? अेक अुपाय है, वह करके देखो। अगर अिसका जीवन होगा तो बच जायगी। अिसके सारे शरीर पर मिट्टी लगा दो और देखो अिसका क्या परिणाम होता है।" बापूजी यह कहकर चले गये और मैंने अेक बाल्टीमें घोलकर अुसके सारे शरीर पर मिट्टी लगायी। विजयाबहन मेरी मदद कर रही थीं।

बापूजीने तो सिर्फ लगानेको ही कहा था, पर मैंने १५ मिनटके बाद अुसको साफ कर दिया और दूसरी बार लगा दी। पहली मिट्टीके साथ अुसका तम्बाकूका और तेलका काफी अंश निकल गया। मैंने देखा कि बछड़ीकी आंख जहां बंद हो गअी थी वहां अुसने पलक अुठाये। मुझे आशा बंधी और मैंने तिबारा मिट्टी लगायी। तिबारा मिट्टी लगाने पर अुसने कान हिलाये। अिस प्रकार मैंने दो तीन बार और मिट्टी लगायी और निकाली। पांच बजे तक बछड़ी खड़ी हो गअी, यद्यपि अभी तक बेहोशीसे ही अिधर अुधर पैर डालती थी। जैसे तैसे मैंने अुसको थोड़ा दूध पिलाया। दूसरे दिन तक वह बिलकुल स्वस्थ हो गअी। अुसके खड़े होनेकी खबर मैंने बापूजीको दी तो वे बहुत खुश हुअे। अुन्होंने कहा, "यह मिट्टीकी करामात है।"

अुस रोजसे मिट्टीके अूपर मेरा यह विश्वास हो गया कि अुसमें जहर खींचनेकी अजीब ताकत है। अुस बछड़ीको डॉक्टर या वैद्यकी कोअी दवा बचा नहीं सकती थी, अैसा मुझे आज भी लगता है। बादमें वह बछड़ी बड़ी हुअी और अुसने कअी बच्चे दिये। अुसको जब कभी मैं देखता मुझे मिट्टीकी बात याद आ जाती।

शुभ भावनाओंका सिंचन

अेक रोज बापूजीकी बकरी जंगलमें ब्याअी। बकरीने बच्चेकी नाभी अितनी चाटी और अुसका नार मुंहसे पकड़कर अितनी जोरसे खींचा कि बच्चेका पेट फट गया और अुसकी आंतें निकल आयीं। बकरी चरानेवाला अुसे लेकर मेरे पास आया। वह दृश्य देखकर मेरे तो होश अुड़ गये। बापूजी

देखेंगे तो कहेंगे कि तुम सावधानी नहीं रखते हो। आखिर मैं अुसे लेकर बापूजीके पास गया। अुसकी करुणाजनक दशा देखकर बापूजीको बहुत ही दया आअी और बोले, "क्या किया जाय? बकरीने तो प्यारसे ही चाटा था, लेकिन अैसा परिणाम आ गया तो बकरी बेचारी क्या करे? वह तो पशु है। लेकिन मनुष्य मोहवश अपने बच्चोंको कितना नुकसान पहुंचाते हैं? अिसका भी हमारे पास क्या अिलाज है? मिर्ची-मसाले, चाय, मिठाअी, अरे बीड़ी-तम्बाकू भी अुनको पीना सिखाते हैं या पीने देते हैं! यह अुनकी पेटकी आंत निकालना नहीं तो और क्या है? यह तो मैं दूसरी बात कह गया। अब तो अिसे सुशीलाके सुपुर्द करो। देखो वह क्या कर सकती है। अुसकी डॉक्टरीकी भी परीक्षा हो जायगी। देखें वह सिर्फ मनुष्यका ही अिलाज कर सकती है या हमारे पशुधनका भी।"

मैं तुरन्त दवाखानेमें, जो पास ही आखिरी-निवासमें था, अुसे सुशीला-बहनके पास ले गया। सुशीलाबहनने अुसकी आंतें अंदर करके पेटके टांके लगा दिये। मैंने बापूजीको दिखाया तो बोले, "ठीक है अगर अिसकी जिंदगी होगी तो बच जायगा। तुमसे जो बन सका किया और अिसकी सेवा भी करोगे। आगे हमको अनासक्तिकी साधना करनी है। अगर अब यह मर भी जाय तो दुःख क्या करना?"

मुझे लगता था बापूजी मुझे डाटेंगे कि जब तुमको पता था कि बकरी ब्यानेवाली है तो तुमने सावधानी क्यों नहीं रखी? लेकिन बापूजीने मेरी भूलकी तरफ अिशारा भी नहीं किया, अुलटे मुझे आश्वासन दिया कि मैं अिसका दुःख न मानूं। साथ ही बहुतसा अुपदेश भी दे गये। मैं मन ही मन बापूजीके मधुर स्नेह और अुपदेशका मनन करता हुआ गोशालामें आया। और जितनी संभाल संभव थी अुतनी मैंने अुस बच्चेकी रखी। लेकिन आखिर वह दो-तीन रोजमें मर गया।

अेक रोज अेक गाय ब्याअी तो अुसके बच्चेने गोबर नहीं किया और अुसका पेट फूल गया। मैंने बापूजीको खबर दी तो बोले, जाओ सुशीलाको पकड़ो। मैं सुशीलाबहनके पास गया और अुन्हें गोशालामें ले गया। अुन्होंने दवा दी और पानीमें घोलकर पिलानेको कहा। मैंने पिला दी। दवा पिलानेसे या पेटकी ही गर्मीसे अुसके मुंहमें छाले हो गये। सुशीलाबहनने अुसे डिप्थेरिया रोगका नाम दिया और छूतका रोग बताया। गोशालासे अलग रखनेकी

सलाह दी। मैंने अुसे गोशालाके पीछे खेतमें अेक आमके पेड़के नीचे रख दिया और खुद भी अुसके पास सोने लगा। अुसका पेट बार बार फूलता था, अिसलिअे मुझे अेनीमा देना पड़ता था। खुराकमें थोड़ा मांका दूध देता, मोसम्बीका रस भी देता था। किसीने बापूजीके पास शिकायत की कि बलवंतसिंह तो गायके बच्चेको भी मोसम्बीका रस पिलाता है। बापूजीने कहा, "अरे, अुसके लिअे तो गायका बच्चा मनुष्यके बच्चेसे भी प्यारा है। मैं अुसे मोसम्बीका रस पिलानेसे कैसे रोकूं?" जब यह बात मेरे कान पर आअी तो मैं बापूजीके प्रेमसे अितना दब गया कि अपने आपको खोया-सा अनुभव करने लगा। मेरी गोसेवाकी भावनाको अितने मधुर और जीवनदायी जलका सिंचन मिला, यह मेरे पूर्वजोंके पुण्यका ही प्रताप हो सकता है। बापूजी जिस प्रकार आश्रमवासी रोगियोंकी सुबह घूमनेके बाद देख-भाल करते थे, अुसी प्रकार मेरे गायके बीमार बच्चेको भी देखते थे। अुसके बारेमें सब हाल पूछते थे। अुस बच्चेकी बीमारीके कारण ही मैं गांधी-सेवा-संघकी सभामें जानेके लिअे बापूजीसे अिजाजत नहीं मांग सका था।

माली छोटेसे पौधेको जिस सावधानीसे सींचता है, अुससे भी अधिक सावधानीसे बापूजी हमारी शुभ भावनाओंको सींचते थे, और अशुभ भावना-ओंको डॉक्टरके ऑपरेशनकी तरह काट फेंकते थे।

गोशाला और खेतीके लिअे नियम

अुस समय मैंने गोशालाके लिअे अैसा नियम बनवाया था कि जितने भी आश्रमवासी हैं वे सब आधा घंटा रोज गोशालाको दें और अुसकी सफाअी करें। सब लोग रोज आधा घंटा गायों और अुनके बच्चोंको साफ करते थे। अुस समय विजयाबहन पटेल खास तौरसे गोशालामें मेरी मदद करती थीं। खेतीकामके लिअे भी मुझे कभी जरूरत पड़ती तो बापूजीके पास मैं जाता और बापूजी सबको खेतीकामके लिअे भेज देते थे।

अेक बार हमारा गेहूं खतमें पका खड़ा था। बादल हो रहे थे। बारिशका डर था। मजदूर नहीं मिल रहे थे। मैंने बापूजीसे कहा तो अुन्होंने कहा कि मुझे छोड़कर सबको ले जाओ। अुनमें राजकुमारीबहन, महादेवभाअी, विजयलक्ष्मी पंडित तथा दुर्गाबहन भी थीं। खास तौरसे दुर्गा-बहनका चित्र मैं नहीं भूल सका हूं। अुनका शरीर भारी था। लेकिन अुन्होंने सबके साथ बड़े अुत्साह और प्रेमसे गेहूं काटनेमें पूरी पूरी मदद की।

राजकुमारीबहन जहां तक मेरा खयाल है १९३५ में जब बापूजी दिल्लीकी हरिजन-बस्तीमें अेक महीना ठहरे थे तब मिली थीं। बीच बीचमें मगनवाड़ीमें भी आती थीं। सेवाग्राममें अुनका बापूके पास रहनेका समय अधिकाधिक बढ़ता गया और फिर करीब करीब वे बापूके पास ही ठहर गअीं।

वर्षाका कष्ट

गोशालामें मकानोंकी कुछ कमी थी। मैंने कुछ नये मकान बनानेकी मांग की तो बापूजीने गरीबीसे काम चलानेका अुपदेश दिया। यह मुझे रुचा नहीं। लेकिन यह सोचकर मैं चुप रहा कि कष्ट होने पर देखा जायगा। बरसातके दिन थे। पानीकी झड़ी लगी थी। साथमें हवा भी थी। गोशालामें बौछार आ रही थी और अूपरसे भी पानी टपक रहा था। मैंने बापूजीको लिखा :

परम पूज्य बापूजी,

आपने मेरे मकानका बजट स्वीकार न करके मुझे गरीबीसे काम चलानेका अुपदेश दिया। आपकी आज्ञाका अुल्लंघन तो कैसे किया जाय? लेकिन आपके गरीबीसे रहनेके सिद्धान्तको गाय बेचारी क्या समझे? वह तो चुपचाप कष्ट ही सह सकती है। आप आरामसे सूखी कुटियामें बैठे हैं। आपके पास अनेक सेवक-सेविकाअें सेवाके लिअे प्रस्तुत हैं। कहीं अेक भी बूंद टपके कि तुरन्त अुसे रोकनेके लिअे दौड़ पड़ेंगे। लेकिन यहां मेरी और गायोंकी पुकार कौन सुने? चारों ओरसे आनेवाली पानीकी बौछारोंसे गोशालामें पानी ही पानी हो गया है। गायें ठंडसे ठिठुर रही हैं। अैसे समयमें मेरी क्या दशा हो रही होगी, अिसकी कल्पना आप कर सकते हैं। विशेष क्या लिखूं?

गायोंके दुःखसे दुःखी
बलवन्तके सादर प्रणाम

मेरी टेर सीधी ठिकाने पर जा पहुंची। थोड़ी देरमें ही श्री रामदासजी गुलाटी* बरसाती कोट पहनकर गोशालामें आ पहुंचे और बोले, "मुझे बापूजीने अभी हाल बुलाकर आपका पत्र पढ़ाया और कहा कि 'अभी जाकर देखो

---

* सीमाप्रान्तके अेक बापूभक्त अिंजीनियर। अिनका ज्यादा परिचय प्रकरण १५ में देखिये।

अुसकी गायोंका क्या हाल है तथा जो करना हो वह जल्दीसे जल्दी करवा दो। अुसका कहना ठीक है। मैं तो महात्मा ठहरा, अिसलिअे मेरे सुख-दु:खकी चिन्ता तो तुम सब लोग रखते हो, लेकिन गायके सुख-दु:खकी चिन्ता अुसके बिना कौन करे?' तो अब आप बतायें कि आप क्या चाहते हैं।" यह बात सुनकर तथा बापूजीकी तत्परता देखकर मेरे आनन्दका पार न रहा। मैंने अपनी कठिनाअी रामदासभाअीके सामने रख दी। अुसके अनुसार अुन्होंने नये मकान बांधनेकी योजना बनाकर बापूके सामने पेश कर दी और तत्काल टट्टे बंधवाकर जो सुविधा की जा सकती थी वह करवा दी। थोड़े दिनोंमें ही मेरी कल्पनाके अनुसार मकान बनकर तैयार हो गये।

गोपरिवारकी वृद्धि

अिस समय हमने गांवकी गायोंका दूध भी खरीदना शुरू कर दिया था। पहले तो सीधा भोजनालयमें ही लेते थे, लेकिन बादमें पारनेरकरजीने आश्रमके दरवाजेमें प्रवेश करते ही बायें हाथको जो अूंचा-सा मकान है अुसे दूधघर बनाया। आगे चलकर अुसमें भी काम नहीं चला तो बड़ा दूधघर तालीमी संघकी ओर बनाना पड़ा। गांवमें अब काफी दूध होने लगा था। तालीमी संघका भी विस्तार बढ़ा और चरखा-संघ भी आ गया। अिस कारणसे दूधकी खपत भी काफी होने लगी थी। आश्रमवासियोंकी संख्या ज्यों ज्यों बढ़ती जाती थी, त्यों त्यों गायोंकी संख्या भी बढ़ानी पड़ती थी।

बापूजी चाहते थे कि व्यक्तिगत गाय कोअी न रखे। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जी और मगनवाड़ीसे झवेरभाअीकी गाय भी आश्रमकी गोशालामें आ गअी।

गायकी समझदारी और स्नेह

गायकी समझदारी और स्नेहके विषयमें मैं पहले भी विश्वास रखता था, लेकिन अुसका प्रत्यक्ष अनुभव तभी हुआ जब सेवाग्रामकी गोशालाका संचालन करते समय मेरा सारा ध्यान गायों पर ही केन्द्रित हो गया। मैं तूफानीसे तूफानी गाय खरीदकर ले आता और थोड़े ही दिनोंके स्नेहसे वह मेरे साथ हिल जाती और मेरी भाषा (संकेत) समझने लगती। अुसके कुछ मोटे अनुभव यहां देता हूं।

अेक बार आश्रममें दूधकी कमीको पूरा करनेके हेतुसे आठ-दस गायें खरीदनेके लिअे मैं और पारनेरकरजी यवतमाल जिलेकी पांढरकवडा तहसीलमें

गये। वहां मैंने अेक गाय पसन्द की। गायवालेने साठ रुपये मांगे। हमने पचपन रुपये कहे, लेकिन सौदा न बना। हम आगे बढ़ गये। बीस पच्चीस मील जाकर हमने अेक वैसी ही गाय पचास रुपयेमें खरीद ली। मेरा मन पहली गायमें भी फंस गया था। दोनोंकी सुन्दर जोड़ी बन सकती थी। अिसलिअे साठ रुपये देनेके लिअे पारनेरकरजीकी सहमति लेकर मैं अकेला ही वहां गया। गाय खरीद ली। लेकिन लेकर चलते समय वह छूट कर भाग गअी और दिनभर नहीं मिली। जब शामको भी न लौटी तो गायवालेको संदेह हो गया कि कहीं शेरने मार न दी हो। अिसलिअे अुसने रुपये वापस करनेसे अिनकार कर दिया। दिनमें वह रुपये वापस करनेको राजी था। दूसरे दिन गाय मिल गअी और अुसे अेक बैलके साथ गलेमें बांधकर अुसने बीस मील दूरके अेक गांव तक पहुंचा दिया। गाय पहली ब्यातकी थी और मजबूत थी। पारनेरकरजी अुस गांवसे आगे चले गये थे, लेकिन वह भाअी अपना बैल लेकर वहींसे लौट गया। मैंने गाय पर हाथ फेरा और रामनाम लेकर अुसे वहांसे खोलकर अेक स्कूलमें ले जाकर बांध दिया। दूसरे दिन अुस गांवमें अेक और आदमी व बैलके लिअे खोज की, लेकिन सफलता नहीं मिली। सिर्फ अेक आदमी, वह भी जमींदारकी जबरदस्तीके कारण, मिला। अुसे साथ लेकर मैं चल तो दिया, लेकिन शीघ्र ही यह जानकर कि अुसकी स्त्री सख्त बीमार है और अुसे वहां जाना जरूरी है मैंने अुसे छोड़ दिया। मैंने फिर रामनाम लेकर गायसे बात की और अुसे लेकर अकेला ही चला। गाय चुपचाप मेरे पीछे चली आअी और दोपहर तक हम खरीदली पहुंच गये, जहां पारनेरकरजी ठहरे थे। जो गाय मैं ले आया था वह वहां ब्या गअी। तीन और गायें खरीदीं, जिससे कुल पांच गायें हो गअीं। यहां सेवाग्रामसे हमने बैलगाड़ी मंगा ली थी। पारनेरकरजी मोटर-बससे सेवाग्राम चले गये और मैं दूसरे दिन छोटे बच्चों और गायोंको लेकर सेवाग्रामके लिअे रवाना हुआ। हम अुसी दिन सेगांव पहुंचना चाहते थे। रास्तेमें शामको अेक गांवमें लोगोंकी टोली गायोंको देखनेके लिअे जमा हुअी। अिससे तीन गायें चमक कर भाग गअीं। अुनका पीछा करनेमें मुझे कंटीले तारोंमें अुलझ जानेसे गहरी चोट आ गअी। लेकिन सौभाग्यसे सवेरे गांवके पास ही वे तीनों गायें मिल गअीं और सेवाग्राम पहुंच गअीं। मैं अेक मास तक बिस्तरमें रहा। अुसकी निशानी अब तक मौजूद है।

साठ रुपयेवाली गायका नाम चन्द्रभागा रखा और दूसरीका नाम साबरमती। ये दोनों नाम साबरमती आश्रमकी स्मृतिमें रखे गये थे। चन्द्रभागा नदी आश्रमके पास ही साबरमतीमें मिलती है। चन्द्रभागा सफेद कपड़ोंसे भड़कती थी और हमला कर बैठती थी। अेक दिन अेक दर्शक महोदय मेरे साथ खड़े बातें कर रहे थे। अुधरसे गायें चरकर लौटीं। चन्द्रभागा अुन दर्शक पर दौड़ पड़ी। आगेके दोनों पैर अुठाकर वह अुन पर छलांग मारनेवाली ही थी कि मेरी आवाज 'अरे, चन्द्रभागा, यह क्या करती है?' अुसने सुनी और लौट पड़ी। वे भाअी अचम्भेमें रह गये कि अभी अभी तो यह शैतानकी तरह चढ़ी आ रही थी और तुरन्त ही आदमीकी तरह रुक गअी। अुनके लिअे यह अद्‌भुत घटना थी। मुझे भी पक्का विश्वास तो नहीं था कि चन्द्रभागा मेरा कहना मान ही लेगी। परन्तु मैं खाली हाथ खड़ा था। जो शब्द मेरे मुंहसे निकल गये अुनके सिवा और करता भी क्या? चन्द्र-भागाने अुस दिन मेरी बात मानकर गायकी समझदारीमें मेरी जो श्रद्धा थी अुसे और बढ़ा दिया।

अेक दिन बछड़े चरानेवाले लड़केने आकर कहा कि आज बलराम (अेक बछड़ेका नाम) कहीं खो गया है, मिलता नहीं है। मैं खोजने चला। काफी दूरी पर गांवके पशु चर रहे थे। मैंने दूरसे पुकारा, 'अरे बलराम, तू कहां है?' अुत्तरमें अुसने हुंकार की। मैंने फिर कहा, 'तू यहां क्यों भटकता है?' अिस शब्द पर वह दौड़ा, अुसके बीचमें अेक कांटेदार बाड़ थी अुसे अेक छलांगमें पार करके मेरे पास आ गया और मेरे पीछे पीछे चलने लगा।

अेक दिन अेक बछड़ी बीमार हो गअी थी। अुसे ज्वर आ गया था। अुसने अपनी मांके पास न जाकर मेरे पास बैठना पसन्द किया। अिसलिअे मैंने तख्ते पर बिस्तर लगाया, ताकि वह जमीन पर बिछी हुअी चटाअी पर बैठ सके। लेकिन जब वह तख्ते पर मुंह रखे खड़ी रही तब तो लाचार होकर मुझे चटाअी पर सोना पड़ा। फिर वह मेरे पास शांतिसे बैठी।

अेक बैलके पैरमें चोट लगी थी। वह बैठा था। जब मैं दवा लेकर अुसके पास गया तो वह अुठकर खड़ा हो गया। मैंने कहा, भले आदमी (बैल), मैं तो तेरे पैरमें लगानेके लिअे दवा लाया और तू खड़ा हो गया। बैठ जा। वह तुरन्त बैठ गया। जब मैंने अुसका पैर पकड़ा तो

अुसने अपनी आंखें बन्द कर लीं और दवा लगाकर पट्टी बांधने तक चुपचाप बैठा रहा। मेरे हटते ही वह फिर खड़ा हो गया।

सन् १९४४ में मैं बंगालमें पूज्य सतीशबाबू (बाबा) के पास अुनके लिअे गायें खरीदकर अुनकी गोशाला चालू करनेके लिअे गया था। अेक देहातमें, जहां अुनका काम चल रहा था, अेक भाअी अपने बीमार बैलको लेकर आया और मुझसे बोला, बाबा कहते हैं कि आप पशुओंकी भाषा पहचानते हैं। यह सुनकर पहले तो मुझे बाबा पर गुस्सा आया कि वे अैसी गलत बातें गांवके भोलेभाले लोगोंको क्यों कहते होंगे। लेकिन जरा सोचने पर मैंने समझ लिया कि अुनका आशय जानवरका दर्द समझ लेनेसे है। तब मैंने अुत्तर दिया कि बाबा सच कहते हैं और अुसे अुपचार बता दिया। वह बैल अच्छा हो गया। तबसे वहांके लोग मुझे गोरुबाबूके नामसे पुकारने लगे (गोरु अर्थात् पशु)। मुझे भी यह नाम प्रिय लगा। यह बात सच है कि मेरा दिल गायके साथ अितना अेकरूप हो गया है कि गाय जब हरी हरी घास चुगती है तब मुझे तृप्तिका अनुभव होता है।

१४

आश्रमका विस्तार

आश्रम-परिवारमें वृद्धि

अेक रोज परचुरे शास्त्री दूधघरके पास छिपे बैठे थे। मीराबहनने अन्दर आनेको कहा। वे आकर खड़े हो गये और बापूजीसे कहने लगे, "मुझे तो आपके सान्निध्यमें रहना है और यहीं मरना है।" अुनको कुष्ठ रोग हो गया था। कहने लगे, "मुझे कुछ नहीं चाहिये। अेक झाड़के नीचे पड़ा रहूंगा। दो रोटी मिल जायें तो बस है।" बापूजी गंभीर विचारमें पड़ गये। अुनको हां भी कैसे कहें? अितने लोग आश्रममें आते हैं, जाते हैं और रहते हैं। किस तरह अुनको संभालेंगे? और अुनको ना भी कैसे कहें? लेकिन दूसरे दिन बापूजीने कहा कि अगर मैं आज शास्त्रीजीको ना कह देता हूं तो अपने धर्मसे चूकता हूं। मेरी कसौटी करनेको ही अीश्वरने अिन्हें भेजा है। बस, बापूजीने अुन्हें आश्रममें रखनेका निश्चय कर लिया। आश्रमके पास ही

अुनके लिअे अेक झोंपड़ी बनवा दी और बापूजी बड़े प्रेमसे अुनकी सार-संभाल करने लगे। जब अुनका रोग भयानक स्थितिमें पहुंचा तो बापूजीने स्वयं ही अुनकी मालिश करना भी शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे बापूजीको यह महसूस होने लगा कि महादेवभाअी यहीं रहें तो अच्छा, क्योंकि वर्धासे आने-जानेमें अुनका काफी समय और शक्ति खर्च होती थी। अिसलिअे महादेवभाअीके लिअे अलग मकान बनानेका निश्चय हुआ। फिर किशोरलालभाअीके लिअे भी अेक मकान बनवाया गया। आश्रमके कुअेंके पानीमें कुछ खराबी थी, अिसलिअे सीमेंट कांकरीटका अेक नया कुआं बनाया गया, जो अभी तालीमी संघके अधिकारमें है।

नअी तालीम

आरंभमें बापूजी नअी तालीमका काम भी आश्रमके मारफत ही करना चाहते थे। अुसके लिअे जरूरी मकान बनाये गये, जो आज तालीमी संघमें विलीन हो गये हैं। शिक्षकका काम श्री मुन्नालालभाअीको सौंपा गया था। अिसलिअे अुनका नाम गुरुजी पड़ा था, जो सेवाग्राममें आज भी प्रचलित है। श्री अमृतलाल नाणावटीने भी कुछ दिन यह काम किया। फिर तो बड़े गुरुजी आर्यनायकम्‌जीको यह सारा काम सौंप दिया गया। अुनका मकान तो बन ही गया था। आश्रमने बुनाअी, धुनाअी और पढ़ाअीके लिअे जो मकान बनाये थे वे भी अुनको सौंप दिये गये। आश्रमको जो जमीन जमनालालजीने सौंप दी थी, अुसका दानपत्र आश्रमके नाम अभी तक नहीं लिखा गया था। अुस जमीनमें से ८ अेकड़ जमीनका दानपत्र तालीमी संघके नाम जमनालालजीने लिख दिया। तालीमी संघका विस्तार होता जा रहा था और वह आश्रमकी तरफ बढ़ता जा रहा था। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीकी 'जमीन चाहिये, मकान चाहिये' की मांग बढ़ती जा रही थी। अिससे तंग आकर अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा, "आखिर अिसकी कहीं हद भी है? ये तो रोज रोज मांगते ही रहते हैं।"

बापूजीने कहा कि हमको तो असंग्रह-व्रतका पालन करना है। जो दूसरोंको चाहिये वह हमको नहीं चाहिये। अुनको तो नअी तालीमका काम मैंने सौंपा है। अिसलिअे अुनको आश्रमसे जो चाहिये वह देनेको मैंने कह दिया है। और हमारा दुनियामें है भी क्या? जिस जगह हम बैठे हैं वह भी हमारी नहीं है। हमको तो जलानेके लिअे साढ़े तीन हाथ जमीन मिलनेवाली है।

और वह जमीन भी कहां रहनेवाली है? हमारे शरीरकी तो राख हो जायगी। वह भी मुट्ठीभर! यह कहते हुअे बापूजीने मुट्ठी बांधी, मुंहके सामने हाथ खोलकर जोरसे फूंक मारी और फर्र् आवाज किया। और जोड़ा, "वह राख भी कहां रहनेवाली है? यों अुड़ जायगी!" और हंस पड़े।

मैं गया तो था शिकायत करने, क्योंकि जमीन और मकान छोड़ना सबसे अधिक मुझे ही कष्टदायी था। मुझे अुनकी मांग अनुचित लगती थी। लेकिन मेरा पांसा अुलटा ही पड़ा। बापूजीने तो ज्ञान और वैराग्यकी कथा छेड़ दी। फिर बोले, "देखो, यह नअी तालीमका काम मेरे जीवनका आखिरी काम है। अगर अिसे भगवानने पूरा करने दिया तो हिन्दुस्तानका नकशा ही बदल जायगा। आजकी तालीम तो निकम्मी है। जो लड़के स्कूल-कॉलेजोंमें शिक्षा पाते हैं अुनको अक्षरज्ञान भले हो जाता हो, लेकिन जीवनके लिअे अक्षरज्ञानके सिवा और भी कुछ चाहिये। अगर यह अक्षरज्ञान हमारे दूसरे अंगोंको निकम्मा बना दे, तो मैं कहूंगा मुझे तुम्हारा यह ज्ञान नहीं चाहिये। हमको तो लुहार चाहिये, सुतार चाहिये, तेली चाहिये, राज चाहिये, पिंजारा चाहिये, कातनेवाला और मजदूर चाहिये। सारांश यह कि सब प्रकारके शरीर-श्रम करनेवाले चाहिये और अुसके साथ साथ अक्षर-ज्ञान भी सबको चाहिये। जो ज्ञान मुट्ठीभर लोगोंके पास ही हो वह मेरे कामका नहीं है। अब सवाल यह है कि सबको यह सब ज्ञान कैसे मिले? अिस विचारमें से नअी तालीमका जन्म हुआ है। मैं जो कहता हूं कि नअी तालीम सात सालके बच्चेसे नहीं, मांके गर्भसे आरम्भ होनी चाहिये — अिसका रहस्य तुम समझ लो। अगर मां परिश्रमी होगी, विचारवान होगी, व्यवस्थित होगी, संयमी होगी, तो बच्चे पर अिसका संस्कार मांके गर्भसे ही पड़ेगा।

"तुमने तो अभिमन्युकी कथा पढ़ी है न? जो अुसका रहस्य है वही नअी तालीमका है। यह अलग बात है कि अभिमन्युका जमाना हिंसाका था। लेकिन हमको तो कविकी मूल कल्पनाको ही लेना है, बाकीको फेंक देना है। तो मैं यह कह रहा था कि जब मैंने यह काम आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीको सौंपा है तो मैं यह सुनना नहीं चाहता कि बापूने हमको यह सुविधा नहीं दी, अिसलिअे हम जो करना चाहते थे वह नहीं कर सके। हां, अुनको भी अपना स्वभाव बदलना होगा और मैं देख रहा हूं कि वह बदल भी रहा है। आशादेवी तो गजबकी बाअी है। बच्चों पर कितना प्यार करती है और

सदा नअी तालीमका ही चिन्तन करती है। मेरी स्वराज्यकी कल्पना भी तो नअी तालीममें ही छिपी है। सिर्फ अंग्रेज यहांसे चले जायं और हम जैसे हैं वैसे ही रहें, तो वह स्वराज्य मेरे क्या कामका? मेरी नअी तालीमकी व्याख्या यह है कि जिसको नअी तालीम मिली है, अुसे अगर गादी पर बिठाओगे तो वह फूलेगा नहीं और झाड़ू दोगे तो शरमायेगा नहीं। अुसके लिअे दोनों काम अेक ही कीमतके होंगे। अुसके जीवनमें फिजूलके मौजशौकका तो स्थान हो ही नहीं सकता है। अुसकी अेक भी क्रिया अनुपयोगी और अनुत्पादक न होगी। नअी तालीमका विद्यार्थी बुद्धू तो रह ही नहीं सकता। क्योंकि अुसके प्रत्येक अंगको काम मिलेगा। अुसकी बुद्धि और हाथ साथ साथ चलेंगे। जब लोग हाथसे काम करेंगे तो बेकारी और भुखमरीका तो सवाल ही नहीं रहेगा। मेरी नअी तालीम और ग्रामोद्योग अेक ही सिक्केकी दो बाजुअें हैं। अगर ये दोनों सफल होंगे तो ही सच्चा स्वराज्य आयेगा।

"खैर, तुमको तो मैं यह समझाना चाहता हूं कि आर्यनायकम्‌जी जो मांगें वह हमें देना है और यह समझकर देना है कि आखिर वह काम भी हमारा ही है। अगर अुनके लड़के खेती और गोशालामें काम मांगें तो तुमको देना ही पड़ेगा। क्योंकि जब मैं तालीमको अनिवार्य बनानेकी बात करता हूं तो वह तालीम स्वावलम्बी होनी चाहिये। सरकार तो अितने स्कूल खोलना भी चाहे तो आज अुसके लिअे शक्य नहीं है। आजकी बात तो छोड़ ही दो, क्योंकि अंग्रेजोंको हमारे शिक्षण और स्वावलम्बनकी कहां पड़ी है। लेकिन स्वराज्य-सरकार भी छूमंतर नहीं कर सकेगी। हां, नअी तालीमसे छूमंतर जरूर हो सकता है। आजके शिक्षाशास्त्री कहते हैं कि शिक्षाका खर्च विद्यार्थियोंसे निकलवाना योग्य नहीं है, निकलेगा भी नहीं। मैं कहता हूं कि तब सबको शिक्षित करनेकी बात भूल जाओ। जब गांव गांवमें स्कूल चलाना है तो अुनको अपना खर्च निकालना ही होगा। आज यह खर्च भले कुछ कम भी निकले, लेकिन अंतमें हमें शिक्षाको स्वावलम्बी बनाना ही होगा। यह अलग बात है कि सब अेक ही प्रकारका काम नहीं सीखेंगे। हमारे गांवोंमें तो अनेक अुद्योग पड़े हैं। आज अुनमें सुधार भी तो किसीको नहीं सूझते हैं। नअी तालीमका विद्यार्थी सोचेगा — अगर अेक घंटेमें १ सेर कपास रेची (ओटी) जाती है तो हम दो सेर कैसे रेचें? अरे, वह तुम्हारी गायका दूध कैसे बढ़े यह भी सोचेगा। खेतीकी पैदावार बढ़ायेगा तब तुम

अुसे गोशाला और खेतीमें काम क्यों न दोगे? अिसीलिअे मैं कहता हूं कि हमारे सब काम अेक-दूसरेसे अलग किये ही नहीं जा सकते। अेक लोटे पानीका भी मोहताज रहे अैसा विद्यार्थी मेरे किस कामका?"

बापूजीकी बातमें रस तो आ रहा था, लेकिन मेरे पास अितना लंबा अुपदेश सुननेका समय नहीं था। खेतीमें आदमियोंको काम बताना था। मैंने जैसे तैसे पीछा छुड़ाया और अपने काम पर चला गया। आज मैं सोचता हूं तो लगता है कि सचमुच ही बापूजीकी मुट्ठीभर राख अैसी अुड़ी कि सारे देशके तीर्थस्थानों पर छा गयी। जब मैं हिमालयमें श्रीकेदारनाथजी पहुंचा और पंडेने बताया कि वहां अुस कुण्डमें बापूजीकी भस्म प्रवाहित की गअी थी, तो वहां बर्फ जमी नदीके अूपरसे जानेका खतरा अुठाकर भी मैं अुस स्थानका दर्शन करने गया। अुस सरोवरको देखकर और बापूजी तथा किशोरलाल-भाअीका स्मरण करके मुझे रोमांच हो आया और वहां थोड़ी देर बैठकर दोनोंको मैंने श्रद्धांजलि अर्पण की।

अुस रोज नअी तालीमके बारेमें जो कुछ बापूने कहा था, आज सेवाग्राममें अुसका काफी विकास हो गया है। महापुरुषोंके शुभ संकल्प व्यर्थ नहीं जाते। दिन-प्रतिदिन शुभ संकल्प पर मेरी निष्ठा बढ़ती ही जा रही है। बापूजी जो ज्ञान हमारे लिअे अच्छा समझते थे अुसे हमारे मगजमें ठूंस-ठूंसकर भर देनेकी कोशिश करते थे।

तुकाराम महाराजने ठीक ही कहा है:

कृपेचे सागर हेचि साधुजन। तिहीं कृपादान केलें मज ।।१।।
बोबडे वाणीचा केला अंगीकार। तेणें माझा स्थिर केला जीव ।।२।।
तेणें सुखें मन स्थिर झालें ठायीं। संतीं दिला पायीं ठाव मज ।।३।।
ना भी ना भी अैसे बोलिलें वचन। तें माझें कल्याण सर्वस्व ही ।।४।।
तुका म्हणे झालो आनन्दनिर्भर। नाम निरंतर घोष करूं ।।५।।

अर्थ — ये सन्त पुरुष ही कृपाके सागर हैं। अुन्होंने मुझ पर कृपा की है। मेरी तोतली बोलीको स्वीकार कर लिया है। अुससे मेरा चित्त स्थिर हुआ है। अुस सुखसे मेरा मन ठीक स्थान पर स्थिर हो गया है (आ गया है)। संतोंने मुझे चरणोंमें आश्रय दिया है। 'मत डरो, मत डरो' अैसा अभय-वचन दिया है। अिसीमें मेरा कल्याण है और यही सर्वस्व है। तुकाराम कहते हैं मैं आनन्द-विभोर हो गया हूं और सदा प्रभुनामका घोष करता हूं।

बापू-कूप

आज जहां गोशालाके पूर्वमें तालीमी संघका संतरे और मोसंबीका बगीचा है; वह जमीन तालीमी संघके मकानोंके लिअे खरीदी गअी थी। जब तालीमी संघ आश्रमकी ओर बस गया, तो मैंने अुसमें बगीचा लगानेका निश्चय किया। अिसका मेरे मित्रोंने विरोध किया। मैं नागपुरसे सरकारी अुद्यान-विशेषज्ञको लाया, अुन्हें जमीन बताअी और बापूजीसे अुनकी मुलाकात करायी। विशेषज्ञने वह जमीन पसन्द की और अुसमें बगीचा लगानेका तय हुआ। अुस बगीचेमें बापूजी खुले पैर घूमते थे।

अुस जमीनमें कुआं बनानेका मुहूर्त बापूजीके हाथसे ९ सितम्बर, १९४० को हुआ। सोमवारका दिन था। बापूजीने अपना गमछा वगैरा अुतारकर रखा और कुदाली हाथमें ली। मजदूर जैसे खोदना शुरू करता है वैसे ही जोरसे अुन्होंने जमीनमें कुदाली मारी और खिलखिलाकर हंस दिये। बापूजी हंसते तो हमेशा ही थे, लेकिन अुस दिनका वह मुक्तहास्य कभी भुलाया नहीं जा सकता। मुझे तो अेक विशेष प्रकारका आनन्द था ही, क्योंकि मुझे अुस काममें विशेष रस था और बापूके हाथसे अुसका श्रीगणेश हो रहा था। किन्तु बापूको भी विशेष आनन्द हुआ, क्योंकि वे अेक अैसे कामका मुहूर्त कर रहे थे जो हमेशा पशुओं और मनुष्योंके जीवन-धारणके साधन अुत्पन्न करनेमें मददगार साबित होता रहेगा। सचमुच ही अुस कुअेंका पानी वहांके अन्य सब कुओंसे श्रेष्ठ निकला। २५ सितम्बरको अुसमें पानी निकल आया। पहले-पहल पानी भी परचुरे शास्त्रीने वेदमंत्रोंके अुच्चारके साथ बापूजीके ही हाथसे निकलवाया था।

अैसी बातें लिखते समय बापूके साथके अनेक अद्भुत प्रसंग आंखोंके सामने आ जाते हैं। अुनमें से कौनसे लिखे जायं और कौनसे नहीं यही प्रश्न है।

अुस बगीचेमें पेड़ लगानेका मुहूर्त भी बापूजीके हाथसे ही कराया गया था और अुनके घूमनेके लिअे खास रास्ते बनाये गये थे। अुसके अुत्तरके कोनेमें जो अेक मकान है वह बालकोबाजीके लिअे बनाया गया था। बादमें अुसमें मीराबहन रही थीं। अुस कुअेंका नाम हमने 'बापू-कूप' रखा था। अेक रोज चिमनलालभाअी बापूजीको खर्चका हिसाब बता रहे थे। अुसमें अुस कुअेंका हिसाब बताते हुअे 'बापू-कूप' नाम आया। चिमनलालभाअीसे बापूने कहा कि मेरे नामसे कोअी भी चीज न रखी जाय। मैं नहीं चाहता कि

किसी भी चीजके साथ मेरा नाम जोड़ा जाय। अुसी रोजसे हमने वह नाम छोड़ दिया।

आश्रममें विवाह

लोगोंको आश्चर्य हो सकता है कि अेक तरफ तो आश्रममें अेकादश व्रतोंका कड़ाअीसे पालन होता था, जिनमें ब्रह्मचर्यका प्रधान स्थान था, और दूसरी तरफ विवाह भी कराये जाते थे। आश्रममें कअी विवाह हुअे। सबसे पहले चिमनलालभाअीकी सुपुत्री शारदाबहनका सूरतके भाअी गोरधनदास चोखावालाके साथ और विजयाबहन पटेलका मनुभाअी पंचोलीके साथ हुआ। अिन दोनोंमें कन्यादान बापूजीने किया था, क्योंकि पू० बा राजकोटमें पकड़ी जा चुकी थीं। अिसलिअे विवाहकार्य बापूजीकी बगलमें बाका चित्र रखकर सम्पन्न हुआ था। शादीके लिअे चार-पांच आदमी आये थे और हम लोगोंसे बापूजीने कह दिया था कि शादीके समय तुम लोगोंके आनेकी जरूरत नहीं है। मानो कुछ हो ही नहीं रहा है, अिस प्रकारसे विवाह-संस्कार बापूजीने करा दिया और अेक रोज रोटी खिलाकर सबको बिदा कर दिया।

पारनेरकरजीकी लड़की चि० शरदका विवाह भाअी प्रभाकर माचवेके साथ आश्रममें ही हुआ। पारनेरकरजीकी अिच्छा थी कि अुनकी लड़कीका कन्यादान भी बापूजीके हाथसे हो। लेकिन पारनेरकरजीकी माताजी छुआ-छूतमें विश्वास करती थीं, अिसलिअे बापूजीने अुनकी भावनाका आदर करके पारनेरकरजीको ही कन्यादान देनेके लिअे कहा। विवाहके समय बापूजी वहां अुपस्थित रहे और सारे काम अुनकी सूचनाके अनुसार ही संपन्न हुअे। अितना ही नहीं, जब पारनेरकरजीकी माताजीने अपना रसोअीघर आश्रमसे अलग चलाया तो बापूजीने पारनेरकरजीको आश्रममें भोजन बन्द करके आग्रहपूर्वक अपनी माताजीके साथ भोजन करनेके लिअे राजी किया। दूसरेके विचार जब तक बदले न जा सकें तब तक अुसके विचारोंकी रक्षा करना, लेकिन स्वयं अुसके विचारोंके साथ सहमत न होना — यह बापूजीकी अद्‌भुत कला और महानता थी।

श्री जी० रामचन्द्रन्‌जीका विवाह भी सुन्दरम् बहनके साथ सेवाग्राम आश्रममें ही हुआ था। शिरीन काजी नामक अेक मुस्लिम बहनका विवाह भी बापूजीके हाथों ही संपन्न हुआ था। बादमें तो बापूजीने निश्चय किया था कि

वे हरिजन और सवर्णके विवाहमें ही आशीर्वाद देंगे। प्रो० रामचन्द्ररावने अपनी लड़की अेक हरिजन लड़केको देनेका निश्चय किया था। अुस लड़केका नाम अर्जुनराव था। अुसका विवाह प्रो० रामचन्द्ररावकी लड़कीके साथ करनेके पहले बापूजीने अुसे आश्रममें रखकर अच्छे संस्कार देना और अुसकी योग्यता बढ़ाना अुचित समझा। अिसलिअे विवाहसे पहले करीब दो साल अुसे आश्रममें रखा। लेकिन लड़के-लड़कीके विवाहके समय बापूजीके आशीर्वाद नहीं मिल सके। बापूजी अुन्हीं दिनों अिस दुनियासे विदा हुअे थे। तो भी पूज्य ठक्करबापा जैसे महान् सेवकके आशीर्वाद तो मिले ही। यह विवाह आश्रममें ही हुआ था। अुस समय बापाने कहा, "यह काम तो बापूका था, लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे आज मुझे करना पड़ रहा है।" यह कहते कहते बापाका गला भर आया। वे बालककी तरह रोने लगे। वह दृश्य बड़ा ही करुण था।

कनु गांधी और आभाका विवाह आश्रममें बापूजीके सामने हो चुका था। अिस प्रकार आश्रम अेक विचित्र ही ढंगसे विकास तथा विस्तार कर रहा था।

बाका महल!

शुरूमें हमारा अेक ही मकान था, जिसके अेक कोनेमें बापूजी, अेकमें बा, अेकमें खानसाहब और अेकमें मुन्नालालजी थे। और भी जो मेहमान आते थे, अुसीमें ठहरते थे। पू० बाको आराम करनेमें बहुत संकोच होता था। अुन्होंने बापूजीसे कहा, "आपको तो कुछ नहीं लगता है। लेकिन हमारा क्या हो? हमको यहां सराय जैसी जगहमें डाल दिया है। कपड़ा बदलनेके लिअे और आराम करनेके लिअे कुछ तो आड़ चाहिये।"

बापूने कहा, "हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं, अिसलिअे हमेशा अड़चनमें ही रहना हमारे लिअे शोभास्पद है। हां, थोड़ीसी आड़ करा दूंगा।" बापूजीने मुझे बुलाया और कहा, "देखो, बाको बड़ी तकलीफ होती है। बरामदेमें अुसके लिअे अेक टट्टेकी कोठरी बना दो।"

अुत्तर-पूर्वके खाली बरामदेमें मैंने दीवारमें दो छेद कर दिये। अुनमें बांस डाले। बांसोंको बरामदेके खंभोंसे बांधकर टट्टा बांध दिया और अेक दरवाजा रख दिया। करीब आधे या पौन घंटेमें सब तैयार हो गया। मैंने बापूजीसे कहा कि बाके लिअे महल बन गया है। बापूजी अुठकर आये और

बाको भी साथ लाये। बोले, "अरे, यह तो बहुत अच्छा बन गया!" बा बिचारी क्या बोलतीं? कह दिया, "ठीक है।" मैं मन ही मन हंस रहा था कि बापूजी कैसे बाको बच्चोंकी तरह फुसला रहे हैं।

अन्तमें बाकी यह असुविधा जमनालालजीसे नहीं देखी गअी और अुन्होंने हठ करके अेक छोटासा मकान बनवा दिया, जो आज 'बा-निवास' कहलाता है।

कुछ और सदस्य जुड़े

मीराबहन वरोड़ाकी झोंपड़ीमें गअीं तो सही और थोड़े दिन अुनकी तबीयत वहां अच्छी भी रही, लेकिन बादमें अुनको बुखार आने लगा। अुनकी झोंपड़ी जंगलमें और रास्ते पर थी, अिस कारण लोग कुतूहलसे दिनभर वहां आते रहते थे। सबसे प्रेम तो वे करती ही थीं, अिसलिअे लोग घंटों बैठकर फिजूलकी बातें अुनसे किया करते थे। अिससे भी मीराहबहन दुःखी हो गअी थीं। अिस कारण लाचार होकर अुन्हें सेवाग्राम लाना पड़ा। आज जो बापू-कुटी है अुसका अुत्तरकी ओरका, जहां बापूकी बैठक है वह और अुसके साथका दीवार तकका, भाग प्रारंभमें मीराबहनके लिअे बनाया गया था और अुसमें वे बच्चोंको कातना-धुनना सिखाती थीं। बादमें बापूजीकी तबीयत खराब हुअी तब अुन्हें आदि-निवाससे यहां लाया गया और अुस झोंपड़ीके अुत्तरी भागमें बरामदा और दक्षिणी भागमें सेप्टिक टैंक बढ़ाये गये।

हमारा मकान अैसा था, जिसमें ५ दरवाजे थे और किसीको किसी भी समय अन्दर आनेमें कोअी रोकटोक न थी। दिनमें किसी भी समय कोअी न कोअी अंदर घुस जाता था, जिससे बापूजीके कार्यमें बाधा पड़ती थी। बापूजीकी तबीयत बिगड़ी अिसलिअे अुन्हें वहांसे हटाना पड़ा और मीराबहनकी झोंपड़ीमें रखना पड़ा। बस, तबसे बापूजीका सबको परोसना बन्द हुआ, क्योंकि बापूजीका भोजन वहीं जाता था। परन्तु जब अुनकी तबीयत अच्छी होती थी तब वे सबके साथ पंगतमें ही बैठते थे। अब समाज भी बढ़ गया था। किन्तु जिसकी तबीयत कुछ खराब रहती थी, अुसे बापूजी ही परोसते थे।

कृष्णचन्द्रजी पहले १९३५ में मगनवाड़ीमें बापूजीसे मिलने आये थे। बादमें १९३८ में स्थायी रूपसे सेवाग्राममें रहनेके लिअे आ गये। सुशीलाबहन डॉक्टरी पास करके आ गयी थीं। अिसलिअे दवाखानाका चार्ज अुन्होंने ले

लिया। बाके मकानके पीछे जो मकान है, वह जमनालालजीने अपने लिअे बनवाया था। जमनालालजी तो शायद ही कभी अुसमें रहे होंगे। किन्तु बादमें अुसमें आश्रमका दवाखाना शुरू हुआ। शंकरन्‌जी पहले नालवाड़ीके चर्मालयमें काम सीखते थे। वे भी बापूजीके सान्निध्यमें रहना चाहते थे। बापूजीने अुनको रख लिया और यह काम सौंपा कि जो लोग पाखाना जायं अुनका पाखाना देखें और अुस पर मिट्टी डालें। सबसे कह दिया गया कि अपने पाखाने पर कोअी मिट्टी न डाले, ताकि अुन्हें पाखानेकी परीक्षा करनेकी आदत पड़ जाय। यह काम मीराबहनको बिलकुल पसन्द नहीं था। मीराबहनको छोड़कर हमारा सबका पाखाना शंकरन्‌जी देखते थे, अुसके बारेमें रिपोर्ट लिखते थे और पाखाने पर मिट्टी डालते थे। बापूजी अुनसे कहते, "तुमको तो रहना भी वहीं चाहिये। अेक झोंपड़ी पाखानेके पास ही बनवा लो। तुम्हारी सफाअी अितनी आदर्श होनी चाहिये कि पाखानेके पास रहते हुअे भी जरा बदबू न आये।"

बापूजीने अिस विषयमें शंकरन्‌जीको जो पत्र लिखा था वह अिस प्रकार है:

चि० शंकरन्,

तुम्हारा प्रश्न बहुत अच्छा है। चूंकि हरिजनोंमें भी कामकी दृष्टिसे भंगीका काम सबसे नीच माना जाता है, सबको अिस कामकी घृणा रही है। और हम तो अूंच-नीचके भावको हटाना चाहते हैं। हरअेक सेवकका कर्तव्य है कि वह प्रेमसे भंगीका काम सीख ले और करे भी।

मेरे आदर्शका भंगी अब तक जगतमें नहीं हुआ है। भंगीका पद गिराकर हम गिरे हैं। प्रजाके आरोग्यका नाश हुआ है। और कहां जाअूं? अिसी स्थानको ले लो। मैं खुद भंगीकामका महत्त्व जानते हुअे भी आदर्श स्वच्छताकी युक्ति नहीं ढूंढ़ सका हूं। कैसा अच्छा होगा यदि ीश्वरने अिसी कामके लिअे तुमको भेजा हो। तुम्हारी चिमनलालकी सेवासे संतुष्ट होकर ही मैंने भंगीकामकी जिम्मेदारी तुम्हारे सिर पर रखी है।

भंगीकामकी पूर्णता पर आरोग्य निर्भर है। प्रायः सब रोग अस्वच्छतासे पैदा होते हैं। कॉलरा अित्यादिका तो अैसा ही है।

भंगीकाममें ये चीजें आ जाती हैं: पाखाने कैसे हों, देहातमें खासकर पाखाने और पेशाबकी परीक्षा, अुस परीक्षासे पाखाना करनेवालेको सावधानी, पाखानेके बरतन कैसे हों, किस प्रकारके हों, खादकी दृष्टिसे पाखाने और पेशाबकी अुपयोगिता, दूसरे खादोंके साथ अिसका मुकाबला, खादोंका पृथक्करण, पाखानोंका अर्थशास्त्र, रास्तोंकी सफाअी, दुनियाके अन्य देशोंमें शौचादिकी व्यवस्था, शास्त्रोंमें शौचादिके नियम, हिन्दुस्तानमें भंगीकी अुत्पत्ति, भंगीजातिका अितिहास, अुनकी आधुनिक गणना, अुनके रिवाज, अुनकी स्थिति सुधारनेके अुपाय और समाजमें शौचादिके नियम-पालनकी योजना।

अिससे तुमको पता चलेगा कि यह कैसा कीमती शास्त्र है। यह पढ़कर घबराना नहीं। जिज्ञासा और अुत्साह होगा तो ज्ञानप्राप्ति हो जायगी।

बापूके आशीर्वाद

आश्रम-परिवारके दिल पर गहरी चोट

आर्यनायकम्‌जीकी दो सन्तानें थीं। मितू नामक लड़की अभी मौजूद है। अुससे छोटा लड़का था आनन्द, जिसके अनेक नाम थे। अपने नाम भी वह खुद ही रख लेता था। मैं अुसको तांगेवालेके नामसे पहचानता था। अेक रोज मैंने सब लोगोंको बनकरीके कुअें पर हुरड़ा (हरी ज्वार) खानेकी पार्टी दी। अुसमें जमनालालजी भी थे। सब लोगोंने बड़े प्रेमसे खूब ज्वार खाअी। तांगेवाला भी अुसमें था। अुसने भी खाअी। थोड़ी देरमें पता चला कि लड़का बेहोश हो गया है। मैं घबराया कि कहीं अधिक ज्वार खानेसे तो कुछ गड़बड़ी नहीं हो गअी है। लेकिन बादमें पता चला कि वह ६० ग्रेन कुनैनकी गोलियां चाकलेट समझकर खा गया था। अुसीकी गर्मीने अुसके प्राण ले लिये। अुस रोज आर्यनायकम्‌जी वहां पर नहीं थे। बापूजी तुरन्त ही वहां पहुंच गये और काफी अुपचार किये। डॉ० सुशीलाबहनने भी काफी कोशिश की, लेकिन किसीका कुछ बस नहीं चला। और वह बालक १९ दिसम्बर, १९३९ को हम सबको छोड़कर चला गया। सेवाग्रामके जीवनमें यह बड़ा भारी आघात था। आर्यनायकम्‌जी दूसरे दिन आये। अुनके आने पर बालकका दाह-संस्कार किया गया। आशाबहन तो काफी दुःखी थीं, लेकिन आर्यनायकम्‌जीने बड़े धीरजका परिचय दिया। बापूजीने दोनोंको सांत्वना देते हुअे कहा, "अब तक

तो तुम्हारे अेक ही बच्चा था। आजसे सारे ग्रामके बच्चे तुम्हारे हैं। नअी तालीममें तो सारा हिन्दुस्तान आ जाता है। अिसलिअे सारे हिन्दुस्तानके बच्चे तुम्हारे ही हैं। अब तुम्हारी जवाबदारी और भी बढ़ गअी है। अिनकी सेवा करो और जिसको अपना बच्चा कहते थे अुसे भूल जाओ या अुसीका रूप सब बच्चोंमें देखो। यही शांति और सेवाका मार्ग है।"

अुस बच्चेका वियोग मां-बापको तो सतानेवाला था ही, लेकिन सारे सेवाग्राम परिवारके दिल पर भी अुसकी गहरी चोट लगी। मेरी तो अुसके साथ अितनी दोस्ती थी कि अुसका वियोग आज भी मुझे सताता है। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने सचमुच सेवाग्रामके ही नहीं, आसपासके सब बच्चोंको अपना बच्चा बना लिया है और अुनका प्रेम हिन्दुस्तान भरके बच्चों तक फैल गया है। महापुरुषोंके आशीर्वादमें कितनी शक्ति होती है, अिसका अन्दाज लगाना कठिन है।

१५

सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति

पू० छगनलाल गांधी

पू० छगनलालभाअी गांधी बापूजीके बड़े भतीजे हैं। अिन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें ही अपने आपको सपरिवार बापूजीको सौंप दिया था। जिस तरह अिनके पिता पू० खुशालचन्द दादाने अपने चारों पुत्रोंको बापूजीको सौंप दिया था, अुसी तरह अिन्होंने भी अपने दोनों पुत्रोंको (श्री प्रभुदास गांधी और श्री कृष्णदास गांधीको) बापूजीको सौंप दिया है। अिनकी अवस्था आज ७० वर्षसे अधिक होने पर भी ये अितना परिश्रम करनेकी क्षमता रखते हैं कि अिनके सामने जवान भी लज्जित हो जायं। अिनका खेती-कार्यका प्रेम अिनका बगीचा बतलाता है। पू० काशीबाके अन्तकाल तक जैसे प्रेम और तत्परतासे अिन्होंने अुनकी सेवा की और अन्य किसीकी सहायताकी अपेक्षा तक नहीं रखी, अुससे अिनके चरणोंमें अनायास ही सिर झुक जाता है। बापूजीके बारेमें पुरानी स्मृतियोंका अुनके मस्तिष्कमें अखूट भंडार भरा पड़ा है। आशा है कि आनेवाली प्रजाके लिअे अुस

पूंजीका अेक अच्छासा वारसा जब तक वे किसीके सुपुर्द न कर दें तब तक अुनका बाल भी बांका न होगा। अिनके पिताजी और माताजीके दर्शनोंका सौभाग्य भी मुझे मिला था। अुन दोनोंकी सौम्य और गम्भीर मुद्राको मैं भूल नहीं सकता। मैं मानता हूं कि अुन्हींकी तपश्चर्याके प्रतापसे यह पूराका पूरा परिवार बापूजीके बतलाये हुअे सेवाकार्यमें अब तक ओतप्रोत है और आगे भी रहनेवाला है। भगवानने गीतामें अैसे ही परिवारोंके लिअे कहा है:

प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।।
(अ० ६, श्लो० ४१)

काशीबा

पू० काशीबा दक्षिण अफ्रीकासे ही बापूजीके साथ रहीं। नअी तालीम मांके गर्भसे आरम्भ होती है, बापूजीके अिस वचनका मिलान मैं करता ही रहता हूं। जब मैं काशीबाको देखता हूं और अुनके दोनों पुत्र भाअी कृष्णदासजी व प्रभुदासजी गांधीको देखता हूं, तो बापूजीके कथनकी सत्यताका प्रत्यक्ष अनुभव करता हूं। काशीबाकी सरलता, अुनकी नम्रता, अुनकी व्यवहार-कुशलता और भक्तिभावका वारसा अिन दोनों पुत्रोंको मिला है। सचमुच अैसी मांके गर्भसे जन्म मिलना बड़े पुण्यके प्रतापका फल है। अुनका कंठ कितना मधुर है! 'कहांके पथिक, कहां कीन्ह है गवनवां' भजन बार बार अुनके मुंहसे सुननेकी अिच्छा होती है। अुनके दर्शनसे ही अेक प्रकारकी सात्त्विक खुराक मिलती है। अुन्होंने बापूजीसे बहुत कुछ सीखा है। सीखकर अुसे पचाया है। कीमत खानेकी नहीं पचानेकी है ही। 'दरस परस अरु मज्जन पाना हरहिं पाप कहहिं वेद पुराना।' यही अनुभव काशीबाके दर्शनसे होता है।

चाचा खानसाहब

सन् १९३६ के अगस्त महीनेकी बात है। हमारे प्यारे बादशाह खान, सीमांत गांधीको सरकारने जेलसे छोड़ा तो था, पर अपने सूबेमें रहनेकी मनाही कर दी थी। बापूजीने अुनको सेवाग्राम आनेका प्रेमपूर्ण और आग्रह-भरा निमंत्रण भेजा। खानसाहबने अुतने ही प्रेमसे अुसे मंजूर भी किया। खानसाहबके सेवाग्राम आनेसे अेक रोज पूर्व बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, खानसाहब और अुनकी लड़की आ रही हैं। अुनकी तबीयत खराब

है। तुम जानते हो, पठान कितना दूध पी सकते हैं। अुनके लिअे पांच सेर दूधका प्रबंध कल शाम तक हो जाना चाहिये। कल ही नअी गाय ले आओ।" जैसी गाय बापू चाहते थे, वैसी बाजारमें आसानीसे मिलनेवाली नहीं थी। तीन समय अुसका दूध देखना होता था। दस जगह तलाश करनी पड़ती थी। लेकिन बापूके पास अिन दलीलोंको सुननेका समय कहां था?

दैवयोगसे दूसरे दिन पानीकी अैसी झड़ी लगी कि बाहर निकलना असंभव हो गया। बापूजीका फरमान मेरे पेटमें वायुगोलेकी तरह दिनभर दर्द करता रहा। आखिर, शामकी प्रार्थनाके बाद जब पेशीका हुक्म आया, तो मैं अपनी सारी हिम्मत और दलीलोंके साथ हाजिर हुआ।

बापूने पूछा, "क्यों आ गयी गाय?"

मैंने कहा, "बापूजी आज तो दिनभर पानी बरस रहा था।"

बापू बोले, "तो मैं खानसाहबको दूध कहांसे दूंगा?"

मैंने देखा यहां तो 'अंधेके आगे रोना अपनी ही आंख खोना' जैसा है। अच्छी बात है, कल खानसाहबके आनेसे पहले गाय आ जायगी' कहकर मैं चला तो आया, लेकिन अच्छी गाय पाना आसान नहीं था। दूसरे दिन भाअी पारनेरकरजीको साथ लेकर वर्धाका रास्ता लिया। कअी जगह ढूंढ़ा। अेक ग्वालेके पास दैवयोगसे या मेरे नसीबसे दो अच्छी गायें मिल गयीं, जिनके दस सेर दूध होता था। हम दोनों गायें खरीद लाये और विजयी योद्धाकी तरह बापूजीको सुना दिया कि दस सेर दूधकी दो गायें हाजिर हैं। बापूजी खुश हुअे।

बापूजीने खानसाहबके आने पर अुनके भोजनके बारेमें सब कुछ जान लिया और अुनकी रुचि व प्राकृतिक चिकित्साके अनुसार अुनके भोजनका प्रबंध भी कर दिया। दिनमें तीन बार दही देना तय हुआ। खानसाहबको बिलकुल मीठा दही पसन्द था। दही जमानेका काम मुझे सौंपा गया। अेक तरफ अुनकी सेवाके लाभके आनन्दने और दूसरी तरफ दही खट्टा होने या न जमनेके डरने मेरी 'सांप-छछूंदर' जैसी गति कर दी। पर परीक्षामें मैं पास हुआ। अपनी आदतके अनुसार कअी बार बापूजी पूछते, "क्यों खानसाहब, दही कैसा है?" मैं खानसाहबके मुंहकी तरफ देखता और जब तक जवाब न मिलता मेरा सांस लेना बन्द-सा रहता। खानसाहब जब कह देते कि महात्माजी, दही बिलकुल अच्छा है, तब मैं आरामसे सांस ले पाता।

अिस सेवाका बदला भी मैंने ब्याजसहित पाया।

मैं जब सख्त बीमार पड़ा, अुस समय आश्रममें गिने-चुने ही आदमी थे। भाअी प्यारेलालजी और खानसाहबने अद्भुत प्रेम और तत्परतासे मुझे संभाला अेवं मौतके मुंहसे बचा लिया। बापूजीकी तो बात ही क्या कहूं? वे अेनीमा देते, स्पंज करते और जब मैं घंटी बजाता तब सब काम छोड़ कर तुरंत मेरे पास आ जाते। सचमुच ही अुस समयका वह छोटा किंतु महान पारिवारिक जीवन कितना मधुर था! बापूजी तो बापू और मां सब कुछ थे। लेकिन खानसाहबने तो सचमुच ही चाचाका स्थान ले लिया था। वे हमारे साथ अितने घुलमिल गये थे कि अुनको और हमको कभी अैसा अनुभव नहीं होता था कि खानसाहब कोअी बड़े आदमी हैं और हमको अुनके साथ अदबसे रहना चाहिये। फिर भी जितना चाचाका अदब करना चाहिये अुतना तो हम करते ही थे। खानसाहबके साथ अुनकी लड़की महेरताजबहन भी आयी थी। वह बड़े सरल स्वभावकी है। वह भी बहनकी तरह हमारे साथ घुलमिल गयी थी। शाक काटना, अनाज साफ करना, झाड़ू लगाना आदि सब काम आश्रमवासीकी तरह खानसाहब करते थे। खान-पानके मामलेमें बापूजीने खानसाहबको पूरी आजादी दे दी थी। यहां तक कि मांस खानेकी भी छूट दे दी थी। किन्तु आश्रमके नियमोंका ध्यान रखकर जरूरत होने पर भी अुन्होंने मांस लेना कभी पसंद नहीं किया।

अुनके हाथमें फावड़ा और झाड़ू बहुत ही फबता था। अेक-दो दिनके लिअे भी जब अुन्हें बाहर जानेका प्रसंग आ जाता, तब वापिस आने पर वे हमसे पठान-रिवाजके अनुसार कौली भरकर ही मिलते थे। हमारा सिर तो अुनके सीने तक ही रह जाता था। और वे हमारी कौलीमें आते भी कैसे? अुस वक्त हमको महसूस होता था कि खानसाहब हमसे कितने बड़े हैं। अुनकी कमखर्ची और सादगी तो गजबकी थी। अेक कुरता और पाजामा अुनकी पोशाक और अुसमें हलका-सा नीला रंग अिसलिअे कि अधिक साबुन खर्च न करना पड़े! अेक साधारण किसानसे अधिक अच्छे कपड़े पहनना खानसाहब पसंद नहीं करते।

फैजपुर-कांग्रेसके अध्यक्षपदके लिअे खानसाहबको राजी करनेके लिअे पू० राजेन्द्रबाबू और जवाहरलाल नेहरू सेवाग्राम आये थे। वर्धामें वर्किंग कमेटीकी बैठक चल रही थी। वे आये अुस समय मैं और भाअी मुन्नालालजी

भी बापूजीके पास बैठे थे। राजेन्द्रबाबू और जवाहरलालजी अपनी बात कहनेमें हिचक रहे थे। बापूजीने अुनकी अिस हिचकको ताड़ लिया। वे बोले: "आप संकोच न करें। ये दोनों अपने ही आदमी हैं। आपको जो भी कहना हो निःसंकोच भावसे कहें।" अिससे पता चलता है कि बापूजी महत्त्वके राजनीतिक प्रश्नोंके बारेमें भी अपने साथियोंसे कोअी दुराव-छिपाव नहीं रखते थे। दोनोंने खानसाहबको अध्यक्ष बनानेकी सूचना की। खानसाहब बोले, "यह मेरा काम नहीं है। मैं तो सिर्फ खिदमतगार सिपाही हूं। मुझे अिसमें रुचि भी नहीं है। आप किसी दूसरेको अध्यक्ष बनायें।" अुनकी बातका समर्थन करते हुअे बापूजीने जवाहरलालजीसे कहा, "खानसाहब ठीक कहते हैं। मैं अिनको अिस झंझटमें डालना नहीं चाहता। अिनसे तो दूसरा ही काम लेना है। अिनके लिअे दूसरे बहुत काम हैं, जिन्हें अिनके सिवा दूसरा कर ही नहीं सकता। कांग्रेसका भार तो तुमको ही अुठाना होगा और आज यही ठीक भी है। अिसलिअे खानसाहबका विचार छोड़ो और तुम तैयार हो जाओ।" खानसाहब तो खुश-खुश हो गये और बोले, "महात्माजी ठीक कहते हैं। यह भार जवाहरलालजीको ही लेना चाहिये।" आखिर पंडितजीको यह पद कबूल करना पड़ा।

खानसाहबने अहिंसाकी लड़ाअीमें अपना सब कुछ तो समर्पण कर ही दिया था; साथ ही साथ हिंसक प्रवृत्तिवाले पठानोंको अहिंसाका पाठ पढ़ाकर अहिंसाका बेजोड़ दृष्टांत भी देश और दुनियाके सामने रखा था। अुनका दिल स्फटिक जैसा निर्मल और पारदर्शक है। अुनकी अुदारता और गंभीरता सागर जैसी महान है। अुनका धीरज हिमालय जैसा अचल है। अुनकी सरलता, नम्रता, सादगी और मिलनसारिताकी सुगंधने भारतवासियोंके मनको अितना सुगंधित किया है कि अुनका पावन प्रेम कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा।

अन्तमें चाचा-भतीजेकी मीठी टक्करका अेक बोधप्रद प्रसंग यहां देकर खानसाहबका रेखाचित्र मैं पूरा करूंगा।

जब सेवाग्राममें मीराबहन अकेली रहती थीं तब अुनके लिअे वर्धाके अेक दूधका धन्धा करनेवाले भाअी, जो मगनवाड़ीमें दूध देते थे और जिनका हमारे साथ अच्छा संबंध था, मीराबहनके लिअे मुफ्तमें सिर्फ दूध पीनेके लिअे अैसी गाय भेज देते थे, जिसके नीचे १ सेर १॥ सेर दूध हो और

जो स्वयं तथा जिसका बच्चा दोनों कमजोर हों। मीराबहनकी गोसेवा तो अद्‌भुत थी। वे गाय और बच्चेको खूब प्रेमसे खिलातीं-पिलातीं, जिससे थोड़े दिनमें ही वह गाय और बच्चा अितने तगड़े बन जाते कि दूधकी अपेक्षा अुनकी कीमत बहुत बढ़ जाती और अुस ग्वालेको बहुत लाभ होता। मीराबहनको मुफ्तमें गाय देनेके पीछे यही ध्येय था।

अेक दिन प्रातःकाल घूमते समय न मालूम किस प्रसंगसे बापूजीने मीराबहनकी अुत्कृष्ट गोसेवाकी बात निकाली। चाचा अब्दुल गफ्फारखां साहब भी साथमें ही घूम रहे थे। मैंने सहज ही कहा: "बापूजी, मीराबहनका गोप्रेम तो अद्‌भुत है ही, लेकिन अुनका खर्चीलापन हमारे गरीब देशके लिअे महंगा सौदा है। गाय ४ आनेका दूध दे और आठ आने खा जाय, यह बात हमारे अर्थशास्त्रमें नहीं बैठती है। हम अिस खर्चको बरदाश्त करनेमें असमर्थ हैं। हां, पश्चिमकी दृष्टिसे मीराबहनकी कमखर्ची आदर्श मानी जा सकती है। लेकिन हमारा तो वह कचूमर निकाल देती है।"

बापूजीने कहा: "तुम्हारा खयाल गलत है। मीराबहन जहां भी गअी है वहांसे अुसके खर्चीलेपनकी कोअी शिकायत नहीं आअी है। अुसकी सादाअीकी तारीफ ही आअी है।" मैंने कहा: "यह तो ठीक है, लेकिन मीराबहनकी सादाअीको लोग पश्चिमके मापसे मापते हैं। अपने देशके मापसे नहीं।" बापूजी बोले: "अच्छा तो २–४ गाय तुम्हारे हाथमें दी जायं और २–४ मीराबहनके हाथमें। देखें किसकी गायें अच्छी तन्दुरुस्त रहती हैं।" मैंने कहा: "कबूल है, लेकिन केवल तन्दुरुस्तीकी बात नहीं है। अुनकी आमदनी और खर्च भी देखा जाये। गायको जब तक हम अपने अर्थशास्त्रमें नहीं बैठा सकेंगे, तब तक अुसकी सच्चे अर्थोंमें सेवा होना असम्भव है।"

मीराबहनके प्रति मेरी यह अश्रद्धा चाचा खानसाहबसे सहन नहीं हो सकी और बीचमें ही बात काटकर वे बोले: "तुम लोग आदमीकी कद्र नहीं समझते हो। मीराबहन अेक जहाजी बेड़ेके जनरलकी बेटी होकर कितने सेवाभाव और सादाअीसे रहती है?"

मैंने कहा: "हां, अुस हिसाबसे तो ठीक है, लेकिन हमारी गरीबीके लिअे तो अुनका सादापन भी कमरतोड़ बोझा है। मैं देखता हूं कि वे जानवरोंके पीछे जो बेहिसाब खर्च करती हैं, अुसे हमारा गरीब देश सहन नहीं कर सकता। प्रश्न गरीब-अमीरका नहीं, सिद्धांतका है। चाहे वे जनरलकी

लड़की हों, चाहे बादशाहकी। अिसके साथ मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं है। पैसेसे या ओहदेसे कोअी बड़ा आदमी बन जाता है, अिसे मैं नहीं मानता।"

बस क्या था? चाचाजीके लिअे तो यह जले पर नमक छिड़कने जैसा था। वे बोले: "अगर तुमको पैसेकी परवाह नहीं है तो तुम यहां जमनालालजीका पैसा खाकर क्यों रहते हो? और अगर तुमको कलकत्ता जाना हो तो भाड़ेका पैसा कौन देगा?"

मेरी बारूदको भी चिनगारी छू गअी और मैंने जरा तेजीसे कहा: "मुझे जमनालालजीके पैसेकी जरूरत नहीं है। मैं तो मजदूर हूं। मजदूरी करता हूं और दो रोटी खाता हूं।" तो खानसाहब बोले: "ठीक है, पर तुम अैसे मजदूर नहीं हो। अगर तुमको कुछ कहा जाय तो काम छोड़ दोगे और नाराज हो जाओगे।" मैंने कहा: "मैं गुलाम मजदूर नहीं हूं, जो मजदूरीके लिअे सब कुछ सहन करूं। मैं अिस देशमें स्वाभिमानी मजदूर बनना चाहता हूं। आजकी भाषामें जिसे मालिक कहा जाता है अुसे मैं साथी मानता हूं। अगर साथीको मेरा काम पसंद नहीं हो तो वह मुझे हटा सकता है। लेकिन मेरे अूपर मालिकीकी धौंस नहीं जमा सकता। 'खरी मजदूरी, चोखा काम'—मेरे जीवनका ध्येय है। अैसा ही सब मजदूरोंका होना चाहिये।

"रही कलकत्ता जानेकी बात और भाड़ेकी बात, सो मुझे कलकत्ता जानेकी भी जरूरत नहीं है। जिसकी गरज होगी वह भाड़ा भी देगा और कलकत्ता भी भेजेगा। जमनालालजी अगर पैसा देते होंगे तो बापूजीको अपनी गरजसे देते होंगे। मेरे पास अुनके पैसेकी कौड़ीके बराबर भी कीमत नहीं है।"

चाचाजीका पुण्यप्रकोप और भी प्रज्वलित हो अुठा और वे जोरसे बोले: "अगर तुमको पैसेकी कीमत नहीं है तो जिसको तुम अीश्वर मानते हो वह राम भी तो राजाका लड़का था न? तुम्हारा तो अवतार भी पैसेवालेका लड़का था।"

फिर क्या था? 'पाके घृत जिमि लाग अगारू'! अुनकी अिस चोटने मुझे तिलमिला दिया। और मैं अपने रोषको जोरसे दबाकर, झूंठी हंसी हंसकर बोला: "वाह चाचाजी! आपने हिन्दू धर्मके मर्मको समझा ही नहीं है। राजा दशरथ जैसे और अुनसे भी बड़े राजा हिन्दू धर्ममें न मालूम कितने हो गये? अुनका नाम भी हम नहीं जानते। रामने जब राज्यका तृणवत् त्याग किया, तब हमने अुनकी पूजा की।"

नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान ।
छूट जानि बन गवनु सुनि अुर अनंदु अधिकान ।।

अिसका मर्म बेचारे चाचाजी कैसे समझते? मैंने रामायणका अभ्यास तो काफी किया था। लेकिन जो प्रकाश मुझे अुस रोज चाचाजीके साथ झगड़ा करनेमें मिला, वह पहले नहीं मिला था।

हमारी चाचा-भतीजेकी झड़पको बापूजी शांत चित्तसे चुपचाप सुनते रहे। अेक शब्द भी नहीं बोले और मेरे मनमें भी यह खयाल नहीं रहा कि बापूजीको यह सब कैसा लगेगा? जब लड़ाअी छिड़ गअी तो जो भी हथियार हाथ लगा अुसका अुपयोग मुझे खुले दिलसे करना पड़ा। आसपासके लोगोंको क्या लगता होगा, अिसका भी मनमें कोअी संकोच या भान तक न था। अुस रोजके घूमनेमें हमारा अखाड़ा ही मुख्य रहा। जब बापूजी आश्रममें लौटे और दूसरे लोग अिधर-अुधर बिखर गये, तो मैंने अेकान्त पाकर बापूजीसे धीरेसे कहा कि बापूजी आज़ तो खानसाहब बहुत नाराज हो गये थे। बापूजी हंसकर बोले: "अरे खानसाहबने तुमको मारा नहीं यही तो अुनकी अहिंसा है।" अिससे आगे बापूजी कुछ भी नहीं बोले। कह सकते थे कि तुम्हारा अुनके साथ अिस प्रकार जिद्दाजिद्दी करना अुचित नहीं था। लेकिन बापूजी अुस कटु संवादको गंभीरतासे पी गये। अिस प्रसंगको मैंने लिखनेसे टाला था। लेकिन मुझे लगा कि अिस संवादमें जहां थोड़ी अुत्तेजकता थी वहां मधुरता भी थी, क्योंकि अुसके बाद चाचा खानसाहबके मन पर लेशमात्र भी अुस संवादके रोषका दर्शन नहीं हुआ। और अुनका वही वात्सल्यभाव मेरे अूपर बना रहा। अिस धैर्य और गम्भीरताके कारण ही तो लोग अुनको सरहदी गांधीके नामसे पुकारते हैं। तभी तो जिस प्रकारसे बापूजीका वियोग कष्टदायक बना है अुसी प्रकार चाचाखानके जिन्दा रहते हुअे भी अुनके दर्शन न पा सकनेका वियोग दिलको कांटेकी तरह चुभता रहता है। लेकिन क्या किया जाय? अैसी अनेक घटनाअें स्मरण-पटल पर आनेसे आनन्द और वेदना दोनोंके बादल आंखोंके सामने अंधेरा कर देते हैं और मन अेक स्वप्नमें डूब जाता है।

बालकोबा

विनोबा जैसे विनायकसे विनोबा बने वैसे ही विनोबाजीके छोटे भाअी बालकृष्णसे बालकोबा बने। अिनसे छोटे भाअी शिवाजी हैं। शुकदेवजीकी

तरह जन्मसे ही तीनों भाओी साधु, भक्त, ज्ञानी, संन्यासी और देशभक्त तो थे ही, तिस पर कड़वी और नीम चढ़ी अिस नियमके अनुसार तीनों बापूजीके जालमें आ फंसे।

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।

अिसी आशयका तुलसीदासजीका भी अेक वचन है: 'पुत्रवती युवती जग सोअी, रघुपति भगत जासु सुत होअी।' सचमुच ही अैसा दृष्टान्त दुनियाके अितिहासमें मिलना दुर्लभ है। अुस मांका पवित्र स्मरण करके आज भी विनोबाजीकी आंखोंसे गंगा-जमुना बहने लगती हैं। अिनके माता-पिता तो धन्य थे ही, लेकिन अिन तीनोंको पाकर बापूजीने भी धन्यताका अनुभव किया। तभी तो बापूने सारे देशके सामने १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहका प्रथम सत्याग्रही घोषित करके विनोबाजीको अपने विशेष प्रेम और विश्वासके पात्र होनेका प्रमाणपत्र दिया था।

पहले बापूजीके पास विनोबाजी आये और बादमें जैसे रामके पीछे लक्ष्मण वनको गये अुसी प्रकार अिन दोनों भाअियोंने भी विनोबाका पीछा पकड़ा। बालकोबाजीको विनोबाजीने घर पर रहनेको समझाया था। धमकाया भी था। लेकिन:

अुतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाअि।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु तो कहा बसाअि॥

अिन दोनों छोटे भाअियोंका भी अैसा ही हुआ। सबसे छोटे भाअी शिवाजीको बहुत कम लोग जानते हैं। वे प्रसिद्धिसे बिलकुल दूर भागते हैं। अुन्होंने विनोबाजीकी मराठी 'गीताअी' का बड़ी मेहनतसे शब्दकोश तैयार किया है। महाराष्ट्रकी जनतामें घूम घूम कर 'गीताअी' की लाखों प्रतियोंका प्रचार किया है। रामायणका भी अुनका गहरा अध्ययन है। जीवन और जनसेवाकी दृष्टिसे अुन्होंने जो साधना की है, वह प्रशंसनीय कही जायगी।

तीनों भाअियोंने बापूजीकी प्रयोगशालाको सजानेमें जो योग दिया है, वह अितिहासके पृष्ठोंको दीपस्तम्भकी तरह प्रकाशित करता रहेगा। खैर, मैं कहने कुछ जा रहा था और कह गया कुछ और। यह भी अच्छा ही हुआ। अिस त्रिमूर्तिका स्मरण भी तो त्रिवेणी-संगममें स्नान करने जैसा ही है।

बालकोबाजीको क्षयरोगने पकड़ लिया था। दोनों फेफड़े खराब हो चुके थे। दस-बारह सालसे सतत बुखार बना रहता था। पहले महिलाश्रम वर्धामें बापूजीकी ही देखरेखमें अुनका अिलाज चलता रहा। जब बापूजी सेवाग्राम आये तो अुनको भी सेवाग्राम बुला लिया और अुनके अिलाज आदिकी सारी व्यवस्था अुन्होंने अपने हाथमें ले ली। बालकोबाजीके रहनेकी व्यवस्था आश्रमसे दूर मीराबहनवाली वरोड़ाकी झोंपड़ीमें की गअी थी। अुनके खाने-पीनेका जरूरी सामान आश्रमसे जाता था। सुबह शाम घूमते समय बापूजी अुनकी झोंपड़ी तक जाते थे, जो आश्रमसे करीब डेढ़ मीलकी दूरी पर थी। सुबह रातके और शामको दिनके सब समाचार बापूजी अुनसे पूछते थे। नींद कितनी आअी, दस्त कैसा और कितना हुआ, बुखार कितना रहा, कितने कदम और कितनी देर घूमे, खुराकमें क्या क्या चीजें लीं, कितनी कितनी मात्रामें लीं — अित्यादि अित्यादि।

२४ घंटेका अपना कार्यक्रम बालकोबाजीने अिस प्रकार बना लिया था कि वह घड़ीके कांटेकी तरह ही नहीं बल्कि सूर्यकी गतिकी तरह नियमित चलता था। कितना और कितनी बार खाना, अुसमें क्या क्या और कब कब लेना, कितना सोना, अगर नींद न आये तो चुपचाप बिस्तरमें पड़े रहना, अमुक समय पर ही बहुत कम बोलना, बिस्तरको रोज धूपमें सुखाना, कितना घूमना, किस समय बुखार नापना, कितना काम खुद करना और कितना सेवकसे कराना — अिसका भी बराबर हिसाब था। अुनकी झोंपड़ी और सामान सब अितना सुव्यवस्थित और स्वच्छ रहता था कि देखकर आनन्द होता था। अुनका आत्म-संशोधन और स्वास्थ्य-सुधारका प्रयत्न और निरीक्षण अितना सूक्ष्म था कि अुसमें अुपेक्षा, आलस्य, निराशा आदिका नाम भी न था। मैं भी अुनके पास जाया करता था। अुनकी छोटी छोटी बातोंमें अितनी बारीकी मुझे बालकी खाल निकालने जैसी लगती थी। और मैं सोचता था कि यह आदमी मृत्युके दरवाजे पर तो खड़ा है, फिर भी जीनेके लिअे अितनी चिन्ता और खटपट क्यों करता है? बात तो ज्ञान, वैराग्य, अुपनिषद्, योगदर्शन आदिकी करते हैं और जीनेका अितना लोभ है? मैंने अपना यह विचार अेक आश्रमवासी भाअी कृष्णचन्द्रजीको बात बातमें कह डाला। क्योंकि बालकोबा बचेंगे और अुनसे कुछ काम होगा, अिसकी मुझे जरा भी अुम्मीद नहीं थी। अुन्होंने मेरी बात बालकोबाजीसे कह दी।

अैसी नाजुक बात अुनको कहनी तो नहीं चाहिये थी, लेकिन वे अुनके भक्त थे। मेरे भी मित्र तो थे ही, लेकिन अुनके पेटमें यह बात पच नहीं सकी। सुनकर बालकोबाजीको बहुत ही दुःख हुआ और अुनको लगा कि अगर साथियोंके मनमें अैसा विचार आता है तो मुझे यहां न रहकर हिमालयकी तरफ चला जाना चाहिये। जब तक शरीरको रहना होगा रहेगा; जब पड़ना होगा पड़ जायगा। आखिर यह बात बापूजी तक तो पहुंचनी ही थी, क्योंकि कोअी बात या विचार बालकोबाजीके पास पहुंचे या अुनके मनमें आये और वह बापूजी तक न जाय यह संभव नहीं था। अुन्होंने बापूसे हिमालय जानेकी अिजाजत मांगी।

मैंने तो सहज ही चर्चा करते करते अुन भाअीसे अपना विचार कह दिया था। मुझे पता नहीं था कि यह प्रश्न सचमुच ही अितना गंभीर बन जायगा और मेरी पूरी पूरी हाजरी ली जायगी। जब मुझे पता चला कि प्रश्न बापूजी तक पहुंचा है तो कृष्णचन्द्रजी पर मुझे गुस्सा आया। मेरा कलेजा धड़कने लगा कि न मालूम कब मेरे लिअे वारन्ट आयगा और क्या हाल होगा। अेक कहावत है कि हाकिमके आगेसे और घोड़ेके पीछेसे कभी नहीं निकलना चाहिये, न मालूम हाकिम कब क्या पूछ बैठे और घोड़ा कब लात मार बैठे। अिसलिअे मैं भी बापूजीसे कतराकर निकलने लगा। आखिर दूर भी कब तक रह सकता था? मेरा खयाल था कि बापूजी मेरा स्वभाव जानते हैं, मैं किसीको कुछ भी बोल देता हूं अिसलिअे बातको टाल भी सकते हैं। लेकिन बापूजीके लिअे तो वह प्रश्न महत्त्वका था। अुसे यों ही वे कैसे छोड़ सकते थे?

अेक रोज घूमते समय अुन्होंने धीरेसे बात निकाली, "क्यों बलवन्तसिंह, तुमने बालकृष्णके लिअे क्या कह दिया था? तुम्हारी बातसे अुसको बड़ा दुःख हुआ है और वह हिमालयमें भाग जानेकी बात करता है।" मेरे अुस समय क्या हाल हुअे होंगे अिसका अन्दाज पाठकगण लगा सकते हैं। लेकिन अदालतमें जवाब न देना भी तो गुनाह है। अिसलिअे मैंने धीरेसे कहा, "हां बापूजी, मैंने कहा था कि बालकोबाजी जीनेके लिअे अितनी खटपट क्यों करते हैं? खुद परेशान होते हैं और दूसरोंको भी परेशान करते हैं। अेक तोला दूध या अेक खजूर या मनक्का कम हो गया तो क्या और अधिक हो गया तो क्या?"

बापूजी गंभीरतासे बोले, "यह तुम्हारी भूल है। तुमको क्या पता है कि अगर मैं न रोकता तो वह कबका हिमालय चला गया होता। अुसको तो सेवा और खटपट सहन ही नहीं हो सकती थी। वह बहुत ही संकोची और भावना-प्रधान है। तुमको क्या पता है कि अुसमें सेवा करनेकी कितनी शक्ति भरी है? अगर खड़ा हो सका तो तुम देखोगे कि वह कितनी सेवा दे सकता है। अैसा ही समझो कि अुसे जीनेका लोभ है ही नहीं। वह तो मेरे प्रेमके वश होकर ही मेरे हुक्मका पालन करनेके लिअे यहां पड़ा है, नहीं तो कबका हिमालयमें चला गया होता और शरीर भी पड़ सकता था। लेकिन मैंने अुससे कहा है कि तुमको अच्छा होना ही है और सेवा करना है। साबरमतीमें तो अुसके ख़िलाफ यह शिकायत थी कि वह काम बहुत करता है और खुराक बहुत कम लेता है। अुसका शरीर बिगड़नेका यह भी अेक कारण हो सकता है। और भी कारण हैं। लेकिन अब वह समझ गया है कि शरीरको ठीक रखना भी धर्म है, और जो भी नियम डॉक्टर या मैं बताता हूं अुसका अक्षरशः पालन करता है। डॉ० डेविडने अुसके पीछे काफी मेहनत और प्रेम बरसाया है। वह तो बड़े सेवाभावी और अपनी कलामें बड़े अुस्ताद हैं और अुनको पूरी अुम्मीद है कि बालकृष्ण ठीक हो जायगा। अगर मैं अुसे खड़ा कर सका तो मेरा अेक बड़ा काम हो जायगा। कुछ भी हो, हमको साथियोंके प्रति अुदारता, सहनशीलता और सेवाभाव रखनेका अभ्यास करना चाहिये। हम अपने आपको दूसरेकी स्थितिमें रखकर सोचना सीखें। अुसने मुझे सर्वार्पण किया है तो मेरा धर्म हो जाता है कि मैं अुसे खड़ा करनेका पूरा पूरा प्रयत्न करूं। अितने पर भी अगर वह जायगा तो मैं रोते नहीं बैठूंगा। आखिर तो हम सब अुसी कालके गालमें खड़े हैं न? कोअी हट्टा-कट्टा पहलवान भी यह दावा नहीं कर सकता कि दूसरे क्षण अुसका शरीर रहेगा या नहीं। गीतामाता तो अपना कर्तव्य-कर्म करके अनासक्त रहनेको कहती है न? खैर, अुसको तो मैंने समझा दिया है। लेकिन तुमको भी कर्तव्य-धर्मका रहस्य और साथियोंके साथ सहानुभूतिसे बरतना सीखना है। बालकृष्णको हम जितनी सेवा और प्रेम दे सकें अुतना देना हमारा धर्म है।"

मैं बापूजीकी प्रेमवाणी सुनकर सुन्न रह गया। बापूजीने मुझे सब कुछ कह दिया, लेकिन अुसमें अेक भी शब्द चुभनेवाला नहीं था। बापूजीने गुड़में

लपेटकर मुझे कुनैनकी अेक कड़वी गोली खिलायी। मैं बालकोबाजीके पास गया और मेरे शब्दोंसे अुनको जो दुःख हुआ था अुसके लिअे अफसोस जाहिर किया। अुनका स्वभाव तो बड़ा ही सरल और भोला है। अुनके मनमें मेरे प्रति द्वेष नहीं आने पाया था, बल्कि अपने आप पर ही ग्लानि आअी थी कि कहीं सचमुच ही मुझे जीनेका लोभ तो नहीं हो गया है। अगर अेक साथी अैसा सोचता है तो यह विचारने लायक प्रश्न है। मेरी बातचीतसे अुनके मनसे वह असर भी चला गया और अब तक हम दोनों अच्छे मित्र बने हुअे हैं।

आज बापूजीकी अुस दिनकी दिव्य दृष्टिका मैं विचार करता हूं तो आश्चर्यचकित रह जाता हूं। अुस निमित्तसे बापूजीने मुझे तो ज्ञानगोष्ठी सुना ही दी। लेकिन बालकोबाजीके लिअे बापूका शुभ-संकल्प अक्षरशः कितना सत्य सिद्ध हुआ, अुसका दर्शन निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकांचन (पूनाके पास) को देखनेसे होता है। अुस संस्थाके लिअे देशके कोने कोनेसे ही नहीं, समुद्र पार जाकर भी लाखों रुपये जमा करना बालकोबाजीकी शक्ति और स्वभावके बाहरकी बात थी। वे कभी सरदी और गरमीमें पैदल चलने लायक हो सकेंगे और अितनी बड़ी संस्थाको चला सकेंगे यह स्वप्न जैसी कल्पना कौन कर सकता था? कमसे कम मुझे तो नहीं ही थी। परंतु आज वे अुसके संचालनमें प्राणपणसे जुटे हुअे हैं। अगर आज बापूजी जीवित होते तो मुझसे पूछते कि देखो, बालकोबाके बारेमें मैंने जो कहा था वह कैसे सच साबित हो रहा है। आज बालकोबा कितनी सुन्दर सेवा कर रहा है!

* * *

अन्तमें यहां मैं बापूजीके दो-तीन पत्र अुद्धृत करूंगा, जो अुन्होंने बालकोबाकी बीमारीमें अुन्हें लिखे थे। बापूजीके वात्सल्य, सहानुभूति, आश्वासन और प्रोत्साहनके अैसे ही पत्रोंने बालकोबामें जिजीविषा अुत्पन्न की होगी और स्वस्थ तथा सबल बनकर बापूजीके सेवाधर्मके आदेशको पूरा करनेका संकल्प-बल अुनमें पैदा किया होगा।

१

चि० बालकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। यह नहीं कहा जा सकता कि अिस बार पंचगनीमें तुम्हारा निवास लाभदायी हुआ है। परन्तु कैसे कह सकते

हो कि तुम यहां रहते तो तुम्हारी तन्दुरुस्ती कैसी रहती? तुम्हें भविष्यका नहीं सोचना है। अगर मैं देखूंगा कि तुम मुझ पर बोझ हो रहे हो तो मैं स्पष्ट अैसा कहनेमें संकोच नहीं करूंगा, परन्तु जब तक तुम्हारा मस्तिष्क काम कर सकता है, मैं नहीं कहूंगा कि तुम बोझ हो। अगर आदमीका मस्तिष्क काम करे और अुसकी भावना शुद्ध हो, तो वह दूसरों पर बोझ कभी नहीं हो सकता। अकसर विचार कार्यसे ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। जैसे भाषा विचारोंको बांध देती है, वैसे कार्य मानवकी भावनाओंको बांध देता है।

२६–३–'४० बापूके आशीर्वाद

२

चि० बालकोबा,

अगर आदमी असाध्य रोगसे पीड़ित हो और अमुक संयोगोंमें वह आदमी अनशन करे तो संभव है अिसे आत्महत्या करना न कहा जाय। परन्तु अगर अुस आदमीका चित्त शुद्ध हो तो अुसे अैसा अनशन करनेका कोअी हक नहीं है, भले वह असाध्य रोगसे पीड़ित हो। क्योंकि वह तब भी दूसरोंकी सेवा कर सकता है — अपने चित्तसे।

२४–१०–'४१ बापूके आशीर्वाद

३

चि० बालकृष्ण,

मैं नहीं मानता कि तुम्हें किसी भी स्थितिमें हिमालय जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

मूक सेवक रामदासजी गुलाटी

भाअी रामदासजी गुलाटी सीमाप्रान्तके अेक अिंजीनियर थे, जो सरकारी नौकरी छोड़कर पू० ठक्करबापाकी प्रेरणासे १९३४ में सेवा और साधनाकी दृष्टिसे बापूजीके पास आये थे। बापूजीने अुन्हें पू० जाजूजीको सौंप दिया। जाजूजीने अुन्हें चरखा-संघके सावली अुत्पत्ति-केन्द्रमें बुनाअीका अभ्यास करने भेज दिया। वे कुछ ही समयमें बुनाअीका शास्त्र समझ और सीखकर केन्द्रके

संचालक बन गये। वहीं मेरा अुनसे परिचय हुआ, जब मैं १९३५ में बुनाअी सीखने सावली गया था।

अुनका प्रेमल स्वभाव, अुनकी सत्यता, सरलता, व्यवहार-कुशलता, सूक्ष्म दृष्टि और सेवाभाव प्रशंसनीय थे। भगवद्भक्त और साधक भी वे अुच्च कोटिके थे। थोड़े ही दिनोंमें अुनके साथ मेरा घनिष्ठ संबंध हो गया। सावलीमें अुन्होंने मुझसे रामायणका अभ्यास करना शुरू कर दिया था। पाखाना-सफाअी व ग्राम-सफाअीमें भी वे सबसे आगे रहते और सब काम अपने हाथसे ही करनेका आग्रह रखते थे।

जब वे सेवाग्राममें आ गये, तब हम दोनोंकी आत्मीयता और भी बढ़ गअी। अुसके बाद सेवाग्रामका जो भी मकान बनता, अुन्हींकी देखरेखमें बनता। फिर तो कांग्रेस-अधिवेशनोंमें भी सारी रचना अुनसे ही करानेका बापूजी आग्रह रखते थे, क्योंकि अुन्होंने बापूजीकी सादी ग्रामीण कलाकी दृष्टिको पूरी तरह समझ लिया था।

मेरी गोशालाके नये मकानोंकी योजना बनानेके खर्चका अन्दाज लगाने और मकान बनवानेका काम भी बापूजी अुन्हें ही सौंपते थे। और मैं अुनकी सलाह, सूचना या संशोधनको मंजूर कर लेता था।

बापूजीके अवसानके बाद श्री भाअीलालभाअी पटेलके आग्रहसे वे वल्लभ-विद्यानगर, आणंदमें अिजीनियरीके प्रोफेसर हो गये थे। वहां कुछ समय बाद अुन्हें केन्सरका असाध्य रोग हो गया, जिससे बचना असंभव था। मृत्यु अुनके सामने मुंह बाये खड़ी थी। लेकिन अुन्होंने तो बापूके अुपदेशको जीवनमें ओतप्रोत कर लिया था। अिसलिअे मृत्युसे अुन्हें किसी प्रकारका भय, क्षोभ या ग्लानि जैसा कुछ नहीं लगता था। वे सदा प्रसन्नतासे मृत्युका स्वागत करनेके लिअे तैयार रहते थे। अन्तमें अुसी रोगने अुनके प्राण लिये।

अुनका सारा परिवार बड़ा ही सुसंस्कृत है। बीमारीमें अुनके भाअी और भाभीने अुनकी खूब सेवा की।

सेवाग्राममें रहते हुअे अुन्होंने बालकोबासे पंचदशी आदि वेदान्त ग्रन्थों और अुपनिषदोंका गहरा अध्ययन किया था। वहां अुनकी साधना बीजकी तरह बिलकुल मूक अवस्थामें चलती थी।

अुनका रहन-सहन अत्यन्त सादा था। अुनके पास कुछ पैसे थे। अुन्हींसे आश्रममें रहकर वे अपना गुजर चलाते थे। आश्रम या चरखा-संघसे अुन्होंने कभी अेक पैसा भी अपने निजी खर्चके लिअे नहीं लिया था।

बापूजीका अुन पर अनोखा प्रेम था। अुनकी रायको बापूजी सीलमोहर मानते थे। सेवाग्रामसे अुनके चले जानेके बाद हमें अुनकी बहुत याद आती थी और पद पद पर अुनकी सलाह और मार्गदर्शनकी जरूरत महसूस होती थी।

मुझे बड़ा दुःख है कि बीमारीमें न तो मैं अुनकी कोअी सेवा कर सका, न अुनके दर्शन ही कर पाया। 'परुष वचन कबहूं नहिं बोलहिं' तुलसीदासजीके अिस वचनका प्रत्यक्ष दर्शन रामदासभाअीके जीवनमें होता था। अैसे मूक सेवकोंका जीवन और मृत्यु दोनों ही भव्य होते हैं। आज अुनका स्मरण करके मैं धन्यताका अनुभव करता हूं।

धन्य घड़ी जब होहि सतसंगा।

अप्रकट संतमालिकाके अेक मोती

सेवाग्राम आश्रमके वृद्ध श्रीपत बाबाजीने अपनी अिहलोककी यात्रा पूरी कर ली। बाबाजीका शरीर कृश हो गया था। अुनके वियोगकी छायाने मनको अुदासीन बना दिया। अुनकी पवित्र स्मृतिसे हृदय भर आया। हमारे यहां कअी प्रकारके बाबा और महात्मा होते हैं। लेकिन श्रीपत बाबाजीने तो न कपड़े रंगे थे, न लंबी दाढ़ी बढ़ायी थी। वे सच्चे बाबा और महात्मा थे। अुम्र सत्तर वर्षकी थी। दरअसल वे देहातके अेक सच्चे विद्वान बुजुर्ग थे।

सन् १९४२ में जब वे 'जितना कमायें अुतना ही खायें' अिस सिद्धान्तके अनुसार चलनेके कारण खुराकमें कमी हो जानेसे अत्यधिक कमजोर हो गये, तब अुन्हें पवनारसे सेवाग्राम आश्रम लाया गया था। अितनी अुम्रमें भी वे कताअीसे जितना कमा सकते थे अुतना ही खाते थे। मुझे ठीक पता नहीं है, लेकिन बाबाजीकी कमाअी अितनी कम होती थी कि अनेक बार मैंने अुनको चने या अरहर अुबाल कर ही खाते देखा था। बाबाजीकी अिस कठिन तपश्चर्याका मैंने विरोध किया था और साधारण पोषक खुराक लेनेकी राय दी थी। लेकिन बाबाजीका यह विचार तो ठीक ही था कि जितना कमाओ अुतना खाओ।

यद्यपि बाबाजीसे पढ़ानेका काम अधिक नहीं होता था, फिर भी जिनको वे आश्रममें पढ़ाते थे अुनको जब तक शुद्ध बोलते न आ जाता तब तक बाबाजीको संतोष नहीं होता था। अितनी तत्परता व लगनसे वे पढ़ाते थे। अुनके अुच्चार बड़े शुद्ध होते थे — चाहे मराठी हो, चाहे संस्कृत, चाहे हिन्दी। संस्कृत मराठीके समान ही अुनकी मातृभाषा लगती थी।

मुझे 'गीताअी' पढ़ानेके समय यदि मैं स्थान पर नहीं रहता तो वे खुद मुझे खोजने आते और नाराज भी नहीं होते। नम्रता भी अुनमें गजबकी थी। दरअसल बाबाजी आश्रमकी शोभा थे, आश्रमके सच्चे सेवक थे और गायकी तरह सरल और प्रेमी थे। पूज्य विनोबाजीकी सूचनानुसार अुन्होंने बापूजीकी कुटिया संभालनेकी जिम्मेदारी ली थी, जो अुन्होंने अपनी सेहत ठीक रहने तक पूरी तरह निभायी। वे आत्मज्ञानी और वैराग्यनिष्ठ भक्त थे। अुनकी ज्ञान-पिपासा आखिर तक बनी रही। वे करीब दो बजे जाग जाते और तबसे सुबहकी प्रार्थनाके समय तक केकावली, अुपनिषद् या ब्रह्मसूत्र अथवा अन्य कोअी अैसा ही ग्रंथ अुनके अध्ययनका विषय रहता। अुनको गीताअी, गीताजी, अुपनिषद्, ब्रह्मसूत्र आदि अनेक ग्रंथ कंठस्थ थे। प्रार्थनामें जब ये पढ़े जाते तब बाबाजी बिना पुस्तकके ही अिन्हें बोलते थे। अिन पुस्तकोंसे अुनका प्रगाढ़ परिचय था।

बाबाजी अपनी धुनके पक्के थे। वे मानते थे कि जो अपनी कमाअीसे अधिक खाता है, वह दूसरेका पेट काटकर ही खा सकता है। यह बात बुद्धिसे माननेवाले तो बहुत मिलेंगे, लेकिन अिस विचार पर अमल करनेवाला माअीका लाल कोअी बिरला ही मिलेगा। बापूजी अुनको बहुत ही आदरकी दृष्टिसे देखते थे। आश्रमका हर काम, घंटी बजानेसे लेकर चक्की, चरखा और झाड़ू लगाने तकका काम, वे प्रेमसे करते थे। वे बड़े व्यवस्थित थे। अुनके कपड़े कभी भी बिखरे हुअे मैंने नहीं देखे। सब साफ-स्वच्छ रहते थे। आश्रममें रहते हुअे अुन्होंने बापूजीका कम-से-कम समय लिया। बापूजी खुद जब अुनको कोअी बात पूछते, तभी वे जरूरी बात करते थे।

बाबाजीकी नम्रता तुकाराम जैसी थी। जब कोअी आध्यात्मिक चर्चा छिड़ती, तो बाबाजी बालकोंकी तरह बोल अुठते, "भाअू, अितकें सर्व करूनहि आंतून कोराच राहिला!" (भाअी, अितना सब करके भी अंदरसे कोरा ही रहा!) और तुकारामके शब्दोंमें आगे सुनाते, "मापून झिजलों मापाची या परी। जाळावी हे थोरी लाभ विन।" (माप-माप कर घिस गया। अिस प्रकारके बड़प्पनको जला देना चाहिये। लोग मुझे महात्मा कहते हैं, लेकिन मैं तो अन्दरसे खाली ही रहा।) महाराष्ट्रमें पायलीसे अनाज मापनेका रिवाज है। पायली बार बार भरती है, घिसती है और अंतमें खाली ही रह जाती है। जब अहंभावका सर्वथा अभाव रहता है, तभी अैसी नम्रताकी भाषा

निकल सकती है। मनुष्यकी बाह्य जगतमें ख्याति अलग चीज होती है और आंतरिक साधना अलग।

स्व० श्रीपत बाबाजीको चाहे कोअी जाने या न जाने, अुनका स्थान संतजनोंकी गुप्त मालिकामें कायम रहेगा। आश्रममें पहली पवित्र मृत्यु स्व० धर्मानन्दजी कौशाम्बीकी हुअी, जिन्होंने अपना शरीर चलने लायक न समझ कर अेक मासका अुपवास करके अुसे छोड़ा था। और दूसरी पवित्र मृत्यु बाबाजीकी हुअी।

प्रभुसे प्रार्थना है कि बाबाजीके जैसी सरलता, जीवनके संबंधमें जागृति और 'जितना कमाओ अुतना खाओ' के सिद्धान्त पर अंत तक अमल करनेका बल वह हमको भी दे।

बापूजीके बेदाग साथी

मध्यप्रान्तीय हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष श्री तात्याजी वझलवारका स्वर्गवास १७ दिसम्बर, १९५५ को लंबी बीमारीके बाद नागपुरमें हो गया। यह दुःखद समाचार मुझे अुनके नाम लिखे पत्रके जवाबमें मिला। काफी दिनोंसे अुनकी तबीयत खराब थी। छह सात महीने पहले अुनके पेटका ऑप-रेशन बम्बअीमें हुआ था। अुसके बाद वे संभल ही नहीं सके। श्री तात्याजी नागपुरके अेक महाविद्यालयके मुख्य अध्यापक थे। जहां तक मुझे याद है, सन् १९३९–४० के लगभग अुन्होंने सेवाग्राम आश्रममें बापूके पास आना आरंभ किया था। विद्यालयसे थोड़ा अवकाश मिलता तो वे आश्रममें दौड़ आते, बापूजीसे प्रेरणा लेते, आश्रमवासियों पर अपना स्नेह बरसाते और चले जाते। महीनेमें दो-चार दिन तो आश्रममें रहनेका अुनका आग्रह रहता ही था।

धीरे-धीरे नौकरी परसे अुनका मन हटता गया, और बापूजीके रच-नात्मक कार्योंमें दिलचस्पी बढ़ती गअी। अुन्होंने त्यागपत्र देनेका निश्चय किया, तो विद्यालयके अुच्च अधिकारियोंने अुनका त्यागपत्र मंजूर न करके सेवाके लिअे अुनको लंबा अवकाश दिया। क्योंकि वे विद्यालयके प्राण थे और किसी भी कीमत पर अधिकारी और विद्यार्थी अुनको छोड़ना नहीं चाहते थे। थोड़ा समय देकर भी वे विद्यालयके मुख्य अध्यापक ही बने रहें, अैसी सबकी अिच्छा थी। अिस अिच्छाके वश होकर अुन्होंने थोड़े समय तक निभानेकी कोशिश की। लेकिन वे बापूजीकी तरफ अितने अधिक आकर्षित

हो गये थे कि बड़े परिवारके खर्चका भार और साथियोंका प्रेमभरा आग्रह होते हुअे भी विद्यालयसे त्यागपत्र देनेके लिअे वे विवश हो गये।

अुनका मित्र-मंडल बहुत बड़ा था। अुनकी अुदारता, नम्रता, सेवा-भाव, सहनशीलता और हंसमुख प्रकृतिका असर बहुत ही व्यापक था। सन् १९४२ के आन्दोलनमें वे भोजन वर्धाके कलेक्टरके घर, जो अुनका मित्र था, करते और पानी आश्रममें पीते थे। लेकिन अुनके अूपर किसी भी प्रकारका शक नहीं किया जा सकता था, क्योंकि अुनका जीवन गंगाजलके जैसा पवित्र तथा स्फटिकके जैसा स्वच्छ और पारदर्शी था। अुनका काम अेक प्रकारसे 'रेडक्रॉस' का, शुद्ध सेवाका ही था। अुनके जीवनमें राजनीतिक दावपेंच, पदलोलुपता या भौतिक आकर्षणोंका लाग तिलमात्र भी नहीं था। गीताकी भाषामें अिन सब चीजोंसे वे कमलपत्र-वत् अलिप्त थे। सफेद कपड़ोंमें वे संन्यासी थे। विनोबाजीकी भाषामें वे शुद्ध कांचन-मुक्त थे। अुनकी सादगी और परिश्रम-निष्ठा अद्वितीय थी। आश्रमके लिअे नागपुरसे कुछ सामान मंगाना होता, तो अुसकी लिस्ट या तो वे स्वयं ले जाते या भेज दी जाती। वर्धा स्टेशनसे सेवाग्राम पांच मील है। जिस सामानको वे खुद अुठा सकते थे, अुसे सिर या कमर पर लादकर पैदल ही सेवाग्राम पहुंचते थे। अगर कुछ अधिक होता तो साथमें मजदूर कर लेते थे। तांगा करनेकी नौबत तभी आती, जब सामान बहुत ज्यादा होता था। आश्रममें पहुंचते ही आश्रमके नित्यकर्मोंमें — जैसे पाखाना साफ करना, झाड़ू देना, पानी भरना आदिमें — अैसे लग जाते, मानो वे नित्य आश्रममें ही रहते हों। बापू और आश्रमके प्रति अुनकी श्रद्धा अगाध थी। आश्रमवासी अुनको अपने बीचमें पाकर प्रफुल्लित हो अुठते थे और चाहते थे कि हमारे बीच वे जितना अधिक रहें अुतना ही अच्छा है। अुनका मन आश्रममें ही रमता था।

जबसे वे हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष बने, तबसे प्रान्तके कोने-कोनेमें जाकर अुन्होंने हरिजनोंके सुख-दुःखको समझा और अुनके अधिकार अुन्हें दिलानेकी दिलोजानसे कोशिश की। अपने शरीरको अुन्होंने चन्दनकी तरह घिसने दिया। रोजाना २५–३० मील तक साअिकल पर या पैदल दौड़ लगाते थे। मित्रोंने अुनको मोटरकी सुविधा कर देनेका प्रेमभरा आग्रह किया था, लेकिन अुन्होंने नम्रतापूर्वक अुसका अस्वीकार कर दिया था। अुनकी तबीयत बिगड़नेका सबल कारण मर्यादासे अधिक अुनकी साअिकलकी दौड़

अिस वचनको अुन्होंने अपने जीवनमें पूरी तरह अुतार लिया था। चन्दनकी तरह जैसे जैसे अुनका शरीर घिसता गया, वैसे वैसे अुनकी सुगन्ध प्रखर होती गअी। अुनकी देह चली गअी, लेकिन अपनी सेवा और सुगन्ध-रूपी बहुत बड़ी पूंजी वे हमारे लिअे छोड़ गये हैं। हम अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करें, यही अुनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मध्यप्रदेशके बाहर शायद अुनको बहुत कम लोग जानते हैं, क्योंकि वे अखबारी दुनियाके झमेलेसे बिलकुल दूर रहते थे। तो भी अैसे मूक सेवकोंकी सेवाकी सुगन्ध वायुके साथ सारे आकाशको सुगन्धित करनेमें समर्थ होती है। अैसे पवित्र सत्पुरुषोंका जीवन और मृत्यु दोनों धन्य होते हैं। अुनका पवित्र स्मरण मनको पवित्र बनाता है। अुनके वियोगमें भी शोकके बजाय सात्त्विक प्रेरणा अधिक मिलती है।

प्रभुसे प्रार्थना है कि वह हम सबको अुनके सत्पथ पर चलनेका बल दे। बापूजीके अैसे बेदाग साथी थोड़े ही मिलेंगे।

अनोखा महापुरुष

पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू, जिन्हें हम काकाजीके नामसे पुकारते थे, सचमुच ही बापूजीके बाद हमारे परिवारके काकाजीका पूरा फर्ज अदा करते थे। सबकी सार-संभाल, सबके सुख-दुःखकी चिन्ता, सबकी कठिनाअियां सुलझानेमें मदद — अिसे अुन्होंने अपना ही फर्ज समझ लिया था। बापूजीके बाद हमारे परिवारमें तीन बुजुर्ग बचे थे। पू० किशोरलालभाअी, पू० जाजूजी अेवं पू० विनोबाजी। किशोरलालभाअीका स्थान बड़े भाअीका था, जो अंत समय तक अुसे निभाते हुअे हमें छोड़कर चले गये। काकाजीने कुछ लम्बे समय तक निभानेकी ही गरजसे हार्नियाका ऑपरेशन कराना मंजूर किया था। डॉक्टरी राय **थी** कि यदि आरामसे अेक जगह रहा जाय तो ऑपरेशनकी जरूरत नहीं है। लेकिन काकाजीके लिअे तो 'रामकाज कीन्हें बिना मोहि कहां विश्राम' हनुमानका यह वचन सार्थक था। तीसरे हैं विनोबाजी जो अपने रुग्ण शरीरको लेकर केवल आत्मबलसे ही भूदानका गोवर्धन पहाड़ अपने सिर पर अुठाये भारतमें घूम रहे हैं। लेकिन कुटुम्बके बारेमें जो दिलचस्पी और लगन काकाजीमें थी वह अुनकी अपनी निराली वस्तु थी।

बापूजी और विनोबाके कामसे अुन्हें अेक क्षण भी विश्राम लेना असह्य था। सूर्यकी गतिकी भांति अुनका कार्य सतत चलता ही रहता था। ऑपरे-

शनके बाद हार्नियाका कष्ट मिटनेसे अुस कामको और भी वेगसे कर सकेंगे, अिस अुत्साहसे ही ऑपरेशनकी बात अुनके मनको रुची थी। डॉ० बलवीर नारायण शर्माकी श्रद्धा और कुशलताने भी अुन्हें राजी करनेमें मदद की थी। ता० १४–१०–'५५ को ऑपरेशन बड़ी सफलतापूर्वक सवाअी मानसिंह अस्पताल, जयपुरमें हुआ। किसी प्रकारकी शंकाको स्थान नहीं था। वे बड़े आनन्दके साथ प्रगति कर रहे थे। दूसरे दिन सवेरे अुन्हें घर ले जानेकी बात थी। अिसके लिअे मैंने रातमें ही अुनके लिअे अेक तखत अपने केन्द्रसे भिजवाया था। रातको डेढ़ बजे वे जगे और अुन्होंने पानी मांगा। नारायण, अुनका छोटा पुत्र, सेवामें था। वह अुठा और अुसने पानी दिया। काकाजी बोले, 'आज कुछ गर्मी है।' नारायणने कहा, 'नहीं, गर्मी तो नहीं है।' 'अच्छा खिड़की खोल दो।' खिड़की खोली गअी। बस, गर्दन ढीली पड़ गअी! नारायणने डॉक्टरोंको पुकारा। डॉक्टर पहुंचे। लेकिन वहां तो हंस अुड़ चुका था।

मेरे मन कुछ और थी कर्ताके कुछ और।

पू० काकाजीका जीवन अपने ढंगका अनोखा था। अुनकी अपनी मौन साधना बड़ेसे बड़े योगिराजोंको भी मात करनेवाली थी।

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीर-विमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स मुक्तः स सुखी नरः।*

गीताके अिस श्लोकके अनुसार जीवनको अणिशुद्ध बनानेकी अुनकी लगन रोम रोमसे प्रकट होती थी। भूदान, संपत्तिदान तथा व्यवहार-शुद्धिके लिअे अुनके मनमें जो ज्वालामुखी धधक रहा था, अुसकी आंच और प्रकाश अुनके शब्द शब्दसे टपकते थे। अुन्होंने सालों तक मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और अखिल भारत चरखा-संघके मंत्रीका काम किया। अुन्होंने मध्यप्रदेशके मुख्य-मंत्री और भारतके वित्तमंत्री बननेसे नम्रतापूर्वक अिनकार कर दिया। अुनके लिअे यह बड़ी बात नहीं थी, सहज और सरल काम था। क्योंकि अुनके जीवनका लक्ष्य अिससे कहीं अूंचा था।

पू० काकाजी अेक अैसे सज्जन पुरुष थे जिनके दर्शनसे युधिष्ठिरकी याद आती थी। लेकिन व्यासजीने युधिष्ठिरके मुखसे 'नरो वा कुंजरो वा' कहला कर अुनके जीवनको जो कलंक लगाया है, वैसा कलंक काकाजीके जीवनमें

---

* देहांतके पहले जिस मनुष्यने अिस देहसे ही काम और क्रोधके वेगको सहनेकी शक्ति प्राप्त की है, अुस मनुष्यने समत्वको प्राप्त किया है, वही सुखी है।

मिलना कठिन है। हमारे परिवारके वे 'प्रिवी कौंसिल' थे। किसी व्यावहारिक प्रश्नके लिअे बापूजीके पास समय न होता तो वे कहते, "जाओ, जाजूजीके पास चले जाओ। जैसा वे कहें वैसा करो। फिर मेरे पास नहीं आना।"

जब सेवाग्राममें बापूजीकी लंगोटीमें से संसार बढ़ा, तो मैंने पूज्य जमनालालजीके खेती-कार्यकर्ताओंको वहांसे अपना झोली-झंडा अुठानेकी नोटिस दी। अुन्होंने जमनालालजीसे कहा कि अगर मालगुजारी रखनी हो तो यहां खेती रखना भी जरूरी है। जमनालालजीने बापूजीसे सारे सेवाग्रामका कब्जा देनेकी बात की, क्योंकि वे तो बापूजीके वहां जाते ही अुस गांव पर तुलसीपत्र रख चुके थे। लेकिन बापूजी जमींदार बनना पसन्द नहीं करते थे। आश्रमको तो सिर्फ काश्तकी जमीन चाहिये थी। प्रश्न खड़ा हुआ — या तो सब कुछ लो नहीं तो जमीन भी नहीं मिलेगी। अिस पर मेरी और जमनालालजीकी बापूजीके सामने मीठी टक्कर हुअी, क्योंकि जमनालालजी मीठे थे। मामला काकाजीकी कोर्टमें गया। अुन्होंने देखा और फैसला दिया कि जमींदारीके साथ काश्तकी जमीनका कोअी सम्बन्ध नहीं है। जमनालालजीकी हार हुअी और मैं जीता।

काकाजीका प्रथम दर्शन मुझे वनस्थली (अुस समयकी जीवन-कुटीर) राजस्थानमें १९३४ में हुआ था। लेकिन १९३५ में जब मैं बापूजीके साथ मगनवाड़ी (वर्धा) और बादमें सेवाग्राम गया तो वहां अुनका सच्चा परिचय हुआ। जब गन्नेका रस चालू होता तो मैं अुनके पास जाकर पूछता कि रस चालू हो गया है कितना भेजूं। वे पूछते, 'भाव क्या रखा है?' मैं कहता, 'आप भावकी झंझटमें क्यों पड़ते हैं?' 'अरे भाअी, मुझे अपना हिसाब देखना पड़ेगा कि कौनसी चीज कम करके रस लिया जा सकता है।' अुस समय अुनके मासिक खर्चका बजट ३० रु० था। अगर मैं आधा सेर भेजता और अुनको डेढ़ पावकी जरूरत होती तो दूसरे दिन अुतना कम भेजनेको कहते।

जबसे मैं राजस्थानमें आया तबसे वे सीकर आते तो मेरे पास ही गोशालामें ठहरते और कहते, देखो आश्रमके लोग साग अधिक खाते हैं, मेरे लिअे अुस हिसाबसे नहीं बनाना है। अुनका हिसाब तोलोंका था।

अेक बार अुन्हें सीकरसे अजमेर जाना था। मैं भी अपने कामसे अुधर जा रहा था। अुनके साथ ही गया। वे किसीको सेवाके लिअे अपने साथ नहीं

रखते थे और जहां तक संभव होता तीसरे दर्जेमें ही सफर करते थे। फुलेरासे गाड़ी बदलनी थी। वहांसे अजमेरके लिअे दो डिब्बे लगते थे। मैंने अेक सीट पर अुनका बिस्तर लगा दिया।। देख कर वे बोले, 'अरे भाअी, तुमने मेरा बिस्तर लगा दिया तो दूसरे लोग कहां बैठेंगे? अिसे समेट लो।' मैंने समेट लिया। गाड़ीमें खूब भीड़ हो गअी। अजमेर तक काफी कष्टमें गये, लेकिन अुन्होंने अुफ तक न की। सीकरमें मैंने अुन्हें थोड़ी मालिशके लिअे राजी कर लिया और यह भी सूचना की कि आप किसीको साथमें रखा करें, अब आपकी अुम्र अकेले घूमनेकी नहीं है। थोड़ी थोड़ी मालिश भी कराते रहें तो शरीरको मदद मिल सकती है। वे बोले, 'भाअी, अब अिस शरीरको और कितने दिन रखना है? अिससे बहुत काम लिया है। अिसके लिअे दूसरेका समय क्यों खर्च करूं?'

जब २ अक्तूबरको काकाजी जयपुर आये तो मैंने दुर्गापुरा आकर मेरी कुटी देखनेकी बात की। वे हंसकर बोले, 'अरे भाअी, वह जमीन तो मैंने पवित्र की है। मैं वहां गया था। अब तो समय नहीं है।' पर मैंने ८ तारीखको अुन्हें राज़ी कर ही लिया। यहां आये। डॉ० शर्मा भी साथ थे। शर्माजी अुनको अमेरिका आदिकी बहुतसी बातें सुनाते रहे। मैं भोजन बनाने लगा तो बोले, 'देखो बलवन्तसिंह, तुम आश्रमवासी हो और आश्रम-वासियोंको भोजनकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहिये। आओ, मेरे पास बैठकर कुछ बातें करो।' मैंने कहा, 'आपकी बात तो ठीक है। लेकिन स्वभाव पड़ गया है अुसका क्या करूं?' बोले, 'अच्छा तो जल्दी खिला दो।' अुन्होंने बड़े प्रेमसे भोजन किया और सब कुछ देखकर चले गये। मुझे क्या पता था कि अिस स्थानको पवित्र करनेका अुनका वह अन्तिम दिन था।

अेक बार राजस्थान गोसेवा संघकी सदस्यताके लिअे गायके घीका नियम कुछ ढीला करनेकी सूचना आअी। हम लोग कुछ ढीले पड़े। प्रश्न काकाजीके पास गया तो कड़क कर बोले, 'अगर तुम लोग राजस्थानमें रहकर भी गायके घीका व्रत नहीं पाल सकते तो गोसेवा कैसे करोगे? मैं तो सारे हिन्दुस्तानमें घूमता हूं और गायके घी-दूधके व्रतका पालन करता हूं। अगर थोड़ी अड़चन भी आये तो अुसे सहन करनेकी तैयारी होनी चाहिये, हमारे पास अिसका क्या अुत्तर हो सकता था? हम सावधान हो गये और अपने व्रतको हमने ढीला नहीं किया। यह थी अुनकी सिद्धान्त-निष्ठा।

जब अुनके ऑपरेशनकी बात तय हुअी तब राधाकृष्णजीके मनमें सहज यह शंका हुअी कि कहीं ऑपरेशन सफल न हुआ तो? अिस खयालसे अुन्होंने काकाजीसे पूछा, 'आपको कुछ कहना तो नहीं है?' अुन्होंने अुत्तर दिया, 'नहीं, मुझे कुछ नहीं कहना है। मेरे मनमें अैसा कुछ कहनेको है ही नहीं।' ऑपरेशनसे पहले अुन्होंने कहा, 'मुझे तो सामान्य वार्डमें रहना है।' अन्तमें साथियोंके आग्रहसे अलग छोटे कमरेमें रहना अुन्होंने स्वीकार कर लिया। लेकिन अुस समय कमरा खाली न होनेसे अुन्हें १० रु० रोजके किरायेके बड़े कमरेमें रखा गया, जिसमें सब प्रकारकी सुविधा थी। वह कमरा अुन्हें रुचता न था। जब छोटा कमरा खाली हुआ तो साथियोंने बड़ेमें ही रहनेकी अुनसे विनती की। वे बोले, 'अरे, मुझे अितने आराममें क्यों रखते हो?' कहते कहते अुनकी वाणी रुक गअी और वे हिचकी बांधकर रोने लगे। अुनकी अिस भावनाको देखकर हमारे मुंह बन्द हो गये और हम अुनको तुरन्त छोटे कमरेमें ले आये। अुससे अुनको बड़ी प्रसन्नता हुअी। यह था अुनका गरीबीसे जीनेका महामंत्र। काकाजीने कभी अपने पास घड़ी या फाअुन्टेनपेन तक नहीं रखी, जो आजके जीवनकी बहुत ही जरूरी चीजें बन गअी हैं। गाड़ीमें जाना होता तो टाअिमसे १०–१५ मिनट पहले स्टेशन पर पहुंच जाते। अिसलिअे गाड़ी छूट जानेका तो प्रश्न ही नहीं रहता था।

पू० काकाजीके जीवनसे हम जितना भी पाठ लें अुतना थोड़ा ही होगा। अैसे अनोखे सत्पुरुष भाग्यसे ही कभी आते हैं। और

यद्‌यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।*

का पाठ देकर चले जाते हैं। पीछे रहनेवाले अुनके आदर्शोंसे जितना लाभ अुठा सकें अुठायें।

मुझे अुनकी पवित्र आत्माकी शांतिके लिअे प्रार्थना करनेका तो क्या अधिकार है? क्योंकि अुनकी आत्मा तो शांत तथा प्रभुमय ही थी। अुसे मैं अपनी नम्र श्रद्धांजलि ही अर्पण करता हूं।

भगवान हम सबको अुनका छोड़ा हुआ काम पूरा करनेका बल दे यही प्रार्थना है।

---

* जो जो आचरण अुत्तम पुरुष करते हैं, अुसका अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, अुसका लोग अनुसरण करते हैं।

१६

बापूके विभिन्न पहलुओंका दर्शन

हिमालयकी तरह अटल

अेक दफा चांदा जिलेके कुछ हरिजन डिस्ट्रिक्ट बोर्डमें सीट चाहते थे। वह अुनको मिल नहीं रही थी, अिसलिअे वे बापूजीसे मिले। बापूजी अपने ढंगसे अुस बातकी छानबीन करके तथा वहांके कार्यकर्ताओंसे पूछताछ करके अुन्हें न्याय दिलानेका प्रयत्न करना चाहते थे। लेकिन हरिजन भाओी अपने ही ढंगसे तत्काल न्यायकी मांग करने लगे। बापूजीको यह बात ठीक नहीं लगी। तब अुन्होंने बापूजीके खिलाफ ही सत्याग्रह कर दिया और आश्रमके दरवाजे पर अुपवास आरम्भ कर दिया। बापूजीने कहा, "आप लोग दरवाजे पर बैठे हैं, अिससे आपको तकलीफ होती है। आश्रममें ही बैठें तो कैसा हो? मैं आपको मकान देता हूं।" बाका स्नानघर अुनके लिअे खाली करा दिया और आश्रमवालोंसे कह दिया कि अिनको किसी प्रकारकी तकलीफ न हो। अुनमें स्त्रियां भी थीं। वे लोग समझते थे कि शायद हमारे और विशेषकर स्त्रियोंके अुपवाससे बापूजी घबरा जायेंगे और हमको सीट दिला देंगे। लेकिन बापूजी तो हिमालयकी तरह अटल रहे। अुन्होंने कह दिया कि योग्य रीतिसे जितना मैं कर सकता था अुतना मैंने किया है। अिस प्रकारसे हठपूर्वक अुपवास करके यदि आप मर जायेंगे तो भी मैं परवाह नहीं करूंगा। रोज सुबह-शाम बापूजी अुनके पास जाते और अुनसे बड़े प्रेमसे बातें करते थे। अुनको किसी चीजकी जरूरत पड़े तो आश्रमसे मदद लेनेके लिअे कहते थे। आश्रममें भी लोगोंसे कह दिया था कि अिनको किसीके बरतावसे अैसा प्रतीत नहीं होना चाहिये कि ये हमारे विरोधी हैं। आखिर वे लोग हारे और अुपवास बन्द करके चले गये।

अजीब मांगोंकी पूर्ति

अेक दफा सेवाग्राममें हैजा फैल गया। सुशीलाबहनने कहा कि सेवाग्रामके पाससे जो नाला बहता है, अुसमें पैर डालकर सेवाग्राममें जाना पड़ता है। बरसातके दिनोंमें तो अिसीसे हैजा फैलता है। अिस कारण अैसी व्यवस्था होनी चाहिये जिससे पानीमें पैर न भीगें। बापूने शामको

मुझे बुलाया और कहा, "देखो, सुशीला जब सेगांव जाती है तो रोज अुसके पैर नालेमें भीग जाते हैं। कल १० बजे अुसको जाना है। अुसके पहले नाले पर पुल बंध जाना चाहिये।" बापूजीके सामने तो हां कहना ही पड़ता। अिसलिअे मैंने कह दिया, "जी, बंध जायगा।"

मैंने शामको ही जाकर नालेका मौका देखा। नालेका पानी अितनी चौड़ाअीमें बहता था कि अुसके अूपर कामचलाअू पुल भी अितनी जल्दी नहीं बन सकता था। मेरे सामने बड़ी समस्या थी। सुबह गया तो बहुत विचार किया। नालेके आसपास बड़े बड़े पत्थर पड़े थे। मैं कुछ आदमी तो आश्रमकी खेतीके अपने साथ ले गया और दस-पांच आदमी गांवके बुला लिये। अुनकी मददसे वे बड़े बड़े पत्थर ढकेलकर अैसे मिला दिये कि अुनमें से पानी भी निकल जाय और आदमी भी पार हो जाय।

मैंने दस बजेके पहले ही आकर बापूजीको रिपोर्ट दी कि पुल तैयार है। बापूजी हंसकर बोले, "अच्छा!" और सुशीलाबहनसे कहा, "देखो, सुशीला, बलवन्तसिंहने पुल बना दिया। अब तू आरामसे जा सकती है।" सुशीलाबहन गअी और अुस पुलके बारेमें बापूजीको अच्छी रिपोर्ट दी। बापूजीको अिससे काफी आनन्द हुआ।

अेक रोज सुबह बापूजीने मुझे बुलाया और कहा, "मीराबहनको यहां शांति नहीं मिलती है। वह टेकरी पर जाना चाहती है और आज ही जाना चाहती है। तो शाम तक वहां मकान बन जाना चाहिये।" मनमें तो मुझे बहुत हंसी आअी कि बापूजी कैसी अशक्य-सी बात कहते हैं? लेकिन ना थोड़े ही कह सकता था। बापूजीको हां कहकर मैं चला आया। सोचने लगा, क्या हो सकता है? विचार करते करते ध्यानमें आया कि खेतकी रखवालीके लिअे मचान बनाते हैं वैसा गोल-सा झोंपड़ा बनाया जाय। अुसके अूपर गोल छप्पर भी बनाया जाय। बस, गाड़ीमें लकड़ी, रस्सी, छप्पर बनानेका सारा सामान और अेक चलता-फिरता पाखाना ले गया। पांच बजे तक टेकरी पर मीराबहनके लिअे रहने लायक झोंपड़ा बन गया। अिसकी रिपोर्ट मैंने बापूजीको दी। बापूजीने मीराबहनसे तैयार होकर जानेके लिअे कहा। मीराबहन गअीं और झोंपड़ा अुनको बहुत पसन्द आया।

अिस प्रकारसे बापूजीके पास अजीब अजीब मांगें आती थीं और अजीब ढंगसे बापूजी अुन्हें पूरा करते थे। अिसमें बापूको कितना आनन्द आता

था अिसकी कल्पना वे लोग नहीं कर पाते थे, जो यह मानते थे कि बापूके पास अितने बड़े बड़े काम हैं, फिर भी आश्रमके लोग छोटे छोटे कामोंके लिअे अुनका अितना वक्त ले लेते हैं।

'कभी नहीं हारना'

मअीका महीना था। बापूजी हवापानी बदलनेके लिअे तीथल जा रहे थे। मैं स्टेशन तक अुनके साथ गया। आश्रममें कअी प्रकारके आपसी मतभेद चलते थे, जिनके कारण मैं काफी दुःखी हो गया था। मैंने सब हाल बापूजीको सुनाया। बापूजीने भुसावल जाकर मुझे पत्र लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे साथ ठीक बातें हुअीं। तुम्हारे समाजके साथ रहनेका अिल्म सीख लेना है। और सबके गुणोंको देखो। दोषोंको भूल जाओ। गायोंके बारेमें सेवायज्ञ आरम्भ किया होगा।

१०–५–'३७, भुसावल बापूके आशीर्वाद

मैं सेवाग्रामसे कुछ अूब-सा गया था और वहांसे जानेकी अिच्छा मनमें घर करने लगी थी। मैंने बापूजीको पत्र लिखा, जिसके जवाबमें अुन्होंने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। दूधके बारेमें मुन्नालालसे पूछता हूं। तुम्हारी दलील सही तो लगती है।

मैं न तुमको निकालूंगा, न दूसरे किसीको। जो अपने-आप भाग जायेंगे अुनको रोकूंगा नहीं। और सबसे यथाशक्ति सेवा भी लूंगा। यों तो कुछ न कुछ सब करते ही हैं, लेकिन मेरे हिसाबसे वह काफी नहीं है। 'कभी नहीं हारना भले साडी जान जावे' यह भी मेरे जीवनका अेक मंत्र है। सबको रहने दिया मैंने, अब मैं सबको रुखसत दे दूं तो मैं हारूं और मूर्ख बनूंगा। मूर्ख बनना आपत्ति नहीं है; अैसे तो मूर्ख हूं, पर यह आपत्ति होगी। अिसलिअे हारनेकी बात मैं कैसे सहूं?

आज किशोरलालभाअी और गोमतीबहन बंबअी गये।

२६–५–'३७, तीथल बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति

कुछ दिन पश्चात् बापू तीथलसे लौट आये। मैंने ब्रह्मचर्यके विषयमें बापूजीको अपने मनकी शंका लिखी। अुत्तरमें बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पत्र बहुत ही अच्छा है। निर्मल है। और तुम्हारी सब शंका अुचित है। भय भी स्थान पर है। और सावधानी स्वागत योग्य है।

१९३५ की प्रतिज्ञा लिखी गअी है अंग्रेजीमें। गुजराती अथवा हिन्दी अनुवाद मैंने पढ़ा नहीं था। मूल अंग्रेजीका अर्थ यह है : बहनोंके कंधे पर हाथ रखनेका मुहावरा मैंने रखा है अुसका मैं त्याग करता हूं। अुस वक्त या आज भी मैंने कुछ दोष महसूस नहीं किया, न करता हूं। लेकिन लोक-संग्रहकी दृष्टिसे अुसका त्याग किया। दिलमें कभी यह अर्थ नहीं था कि मैं कभी किसी लड़कीके कंधे पर हाथ नहीं रखूंगा। मुझे खयाल नहीं है कि सेगांवमें कंधे पर हाथ रखनेका मैंने किस लड़कीसे शुरू किया। लेकिन मुझे अितना खयाल है कि मुझको १९३५ की प्रतिज्ञाका पूरा स्मरण था और यह स्मरण होते हुअे मैंने अुस लड़कीके कंधे पर हाथ रखा। हो सकता है कि अुस लड़कीके आग्रहको मैं रोक न सका, अथवा मुझे अुसके कंधेके टेकेकी दरकार थी। अैसा तो मैं कैसे कह सकता हूं कि दुर्बलताके कारण ही मैंने सहारा लिया। और अगर अैसा ही था तो मैं प्रतिज्ञाको कायम रखनेके लिअे किसी भाअीका सहारा ले सकता था। लेकिन मेरी प्रतिज्ञाका अैसा व्यापक अर्थ था नहीं, मैंने कभी किया नहीं।

अब रही अमलकी बात। मैंने मेरे निर्णयका अमल शुरू किया अुसके बाद ही भाष्य चला। प्रथम भाष्यमें जो अमल तीन चार दिनके बाद करनेकी बात थी, अुसको मैंने दूसरे ही दिन शुरू कर दिया। जहां तक मेरी निर्विकारता अधूरी रहेगी वहां तक भाष्यको होना ही है। शायद वह आवश्यक भी है। संपूर्ण ज्ञान मौनसे ज्यादा प्रगट होता है, क्योंकि भाषा कभी पूर्ण विचारको प्रकट नहीं कर सकती। अज्ञान विचारकी निरंकुशताका सूचक है, अिसलिअे भाषारूपी वाहन चाहिये। अिस कारण अैसा अवश्य समझो कि जहां तक मुझे कुछ भी समझानेकी

आवश्यकता रहती है वहां तक मेरेमें अपूर्णता भरी है अथवा विकार भी है। मेरा दावा बहुत छोटा है और हमेशा छोटा ही रहा है। विकारों पर पूर्ण अंकुश पानेका अर्थात् हर स्थितिमें निर्विकार होनेका मैं सतत प्रयत्न करता हूं, काफी जाग्रत रहता हूं। परिणाम अीश्वरके हाथमें है। मैं निश्चित रहता हूं। अगर अब कुछ चीज बाकी रह जाती है अथवा कुछ नयी चीज याद आती है तो मुझे अवश्य लिखो। तुम्हारा खत वापिस करता हूं।

सेगांव, ११–६–'३८ बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति दोनोंमें मुझे विरोध-सा लगता था। मैंने बापूजीसे अिस बारेमें प्रश्न किया। अुत्तरमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

ब्रह्मचर्यमें अेक वस्तु यह है कि वीर्य निष्फल न होना चाहिये। जब अुसकी अूर्ध्व गति होती है तब माना जाता है कि वह निष्फल नहीं जाता है। बात सही नहीं है। जो मनुष्य क्रोध करता है, वह वीर्यका दुर्व्यय करता है अथवा नाश करता है। अिसलिअे वह निष्फल हुआ। अिसी कारण ब्रह्मचर्यका अितने अंशमें नाश हुआ। अिसी तरह जो मनुष्य भोगवृत्तिसे स्त्रीसंग करता है अुसके वीर्यका नाश होता है। क्योंकि वह निष्फल जाता है। जब मनुष्यको किसी प्रकारकी विषय-वासना नहीं है, स्त्री-पुरुष दोनों सन्तान चाहते हैं और अिसी कारण मिलन होता है तब वीर्य संपूर्णतया सफल होता है। अिसलिअे अैसे दंपति संपूर्णतया ब्रह्मचारी हैं। अैसे दंपति शायद करोड़ोंमें अेक मिलें। तब अेक ही वक्त अुनका मिलन होता है। अुसके सिवा जैसे भाअी-बहन रहते हैं अुसी तरह रहते हैं। मनसे, वाचासे, स्पर्शसे अथवा किसी तरह विषय-तृप्ति नहीं करते हैं। अुसके, संतान-अुत्पत्तिके, कारण बना हुआ मिलन किसी प्रकारसे भोगकी व्याख्यामें नहीं आता है। अितनेमें तुम्हारी शंकाका समाधान होना चाहिये।

सेगांव, ८–७–'३८ बापूके आशीर्वाद

अिस विषयमें तथा रामनामके विषयमें बापूने अेक साथीको जो लिखा था, अुसका मुख्य अंश यह है:

"रामनाम-स्मरण जब श्वासोच्छ्वासवत् स्वाभाविक होता है तब दूसरे कामोंमें विघ्नकर नहीं होता, बल्कि बल देता है। तंबूरेका सुर दूसरे सुरोंको बल देता है वैसे अिसमें दो काम साथ करनेका दोष नहीं आता। आंख अपना काम करती है, कान अपना। सब अेकसाथ होता है।

अब समझमें आ सकता है कि मेरे दूसरे कामोंको रामनाम सरल करता है, सफल भी। अुसका स्वरूप अवर्णनीय है, अनुभव-गम्य है।

ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप हैं, अिस बारेमें मुझे शंका थी। अब नहीं है। दोनोंका संबंध शरीरके साथ है। मनोविकारका असर शरीरजात है। अैसे ही क्रोधादि हिंसक विकारोंका। अगर शरीर न हो तो अहिंसा और ब्रह्मचर्य अर्थविहीन हो जाते हैं। अर्थात् दोनों शरीरके धर्म हैं और दूसरे शरीरके साथ संबंध रखते हैं।

ब्रह्मचर्यके लिअे बलवान साधन चित्तशद्धि है। अुसमें बाह्य साधन कुछ अंश तक सहायक होते हैं।

प्रार्थना अनजानमें चलती है, अुसका मतलब यह है कि जब मनुष्य अुसीमें रत रहता है तो अुसे पता नहीं चलता कि वह प्रार्थना करता है। जैसे गाढ़ निद्रामें सोये मनुष्यको निद्राका पता नहीं चलता। रामनामके विस्तृत अर्थमें यह कृष्णनाम भी आया। चरखा चलाना भी रामनाम हो सकता है।"

छोटी-छोटी बातों द्वारा बापूका अुपदेश

अेक रोज गोशालाके चरागाहमें गांवके लोगोंके जानवर चर रहे थे। अकसर ये लोग आगापीछा देखकर अिस तरहसे घास चरा लेते थे। मैंने अेक लड़केको धमकाया और अुसके साथ थोड़ी धक्कामुक्की भी की। अुसने जाकर अपने बापसे शिकायत की। अुसका बाप पहलेसे ही मुझसे नाराज था, क्योंकि जो जमीन हमने मालिकसे वाजिब दाम देकर चरानेके लिअे ली थी अुसे ये लोग बहुत कम दाम देकर चराते थे। लोगोंको यह पसन्द नहीं था कि जमीनके मालिकको अधिक दाम मिलें। अिसलिअे अुस आदमीने मेरे खिलाफ अेक तूफान-सा अुठाया। वह ४०–५० आदमी लेकर बापूजीके पास शिकायतके लिअे आया और बहुत ही बढ़ा-चढ़ाकर शिकायत की। मैंने

जो घटना घटी थी वह सब बापूके सामने स्पष्ट शब्दोंमें रख दी। बापूजीने अुन लोगोंसे कहा, "किसी भी हालतमें बलवंतसिंहको तुम्हारे बच्चे पर हाथ नहीं अुठाना चाहिये था। अिस बार तो मैं अुसे माफ करता हूं, लेकिन अगली बार अैसी घटना होगी तो अुसे सेगांव छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि मैं तो तुम्हारा सेवक बनकर यहां बैठा हूं, स्वामी बनकर नहीं। तुम लोग जिस रोज नापसन्द करोगे अुसी रोज मैं यहांसे चला जाअूंगा।" अिस घटनासे मुझे काफी दुःख पहुंचा।

मैंने बापूजीको लिखा कि "अिस प्रकारकी घटना तो खेती और चरागाहके बारेमें घटती ही रहती है। और लोगोंको नुकसान करनेकी और आपकी अुदारताका बेजा फायदा अुठानेकी आदत पड़ रही है। मैं अपने क्रोधको रोक नहीं सकता। . . . खास तौरसे मेरे खिलाफ वातावरण तैयार करनेके लिअे लोगोंको आपके पास लाया। अब मेरी भी अिच्छा सेगांवमें रहनेकी नहीं है। मैं कहीं बाहर जंगलमें चला जाना चाहता हूं।"

बापूजीने लिखा :

चि० बलवंतसिंह,

अुपाय अेक ही है। कलका कड़वा घूंट पी जाना। क्रोधको मारनेका प्रयत्न करते ही रहना। गोसेवाके खातिर क्या नहीं हो सकता है? अेकांतमें तो क्रोध हो नहीं सकता। जहां हो सकता है वहीं अुसे जीता जा सकता है ना? हम सेवक हैं। सेवक स्वामी पर हाथ कैसे अुठाये?

२९-७-'३८ बापूके आशीर्वाद

आश्रमकी खेतीकी व्यवस्था . . . के हाथमें थी और गोशालाका काम मैं देखता था। मेरी गायें कभी कभी खेतमें घुसकर फसल चर जाया करती थीं। . . . को लगता था कि मैं जान-बूझकर फसल चरवा देता हूं। अिससे हम दोनोंके बीच संघर्षके मौके आते रहते थे। अिस पर मैंने बापूजीको लिखा कि आप खेती और गोशाला दोनोंका काम . . .के हाथमें दे दें, तो यह हमेशाका झगड़ा मिट जाय। मेरे पत्रके अुत्तरमें बापूजीने लिखा :

चि० बलवंतसिंह,

सच्ची माता और झूठी माताकी बात सुनी है न? झूठी माताने कहा, 'अच्छा, लड़केके टुकड़े करो। अेक मुझे और दूसरा दूसरी

दावेदारनी है अुसे दे दो।' सच्चीने काजीसे कहा, 'अगर यहां तक नौबत आती है तो मेरा दावा मैं खींच लेती हूं, भले लड़केको यह औरत ले जाय। जिंदा तो रहेगा।' देखें, अब सच्चा गोसेवक कौन सिद्ध होता है। दोनों हो सकते हो या दोनों निकम्मे भी साबित हो सकते हो; या अेक सच्चा, अेक झूठा। मेरे नजदीक तीन प्रश्न हैं। 'कभी नहीं हारना भले साडी जान जावे।'

२०–९–'३८ बापूके आशीर्वाद

आश्रमकी गोशाला और खेतीके लिअे अगले सालके कामकी योजना बनानेके बारेमें मेरे और . . . के बीच कुछ मतभेद था। असलिअे मैंने बापूजीको सारा हाल लिखा। पत्र लम्बा और कड़ा था। साथी पर भी जो गुस्सा हो अुसे साथी पर न निकालकर बापूजी पर ही निकाले सिवा दूसरा चारा ही नहीं था। क्योंकि साथी पर गुस्सा करना या अुनके साथ झगड़ा करना हिंसामें गिना जाता था। लेकिन बापूजीके साथ झगड़ा करने और अुन पर गुस्सा करनेका हम अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। खास तौरसे मेरी तो लगाम खुली थी। बापूजीको कुछ भी लिखने या बोलनेमें मुझे झिझक नहीं होती थी। यह दोष मुझमें बचपनसे ही था। जब कभी मैं अपनी मां पर गुस्सा करता तो जो घरका बरतन हाथ लगता अुसे ही तोड़ डालता। मां मुझ पर गुस्सा न होकर दया करती, क्योंकि अुसकी मान्यता थी कि मेरे जन्मके लिअे अुसने जो तप या जादू-टोना कराया था अुसके असरसे मैं गुस्सेमें भान भूल जाता हूं। असमें मेरा दोष नहीं, जादू-टोनेका दोष मांको दिखाअी देता था। असी प्रकार बापूजी भी क्रोधके हाथमें मुझे फंसा देखकर मुझ पर दयाकी ही दृष्टि रखते थे। लेकिन अुसमें जो तथ्यकी बात होती थी अुसको स्वीकार करनेमें ही अुन्हें आनन्द होता था। बापूजीके नीचेके पत्रसे असकी झांकी मिलती है:

प्रिय बलवन्तसिंह,

रात्रिके १२–४५ बज रहे हैं। मेरे पास कलम नहीं है। अब मौका अच्छा है असलिअे सीसपेनसे मिलके कागज पर लिख रहा हूं। तुमको अुत्तर देनेमें विलंब हुआ है। मैं लाचार हूं। डॉक्टर थोड़े मुझको रात्रिको काम करनेकी अिजाजत देते हैं? आज तो कुछ कारणवशात् नींद नहीं आती असलिअे मैं तुमको लिख रहा हूं।

आशा करता हूं कि मेरे अक्षर पढ़नेमें मुश्किल नहीं होगी। देखता हूं संभव है तो कनुसे स्याहीसे लिखवाअूंगा।

मुझे यह दौरा खतम होने तक समय दो। यह मौसम जाय तो जाने दो। गरीब लोग क्या करते हैं? तुम्हारे लिखनेमें कुछ भी अनुचित नहीं है। मुझे अिस पर क्रोध तो है ही नहीं। तुम्हारी भाषाके लिअे मेरे मनमें आदर है, क्योंकि जैसा तुम्हारे दिलमें आता है अैसा ही तुम कहते, लिखते हो। बिलकुल संभव है कि मैं अंधेरेमें हूं, बल्कि ज्यादा संभव वही है; क्योंकि अिन चीजोंमें मुझे तो कुछ भी समझता नहीं है। मैंने अेक बात पकड़ ली है। तुम तो गोसेवक हो। तुम्हारेमें मेहनत अधिक, गोप्रेम अधिक है। . . . में शास्त्रीय ज्ञान अधिक है। अैसी हालतमें मैंने सोचा मैं वही चीज करूं जिसमें दोनों सम्मत हों। अैसा करते करते मुझे पता चल जायगा कौन सही कहता है। दरम्यान नुकसान जाय तो मैं सहन कर लूंगा।

२१-१०-'३८ बापूके आशीर्वाद

ये पत्र मैंने अिसलिअे दिये हैं कि पाठकोंको पता चले कि बापूजी छोटी छोटी बातोंमें किस तरहसे अुपदेश देते थे और हमारे जीवनको आगे बढ़ानेकी कोशिश करते थे। अुनके पास अेक बार जो ठहर गया अुसमें अगर कोअी नैतिक दोष नहीं हो या अगर कोअी नैतिक दोष अुत्पन्न हो जाय और अुसे स्पष्ट कबूल करके सुधारनेकी कोशिश करे, तो मनुष्यके अूपरी स्वभावके कारण बापूजी अुसका कभी त्याग नहीं करते थे। अिस प्रकार अुन्होंने बड़े-बड़े नेताओंसे लेकर छोटे-छोटे कार्यकर्ताओंको सहन किया और अुनको आगे बढ़नेका मौका दिया। आज अिसीलिअे तो छोटे और बड़े सब अुनके अभावको महसूस करते हैं। अुनके जैसा सबके जहरको पीनेवाला शिवरूप पिता मुझे दूसरा कोअी नजर नहीं आता।

गोशालाका चार्ज दिया

अन्तमें स्थिति यहां तक पहुंची कि मुझे गोशालाका काम छोड़ देना पड़ा। मैंने गोशालाका चार्ज दे दिया। अुस रोज न तो मैं आश्रममें आया, न गोशालामें ही रहा। रातको गोशालाके बाहर अेक खेतमें सो गया। सोनेसे पहले रोज सब गायों और बच्चोंके पास जाकर मैं अुनके दाने-पानीकी व्यवस्था देखता और छोटे बच्चोंके शरीर पर हाथ फेरकर देख लेता था कि

कहीं अुनके शरीरमें कोअी कांटा आदि तो नहीं है। क्योंकि जहां वे चरने जाते थे वहां पर कांटे और गोखरू बहुत थे। अिसलिअे कभी कभी गोखरू और बड़े बड़े कांटे अुनके शरीर पर मिलते थे। बड़ी बड़ी चिचड़ियां भी मिलती थीं। अुनको निकालते निकालते कभी कभी रातके बारह तक बज जाते थे। बच्चे मुझे चारों तरफ़से घेर लेते थे। कोअी अपनी गरदन मेरे सिर पर रख देता, कोअी पीठ पर और कोअी मेरे मुंहको चाटता था। अिसमें अुनका अपने आपको खुजवानेका आग्रह रहता था। मैं भी अुनके बीचमें अपने आपको भूल जाता था। वह दृश्य भाअी प्यारेलालजीको बहुत ही प्रिय लगता था। आज भी वे अुसकी याद करके मुग्ध हो जाते हैं। अुस रोज रातको गाय और बछड़े जोर जोरसे रम्भा रहे थे। मैं यह तो नहीं कह सकता कि अुनको मेरा ही वियोग सता रहा होगा। लेकिन मुझे अुनका वियोग जरूर सता रहा था। मुझे लग रहा था कि वे सब मुझे बुला रहे हैं, या अुनको कोअी कष्ट हो रहा है। मेरे दिलमें वैसा ही दर्द हो रहा था, जैसे किसी मांकी गोदसे बच्चेको छीन लेने पर मांको होता है; या बच्चेसे मांको अलग करने पर बच्चेको होता है। अपने दुःख और गायकी पुकारका लम्बा वर्णन मैंने बापूजीको लिखा। अपने लिअे दूसरे कामके बारेमें भी पूछा था। बापूजीका अुत्तर आया:

सेगांव
२३-१२-'३८

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पत्र मैं ध्यानसे पढ़ गया हूं। अच्छा है। लेकिन मैं देखता हूं कि गायोंके वियोगकी बर्दाश्त हो नहीं सकती है। अितना समझो कि यह वियोग अधिक सेवाके कारण ही होता है। मुझे अनुभव हो जावेगा, तुमको भी हो जावेगा। अभी भी जो हो रहा है अुसकी योग्यताका तुम्हारे दिलमें शक रहा है। यह ठीक बात नहीं है। क्योंकि शक है तो तुम्हारे त्यागमें ज्ञान नहीं है। कलकी तुम्हारी बातसे मैं यह समझा कि तुम्हारा दिल साफ हो गया है, और तुमने समझ लिया है कि जो हो रहा है वह सब तरहसे अुचित ही है।

तुम्हारी क्षुद्र वृत्तिका तो मुझे खयाल तक नहीं है। अहंकारकी मैंने अवश्य बात की थी, और वह भी मैंने तो स्तुतिके रूपमें कहा

था। मैंने तो यहां तक कहा कि तुम्हारी गोभक्तिका तो मुकाबला न पारनेरकर न और कोअी कर सकता है। न तुम्हारे जितनी मजदूरी पारनेरकर या और कोअी कर सकता है। तुम्हारा अनुभव भी काफी है, क्योंकि बचपनसे ही खेती और गोरू (गाय) का अनुभव मिला है। मैंने यह भी कहा कि अैसा होते हुअे भी तुम्हारा ज्ञान व्यवस्थित नहीं है, शास्त्रीय नहीं है। अिसलिअे पशु-विज्ञानमें आगे बढ़ नहीं सकते हो और तुम्हारा क्रोध तुमको और गायको भी खा जाता है। अिसके साथ मैंने पारनेरकरको अपना दिल देखनेका कहा, और अपनेमें आत्म-विश्वास लगे कि वह कब्जा ले सकता है तब ही कब्जा ले ले। अिस शर्तसे और अिस हालतमें कब्जा अुसको दिया है। नायकम्‌जीसे मैंने बात कर ली है। वह तुमसे बात कर लेंगे। अिस वक्त कोअी निश्चित रूपसे काम न लिया जाय। थोड़ा आराम लो, शान्तिसे जो हुआ है और हो रहा है अुस पर खयाल करो, थोड़ा वाचन-मनन करो और सहज रूपमें जो आश्रमका कार्य मिल जावे वह करो। चिमनलालसे मिलकर जिस कामके लिअे अुसको भीड़ होगी अुसे करो। तुम्हारे जैसे सेवकके लिअे हमारी संस्थामें कामकी कोअी कमी हो ही नहीं सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गोशालाका चार्ज देते समय गोशालाका हिसाब बनाकर मैंने बापूजीको भेजा। बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत वापिस करता हूं। अक्षर पहलेसे ठीक तो हैं परंतु सुधारके लिअे काफी जगह है। ठूंस ठूंसकर लिखना नहीं चाहिये। बायें बाजू पर हमेशा जगह होनी चाहिये। शब्द शब्दके बीचमें भी जगह रखी जाय। कलमकी नोक पतली होनी चाहिये। और यह सब सुधार भी गोमाताके निमित्त करना है, यह संकल्प करना। संकल्पकी महिमा तो जानते हो न?

जो हिसाब तुमने भेजा है वह तो अच्छा है ही। तुम्हारी प्रामाणिकताके बारेमें, तुम्हारी नि:स्वार्थ बुद्धिके बारेमें कभी शंका थी ही नहीं।

शांतिसे रहते हो वह अच्छा ही है। शरीर मजबूत कर लो। हिन्दी ज्ञानमें वृद्धि करो।

बारडोली, १८–१–'३९ बापूके आशीर्वाद

राजकोट-प्रकरण और बाका पत्र

अिसी समय राजकोटका प्रकरण शुरू हुआ। बापूजी अुसको निबटानेका प्रयत्न कर रहे थे। वहां काफी लोगोंको पकड़ लिया गया था। अुस समय श्री विजयलक्ष्मी पंडित भी सेवाग्राम आयी थीं। अुन्होंने बापूजीसे कहा कि राजकोटकी लड़ाअीमें शामिल होना तो मेरा भी धर्म है, क्योंकि राजकोट हमारा पुराना घर है। पं० रणजीतके पिता राजकोटके ही अेक प्रतिष्ठित नागरिक थे और अिस दृष्टिसे वे राजकोटको अपना स्थान मानती थीं।

बापूजीने कहा, "तुम्हारी दलील तो सही है, लेकिन अभी तुमको नहीं भेजूंगा। पहले बाको भेजूंगा और फिर मैं जाअूंगा। हो सकता है तुम्हारी भी जरूरत पड़े।"

बापूजीने बाको कुमारी मणिबहन पटेलके साथ राजकोट भेजा। बा और मणिबहनको गिरफ्तार करके जंगलमें अेक सरकारी बंगलेमें रखा गया। बा मणिबहनसे बापूजीको और आश्रमके लोगोंको पत्र लिखवाया करती थीं। मैंने भी बाको अेक पत्र लिखा। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र लिखा, अुससे अुनकी विशाल दृष्टिका दर्शन होता है और यह पता चलता है कि वे आश्रमकी प्रवृत्तियों और व्यक्तियोंसे कितना गहरा संबंध रखती थीं। मेरे सारे जीवनमें बाने सिर्फ अेक ही पत्र मुझे लिखा है, जिसे मैंने बड़ी श्रद्धासे सुरक्षित रखा है। मूल पत्र गुजरातीमें है। अुसका हिन्दी अनुवाद अिस प्रकार है:

मार्फत कौंसिलके प्रथम सदस्य,
राजकोट,
२७–२–'३९

भाअी बलवंतसिंह,

तुम्हारा पत्र कल मिला। पढ़कर आनंद हुआ। तुम तो वहां आनन्दमें हो। कुछ न कुछ काम तो चलता ही होगा। तुम्हारा गायों पर बड़ा प्रेम है, कभी अीश्वर फल देगा ही।

विजया तो ससुराल गओी। भंसालीभाओी वहां हैं, मुन्नालाल है। सब आनंदसे रहना।

मणिबहनके पत्र वहां रोज आते हैं। तुम अुन्हें पढ़ते ही होगे। मैं अुससे लिखवाती हूं। राजकुमारीको अंग्रेजीमें लिखती है। मि० कैलनबैक वहां बीमार पड़ गये। दो तीन दिन तुम्हें खूब तकलीफमें डाल दिया। परन्तु अब ठीक हो गये हैं। दो चार दिनमें निर्बलता भी चली जायगी।

मैं आअूंगी तो मुझे नाणावटीके बिना बहुत सूना लगेगा। अब गांवमें सबेरे पाठशाला देखने कौन जाता है? किसीको सौंपा तो होगा। देखें, काकासाहबके पास अुनकी कैसी तबीयत रहती है। काकासाहबको खूब प्रवास करना पड़ता है। रातको तीन चार बजे अुठने व लिखानेका काम काकासाहबके पास खतम नहीं होता। आदमी बिलकुल थक नहीं जाता तब तक लिखाया ही करते हैं।

आज तो बापूजी यहां आ रहे हैं। देखें, क्या होता है। कल शामको नारणदास मिलने आये तब खबर मिली कि बापूजी आज आ रहे हैं।

तुम लोगोंका प्रेम मुझ पर बहुत है। ओीश्वर अिसे अैसा ही बनाये रखे तो बस है।

हम सब यहां मजेमें हैं।

बाके आशीर्वाद

नाणावटीजी बाको रामायण पढ़ाते थे और गांवके स्कूल वगैराका निरीक्षण करते थे। बादमें काकासाहबने अपने कामके लिअे अुन्हें ले लिया था। बाका अुन पर बहुत प्रेम था।

अुस समय मि० कैलनबैक सेवाग्राममें थे। अुनकी अुम्र साठसे अूपर थी, लेकिन वे अेक नौजवानकी तरह आश्रमके सब कामोंमें हिस्सा लेते थे। अुनको बगीचेका बड़ा शौक था, खास तौरसे फलके पेड़ोंकी कलम आदि करनेका। कैंची लेकर वे घंटों बगीचेमें खर्च करते और दक्षिण अफ्रीकाके अपने अनेक अनुभव सुनाते। मैं अंग्रेजी नहीं जानता था और वे हिन्दी नहीं जानते थे, अिसलिअे हमारी सब बातें अिशारोंसे होती थीं। बापूजीके प्रति अुनकी

श्रद्धा अुनकी हरअेक हलचल, बोलचाल और आदरपूर्ण भावोंसे स्पष्ट झलकती थी। बड़े ही प्रेमी और अुदार पुरुष थे। वे बीमार पड़े तो बापूजीने अुनकी बड़ी सेवा की। यह सेवा खास तौरसे लीलावतीबहनको सौंपी गअी थी। अुनकी सेवासे वे बहुत संतुष्ट हुअे थे। अेक तरहसे आश्रम-जीवनमें वे घुलमिल गये थे। आश्रमसे वे दक्षिण अफ्रीका लौट गये। वहां जाकर कुछ समयके बाद फिर बीमार पड़े और अिस दुनियासे चले गये।

लाहौर जानेकी तैयारी

पू० बापूजीने ता० १८–१–'३९ के पत्रमें संकल्पकी महिमाकी ओर संकेत किया था। शायद अुस समय तो मैंने अुसको अितना नहीं समझा था, लेकिन आज जब अुनका नीचेका पत्र मेरे सामने आता है तो पता चलता है कि अुन्होंने मेरे लिअे क्या संकल्प किया था। बीचमें मैं गोसेवासे करीब करीब अलग हो गया था और मनमें यह भी तय कर लिया था कि अब अिसमें नहीं पड़ूंगा। शायद अिसका प्रसंग भी नहीं आता। लेकिन अेक अकल्पित घटना घटनेसे मैं आज यहां सीकरमें गोमाताकी सेवाका ही संकल्प लेकर बैठा हूं। मैं नहीं जानता कि गोमाताकी मुझसे कितनी सेवा बन सकेगी, लेकिन बापूके अिस वचन पर विश्वास करके धीरजसे आगे बढ़नेका प्रयत्न कर रहा हूं। वह वचन यहां देता हूं:

चि० बलवन्तसिंह,

बड़े शब्दोंके बीच ज्यादा अन्तर होना चाहिये। कैसी भी सुधारणा काफी हुअी है। अैसा ही चलता रहेगा तो अच्छा ही होगा। मेरी चली तो तुम सच्चे और कुशल गोसेवक होनेवाले हो।

यह खत यहीं बारडोली होकर आज आया।

३–३–'३९ बापूके आशीर्वाद

सचमुच मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि मुझमें बापूके अिन शब्दोंको पूरा करनेकी शक्ति न होते हुअे भी मेरा दिल आज गोसेवाके विचारोंसे ओतप्रोत है। अुसमें कुशलता कितनी आयी है, यह तो मेरे कामसे दूसरे लोग ही आंक सकते हैं। लेकिन मेरा दिल गोसेवाकी बड़ी बड़ी अुड़ानें भरता है। कभी कभी तो मनमें यह विचार आता है कि मैं मनुष्य-शरीरको छोड़कर गो-शरीर ही क्यों न धारण कर लूं। या किस तरहसे सब लोगोंके

अंदर पैठकर गोमाताकी सेवाके भाव भर दूं। सचमुच यह बापूके अुस शुभ संकल्पका ही फल है, जो अुन्होंने मेरे लिअे किया था। बड़ोंके आशीर्वादकी शक्तिमें मेरा विश्वास बहुत बढ़ गया है।

अुसी समय बापूजी मुझे पंजाबमें . . . की डेरीमें अनुभवके लिअे भेजना चाहते थे और अुनके साथ लिखा-पढ़ी कर रहे थे कि मैं कब आअूं? अुधर श्री बालकोबाजी स्वास्थ्यलाभके लिअे पंचगनी गये थे। अुनके लिअे अेक सेवककी जरूरत थी। अिस बारेमें पत्र लिखकर मैंने बापूजीसे पूछा।

बापूजीका जवाब आया :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। डेरीके बारेमें सम्मति चार दिन पहले आ गअी है। मैंने तो पंचगनी जानेका तार बनाकर . . . को दिया था, लेकिन वह तार भेजा ही नहीं गया, अैसा आज ही जाना। क्या करूं जैसा है अैसा हमारा कुटुम्ब है। अिस अव्यवस्थाके लिअे मैं निजी जिम्मेदारी प्रतिक्षण महसूस करता हूं। लेकिन मेरा यह दोष अब निकल नहीं सकेगा।

अब तुमको पंचगनी नहीं भेजूंगा। लाहौर जानेकी तैयारी करो। . . . ने सब प्रबंध करनेका कबूल कर लिया है। कब जाओगे? मुझे तारीख भेजो तो मैं खबर भेज दूंगा।

बम्बअी, २६–६–'३९　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद

१७

मेरे गोसेवा-सम्बन्धी प्रवास

मुझसे बापूजीकी आशायें

मैंने ता० २२–१२–'३८ को गोशालाका चार्ज . . . को सौंप दिया। गोशाला छोड़ते समय मुझे और दूसरे काम करनेवालोंको खूब दुःख हुआ। कुछ लोग रोने तक लगे। लेकिन दिल कड़ा करके मैंने विदा ली। दूसरे दिन सवेरे घूमते समय बापूजीने कहा, "देखो, मैंने . . . से साफ कह दिया है कि बलवन्तसिंह सब लेनेको तैयार है और अुसके हाथसे गोशालाका न तो आज तक कुछ बिगड़ा है, न आगे बिगड़नेका अन्देशा है। अगर तुम अपने अूपर भरोसा रखते हो तो जो निर्णय हुआ है अुसे मैं बदलना नहीं चाहता। अैसा समझो कि अब नये सिरेसे सब काम शुरू हुआ है तब तुमको दिया गया है। अिसमें तुम्हारी परीक्षा हो जावेगी। यह सब मैंने . . . से कहा। तुमसे यह कहना है कि जब तक तुम्हारे हाथमें गोसेवाका काम सीधा न आवे तब तक तुम बाहर जाकर अपना गोसेवाका ज्ञान बढ़ाओ। गायका शास्त्र तो हमारी भाषामें है ही नहीं। यह दुःखकी बात है। अब तक हम अैसे आदमी निर्माण नहीं कर सके हैं जो कुछ लिख सकें। तुमको मैं लाहौर भेजनेकी बात सोच रहा हूं। मैंने राजकुमारीको लम्बा पत्र लिखा है। वह . . . को लिखेगी। अुनका जवाब आने पर तुमको जाना होगा।"

मैंने पूछा, "आप मुझसे क्या आशा रखते हैं और मेरा किस प्रकारसे अुपयोग करना चाहते हैं?" बापूजीने कहा, "जितना तुम्हारा अनुभव-ज्ञान है अगर अुसमें शास्त्रीयता भी आ जाय तो अच्छा हो। प्रवासमें तुम कितना ज्ञान पा सकोगे अिसके अूपर आधार है। अगर तुम्हारा ज्ञान अितना हो जाय कि किसी भी जानकार आदमीके सामने गोसेवाकी बात अिस प्रकारसे रख सको जो अुसके गले अुतर जाय और मैं जहां चाहूं वहां तुम्हें भेज सकूं और तुम सबके साथ मिलजुल कर काम कर सको, तो मेरा काम निबट जायगा। मैं देख रहा हूं कि तुम्हारे स्वभावमें परिवर्तन

तो काफी हुआ है, लेकिन अभी और भी करना होगा। मैं तो तुमसे अखिल भारतीय विशेषज्ञकी हैसियतसे सारे हिन्दुस्तानकी गोसेवा करा लेना चाहता हूं। मेरे पास पैसे तो काफी पड़े हैं। परन्तु अुनका अुपयोग कैसे करूं? मेरे पास अेक भी आदमी नहीं। दिल्लीकी गोशाला (कैटल ब्रीडिंग फार्म) के लिअे घनश्यामदासने कहा था कि अगर आप कहें तो मैं अुसमें दो-तीन लाख रुपये लगानेको तैयार हूं। लेकिन आदमी आपको ही देना होगा। तो मैं आदमी कहांसे दूं? जब पारनेरकर धुलियामें काम करता था तब अुन्होंने पारनेरकरकी मांग की थी। तब मैं देनेको तैयार नहीं था। अब तो वह मेरे ही पास रहना चाहता है और मुझे भी यही पसन्द है। यों तो हिन्दुस्तानमें गोसेवा-विशारद बहुत पड़े हैं, लेकिन अुनसे मेरा काम नहीं चलेगा। मेरा काम तो वही कर सकता है, जिसने मेरी सब बातोंको अच्छी तरह समझा है। गुजरातमें भी गोसेवाका काम अधूरा ही पड़ा है। अिसीलिअे मैंने तुमसे कहा था कि भले खाली बठना पड़े लेकिन यहीं पड़े रहो, तो मैं कुछ न कुछ काम ले ही लूंगा। अगर आदमीमें तेजोबल है तो दूसरी चीजें तो आ ही जाती हैं।" अिस सिलसिलेमें बापूजी बहुतसे लोगोंके दृष्टान्त दे गये, जिनको अुन्होंने अपने कामके लिअे अयोग्य पाया था। फिर मुझसे बोले, "तुमको अेक और भी परीक्षा देनी होगी। तुम्हारा और पारनेरकरका जो अेक-दूसरे पर अविश्वास है अुसे मिटाना होगा। आज तुम अुसके काममें बिलकुल विश्वास नहीं करते और न वह तुम्हारेमें। जब तुम भी शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लोगे तो वह भी समझ जायगा और तुम भी अुसके कामकी कीमत समझ सकोगे।" मैंने कहा, "आपकी बात बिलकुल ठीक है।" बापूजीने कहा कि तुमको थोड़ी अंग्रेजी भी सीखनी होगी। मैंने कहा, "मुझे स्वयं अंग्रेजी सीखनेकी अिच्छा नहीं है, लेकिन आप चाहेंगे तो सीखना कठिन न होगा।" बापूजीने कहा, "यह तो मैं जानता हूं।"

दूसरे दिन फिर घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा, "आपकी बात पर मैंने खूब विचार किया है। मुझे अैसा नहीं लगा कि मैं पारनेरकरजीके प्रति मनमें अीर्ष्या या द्वेष रखता हूं या अुनके काममें बाधक बना हूं। यह बात सच है कि मुझे अुनकी कार्य-पद्धतिमें विश्वास नहीं है।" बापूजी बोले, "यह तो मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अविश्वास नहीं है। मैं यह

भी जानता हूं कि अुसके पास तुम्हारे जितना अनुभव-ज्ञान और श्रम करनेकी शक्ति नहीं है। लेकिन अुसके पास शास्त्रीय ज्ञान है जो तुम्हारे पास नहीं है। हो सकता है तुम्हारी बात ही ठीक हो। क्योंकि मैं तो अिस विषयमें कुछ भी नहीं जानता। मैंने वीरावाला*के साथ जो प्रयोग किया है वह करने जैसा है, क्योंकि मैं अहिंसाका जो अर्थ करता हूं अुसके अनुसार सांप भी मेरे हाथमें खेलना चाहिये। वह मेरे स्पर्शमात्रसे यह समझ जायगा कि मेरा अिरादा अुसको चोट पहुंचानेका नहीं है। परन्तु अुसी सांपको छूनेकी मैं दूसरेको अिजाजत नहीं दूंगा। अहिंसाका यह अर्थ नहीं है कि हिंसक समान रूपसे सबके लिअे अहिंसक बन जाय। परन्तु जिसने अुसके साथ अहिंसाका बरताव किया हो अुसके लिअे तो वह अवश्य अहिंसक बन जायगा। वीरावाला साधु बन जायगा अैसा नहीं है। लेकिन वह मेरे साथ जरूर सीधा चलेगा। मेरा मतलब यह नहीं है कि दुष्टकी दुष्टताको नहीं देखना। मेरे जीवनमें अनुचित सहिष्णुताने प्रवेश करके मेरे कामको खूब नुकसान पहुंचाया है। अलीभाअियोंके कड़वेसे कड़वे भाषणोंका मैंने कुछ भी जवाब नहीं दिया। अुससे आज मुझे नुकसान हो रहा है। आज मैं कड़वेसे कड़वे जवाब देता हूं। अगर तुम्हारी बात सच होगी तो मुझे भी पता चल जायगा। मेरा काम अिसी प्रकार चलता है। अगर तुम्हारे दिलमें अैसा लगे कि बापूने कितना अन्याय किया, तो मुझे छोड़कर भाग सकते हो। दुनियामें तुम्हारे लिअे कहां जगह नहीं है? लेकिन अगर तुमने यह समझकर धीरज रखा है कि बापू जो कर रहे हैं कुछ सोच कर ही कर रहे ह, तो मेरे पास बहुतसा काम पड़ा है। हिन्दी पढ़ना तो है ही, अुर्दू भी पढ़ना है और अंग्रेजी भी पढ़ना है।"

तारीख २९–४–'३९ से ६–५–'३९ तक वृन्दावन (चम्पारन, बिहार)में गांधी-सेवा-संघकी सभा थी अुसमें मैं गया। वहां भी बापूजीसे कुछ न कुछ चर्चा होती रही। अेक रोज बापूजीने कहा, "मैं तुमसे बड़ी आशा लगाये बैठा हूं। गोसेवाका काम बड़ा कठिन है। अुसके लिअे बड़े शुद्ध मनुष्य चाहिये, धीरज चाहिये, सहनशीलता चाहिये। अुसका पूरा पूरा ज्ञान चाहिये। यह सब तुममें हो अैसी आशा लगाये बैठा हूं। मैं देख रहा हूं कि ये सब गुण तुममें बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी बहुत कुछ करना है। मेरे

---

* बापूजीके राजकोटके अपवासके समय राजकोट राज्यके दीवान।

सामने गोसेवाका पहाड़ पड़ा है, लेकिन आदमी नहीं हैं। तुम जहांसे भी गोसेवाका ज्ञान प्राप्त कर सकते हो वहां हिन्दुस्तानमें कहीं भी जानेकी और जितना भी खर्च करना हो वह करनेकी तुमको छूट है।" मैंने कहा, "यहांसे सेवाग्राम लौटते समय अिलाहाबाद, दिल्ली, हिसार और दयालबागकी गोशालायें देखते जानेका मेरा विचार है।" बापूजीने सबके नाम पत्र लिख दिये और मैं सब गोशालायें देखता हुआ सेवाग्राम पहुंचा।

लाहौरकी गोशालाका अनुभव

अिसी बीच जुलाअीमें लाहौरके प्रवासका कार्यक्रम बना। बापूजीने मुझे लाहौर जानेका आदेश दिया। बापूजी यात्रामें थे। मैं दिल्ली जाकर अुनसे मिला। अुन्होंने कहा कि ९ तारीखको तुम्हें लाहौर पहुंचना है। वहां तुम्हारी सब व्यवस्था हो जायगी। . . . तुमको सब प्रकारका ज्ञान देनेकी कोशिश करेंगे। मैंने पूछा कि मुझे वहां कितने दिन रहना होगा। बापूजीने कहा, "मैंने छह मासका सोचा है, लेकिन तुमको लगे कि अधिक समय रहना चाहिये तो दो-चार वर्ष भी रह सकते हो।" फिर वहां किस तरह रहना होगा, अिस विषय पर काफी समझाया। मैंने स्टेशन पर बापूजीको प्रणाम किया। वे बोले, "देखो हारना नहीं।" मैंने अुत्तर दिया, "बापूजी, हारनेसे तो मेरी लाज ही चली जावेगी।" फिर बापूजीने कहा, "जाओ और गोमाताका अच्छा ज्ञान प्राप्त करके जल्दी सेवाग्राम पहुंचो। वहांसे सब हाल मुझे लिखते रहना।"

९ जुलाअीको मैं लाहौर स्टेशन पर अुतरा। . . . भी अुसी दिन लाहौर पहुंचे थे। अुन्होंने स्टेशन पर मुझे तलाश किया, परन्तु हम लोग मिल न सके। क्योंकि वे किसी जटाधारी पुरुषकी खोजमें थे और मेरा सिर घुटा हुआ था। आखिरकार मैं जैसे-तैसे अुनकी गोशालामें पहुंचा। रास्तेमें . . . मुझे मिले भी थे, लेकिन अेक-दूसरेकी पहचान न होनेसे वह मिलना निरर्थक रहा। गोशाला पर जाकर मैंने देखा कि वहां न तो मेरे ठहरनेका प्रबन्ध था और न खाने-पीनेका। कठिनाअीसे मैंने स्नानादि किया। खाना बनानेके साधन बड़ी कठिनाअीसे शामको मिले। कुछ समय बाद . . . आये तो अुनसे मेरी बातें हुअीं। भोजनके प्रबंधके बारेमें अुन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की। अेक खराब-सी जगहमें मैंने जैसे तैसे खाना बनाया। जब मुझे ठहरनेके लिअे कमरा बताया गया तब तो मै दंग रह गया।

क्योंकि कमरेमें पानी भरा था और आसपास कीचड़ था। मैंने अुस कमरेमें ठहरनेसे अिनकार कर दिया। सारी गोशाला ही कीचड़शाला बनी हुअी थी। सब जानवर कीचड़में खड़े थे। सिर्फ दूध निकालनेकी जगह पक्की थी और वहां कीचड़ नहीं था। गोशालामें अठारह भैंसें भी थीं। मेरे आश्चर्यका पार नहीं रहा, जब मैंने देखा कि दूध निकालनेवाले ग्वाले दूध निकालते समय थनोंमें साफ पानी या चिकनाअी न लगाकर थूकका अुपयोग करते हैं। अिस गन्दी प्रथाकी कल्पना मुझे स्वप्नमें भी नहीं थी। रातके समय जब मैंने फूंका-प्रथाका शर्मनाक दृश्य देखा तो दुःखसे मेरा सिर फटने लगा। अेक भैंस कुछ गड़बड़ कर रही थी। अुसके योनिद्वारमें अेक बांसकी पोली नली डालकर अुसमें जोरसे फूंक मारी गअी। थोड़ी ही देरमें भैंस लाचार बनकर खड़ी हो गअी और अुसने सारा दूध थनोंमें अुतार दिया। बापूजीने यही प्रथा कलकत्तेमें देखी थी और अुससे दुःखी होकर दूधका त्याग किया था। मैंने फूंका-प्रथाके विषयमें पढ़ा तो था, लेकिन समझमें नहीं आया था। अब आंखों देखकर मैं हैरान हो गया।

अभी मेरे नसीबमें अेक और भी दुःखद घटना देखनी शेष थी। मैं रातको सोनेका प्रयत्न कर रहा था तब अेक पाड़ेकी करुणाजनक आवाज मेरे कान पर पड़ी। मैं अुठकर अुसके पास गया तो देखा कि अेक नवजात पाड़ा भूखसे तड़प रहा है। रातमें अुसे खिलानेके लिअे मेरे पास कुछ भी नहीं था। सुबह लोगोंसे मालूम हुआ कि वहां यह प्रथा थी कि गाय या भैंसके ब्याते ही अुसका बच्चा अुससे अलग कर लिया जाता था। गायकी बाछीको और भैंसकी पाड़ीको तो दूध पिलाकर पाल लेते थे, लेकिन गायके बछड़ेको किसी पालनेवालेको मुफ्तमें दे देते थे। वह बेचारा बैल बनानेके लोभसे अुसे कुछ न कुछ दूध, छाछ या पानीमें घुला आटा पिलाकर बचानेकी कोशिश करता था। तो भी आधेसे ज्यादा बछड़े मर जाते थे। भैंसके पाड़ेको तो सीधी मौतकी सजा ही दी जाती थी। पैदा होते ही अुसे गोशालाके बाहर फेंक दिया जाता था, जहां वह दो-तीन दिनमें तड़प-तड़पकर मर जाता था। मैंने गोशालाके मैनेजरसे अुसे दूध पिलानेकी बात की तो अुसने आनाकानी की। तब मैंने कहा, "अुसे मेरे हिस्सेका दूध पिला दो, क्योंकि अिस प्रकारका हत्याकांड मुझसे देखा नहीं जायगा।" अिस पर वह बेचारा धर्मसंकटमें पड़ गया। अन्तमें अुसने दूध पिलाना कबूल

किया। ग्वाले कहने लगे कि आत्माजी (महात्मा कहनेकी कोशिशमें वे आत्माजी कहते थे) यहां तो यही पाप चलता है। यह पाड़ा आपकी कृपासे बच जाय तो खुदाका शुक्र मानना चाहिये। यह सब देखकर मैं विचारमें पड़ गया कि 'आये थे हरिभजनको ओटन लगे कपास'। बापूजी समझेंगे कि मैं गोसेवाका विशारद बन रहा हूं और यहां मेरी गांठकी पूंजी भी जानेका खतरा है। मैंने बापूजीको सारा हाल विस्तारसे लिखा और पूछा कि मैं यहां सीखूं या अिनको सिखाअूं? जवाबमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत बहुत अच्छा है। सब साफ साफ लिखा है। अैसा ही चाहिये। कुछ तो सीखोगे, लेकिन काफी सिखाओगे। थोड़े ही दिनोंमें तुम्हारा मार्ग साफ हो जायगा। . . . का मुझ पर खत आज ही आया है। वे अपने बड़े फार्म पर भी तुमको भेजना चाहते हैं। . . . के हिसाबसे तुमको करीब करीब २।। महीने लगेंगे। देखें क्या होता है।

गायका दूध अलग रखकर अुसमें से मक्खन निकाल लेना। दही बनाकर शीघ्र ही निकालोगे। धैर्यसे सब कुछ ठीक हो जायगा।

तुम्हारा खत राजकुमारीको भेजूंगा। वहांसे आश्रम जायगा और वहांसे सुरेन्द्रको। . . . को तो कुछ भी नहीं लिखूंगा।

बा, प्यारेलाल और सुशीला वहांसे शुक्रवारकी गाड़ीमें रवाना होंगे। यह खत अुसके बाद मिलेगा।

अेबटाबाद, १२–७–'३९ बापूके आशीर्वाद

अिस विषयको लेकर . . . से मेरी काफी लम्बी चर्चा और पत्र-व्यवहार चला। आखिरकार अुन्होंने सरलतासे स्वीकार किया कि भाअी हम तो व्यापारी आदमी हैं। सब कुछ नफा-टोटा देखकर करना होता है। अेक बच्चेको पालनेके लिअे अेक सौ पचास रुपया खर्च होता है। वह कहांसे आवे? भैंसें मुझे भी पसन्द नहीं हैं। लेकिन ग्राहकोंको खुश रखनेके लिअे रखनी पड़ती हैं। धीरे धीरे अुन्हें निकालनेका प्रयत्न करना है।

मॉडल टाअुनमें मेरी प्रवृत्ति

मैं कुछ न कुछ सीखनेका प्रयत्न तो करता ही था। लेकिन मेरी चरखेकी बात मॉडल टाअुनमें फैल गअी। गोशालाका प्रधान कर्मचारी

मॉडल टाअुनमें रहता था। अुसने कुछ लोगोंसे मेरा परिचय कराया। अिसलिअे चरखा चलाना और धुनना सिखाना भी मेरा अेक काम हो गया। श्री चुन्नीलालजी कपूर सी० आअी० डी० पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। अुनकी लड़की कान्ताकुमारी मेरी प्रचारिका बनी। वह खुद कातना-धुनना सीखती और दूसरी लड़कियोंको भी बुलाकर लाती या अुनके घरों पर मुझे ले जाती। अिस प्रकारसे मेरा परिचय बढ़ता ही गया।

अेक रोज मैं वहांकी भंगीबस्तीमें गया, तो बस्तीका हाल देखकर मुझे अत्यंत दुःख हुआ। अेक छोटेसे कमरेमें आठ आदमी अेकके अूपर अेक तीन खाटें बिछाकर रहते थे। न वहां पानीका प्रबंध था न रोशनीका। घरोंके सामने कीचड़ ही कीचड़ था। मॉडल टाअुनके संस्थापक दीवानचन्दजी तथा पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री चुन्नीलालजीसे मैंने हरिजनोंकी करुण कथा कह सुनाअी। दोनोंने जाकर हरिजन-बस्ती देखी तथा अुसी दिनसे अुसमें सुधार करवानेकी खटपटमें लग गये। और भी कअी भाअी-बहनोंको मैं वहां ले गया। सब लोगोंने कमेटी पर जोर डालकर भंगियोंको सुविधा दिलानेके लिअे कमर कस ली। रात्रि-पाठशाला चलानेका भी निश्चय हुआ। अुसमें चरखा चलवानेके लिअे भी विचार किया गया। चरखोंके लिअे कुछ चन्दा भी हुआ। रामप्यारीबहनने बापूजीके पास रहनेकी अिच्छा बताअी। मैंने अुनको आशादेवी और बापूजीसे पत्रव्यवहार करनेकी राय दी। आजकल वे बहन माता रामेश्वरी नेहरूके साथ काम कर रही हैं। अेक नौजवान लड़का सूरजप्रकाश भी सेवा करनेको तैयार हुआ। बहन कान्ताकुमारी, सुशीलाकुमारी, विमला-कुमारी, अुषाकुमारी और महेन्द्र कौरने कातने, धुनने और हरिजन बहनोंकी सेवामें दिलचस्पी बतायी। मॉडल टाअुनमें गांधी-जयंती पर खादी-प्रदर्शनी की गअी तथा खादी बेचने और हरिजन-फंड जमा करनेका कार्यक्रम बना। डॉ० गोपीचन्दजी भार्गवसे मिलकर खादी-प्रदर्शनीका प्रबंध करवाया। हरिजन-फंडमें ३०० रुपये मिले। जयंतीके दिन काफी अच्छी सभा हुअी। मॉडल टाअुनके जीवनमें अैसा यह पहला ही कार्यक्रम था। लोगोंमें बड़ा अुत्साह था। लोगोंने मुझे वहां दो-तीन मास रहनेको कहा, लेकिन यह संभव नहीं था।

शुद्ध दूधकी व्याख्या

अेक दिन अेक रायबहादुर साहबने मुझे भोजनके लिअे प्रेमभरा आग्रह किया। मैंने कहा कि मेरे भोजनमें बड़ी खटपट है। आप अिसका विचार छोड़

दीजिये। जब अुन्होंने पूछा तो मैंने बताया कि मेरे लिअे अुबली भाजी और गायका घी-दूध चाहिये। वे बोले यह तो सीधी-सी बात है। रोज ग्वाला मेरे घर गाय लाकर दूध निकाल जाता है और भाजी अुबालना तो अेक मामूली-सी बात है। मैंने अुनके घर भोजन करना कबूल किया। दूसरे दिन सबेरे जब मैं घूमने गया तो रायबहादुर साहबके दरवाजे पर अेक ग्वाला दुबली-सी गाय लेकर आया। मैंने सहज ही पूछा कि गाय कहां ले जा रहे हो? वह बोला कि रायबहादुर साहबके यहां दूध निकालकर देना है। गायका हाड़-पिंजर देखकर मेरी आंखें खुल गअीं। अैसी गायके दूधको लोग शुद्ध भले कहें, लेकिन असलमें तो वह गायका खून ही है। मेरे मनमें शुद्ध दूधकी व्याख्या स्पष्ट हो गअी। जिस गायको पेटभर चारा, जरूरी दाना, स्वच्छ पानी, रहनेको स्वच्छ जगह तथा प्रेमी पालक मिला हो और जिसके बच्चेकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो, जिसे किसी प्रकारका रोग न हो और जिसे देखकर मन प्रसन्न होता हो, अुसी गायका दूध शुद्ध माना जाना चाहिये। कैसी भी गायके थनोंमें से जो सफेद चीज निकलती है वह दूध नहीं होता, बल्कि अुसके खूनका ही सफेद रंग हो गया होता है। यह बात मैंने राय-बहादुर साहबको और दूसरे लोगोंको समझाअी और अुस गायका दूध पीनेसे अिनकार कर दिया। अुसके बाद मेरी गोसेवा और जनसेवा साथ साथ चलने लगी। शायद चलते समय बापूजीने मुझे रहन-सहनके बारेमें यही समझानेकी अिच्छासे कुछ कहा होगा। अुनके शब्दोंको तो मैं भूल गया था, लेकिन अुनका अर्थ गुप्त रूपमें मुझसे अपना काम करा रहा था।

अेक भक्त बहनसे भेंट

मेरे लाहौर-निवासके अर्सेमें लायलपुरके अेग्रीकल्चरल कॉलेजमें, जो भारतका अुच्च कोटिका कॉलेज माना जाता था, 'अेस्टेट मैनेजर क्लास' का १५ दिनका वर्ग चला था। अुसमें सारे पंजाबके फार्मोंके मैनेजर ट्रेनिंग लेने आये थे। मैंने भी अुस वर्गके लिअे अर्जी भेजी थी जो मंजूर हुअी थी। अिसलिअे मैंने १५ दिनका वह कोर्स पूरा किया और अुसमें अच्छे नम्बरसे पास हुआ। अब यदि कोअी मुझे निरक्षर कहे तो अुस पर बेअदबीका दावा करनेके लिअे मेरे पास लायलपुर अेग्रीकल्चरल कॉलेजका प्रमाणपत्र मौजूद है!

कॉलेजके विद्यार्थियों और प्रोफेसरोंमें चरखा मेरा प्रचारक बना। यों तो जितने लोग अुस कोर्समें आये थे सबके ही साथ मेरा अच्छा परि-

चय हो गया था। लेकिन सरदार गुरुदयालसिंहजी मानने मुझे अपने गांव मानावाला चलनेका आग्रह किया, जो शेखूपुरा जिलेमें था। वहां अुनकी अच्छी खेती चलती थी। सरदारजी फौजमें कप्तान थे। लेकिन अुन्हें खेतीका बड़ा शौक था। मैं अुनके साथ वहां गया। अुनकी खेती देखकर तो आनन्द हुआ ही, लेकिन अुनकी छोटी बहन गुरुवचन कौरसे मिलकर बड़ी खुशी हुअी। दरअसल सरदारजी मुझे अिन बहनसे मिलानेकी ही गरजसे ले गये थे। वे बहन प्रज्ञाचक्षु थीं। अुन्होंने गुरुमुखी और हिन्दीकी कअी परीक्षायें दी थीं। बड़ी ही विवेकी, सात्त्विक और बुद्धिमान थीं। अपने खर्चसे अेक कन्याशाला चलाती थीं। कअी लड़कियां अुनके पास ही रहती थीं। अुनमें हरिजन लड़कियां भी थीं। छूतछात बिलकुल नहीं थी। नेत्रहीन होने पर भी अुत्तम सूत कातती थीं। भजन-कीर्तन तथा गुरुग्रंथ साहबका पाठ नियमित चलता था। अुनके आसपासका वातावरण किसी अृषिके आश्रम जैसा लगता था। बहनके आग्रहसे मैं दो तीन रोज वहां ठहरा। वहांसे गुरु नानक साहबके जन्मस्थान ननकाना साहब भी गया। बहनकी बापूजीसे मिलनेकी बड़ी अिच्छा थी। वे सेवाग्राम दो बार आअीं और बड़े भक्तिभावसे थोड़े दिन रहकर चली गअीं। बापूजीको अुनके विचार और स्वभाव बहुत पसंद आया। सरदार गुरुदयालसिंह भी सेवाग्राम आकर बापूजीसे मिले। सी० आअी० डी० ने अुनके खिलाफ रिपोर्ट की। जब अुनसे जवाब तलब हुआ तो अुन्होंने कहा, मैं सरकारका वफादार नौकर हूं। अगर अुसमें कहीं फर्क पड़े तो सरकार मुझसे जवाब तलब कर सकती है। लेकिन अपने धार्मिक मामलेमें मैं स्वतंत्र हूं। मैं महात्माजीको धार्मिक महात्मा मानता हूं। अुसी भावसे अुनके दर्शनके लिअे गया था। और जब मौका मिलेगा आगे भी जाअूंगा। अिसके लिअे सरकारको जो करना हो सो कर सकती है। अुनकी दृढ़ता देखकर सरकार चुप हो गअी। पाकिस्तान बनने पर सारा मानावाला खाली करना पड़ा। भूपेन्द्र मान अिनके छोटे भाअी हैं जो संसदके सदस्य और पेप्सु सरकारमें मिनिस्टर भी रह चुके हैं। बहन गुरुवचन कौरसे और अुनके सारे परिवारसे आज भी मेरा वैसा ही प्रेम-सम्बन्ध है।

आजकल यह परिवार बल्कि सारा मानावाला गांव ही फतेगढ़ साहब, जहां गुरु गोविन्दसिंहके जिन्दा बच्चोंको दीवारमें चुनवाया गया था,

तलानियामें रहता है। बहन गुरुवचन कौरकी कन्याशाला और कन्या-छात्रालय वहां भी चलता है।

अेक आदर्श गोसेवकके दर्शन

जब मैं पंजाबकी गोशालाओंका अनुभव लेते हुअे लाहौरसे मांटगुमरी पहुंचा, तब वहांके कुछ मुसलमान भाअियोंने अलहदाद फार्म देखनेका आग्रह किया। यह स्थान मुलतान जिलेकी जहानिया तहसीलमें है। मैं वहां पहुंचा और अलहदादजीसे मिला। अुनसे मिलकर मुझे अैसा अनुभव हुआ जैसे किसी देवतासे मिल रहा हूं। जब अुनको यह पता लगा कि मैं बापूजीके पाससे आया हूं और गोसेवामें रुचि रखता हूं, तो वे आनंदसे गद्गद हो गये और बोले, "देखो भाअी, मैं महात्माजीसे अेक साल छोटा हूं। अुनके लिअे मेरे दिलमें बहुत बड़ी अिज्जत है। वे तो खुदाके बन्दे हैं और मुल्ककी बड़ी खिदमत कर रहे हैं। मैं अेक नाचीज आदमी हूं और छोटासा गोसेवाका काम लेकर बैठा हूं, सो भी अपने स्वार्थसे। मैं तो अेक गरीब किसान था। जब पंजाब सरकारने सांड़ तैयार करनेकी योजना बनाअी और बीस सालके पट्टे पर जमीन देनेकी जाहिरात की, तो मैंने हिम्मत करके हाथ फैला दिया। मेरे चार लड़के हैं। मैंने किसीको भी अंग्रेजी नहीं पढ़ायी। अुनको थोड़ासा कामचलाअू पढ़ाकर खेती और गोपालनमें लगा दिया। अेक दूधकी गायों और दूधकी व्यवस्था करता है। दूसरा दूध पीते बच्चों और दूसरे बच्चोंको संभालता है। खेती और हरी घास पैदा करनेकी जवाबदारी तीसरेकी है। सूखी घास और सांड़ चौथा संभालता है। खुदाके फ़जलसे मुझे तो गायकी मेहरबानीसे ही रिजक मिल रहा है। मेरी अेक गाय मेरे फार्म पर २३ साल जिन्दा रही और अुसने १७ बच्चे दिये। सरकारी डॉक्टरोंने कहा कि अिसे गोलीसे मार देना चाहिये। तो मैंने कहा कि अब मेरा भी क्या बनेगा, मुझे भी क्यों नहीं गोलीसे मार दिया जाय? वह गाय मेरी ही भूलसे मरी। मैंने अुसे हर जगह चरनेकी छूट दे दी थी। अेक रोज वह चनेके कोठेमें घुस गअी और अधिक चने खा गअी। अन्तमें पेट फूलनेसे मर गअी। अुसका मुझे बड़ा अफसोस है।"

अलहदादजीकी सफेद चिट्ट लम्बी दाढ़ी, अुनका हंसमुख चेहरा और गोसेवाकी भावनासे ओतप्रोत अुनके मनको देखकर मुझे बहुत ही खुशी हुअी। अुनके सब जानवर हृष्ट-पुष्ट थे। अुनके फार्म पर पूरी समता थी। काम

करनेवालोंको अितना अनाज, अितनी कपास और आध सेर रोजका दूध तथा अूपरसे थोड़ा पैसा मिलनेका प्रबन्ध था। वहां मजदूर-मालिकका भेद नहींके बराबर प्रतीत होता था। अुस समय अुनके पास कुल मिलाकर ५०० जानवर थे। अुनके लड़के कहने लगे कि जब हमारे अब्बाजान गोशालामें आते हैं तो सबसे पहले कमजोर जानवरोंका निरीक्षण करते हैं। अगर कोअी जानवर कमजोर मिले तो हमारे साथ लाठीके सिवा बात नहीं करते। अुनका कहना है कि जो जानवर बोलता नहीं है अुसे हम अगर तकलीफ देते हैं तो खुदाके घर गुनहगार होते हैं। देखिये, यह घोड़ी यहीं अंधी पैदा हुअी थी। अिसे ९ सालसे हम खाली बंधीको चुगा रहे हैं। सबसे पहले हमारे अब्बाजान अिस घोड़ीके पास आते हैं। अगर यह कमजोर हो जाय तो हमारी खैर नहीं है।

मुझे मालूम हुआ कि खांसाहबने स्टेशनके पास अेक सराय हिन्दू-मुसलमान दोनोंकी समान सुविधाके लिअे बनवाअी है, जहां मुसाफिरोंकी काफी सेवा की जाती है। मुसलमानी ढंगके अनुसार अपनी आमदनीका दसवां हिस्सा वे अैसे ही पुण्यकार्योंमें खर्च करते रहते हैं। बहुतसे हिन्दुओंका अैसा गलत विचार बन गया है कि गायकी सेवा हिन्दू ही कर सकता है। लेकिन अैसे अनेक माअीके लाल मुसलमान पड़े हैं जो हिन्दुओंसे कहीं अच्छी सेवा गायकी करते हैं। मैं अपने अनुभवसे कह सकता हूं कि सारे पंजाबमें हिन्दुओं और सिक्खोंकी व्यवस्था और सेवासे कहीं अच्छी व्यवस्था और सेवा मैंने अलहदादजीके यहां देखी।

चलते समय अलहदादजीने कहा, देखो, मैं तो महात्माजीके पास पहुंच नहीं सकता, लेकिन आप अुनकी खिदमतमें मेरा सलाम अर्ज़ कर देना। जब मैंने यह सारा समाचार बापूजीको लिखा तब बापूजीने मुझको लिखा कि मुसलमान भाअियोंकी कथा बड़ी रोचक है। अिस प्रकारके अनेक अनुभव मुझे अुस प्रवासमें हुअे।

बापूजीसे भेंट

अुन्हीं दिनोंमें आसफपुरमें श्री प्रभुदासभाअी गांधी अुत्सव मना रहे थे। वर्धासे वे किसी प्रमुख आदमीको बुलाना चाहते थे। पूज्य किशोरलालभाअीने अुनको मेरा नाम सुझाया और मुझे भी वहां जानेके लिअे लिखा। अुनका लिखना मेरे लिअे फौजी हुक्म जैसा था। मैं वहां गया और वहां भी गायके

ही गीत मैंने गाये। वहांसे दिल्ली आया और पन्द्रह दिन पूसा फार्म पर रहकर वहांकी गोशालाका सब हाल देखा। अुस समय वहां पर डॉक्टर फरनान्डीज़ सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। वे बड़े सरल आदमी थे। अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझे सब कुछ दिखाया।

लाहौरसे लौटते समय फिरोजपुर छावनीकी मिलिटरी डेरी भी देखी। सरदार किशनसिंह अुसके बड़े ही योग्य मैनेजर थे। ता० ६–७–'३९ को बापूजीसे विदा लेकर गया था। ता० १–११–'३९ को दिल्लीमें लौटकर मैंने जब अुन्हें प्रणाम किया तो वे हंसकर बोले, "अरे, चोर कहांसे आ गया?" घूमते समय सब हाल पूछा और बोले, "दिल्लीका कैटल ब्रीडिंग फार्म भी देख लो। अगर तुमको अैसा लगे कि अुसमें कुछ किया जा सकता है तो अुसका चार्ज मिल सकता है।" अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी बापूजीसे मिलने आअी थी। अुसने बापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा आपके पास रहनेकी है। लेकिन पिताजी राजी नहीं होते हैं। बापूजी बोले, "मेरे पास तो तुम् रह सकती हो, लेकिन पिताजीको राजी करना होगा। अगर तुम्हारा संकल्प सच्चा होगा तो तुम्हारी जीत होगी।" अुसी संकल्पने जोर मारा और पांच सालके बाद सन् १९४४ में वह बापूजीके पास सेवाग्राममें आ ही गअी।

दूसरे दिन दिल्लीका कैटल ब्रीडिंग फार्म देखने गया और वहां श्री लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदियासे बातें कीं। फार्म अिन्हींके खर्चसे चल रहा था। अुसमें भैंसोंका भी प्रवेश हो चुका था। अिसलिअे मैंने बापूजीसे कह दिया कि अिन तिलोंमें तेल नहीं है। अगले दिन जब मैं बापूजीके पास गया तो बापूजीकी मालिश की जा रही थी। मैं चुपचाप जाकर खड़ा हो गया। बापूजीने मुझे देख लिया और बोले, "देखो, बलवन्तसिंह आ गया है। अैसा न समझना कि वह चुपचाप खड़ा रहेगा। अुसको मालिशमें हिस्सा दो, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।" सब लोग हंस पड़े और बापूजी भी खूब हंसे। मेरे लिअे अेक पैर खाली हो गया और मैं अपने काममें लग गया। अिस अनोखे प्रेमका स्वाद चखनेके बाद आज सब स्वाद फीके लगते हैं। बापूजीकी कल्पना बहुत अूंची थी। वहां तक तो मैं नहीं पहुंच पाया। लेकिन अुन्हींके प्रतापसे अितनी जानकारी और अनुभव मुझे हो गया है कि अिस विषयके बड़ेसे बड़े जानकारोंके सम्मुख आत्म-विश्वाससे अपनी

बात कह सकूं। मेरी कही हुअी बात अधिकतर तो अुनके गले अुतर जाती है। पर कभी असफलता मिलती है तो डेरा डालकर अपनी बात अुनके गले अुतार सकूं अितना धीरज भी मुझमें आ गया है। यह सब बापूका ही प्रताप है।

मूक होहि वाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन।

१८

विविध प्रसंग

अेक बोधपाठ

अिसी समय बंगालमें गांधी-सेवा-संघकी सभा थी। बापूजी वहां जा रहे थे। मैंने बंगाल जानेकी अिच्छा बताअी और कहा कि मैं वहांकी गायें देखना चाहता हूं। अुस समय कृष्णचंद्रजी मुझे हिन्दी पढ़ाते थे, लेकिन ठीक ठीक समय नहीं दे पाते थे। अिसलिअे मैंने बापूके पास शिकायत की थी। मैंने लिखा था कि मैं अुनकी खुशामद नहीं करूंगा। बापूजीने अिन दोनोंके सम्बन्धमें लिखा:

चि० बलवंतसिंह,

अिस वक्त गांधी-सेवा-संघमें तुमको ले जानेका दिल नहीं है। बंगालकी गायोंकी चिन्ता हम न करें। कृष्णचन्द्रसे कहूंगा। लेकिन ज्ञानके पिपासुको खुशामद करनी पड़ती है। जब मेरे जैसे महात्मा बनोगे तब तुमको ज्ञान देनेवाले तुम्हारी खुशामद करेंगे। दरम्यान गीताका वचन याद करो। वह यह है कि प्रणिपात (खुशामदसे), परिप्रश्न (बार बार प्रश्न करनेसे) और सेवा करके ज्ञान सीखो। गीताका क्रम तो महात्माओंके लिअे ही शायद बदलता होगा। बाकी मुझे जो खुशामद करनी पड़ती है सो मैं ही जानता हूं।

२७-१-'४० बापूके आशीर्वाद

अुन दिनों मेरे पास कोअी दूसरा खास काम नहीं था। मैंने बापूजीको लिखा कि मैं कुछ नहीं करता हूं और करूंगा भी नहीं। खाली बैठकर

दूध पीता हूं। अगर आप दूध पिलाते पिलाते थक जायेंगे तो चला जाअूंगा। बापूने लिखा :

चि० बलवंतसिंह,

दूध पीते पीते थको तो दूसरी बात। मैं तो रोकनेवाला नहीं हूं। न मैं यहांसे तुमको कहीं हटानेवाला हूं। यहीं रहना और आनंद-पूर्वक जो काम मैं दूं वह करना। अुसीमें तुम्हारी साधना है। अुसीमें गोसेवा है।

सेगांव, ८–२–'४० बापूके आशीर्वाद

* * *

डेलांग (बंगाल) में गांधी-सेवा-संघका अधिवेशन था। बापूजी शान्ति-निकेतन जानेवाले थे। बापूजीके साथ जानेकी अिच्छा बहुतोंकी थी। मैं भी बंगालकी गायें देखना चाहता था, लेकिन शान्तिनिकेतन देखने और गांधी-सेवा-संघके अधिवेशनमें शामिल होनेका भी मोह था। १५ आदमी साथ ले जानेकी बापूजीको शान्तिनिकेतनसे अिजाजत मिल गअी थी। लेकिन बापूजीके मनमें मंथन चल रहा था कि किसको ले जाअूं और किसको छोड़ूं ?

बापूजी अपनी मर्यादाका बराबर ध्यान रखते थे। आखिर बापूजीकी व्याकुलता बाहर आअी। प्रार्थनाके बाद बापूजीने कहा :

"जबसे शांतिनिकेतन जानेकी बात चली है तबसे मैं गाफिल हो रहा हूं। आज दो दिनसे अधिक खलबली चली है और आज तो मैं बहुत बेचैन हो गया। मैंने देखा कि मैं अपना धर्म चूक रहा हूं। सत्यका सूक्ष्म भंग कर रहा हूं। मुझमें सबको खुश करनेकी आदत है। हमेशा सफल होता हूं, अैसा नहीं है। लेकिन अिसमें अतिशयता आ जाय तब यह गुण मिटकर दोषका रूप लेता है।, मैं देखता हूं कि शान्तिनिकेतन और अधिवेशनमें कमसे कम लोगोंको अपने साथ ले जानेका मेरा धर्म है। अधिकको ले जानेकी मैंने शान्तिनिकेतनसे सम्मति तो मंगाअी है, लेकिन आज मुझे अेकाअेक लगा कि आवश्यकतासे अेक भी अधिक आदमीको ले जाना मेरा धर्म नहीं है। अिसलिअे मैंने निश्चय किया है कि मेरे साथ सिवा बा, महादेव, प्यारेलाल, कनु और नारायणके और कोअी नहीं जायगा। मेरे दिलमें क्या हो रहा

है, अुसका अेक अंश भी यहां नहीं बता सकता हूं। मेरे लिअे यह कदम अेक भारी वस्तु है, लेकिन अिसके सिवा शान्त नहीं हो सकता हूं।"

८–३–'४०

मैंने हिन्दीकी पढ़ाअीके बारेमें फिर बापूजीको लिखा। अिसलिअे बापूजीने लिखा :

चि० बलवंतसिंह,

अिसे देखो। गीतामाता कहती है — जिससे ज्ञान लेना है अुसको प्रणिपात करो, परिप्रश्न करो, अुसकी सेवा करो। कृष्णचन्द्रकी शक्तिका माप करके अुससे शिक्षा लो। अुससे अच्छा शिक्षक कहांसे मिलेगा?

सेगांव, २०–४–'४० बापूके आशीर्वाद

छोटी बातके लिअे बड़ा कदम

अेक बार आश्रममें अेक बहनका पत्र गुम हो गया। अुसने अेक दूसरी बहन पर शक किया। बापूजीने पूछा तो वह बहन, जिस पर शक किया गया था, अिनकार कर गअी। बापूजीको भी शक हुआ और अुन्होंने अुपवास शुरू कर दिया। मैंने बापूजीको लिखा कि आप शकके आधार पर अुपवास करके किसीके अूपर दबाव डालते हैं। यह ठीक नहीं।

बापूजीने लिखा :

चि० बलवंतसिंह,

समझना सुगम है। जब पिताको घरमें किसी लड़के पर शक आता है, लेकिन कौन है अुसका पता नहीं लगता, तब वह अुपवास करके शांति पाता है। अगर लड़कोंमें प्रेम है तो लड़के कबूल कर लेते हैं। ठीक है कि मेरा अनुमान ही है, लेकिन हम सर्वज्ञाता नहीं हैं।

बापूके आशीर्वाद

अेकाध दिन अुपवास करनेके बाद आश्रमवासियोंका अिस अुपवासके लिअे विरोध होनेसे बापूने अुसे छोड़ दिया था और बादमें अुस बहनके बारेमें रही शंका भी अुनके मनसे निकल गअी थी। यह शंका-निवारणकी बात तथा शंका करनेका दुःख बापूजीने बादमें लिखित रूपमें प्रगट किया था।

अिस तरह अूपरसे छोटी दीखनेवाली बातोंमें बापू कितने भारी कदम अुठा सकते थे और अुनके पास रहना कितनी सावधानीका काम था, अिसका अनुभव तो अुन्हींको होगा जो अुनके निकट रहे हैं। बाहरसे देखनेवाले तो समझते थे कि बापूजीके पास रहनेवाले मौज करते हैं। लेकिन वास्तवमें अुनके पास रहना तलवारकी धार पर चलनेसे भी कठिन और फूलों पर चलनेसे भी आसान था। 'साअींका घर दूर है, जैसी लंबी खजूर। चढ़े तो चाखे प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर।।' अिस दोहेका प्रत्यक्ष अनुभव अुन लोगोंने किया है, जिनको बापूजीके निकट संपर्कमें रहनेका सौभाग्य मिला है।

लॉर्ड लोधियन सेवाग्राममें

यों तो बापूजीके पास बड़ेसे बड़े मेहमान आते थे और बापूजी अुनकी आव-भगत और सुख-सुविधाका प्रबंध अपने ही ढंगसे करते थे। लेकिन लॉर्ड लोधियन अेक निराले ही प्रकारके मेहमान थे। वे १९४० में बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीने जमनालालजीसे पहले ही कह दिया था कि अुनको अपने बैलोंके तांगेमें ही लाना है। अेक रोज देखा तो जमनालालजी और लॉर्ड साहब बैलके तांगेमें फंसे बैठे चले आ रहे हैं। दोनों पूरे लंबे-चौड़े डील-डौलके थे, और तांगेकी सीट साधारण ही चौड़ी थी। दोनोंको बैठनेमें कठि-नाअी हो रही थी। बापूजीने प्रार्थनाकी जगह पर अुनका स्वागत किया। अेक-दूसरेसे मिलकर दोनों खूब खुश हुअे। दोनोंके चेहरोंसे आनन्द टपक रहा था। अुनका ठहरनेका अितजाम आखिरी-निवासमें किया गया था। सोनेके लिअे तख्ता, स्नानघरमें कमोड आदि छोटी छोटी सुविधाओंका प्रबंध बापूजीने खुद अपनी निगरानीमें कराया था। अुनके भोजनका प्रबंध हमारे साथ पंक्तिमें ही किया गया था। पतलूनके कारण जमीन पर बैठनेमें अुनको थोड़ी असुविधा तो होती थी, लेकिन हमारे साथ बैठना अुन्हें बहुत ही पसन्द था। बापूजी अपने पास ही अुन्हें बिठाते और परोसनेका काम भी खुद ही करते थे। बीच बीचमें अुनसे पूछते जाते और भोजनकी सामग्रीके गुणोंका बखान भी करते जाते। अंग्रेज लोग मिर्ची-मसाला तो खाते नहीं। अिसलिअे आश्रमका भोजन अुन्हें बहुत पसन्द आया। वे सेवाग्राममें ३ रोज रहे और हमारे साथ खूब घुलमिल गये। अुन्होंने कहा, "मेरे सारे जीवनमें ये तीन दिन जैसे शांतिसे बीते हैं वैसे कभी नहीं बीते। अितना अेकान्तवास मुझे कभी नहीं मिला है। यहां मुझे बड़ी शांतिका अनुभव हुआ है।" हमको

लगता था जैसे कोअी पुराना साथी हममें आ मिला हो। अुनको वापिस भेजनेका प्रबंध भी अुसी बैलके तांगेमें किया गया। अुनके जानेके बाद बापूजीने शामकी प्रार्थनामें कहा, "मैं चाहता तो जमनालालजीकी मोटर थी ही और मैं जब बम्बअीमें था तभी अुनको मुलाकात दे सकता था। लेकिन अुसे मैंने जान-बूझकर टाला। क्योंकि बम्बअीमें बैठकर मैं अुनको हिन्दुस्तानका सही दृश्य नहीं दिखा सकता था। हिन्दुस्तान शहरोंमें नहीं गांवोंमें बसता है। यह मैं बम्बअीमें बैठकर अुन्हें कैसे समझाता? जो अंग्रेज भारतमें आते हैं अुनको गांवोंका दर्शन कहां होता है? लोग तो अुनके आसपास शहरोंकी ही चकाचौंध खड़ी करते हैं। अिससे वे भी भ्रममें पड़ जाते हैं। मैं किनका प्रतिनिधित्व करता हूं, अिसका पता सेवाग्राममें आये बिना अुन्हें कैसे चलता? अुनके यहां आनेसे हिन्दुस्तानका कुछ भला होगा सो बात नहीं है, लेकिन वे यहांसे जो विचार लेकर गये हैं अुनका असर दूसरों पर भी अच्छा होगा। अुन्होंने देख लिया कि असली हिन्दुस्तान किसको कहते हैं। हमारे किसान मोटर कहांसे लायें? अुनके पास तो बैलगाड़ी ही हो सकती है। अिसलिअे मैंने जमनालालजीसे कहा कि अुनको बैलगाड़ीमें ही लाना चाहिये। जमनालालजीके मनमें संकोच हो सकता था, लेकिन वे तो मेरे तर्जको समझते हैं। अिसलिअे अुनको भी आनन्द ही हुआ।"

बापूजी देहातोंके साथ कितने अेकरूप होना चाहते थे, यह अैसी घटनाओंसे स्पष्ट हो जाता है। वे देहातोंके जीवनमें जहां तक प्रवेश करना चाहते थे, वहां तक जानेका अुनको अवसर नहीं मिला। वे शुद्ध ग्रामसेवककी तरह जीवन बितानेकी अपनी तमन्ना पूरी न कर सके, क्योंकि देशको आजाद करानेका कार्यक्रम अुनके सहारेके बिना चल ही नहीं सकता था। अिसलिअे अुस जवाबदारीका भार भी अुनको अुठाना पड़ा।

होड़ बदना बुरा है

१९४० के मअी मासके अंतिम सप्ताहमें खेती और गोशालाका चार्ज फिर मुझे लेना पड़ा। आश्रमकी खेतीका नियम था कि कोअी बैलको आर न मारे। लेकिन हमारे खेतीवाले लोग अेक छोटीसी आर अपनी जेबमें रखते थे और जब वर्धा वगैरा कहीं जाते थे तो अुसका अुपयोग करते थे। अिसका मुझे पता नहीं था। गांवके अेक भाअीसे मैं बात कर रहा था तब अुसने बताया कि आपके बैलोंके अूपर भी आरका प्रयोग होता है। मैंने अिनकार

वह पहले सेगांवका मालगुजार था और माफी मांगनेमें अपनी बेअिज्जती समझता था। वह रुपये देनेको तो तैयार था, लेकिन सार्वजनिक रूपमें माफी मांगनेके लिअे तैयार नहीं था। बापूजीने कहा कि "मेरे नजदीक रुपयेका बहुत महत्त्व नहीं है। अगर तुम नहीं दे सकोगे तो मैं भी दे सकता हूं। लेकिन तुमने जो अपराध किया है, अुसकी क्षमा तो मांगनी होगी। तिस पर तुमने गरीब हरिजनके प्रति अपराध किया है। यह दुहरा पाप है। बिना क्षमा मांगे तुम पापसे मुक्त नहीं हो सकते।" वह भाअी तो सीधा था, लेकिन दूसरे कुछ लोग अैसे थे जिन्होंने अुसको माफी मांगनेसे रोका। आखिर मामला पुलिसमें गया। बाप-बेटेको सजा हुअी, अेकको चार मासकी और दूसरेको आठ मासकी। हजारों रुपये खर्च हो गये सो अलग। अन्तमें अुनको बापूजीकी बात न माननेका खूब पश्चात्ताप हुआ।

फोटो खिंचवानेसे अरुचि

बापूजीको फोटो खिंचवाना पसन्द नहीं था। सिर्फ कनु गांधीको अुनके आग्रहके कारण कुछ प्रसंगों पर यह मौका देते थे। मगनवाड़ीमें अेक रोज जब हम सब लोग भोजनके लिअे बैठ रहे थे, बाहरके अेक फोटोग्राफरने फोटो लेनेके लिअे कैमरा लगाया। बापूजीकी नजर अुस पर गअी तो बहुत गंभीर होकर बोले, "तुम लोगोंको अितनी भी सभ्यता नहीं है? किसीके घरमें आकर भोजनके समय भी फोटो लेते हो?" बापूजीकी फटकार सुनकर वह बेचारा अपना कैमरा लेकर चलता बना।

सेवाग्राममें अेक रोज बापू किशोरलालभाअीको देखने जा रहे थे। बापू सुबह घूमते समय किशोरलालभाअीसे थोड़ी बातचीत कर लेते थे, क्योंकि तबीयत अच्छी न होनेके कारण वे बापूके पास आ नहीं सकते थे। वहां जा रहे थे अुस समय अेक आदमीने आगे आकर अेकदम कैमरा लगा दिया। बापू तेजीसे झपटे और अुसके हाथसे कैमरा छीन लिया। हम सब आश्चर्यमें पड़ गये। आखिर हुआ क्या? बापूजीको अितना बिगड़ते मैंने पहली ही बार देखा था।

अेक रोज बापू अपनी कुटियामें बैठे थे। किसी परिचित भाअीने अुनका फोटो लेना चाहा। लेकिन अुनके सामने जो पुस्तक रखी हुअी थी वह रास्तेमें बाधक बन रही थी। अिसलिअे फोटो लेनेवालेने किसीसे वह

पुस्तक हटानेको कहा। पुस्तक हटा दी गअी। लेकिन बापूने वह पुस्तक अुठाकर जहां थी वहीं रख दी। वे कुछ बोले नहीं, लेकिन गंभीर हो गये।

'गाय जहां है वहीं रहेगी'

सन् १९४० की बात है। बापूजी व्यक्तिगत सत्याग्रहकी तैयारी कर रहे थे। स्वयं कब पकड़े जायेंगे अिसका पता न था। हमें क्या करना होगा, यह मैंने अुनसे लिखकर पूछा था। आश्रमकी जमीन आदिका भी कुछ प्रश्न था। बापूजीने लिखा :

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत अच्छा है। जमीन अित्यादिके बारेमें मैंने ठीक किया है। और भी अगर आजाद रहा तो करूंगा। तुम्हारे, पारनेरकरने, चिमनलाल, सुखाभाअू अित्यादिने बाहर रहना ही है।

सेवाग्राम, ११-११-'४० बापूके आशीर्वाद

दिसम्बरमें तालीमी संघके बोर्डकी सेवाग्राममें मीटिंग थी। आर्यनायकम्जीने बापूजीके सामने अेक मांग पेश की कि गोशालाके मकान अित्यादि तालीमी संघको दे दिये जायं। वे वहां छात्रालय बनाना चाहते थे। आर्यनायकम्जी, जाजूजी और डॉ० जाकिरहुसैन सब गोशालाका स्थान देखनेके लिअे आये। मुझे सीधा तो किसीने नहीं कहा, लेकिन मुझे अुनकी चर्चाका पता चल गया। जब वे लोग गोशालामें घुसे और सब चीजें देखने लगे, तो मैं समझ गया कि वे क्यों आये हैं। मैंने सख्त आवाजमें आर्यनायकम्जीसे पूछा, 'आप क्या देखते हैं?' अुन्होंने कहा कि हम यह स्थान छात्रालयके लिअे लेना चाहते हैं। आप अपनी गोशाला दूसरे खेतमें ले जायं। मैंने कहा, 'अैसा नहीं हो सकता।' जाकिरहुसैन साहब व जाजूजीने भी कुछ कहा, लेकिन मैंने साफ कह दिया कि यह स्थान नहीं मिलेगा। जब वे लोग चले गये तो मैंने बापूजीको अेक लंबा सख्त पत्र लिखा। अुसमें लिखा, 'सुनता हूं कि आप गोशालाका स्थान तालीमी संघको देना चाहते हैं। आर्यनायकम्जी, जाकिरहुसैन साहब और जाजूजी तो आपके प्रिय सेवक हैं। वे अपनी जरूरत आपको समझा सकते हैं, क्योंकि भगवानने अुनको जबान दी है। लेकिन गाय तो मूक प्राणी है। अपने सुख-दुःखके बारेमें आपको कुछ नहीं कह सकती। मैं अपने आपको गायका प्रतिनिधि मानता हूं। अगर

आप मेरे अिस दावेको कबूल कर सकें तो मैं आपसे कहता हूं कि गाय यहांसे हटना नहीं चाहती है। अगर आप यह स्थान तालीमी संघको दे देंगे और गायको यहांसे हटायेंगे, तो मैं भी गोशालाका काम नहीं कर सकूंगा। आपको जो कुछ करना है खूब सोच-समझकर करें।'

बापूजीका अुत्तर आया :

चि० बलवंतसिंह,

सिंहका नाद और गायोंका रुदन दोनों सुना। अब गाय जहां है वहीं रहेगी। आर्यनायकम्‌जी और आशादेवीको कह दिया है। बस ना?

सेगांव, १५–१२–'४० बापूके आशीर्वाद

सेप्टिक टैंकका किस्सा

कुछ डॉक्टरोंकी सलाहसे बापूजीने आश्रममें सेप्टिक टैंक बनवाना शुरू किया। वह बन रहा था तब मैंने बापूजीको नीचेका विरोधपत्र भेजा :

सेवाग्राम
५–२–'४१

परम पूज्य बापूजी,

मैंने सुना है कि आपने पाखानेका तहखाना (सेप्टिक टैंक) बनानेकी अिजाजत दे दी है। आपकी अिस प्रकारकी बदली हुअी नीतिको सुनकर मुझे दुःख और आश्चर्य हो रहा है। अब तक आप धूलमें से धन पैदा करनेका मंत्र हमको सिखाते आये हैं। अब सोनेका पानी करनेका मंत्र हमसे सिद्ध होगा या नहीं यह कहना कठिन है। आश्रममें आकर मैंने यों तो बहुत कुछ सीखा है, लेकिन जिसका मुझे अभिमान हो सकता है वह है पाखाना-सफाअी और अुसका सदुपयोग तथा धुनाअी। लेकिन अगर अेकको ही चुननेका अधिकार हो तो मैं पाखाना-सफाअीको ही चुनूंगा।

पाखाना-सफाअी और अुसके खादसे मेरे स्वार्थका भी घनिष्ठ संबंध है। लेकिन सिद्धान्तकी दृष्टिसे भी मैं अिसको आश्रमकी नाक या आत्मा मानता हूं। आपके पास तो नित्य नये डॉक्टर और नित्य नये रोगी आते ही रहते हैं और आते ही रहेंगे। लेकिन अगर आप

जैसा कोअी नचावे वैसा ही नाच ,नाचते रहेंगे तो शायद आपके सत्तर वर्षके बूढ़े पैर जवाब दे बैठेंगे। किसीकी भी अच्छी चीजको अपनाने या अुसका प्रयोग करनेका आपका स्वभाव है। जनसंग्रह करना तो आपका धंधा ही है। लेकिन जैसा कि कहा जाता है, 'जल जाये वो सोना जिससे नाक छवे।' अब तक आप ढोल पीट पीट कर यह कहते आये हैं कि यदि हिन्दुस्तानके सात लाख गांवोंका पाखाना सुव्यवस्थित रूपसे खादके काममें लाया जाय तो अुसका कीमिया बन सकता है। आपकी अिस बातको काटनेकी हिम्मत किसीमें नहीं है। और हो भी कैसे सकती है? जिस तिजोरीमें से हम निकालते ही रहें लेकिन रखें नहीं वह कितने दिन पैसा पुरावेगी? क्या यही हाल जमीनका भी नहीं है? जानवर वनस्पति खाकर भी बेशकीमती खाद जमीनको वापिस देते हैं, तो मनुष्य जमीनकी अुत्पत्तिका सार अनाज खाकर कितना कीमती खाद दे सकता है? अिसीलिअे तो पाखानेको सोनखाद कहा जाता है न?

पहले तो कुअेंमें धूलके साथ जन्तु जाते हैं, अिसलिअे मोट बंद की, पानी गरम किया, भाजी लाल और गरम पानीमें धोअी, लेकिन टाअीफाअिड बन्द न हुआ। अब मक्खियोंका नंबर है। मुझे पूरा पूरा शक है कि अिस अिलाजसे भी मर्ज चला जावेगा। लेकिन हमारा खाद तो अवश्य चला जावेगा।

मुझे लगता है कि अिसका अिलाज यह है कि या तो आप सेवाग्राम छोड़ दें या अितने बड़े समाजको छोड़ दें; और मुझे तो यह भी लगता है कि हमारा अधमरा समाज और जिनके मगजमें ही जंतुओंने घर कर लिया है अैसे डॉक्टर यदि हिमालयकी चोटी पर भी जाकर बसें तो भी अिनका पीछा टाअीफाअिड शायद ही छोड़े। डॉक्टर दास सज्जन आदमी हैं और लगनके पक्के हैं। लेकिन जब वे सुखाभाअूके लड़केके अिलाजके लिअे सेवाग्राम गांवमें न जा सके और अुसको यहां आना पड़ा तो वे हिन्दुस्तानके सात लाख गांवोंमें सेप्टिक टैंक बना सकेंगे यह कैसे माना जाय?

अेक तरफ तो आप गरीबीके गीत गाते नहीं अघाते और दूसरी तरफ अमीरीके साधन मुहैया करते करते आपकी अुदारता बरसाती

नदीकी तरह सब कुछ बहा ले जाती है, जिसके सामने कोअी सूरा ही खड़ा रह सकता है। अैरे गैरे पचकल्याणीके पैर तो जम ही नहीं सकते। मुझ जैसा बिलकुल तैरना न जाननेवाला तो समुद्रमें ही जाकर दम लेगा। शायद आपको अिस पत्रमें मेरे पैने दांत और नख दिखाअी दें, लेकिन मैं लाचार हूं। मेरी नम्र सूचना है कि पाखानेको थोड़ा दूर हटा दिया जाय या अुसे प्रतिदिन खिसकानेकी व्यवस्था की जाय, लेकिन अुसको दफना देना किसान और जमीनके लिअे अन्याय होगा। आगे राजा कहे सो न्याय।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके सादर प्रणाम

बापूजीने अुत्तर दिया:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा लिखना सही है। मैं सावधानीसे काम ले रहा हूं। यदि अधूरा छोड़कर मर गया तो सब काम टीकापात्र होगा। अगर पूरा करके मरा तो सब देखेंगे। अितना कहता हूं कि खादको बरबाद नहीं होने दूंगा। मैं जो कुछ करता हूं, सब अन्तमें गरीबोंके ही लिअे हैं। लेकिन आज तो अिसमें से कुछ भी सेवाग्राममें सिद्ध नहीं कर सकता हूं।

श्रद्धा रखोगे और अपना निजी जीवन सादा और विशुद्ध रखोगे तो देखोगे कि सब ठीक ही है।

तुमने लिखा सो ठीक ही किया है। अिसमें न दांत है, न पंजा।

५–२–'४१ बापूके आशीर्वाद

आश्रम खतम नहीं होगा

आश्रममें आनेवालोंकी संख्या घटती-बढ़ती रहती थी और अुसके हिसाबसे सागभाजीकी कम-ज्यादा जरूरत रहती थी। कुछ लोग अैसा भी कहते थे कि हम यह नहीं खायेंगे, वह नहीं खायेंगे।

हमारा खेतीका गेहूं था। अुसमें कुछ कीड़ा लग गया था। भोजनालयके व्यवस्थापकने अुसे लेनेसे अिनकार कर दिया था। मैंने बापूजीको लिखा कि

अेक दिन ५० सेर सागभाजी मांगते हैं तो दूसरे दिन १० सेर। मैं किस हिसाबसे पैदा करूं? और आश्रमका गेहूं खराब हो गया तो अुसको कहां फेंक दूं? मैं नहीं जानता कि अिस तरह यह आश्रम कितने दिन चल सकेगा। गरीब लोग तो अिस तरह गेहूं फेंक नहीं सकते हैं। हम लोग क्या अमीर हो गये हैं?

बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

शाकभाजीके बारेमें थोड़ी अव्यवस्था सहन करने योग्य है। जो आश्रममें न चाहिये वह बाहर बेचनेकी हमारी शक्ति होनी चाहिये। डॉक्टरसे बात करके भविष्यका पाक बनाना चाहिये। शाकभाजी ताजी और अच्छी बनानेकी शक्ति हमारेमें होनी चाहिये।

गेहूं खराब हो जाय तो फेंकना ही चाहिये। गरीबको भी अैसा ही करना चाहिये। हमारे गेहूं बिगड़े क्यों?

यह आश्रम खतम होनेवाला नजर नहीं आता है। परिवर्तन होना संभव है। जो होगा सो हमारे या कहो मेरे कर्मोंका फल होगा। धैर्य रखो।

१६–२–'४१ बापूके आशीर्वाद

* * *

आज आश्रमकी हालत देखकर दु:खके साथ लिखना पड़ता है कि मेरा अुस रोजका दु:ख सच साबित हो रहा है। हमारे या बापूजीके कर्मोंके फलसे आश्रम आज खाली है। खाली मकानोंको देखकर आज अुस रोजकी याद आती है जब यहां पैर रखनेको भी जगह नहीं रहती थी।

'सब शोभा दरबारकी गअी बीरबल साथ।'

क्या किया जाय? हो सकता है हजार दो हजार सालके बाद पुरातत्त्व विभागवाले अिस बातकी खोज करेंगे कि भारतके राष्ट्रपिता और जगतके वन्दनीय महापुरुष गांधीजी कहां रहते थे; अुनकी कुटिया कहां थी; आदि-निवास और कुटियाका स्थान निश्चित करनेमें तर्क-वितर्क चलेंगे। लेकिन आज अिस तरफ कोअी ध्यान नहीं दे रहा है। अिस दृश्यको मैं छाती पर पत्थर रखकर सहन कर रहा हूं। न मालूम भगवानने क्या सोचा है?

जमीनका झगड़ा

सेवाग्रामके अेक गरीब किसान पर कअी सालका लगान चढ़ा हुआ था। अुसकी सारी जमीन बेदखल होनेवाली थी। अुसका अेक खेत गोशालासे लगा हुआ था। अिस किसानको साथ लेकर गांवका अेक प्रतिष्ठित आदमी मेरे पास आया और बोला, "आप अिसके खेतको खरीद लें तो अिसके बच्चोंके लिअे अिसकी दूसरी अच्छी जमीन बच सकती है।" मुझे जमीनकी खास जरूरत नहीं थी। तो भी पास होनेसे अुसमें गायके दूध पीते बच्चे चरानेकी सुविधा थी। और अुसकी सारी जमीन जमनालालजीकी जमींदारीमें थी। अगर बेदखल होती तो हमारे पास ही आनेवाली थी। अुनके मुनीमजीने मुझे कह भी दिया था कि यह सारी जमीन आपको ही दे देंगे। लेकिन मुझे लगा कि अिस प्रकारका लोभ ठीक नहीं है। अगर अिसकी जमीन बच सकती हो तो अुसे बचाना चाहिये। अिस विचारसे मैं बापूजीके पास गया और सारी परिस्थिति अुन्हें बताअी। बापूजीने कहा, "तुम्हारे पास जमीन तो काफी है। लेकिन अुसकी दूसरी जमीनकी रक्षा होती है और अुस जमीनका तुमको अुपयोग है तो भले खरीद लो।" मैंने वह जमीन खरीद ली।

अुस किसानके दो लड़के थे। अेक बाहर पटवारी था और वहीं बस गया था। लिखा-पढ़ीके समय जब मैंने अुसकी सही लेनेकी बात की तो जो भाअी बीचमें पड़ा था अुसने मुझे विश्वास दिलाया कि अिसकी आप चिन्ता न करें, वह भाअी अुज्र करनेवाला नहीं है, न अिस जमीनमें से वह हिस्सा ही लेगा। क्योंकि अुसने वहां काफी जमीन कर ली है और अिस जमीनका लगान भी वह नहीं देता है। अिसीलिअे तो अिसका लगान चढ़ा है। अुसके विश्वास दिलाने पर मैंने आग्रह नहीं किया और जमीनका बिक्रीपत्र आश्रमके नाम करा लिया। जितनेमें सौदा पक्का हुआ था वह मुझे कुछ सस्ता लगा। मैंने सोचा कि किसानकी मुसीबतका लाभ अुठाना ठीक नहीं है। अिसलिअे लिखा-पढ़ी होनेके बाद भी अुसको थोड़ी रकम मैंने और दे दी, जिससे अुसे बड़ा संतोष मिला और दूसरे लोगों पर भी अिसका बहुत अच्छा असर हुआ।

८-१० मासके बाद अुस किसानका दूसरा लड़का, जो पटवारी था, नौकरी छूट जानेसे सेवाग्राममें ही आ गया और अपने लिअे जमीन खरीदनेकी कोशिश करने लगा। किस्सा अैसा बना। पड़ोसके गांव नादोरामें अेक किसान अपनी जमीन बेच रहा था जिसे वह लेना चाहता था। अुसी जमीनको

सुखाभाअू चौधरी, जो चरखा-संघके कार्यकर्ता थे, लेना चाहते थे। दोनोंसे मेरा अच्छा संबंध था। अतः अुस जमीनका सौदा सुखाभाअूके लिअे हो गया। पटवारीको लगा कि अिस सौदेमें मैंने मदद की है। अिसलिअे चिढ़कर अुसने अपने बाप और छोटे भाअी द्वारा आश्रमको बेची हुअी जमीन वापस मांगी। जब यह सवाल बापूजीके सामने गया तो बापूजीने अुसके बाप और भाअी तथा गांवके दूसरे लोगोंको बुलाकर पूछा कि अिस मामलेमें क्या किया जाय। गांवके लोग यह कैसे कह सकते थे कि जमीन वापिस कर दी जाय। अिसलिअे वे कुछ न बोले। बापूजीने अुसके बाप और भाअीसे पूछा कि बोलो क्या करना चाहिये। अुन्होंने कहा कि जमीन वापिस कर देनी चाहिये। बापूजीने मुझे आदेश दिया कि अिनकी जमीन वापिस कर दो; अुस पर तुम्हारी जो फसल खड़ी हो काट लो। अिन आदमियोंमें वह आदमी भी था जो मेरे पास अुनकी जमीनको बचानेकी वकालत करने आया था। लेकिन अुसने अिस अन्यायका प्रतिकार नहीं किया। अिससे मुझे भारी दुःख हुआ। जब वही आदमी मेरे पाससे जमीनका चार्ज और हिसाब-किताब लेने आया, तो मैं अपने गुस्से पर काबू न रख सका। मैंने अुससे कहा कि तुमको अिसके साथ हिसाब-किताब लेने आनेमें शर्म आनी चाहिये थी। जिस मुंहसे तुम मेरे पास अिसकी जमीन बिकवाने आये थे अुसीसे वापिस करानेमें तुमको जरा भी शर्म नहीं आती? अुसको मेरी अिस बातसे दुःख हुआ। अुसके अिस दुःखकी बात बापूजीके कान तक पहुंची।

बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "तुमने विठोबाके अूपर गुस्सा करके भारी अपराध किया है। अिसके लिअे मुझे क्षमा मांगनी पड़ी। तुम भी मांग लो। हम तो सेवक हैं। अिसलिअे हमको किसी पर गुस्सा करनेका अधिकार ही नहीं है। तुम्हारी बात तो सच थी। लेकिन गुस्सेने अुसका सच्चापन मिटा दिया।" मैंने गांवमें जाकर क्षमा मांगी और कहा कि तुमने मेरे साथ विश्वासघात तो किया है, लेकिन मैंने गुस्सेमें तुमसे जो कठोर शब्द कहे अुन्हें मैं वापिस लेता हूं। अिससे अुन लोगोंको और भी बुरा लगा। जब सारा किस्सा बापूजीके पास गया तो बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

मुन्नालाल कहते हैं कि तुम्हारी क्षमा-याचनासे शांति नहीं हुअी है। क्षमा मांगनेके समय विठोबाको सुनाया, तुमने विश्वासघात तो

किया है तो भी क्षमा मांगता हूं। अगर यह ठीक है तो क्षमा-प्रार्थना निरर्थक है। विश्वासघातकी शिकायत बहुत कठोर है। मैं विश्वास-घात नहीं पाता हूं, हृदय-दौर्बल्य भले कहो। यह बात सुधरनी चाहिये।

१९–५–'४१ बापू

अिस घटनासे मुझे और भी दुःख हुआ। और मैंने प्रायश्चित्तके रूपमें ३ रोजका अुपवास करनेका निश्चय बापूजीको बताया। अुन्होंने अिसे पसन्द नहीं किया और बोले, "अुपवास करना ठीक नहीं है। अिससे तुम्हारे काममें बाधा पड़ेगी। और अुपवासके लिअे अधिकार भी तो चाहिये। बस, नम्र बनो। जिसे जगतकी सेवा करनी है, वह किसीके साथ घनिष्ठ संबंध न जोड़े। क्योंकि अगर हम अेकके साथ घनिष्ठता जोड़ते हैं, तो स्वाभाविक है कि हम दूसरोंसे दूर जाते हैं। मैं तुम्हारा त्याग न करूंगा। हां, अेक बात है। मैंने लोगोंको पहले कहा था (गणपतरावके प्रकरणमें) कि अगर बलवन्तसिंह दूसरी बार गुस्सा करेगा तो सेवाग्राम छोड़ेगा। अिस बिना पर तुम सेवाग्राम छोड़ सकते हो और लोगोंको यह कह सकते हो कि बापूके वचन-पालनके लिअे मैं सेवाग्राम छोड़ रहा हूं।" बापूजीकी यह सूचना मुझे बहुत पसन्द आअी। मैंने अुपवासका विचार छोड़ दिया और सेवाग्राम छोड़नेका निश्चय कर लिया।

रातको सेवाग्राममें जाकर मैंने सभा की और लोगोंको सारा हाल सुनाया तथा अपना सेवाग्राम छोड़नेका निश्चय बताया। मैंने कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि मैं बापूजीके वचन-पालनके लिअे आप लोगोंसे बिदा मांगने आया हूं। जिन भाअीको मेरे शब्दोंसे दुःख पहुंचा है अुनसे मैं नतमस्तक होकर क्षमा मांगता हूं। अुनके आशीर्वाद लेकर यहांसे बिदा लेना चाहता हूं। आशा है कि वे भाअी मुझे क्षमा कर देंगे।

मैं बापूजीके पास आया और सभाका सब हाल अुन्हें सुनाया। अुनको बड़ा आनन्द हुआ। मेरे भी आनन्द और अुत्साहका पार नहीं था। मुझसे बापूजीने पूछा, "कहां जानेका सोचते हो? साबरमती जा सकते हो। नाथके पास जाना हो तो वहां भी जा सकते हो।" और भी कअी जगहोंके नाम वे गिना गये। मैंने देखा बापूजी वचनका पालन तो करना चाहते हैं, लेकिन मेरी व्यवस्थाकी चिन्तासे मुक्त होना नहीं चाहते। मैंने कहा, "अैसी जगह नहीं जाअूंगा जहां पर आपके नामका सहारा हो। जब यहांसे जा ही

रहा हूं तो आपके नाम और प्रभावका भी मुझे अुपयोग नहीं करना है।" बापूजीने कहा, "तुम्हारा विचार मुझे पसन्द है।" जब मेरी और बापूजीकी बात हो रही थी तब प्रभावतीबहन* वहीं बैठी थीं। मैं जा रहा हूं अिसका अुनके मनमें दुःख था। लेकिन मैं बापूजीके नामका अुपयोग नहीं करना चाहता अिससे अुनको बड़ी खुशी हुअी। जब मैं बापूजीके पाससे अुठकर आया तो वे भी मेरे साथ ही अुठकर आअीं और अपने स्वभावके अनुसार हंसकर बोलीं, "आपने बहुत अच्छा सोचा है। हममें अितना आत्म-विश्वास होना चाहिये कि बापूजीके नामके सहारेके बिना जगतमें अपने पैरों पर खड़े रह सकें।"

मेरे निवेदनने गांवमें खलबली मचा दी और अुस भाअीका मन भी बदल गया। १०-१५ लोग मिलकर बापूजीके पास आये और बोले, "आप बलवन्तसिंहजीसे जानेको कहते हैं यह ठीक नहीं है। हमारे तो ये कामके आदमी हैं। हमारी जो भी कुछ अड़चनें होती हैं हम अिनको ही बताते हैं और ये हमको काफी मदद भी करते हैं। अिनको तो हम नहीं जाने देंगे।" बापूजीने कहा, "देखो, गणपतरावके लड़केको जब बलवन्तसिंहने धक्का दिया था तो मैंने गणपतरावसे क्षमा तो मांगी थी, लेकिन साथ साथ यह भी वचन दिया था कि अगर बलवन्तसिंह दुबारा गुस्सा करेगा तो अुसे आश्रम छोड़ना ही पड़ेगा। अुस वचनके पालनके लिअे मैंने अुसे आश्रम छोड़नेकी सलाह दी है। नहीं तो आप लोगोंको क्या, वह तो मुझे भी कितनी गालियां सुनाता है। अिसका हिसाब आप लोगोंको क्या बताअूं? तो भी मैं सहन करता हूं, क्योंकि वह कामका आदमी है और अुसके मनमें मैल नहीं है। मैंने अपने वचन-पालनके लिअे अुसे जानेको कह दिया है। आप लोगोंसे अेक बात और भी कह देना चाहता हूं कि अुसके पाससे जमीन वापिस लेकर आपने अुसके प्रति अन्याय किया है। अुसने तो मेरे साथ झगड़ा करके अुस भाअीकी जमीन बचानेको सद्भावनासे जमीन ली थी। अगर वह जमीन अुसको वापिस नहीं मिलेगी, तो अुसके दिलमें अिसका दर्द बना ही रहेगा। अिसलिअे भी अुसका यहांसे चला जाना ही अुसके लिअे अच्छा है। आपका धर्म है कि अुस भाअीको धर्म समझाओ और जमीन वापिस करा दो।" गांवके लोगोंने कहा, "हम अिसका पूरा पूरा प्रयत्न करेंगे।" बापूजीने कहा,

---

* श्री जयप्रकाश नारायणजीकी पत्नी।

"ठीक है अब बलवन्तसिंहसे बात करो। मुझे हर्ज नहीं है, क्योंकि मेरे वचनका पालन हो जाता है।"

वे लोग मेरे पास आकर बोले, "बापूजीको तो हमने राजी कर लिया है। अब आपसे कहते हैं कि हम आपको किसी भी तरह नहीं जाने देंगे।" और अूपरकी बापूजीके साथ हुअी बातचीत सुनाअी। मैंने कहा, "मैं तो बापूजीके वचन-पालन और आप लोगोंकी नाराजीके कारण जाना चाहता था। लेकिन अगर बापूजीके वचनका पालन हो जाता है और आप लोग मुझे रोकना चाहते हैं तो मैं नहीं जाअूंगा। जमीन वापिस मिले या न मिले, अिसकी मुझे चिन्ता नहीं है। मुझे तो दुःख अिस बातका हुआ था कि मेरा साथ आप लोगोंमें से किसीने नहीं दिया। लेकिन अब तो जो हुआ सो हुआ।"

मेरे जानेका निश्चय हो जाने पर बापूजीने मुझे लिखा था:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे मनमें खयाल यह रहना चाहिये कि यदि तुम्हारी तपश्चर्या शुद्ध होगी तो यहीं वापिस आओगे। कहीं भी रहो अुर्दूका अभ्यास नहीं छूटना चाहिये। हिन्दी अक्षर अच्छे बनाने चाहिये। खेती और गोपालनके शास्त्रका अभ्यास बढ़ाना।

२७-८-'४१ बापूके आशीर्वाद

बापूजीने गांवके लोगोंके आग्रहकी बात मुझसे की और जमीनकी बात भी बताअी। मैंने कहा, "लोग मेरे पास भी आये थे। अगर आपके वचनका पालन हो जाता हो तो जमीन वापिस मिले या न मिले अुसकी मुझे चिन्ता नहीं है। क्योंकि मैं देख रहा हूं कि लोगोंके दिल साफ हैं।" बापूजीने कहा, "मेरा वचन तो गांवके लोगोंकी दया पर ही निर्भर था। वे लोग तुमको रखना चाहते हैं तो मेरा काम निबट जाता है।"

और मैं रुक गया।

अिस सारी घटनामें मैंने बापूजीके चित्तकी अवस्थाका जो अध्ययन किया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। लेकिन मेरे हाथसे अेक बड़ा अवसर चला गया अिसका जरूर मुझे दुःख रहा। अगर मुझे जाना पड़ता तो बापूजीके वचन-पालनके लिअे मैंने बहुत बड़ा त्याग किया अैसी अनुभूति होती और संभव है अुससे मेरी आत्मा अूंची ही अुठती तथा बापूजीका प्रेम भी मैं अधिक ही पाता।

मौनका आदेश और अुसका लाभ

आश्रमके अेक साथीसे मेरा कुछ झगड़ा हो गया था, क्योंकि वे गोशालाके काममें अनधिकार दस्तंदाजी करते थे। यह सब मैंने डायरीमें लिखा। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा :

"मैंने तुम्हारी डायरी पढ़ ली है। अुसकी गलती तो मैं कबूल करता हूं, लेकिन तुमको भी गुस्सा बार बार आना ठीक नहीं है। नहीं तो अितनी बड़ी जवाबदारी निभा नहीं सकोगे। नाव बिलकुल किनारे पहुंचकर भी अगर डूब जाय, तो अुसका सारा पानी पार करना व्यर्थ हो जाता है। बात सबकी सुनना लेकिन अुसमें जितना सार हो अुतना लेकर बाकी फेंक देना। मैंने तुम्हारे बारेमें बहुत विचार किया कि तुमको कहीं बाहर भेज दूं या ाश्रममें कोअी अैसा काम दे दूं जिससे किसीके साथ संघर्ष न आये। लेकिन तुम्हारे कामसे तुमको अलग करना भी ठीक नहीं लगता है। अिसलिअे मैंने अैसा सोचा है कि तुमको मौन रहकर काम करना चाहिये। तुम्हारे पास पचासों आदमी काम करते हैं और बार बार बोलनेका प्रसंग आता है। लेकिन मौनसे भी बहुत बड़े बड़े काम किये जा सकते हैं। श्री अरविन्द घोष और मेहरबाबा बड़ी बड़ी संस्थायें मौन रखकर चलाते हैं। मैंने भी कअी बार मौन रखकर काफी काम कर लिया है। प्यारेलाल पर गुस्सा करने पर मैंने तीन मास तक मौन रखा था। अुससे मुझे काफी फायदा हुआ था और मैंने काम भी काफी कर लिया था। फिलहाल तुमको अेक मासका मौन रखना चाहिये। अिसमें तुम अगर मीठी भाषा बोलना सीख गये तो ठीक है, नहीं तो और लंबा मौन चलने देंगे। तुम्हारा बजट मैंने नामंजूर नहीं किया है। बस, आजसे ही मौन रखा जाय।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीके चरण छूकर मेरे मौनका आरम्भ हुआ। बापूजीने आशीर्वाद देते हुअे कहा, "अिस संकल्पको अीश्वर पूर्ण ही करेगा।" मुझमें भी अुस समय बड़ा अुत्साह था।

अुस समयकी बातों पर विचार करनेसे लगता है कि बापूका कैसा अद्भुत प्रेम था। वे छोटी छोटी भूलें बताते, हमको संभालते, हम नीचे न गिरें अिसलिअे पत्थरसे भी कठोर बनते। किसी माता या पितामें ये गुण अपनी सन्तानके प्रति होते हैं, तो भी अुसमें कहीं न कहीं कुछ ढीलापन या मोह आ ही जाता है। लेकिन बापू हमारे कल्याणकी दृष्टिसे ही सब कुछ सोचते

और करते थे। वह हमें कड़वा लगे या मीठा लगे, अिसकी अुनको चिन्ता नहीं थी। मेरा मौन अेक महीनेके बजाय दो महीने तक बड़ी शांतिसे चला और कोअी भी काम बोले बिना रुका नहीं, बल्कि व्यवस्थित ढंगसे चला। शहरके काम भी मौनसे ही चलते थे। कअी प्रसंग अैसे आये जो मौनके कारण शांतिपूर्वक निबट गये। अगर अुस समय मेरा मौन न होता तो कुछ न कुछ झगड़ा जरूर होता।

अेक दिन मैं भोजनालयमें चावल नहीं दे सका, क्योंकि मगनवाड़ीसे साफ होकर नहीं आये थे और अितवार होनेसे धान कूटनेवाली स्त्री भी नहीं आअी थी। अुस सम्बन्धमें भोजनालयके व्यवस्थापक मुझसे बात कर ही रहे थे कि अेक बहन बीचमें कूद पड़ीं और अुस विषयको लेकर अुन्होंने मुझे खूब गालियां सुनाअीं। यह भी कहा कि अितना भला है तभी तो मौन लेना पड़ा है। अुस अपमानको मैं सहन नहीं कर सका। परन्तु मौन होनेके कारण कुछ कह भी न सका। बापूजीको लिखा कि अैसे अपमान सहन करानेके बदले तो आप मुझे यहांसे भगा दें तो अच्छा हो।

बापूजीने लिखा :

> यह सब क्या है? अबलाके अपमानसे यह सब दुःख कैसे? मैं तो जानता भी नहीं कि . . . बहनने क्या क्या गालियां दीं। हमारी बहन गालियां दे अुसे भी घीकी नालियां समझें। मैं तलाश तो करूंगा, लेकिन किसी कारण मैं तुम्हारा लिखना पसन्द नहीं कर सकता हूं। अपमान तो सहन करना चाहिये। तुम्हारे हंसना था। और भागनेकी बात कैसे अुठती है? सब अपने आपको भगा सकते हैं। आश्रम तो तुम्हारा है। . . . बहनका भी है। दोनों लड़ें तो कौन किसको भगावे? ठीक ही कहा है गीतामाताने कि जिसको क्रोध होता है अुसको संमोह होता है, संमोहसे स्मृतिभ्रंश और अुसमें से बुद्धिनाश। यह तुम्हारा हाल पाता हूं। सावधान हो लो और अपनी मूर्खता पर हंसो।
>
> १-१२-'४१ बापू

अिस प्रकार मौनके कारण और बापूजीके प्रेमसे समझानेके कारण यह कठिन प्रसंग सहजमें टल गया।

मौनके सारे समयमें सिर्फ दो बार बोलनेका अवसर आया। अेक बार जमनालालजी और मीराबहनसे ४५ मिनट बात की थी। दूसरी बार कुछ ग्रामसेवक गोशाला देखने आये तब मैंने अुनसे थोड़ी बातें की थीं। अिसके सिवा बड़े आनन्दसे दो मास पूरे हुअे। ता० १६–१–'४२ को प्रार्थनाके बाद बापूजीको प्रणाम करके मैंने मौन छोड़ा। अुस दिन सरदार वल्लभभाअी पटेल वहीं थे। अुन्होंने मुझे प्रेमसे डांटते हुअे कहा कि "तुम्हारे जैसे किसानका काम मौन रखनेका नहीं है। वह महात्मा लोगोंका काम है। यदि मौन ही रखना हो तो भगवे कपड़े पहनकर जंगलमें भाग जाओ।"

समर्पणके विषयमें बापूजीके विचार

अेक भाअीने बापूजीको लिखा कि मैं अपनेको आपके चरणोंमें समर्पित करना चाहता हूं। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने लिखा:

> समर्पण सिर्फ अीश्वरको ही किया जा सकता है, मनुष्यको कदापि नहीं। अिसलिअे तुम्हारा समर्पण मुझको नहीं हो सकता है और न मैं स्वीकार कर सकता हूं। मैं संपूर्ण नहीं हूं, जीवन्मुक्त नहीं हूं। मुझे साक्षात्कार नहीं हुआ है। लक्ष्य है। जब पहुंचूंगा तब दुनिया जानेगी।

१३–४–'४२

गोशाला-सम्बन्धी सूचनाअें

मैं गोशालाके लिअे कुछ नयी गायें खरीदना चाहता था। बापूने नयी गायें खरीदनेका विरोध करते हुअे कहा, "समझो, यह गोशाला, मकान और जमीन तुमको दानमें मिली है और अेक भी पैसा तुम्हारे पास नहीं है, तो तुम क्या करोगे? यही न कि जो अधिक खर्च करना हो वह अिसमें से कमाकर करोगे? बस, अगर तुम्हें नयी गायें खरीदना हो तो बछड़े बेचो, बछड़ी बेचो, दूधका पैसा जमा करो और जितनी रकम बचे अुससे गायें खरीदो। यों तो मेरे पास पैसे आते ही रहते हैं। अुनमें से मैं खर्च भी कर सकता हूं। लेकिन यह ठीक नहीं है। तुम्हारी खूबी तो अिसमें है कि अपने पैरों पर खड़े होकर आगे बढ़ो। मेरा तुम पर पूरा पूरा विश्वास है कि अिसमें से कुछ शुभ परिणाम लाओगे। अिसलिअे ही तो यह सब चल रहा है।"

भोजनालयमें दूध कुछ कम जाता था। अिस विषयमें भोजनालयकी शिकायत थी। मैंने बापूजीसे कहा कि अगर भोजनालयमें अधिक दूध देता हूं तो गायके बच्चोंका पेट कटता है, जिससे बच्चे कमजोर होते हैं और गोशाला खराब होती है। बापूजीने कहा, "भोजनालयमें पूरा दूध देनेकी तुम्हारी जवाबदारी नहीं है। जितना तुम चाहते हो अुतना दूध बच्चोंको पिलानेके बाद ही जो दूध तुम्हारे पास बचे वह भोजनालयमें दो। तुम्हारा काम दूध पैदा करना नहीं है, अच्छे जानवर पैदा करना है। देखो, आज यूरोपमें कैसा हत्याकांड चल रहा है? मनुष्य राक्षस बन गये हैं। नीति-अनीतिका कुछ भान नहीं रहा है। अिस आगकी आंच हिन्दुस्तानको नहीं लगेगी, अैसा कहना कठिन है। देखो, गुजरातमें बरसातसे कितना दर्दनाक नुकसान हुआ है? अिन सब बातोंको देखते हुअे हमें अधिक विस्तार बढ़ानेकी झंझटसे बचना चाहिये।"

खजूरी गरीबोंका वृक्ष है

हमने गोशालाके लिअे जो जमीन खरीदी थी, अुसमें खजूरके बहुतसे पेड़ थे। अुनके कारण घास होनेमें बड़ी कठिनाअी होती थी। मैंने अुनको कटवानेका निश्चय किया और तदनुसार ठेका दे दिया। श्री गजाननजी नायक अुस समय ताड़गुड़-विभागके संचालक थे। अुन्होंने अिसके खिलाफ बापूजीसे शिकायत की। बापूजीने मुझे बुलाया और अिसका जवाब पूछा। मैंने बापूजीसे कहा, "वह जमीन साफ किये बिना अुसमें घास होना संभव नहीं है। मैं कमसे कम खजूरसे होनेवाली आमदनीकी चौगुनी आमदनी अुस खेतसे करनेका वचन देनेको तैयार हूं। चूंकि खेतमें सुधार वगैरा करनेकी मेरी जिम्मेदारी है, अिसलिअे मैंने पेड़ काटते समय किसीको पूछनेकी जरूरत नहीं समझी।"

बापूजीने लिखा :

> मैंने मेरे हाथोंसे सैकड़ों खजूरी काटी हैं और आंखोंके सामने कटवाअी हैं। वह वृक्ष मैं वापिस नहीं ला सकता। तुम्हारी दलीलके मुताबिक तो कोअी भी वृक्ष काट सकते हैं। हां, यह ठीक है कि तुमको अच्छा लगा सो किया। मुझे दुःख तो हुआ कि तुमने अितने वृक्षोंको काटा तो सबसे बहस करनी थी। खजूरी गरीबोंका वृक्ष है। अुसके अुपयोग तुम्हें क्या बताअूं? अगर सब खजूरी कट जाय तो सेवा-

ग्रामका जीवन बदल जायेगा। खजूरी हमारे जीवनमें ओतप्रोत है। घास अित्यादि दूसरी जमीनमें बो सकते थे। लेकिन हुआ अुसका दुःख भूल जाना है। अुसमें से जो शिक्षा मिलती है वह लें तो अच्छा है। मैं तो वक्त नहीं निकाल सकता। गजाननसे बात करो, दूसरोंको पढ़ाओ। खजूरीके अुपयोगका हिसाब करो।

१३–१–'४२ बापूके आशीर्वाद

जमनालालजी और गोसेवा

व्यक्तिगत सत्याग्रह समाप्त हो चुका था। अुस समयके बापूजीके विचार और प्रवचन तो महादेवभाअीकी डायरीमें छपे हैं। प्यारेलालजीके पास भी कुछ नोट होंगे। रोज कुछ न कुछ चर्चा चलती ही थी। मैं दूरसे देखता था, क्योंकि अुसमें शामिल होनेका मुझे समय नहीं था। अब बापूजी अेक नये आन्दोलनकी तैयारी कर रहे थे। सेवाग्रामकी भूमिमें अुनको 'करूंगा या मरूंगा' मंत्रकी प्रेरणा भी मिली।

अुन्हीं दिनों अेक रोज जमनालालजी बापूजीके पास आये। अुन्होंने कहा कि अब मुझे राजनीतिक काममें रस नहीं रहा है। अब शांतिसे बैठकर मैं कुछ रचनात्मक काम करना चाहता हूं। आपकी अिस बारेमें क्या सूचना है?

बापूजीने कहा, "काम तो अनेक हैं। लेकिन खादीका काम चरखा-संघ कर रहा है, ग्रामोद्योगका कुमारप्पा कर रहे हैं, नअी तालीमका आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने अुठा लिया है। गोसेवा-संघका काम ही अेक अैसा है जो बढ़ नहीं सका है। अगर तुम अुसे बढ़ा सको तो वह तुम्हारे लिअे योग्य है।" जमनालालजीको तो यही चाहिये था। अुन्होंने बड़े आनन्द और अुत्साहसे अिसे स्वीकार किया और अुसकी योजनामें लग गये। यों तो संस्थाके नामसे गोसेवा-संघ बहुत दिनोंका था, किन्तु अुसका काम अुल्लेखनीय अुन्नति नहीं कर सका था। जमनालालजीने सारे हिन्दुस्तानके गोपालनके विशेषज्ञोंकी अेक सभा की। फरवरीके पहले सप्ताहमें सभा हुअी। अुस सभामें ता० १–२–'४२ को बापूजीने जो भाषण दिया, अुसके मुख्य अंश ये हैं:

"आजकल जिस तरह गोसेवाका कार्य हो रहा है, दूसरी संस्थाअें जो कुछ कर रही हैं, अुसमें और गोसेवाके काममें बड़ा अन्तर है। वह काम

जनताके सामने नहीं आ रहा था। जमनालालजीके अिसमें पड़ जानेसे वह सबकी नजरमें आ गया है। गोरक्षाका दावा करनेवालोंको गोशाला और गोवंशकी हालतका ज्ञान नहीं है। अपनेको परम्परासे गोभक्त माननेवाले लोग अेक तरफ गोसेवाके नाम पर पैसा देते हैं और दूसरी तरफ व्यापारमें बैलोंके साथ निर्दयता करते हैं। मैं किसीकी टीका नहीं करता। सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि हममें असली अुपायके प्रति अितना अज्ञान भरा है। यही बात मैंने पिंजरापोलोंमें भी देखी। वहां भी विवेक, मर्यादा और ज्ञानकी कमी पायी।

मुसलमानोंसे गोकुशी छुड़ानेके लिअे अुनका विरोध किया जाता है और गायको बचानेमें अिन्सानोंका खून तक हो जाता है। लेकिन मैं बार-बार कहता हूं कि मुसलमानोंसे लड़कर गाय नहीं बच सकती। अिससे तो और भी ज्यादा गायें मारी जावेंगी।

असली दोष तो हिन्दुओंका है। घीका सारा व्यापार हिन्दुओंके हाथमें है। लेकिन क्या घी-दूध शुद्ध मिलता है? दूधमें मिलावट की जाती है; और जो पानी मिलाया जाता है वह भी स्वच्छ नहीं होता। घीमें दूसरे पशुओंका घी और वेजिटेबल घी मिलाया जाता है। फूंकेसे दूध निकाला जाता है। बाजारमें जो घी बेचा जाता है अुसे अेक तरहसे जहर कहें तो ज्यादा नहीं है। न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया या डेन्मार्कसे विश्वस्त रूपमें गायका शुद्ध मक्खन मिल सकता है। लेकिन हिन्दुस्तानमें जो घी मिलता है, अुसकी शुद्धताकी कोअी गारंटी नहीं।

मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हम भैंसके घी-दूधका कितना पक्षपात करते हैं। असलमें हम निकटका स्वार्थ देखते हैं, दूरका लाभ नहीं सोचते। नहीं तो यह साफ है कि अन्तमें तो गाय ही ज्यादा अुपयोगी है। गायके घी और मक्खनमें अेक खास तरहका पीला रंग होता है, जिसमें भैंसके मक्खनसे कहीं अधिक केरोटीन यानी 'अे' विटामिन रहता है। अुसमें अेक खास तरहका स्वाद भी है। मुझसे मिलनेको आनेवाले विदेशी यात्री सेवाग्राममें गायका शुद्ध दूध पीकर लट्टू हो जाते हैं। और यूरोपमें तो भैंसका घी-मक्खन कोअी जानता ही नहीं। हिन्दुस्तान ही अैसा देश है, जहां भैंसका घी-दूध अितना पसन्द किया जाता है। अिससे गायकी बरबादी हुअी है। और अिसलिअे मैं कहता हूं कि हम सिर्फ गाय पर ही जोर न देंगे,

तो वह नहीं बच सकती। यह बड़े दुःखकी बात है कि सब गायें और भैंसें मिलकर भी हम चालीस करोड़ लोगोंको पूरा दूध नहीं दे सकतीं। हमें यह विश्वास होना चाहिये कि गायका महत्त्व अिसलिअे है कि वही काफी दूध देनेवाली है तथा खेती करने और बोझा ढोनेके लिअे जानवर देनेवाली है। वह मरने पर भी मूल्यवान है, यदि अुसके चमड़े, हड्डो, मांस और अंतड़ियोंका भी हम अुपयोग करें।

पिंजरापोलोंका प्रश्न कठिन है। देशभरमें अुनकी संख्या काफी है। शायद हर बड़े कस्बेमें अेक-अेक धर्मार्थ गोशाला होगी। अुनके पास रुपया भी बहुत जमा है। लेकिन बहुतोंकी व्यवस्था बिगड़ी हुआी है। अुनका असली काम सूखे, बूढ़े और अपाहिज गाय-बैलोंका पालन करना है। अिन संस्थाओंका काम दूधका व्यवसाय करना नहीं है। हां, वे चाहें तो अेक अलग दुग्धालय या गोशाला विभाग रख सकते हैं। लेकिन अुनका मुख्य धर्म यही है कि बूढ़े और अपंग ढोरोंका पालन करें और चर्मालयके लिअे कच्चा माल भेजें। हर पिंजरापोलके साथ अेक-अेक सुसज्जित चर्मालय होना चाहिये। अुन्हें अुत्तम सांड़ भी रखने चाहिये, जो जनताके भी काम आ सकें। खेती और गोपालनकी शिक्षाका भी प्रबंध अुनमें होना चाहिये।

गोसेवा-संघने अपने सदस्योंके लिअे यह शर्त रखी है कि वे गायका ही घी-दूध खायें और गाय-बैलका मुर्दार चमड़ा ही काममें लें। अिस नियमके पालनमें बड़ी कठिनाअी यह बताअी जाती है कि जिनके यहां हम मेहमान बनते हैं, अुनको बड़ी दिक्कत और परेशानी होती है। लेकिन अिन कठिनाअियोंको बहुत महत्त्व नहीं देना चाहिये। धर्मका पालन सदा कष्टदायी तो होता ही है। अुससे भागनेमें न बहादुरी है, न जीवदया।

आज तो गाय मृत्युके किनारे खड़ी है। और मुझे भी यकीन नहीं है कि अन्तमें हमारे प्रयत्न अुसे बचा सकेंगे। लेकिन वह नष्ट हो गअी, तो अुसके साथ ही हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायेगी। मेरा मतलब हमारी अहिंसा-प्रधान और ग्रामीण संस्कृतिसे है। हमारा जीवन हमारे जानवरोंके साथ ओतप्रोत है। हमारे अधिकांश देहाती अपने जानवरोंके साथ ही रहते हैं और अकसर अेक ही घरमें रात बिताते हैं। दोनों साथ जीते हैं और साथ ही भूखों मरते हैं। लेकिन हमारा काम करनेका ढंग सुधर जाय, तो हम दोनों बच सकते हैं।

हमारे सामने हल करनेका प्रश्न तो आज अपनी भूख और दरिद्रताका है। हमारे अृषियोंने हमें रामबाण अुपाय बता दिया है। वे कहते हैं 'गायकी रक्षा करो, सबकी रक्षा हो जायगी।' अृषि ज्ञानकी कुंजी खोल गये हैं। अुसे हमें बढ़ाना चाहिये, बरबाद नहीं करना चाहिये। हमने विशेषज्ञोंको बुलाया है और हम अुनकी सलाहसे पूरा लाभ अुठानेकी कोशिश करेंगे।"

लेकिन ११ फरवरी, १९४२ को भगवानने अचानक जमनालालजीको अुठा लिया और सारे संकल्प जहांके तहां रह गये।

१९
बापूके पांचवें पुत्रका स्वर्गवास

११ फरवरीको सुबह आठ बजे मैं लोहेका हल लेने वर्धा गया था। भैया बंधुकी दुकान पर करीब साढ़े तीन बजे यह दुःखद समाचार मुझे मिला कि जमनालालजीका स्वर्गवास हो गया। मुझे यह बात झूठ लगी; बिलकुल ही विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि वे कल ही मेरे साथ बात करके आये थे कि परसों आकर आपसे गोसेवाकी देशव्यापी योजना पर बात करूंगा। आज अुनकी मृत्यु हो जाय यह कैसे सच हो सकता है? भैया बंधुने अेक आदमीको अुधर दौड़ाया तो अुसने भी यही समाचार दिया। मैं जमनालालजीके मकानकी तरफ तेजीसे लपका तो क्या देखता हूं कि अुनकी दुकानके सामने आदमियोंका हजूम खड़ा है। और सचमुच ही जमनालालजी अिस जगतसे विदा हो चुके हैं। मैंने देखा कि अुनका सिर बापूजीकी गोदमें है और बापूजी गंभीर मुद्रामें मानो अुनसे कह रहे हैं, 'भाअी, तू मेरा पांचवां पुत्र बना था तो मुझसे पहले जाना तेरा धर्म नहीं था।' अुनकी मृत्यु अचानक हुअी थी, अिसलिअे सब हक्केबक्के हो रहे थे। मेरे मनको बड़े जोरका धक्का लगा और मेरे सारे मनोरथों पर पानी फिर गया। जबसे जमनालालजीने गोसेवाका ही संकल्प लेकर काम शुरू किया तबसे अुनके साथ मेरा सम्बन्ध और भी निकटका हो गया था। अुनके द्वारा मेरा गोसेवाका मनोरथ पूर्ण होगा, अैसी आशा बंध गअी थी। लेकिन जब सुना कि वे नहीं रहे तो अैसा लगा जैसे मेरे पैरोंके नीचेकी मिट्टी ही खिसक गअी हो। मैंने अनेक बार बापूजीके साथ झगड़ा किया था कि आपने जिस प्रकार चरखा-

संघ, ग्रामोद्योग-संघ, हरिजन-सेवक-संघ, तालीमी संघ आदिका काम देशव्यापी पैमाने पर किया है, अुस प्रकार गोसेवाके लिअे कुछ भी नहीं किया है, जो मेरी नजरमें अिन सब कामोंसे अधिक महत्त्वका काम है। बापूजी कहते, "देखो, मैं किसी कामका आरम्भ नहीं करता। जैसी परिस्थिति होती है और जैसे सेवक मिल जाते हैं अुसी तरह काम भी आरम्भ हो जाता है। गोसेवाका काम मैं करना नहीं चाहता अैसी बात नहीं है। लेकिन अभी तक मुझे अैसा प्रभावशाली गोसेवक नहीं मिला है, जिससे मैं हिन्दुस्तानकी गायोंको बचानेका काम ले सकूं।"

जबसे जमनालालजीने गोसेवाका काम संभाल लिया था, तबसे मुझे आशा बंध गअी थी कि अब गोसेवाका काम जमेगा। क्योंकि बापूजी जैसे सेवककी तलाशमें थे, वैसा सेवक अुन्हें मिल गया है और अुनके मार्फत बापूजीके अुद्देश्यकी अवश्य पूर्ति हो सकेगी। मेरे जीवनमें जिन स्नेहियोंके वियोगका दुःख अमिट रहा है, अुनमें जमनालालजीका भी स्थान है। अुनकी मृत्युसे मेरा धीरज टूट गया और मुझे गोसेवाके प्रकाशकी जो किरणें दिखाअी देती थीं, वे फिरसे गहरे अंधकारमें विलीन हो गअीं। मैंने अनेक बार जमनालालजीको पुत्रवत् बापूजीके चरणोंमें बैठकर अुनका प्यार पाते और अुनकी फटकार भी सुनते देखा था। मैंने जब अुनकी सारी जमीनका कब्जा लिया तब मुनीमोंके कहनेसे कुछ ढीली बात करने पर जमनालालजीको बापूजीके सामने अेक मुलजिमकी तरह पेश कर दिया था। तब नम्रतासे अुन्होंने सब कुछ मुझे सौंपनेका आदेश अपने मुनीमजीको दे दिया था। अितना ही नहीं, वर्धासे सेवाग्रामकी सड़कके आसपास जितनी जमीन मैं चाहूं अुतनी खरीदनेका अधिकार मुझे दे दिया था और अपने मुनीमजीसे कह दिया था कि जब तक अपने अिस आदेशको मैं वापिस न खींच लूं तब तक बलवन्तसिंह जिस जमीनका सौदा जितनेमें करे अुतनी रकम मुझसे बिना पूछे अुसे चुकाते रहना।

वे बापूके पांचवें पुत्रके नामसे पहचाने जाते थे, लेकिन अुनके काम प्रथम पुत्रके थे। वे बापूके पुत्र थे, अुनके भामाशाह थे, अुनके सलाहकार थे, और अुनके सेवक थे। अुनकी ही भाषामें वे बापूजीके पीर-बबर्ची-भिश्ती-खर सब कुछ थे। अुनके चले जानेसे बापूजीकी अेक बांह टूट गअी थी। महादेवभाअीके जानेसे अुनकी दूसरी बांह भी टूट गअी। और बाने तो जाकर अुनका अन्तर ही खोखला बना दिया था। पू० जमनालालजीकी नम्रता,

अुनकी महानता, अुनकी अुदारता और अुन सब पर चढ़े हुअे गोसेवाकी पवित्र भावनाके कलशको देखकर अुनके वियोगसे किसको दुःख नहीं होता? आखिर बहुत विचारके बाद मैंने मनको धीरज बंधानेका रास्ता ढूंढ़ लिया, या मुझे लाचारीसे ढूंढ़ना पड़ा। मैं सोचने लगा कि अीश्वरकी अिच्छाके बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता, तो अुसकी अिच्छाके बिना अैसी पवित्र महान आत्मा हमसे दूर क्योंकर भाग सकती है? अन्दरसे अुत्तर मिला कि अुनका गोसेवाका संकल्प अितना महान था कि जर्जरित शरीर अुनका साथ नहीं दे सकता था। अीश्वरने सोचा होगा: 'अैसे प्राणप्रिय भक्तके शुभसंकल्पको जल्दीसे जल्दी किस तरह पूरा किया जा सकता है? अुसका अेकमात्र मार्ग यही है कि अुसे अेकसे मिटाकर अनेकमें विलीन कर दूं। यह जो जर्जरित शरीर अुसके संकल्पको पूरा करनेमें रुकावट डालता है अुसको दूर कर दूं।' भगवानने अधिक काम लेनेकी गरजसे ही अुनको अपने पास बुला लिया। 'प्रभु, तेरी गति लखि न परे'।

कुछ भी हो, अुनका आरम्भ किया हुआ काम हर हालतमें अधिक वेगसे आगे बढ़ेगा, अैसा मेरा विश्वास है। प्रभुसे प्रार्थना है कि वह मुझे बल दे, ताकि अुनकी आरम्भ की हुअी मशीनमें मेरा भी अेक पुर्जेकी जगह पर अुपयोग हो सके।

बापूजीके मनमें तो अुनके चले जानेका डर था ही। वे कअी रोज पहलेसे कह रहे थे कि मुझे लगता है मैं जमनालालको खो दूंगा। जब फोनसे अुनकी अकस्मात बीमारीका समाचार मिला तब बापूजी सर्पगंधा औषधि लेकर ही निकले थे। लेकिन वे तो बापूजीके पहुंचनेके पहले ही चले गये। सारे वर्धामें और सेवाग्रामकी संस्थाओंमें यह दुःखद समाचार बिजलीकी तरह फैल गया और हजारों लोग अुनकी श्मशान-यात्रामें शामिल हुअे। अुनका दाह-संस्कार अुसी शांतिकुटीके सामने करनेका निश्चय हुआ, जिसमें सब छोड़-छाड़कर वे गोसेवाके लिअे ही बैठे थे। जब अुनके पार्थिव शरीरको चिता पर रखा गया, तो अुनकी धर्मपत्नी श्री जानकीबहनने अुनके साथ जलकर सती होनेका आग्रह किया। बापूजीने अुनको धीरज बंधाते हुअे कहा, "जमनालालजीके मृत शरीरके साथ जल जानेसे धर्मका पालन थोड़े ही हो सकता है। धर्मका पालन तो जिस कामके लिअे अुन्होंने अपना जीवन समर्पण किया था अुसको पूरा करनेसे होगा। किसीके प्रेम या मोहके

वश होकर प्राण देना आसान है, लेकिन अुसके कामके लिअे जीना भारी काम है। और वही अुसके प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम है। बस, आजसे यह संकल्प करो कि जमनालालजीका काम मुझे पूरा करना है।"

जब जमनालालजीका शरीर अग्निदेवकी सीढ़ियोंसे आकाशकी तरफ धांय-धांय करके अुड़ रहा था, सबके चेहरे मुरझाये हुअे थे, बापूजी गमगीन थे, तब केवल विनोबाजी ही अुच्च स्वरसे अीशावास्योपनिषद्का अुच्चारण अिस प्रकारसे कर रहे थे, मानो यज्ञ चल रहा हो और होता अग्निमें मंत्रोंकी आहुति दे रहा हो। अुनके चेहरे पर अुदासी नहीं बल्कि अेक प्रकारका आत्मतेज था।

अुस दिन जमनालालजीकी पवित्र स्मृति हृदय-पटल पर नाचती रही और मैं सोचता रहा कि अुनके अधूरे कामको आगे बढ़ानेमें मैं कैसे मददगार हो सकता हूं, गोसेवाका काम कैसे सुव्यवस्थित हो सकता है?

शामको अुनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिअे वर्धामें सभा हुअी। मैं भी अुसमें गया था। अुसमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुअे विनोबाजीने कहा, "जमनालालजीके साथ मेरा २० सालका परिचय था। लेकिन अुनके मनकी जैसी अुन्नत अवस्था मैंने अिन सवा दो महीनोंमें देखी वैसी कभी नहीं देखी थी। मनकी अैसी अुन्नत अवस्थामें मृत्यु प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है। जमनालालजी प्राप्त कर सके। यह सोचकर मुझे अुनकी मृत्युसे दुःख नहीं बल्कि आनन्द हुआ है। अैसी पवित्र मृत्यु पानेका हम सब प्रयत्न करें। जब आत्मा अपने संकल्पको शरीरमें पूरा होते नहीं देखता, तब वह अुस शरीरको फेंककर सबमें प्रवेश करके अपना कार्य करता है। वही जमनालालजीने किया है। अीश्वर हम सबको बल दे कि हम भी जमनालालजीकी-सी मृत्यु प्राप्त कर सकें। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।"

जानकीदेवीने अपने हिस्सेकी सारी सम्पत्ति गोसेवाके लिअे गोसेवा-संघको समर्पण कर दी और अपना जीवन भी गोसेवामें लगानेका निश्चय किया। वे धीरजसे अपने काममें लग गअीं। अुनके पास अिस प्रकारकी शास्त्रीय योग्यता तो नहीं है जो आजकलके जमानेको चकाचौंध कर सके। अुनका समझानेका और बात करनेका तरीका बिलकुल पुराने ढंगका है। लेकिन अुनके दिलमें गोसेवाकी ही नहीं, बापू और विनोबाके हरअेक रचनात्मक काममें अपने आपको खपा देनेकी तमन्ना है। मैं तो अुनको काफी

सताता हूं। और प्रेमसे वे भी मुझे काफी गालियां सुना देती हैं। लेकिन मेरी अुनके प्रति कितनी श्रद्धा है और अुनका मेरे प्रति कितना प्यार है, अिसका अन्दाजा दूसरे नहीं लगा सकते। दधीचिकी तरह अगर गोसेवामें अुनकी हड्डियोंका अुपयोग हो सकता हो तो वे खुशीसे अपनी हड्डियां दे देंगी। सारे देशमें गोसेवा, भूदान, संपत्ति-दान आदिके कामसे वे अकेली ही घूमती रहती हैं। अुनकी अिस सेवा और लगनको देखकर भारत-सरकारने अुन्हें पद्म-भूषणकी अुपाधि प्रदान की है। अुनकी कंजूसीसे लोग तंग तो आ जाते हैं। पर, अुन्होंने बापूजीके आदेश और आशीर्वादके अनुसार अपनी शक्तिभर काम करनेमें कोअी कमी रखी है यह तो कोअी नहीं कह सकता। अिसमें अुनकी पतिभक्ति, गोभक्ति, देशभक्ति, गुरुभक्ति, सब कुछ आ जाता है। अिसको कहते हैं शुभ संकल्प और दृढ़ निश्चय।

बापूजीने जमनालालजीके वियोगको अपनी कड़ी परीक्षा माना और 'हरिजनसेवक'में लिखा:

> बाअीस वर्ष पहलेकी बात है। तीस सालका अेक नवयुवक मेरे पास आया और बोला: 'मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूं।' मैंने आश्चर्यके साथ कहा, 'मांगो। चीज मेरे बसकी होगी तो मैं दूंगा।'
>
> नवयुवकने कहा: 'आप मुझे अपने देवदासकी तरह मानिये।' मैंने कहा, 'मान लिया! लेकिन अिसमें तुमने मांगा क्या? दरअसल तो तुमने दिया और मैंने कमाया।'
>
> यह नवयुवक जमनालाल थे। वे किस तरह मेरे पुत्र बनकर रहे, सो तो हिन्दुस्तानवालोंने कुछ कुछ अपनी आंखों देखा है। जहां तक मैं जानता हूं, मैं कह सकता हूं कि अैसा पुत्र आज तक शायद किसीको नहीं मिला है।
>
> यों तो मेरे अनेक पुत्र और पुत्रियां हैं, क्योंकि वे सब पुत्रवत् कुछ न कुछ मेरा काम करते हैं। लेकिन जमनालाल तो अपनी अिच्छासे पुत्र बने थे। और अुन्होंने अपना सर्वस्व दे दिया था। मेरी अैसी अेक भी प्रवृत्ति नहीं थी जिसमें अुन्होंने दिलसे पूरी पूरी सहायता न की हो और वह सभी कीमती साबित न हुअी हो। क्योंकि अुनके पास बुद्धिकी तीव्रता और व्यवहारकी चतुरता दोनोंका सुन्दर मेल था। धन तो कुबेरके भण्डार-सा था।

मेरे सब काम अच्छी तरह चलते हैं या नहीं, मेरा समय कोअी नष्ट तो नहीं करता, मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है या नहीं, मुझे आर्थिक सहायता बराबर मिलती है या नहीं, अिसकी फिक्र अुनको बराबर रहा करती थी। कार्यकर्ताओंको लाना भी अुन्हींका काम था। अब अैसा दूसरा पुत्र मैं कहांसे लाअूं? जिस रोज मरे अुसी रोज जानकीदेवीके साथ वे मेरे पास आनेवाले थे। कअी बातोंका निर्णय करना था। लेकिन भगवानको कुछ और ही मंजूर था। अैसे पुत्रके अुठ जानेसे बाप पंगु बनता ही है। यही हाल आज मेरा है। जो हाल मगनलालके जानेसे हुअे थे, वे ही अीश्वरने दुबारा फिर मेरे किये हैं। अिसमें भी अुसकी कोअी छिपी कृपा ही है। वह मेरी और भी परीक्षा करना चाहता है। करे। अुत्तीर्ण होनेकी शक्ति भी वही देगा।

सेवाग्राम, १६–२–'४२ बापू

अूपरके लेखसे पांचवें पुत्रकी योग्यता और बापूकी वेदनाका स्पष्ट दर्शन होता है।

२०

गोशालासे बिछोह और मेरी बचना

जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद गोसेवा-संघका नया संगठन बना। अध्यक्ष माता जानकीदेवी बजाज बनी, अुपाध्यक्ष श्री घनश्यामदासजी बिड़ला और मंत्री स्वामी आनन्द बनाये गये। ये लोग चाहते थे कि बापूजीके आस-पास ही गोसेवा-संघका गोपालन-केन्द्र खोला जाय। अिस दृष्टिसे अिन लोगोंने आसपासके गांवोंमें जमीन तलाश की, लेकिन मौकेकी जमीन नहीं मिली। अेक रोज सरदार वल्लभभाअीने स्वामीसे कहा, "अरे भाअी, तुम अिधर-अुधर क्यों घूमते हो? आश्रमकी ही खेती और गोशाला लेकर काम करो न।" अब तक अुनके मनमें अिस प्रकारका विचार था या नहीं यह तो भगवान जाने, लेकिन सरदारजीके कहनेसे अुनको यह विचार ठीक लगा। बापूजीसे पूछा गया तो अुन्होंने कहा, "मैंने अिस प्रकार सोचा तो नहीं है तो भी अगर बलवन्त-

सिंह और पारनेरकर राजी हो जायं तो मैं राजी हो जाअूंगा।" स्वामीने मुझसे कहा, "हमने तलाश की है लेकिन आसपास कोअी ठीक जमीन नहीं मिल रही है। अगर न मिल सके तो हम आपकी जमीन और गोशालाका अुपयोग करना चाहते हैं। बापूजीने कहा है कि 'अगर बलवंतसिंह और पारनेरकर राजी हो जायं तो मुझे कुछ भी हर्ज नहीं होगा। तुम बलवन्तसिंहसे बात करो।' मैंने कहा कि अगर बापूजी चाहते हैं तो मुझे क्या हर्ज है। स्वामीने कहा, "अगर आपको प्रयोगके लिअे जमीन चाहिये तो थोड़ी हम दे सकते हैं।" मैंने कहा, "मुझे कोअी व्यक्तिगत प्रयोग नहीं करना है।"

मैंने अपनी डायरीमें लम्बा नोट लिखा कि अगर बापूजी सचमुच ही खेती और गोशाला गोसेवा-संघको सौंपना चाहते हों तो भले सौंपे, क्योंकि आखिर यह सब अुन्हींकी अिच्छासे खड़ा हुआ है। मुझे दुःख तो जरूर होगा। क्योंकि मैंने अिसके निर्माणमें काफी शक्ति लगाअी है और जहां तक अिस कामको पहुंचानेका सोचा था वहां तक नहीं पहुंचा सका और बीचमें ही यह विघ्न आ गया। गोसेवा-संघके साथ काम करना भी मेरे लिअे कठिन पड़ेगा, क्योंकि दो कल्पनाअें साथ साथ नहीं चल सकेंगी। अिसलिअे मुझे अपने आपको गोशालासे हटाना ही पड़ेगा। मैं अुनका रास्ता साफ कर दूंगा।

अिस पर बापूजीने लिखा: अिसका अर्थ अिनकार है, अिसीलिअे तो मैंने कहा कि बलवन्तसिंह और पारनेरकरको पूछो और वे लोग राजी हों तो मुझे कुछ अड़चन नहीं होगी। वे लोग तुम्हारी बात समझे भी नहीं हैं। अुनसे बात करो।

२८–४–'४२ बापू

महावीरप्रसादजी पोद्दार और स्वामीने मेरे पास खबर भेजी कि आपको बापूजीने बुलाया है। अिस परसे मुझे लगा कि ये लोग बापूजीके मार्फत मुझे दबाना चाहते हैं। खबर लानेवालेसे मैंने कह दिया कि जब बापूजी बुलावेंगे तब चला जाअूंगा। अुन लोगोंको बीचमें पड़नेकी जरूरत नहीं है।

मैं कामसे कहीं जा रहा था। बीचमें स्वामी और पोद्दारजी मिल गये। वहीं अुन्होंने बात दोहराअी और मुझे समझानेकी कोशिश की। साथ ही यह भी कहा कि बापूजीने हमसे कह दिया है कि तुम बलवन्तसिंहको समझानेकी कोशिश करो। अगर वह नहीं मानेगा तो अेक आदमीके कारण अितना बड़ा काम रोका नहीं जा सकता है। अिसलिअे आप मान जायं

तो अिसमें आपकी शोभा है। अिस परसे मुझे लगा कि ये लोग मेरे साथ औपचारिक भाषाका प्रयोग करना चाहते हैं। अिसके पीछे तलवार लटकती है। अुनकी बातचीतके अिस रुखने मुझे विद्रोही बना दिया। मैंने कह दिया कि "अगर सचमुच अैसी बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नहीं है। क्योंकि मैं यह समझ गया हूं कि मुझे केवल राजी रखनेकी कोशिश की जा रही है। होगा तो वही जो आप लोगोंने ठान लिया है। मैं अितना मूर्ख नहीं जो अिस डरसे राजी हो जाअूं। तब तो आज तककी मेरी साधना फिजूल ही जावेगी।" पोद्दारजीने कहा, "भाअी, आजका जमाना ही अैसा है कि औपचारिक भाषा बोलनी पड़ती है। जब आप जानते हैं कि काम होने ही वाला है तो राजीसे कबूल करनेमें आपकी भलमनसाहत होगी। अिस पर घनश्यामदासजी ३ लाख रुपये खर्च करनेवाले हैं।" मैंने कहा, "अैसी भलमनसाहत और घनश्यामदासजीके ३ लाख रुपयेकी मेरे पास कोअी कीमत नहीं है। अिस प्रकारसे मेरे साथ संधिकी कोशिश करना बेकार है।"

बादमें मैं बापूजीके पास गया और अुनसे पूछा कि आपने मुझे बुलाया था। बापूजीने कहा, "मैंने तो नहीं बुलाया था। हां, अुन लोगोंको तुमसे बात करनेको कहा था। तुमको कुछ कहना हो तो कहो। अितनी बात मुझे लगती है कि गोशाला गोसेवा-संघको देनेसे मेरे सिरका भार हलका हो जावेगा। लेकिन तुम सोचो।" मैंने बापूसे कहा कि मैं सब आश्रमवासियोंसे मिलकर आपको बताअूंगा।

बादमें श्री चिमनलालभाअी और मुन्नालालभाअीके साथ बैठकर मैंने विचार किया। हम तीनों अिस नतीजे पर पहुंचे कि अगर गोशाला अुनको देनी ही हो तो मेरा समावेश अुसमें नहीं हो सकेगा। दोपहरके भोजनके बाद जानकीबहन आअीं और कहने लगीं, "आप थोड़े अुदार बनो।" मैंने कहा, "मेरा काम करनेका तरीका अलग है और अुनका अलग होगा। अिसलिअे या तो मुझे हटाकर पूरा काम अपने हाथमें ले लो या मेरे हाथके नीचे अपने प्रयोग करो। मेरे पास बीचका रास्ता नहीं है। मैंने अपने जीवनमें आज तक जो सीखा है अुसे मैं खोना नहीं चाहता हूं। अिसमें बापूजीका भी काफी हाथ है। घनश्यामदासजी या और कोअी अिसमें ३ लाख खर्च करेंगे अिसकी मेरे नजदीक कुछ भी कीमत नहीं है। हां, बापूजी मुझे योजना दें और अुसके लिअे पैसा दें तो अुसे पूरा करनेका मैं सामर्थ्य रखता हूं। लेकिन कठपुतली

बनकर मैं कुछ भी करनेको तैयार नहीं हूं।" बादको मैं संतरेके बगीचेमें जाकर सो गया। शामको अुड़ती हुअी खबर मिली कि खेती और गोशाला बापूजीने गोसेवा-संघको सौंप दी है। साथ साथ यह भी खबर मिली कि गोसेवा-संघ मुझे साथ रखनेके लिअे तैयार नहीं है। दूसरी खबरका तो कुछ भी अर्थ नहीं था, क्योंकि मैं खुद ही साथ रहनेको तैयार नहीं था। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता था कि मेरे साथ पूरी बात किये बिना बापूजी अैसा कर सकते हैं। मैंने अपने मनके विचार डायरीमें अिस प्रकार लिखे: "अगर बापूजीने सचमुच अैसा किया हो तो मेरी और बापूजीकी बड़ी कसौटी हो जावेगी। मैं मन ही मन कह रहा था कि देखूं अीश्वर क्या चाहता है। अपनी बात पर अटल रहनेका अीश्वर बल दे यही प्रार्थना है। बाकी जगतके सम्बन्ध तो स्वार्थसे सने हुअे ही रहते हैं, लेकिन बापूजीका सम्बन्ध निःस्वार्थ भावसे जुड़ा है। अगर वह भी टूटा तो मुझे अेक बहुत बड़ा पाठ सीखनेको मिलेगा। मेरी अीश्वर पर पूरी श्रद्धा है कि वह जहां भी मुझे ले जायगा, वहां मेरे कल्याणके लिअे ही ले जायगा। अगर मुझसे और भी शुद्ध और कठिन साधना करानी होगी तो वह मुझे यहांसे जबरन् अुठा ले जायगा और अिससे भी अधिक लायक बनानेकी परिस्थितिमें रख देगा। अिसका मुझे पूर्ण विश्वास है। हे भगवान, तू कितना ही नाच नचा, लेकिन आखिर तो तुझे ही व्यवस्था करनी होगी। आज तकके अनुभवके आधार पर मैं कबूल करता हूं कि तूने मेरा कल्याण करनेके लिअे ही पहले कड़वा घूंट पिलाया है। अिसलिअे अिस अंधकारकी आड़में मुझे तेरी ज्योति नजर आती है, हालांकि मैं अभी तक अुसके लायक नहीं बना हूं। तेरे अूपर विश्वास जरूर है। यह तेरी मेरी गूढ़ सगाअी किसीको मालूम न हो अिसका भी मैं ध्यान रखता हूं। और तू भी रखता है। यह बात कागज पर लिखना भी अपना भेद खोलना है। मौनमें ही सब कुछ समाया है। गुड़की मिठासकी व्याख्या करने बैठना मूर्खता नहीं तो और क्या है? बस, होने दे तमाशा और देखने दे मुझे कैसा आनंद आता है।"

मैंने बापूजीको लिखा:

परम पूज्य बापूजी,

गोशालाके बारेमें आपके सामने मेरे बारेमें महावीरप्रसादजीने जो बात कही है वह अेकपक्षीय है, क्योंकि अुस समय मुझे भी

बुलाना चाहिये था। आपसे यह कहा गया है कि बलवन्तसिंह तो यह कहता है कि मेरे साथ संधि नहीं हो सकती है। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि अुन्होंने मुझे धमकी दी थी कि आप न मानोगे तो भी काम तो होने ही वाला है, अच्छा है आप समझ जायं। अिस पर मैंने कहा कि अगर यही बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नहीं रह जाता और अिस प्रकार धमकीकी तलवार मेरे सिर पर लटकाकर आप मुझे झुका नहीं सकते; अगर आपकी धमकीसे मैं झुक जाअूं तो आज तकका मेरा प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा। अिसलिअे मैंने कहा था कि अिस मनोवृत्तिसे मेरे साथ संधि नहीं हो सकती। जब तक मुझे अैसा न लगे कि मेरी राय अमान्य हो सकती है, तब तक अिस डरसे कि अच्छा है अिनकी ही बात मान लूं, मैं क्यों अपनी बेअिज्जती करूं? यह बात मेरे स्वभावमें नहीं है कि मैं किसीके डरसे झुक जाअूं। आपने जो फैसला किया होगा वह तो ठीक ही होगा। लेकिन मुझे समझाकर और मेरी बात समझकर आप फैसला करते तो अच्छा होता। दूसरोंकी बात सुनकर किया होगा तो मुझे अिस बातका दुःख होगा कि मेरी बात बिना सुने आपने फैसला क्यों किया। आप अपने फैसलेसे जल्दी सूचित करेंगे तो मुझे शांति मिलेगी।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके प्रणाम

अूपरकी डायरी और पत्र, जो डायरीमें ही था, पढ़नेके बाद मेरी डायरीमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा सब लेख पढ़ गया। मुझे बड़ा दुःख होता है। यहां अीश्वरका नाम लेना अज्ञानसूचक है। तुम्हारे लेखमें अहंकार भरा है। तुमको बुलाकर क्या फैसला करना था? गोसेवा-संघ हमारा सब काम ले ले तो हमें खुश होना है। अुनमें से किसीको स्वार्थ नहीं है, तो भी तुमको स्वार्थकी बू आती है। तुमको धमकी देनेकी बात कहां है? . . .को तो बेचारीको मैंने भेजा था। तुमको विनय करने आअी थी। मैंने भी कहा, विनय करो। ठीक है जो अच्छा

लगे सो करो। मैं तो अब भी कहता हूं कि जैसा संघवाले कहें वैसा करो। अिसमें तुम्हारी शोभा है। तुम्हें मुझको कुछ समझाना है तो समझाओ। वे लोग भी तो सब मुझको पूछकर ही करनेवाले हैं। वे भी तुम्हारे जैसे ही सेवक हैं। वे भी अुसी अीश्वरको भजते हैं जिसको तुम। फरक अितना है तुम नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। अहंता तुममें अितनी है कि किसीके साथ काम नहीं कर सकते हो। जरा नीचे अुतरो, जरा समझो।

१-५-'४२ बापूके आशीर्वाद

अिसके अुत्तरमें मैंने लिखा:

परम पूज्य बापूजी,

आपका लेख पढ़कर मुझे अितना दुःख हुआ कि आज तक कभी नहीं हुआ था। अिसमें अितना रोष है कि अुसे हजम करना मेरी शक्तिके बाहरकी चीज है। अहिंसाकी तो अिसमें बू तक मुझे नहीं आती है। 'नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो।' यह मर्मभेदी वाक्य आपकी कलमसे!! 'तुमको बुलाकर फैसला क्या करना था?'—आपके अिस वाक्यने मेरी सारी भावनाओंको कुचल डाला है। वे सेवक नहीं हैं या अीश्वरको नहीं भजते या अीश्वरका काम नहीं करते हैं, अैसा मैंने कभी नहीं कहा है। चूंकि आप सबके अन्तरकी बात जानते हैं अिसलिअे अैसा कह सकते हैं कि 'नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो।' मेरे लिअे आपका यह वाक्य जले पर नमक डालता है। अरे बापू, आप मेरे प्रति अितना अविश्वास भी रख सकते हैं अिसका मुझे आज पता चला! दरअसल मेरा वह लेख आपके लिअे नहीं, मेरे लिअे ही था। खेती और गोशालाके अेक अेक झाड़ और अेक अेक जानवरके साथ मेरा आत्मीय संबंध है। वह किसीको दिखानेके लिअे नहीं या अीश्वरका नाम लेकर अपना ही काम करनेके लिअे नहीं है। अुसके पीछे मैंने अपने खूनका पसीना बहाया है। वह नाम या अपने कामके लिअे नहीं। अुसके करने और सोचनेमें जो आत्मिक संतोष मिलता है, अुसके लिअे आप या और कोअी अिसमें मेरा स्वार्थ मानें

तो भले मानें। अगर नाम अीश्वरका और काम अपना ही किया होता तो आप या और कोअी मुझसे अिस चीजको अिस तरहसे छीन नहीं सकता था। अेक तरफ तो आप यह कहते हैं कि बलवन्तसिंहको राजी कर लो और दूसरी तरफ लिखते हैं 'तुमको बुलाकर क्या फैसला करना है?' मुझे लगता है कि आपका काम था कि मुझे बुलाकर समझा देते कि गोशालाकी भलाअी संघको ही देनेमें है और तुम संघकी दृष्टिसे काम करो। तो मैं आपकी बातका अिनकार थोड़ा ही करनेवाला था।...को मैंने साफ कह दिया था कि अगर बापूजी चाहें तो मैं गोसेवा-संघके पैमाने पर काम कर सकता हूं। संघके साथ काम करनेमें मुझे यह अड़चन थी कि अगर संघवाले ...की दृष्टिसे यहांका सारा कार्यक्रम बनायें और अुसको मेरे अूपर लादना चाहें तो अिसे मेरी आत्मा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और अिससे अुनको भी अपने विचारके अनुसार काम करनेमें अड़चन होगी और मुझको भी। अगर मैं अुनसे दबकर काम करूंगा तो मेरा तेजोवध होगा और काम भी बिगड़ेगा। अिसलिअे पहलेसे ही अलग हो जाना सुरक्षित मार्ग है। हो सकता है अिसमें मेरी भूल हुअी हो।... या ...के साथ काम करनेमें मुझे किसी प्रकारकी अड़चन नहीं थी।

गोसेवा-संघका काम बढ़े और फले-फूले, अिससे मुझे जितनी खुशी हो सकती है अुतनी थोड़ी है। आपको याद हो तो मैं आपसे कअी बार झगड़ा हूं कि आपने जिस प्रकार चरखा-संघ, ग्रामोद्योग-संघ अित्यादिका काम व्यापक रूपसे किया है, अुसी प्रकारसे गोसेवा-संघका आप क्यों नहीं करते हैं। मुझे लगता है कि आपने जो लिखा है अुस पर फिरसे विचार करियेगा। मेरा लेख भी फिरसे पढ़ियेगा। अगर फिर भी अुसका अर्थ यही निकले कि मैं नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहता हूं तो अैसे स्वार्थी आदमीके लिअे आपके पास स्थान नहीं होना चाहिये।

मैं यह सब लिख रहा था कि बापूजीका बुलावा आ गया। मैं गया। बापूजीने कहना आरंभ किया: "देखो, मेरे मनमें गोशाला संघको देनेका विचार नहीं था। लेकिन मेरे ही आसपास अिनकी काम करनेकी अिच्छा रही, जो ठीक भी थी। क्योंकि मैं भी देखना चाहता हूं कि ये लोग कितना

काम कर सकते हैं। अिनको दूसरी अुपयुक्त जमीन न मिली तो मुझसे पूछा। मैंने कहा, अगर बलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जायं तो मैं राजी हो जाअूंगा। अिसलिअे ये लोग तुम्हारे पास गये। अिसमें धमकीकी क्या बात थी? तुमको तो खुश होना चाहिये था कि ये लोग गोसेवाका बड़ा काम करना चाहते हैं तो अपना भार अितना कम हुआ। मेरे सिर पर तो लड़ाअी झूल रही है। कब क्या होगा कहना कठिन है। यह भार हलका हो जाय तो अच्छा ही है। तुम्हारा धर्म है कि तुम अुनके साथ काम करो और अुनकी मदद करो। अपने अनुभवका लाभ अुनको दो। आखिरमें वे भी तो गोसेवा ही करना चाहते हैं। तरीकेमें फरक हो सकता है तो अेक-दूसरेको अपनी बात समझाकर आगे बढ़ सकते हो। मेरी सलाह है कि तुम अपनी सेवा गोसेवा-संघको दो। हां, यह दूसरी बात है कि वे तुम्हारी सेवाका अस्वीकार कर दें तो तुम्हारा रास्ता साफ हो जायगा। लेकिन अपनी तरफसे अिनकार करना किसी भी तरह अुचित न होगा। तुम अिस पर विचार करो। मैं कहता हूं अिसलिअे नहीं। लेकिन जब तुमको भी अैसा लगे कि तुम्हारे सहयोगसे अच्छा काम हो सकता है और गोवंशकी सेवा हो सकती है तो तुम्हारा धर्म हो जाता है कि तुम अुनके साथ काम करो।"

बापूजीकी बातसे मुझे पूरा समाधान तो नहीं हुआ, लेकिन मनमें जो अुद्वेग था वह कुछ कम हो गया। मैंने विचार किया कि अगर मुझे काम करनेकी स्वतंत्रता मिली तो मैं आश्रमकी तरफसे ही गोसेवा-संघके साथ काम करनेके लिअे अपने आपको तैयार कर लूंगा और जो कुछ अड़चन आयेगी वह बापूजीके सामने रख दिया करूंगा। आखिर संघबलसे अधिक काम बढ़नेकी आशा तो रखी ही जा सकती है।

मैंने अपना यह विचार और सारी डायरी किशोरलालभाअीको पढ़ाअी और कहा, "आपको कष्ट देनेकी अिच्छा तो नहीं थी। लेकिन क्या करूं? बापूजीके लेखसे मुझे भारी आघात पहुंचा है। अैसा लिखकर बापूजीने भारी भूल की है। मेरी आन्तरिक भावनाके बारेमें अैसा निर्णय देना अुनके लिअे योग्य नहीं था।"

किशोरलालभाअीने सब पढ़ा और कहा, "अब अिसके बारेमें अधिक खुलासा करनेसे कुछ लाभ न होगा। मेरा अैसा अनुभव है कि अैसी बातोंको भविष्यके अूपर छोड़ देना चाहिये। जिसकी भूल होगी अुसको महसूस हो

जायगी। मैं अब आपका अिस तंत्रमें रहना लाभदायी नहीं मानता हूं, क्योंकि अिसकी शुरुआत ही बिगड़ गअी है। आप संतोषपूर्वक काम कर सकेंगे अैसा मुझे नहीं लगता है। अिसलिअे अगर आपको कुछ करना है तो छोटे पैमाने पर अलग ही स्वतंत्रतापूर्वक करना चाहिये, जो सेवाग्रामके किसानोंके लिअे अुपयोगी हो सके और जिससे आपको भी संतोष मिल सके।" किशोरलालभाअीकी यह बात मुझे पसन्द आयी। लेकिन यहां पर अलग काम करनेमें अनेक बाधायें आयेंगी, अैसा सोचकर अलग काम करनेका विचार मैंने छोड़ दिया और तय किया कि अगर संघवाले मेरी मदद चाहेंगे तो जरूर दूंगा। मैंने बापूजीको लिखा :

सेवाग्राम, ३–५–'४२

परम पूज्य बापूजी,

मैंने अपनी सारी डायरी पू० किशोरलालभाअीको पढ़ाअी है। वे मेरी और संघकी भूमिका समझ गये हैं अैसा मुझे लगता है। मैं नाम अीश्वरका लेकर काम अपना करना चाहता हूं, यह लिखकर और मुझे बिना समझाये गोशाला संघको देकर आपने मेरे साथ न्याय किया या अन्याय, अिसकी दलीलमें न पड़कर अिसे मैं भविष्यके अूपर छोड़ता हूं। अगर अपनी भूल समझमें आवेगी तो आपसे और संघसे क्षमा मांगनेमें मुझे शर्म नहीं आयेगी। मैंने अपनी सारी कठिनाअी पू० किशोरलालभाअीको समझा दी है। मेरा गोसेवा-संघके साथ कैसे मेल बैठ सकता है अिसका रास्ता आप निकालकर मुझे बतानेकी कृपा करियेगा। जब आपको समयकी अनुकूलता हो मुझे बुला लीजियेगा।

कृपापात्र

बलवन्तसिंहके प्रणाम

सेवाग्राम, ४–५–'४२ : डायरीसे

आज शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे बुलाया। पू० किशोरलाल-भाअी भी वहीं पर थे। अुन्होंने संघकी और मेरी सारी मनोभूमिका समझाअी। बापूजीने कहा, "गोसेवा-संघने हमारा भार हलका कर दिया यह तो अच्छा ही हुआ। मेरी राय है कि बलवन्तसिंहको यहीं रहना चाहिये। कभी अैन मौके पर काम आ जायगा। जाना चाहे तो जा भी सकता है।"

मैंने कहा, "सेवाग्राममें ही रहनेका आग्रह नहीं है, लेकिन अेकाअेक आपको छोड़कर जानेकी अिच्छा भी नहीं है। अगर आप मेरी भावनाको समझ गये हैं और अुसकी रक्षा करते हुअे गोसेवा-संघमें मेरी सेवा देना चाहते हैं तो मैं अपने आपको तैयार कर लूंगा।" बापूजीने कहा, "यह तो बड़ी खुशीकी बात है। अगर वे तुम्हारा अुपयोग करना नहीं चाहें तो मैं अेक मिनट भी तुमको अुनके पास नहीं रखना चाहूंगा।" और किशोरलालभाअीसे बोले, "तुम कल स्वामीसे बात करके सब तय कर देना और मुझे आखिरी खबर सुना देना।" हमारी यह बात करीब अेक घंटे तक चली।

सेवाग्राम, ५-५-'४२ : डायरीसे

आज पू० किशोरलालभाअीने मुझे, स्वामीको, पारनेरकरजीको और चिमनलालभाअीको बुलाकर सब बातें कीं। स्वामीने मेरी सेवा लेनेसे अिनकार कर दिया।

बस, मेरा रास्ता साफ हो गया। बापूजीने जो कल कहा कि तुम्हारे काममें कोअी दखल नहीं देगा यह बात गलत सिद्ध हुअी और अब यह बात नहीं रही कि मैं गोसेवा-संघके साथ काम करना नहीं चाहता हूं। पू० किशोरलालभाअीने हम दोनोंसे सद्भावना बढ़ानेको कहा। गोशालाका चार्ज आज ही देनेका तय हुआ और मैंने दो बजे भाअी कमलाशंकर मिश्रको चार्ज दे दिया। अेक रोज स्वामीने किशोरलालभाअीसे शिकायत की कि बलवन्तसिंह गोशालाके मजदूरोंको बहकाता है अिसलिअे वे काम छोड़ रहे हैं। किशोरलालभाअीने कहा कि अिसका अर्थ तो यह है कि बलवन्तसिंह सेवाग्राम भी छोड़ दे। स्वामीने कहा, "हां, यही है।" किशोरलालभाअीने यह बात बापूजीको बताअी तो बापूजीने कहा, "बलवन्तसिंह अैसा कर ही नहीं सकता है। स्वामी तो कल यह कहेगा कि बाको भी यहां न रहने दो तो क्या मैं बाको निकाल दूंगा? बलवन्तसिंह कहीं नहीं जायगा।" बापूजीके अिस प्रेम और दृढ़ताको देखकर मेरा सारा दुःख हलका हो गया। असलमें तो मैंने अिससे अुलटा ही किया था। सब नौकरोंको मैंने समझाया था कि कोअी काम न छोड़े और अच्छा काम करे, क्योंकि मेरे मनमें अुनका काम बिगाड़नेकी कल्पना ही नहीं थी। लेकिन वहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं होती। फिर भी बापूजीका मुझ पर विश्वास है, अितना मेरे लिअे बस है।

अन्त भला तो सब भला। गीतामाताने कहा है: 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्। (अ० १८, श्लोक ३७) मेरी बात अुस रोज सबको कड़वी लगी थी और मेरे हाथसे गोशाला निकल जानेका मुझे भी दुःख हुआ था। लेकिन आज जब अपनी अिस डायरीके पन्ने मैं अुलटता हूं तो मुझे लगता है कि मेरी बात ही सही थी। आज सेवाग्राममें न तो गोसेवा-संघ है, न अुसके कार्यकर्ता हैं।

२१
सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग

१. खजूर-गुड़ और नीरा

भाअी गजाननजी नायक बापूजीके पास कैसे आये, अिसकी पूरी जानकारी मेरे पास नहीं है। लेकिन अैसा लगता है कि ये भाअी मगनवाड़ीमें ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बनकर ही आये थे। कुछ दिन तो अुन्होंने सिंदी गांवमें ग्राम-सफाअीका तथा नीरा और गुड़का काम किया। लेकिन जब सेवाग्राममें हमारा डेरा जमा तो बापूजीने सेवाग्राममें नीरासे गुड़ बनानेका काम आरंभ करनेकी ठानी और अिसके लिअे भाअी गजाननजी नायक वहां आ गये। सेवाग्राममें खजूर तो काफी थी। अुससे लोग ताड़ी निकाला करते थे। चटाअी और पंखे भी बनाते थे। लेकिन बापूजी तो अुससे गुड़ बनाना चाहते थे। अिसलिअे सरकारसे खास अिजाजत लेकर मीठी नीरा लोगोंको पिलाने और गुड़ बनानेका काम आरंभ किया गया। भाअी गजाननजी खजूरका रस निकालनेवालोंके साथ खुद भी खजूर पर चढ़ते, नीरा निकालते तथा अुसका गुड़ बनाते। आश्रममें भी नीराका नाश्ता होने लगा। गांवके लोग भी वहीं जाकर नीरा पीने लगे। दो पैसे गिलासमें आधा सेर मीठे पेयके रूपमें लोगोंको बड़ा पोषण मिल जाता था। जब गुड़के अनेक नमूने भाअी गजाननजी बापूजीके सामने रखते तो बापूजी सबकी बानगी अुठा अुठा कर देखते और खुश होते थे। बापूजीकी खुशीको देखकर भाअी गजाननजी फूले न समाते। हम सब लोग अुसी गुड़का अुपयोग करते थे।

अेक दिन बापूजीने मुझसे कहा, "तुम गजाननके कामको देखते हो या नहीं? वह भी तो अेक ग्रामसेवाका ही काम है न? और तुम तो यहांके भूमिया हो। हर काममें रस लेना और अुसकी कलाको सीख लेना तुम्हारा काम है। अिससे गजाननको भी मदद मिलेगी। अरे, खजूर भी तो अेक प्रकारकी गाय ही है न? देखो तो सही अुसका दूध तो तुम्हारी गायसे भी मीठा होता है। तुम तो पीते हो न?" असलमें मैं नीरा नहीं पीता था, क्योंकि अुसमें अेक प्रकारकी गंध आती थी जो मुझे पसंद नहीं थी; और गजाननजीके पास भी नहीं जाता था। बल्कि मेरा और अुनका तो झगड़ा भी हो गया था। क्योंकि मैंने अपनी गोचर-भूमिमें से खजूरके हजारों पेड़ कटवा डाले थे, जिसका केस मेरे अूपर भाअी गजाननजीने बापूजीकी अदालतमें चलाया था। लेकिन जब बापूजीने आग्रहपूर्वक कहा तो मैं गजाननजीके पास जाने लगा और यहां तक आगे बढ़ा कि खजूर छेदनेमें अुनका चेला बन गया। मुझे खजूर पर चढ़कर अुसे छेदने और सुबह नीरा अुतारनेका अितना शौक लगा कि पैरोंमें फोड़े होते हुअे भी शामको खजूर छेदकर मटकी बांधने और सुबह अुसे अुतार कर गुड़ बनानेके लिअे मैं लंगड़ाता-लंगड़ाता भी वहां पहुंच जाता था। वह काम मुझे बहुत ही पसन्द आ गया था। नीरा पीनेका अभ्यास भी हो गया था। आज भी अगर मेरे पास खजूरके झाड़ हों तो नीरा निकालनेकी बात मनमें है। भाअी गजाननजी तो अिस कलामें अितने पारंगत हो गये कि अुन्होंने सारे हिन्दुस्तानमें अिसका प्रचार और संगठन किया। यहां तक कि दिल्लीमें भारत-सरकारके ताड़गुड़-विभागके बड़े अफसरका पद अुनको मिला। बड़ा पद मिलने पर भी अुन्होंने न तो अुस पदका १६०० रुपया वेतन लिया, न अुसकी पहले दर्जेके सफर आदि सुविधाओंका ही अुपयोग किया। परिश्रमी सेवकका अपना वही पुराना ध्येय अुन्होंने निभाया। अेक बार बात बातमें पू० श्रीकृष्णदास जाजूजीने मुझसे कहा था, "देखो, हमारे जो लोग सरकारमें गये अुन सबको वहांकी हवा लगे बिना न रही। अेक गजानन ही अैसा है जो अुस हवासे बचा है।"

बापूजीकी प्रयोगशालामें से अैसे अनेक सेवक निकले, जो आज भी अुसी चक्करमें घूम रहे हैं और देशकी अमूल्य सेवा कर रहे हैं। 'निकसत नाहिं बहुत पचि हारी रोम रोम अुरझानी'। अुनका प्रेम और आशीर्वाद

अनेक सेवकोंके रोम-रोममें अैसा रम गया है कि वे निकलना भी चाहें तो निकल नहीं सकता। भाअी गजाननजी नायक भी अुनमें से अेक हैं।

गजाननजी नायक शायद कोंकणके हैं। अुन्होंने मेट्रिक पास करके हाअीस्कूल छोड़ा। आजकल वे केन्द्रीय सरकारके ताड़गुड़-सलाहकार हैं, अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग बोर्डके ताड़गुड़-विभागके संचालक हैं और बम्बअीमें रहते हैं।

२. कुम्हार-काम

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल मगनवाड़ीमें कुम्हारका काम सीखते थे। अुनकी अिच्छा सेवाग्राममें बापूजीके निकट रहनेकी हुअी। बापूजीने अुन्हें अिजाजत दे दी। वे आ गये और लगे बरतन बनानेकी मिट्टी खोजने। बापूजीने अुनसे कहा, "सेवाग्राममें या अिसके आसपास जहां भी अच्छी मिट्टी मिले तुम अुसकी खोज करो। यों तो आज भी देहातके लोग मिट्टीके ही बरतनोंका अुपयोग अधिक करते हैं। अुनके पास धातुके बरतन खरीदनेके लिअे पैसे कहां हैं? और अैसे भी मिट्टीके बरतन स्वास्थ्यप्रद होते हैं। हां, अुनमें सुधारकी काफी गुंजाअिश है। तुमको अिसमें अुस्ताद बन जाना है।"

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अपनी धुनके पक्के थे। अुन्होंने मिट्टीकी खोज तो की ही, अच्छे कुम्हारोंकी भी खोज की। क्योंकि आखिर तो कुम्हारोंके धंधेका विकास करना था। वे कहींसे पांडुरंग नामक अेक कुम्हारको खोज लाये। अुसके परिवारको आश्रममें लाकर बसा दिया और खुद भी अुसके साथ कुम्हार-काममें जुट गये। खाने-पीनेके नये नये नमूने, पालिशदार कटोरे, नमकदानी (क्योंकि मसाला तो हमारी रसोअीमें था ही नहीं जो मसालादानी बनाते) वगैरा बरतन बनाते। सबसे मिट्टीके बरतनोंमें ही खाने-पकानेका आग्रह करते। दूसरे खाते या न खाते, लेकिन बापूजी तो मिट्टीके बरतनमें ही खाते थे। लकड़ीका चम्मच और मिट्टीका कटोरा बापूके साथ अन्त तक रहा। जेलसे लाया हुआ लोहेका कटोरा और पानीका टमलर भी बापूजीके साथ अन्त तक रहा। आश्रमके अेक कोनेमें कुम्हारका टंडीरा, अुसके बच्चे-कच्चे, अुसकी मिट्टी, अुसकी गाड़ी, बरतनोंका ढेर, बरतन पकानेका आवा! सारा अेक अद्‌भुत दृश्य था। जब नये नये नमूने बनाकर भाअी चन्द्रप्रकाशजी बापूजीको दिखाने लाते, तो बापूजीकी खुशीका पार न रहता। अुनका अुत्साह बढ़ानेके लिअे बापूजी काफी समय देकर अुनमें और भी सुधारकी सूचनायें

करते। जिस प्रकार मुझे गोसेवाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे देशमें कहीं भी जानेकी छूट थी, अुसी प्रकार भाअी चन्द्रप्रकाशजीको भी कुम्हार-कामके लिअे कहीं भी जानेकी छूट थी। अिसलिअे अुनको जहां जहां अच्छे कामका पता चलता वहीं वे दौड़ जाते। कुछ दिनके लिअे वे काशी विश्वविद्यालयमें भी सीखने गये थे। चीनीके बरतनोंका भी अुन्होंने अभ्यास किया। नये सुधारोंका कुम्हारोंमें प्रचार भी खूब किया। और अेक बार तो सेवाग्राममें कुम्हार-संमेलन भी करा डाला!

खजूर और ताड़ वृक्षोंसे नीरा निकालनेके बरतनोंमें अुन्होंने काफी सुधार किया था। पुराने ढंगके बरतनोंमें नीरा जल्दी खट्टी हो जाती थी और पीने या गुड़ बनाने लायक नहीं रहती थी। वे बरतन नीराको सोख भी जाते थे। भाअी चन्द्रप्रकाशजीने अैसी पालिश खोज निकाली जिससे नीरा जल्दी खट्टी न हो और बरतन अुसे सोखें भी नहीं। अिसका प्रचार अुन्होंने सारे हिन्दुस्तानमें किया, जो काफी कामयाब सिद्ध हुआ। चन्द्रप्रकाशजी जातिके बनिये होनेसे दुकानदारीका काम भी अच्छा कर सकते थे। अुन्होंने आश्रममें बापूजी और विनोबाजीके साहित्यकी छोटीसी दुकान भी आरंभ कर दी, जो अेक पंथ दो काज साधती थी। अिससे आनेवाले दर्शनार्थियोंको अच्छा साहित्य सहज ही प्राप्त हो जाता था और अुसमें से ही अुस कामका व्यवस्था-खर्च निकल आता था। यहां तक कि अुसमें से बची हुअी दस बारह सौकी रकमकी अेक थैली जब राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू आश्रममें राष्ट्रपति बननेके बाद पहली बार गये तब अुन्हें भेंट भी की गअी थी। मैं तो अुनको प्रजापतिके नामसे ही पुकारता था। आज भी मैं अिसी नामसे अुन्हें पुकारता हूं। अुनका साहित्य-प्रचार और मिट्टीके बरतनोंका प्रचार चालू ही है।

मुझे हंसी आया करती थी कि कुम्हार-काम भी कोअी प्रचारका काम है; यह तो गांव-गांवमें चलता ही है। लेकिन बापूजीकी दृष्टि बहुत ही बारीक और लंबी थी। वे देख रहे थे कि ग्रामोद्योगोंके साथ साथ हमारी ग्राम-जीवनकी संस्कृतिका भी लोप होता जा रहा है। और लोग छोटीसे छोटी चीजोंके लिअे शहरों और बड़े बड़े कारखानोंके गुलाम बनते जा रहे हैं। अिससे वे अपना पैसा और स्वास्थ्य दोनों ही बरबाद कर रहे हैं। अिनको आत्म-निर्भर कैसे बनाया जाय, अिनकी आमदनीमें दो पैसे कैसे बचाये

कीमत अुसे पूरी चुकानी पड़ती है। अिसमें अर्थशास्त्र तो है ही, लेकिन धर्मशास्त्र भी भरा है। तुमको तो आज मैं गोसेवाके लिअे तैयार कर रहा हूं न? और तुम्हारी भी अिस काममें रुचि है। तो अुसका पूरा शास्त्र समझ लेना आवश्यक है। नअी तालीमके लिअे मैं यह कहता हूं कि नअी तालीम मांके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये, तब ही हम अुसमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन यह विषय आर्यनायकम् और आशादेवीका है। वे अुसे समझने और कार्यरूपमें परिणत करनेमें दिलोजानसे जुटे हुअे हैं। मैं जानता हूं कि आशादेवी और आर्यनायकम् बबुनी (अुनका स्वर्गस्थ बच्चा आनन्द) को भूल नहीं सकते। लेकिन मैंने अुनसे कहा है कि सेवाग्रामके और आसपासके देहातोंके सब बच्चे तुम्हारे हैं। सारे देशके बच्चोंको अपना समझोगे तो अुनमें तुम्हें बबुनीका दर्शन मिल जायगा। खैर, यह तो मैं विषयान्तरमें चला गया। तुमको तो यह कहने जा रहा था कि गायकी पूरी सेवा अुसके चमड़े और अवशेषोंका पूरा पूरा अुपयोग करने तक जाती है। अगर हम गायको कसाअीकी छुरीसे बचाना चाहते हैं तो अुसे आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी सिद्ध करना होगा। अुसमें धर्म और अर्थ दोनोंकी सिद्धि छुपी हुअी है। अुसके चमड़ेका तो अुपयोग है ही, लेकिन अुसके मांस और हड्डियोंका अुत्तम खाद बन सकता है और पश्चिमके लोग बनाते भी हैं। वे हमारे यहांसे हड्डियां कौड़ीके मूल्यमें ले जाते हैं और अुनका कीमिया बनाकर हमसे मोहरके दाम वसूल करते हैं। अुनके सामने हिंसा-अहिंसाका खयाल तो है ही नहीं। वे गायको जब तक जिन्दा रखते हैं तब तक अच्छी हालतमें रखते हैं, नहीं तो मारकर खा जाते हैं। लेकिन वे अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लेते हैं।

"हम तो अहिंसक हैं। अगर गायको माताका स्थान देते हैं तो हमारी जवाबदारी दुहरी हो जाती है। जिन्दा रहने पर अुसकी मां जैसी सेवा करें और अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लें। अिससे आर्थिक लाभ तो होगा ही, धर्मलाभ भी होगा। लोग कहते हैं हम हरिजनोंसे अिसलिअे अलग रहते हैं कि वे लोग चमड़ा निकालते हैं और मुरदार मांस खाते हैं। मुरदार मांस तो वे गरीबीके कारण खाते हैं। वह स्वास्थ्यकी दृष्टिसे हानिकारक है, लेकिन अुसमें पाप है यह तो कैसे कह सकते हैं? पाप तो जिन्दा गायको कष्ट देनेमें है। अैसे अुपयोगी और वफादार प्राणीको कतल करने और अुसको कतलखानेके दरवाजे तक पहुंचानेमें हमारा हाथ होता है, जो

हमारे लिअे शर्मकी बात है। चमड़ा निकालनेका काम तो पवित्र काम है। आखिर हम अपने माता-पिताको भी तो कंधे पर अुठाकर ले जाते हैं, तो गायको या किसी भी मृत पशुको ले जानेमें कौनसा पाप है? पुण्य तो जरूर है।

"अस्पृश्यताकी जड़में यह भावना भी काम कर रही है। अिसीलिअे साबरमतीमें मैंने सुरेन्द्रको चमार बननेको कहा था। वह चमारोंके बीचमें जाकर रहा और चप्पल बनानेमें अुस्ताद बन गया। तुम्हारा तो वह मित्र है न? समझो तुम्हारी गाय मर गअी और दूसरे किसीने अुसके मृत शरीरको अुठानेसे अिनकार कर दिया तो तुम क्या करोगे? क्या अुसे घरमें ही सड़ने दोगे? अगर तुम खुद अुसका चमड़ा निकालोगे तो तुमको अुसकी बहुतसी बीमारिओंका ज्ञान हो जायगा। डॉक्टर मृत शरीरकी चीरफाड़ क्यों करते हैं? अुसकी मृत्युका कारण जाननेके लिअे ही न? तो तुम अपनी गायकी मृत्युका कारण क्यों न जान लो? डॉक्टरोंको तो कोअी अछूत नहीं मानता है। अरे, मनुष्य-शरीरमें तो पशुसे कहीं अधिक गंदगी भरी पड़ी है। लेकिन हम डॉक्टरोंका आदर करते हैं और बेचारे हरिजनोंको दूर बैठाते हैं। मनुष्य-शरीरका तो मृत्युके बाद अुपयोग ही क्या है? अब तो यह घृणा यहां तक पहुंच गअी है कि कोअी हरिजन साफ-सुथरा भी रहे तो लोग अुससे परहेज करते हैं। डॉ० आम्बेडकर तो बैरिस्टर हैं और वे किसी भी सवर्णसे स्वच्छतामें कम नहीं हैं। लेकिन अुनको भी कितना अपमान सहन करना पड़ा है यह तो अुनका दिल ही जानता है। जब डॉक्टर आम्बेडकर मेरे सामने जोरसे बोलते हैं तो मैं अुनका दुःख समझ सकता हूं और मुझे सवर्णोंके बरतावसे शर्मका अनुभव होता है।

"जो गायके लिअे मरनेकी बात करते हैं, लेकिन काम गायको मारने या मरने देनेके करते हैं, अुनके लिअे क्या कहा जाय? गायके घी-दूधका अुपयोग न करना, हलाली चमड़ेका अुपयोग करना, तेलको जमाकर अुसे घीका नाम या रूप देना अित्यादि गायको मौतके नजदीक पहुंचानेके काम करना नहीं तो और क्या है? यह मैं लम्बी कथा कह गया, क्योंकि यह सब तुम्हारे कामकी चीज है। तुमको तो लोगोंको यह भी समझाना होगा कि गाय आर्थिक और धार्मिक दोनों दृष्टियोंसे अनिवार्य है और हमारे जीवनकी पूरक है।

"गोशालाके साथ साथ अेक अच्छा चर्मालय तो चलना ही चाहिये, लेकिन तुमको यहां चलानेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि नालवाड़ी यहांसे दूर नहीं है और वे तुम्हारे मृत जानवर ले जा सकते हैं और अुनकी तुमको पूरी कीमत भी मिल सकती है। लेकिन तुमको यह सब समझनेकी जरूरत है। तब ही तुम सच्चे और पूरे गोसेवक बन सकोगे। नहीं तो मैं तुम्हें फूटी बादाम (निकम्मा) समझूंगा।"

* * *

अेक रोज बापूजीने वालुंजकरजीसे कहा कि "किसी दिन अपने सब कारीगरोंको मेरे पास ले आना। मैं अुनको चप्पल सीनेका तरीका बता देना चाहता हूं। तुम जानते हो न कि मैंने दक्षिण अफ्रीकामें चप्पल बनानेका धंधा खूब किया था?" वालुंजकरजी अेक रोज सब कारीगरोंको लेकर आ पहुंचे। बापूजीने अुनको बड़े प्रेमसे चप्पल बनानेका तरीका बताया और बोले, "यह काम हमारे लिअे अुतना ही पवित्र है जितना कोअी भी काम हो सकता है। चमड़ा काटने या टांके लगानेमें चमड़े और समयकी बरबादी बचानेका पूरा ध्यान रखना चाहिये। हमारे हाथकी कला बारीकसे बारीक मशीनोंको जवाब देनेका सामर्थ्य रखनेवाली होनी चाहिये। तभी हमारे ग्रामोद्योगोंको हम जिन्दा रख सकेंगे। अगर हमने प्रमाद किया तो केवल भावनाके बल पर हमारे अुद्योग जिन्दा रहनेवाले नहीं हैं। खादी और दूसरे गृह-अुद्योगोंके लिअे भी यही बात लागू होती है। लोग चमड़ेके कामको नीचा भी समझते हैं। मेरी दृष्टिमें तो 'हरिजन' के लिअे लेख लिखना और चप्पल सीना अेक ही बात है। बल्कि अगर मुझे लिखनेके कामसे मुक्ति मिल सके तो मैं चप्पल बनाना अधिक पसंद करूंगा। लेकिन अब यह शुभ अवसर मेरे लिअे असम्भव-सा ही लगता है। लेकिन तुम लोगोंको मैं बता देना चाहता हूं कि अिस कामके द्वारा हम देशकी करोड़ोंकी सम्पत्ति बढ़ा सकते हैं। अिसीलिअे मैंने कहा है कि हमको मुरदार पशुके सारे अवयवोंका पूरा पूरा अुपयोग करना है। देखो, यह वालुंजकर तो ब्राह्मण है न? लेकिन आज जान-बूझकर चमार बना है। तो अिससे अिसके ब्राह्मणत्वमें कुछ भी कमी आअी हो अैसा कौन कह सकता है? अुलटा अिस काममें वह अपने ब्राह्मणत्वको प्रकट कर रहा है। हमारा चर्मालय स्वच्छतामें किसी भी ब्राह्मणके घरसे कम स्वच्छ नहीं रहना चाहिये, नहीं तो मेरी और अिसकी दोनोंकी लाज जायगी। हमारे कामोंमें अूंच-नीचकी भावना हमारी चेतनता और स्वच्छताके ज्ञानका अभाव ही है। अगर

अुसे तुम लोग मिटा सके तो मैं नाचूंगा। मैं देख रहा हूं कि तुम लोग आगे बढ़ रहे हो। तुमने काफी सुधार किये हैं, लेकिन अपने लक्ष्यसे हम अभी काफी दूर हैं। अुस तक पहुंचनेका प्रयत्न हमको जाग्रत रहकर करते रहना है। आज मैंने तुम लोगोंको अिसलिअे बुला लिया कि अपने दिलकी बात तुम लोगोंके सामने रख सकूं और तुम लोगोंके साथ परिचय भी कर लूं। अब जा सकते हो। हर बुधवारको वालुंजकरजी तो आते ही हैं। तुम लोग भी जब चाहो तब आ सकते हो।"

लोग बापूके प्रेम, अुनकी सावधानीकी सूचना तथा अपने कामकी पवित्र भावनासे मंत्रमुग्ध-से बन गये थे। सबने बापूजीको प्रणाम किया और विदा ली।

अिस प्रकारसे कार्यकर्ताओंका अुत्साह बढ़ाने और अुनके कामका गौरव करनेसे अुनको बड़ा बल मिलता था। और यही कारण था कि बापूजी छोटे-छोटे कार्यकर्ताओंसे भी बड़ेसे बड़ा काम करा पाते थे। आज देशमें मुरदार जानवर न अुठाने और अुनका चमड़ा न निकालनेकी लहर हरिजन भाअियोंमें चली है, जिसके कारण आज लाखों रुपयेका चमड़ा जंगलमें यों ही नष्ट हो रहा है। हरिजनोंकी बात तो ठीक ही मानी जायगी, क्योंकि अिस पवित्र कामके कारण ही लोगोंने अुनको नीच समझकर दूर किया है। अब अपने आपको अूंचा समझनेवालोंको सोचना ही पड़ेगा कि जिस गोमाताका दूध हम पीते हैं, जिसके बैल हम जोतते हैं, अुसके मरने पर हम अुसको हाथ भी न लगायें तो हमसे बड़ा पापी और कृतघ्न कौन हो सकता है? आखिर हम अपने माता-पिताओंका भी तो क्रिया-कर्म करते हैं। तो अपने जानवरोंका अन्तिम संस्कार करनेमें कौनसी बुराअी है? अगर हमको अपनी सम्पत्तिकी रक्षा करना है तो अुसका मृत जानवरोंका पूरा अुपयोग किये सिवा दूसरा रास्ता नजर नहीं आता है।

चर्मालयके मुख्य कार्यकर्ताके लिअे चर्मालयसे लगकर ही लेकिन थोड़ा बाहरकी तरफ श्री वालुंजकरजीने मकान बनाना आरम्भ किया था। अुसे देखकर जमनालालजी बोले, "तुम आश्रमके लोग कैसे अव्यावहारिक हो, जो अितनी लम्बी-चौड़ी जमीन पड़ी रहने पर भी बिलकुल चर्मालयसे सटकर मकान बनाते हो? अगर थोड़ा दूर बना लो तो क्या बिगड़ जायगा?" कुछ हंसीमें और कुछ गम्भीरतासे अुन्होंने वालुंजकरजीको मीठी चेतावनी दी,

या अिसे व्यंग भी कह सकते हैं। अिसी प्रकारकी बात अण्णासाहब सहस्रबुद्धेने भी कही। वालुंजकरजी चुप रहे।

दैवयोगसे अेक रोज बापूजी भी वहां पहुंच गये और अुसी मकानके बारेमें पूछा, "वालुंजकर, यह मकान किसलिअे बना रहे हो?" वालुंजकरजीने कहा, "बापूजी, मुख्य कार्यकर्ताके लिअे बनवा रहा हूं, जो नजदीकसे कामकी निगरानी रख सके।" बापूजी बोले "अरे, कार्यकर्ताका स्थान तो चमड़ा पकानेकी कूंडीके पास ही होना चाहिये, जो वहीं अेक खटिया पर पड़ा रहे और वहीं अेक अंगीठी पर अपना खाना पकाये, ताकि अुसकी सीधी नजर काम पर रह सके। और वहां आदर्श स्वच्छता रखनी चाहिये। वहां पर किसी प्रकारकी दुर्गन्ध तो आनी ही नहीं चाहिये। यही तो हमारी खूबी है। चमड़ा पकनेकी क्रियासे जो स्वाभाविक गंध आती है, अगर हमारा काम ठीक शास्त्रीय ढंगसे किया जाय तो वह दुर्गन्ध नहीं मानी जायगी। अगर हम अितना न कर सकें तो हम देहातके चमारोंको क्या सिखा सकते हैं? तुम ब्राह्मण होकर भी जान-बूझकर चमार बने हो तो तुम्हारे कामसे भी ब्राह्मणत्वका दर्शन होना चाहिये। और यह तभी हो सकता है जब तुम और तुम्हारे साथी अिस काममें अिस प्रकारके संशोधन करो कि आज जो अिस कामके प्रति लोगोंके मनमें घृणा है वह आदरमें बदल जाय।" बापूजीकी बात सुनकर वालुंजकरजीको बड़ी सांत्वना मिली और अुन्होंने अिस दिशामें काफी प्रगति की।

अेक रोज वालुंजकरजी बापूजीसे मिलनेके लिअे आये तो साथमें पके चमड़ेके कुछ नमूने, कुछ चप्पल आदि भी ले आये। शामको बापूजीके भोजनका समय था। बापूजी भोजन कर रहे थे। वालुंजकरजी चमड़े आदिको कमरेके बाहर रखकर बापूजीके पास पहुंचे। बापूजीने हंसकर पूछा, "मेरे लिअे क्या सौगात लाये हो?" वालुंजकरजीने कहा, "बापूजी, लाया तो हूं। आपके भोजनके बाद दिखलाअूंगा।" बापूजी बोले, "अरे, मेरे लिअे तो तुम्हारा चमड़ा अुतना ही पवित्र है जितना यह भोजन। जाओ अभी लेकर आओ।" वालुंज-करजीके हर्षका पार न रहा। अुन्होंने तुरन्त चमड़ा आदि लाकर बापूजीके सामने रख दिया। बापूजीने अपने हाथका बांससे बना चम्मच अेक तरफ रख कर अुसमें से अेक चमड़ा अुठाकर अपनी जांघ पर रखा और अुसे गौरसे निहारने लगे। बापूजीके अेक हाथमें नाश्तेका गिलास, दूसरेमें चमड़ा! नाश्तेके गिलासकी अपेक्षा चमड़ेके

टुकड़े पर बापूजीका दिल, दिमाग और आंखें ज्यादा केन्द्रित थीं। कोअी पुराने विचारका चुस्त हिन्दू बापूजीके अिस व्यवहारको देखकर आश्चर्य और दुःखका अनुभव कर सकता था। लेकिन चमड़े पर बापूजीकी मुग्ध मुद्राको देखकर "भरत रामका मिलन लखि बिसरे सबै हि अपना" की तरह सचमुच ही वालुंजकरजी पलक मारना और सांस लेना भी भूल-से गये। अिसमें कोअी अतिशयोक्ति या आश्चर्यकी बात नहीं है। बापूजीकी अुस मुद्रामें गरीब मज-दूरोंके दुःख-निवारणकी चाबी थी, ग्रामोद्योगोंके प्रति गहरी सहानुभूति और आदर था, वालुंजकरजीके प्रति वात्सल्यभाव था, मुरदार चमड़ेके प्रति पवित्र भावना थी। अुस भावको समझना आजके चमक-दमक-पसंद और नाजुक सफेदपोशोंके लिअे कठिन है। आज तो फैशनेबल लोगोंको हलाली चमड़ेके मुलायम और देखनेमें सुन्दर बूट, बटुअे, चमड़ेकी सुन्दर पेटियां, कमर-पट्टे और घड़ीके पट्टे चाहिये। और अैसे लोग ही गोवध-बन्दीके आन्दोलनमें अपने प्राणोंकी बाजी लगानेकी बात करते हैं! बापूजीके अुस चमड़ा-प्रेममें गोसेवाकी गूढ़ भावनाका भी दर्शन छिपा था।

४. मधुमक्खी-पालन

अेक दिन बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, छोटेलाल यहां मधु-मक्खी पालना चाहता है। अुसके लिअे जो सुविधा चाहिये वह तुमको करनी होगी। छोटेलालके साथ तुम्हारा परिचय है न?" मैंने कहा, — "जी, हां। यहांके लिअे गाय भी तो छोटेलालजीने ही लाकर दी थी।" बापूजी बोले, "हां, छोटेलाल तो हर काममें अुस्ताद है। जब मैंने मगनवाड़ीमें तेलघानी चलानेकी बात की तो विनोबासे अुसे मांग लिया था। अुसने घानीके पीछे जो मेहनत की है वह अद्‌भुत है। जब मगनवाड़ीमें मधुमक्खी-पालनकी बात चली तो वह काम भी मैंने अुसीको सौंपा और अुसके पीछे अुसने रात-दिन अेक कर दिया। हिन्दुस्तानमें जहां भी अिसका ज्ञान और साहित्य मिल सका वह सबका सब छोटेलालने प्राप्त करनेमें कोअी कसर नहीं छोड़ी। चक्कीमें अुसने काफी सिर खपाया है। सच बात तो यह है कि मेरे मनमें ज्यों ही किसी ग्रामोद्योगकी कल्पना आती है और अुसे पता चलता है, त्यों ही अुसे मूर्तरूप देनेमें वह अपना खाना-पीना सब भूल जाता है। मेरा काम अैसे ही स्वयं-सेवकोंसे चल सकता है। आजकल ग्रामोद्योग मृतप्राय अवस्थामें पहुंच चुके हैं। अिनको सजीव करनेके लिअे अनेक छोटेलाल खप जायं तो भी कम होंगे।

ग्रामोंमें हमारे आसपास सोना बिखरा पड़ा है। अुसे अुठानेवाले चाहिये। मधुमक्खीका दृष्टांत ही ले लो। मक्खियां फूलोंमें से रसकी अेक अेक बूंद जमा करके कितना पौष्टिक खाद्य अेकत्रित करती हैं। बस, अुसकी व्यवस्था करना हमारा काम है।

"यों तो शहद दूसरे लोग भी जमा करते हैं। लेकिन अुनके जमा करनेमें हिंसा और गंदगीका कोअी पार नहीं होता। हमको शहद भी चाहिये और हिंसासे भी बचना चाहिये। यह मधुमक्खी-पालनके सिवा नहीं हो सकता। अुसके शास्त्रियोंने यह सिद्ध कर दिया है कि अेक भी मक्खी मरे बिना हमको अुत्तम शहद मिल सकता है। तुमने मगनवाड़ीमें छोटेलालका मधु-मक्खीका काम देखा होगा। वह मांकी तरह मक्खियोंकी संभाल रखता है। मगनवाड़ी शहरके बीचमें है, लेकिन यहां तो हम खुले खेतोंमें पड़े हैं। अगर हम सेवाग्राम और दूसरे गांवोंके लोगोंको मधुमक्खी पालनेका शौक लगा सकें तो अुन्हें अेक नया धंधा दे सकते हैं, जिससे अुनकी आमदनीमें वृद्धि हो सकती है। तुम भी अिसका शास्त्र समझ लो। गाय भी तो पहले जंगली ही थी न? लोग अिसका मांस खाना तक अधर्म नहीं बल्कि धर्म मानते थे। यज्ञोंमें गोबलिका भी जिक्र आता है। लेकिन जिसने पहली बार गायसे दूध लेनेकी बात सोची होगी वह कितना बुद्धिमान आदमी होगा। अुसके मनमें गोहिंसाके प्रति तिरस्कार आया होगा और अहिंसाका देव जगा होगा। मैं यह भी देख रहा हूं कि ग्रामोद्योगोंके विकासमें अहिंसाका विकास समाया हुआ है। तुम स्वयं देहाती हो और देहातकी आवश्यकताओंको समझ सकते हो। छोटेलालका मन तो गांवोंमें ही रमता है। अुससे तुमको बहुत कुछ सीखनेको मिलेगा। किसानके लिअे मधुमक्खी-पालन खेतीकी दृष्टिसे भी आवश्यक है। तुम जानते हो कि मक्खियां फसलको कैसे लाभ पहुंचाती हैं?"

मैंने शर्मके साथ कबूल किया कि मैं नहीं जानता।

बापूजीने हंसकर कहा, "तुम कच्चे किसान हो। देखो, बाहोश किसान अपने खेतोंमें मधुमक्खीके छत्ते जरूर रखते हैं। अुससे अुनकी पैदावारमें वृद्धि होती है। फलवृक्षोंके फूलोंमें या सागभाजीके फूलोंमें भी नर और मादा दो प्रकारके फूल होते हैं। मधुमक्खी जब फूलका रस अुठाती है तो अुसके पैरोंके साथ थोड़ासा फूलका पराग भी लग जाता है। जब वही मक्खी दूसरे फूल पर जाती है तो वह पराग अनायास दूसरे फूलमें गिर जाता है।

अिस प्रकार नर और मादा फूलोंके परागका संयोग होकर फलकी अुत्पत्ति होती है। अिसलिअे लोग मादा-वृक्षोंके साथ नर-वृक्ष भी रखते हैं। जंगली मधुमक्खियां भी यह काम करती ही हैं। लेकिन अुनका पालन करनेसे दो लाभ होंगे। तुम अिसका हिसाब रख सकोगे कि यहां छत्ते रखनेसे फसलमें कितनी वृद्धि हुअी।"

छोटेलालजी आये और अुन्होंने जो सुविधा चाही वह मैंने अमरूदके बगीचेमें कर दी। मैंने समझा था कि वे मगनवाड़ीसे तैयार छत्ते लाकर बगीचेमें रख देंगे। लेकिन वे तो बापूजीसे भी दो कदम आगे चलनेवाले निकले। अुन्होंने मुझसे कहा कि चलो यहांके लिअे आसपासके गांवोंमें से नये छत्ते पकड़कर ले आयें।

मैं मना कैसे कर सकता था? बापूजीने पहले ही मुझे गुरुमंत्र दे रखा था। छोटेलालजी स्वयं मगनवाड़ीमें रहते थे। अुनके साथ साहूजी नामका अेक हरिजन छत्ते पकड़नेमें सहायकका काम करता था। दिनमें मेरे पास आदेश आ जाता कि आज शामको अमुक गांवमें छत्ते पकड़ने चलना है, तुम तैयार रहना। छोटेलालजीका स्वभाव और अनुशासन फौजी अफसरके जैसा कठोर था। अुनके कार्यक्रममें जरा भी गड़बड़ हो गअी कि शामत आयी समझो। अिसी डरसे मैं अुनके आनेकी राह देखता रहता। वे ठीक समय पर आते और मैं चुपचाप अुनके साथ चल देता। दो चार मील जाकर किसी अूंचे आम या अिमलीके पेड़के नीचे खड़े होते और अिशारा करके कहते कि अमुक खोहमें मक्खियां अुड़ती दीखती हैं, वहीं अुनका छत्ता होगा। चलो, चढ़ो पेड़ पर। चढ़नेमें मैं कोअी अुस्ताद नहीं था। हां, बचपनमें पेड़ों पर चढ़नेका कुछ कुछ अभ्यास जरूर हुआ था। छोटेलालजीके प्रेमभरे अुत्साहसे मैं पेड़ पर चढ़ जाता। खोहके पास जाकर वे मुझे अेक तरफ फूंकनीसे धुआं देनेको कहते और दूसरे मुंह पर स्वयं मक्खी पकड़नेकी अपनी पेटी लगा देते। साहूजी वहीं हमारी मददमें रहता या नीचेसे आवश्यक सामान पहुंचानेमें सहायता देता। यह सब क्रिया शामको अुस समय की जाती जब सब मक्खियां छत्तेमें आ चुकतीं। मक्खियां धुअेंके कारण अिस पेटीमें चली जातीं और हम अुसे बन्द करके नीचे अुतार लेते। मक्खियोंकी रानी पेटीमें चली जाती कि अन्य सारी मक्खियां भी थोड़े ही समयमें अपने-आप पेटीमें आ जातीं। छोटेलालजीने मुझे भी रानीकी पहचान करा दी थी। वह दूसरी मक्खियोंसे

बड़ी और लम्बी होती है। मक्खियां पकड़कर कोअी बड़ा गढ़ जीतनेकी खुशीके साथ हम लोग आश्रममें कभी कभी रात्रिके दस-ग्यारह बजे तक लौटते थे। छोटेलालजी बड़ी सरलतासे बड़े बड़े वृक्षों पर चढ़ जाते थे। अैसा लगता था कि अुनके शरीरकी रचना ही कुछ अिसके अनुकूल है। कभी कभी अैसे अवसर भी आते थे जब मक्खियां पकड़नेके लिअे अुनको बहुत दूर जाना पड़ता और रात्रिको बाहर ही रहना पड़ता था। यह ध्यानमें रखना चाहिये कि अैसी ही मक्खियां पाली जा सकती हैं, जो बड़े वृक्षों या पहाड़ोंकी अंधेरी खोहोंमें अपने छत्ते रखती हैं और जिनका स्वभाव छत्तेके अन्दर अंडे और शहद अलग अलग रखनेका होता है। अिससे शहद निकालते समय अेक भी अंडेको नुकसान नहीं होता।

अिस प्रकार हमने ८–१० छत्ते अपने बगीचेमें जमा लिये। अुस स्थानका नाम मधुशाला पड़ गया था। छोटेलालजीने मक्खियोंके बारेमें मुझे सभी आवश्यक बातें सिखा दी थीं। अुदाहरणके लिअे, किसी छत्तेमें दो या तीन रानियां हो जाने पर अेकके सिवा शेष अेक या दोको अलग छत्तेमें रख देना चाहिये, ताकि और मक्खियां अुनके साथ अुड़ने न पावें। पेटियोंके पांवोंके नीचे बरतनोंमें पानी रखना चाहिये, ताकि पेटियोंमें मक्खियोंके शत्रु कीड़े प्रवेश न करने पावें। जब फूलोंकी कमी होती है तब मक्खियोंको शरबत बनाकर कृत्रिम खुराक भी देना चाहिये, अित्यादि। अिन छत्तोंसे हमारी फसलमें कितने प्रतिशतकी वृद्धि हुअी अिसका सही हिसाब तो मैं नहीं निकाल सका। लेकिन स्पष्ट ही फल और बेलदार सागोंकी — जैसे लौकी, काशीफल, तुरअी, पपीता आदिकी — अुत्पत्ति काफी बढ़ी। वजनमें अधिकसे अधिक काशीफल ८३ पाअुंडका, पपीता ११ पाअुंडका और चुकन्दर ७ पाअुंडका हुआ। चुकन्दरको देखकर अेक बार ठक्करबापाने कहा था: "अरे भाअी, बम्बअीमें तो छोटे छोटे होते हैं। अिसका नाम ही बदलना पड़ेगा।" सागभाजी, पपीता, नीबू और संतरा आश्रम और सेवाग्रामकी दूसरी संस्थाओंकी जरूरत पूरी करके वर्धामें काफी बेचना पड़ता था। मक्खियोंके झुंडोंको फूलों पर विचरते देखकर मेरे मनमें यही भाव आता था कि ये मक्खियां अलग अलग फूलोंमें पराग बदलनेका काम कर रही हैं। और मुझे बापूजीका पहले दिनका भाषण याद आ जाता। जब मैं बापूजीको यह संदेश सुनाता कि मधुशालाका काम ठीक चल रहा है और मक्खियां ठीक काम कर रही हैं,

तो बापूजीका मुख प्रसन्न हो जाता और वे बोल अुठते, "तुम्हारे लिअे तो मक्खियां भी मजदूरी करती हैं। किसानका काम तो सांप भी करता है यह तुम जानते हो? खेतीमें बहुतसे कीड़े होते हैं जो फसलको नुकसान पहुंचा सकते हैं। सांप अुन्हें खा जाता है। अिसमें हिंसा भले हो, लेकिन सांप किसानके लिअे अुपकारी ही है।" वास्तवमें मैंने देखा भी कि गन्नेके खेतमें सांप गन्नों पर चढ़कर अुन कीड़ोंको खा जाता था, जो गन्नेको नुकसान पहुंचाते हैं। धानके खेतमें हरे धानके रंगके अनेक सांप मैंने देखे। चूहोंका तो सांप पक्का शत्रु है। मैंने सांपको बिलोंमें से चूहे निकालकर खाते देखा है।

मुझे आश्चर्य तो यह होता है कि मैं किसान होने पर भी अिन छोटी छोटी बातोंको क्यों नहीं जानता था और बापूजी अुन्हें कैसे जानते थे? वास्तवमें बापूजीकी दृष्टि बहुमुखी और विशाल थी, जब कि हमारी दृष्टि सिर्फ नाककी सीधमें ही देखना जानती थी।

छोटेलालजी जैन राजस्थानके थे। सन् १९१५ में किसी बम-कांडमें पकड़े गये थे। लेकिन अवस्था कम होनेसे छोड़ दिये गये थे। सन् १९१७ में साबरमती आश्रममें बापूजीके पास आ गये और अल्पकालमें ही वे साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख कार्यकर्ता बन गये। स्व० मगनलालजी गांधीके साथ अुन्होंने अ० भा० चरखा-संघका शिक्षा-विभाग अनेक वर्षों तक बड़ी योग्यतासे चलाया। श्री बालकोबाजी, श्री सुरेन्द्रजी और श्री तुलसी मेहरजी अुसी समयके अिनके प्रमुख सहयोगी कार्यकर्ता थे। साबरमती आश्रममें शिक्षणार्थ जानेवाले प्रत्येक विद्यार्थी पर अिन भाअियोंके अत्यन्त परिश्रमी तथा स्वाध्यायी होनेकी छाप शीघ्र ही पड़ जाती थी। जब पू० जमनालालजी बजाजने आश्रमकी अेकमात्र शाखा मगनवाड़ी, वर्धामें ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे श्री छोटेलालजीको मांग लिया, तबसे वे अन्त तक पहले मगनवाड़ीमें और बादमें सेवाग्राममें अनेक ग्रामोद्योगोंको चलाते रहे। सेवाग्राममें रहते हुअे मधुमक्खी-पालनके सिलसिलेमें जंगली मधुमक्खियां पकड़नेके लिअे लगातार कअी दिनों तक जंगलोंमें भटकनेके कारण अुन्हें टाअीफाअिड हो गया और अुन्होंने अेक दिन बापूजीको यह संदेशा भेजा कि मुझे दूसरोंसे सेवा लेकर जीना सहन नहीं होता। लेकिन अिस संदेशको पाकर बापूजी दूसरे दिन आकर अुन्हें सान्त्वना दें, अिसके पूर्व ही रात्रिमें मगनवाड़ीके अेक कुअेंमें प्रवेश करके अुन्होंने जल-समाधि ले ली।

भाअी छोटेलालजीके आत्मघातके विषयमें अपने हृदयका दुःख अुंडेलते हुअे बापूजीने ता० ११–९–'३७ के 'हरिजनसेवक' में 'अेक मूक साथीकी मृत्यु' नामक लेखमें लिखा था :

"छोटेलालकी मूक सेवाका वर्णन भाषाबद्ध नहीं हो सकता। अैसा करना मेरी शक्तिके बाहर है। . . . मेरे सौभाग्यसे मुझे कुछ अैसे साथी मिले हैं, जिनके बिना मैं अपनेको अपंग महसूस करता हूं। छोटेलाल मेरे अैसे ही अेक साथी थे। अुनकी बुद्धि तीव्र थी। अुन्हें कोअी भी काम सौंपते मुझे हिचकिचाहट नहीं होती थी। वे भाषाशास्त्री भी थे। अुनकी मातृभाषा हिन्दी थी। पर वे गुजराती, मराठी, बंगला, तामिल, संस्कृत और अंग्रेजी भी जानते थे। नअी भाषा या नया काम हाथमें लेनेकी अुनके जैसी शक्ति मैंने और किसीमें नहीं देखी।

"रसोअी बनाना, पाखाना साफ करना, कातना, बुनना, हिसाब-किताब रखना, अनुवाद करना, चिट्ठीपत्री लिखना आदि सब कामोंको वे स्वाभाविक रीतिसे करते और वे अुन्हें शोभते थे। यह कहा जा सकता है कि मगन-लालके लिखे 'बुनाअी-शास्त्र' में छोटेलालका हिस्सा मगनलालके जितना ही था। चाहे जैसे जोखिमका काम अुन्हें सौंपा जाय, अुसे वह प्रयत्नपूर्वक करते और जब तक वह पूरा न हो जाता अुन्हें शांति नहीं मिलती थी। अुनके शब्दकोशमें 'थकान' शब्दके लिअे स्थान ही नहीं था। सेवा करना और दूसरोंसे सेवाकार्य कराना यह अुनका मंत्र था। ग्रामोद्योग-संघ स्थापित हुआ तो घानीका काम दाखिल करनेवाले छोटेलाल, धान दलनेवाले छोटेलाल और मधुमक्खियां पालनेवाले भी छोटेलाल। आज मैं छोटेलालके बिना जैसा अपंग हो गया हूं, वही स्थिति आज अुनकी मधुमक्खियोंकी भी होगी।

"छोटेलाल मधुमक्खियोंके पीछे दीवाने थे। अुनकी शोधमें रहनेसे हलके प्रकारके मियादी बुखारने अुन्हें पकड़ लिया। यह अुनके प्राणोंका ग्राहक निकला। मालूम होता है अुन्हें ६–७ दिन सेवा कराना भी असह्य लगा। अतः ३१ अगस्त मंगलवारकी रातको ११ और २ के बीचमें सबको सोता हुआ छोड़कर वे मगनवाड़ीके कुअेंमें कूद पड़े।

"अिस आत्मघातके लिअे छोटेलालको दोष देनेकी मुझमें हिम्मत नहीं। छोटेलाल तो वीर पुरुष थे। अुनका नाम १९१५ के दिल्ली-षड्यंत्र केसमें आया था। पर अुसमें वे बरी हो गये थे। किसी गोरे अफसरको

मारकर फांसीके तख्ते पर चढ़नेका स्वप्न वे अुन दिनों देखते थे। अितनेमें वे मेरे लेखोंके पाशमें आ फंसे। और अपनी तीव्र हिंसक बुद्धिको अुन्होंने बदल दिया, और अहिंसाके पुजारी बन गये। . . .

"छोटेलाल मुझे अपना देनदार बनाकर ४५ वर्षकी अुम्रमें चल बसे।"

२२

चरखेका चमत्कार

बापूजीने चरखा और खादीको सब ग्रामोद्योगोंका मध्यबिन्दु माना था। अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात भी अुन्होंने चरखेके मारफत ही की थी। बापूजीने अपने जन्मदिनके अुत्सवको भी चरखा-द्वादशीका नाम दिया था। कांग्रेसकी सदस्यताके लिअे भी चरखा अनिवार्य करनेकी अुन्होंने पूरी पूरी कोशिश की थी। संक्षेपमें, चरखेके लिअे बापूजीने शिवजीकी तरह घोर तप किया था। मगनलालभाअी गांधीने भगीरथकी तरह चरखारूपी गंगाकी खोज की थी। और विनोबाजीने दधीचिकी तरह रोज ८-८ घंटे तकली और चरखे पर कात कर अपनी हड्डियां सुखा दीं और चरखेका मंत्र सिद्ध करके दिखा दिया। बहुतसे लोग बापूजीकी चरखेकी बात सुन कर हंसते भी थे। लेकिन बापूजीके जीवनमें चरखा ओतप्रोत था। कितने ही काममें हों, कितने ही थके हुअे हों, लेकिन चरखा चलाये बिना बापूजीका दैनिक कार्य पूरा नहीं हो सकता था। जब तक बापूजी बीमार होकर बिस्तर पर न पड़े हों तब तक चरखेका नागा अुनके जीवनमें कभी नहीं हुआ। अुन्होंने लम्बे लम्बे अुपवास किये तब भी और राअुण्ड टेबल कान्फरेन्समें गये, जहां कि सोनेके लिअे भी बहुत कम समय मिल पाता था, वहां भी अुनका चरखा तो चलता ही रहा।

आज जब मैं सेवाग्रामके जीवन पर विचार करता हूं तो मेरी आंखोंके सामने चरखेका चमत्कार आ खड़ा होता है। मुझे सेवाग्राममें रोटी चरखेने ही दिलाअी थी। बापूजी कहते थे, "चरखा गरीबोंका सहारा है, दुखियोंका बन्धु है और अन्धेकी लकड़ी है।" बापूजीके अिस कथनकी सत्यता मैं अपने जीवनमें आज अनुभव कर रहा हूं। अगर दशरथ और गोविन्दको कातना सिखानेकी बात न होती तो मुझे सेवाग्राममें रोटी कैसे मिलती? अगर मेरी
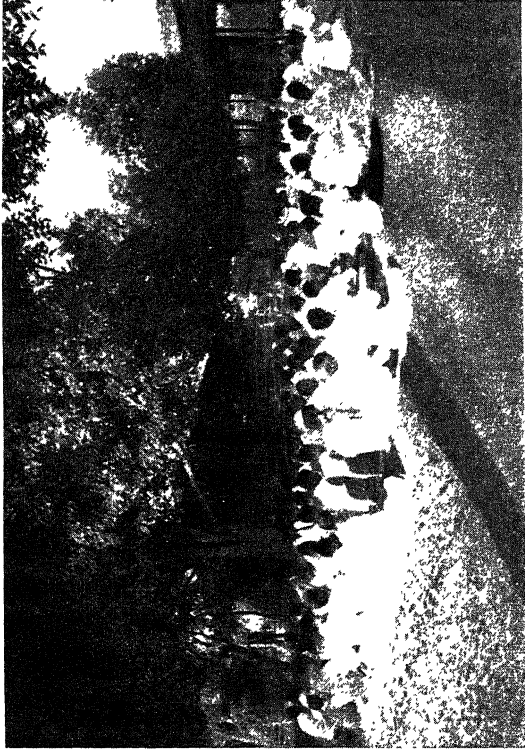
सेवाग्राम आश्रमकी प्रार्थना-भूमि पर चल रहे
सूत्रयज्ञका अेक दृश्य।

बापूजीके हस्ताक्षरोंका नमूना

[यह पत्र पुस्तकके पृष्ठ ३७४ पर छपा है।]

बुनाअी सीखनेकी बात न होती तो मैं साबरमती आश्रममें, विनोबाजीके पास या सावली कैसे जाता? अगर न जाता तो बापूजीके चरणोंमें भी अन्त तक कैसे टिकता? अगर न-टिकता तो आज ये पवित्र संस्मरण लिखनेका सौभाग्य क्योंकर प्राप्त होता, जिससे संत पुरुषोंकी पवित्र स्मृतियोंसे मनका मैल धोनेका अवसर मिला? अगर यह अवसर न मिलता तो फिर अिस जगतमें जन्म लेनेका भी क्या अर्थ रहता? फिर तो मेरी मां यही कहती: 'नतरु बांझ भलि बादि बिआनी, राम विमुख सुत ते हित हानी।'

अर्थात् मेरा सारा जीवन व्यर्थ सिद्ध होता। अब मुझे बापूजीके चरणोंमें देखकर अवश्य ही मेरी मांको स्वर्गमें संतोषका अनुभव होता होगा। सच-मुच जब मैं यह सोचता हूं कि मेरे जीवनकी नौकाको चरखेने किस प्रकार किनारेके निकट पहुंचाया तो मैं स्वप्न-सा देखने लग जाता हूं। अेक गरीब किसानका लड़का, लिखा नहीं, पढ़ा नहीं, दूसरा कोअी साधन नहीं; तो भी जगतके अेक महान पुरुषका पुत्र बननेका अधिकार बापूजीसे झगड़कर प्राप्त किया! जब गांधी-स्मारक-निधिवाले मेरी गोसेवाकी योजनाके लिअे पैसा देनेमें देर करते हैं, तो मैं आत्म-विश्वासके साथ यह कहनेकी हिम्मत रखता हूं कि मेरे ही पिताके नामसे पैसा जमा किया और मुझे ही आंख दिखाते हो! जिन बापूने मेरे बजट पर आंख मींच कर सही की, अुन्हीं बापूके नामका पैसा मुझे मिलनेमें अितनी देर क्यों? मैं अितना बड़ा दावा करनेका ढोंग नहीं करता हूं और न किसीको गीदड़-भभकी ही देता हूं। जो भी कहता हूं वह बापूके प्रति अटल श्रद्धाके बल पर ही कहता हूं। बापूके सामने मेरे लिअे संसारकी सारी समृद्धि तृणवत् थी। बापूके प्रेमके कारण सेवाग्राम आनेवाले बड़ेसे बड़े लोगोंसे भी परिचय करनेका लोभ मेरे मनमें नहीं आता था। मेरी यह अैंठ बापूजीके प्यारके बल पर थी और बापूजीके प्यारका निमित्त बना था चरखा। जिस रोज बापूने मुझसे यह कहा था कि दशरथ और गोविन्दको कातना और धुनना सिखा दो, तुम्हे रोटी मिल जायगी, अुस दिनका चित्र मेरी आंखोंके सामने आज भी ज्योंका त्यों नाच रहा है।

जिस प्रकारसे मेरे जीवनकी नींवमें चरखा है, अुसी प्रकार सेवाग्रामके सेवाकार्यकी नींवमें भी चरखेने ही प्रथम स्थान लिया। अिसे अेक दैवयोग ही कहना चाहिये। वे दोनों लड़के कुछ काम सीखना चाहते थे यह बात तो थी ही। लेकिन अुससे भी बड़ी बात यह थी कि अुनको बापूजीका सम्पर्क

साधना था। अुन्होंने देखा कि बापूजीको सबसे प्रिय चरखा ही है, अिसलिअे हम भी चरखा सीखकर ही अुनके निकट पहुंच सकते हैं। बापूजीको सेवाग्रामकी सेवाका पवित्र काम चरखेसे ही आरम्भ करनेका अवसर मिला; अुसे वे कैसे छोड़ सकते थे और मेरे जैसा सस्ता शिक्षक सिर्फ रोटीमें ही मिल जाय तो बापू अैसा अवसर भला क्यों चूकते? फिर मुझे भी तो बापूजीके पास रहनेका लोभ था ही। अिस प्रकार बिना किसी योजनाके, बिना कुछ सोचे-विचारे चरखा सेवाग्रामके जीवनमें सबसे प्रथम आकर खड़ा हो गया। मैं आज गर्वके साथ कह सकता हूं कि सेवाग्रामका प्रथम शिक्षक बननेका सुअवसर निःसन्देह मुझे चरखेने ही दिया। अिस प्रकार सेवाग्रामके क्षेत्रमें अुस दिनका चरखेका बीज वटवृक्षके रूपमें फला-फूला। मेरे अुस विद्यालयका आरम्भ कुअेंके पासकी अेक छोटीसी कोठरीमें हुआ था, जो आज भी अपनी टूटी-फूटी हालतमें अुस घटनाकी गवाही दे रही है। लेकिन आज तो सेवाग्राममें चरखेके लिअे महल खड़े हो गये हैं। अब अुस बेचारी कोठरीका नाम भी कौन पूछता है? और शिक्षक भी बड़े बड़े पंडित वहां आ गये हैं। तब मेरे जैसे बिना पढ़े आदमीका नाम अुनकी सूचीमें कैसे रह सकता है?

हमने सेवाग्राममें चरखेके कामको धीरे धीरे बढ़ाया। और लोगोंको भी चरखा चलाने और खादी पहननेकी बात कही। धीरे धीरे लोग हमारे पास आने लगे। श्री मुन्नालालभाअीने स्कूलमें बच्चोंको तकली सिखाना आरम्भ किया। बुनाअी-काम भी भाअी अमृतलालजी नाणावटीने चक्रैयाके मारफत आरम्भ किया। बापूजीने कहा: "अेक चरखा ही अैसा अुद्योग है, जो कि छोटे-बड़े, जवान-बूढ़े सबको दिया जा सकता है।" हमने बुनाअी-घर बनाया और कताअी-घर भी बनाया। आज जो बापूजीकी कुटीके नामसे प्रसिद्ध है वह दरअसल मीराबहनने गांवके बच्चोंको कताअी व धुनाअी सिखानेके लिअे ही बनाअी थी। आज अुस स्थानकी महिमा भले ही बापू-कुटीके नामसे हो, लेकिन वास्तवमें तो वह चरखा-कुटी ही हैं। आश्रमके पास चरखा ही अेक अैसा अुद्योग था, जिसे बेकारीके सामने खड़ा किया जा सकता था। अेक बार अकाल पड़नेसे लोग परेशान हो गये। वे मेरे पास काम मांगनेके लिअे आने लगे। खेती और गोशालामें अितना काम नहीं था कि काफी लोगोंको दिया जा सकता। मैंने बापूजीसे पूछा कि क्या किया जाय? बापूजीने कहा, "चरखा तो तुम्हारे पास है ही; जो आये अुसको चरखा दे दो।" मैंने खेतीके अेक

मकानमें चरखेका अेक परिश्रमालय खोल दिया। १०–२० चरखे नालवाड़ीसे मंगा लिये। जो लड़कियां और बड़ी बहनें काम मांगतीं अुन्हें चरखा दे देता। चरखा-संघ भी सेवाग्राममें आ चुका था। अुनका सूत चरखा-संघ खरीद लेता था। अंतमें चरखा-संघने सूतकी गुंडीके लिअे कताअीमें ज्वारी देनेका निश्चय किया। आश्रमका परिश्रमालय काफी दिनों तक चला और लोगोंको अुससे काफी मदद भी मिली। बादमें वह चरखा-संघमें विलीन हो गया।

गांवकी अेक सया नामक लड़की पागल हो गअी थी। अुसके घरवालोंने अुसे घरसे निकाल दिया था। अुस परिवारके साथ मेरा अच्छा संबंध था, क्योंकि अुस लड़कीका पति और जेठ दोनों मेरे पास गोशालामें काम करते थे। मैंने अुस लड़कीकी तलाश की, जो खेतमें भूखी-प्यासी घूमा करती थी और रातको भी जंगलमें किसी झाड़के नीचे पड़ी रहती थी। मैंने अुसको बुलवाया। अुसके घरवालोंसे अुसे संभालनेकी बात की, लेकिन अुन्होंने अिनकार कर दिया। मैंने देखा कि अुसके सारे कपड़े और सिर जूंओंसे भरे थे। अुसके सिरके बालोंमें जूंअें अधिक थीं। मैंने अुसके बाल काटे। अेक दूसरी बहनको बुलाकर अुसको स्नान कराने और अुसके कपड़े धोनेकी बात कही। अुस बहनने कहा, "भाअीजी, अिन कपड़ोंको तो जला देना ही ठीक है; नहीं तो अिसकी जूअें मेरे अूपर चढ़ जायंगी।" मैंने वैसा करनेके लिअे अुस बहनको कह दिया। बालोंको जमीनमें गाड़ दिया। अुस बहनने पगलीको स्नान कराया। मैंने दूसरे कपड़े अुस लड़कीको दिये और परिश्रमालयमें चरखा कातने बैठा दिया। वह कातने लगी। अुसकी ही मजदूरीसे अुसके खाने-पीनेकी व्यवस्था कर दी। अुसका मन चरखेमें लगा, खानेको रोटी मिली और जूंओंके संकटसे मुक्त हुअी, तो धीरे धीरे अुसका पागलपन कम हो गया। मैं अुसे रोज स्नान कराता था। अब तो अुसके चेहरे पर चमक आ गअी और वह ठीकसे बात भी करने लगी। यह सब अुसका पति और घरके दूसरे लोग देखते ही थे। अिसलिअे धीरे धीरे अुनका भी मन बदला। अन्तमें मैंने अुसको अुन लोगोंके हवाले कर दिया। अब तो अुसके कअी बच्चे भी होंगे। अेक दो तो मेरे सामने ही हो गये थे। जब अुसने अपनी गृहस्थी फिरसे जमायी तब मैं अुससे पूछता, "क्यों सया, अुस दिनकी बात याद है न?" वह हंस देती। सचमुच अगर मेरे पास चरखा न होता तो अुसके पागलपनको दूर करनेका

मेरे पास कोअी दूसरा अिलाज नहीं था। चरखेसे अुसके मन और तन दोनोंको काम मिला और पेटको रोटी मिली। अिसलिअे अुसके मस्तिष्कमें जो विकृति आयी थी वह सब दूर हो गअी। मैं अिसे चरखेका चमत्कार ही कहता हूं।

महादेवभाअीके स्वर्गवासके बाद बापूजी अुनके कमरेमें आधा घंटा हमारे साथ मौन कताअी करते थे। वह दृश्य देखने लायक होता था। धीरे धीरे कताअी और बुनाअीके कामोंका विकास हुआ और जहां सेवाग्रामके स्त्री-पुरुष कामकी खोजमें दूसरे गांव जाया करते थे, वहां आसपासके काफी स्त्री-पुरुष सेवाग्राम आश्रममें कामके लिअे आने लगे। मकान अित्यादिके काममें तो लोग लगते ही थे, लेकिन कताअी, धुनाअी और बादमें तो बुनाअीमें भी काफी लोगोंको काम मिलने लगा। सेवाग्राममें भी हमने अेक बुनाअीघर खोला। कितने ही हरिजन और सवर्ण लड़कोंने बुनाअी सीखी और अुससे वे अपनी रोटी कमाने लगे। कताअी और धुनाअी भी काफी स्त्री-पुरुषोंकी आजीविकाका साधन बनीं। मेरा प्रथम विद्यार्थी दशरथ आज खादीकामका निष्णात कार्यकर्ता बन गया है और सेवाग्रामके हरिजनोंमें सबसे पहला पक्का मकान अुसीने बनाया है। सेवाग्रामके कितने ही लड़के खादीके शिक्षक बनकर बाहर भी काम कर रहे हैं। फिर तो यहां चरखा-संघका खादी-विद्यालय बना और सारे हिन्दुस्तानसे चरखेका काम सीखनेके लिअे स्कूलोंके शिक्षक विद्यार्थी बनकर आने लगे। तालीमी संघने भी कताअी और बुनाअीका काम बहुत बढ़ा दिया है। अुसमें भी हिन्दुस्तान भरसे नयी तालीमकी शिक्षा लेनेके लिअे अध्यापक और अध्यापिकाअें आती हैं। चरखा अुनके लिअे अनिवार्य है। सेवाग्रामका बापूराव नामक युवक वकीलका मामूली मुहर्रिर था। अुसको मैंने चरखा दिया और १९४२ के आन्दोलनमें जेल भेजा। आज वह मध्यप्रदेशकी धारासभाका सदस्य है और कांग्रेसका बहुत अच्छा कार्यकर्ता है। यह चरखेका ही प्रताप है।

चरखेमें बापूजीकी हिमालय जैसी अचल और अटल श्रद्धा थी। वे अुसे अपनी कामधेनु और मोक्षका द्वार मानते थे। अेक बार अुन्होंने चरखेके विषयमें अपनी भावना व्यक्त करते हुअे लिखा था: "मैं हर तारको कातते समय भारतके गरीबोंका ध्यान करता हूं। करोड़ोंकी मजदूरी चरखा ही हो सकता है। अिस चरखे पर अुनकी श्रद्धा मैं कोरे भाषण देकर नहीं जमा सकता, स्वयं कातकर ही जमा सकता हूं। अिसीलिअे मैं कातनेकी क्रियाको

तपस्या या यज्ञ कहता हूं। मैं मानता हूं कि जहां शुद्ध चिन्तन है वहां अीश्वर जरूर है। अिसीलिअे मैं हर तारमें अीश्वरका दर्शन कर सकता हूं।"

सन् १९४५ में चरखा-संघको सन्देश देते हुअे बापूजीने लिखा था:

> कातो, समझ-बूझ कर कातो। जो काते वह खद्दर पहने; जो पहने वह जरूर काते। 'समझ-बूझ कर' के मानी हैं चरखा यानी कताअी अहिंसाका प्रतीक है। गौर करो, प्रत्यक्ष होगा। कातनेके मानी हैं कपास खेतसे चुनना, बिनौले बेलनीसे निकालना, रुअी तुनना, पूनी बनाना, सूत मनमाने अंकका निकालना और दुबटा करके परेतना।
>
> २८–३–'४५ मो० क० गांधी

१९४८ के जनवरी मासकी १३ तारीखको जब दिल्लीमें बापूजीका अनिश्चित कालका अुपवास आरम्भ हुआ, तब मेरे मनमें यह डर पैदा हो गया था कि बापूजी अिस अुपवासमें शायद नहीं बच सकेंगे। मैंने बापूजीको लिखा था कि अगर आप अिस अुपवासमें चले जायं तो मेरे लिअे आपका क्या आदेश होगा। अुन्होंने लिखा:

> चरखेका विकास जहां तक मगनलालने किया था अुससे आगे नहीं बढ़ा है। अुसका शास्त्र अभी तक अधूरा है। अुसे पूरा करना आश्रमका काम है। मेरे मरनेके बाद चाहे सारा देश चरखेको छोड़ दे, लेकिन आश्रम तो चरखेको नहीं छोड़ेगा। तुम आश्रमकी नींवसे हो, वहीं मरना।
>
> बापू

अन्तमें यह भी चरखेका चमत्कार ही कहा जायगा कि जिस सेवाग्राम आश्रमके कार्यका आरम्भ चरखेकी शिक्षासे हुआ था, बापूजीके अवसानके बाद आज कुछ वर्षोंसे अुसका काफी खर्च यज्ञकी भावनासे श्रद्धालुओं द्वारा काती हुअी सूतकी गुंडियों अर्थात् चरखेसे चल रहा है। सेवाग्राम आश्रमको कांचन-मुक्त बनानेकी और अुसका खर्च सूत्रयज्ञकी गुंडियोंकी रकमसे चलानेकी कल्पना पहले-पहल श्री नारणदासभाअी गांधीके मनमें पैदा हुअी थी। वे राजकोटकी राष्ट्रीय पाठशालामें चरखा-द्वादशीके अुपलक्ष्यमें जो सूत्रयज्ञ चलाते थे, और आज भी चलाते हैं, अुसीमें अेक वर्ष काती गअी सारी गुंडियां

अुन्होंने पहली बार आश्रमको अिस भावनासे अर्पण की थीं। और अिसका प्रचार भी किया था। दैवयोगसे विनोबाजीके मनमें भी यही विचार स्फुरित हुआ और अुन्होंने भी अिसका प्रचार किया। बादमें तो सारे देशके सूत्र-यज्ञमें श्रद्धा रखनेवाले लोगोंने अिसे अपना लिया। १२ फरवरी — बापूजीका श्राद्धदिन — आश्रमके लिअे गुंडीदानका दिन माना जाने लगा।

२३

बापूजीका हृदय-मन्थन

बापूजीके हृदय-मन्थनकी बात कहनेसे पहले मैं अेक अैसे प्रसंगका जिक्र कर देना चाहता हूं, जो हमारे और बापूजीके पिता-पुत्रके अधिकार और भावनाओं पर गहरा प्रकाश डालता है। बात यह थी कि बापूजीकी तबीयत अुन दिनों काफी कमजोर थी। अुनसे मिलने-जुलनेवाले काफी लोग आते थे। अिस परेशानीसे बापूजीको बचानेके लिअे पू० किशोरलालभाअीने अेक लिखित सूचना निकाली कि व्यवस्थापक-मंडलकी अिजाजतके बिना बापूजीसे कोअी मिलने न जाय। मुझे और मुन्नालालभाअीको यह सूचना अखरी। अिस पर शामकी प्रार्थनाके बाद पू० किशोरलालभाअीने चर्चा की और हमें समझानेका प्रयत्न किया। हमारे विरोधका अुन्होंने तेजीसे जवाब दिया। हमने भी अुनके जवाबका विरोध किया। आखिर यह बात बापूजीके पास पहुंची। दूसरे दिन शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजी बोले :

"कल किशोरलालकी सूचना पर चर्चा हुअी यह ठीक नहीं हुआ। अुन्होंने तो मुझे बचानेके लिअे लिखा था। यह धर्मशाला है, फिर भी अिसमें कुछ नियम होने ही चाहिये। रुग्णालय भी है। रोगियोंको भी नियमका पालन करना पड़ता है। परंतु भंसाली तो हम सबसे श्रेष्ठ पुरुष है। अुसको नियम क्या? मुन्नालाल भी स्वतंत्र है। अपना बादशाह है। वह कितना काम कर लेता है, यह तो हम सबने किशोरलालभाअीके मकान पर देखा है। वह भी अपवाद है। बलवन्तसिंह हम सबसे अच्छा मजदूर है। गाय और खेतीके बिना वह जिन्दा नहीं रह सकता है। लेकिन आज मेरे पास पड़ा है। वह भी अपवाद है।"

हम समझते थे कि बापू हमारे पिता हैं। पिता बीमार हों और लड़कोंसे कोअी कहे कि तुम्हें पिताके पास जानेकी अिजाजत नहीं है तो यह कैसे बन सकता है?

२६ जुलाअीको विनोबाजी तथा अन्य कार्यकर्ता बापूजीसे कुछ जाननेके लिअे जमा हुअे थे, क्योंकि आन्दोलन द्वार पर खड़ा था। बापूजी बोले:

"मैंने तुम लोगोंको अिसलिअे बुलाया है कि मेरे मनमें जो विचार चल रहा है अुसे तुम्हारे सामने रख दूं और तुम्हें यदि अुसमें मेरा अधैर्य या कुछ दोष दिखे तो तुम मुझे बता सको।

"आजकल मेरे मनमें अुपवासका जो विचार चल रहा है, अुसे टालनेका मैंने खूब प्रयत्न किया है और आज भी कर रहा हूं। लेकिन मैं देख रहा हूं कि वह मेरे सिर पर सवार हो रहा है। मैंने आज तक बहुतसे अुपवास किये हैं और अुनमें से अेक भी असफल हुआ अैसा मुझे नहीं लगता। कितने ही तो मैंने व्यक्तिगत और कौटुम्बिक तौर पर किये हैं। अुनका परिणाम भी शुभ ही आया था। हिन्दू-मुस्लिम-अेकताके लिअे जो अुपवास किया था, अुसका भी असर तो हुआ था। लेकिन वह कायम न रह सका। हरिजनोंको अलग न करनेके लिअे जो आमरण अुपवास किया था अुसका परिणाम तत्काल हुआ था। लोग मेरे पास आकर बैठ नहीं गये थे, वल्कि काम करने लगे थे। हिन्दू महासभाके अध्यक्ष भी आ गये थे और अुन्होंने भी मेरी बात मान ली थी। वह सब मुझे अच्छा लगा था। आन्दोलनकी अशुद्धिके कारण जो आत्मशुद्धिका २१ दिनका अुपवास था अुसके पीछे मेरी यह भावना थी कि अिसकी शृंखला अेक साल तक चलाअी जाय। लेकिन साथियोंके गले न अुतरनेसे वह स्थगित करना पड़ा था। लेकिन अब मैं देख रहा हूं कि अिसको टाला नहीं जा सकेगा। अिस वक्त हिंसा अपने पूरे जोरमें है और जगतमें अेक प्रकारका अंधकार-सा छा गया है। हिन्दुस्तानमें भी जहर फैलाया जा रहा है। सरकार हमारे आदमियोंको ही हमारे सामने करके खुद तमाशा देखना चाहती है। अिसको मैं कैसे बरदाश्त कर सकता हूं? अिसलिअे मुझे लगता है कि अब बलिदान दिये बिना यह ज्वाला शान्त नहीं हो सकेगी।

"अुपवासके दो पहलू हैं। अेक तो स्वतंत्र बुद्धिसे करना; दूसरा जनरल पर श्रद्धा रखकर करना। हिंसाकी लड़ाअीमें क्या होता है? जनरल

पर श्रद्धा रखकर सिपाही अपने आपको आगमें झोंक देते हैं। तब अहिंसाकी लड़ाओीमें अैसा क्यों नहीं हो सकता? अिस बार मेरी अहिंसाकी व्याख्या भी बदली है। १९२० और १९३० में मैंने नियम बनाया था कि मन, कर्म और वचनसे अहिंसक होना अनिवार्य है। अब मैं देखता हूं कि चालीस करोड़ लोगोंके दिलमें अिस बातको अुतारना और जब तक न अुतरे तब तक ठहरना योग्य नहीं है। अब मैं अितना ही कहता हूं कि तुम कर्म और वचनसे तो हिंसा नहीं करना। मैं किसी सत्याग्रहीको कानून तोड़ने भेजता हूं तो अुससे कहूंगा कि तुम लाठी यहां रख जाओ और किसीको गाली दिये बिना अितना काम कर आओ। जब मेरी अिस बातको मानकर वह काम कर आयेगा, तो कामकी सफलता देखकर अुसके मनसे भी हिंसाके भाव निकल जायेंगे। और समझो कि मेरे निमित्तसे अहिंसक सत्याग्रह आरंभ हुआ और बादमें हिंसा फूट निकली तो भी मैं सहन कर लूंगा, क्योंकि आखिर तो मुझे जो अीश्वर प्रेरणा कर रहा है अुसकी जो अिच्छा होगी वही होगा। अगर मुझे निमित्त बनाकर वह हिंसासे दुनियाका संहार करना चाहता होगा तो मैं कैसे रोक सकता हूं? वह तो अेक अैसी सूक्ष्म चीज है कि जिसका पता लगाना मनुष्यकी शक्तिके बाहरकी बात है। बिजली यों सर्वत्र है, लेकिन अुसका हम कुछ पता तो लगा ही सकते हैं। लेकिन अीश्वर तो अिससे भी सूक्ष्म और व्यापक वस्तु है। अुसके लिअे तो अितना ही कह सकते हैं कि वह अैसी शक्ति है जिसके अिशारेसे यह सब कुछ चलता है। लेकिन वह क्या है और कैसी है; यह खोजना असंभव है। बस, अुस पर श्रद्धा ही रख सकते हैं और वही श्रद्धा मुझसे अपना काम करा रही है।

“मैं जब जर्मन और अंग्रेज तथा जापानके संहारकी बात सुनता हूं, तो अुनके बलिदानकी कीमत मेरे दिलमें बहुत बढ़ जाती है। ‘प्रिंस ऑफ वेल्स’ को डुबानेवाला कितना बहादुर था कि अुसने अपने आपको जलते हुअे अेंजिनमें झोंक दिया और दुश्मनका जहाज डुबा दिया। अुसका कितना साहस!

“हमने तो अभी तक कुछ भी साहस नहीं किया है। जेलमें जाकर यह चाहिये’, ‘वह चाहिये’ अिसके लिअे ही हम लड़े हैं। कुछ तुम्हारे जैसोंने अभ्यास किया है। अबकी बार अुसको स्थान नहीं है। प्यारेलाल कहे कि कुरान पूरा कर लूं या तुम कहो कि वह किताब अधूरी है अुसे

लिख डालूं सो नहीं होगा। वहां तो दो चार रोजमें पूरा काम तमाम करना है। जब हम सरकारके सब कानूनोंका भंग करना चाहते हैं तो अुपवास आ ही जाता है। तब हमको जेलमें डालेंगे तो हम अन्न-पानीका त्याग करेंगे और अपने आपको खतम ही कर देंगे।

"अब सवाल यह अुठता है कि अुसकी शुरुआत किससे की जाय? अिसके लिअे मैंने अपने आपको चुना है। क्योंकि मेरे बलिदानके बिना काम नहीं चलेगा। तुम सब लोगोंका मेरे साथ सहकार चाहिये। अिसमें किसीको घबरानेकी या रंज माननेकी बात नहीं है। कर्तव्य-पालनकी बात है। आखिर तो अिस शरीरको मिटना ही है। तो अेक शुभ कार्यके निमित्त अुसे मिटने देना ही अच्छा हैं।"

किशोरलालभाअी बोले, "अगर जनरल ही पहले चला जाय तो फौजका क्या हाल होगा। अिसलिअे मेरी राय है कि आप जिसको पसंद करें अुसके द्वारा आरंभ करें और अुसके बलिदानका अुपयोग कर लें। जब समय आ जाय तो आप अपना बलिदान भी दे दें।"

बापूजी — अैसा कौन है? समझो जानकीबहन कहे कि मेरे शरीरकी तो कुछ कीमत नहीं है, मुझे जाने दो। या शास्त्रीजी (परचुरे शास्त्री) कहें कि मैं जाअूं।

किशोरलालभाअी — ना ना। मैं तो अैसी बात कहता हूं कि जिसकी कीमत हो।

बापू — हां, मैं भी तो यही कहता हूं। समझो, शास्त्रीजीकी कीमत पैसा है और जानकीबहनकी रुपया और मेरी मोहर। अगर अिस चीजकी कीमत मोहर देनी चाहिये तो मुझे ही देनी चाहिये। और अब मेरे बलिदानका समय आ गया है, अिसका निर्णय कौन करेगा?

किशोरलालभाअी — आप ही करेंगे।

बापू — बस तो मैं आज ही निर्णय करता हूं कि पहला बलिदान मुझे ही करना चाहिये।

किशोरलालभाअी चुप हो गये। बापूने विनोबाजीसे पूछा, "तुमको कैसा लगता है?" अुन्होंने कहा, "मुझे तो ठीक लगता है। मैं समझा हूं या नहीं अिसलिअे दुहरा जाता हूं। आपके कहनेका मैं यह अर्थ समझा हूं कि स्वतंत्र बुद्धिसे भी अुपवास किया जा सकता है। जिनकी स्वतंत्र बुद्धि साथ न दे, वे जनरल पर श्रद्धा रखकर भी कर सकते हैं।"

बापू — ठीक है। लेकिन अिसमें अितना और जोड़ दूं कि जब हिंसा अितनी फूट निकली है तो अुसे रोकनेका अिसके सिवा और कोअी चारा नहीं दीखता है और अिसलिअे अैसा करना आवश्यक हो गया है। अगर अिस विषय पर अधिक चर्चा करनी हो तो मैं समय निकाल सकता हूं।

विनोबा — मुझे जरूरत नहीं लगती है।

अिसके बाद सभा विसर्जित हो गअी। मुझे बापूजीकी योजना पटती तो थी, लेकिन अनशनका अस्त्र आम लोगोंके सामने रखने जैसा नहीं लगता था। मैंने बापूजीको अपने मनकी बात कहते हुअे लिखा, "हिंसाकी लड़ाअीमें मरना जितना सरल है अुतना अिसमें नहीं है। सामूहिक रूपमें अिस प्रकारकी मृत्युसे कोअी जाति जूझी हो, अैसा अुदाहरण ही नहीं मिलता है। अिसमें क्या आत्महत्याके पापका डर नहीं है?"

मुझे डर यह भी था कि बापूजी अब अधिक दिनों जीवित नहीं रहेंगे। अिसलिअे मैंने लिखा था कि "अिस ज्वालामें मेरा खात्मा हो गया तो प्रश्न ही खतम है। जीवित रहा तो आपकी आत्मा मुझसे क्या अपेक्षा रखेगी और मेरा क्या कार्य देखकर संतुष्ट होगी? अगर आप समय निकाल सकें तो बम्बअी जानेसे पहले आपके सामने अपना दिल खोलकर मैं मन हलका करना चाहता हूं। आप मेरी चिन्ता तो नहीं करते होंगे। मेरे सब अपराधोंको क्षमा करके मुझे आशीर्वाद दीजिये कि आपको संतुष्ट करनेमें सफल होअूं।"

बापूजीने लिखा:

> मेरी चिन्ता न करो। दूसरोंके लिअे अनशन किया जा सकता है या नहीं? सोचनेकी बात है। मैंने तो सैद्धांतिक चर्चा ही की।
>
> तुम्हारे बारेमें विचार तो करता ही हूं। चिंता मुद्दल नहीं। मुझे तुम्हारे बारेमें डर है ही नहीं। तुम्हारा यहां पड़ा रहना और आश्रमके काममें रत रहना मेरे लिअे पर्याप्त है और अैसा भी समझो कि अुसमें गोसेवा छिपी हुअी है। स्वामी अित्यादिसे मिलना, मुहब्बत करना। तुम्हारा यहां होना फायर बकेट-सा है। फायर बकेटमें कितनी शक्ति रहती है, जानते हो न? मैं खप गया तो भगवान मार्ग बता देगा। यों तो अिसकी नींवसे तुम यहां हो, यहीं मरना। समय मिला तो बुला लूंगा। पर मुश्किल है।

२७-७-'४२ बापूके आशीर्वाद

बापूजीकी आज्ञाके अनुसार मुझे सेवाग्राम आश्रममें ही रहना चाहिये था। पर बापूजीके चले जाने पर आश्रमका मार्गदर्शक विनोबाजीको ही माना गया था। अुनके आदेशसे गोसेवाके कामके लिअे मुझे बाहर जाना पड़ा। खुशीसे नहीं पर कर्तव्य-बुद्धिसे ही मैं बाहर गया।

अूपरके पत्रसे प्रगट होता है कि बापू छोटेसे छोटे सिपाहीकी बातों पर भी कितना ध्यान देते थे। अिसी प्रकार विचार-मंथनमें अगस्तका महीना आ गया।

बापूजी वर्किंग कमेटीकी मीटिंगके लिअे बम्बअी जानेकी तैयारी कर रहे थे। जानेके पहले दिन ४ अगस्तको शामकी प्रार्थनाके बाद बापूने कहा:

"मैं कल बम्बअी जा रहा हूं। क्या होगा यह तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरी अुम्मीद है कि ११ अगस्त तक मैं यहां वापिस आ जाअूंगा। १३ से अधिक तो नहीं। जो लोग आश्रममें हैं अुनको समझना चाहिये कि आश्रम पर कुछ भी संकट आ सकता है। हो सकता है कि सरकार हमारा खाना भी बंद कर दे। तो जिनकी पत्ते खाकर भी यहां रहनेकी तैयारी हो वे ही लोग यहां रहें, बाकी सब चले जायं। अगर संकट आने पर जायेंगे तो हमारे लिअे शर्मकी बात होगी।"

बापूजी ५ अगस्तको बम्बअी जा रहे थे अुस दिन सोमवार था। गाड़ी लेट थी। बापू वेटिंग रूममें बैठकर अपना काम कर रहे थे। मैं बाके साथ बात कर रहा था। अुनसे मैंने कहा, "बा, जल्दी लौटकर आअिये।"

बाने करुण स्वरमें कहा: "जोअीअे, शुं थाय छे? तमारा बधाना आशीर्वादथी पाछा फरीअे तो सारुं ज छे।*"

बाका यह करुण स्वर मेरे हृदयमें बहुत ही चुभा। अुससे यह टपक रहा था कि अुन्हें वापिस आनेकी कोअी अुम्मीद नहीं है। और बाका यह डर सच्चा सिद्ध हुआ। बा फिर लौटकर सेवाग्राम नहीं आ सकीं।

बापूजीके लिअे गाड़ीमें स्थान अकसर पहले ही निश्चित हो जाया करता था। लेकिन अिस बार अितनी भीड़ थी कि रेलवेवाले बापूजीके लिअे कोअी खास प्रबंध न कर सके। अुस रोज न मालूम क्यों महादेवभाअी भी लोगोंसे खास तौर पर मिल रहे थे। मैं अुनके साथ कोअी विशेष संबंध

---

* अर्थ: देखें क्या होता है? तुम सबके आशीर्वादसे लौट आयें तो अच्छा ही है।

नहीं रखता था, लेकिन अुस रोज मुझे भी अुनके प्रति बड़ी श्रद्धा हुअी और मैंने अुन्हें प्रणाम किया। वे हंसकर बोले, "अच्छी तरहसे रहना।" सचमुच वे भी हमसे हमेशाके लिअे बिछुड़ गये।

बापूकी पार्टी गाड़ीमें जहां तहां बैठी, लेकिन मैं बापूजी और बाको बैठानेमें लगा था। डिब्बेमें बहुत भीड़ थी। जैसे तैसे बापूका बिस्तर अन्दर ले गया और बापूको चढ़ाया। अुनको देखकर लोगोंने थोड़ी जगह कर दी। अेक सीट पर बापूका बिस्तर और दूसरी पर मुश्किलसे बाका बिस्तर लगाया। मैंने बा और बापूको प्रणाम किया और बापूने हंसकर मुझे अेक चपत लगायी। मैं वापिस चला आया।

यों तो बापू अनेक बार सेवाग्रामसे बाहर जाते थे। लेकिन अुस दिनकी जुदाअीने चित्त पर बिछोहका गहरा असर किया। मनमें अैसा ही लगता था कि अिस बार बापूजी लौटकर आनेवाले नहीं हैं; निश्चित ही पकड़े जायेंगे। और वही हुआ। पू० बा और महादेवभाअी तो मानो सेवाग्रामसे अुस दिन आखिरी बिदा लेकर ही गये थे। भगवानकी गति कौन जान सकता है?

२४

अगस्त-आन्दोलन और आश्रमवासी

बापूजीको लग रहा था कि अिस बार सरकार मुझे पकड़ेगी नहीं, क्योंकि मैंने अैसा कुछ किया ही नहीं है। लेकिन ८ अगस्त, १९४२को बम्बअीमें वर्किंग कमेटीकी मीटिंगमें 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास हुआ। अुस पर बापूजीका जो मार्मिक ओजपूर्ण भाषण हुआ और बापूजीने 'करूंगा या मरूंगा' की जो बुलन्द घोषणा की, अुससे हमें लगा कि अब बापूजीका वापिस आना कठिन है।

कांग्रेसने अुस प्रस्ताव पर अमल करनेकी सारी जिम्मेदारी भी बापूजी पर ही छोड़ी थी। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें बापूजी लड़ाअीकी क्या रूपरेखा बनाते हैं और कलकी आमसभामें क्या बोलनेवाले हैं। अितनेमें ही ९ अगस्तको सुबह ही रेडियोसे खबर मिली कि बापूजीको पकड़ लिया गया। वर्धामें सभा हुअी और अुसको भंग करनेके लिअे गोली भी चली।

और अुसमें अेक लड़केकी मृत्यु भी हो गअी। सेवाग्रामकी सब संस्थाओंमें हलचल मच गअी। हमारे पथ-प्रदर्शनके लिअे पूज्य किशोरलालभाअी सेवाग्राममें थे, अिसलिअे हम लोग निश्चिंत थे।

बम्बअीसे जो लोग वापिस आये, अुन्होंने बापूके नामसे 'करो या मरो' नारेका कुछ अिस ढंगसे अर्थ किया जो बापूजीकी अहिंसाके साथ मेल नहीं खाता था। तोड़फोड़के तरीके अपनानेकी जो बात थी वह बापूजीकी अहिंसामें ठीक नहीं बैठती थी। मैंने अुसका विरोध किया। भय यह था कि आश्रमको भी सरकार जब्त कर लेगी। कुछ लोगोंकी मान्यता थी कि सरकार अिस बार शायद आश्रम पर हाथ नहीं डालेगी। अिस आशंकाको मिटानेके लिअे हमने सरकारको सीधी चुनौती दी और आश्रमको सत्याग्रहका केन्द्र ही बना दिया। आसपासके देहातके जो सत्याग्रही आन्दोलनमें हिस्सा लेना चाहते थे अुनको वहां स्थान दिया। अुसकी अेक कमेटी बन गअी। दूसरी संस्थाओंसे जो लोग सत्याग्रहमें शामिल होना चाहते थे वे आश्रमके शिविरमें आ गये। मैं और चरखा-संघकी तरफसे श्री सुखाभाअू चौधरी मुख्य थे। बापूजीकी रक्षाके लिअे जो चार पुलिस वहां रखे गये थे अुनको सरकारने हटा लिया। अुनमें से रामपत ओझा नामक पुलिस कान्स्टेबलने अिस्तीफा दे दिया और वह आन्दोलनमें शामिल हो गया।

अुन दिनों किशोरलालभाअी 'हरिजन' के संपादनका काम कर रहे थे। अेमरी साहब्के भाषणको यथार्थ मानकर, बापूने ठीक वैसा ही कहा होगा जैसा अेमरीने अपने भाषणमें बापूके शब्दोंको अुद्धृत किया है, अैसा समझकर अुन्होंने जनताको तोड़फोड़की अिजाजत देनेवाला अेक लेख 'हरिजन' में लिखा था। अिसलिअे २३ अगस्तकी रातको बारह बजे पुलिसकी लारी आयी और अुनका मकान घेर लिया गया। हम सबको पता चला तो हम भी वहां पहुंचे। पुलिसने अुनके मकानकी तलाशी ली और कुछ कागजातके साथ अुनको पकड़ लिया। किशोरलालभाअीने मुझसे कहा कि तुम अिन लोगोंको देशके प्रति अिनका सच्चा कर्तव्य समझाओ। अिस पर मैंने अुन्हें समझाया कि आप लोग पेटके लिअे यह कैसा निन्दनीय काम कर रहे हैं। अपनी रोटीके लिअे किशोरलालभाअी जैसे पुरुषको रातके बारह बजे गिरफ्तार करते आपको शर्म आनी चाहिये। अंग्रेज आज नहीं तो कल भारतसे जाने ही वाले हैं। तब आप क्यों अुन्हें खुश करनेके लिअे अैसा घृणित और

देशद्रोहका काम करते हैं?" अुस समयकी अुनकी मनस्थितिमें मेरी बातका क्या असर हो सकता था? वे चुपचाप किशोरलालभाअीको लेकर चले गये।

आश्रमसे काफी लोगोंने सत्याग्रह किया और जेल गये। पहला जत्था बहनोंका गया। अुसमें पू० शकरीबहन, कंचनबहन, कान्ताबहन, जोहराबहन और मनु गांधी गअीं। वर्धामें सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबंध था। अिन्होंने जाकर अुसे तोड़ा और गिरफ्तार हो गअीं।

अुस समय सेवाग्रामके कुछ नौजवान भी बाहर निकले। हमें अुम्मीद नहीं थी कि सेवाग्राममें से भी कुछ लोग जेलके लिअे तैयार होंगे। लेकिन अैसे लोग भी निकले जो पहले कोअी खास हिस्सा आन्दोलनमें नहीं लेते थे। श्री बापूराव देशमुख, महादेवराव कोल्हे, चन्द्रभान तथा अन्य कअी लड़के सत्याग्रहमें जुट गये। सबसे महत्त्वका आदमी तो सखाराम साबळे निकला, जो चरखा-संघका बुनकर था। अुस पर ६–७ बच्चोंका भार था। लेकिन वह बड़ी दृढ़तासे सत्याग्रहमें शामिल हुआ और कह सकते हैं कि वह सेवाग्रामके सत्याग्रहमें सर्वश्रेष्ठ सत्याग्रही सिद्ध हुआ। अुसके घरमें छह बरसके बच्चेसे लेकर अुसकी पत्नी तक सब लोग सूत कातकर गुजारा करते थे। सत्याग्रहियोंके परिवारोंके लिअे हमने थोड़ीसी मदद भी दी, लेकिन वह नहींके बराबर थी।

गांवके हिसाबसे सेलूकांटेके, जो सेवाग्रामसे ५–६ मील दूर है, सत्याग्रही सबसे अधिक योग्य थे। सत्याग्रहियों पर वर्धाकी पुलिसने काफी जुल्म किये। दिनमें लड़कोंको पकड़ लेते और रातमें अुनको अंधेरेमें छोड़ते और अंधेरेमें ही मारते। फिर भी सत्याग्रही लोग बहादुरीसे अपना काम करते रहे। श्री मनोहरजी दीवान वर्धा जिलेके सत्याग्रहका संचालन करते थे। अुनकी सूचनाके अनुसार हम सत्याग्रहके लिअे सत्याग्रही भेजते थे। रामपत ओझा भी हमारे शिविरमें शामिल हो गया। अुसकी गिरफ्तारी हुअी और अुसको सजा हो गअी। जब पुलिसके अत्याचार बढ़े तो मैं आश्रमसे सत्याग्रहियोंकी अेक टोली लेकर वर्धा गया और सभा तथा जुलूसका कानून तोड़कर पकड़ा गया। वर्धाके जेलमें ज्यादा जगह नहीं थी। अिसलिअे सरकारने तहसीलको जेल बना दिया। वहां छोटीसी गंदी और अंधेरी जगहमें बहुतसे सत्याग्रहियोंको २४ घंटे बन्द रखते और वहीं खाना भी खिलाते थे। अिसका हम लोगोंने विरोध किया। जब अधिकारियोंने अिस पर कोअी ध्यान नहीं दिया तो मैं और मेरे अन्य साथी अनशन करनेके लिअे मजबूर

हो गये। तब मुझे अस्पतालमें ले जाकर 'फोर्स्ड फीडिंग' (जबरदस्तीसे नाकमें नली डालकर दूध पिलाना) शुरू किया। अिस पर मैंने पानी भी छोड़ दिया। मजिस्ट्रेटने केस चलानेका नाटक-सा करके अुसी समय तककी सजाको पर्याप्त मानकर मुझे छोड़ दिया। मेरे केसमें अेक मजेदार घटना यह हुअी कि मजिस्ट्रेट श्री मेहतासे मेरा परिचय पहले हो चुका था। सेवाग्रामकी सड़क बनाते समय अेक मंजुला नामकी बहनका खेत, जो बीचमें आता था, मैंने अुसे राजी करके प्राप्त कराया था। तबसे वे मुझे पहचानते थे। तब मेहताजीसे मैंने हंसीमें कहा था कि अेक दिन आपकी अदालतसे मुझे अपराधी करार देकर सजा होगी, यद्यपि अुन्हें अैसा अवसर आनेकी आशा नहीं थी। अेक दिन वे जेलमें आकर मुझसे बोले कि आपकी वाणी सत्य निकली। आपका केस मेरी अदालतमें है। मैं सजा नहीं करना चाहता और कलेक्टर व पुलिस आपको छोड़ना नहीं चाहते। अिससे धर्म-संकट अुपस्थित हुआ है। मैंने हंसकर कहा कि आप और मैं अपना अपना काम करें। अिससे मित्रतामें कोअी फर्क नहीं पड़ेगा। यह सब हो रहा था तब भंसालीभाअी तो अपने चरखेमें ही मस्त थे।

आश्रममें जितनी बहनें थीं वे सब जेल चली गअी थीं। चिमन-लालभाअीको पुलिसने पकड़ा, पर सात दिन हवालातमें रखकर छोड़ दिया। जेलकी अव्यवस्थाके खिलाफ मैंने अुपवास किया, अिसलिअे मुझे भी छोड़ दिया। अुस समय वर्धामें श्री सालिग्रामसिंह अिन्स्पेक्टर और श्री ताराचन्द डी० अेस० पी० थे। अिन लोगोंने काफी जुल्म किये। पवनार षड्यंत्र केसके नामसे तार काटने और रेलवे लाअिन काटनेका अेक झूठा केस बनाया गया। झूठे गवाह तैयार किये गये। सब गवाहोंसे मैं व्यक्तिगत रूपसे मिला और पूछा कि सचमुच तुमने अैसा कुछ देखा है क्या? अेक भी गवाह अैसा नहीं निकला जो अुस केसके बारेमें कुछ भी जानता हो। जिस तरहसे पुलिस कहलवाती थी वैसा ही वे कहते थे। अुसका नाटक लंबा चला, जिसमें वल्लभस्वामीको दो सालकी सजा हुअी। लेकिन बादमें अपील करने पर वे छूट गये। मुखबिरको पलट जानेके जुर्ममें सजा हुअी।

आश्रमके सत्याग्रहियोंके आन्दोलनमें सबसे प्रसिद्ध घटना तो भंसाली-भाअीके अुपवासकी रही, जिसका प्रचार सारे हिन्दुस्तानमें हुआ। वे बहुत समय तक सत्याग्रहकी हवासे निर्द्वन्द्व रहे। मैंने अेक दिन हंसकर अुनसे कहा

कि आप वर्धामें बैठकर चरखा कातें तो कैसा हो। लोगोंको मदद मिलेगी। अुनको यह सूचना बहुत पसन्द आयी। बोले, मैं तो तैयार हूं। मैंने कहा कि काकासाहबसे पूछकर आपको वहां भेजनेकी व्यवस्था करेंगे। लेकिन अुनको अितने समयके लिअे भी रुकना नहीं था। अुन्होंने अपना चरखा अुठाया और वर्धामें लक्ष्मीनारायणके मंदिरके चबूतरे पर बैठकर कातना शुरू कर दिया। मुन्नालालभाअी, रमणलालभाअी तथा मोहनसिंहभाअी भी वहां गये थे। बस, भंसालीभाअीके चरखेके आसपास बच्चे अिकट्ठे हो गये। पुलिस तो किसीका भी जमा होना कानूनके विरुद्ध समझती थी। अिसलिअे बच्चोंको अुसने धमकाया और जब भंसालीभाअी तथा मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो भंसालीभाअीको पकड़कर अकोला ले जाया गया। वहां पानीके बगैर अुपवास करने पर अुन्हें 'फोर्स्ड फीडिंग' किया गया, लेकिन सफलता नहीं मिली। बादमें अुन्हें छोड़ दिया गया। रमणलालभाअी और मोहनसिंह-भाअीको पंद्रह दिनके बाद छोड़ा। मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो चारोंको फिर गिरफ्तार कर लिया। भंसालीभाअीने जेलमें जाते ही फिर अुपवास शुरू कर दिया। अिस पर अुनको तो छोड़ दिया, लेकिन मुन्नालालभाअीको रख लिया। फिर तो भंसालीभाअीको कअी बार पकड़ा और कअी बार छोड़ा। भंसालीभाअीको लगा कि मुझे अिस अन्यायी राज्यमें जीना ही नहीं चाहिये। हम लोग अुन्हें काफी समझाते थे, लेकिन अुन्हें अुपवास करके मरनेकी धुन लग गअी थी।

चिमूरमें पुलिसने स्त्रियों पर काफी अत्याचार किये। अुनकी निष्पक्ष जांचकी मांग करनेके लिअे भंसालीभाअी दिल्लीमें श्री अणेके घर पहुंचे। मैं भी साथ था। श्री अणे अुस समय वाअिसरॉयकी कौंसिलके सदस्य थे। अणे साहबने हमारा प्रेमसे स्वागत किया और आनेका कारण पूछा। हमने सारा हाल कह सुनाया और निष्पक्ष जांचकी मांग की। अणे साहबने कहा कि जहां आन्दोलन चलता है वहां कुछ अवांछनीय घटनाअें भी हो ही जाती हैं। अिस अुत्तरसे भंसालीभाअीको संतोष नहीं हुआ और अुन्होंने अुपवास करनेका अपना निर्णय बताया। दुर्भाग्यसे अुसी दिन श्री अणेकी अेक पुत्रीका देहान्त हो गया था। यह बात हमने अुनके मुखसे अुसी समय जानी। लेकिन तब भी अुन्होंने भंसालीभाअीसे कहा कि चलिये, आपके ठहरनेका प्रबंध कर दूं। मुझे तो अुपवास करना नहीं था, अिसलिअे मुझे भोजन

कराया गया। थोड़ी ही देरमें पुलिसवाले आ गये और हमें दिल्लीसे चले जानेका नोटिस दिया। हमने अिनकार किया तो हमें जेलमें ले जाया गया और वहांसे ८ नवंबरको हमें सेवाग्राम भेज दिया गया। १० तारीखको भंसालीभाअी पैदल ही चिमूरके लिअे निकले, क्योंकि वे वहां जाकर अुपवास करना चाहते थे, जिससे लोगोंका ध्यान चिमूरके अत्याचारोंकी ओर आकर्षित हो। लेकिन सरकार नहीं चाहती थी कि वे चिमूर पहुंचें, अिसलिअे पुलिसने रास्तेमें ही अुन्हें पकड़ लिया और सेवाग्राम पहुंचा दिया। २० तारीखको भंसालीभाअी फिर निकले और २२ को चिमूर पहुंचे। पुलिस फिर अुन्हें सेवाग्राम रख गअी। अिस तरह कअी बार हुआ। वर्धामें चिमूर-दिवस मनाया गया। अिस सारे अर्सेमें भंसालीभाअीका अुपवास चालू ही था।

अेक बार जब भंसालीभाअी चिमूरके लिअे पैदल निकले तो हमको लगा कि वे चिमूर तक नहीं पहुंच सकते; रास्तेमें ही कहीं अुनका शरीर गिर जायगा। अिसलिअे मैं और लीलावतीबहन रेल द्वारा अुनके समाचार जाननेको चिमूरके लिअे निकले। चिमूरसे चार-पांच मील अिधर हमने सड़क पर भंसालीभाअीको पकड़ा। अुस समय तेज धूप पड़ रही थी। भंसालीभाअीने पानी भी छोड़ दिया था। वे सिर पर भीगा हुआ कपड़ा रखकर चल रहे थे। अुनकी अिस सहिष्णुताको देखकर मेरे आश्चर्यका पार न रहा। चिमूर पहुंचते ही दूसरे दिन पुलिसने अुनको वहां गिरफ्तार कर लिया और सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया। लेकिन वे कहां माननेवाले थे? फिर निकल पड़े। तब तो हमको निश्चय हो गया कि अब भंसालीभाअी चिमूर नहीं पहुंच सकते। अिसलिअे मैं, लीलावतीबहन और मोहनसिंहभाअी बैलगाड़ी लेकर अुनके साथ निकले और यह तय हुआ कि चिमूरके आधे रास्तेसे अिधर यदि भंसालीभाअीका शरीर छूट जाय तो सेवाग्राममें अुनके शरीरको दाह-संस्कारके लिअे ले आयेंगे और आधे रास्तेसे अुधर छूटे तो चिमूर ले जाकर दाह-संस्कार करेंगे। सेवाग्रामसे चिमूर सीधे रास्ते करीब ६३ मील पड़ता था। जब हम लोग ४० मील दूर निकल गये तो अेक रातको अेक गांवमें, जहां हमारा मुकाम था, पुलिस पहुंच गअी और हम सबको वापिस हिंगनघाट ले आयी। पुलिसवालोंने हाथ जोड़ते हुअे कांपते कांपते यह काम किया और कहा कि यह पाप हम पेटके लिअे कर रहे हैं। वहांसे भंसालीभाअीको मोटर द्वारा सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया।

सत्याग्रहकी लड़ाअीमें भंसालीभाअीका अुपवास आश्रमकी तरफसे अेक महान बलिदान था। भंसालीभाअी मृत्युके बिलकुल नजदीक पहुंच गये थे। अेक रोज तो अुनकी नाजुक स्थितिको देखकर हमें लगा कि शायद रातको ही वे चल बसेंगे। अुस रोज पुलिसने बजाजवाड़ी पर घेरा डाल दिया था। लेकिन मेरे मनमें कुछ अैसा विश्वास था कि भंसालीभाअी अुपवाससे मरने-वाले नहीं हैं। अन्तमें सरकारने चिमूर-कांडकी जांच करनेकी भंसालीभाअीकी मांग स्वीकार की और ६३ दिनके पश्चात् अुनका अुपवास अीश्वर-कृपासे पूरा हुआ। अुसमें वे विजयी हुअे और आज भी देहातमें बैठकर लोगोंकी बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं।

अिस सत्याग्रहका अितिहास तो स्वतंत्र रूपसे लिखनेकी चीज है। मुझे यहां अितना ही जिक्र करना है कि आश्रमने अुसमें जितना भी संभव था सब कुछ किया।

बापूजीको पकड़कर कहां ले गये? क्या हुआ? अिसका कुछ भी पता बहुत दिनों तक नहीं चलने दिया गया। धीरे-धीरे थोड़े दिनके बाद गुप्त रूपसे पता चला कि बापूजीको आगाखां महलमें रखा गया है। करीब अेक महीने बाद बापूजीका दुर्गाबहनके नाम किया हुआ तार मिला। महादेवभाअीकी मृत्युके बारेमें अफवाह तो बाहर आ गअी थी, लेकिन बापूजीकी तरफसे कोअी प्रामाणिक खबर नहीं मिली थी। महादेवभाअीकी मृत्युसे आश्रमके लोगोंको बड़ा भारी धक्का लगा। दुर्गाबहन और महादेवभाअीका लड़का नारायण वहीं पर थे। आश्रममें अेकदम गहरा शोक छा गया। लेकिन दुर्गाबहन बहुत धैर्यवान निकलीं। अुन्होंने बहुत धीरज और समझसे काम लिया। नारायण भी बहुत समझदार लड़का निकला।

गांवमें महादेवभाअीकी मृत्यु पर शोकसभा की गअी। श्री दुर्गाबहनके हाथों हरिजनोंका विट्ठल-मन्दिर हिन्दूमात्रके लिअे और सवर्णोंका दत्त-मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया गया।

नारायण स्वयं भी सत्याग्रहमें शामिल होना चाहता था, लेकिन दुर्गा-बहनकी सान्त्वनाके लिअे अुसको समझाया गया और वह वहीं रहा।

बापूजीका अुपवास

१० फरवरी, १९४३ से बापूने आगाखां महलमें २१ दिनका अुपवास आरंभ कर दिया। जब बापूजीके अुपवासका बयान निकला, तब हम सबको

पता चला और भय हो गया कि शायद बापूजी अिस अुपवासमें चले जायंगे। सरकारके मनमें भी कुछ अैसी ही शंका थी, अिसलिअे बापूजीसे मिलनेकी लोगोंको बहुत बड़ी छूट दे दी गअी थी। आश्रमसे किसीका बापूजीके पास जानेका अिरादा नहीं था, लेकिन अन्तमें बापूजीके चिन्ताजनक समाचार आने लगे और अैसा लगने लगा कि शायद बापूजी चले जायंगे। अतः अुनके दर्शन करनेकी अिच्छासे मैं व्याकुल हो अुठा।

आश्रम कमेटी पहले किसीको भी खर्च देनेको तैयार नहीं थी। परन्तु पूनासे रामदासभाअी गांधीका फोन आया कि बलवंतसिंह आ सकते हैं। अिसलिअे कमेटीने मुझे जानेकी आज्ञा दे दी। मैं २८ तारीखको पूना पहुंचा। समय अितना हो गया था कि मेरी मुलाकातकी अर्जी भी मंजूर नहीं हो सकती थी। क्योंकि मुलाकातके दिन बीत चुके थे। अर्जी दी भी, लेकिन नामंजूर हो गअी। सद्भाग्यसे मि० कटेली, जिनके हाथमें आगाखां महलकी व्यवस्था थी, पहले यरवडा जेलमें मुख्य जेलर थे और मेरा अुनके साथ परिचय था। जब रामदासभाअीने अुनसे कहा कि बलवंतसिंह सेवाग्रामसे आये हैं, तो अुन्होंने अपने अधिकारसे मुझे भीतर आने दिया। दूसरे दिन बापू अुपवास खोलनेवाले थे। मैं जब वहां पहुंचा तो बापू पानी पी रहे थे। मुझे देखकर हंसे और बोले, "अरे, मैं तो आशा छोड़ बैठा था। आ गया? क्यों गायको बिलकुल ही भूल गया?" बापूके अिस वचनमें मेरे लिअे और गोसेवाके लिअे गहरी भावना भरी थी। बापूकी अुस समयकी मुद्रा और अुनकी प्रेमभरी दृष्टिका वर्णन करना मेरे लिअे असंभव है।

मैंने नम्रतासे कहा — मैं गायको भूला नहीं हूं। लेकिन आज कुछ नहीं कर सकता हूं। गोसेवा ही करनी है, लेकिन मैं अपने ढंगसे कर सकता हूं।

मुलाकातें काफी थीं। बापूजी काफी थके हुअे थे। शायद मुझसे कहनेको अनेक बातें अुनके दिलमें भरी थीं। पर मैं नहीं चाहता था कि बापू अेक शब्द भी बोलनेका कष्ट करें। अिसलिअे मैं अुनको प्रणाम करके हट गया। बापूजीके आगेके कार्यक्रमके बारेमें थोड़ी बात मीराबहनसे जान ली।

पूज्य बासे मिला। वे मुरझाअी हुअी और अुदास अेक खाट पर बैठी थीं। मैंने प्रणाम किया। बाने पूछा, "क्यों अच्छे हो? सेवाग्राममें सब अच्छे हैं?" अुन्होंने सबके नाम ले लेकर आश्रमवासियोंकी राजीखुशी पूछी।

मैंने थोड़ेमें सब बताया और कहा, "बा, आप सेवाग्राम आयेंगी तो आपको वहां आराम मिलेगा।"

बाने कहा, "अब तो सेवाग्राम आनेकी आशा नहीं दीखती है। मालूम होता है मैं तो यहीं मरूंगी। देखें, भगवान क्या करता है।"

फुअीबा, बापूजीकी बड़ी बहन, को पहली बार मैंने आगाखां महलमें देखा। अन्तमें प्यारेलालजी और सुशीलाबहनसे मिलकर मैं चला आया।

जब मैंने आगाखां महलमें प्रवेश किया, तो वह मुझे स्मशान जैसा भयावना प्रतीत हुआ था। और आखिर वह स्मशान ही बन गया।

२५

बाका स्वर्गवास और बापूजीकी रिहाअी

बापूजीसे मिलकर मैं बम्बअी होता हुआ सेवाग्राम आ गया। बादको १९४३ के दिसम्बरमें बंगाल चला गया। वहां मैं सतीशबाबूके साथ काम करता रहा। अचानक २२ फरवरी, १९४४ की रातको ९ बजे रेडियो बोल अुठा कि कस्तूरबा आज अिस दुनियासे चली गअीं। सबको भारी आघात पहुंचा। दूसरे दिन खादी-प्रतिष्ठानमें अुपवास, सूत्रयज्ञ और प्रार्थना हुअी। सब गंगास्नान करने गये और पूज्य बाको अंजलि प्रदान की। मैं बाके बहुत निकट सम्पर्कमें आया था, अतअेव मेरे कअी मित्रोंने मुझसे बाके विषयमें कुछ लिखनेको कहा। मास्टरजी क्षितिकंठ झाका अनुरोध सबसे अधिक और आग्रहपूर्ण था। मैंने अुन्हें लिखा:

"आपकी अिच्छा है कि मैं स्वर्गीय पूज्य बाके निकट परिचयके कुछ संस्मरण आपको लिखकर दूं। किन्तु मैं आपको अुनके बारेमें क्या लिखूं? मातृप्रेमसे अतृप्त मेरा मन बाके मातृस्नेहसे सांत्वना पाता था, क्योंकि मेरी मां मुझे बचपनमें ही छोड़कर चली गअी थी। अुनका पवित्र दर्शन और सत्संग मेरे लिअे गंगा जैसा ही पवित्र था। आज मैं अपनेको अनाथ बच्चेकी तरह महसूस करता हूं। अुनके लिअे रातभर मेरा दिल रोया है। स्वप्नमें बापूजीको अकेला देखकर वेदना और भी तीव्र हो गअी है। किन्तु बापूजी तो अिस सबके परे हैं। सचमुच पूज्य बाकी प्रेममय फटकार अब सुननेको

नहीं मिलेगी। अुनके पवित्र संस्मरण तथा अुनके अनेक असाधारण सद्‌गुणोंके विचारसे मेरा हृदय भर आता है और बुद्धिका भी वही हाल हो जाता है।

भरत महा महिमा जलरासी।
मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला-सी।।

"फिर भी आपका प्रेम और पूज्य बाके प्रति आपकी अगाध श्रद्धा मुझे लिखनेकी प्रेरणा देती है। अिसलिअे थोड़ेसे घरेलू संस्मरण सिर्फ आपकी जानकारीके लिअे लिखता हूं। बाका जीवन अितना सार्वजनिक था कि सब कोअी अुनके जीवनके बारेमें सब कुछ जानते हैं। तो भी मुझे जो अुनके चरण-कमलोंके निकट रहनेका सौभाग्य मिला और मैंने जिस दृष्टिसे अुन्हें देखा अुससे शायद आपको कुछ विशेष जानकारी मिले। अस्तु।

"यह तो आप जानते ही हैं कि बा बहुत कम पढ़ी-लिखी थीं। तो भी गुजराती और हिन्दीमें अनेक धार्मिक ग्रंथोंका अुनका अभ्यास चालू ही रहता था। अितना ही नहीं, अिस अुम्रमें भी वे अेक छोटे विद्यार्थीकी तरह गीताके श्लोकोंका शुद्ध पाठ करने तथा अुन्हें कंठस्थ करनेका सतत प्रयत्न किया करती थीं। और हममें से जिनके पाससे वे भाषा तथा ग्रंथों संबंधी कुछ भी सीख सकती थीं बड़ी श्रद्धाके साथ सीखा करती थीं। अितनी पूज्य और अितनी बुजुर्ग होते हुअे भी किसीसे पढ़ते समय वे अेक योग्य विनयी विद्यार्थीकी तरह शिष्यभावसे ही पढ़ा करती थीं। मुझे अुनको कुछ दिन रामायण पढ़ानेका सौभाग्य मिला था। अुस समय मैंने अुनसे आदर्श विद्यार्थी बननेका पाठ पढ़ा था।

"बाकी अितनी अुम्र होते हुअे भी और अेक महापुरुषकी सहधर्मिणी बननेका सौभाग्य प्राप्त होने पर भी अिसके अभिमानने या अिस स्थितिसे सुविधा भोगनेकी भावनाने अुन्हें स्पर्श तक नहीं किया था। सेवाग्राममें अितने सेवक-सेविकाओंके रहते हुअे भी बा अपना काम आप ही करनेका आग्रह रखती थीं। अपना चेम्बर पॉट व कमोड भी जब तक खुद बीमार होकर बिस्तरमें न पड़ जायें, किसीको साफ नहीं करने देती थीं। अितना ही नहीं, आश्रमके भोजनालयका कुछ काम तो अपने हाथों किये बिना वे रहती ही नहीं थीं। अिसके बिना अुनको चैन ही नहीं पड़ता था। आश्रमके बीमारोंकी खबरदारी तो बा रखती ही थीं। परन्तु अितनी कमजोरीके बावजूद बापूजीकी कुछ न कुछ शारीरिक सेवा किये बिना भी वे नहीं रह

सकती थीं। आश्रमके जवान लड़के-लड़कियों पर वे अेक माताकी तरह कड़ी निगरानी रखती थीं।

"बाकी गोभक्ति अद्भुत थी। जब गोपूजाका कोअी त्यौहार आता तो बा मुझसे कहतीं, 'बलवंत, अेक बछड़ेवाली गाय मुझे पूजाके लिअे चाहिये।' अुनकी प्रेममय गोपूजा देखकर मुझे यशोदा मांकी याद आ जाती थी। अकसर मैं अुनको देवकी नामकी गाय दिया करता था, जो वास्तवमें हमारी गोशालाकी मां थी और सचमुच देवकी जैसी ही निरीह और प्रेमकी मूर्ति थी।

"अगर आश्रममें बा न होतीं तो हमें त्यौहारोंका पता चलना असम्भव-सा ही था। कोअी त्यौहार हुआ कि बाकी सीधीसादी प्रसादी, जो आश्रमके अस्वाद-व्रतकी व्याख्यामें आती, हमारे सामने आ ही जाती थी। तब पता चलता था कि आज अेकादशी या संक्रान्तिका दिन है।

"देश या विदेशके राजनीतिक मामलोंमें अुनकी स्वतंत्र दिलचस्पी न रहते हुअे भी वे रोजाना अखबार पढ़कर सब बातोंकी जानकारी रखती थीं। लड़ाअीकी अिस मानव-संहारिणी विध्वंस-लीलाके बारेमें सुनकर व पढ़कर अुनको काफी वेदना होती थी। अेक रोज कुछ बात चल रही थी। वे बोलीं, 'आ लडाअी तो जगतनो नाश करीने ज शान्त थशे के शुं?' (यह लड़ाअी जगतका नाश करके ही शान्त होगी क्या?) बंगालके दुष्कालके बारेमें आगाखां महलसे अेक पत्रमें अुन्होंने लिखा था, 'बंगाळना समाचार सांभळीने तो हैयुं फाटे छे. जाणे बंगाळमां तो आकाश ज फाटी पड्युं छे. कोण जाणे अीश्वर शुं करशे?' (बंगालके समाचार सुनकर हृदय कांप अुठता है। बंगाल पर तो आकाश ही फट पड़ा है। न मालूम भगवान क्या करेगा?) अिससे आप जान सकते हैं कि देशकी कितनी चिन्ता अुनको रहती थी।

"बा यद्यपि बहुत कम पढ़ी-लिखी थीं तो भी अंग्रेज मेहमानोंका टूटी-फूटी अंग्रेजीमें ही स्वागत करती थीं और अुनके साथ कुछ बातचीत भी अंग्रेजीमें कर लिया करती थीं। अगर बाहरी दुनियाकी बात बापूजीके लिअे छोड़ दें तो बाके बिना आश्रम सूना-सा लगा करता था।

"जिस दिन बापूजी बम्बअी गये थे, मैं वर्धा स्टेशन तक अुन्हें पहुंचाने गया था। गाड़ी लेट थी। स्टेशनके वेटिंग रूममें बापू तो कुछ
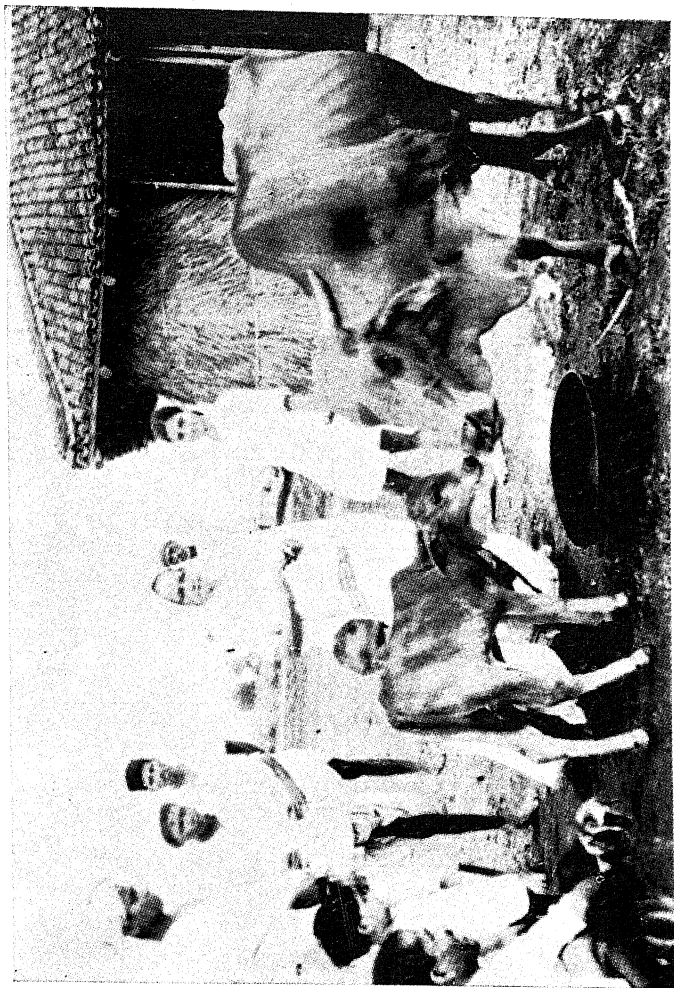
पूज्य कस्तूरबा गोपूजाके लिअे तैयार हैं। लेखक बछड़ेको पकड़कर बैठे हैं।

लिखने लगे और हम लोग बाके पास बैठकर अुनसे कुछ बातचीत करने लगे। जब बा चलने लगीं तो मेरे मनमें अुनके जल्दी लौट आनेके बारेमें शंका अुठी। अिसीसे मैंने प्रणाम करके कहा, 'बा, जल्दी लौटना।' बा बोलीं, 'हां भैया, तुम्हारे आशीर्वादसे लौट आयी तो आनन्द ही होगा।' बाके अिन शब्दोंमें वियोगकी वेदना थी और लौटनेके बारेमें निराशा। बाके वे करुणामय शब्द आज भी मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं और अुनकी वह प्रेममयी मूर्ति मेरी आंखोंके सामने नाच रही है। शायद बाकी वही भविष्यवाणी थी, जो कल सच होकर ही रही। मेरी व्यक्तिगत श्रद्धा तो बामें अितनी बढ़ गयी थी कि यदि बापू और बा अेक नावमें बैठे हों, नाव डूबने लगे और दोनोंमें से अेकको ही बचाया जा सकता हो और अगर अुस हालतमें मेरा बस चले तो मैं पहले बाको बचानेकी कोशिश करूं। क्योंकि बापूने अपनी कठोर तपश्चर्याके बलसे जिन दैवी सम्पदाओंको प्राप्त किया है, अुनका अटूट भंडार स्वभावसे ही बामें भरा था। आज मैं जब अपने पुराने अितिहासकी तरफ नजर घुमाकर देखता हूं तो पू० बाके त्याग, अुनकी मूक तपश्चर्या और अुनकी अमर मृत्युके लायक अुपमा मुझे अेक भी नहीं मिल रही है।

"हिन्दू धर्मको अनेक महादेवियोंने धर्ममार्ग दिखाया है, जैसे सीता, सावित्री आदिने। सावित्री तो अेक बार ही अपने पतिको यमराजसे वापिस लायी थी। सीता सिर्फ १४ वर्ष ही रामके साथ वनवासमें रही। लेकिन बा तो जन्मभर बापूके साथ वनवासमें रहीं और जन्मभर अुनके लिअे यमराजसे लड़ती रहीं। और आखिरमें विजयी होकर अुन्होंने अपने आपको सादर अुसके सुपुर्द कर दिया। अैसा पवित्र जीवन और पवित्र मृत्युका अुदाहरण भारतके या दुनियाके अितिहासमें क्या कोअी आपकी नजरमें है? बा जो आदर्श छोड़ गयी हैं अुससे देशके सारे स्त्री-पुरुषोंको लाखों क्या करोड़ों वर्षों तक धार्मिक और राजनीतिक मार्ग पर चलनेकी शक्ति और प्रकाश मिलता रहेगा।

"गीताका कर्मयोग तो बाके लिअे महामंत्र था। कामके बिना अेक क्षण भी रहना अुनके लिअे अस्वभाविक था। अुनकी कार्य-तत्परता देखकर हम सबको सिर झुकाना पड़ता था। और अिस वृद्धावस्थामें अुनकी अैसी कार्य-तत्परता तथा शारीरिक और मानसिक शक्तिको देखकर हमें आश्चर्य होता था।

"बा बराबर नियमित रूपसे सूत कातती थीं। जब तक बीमारीके कारण बिलकुल शय्याशायी न हो जातीं तब तक अुनका सूत कातना नियमित चलता था और प्रार्थनाके समय देखा जाता था कि सबसे ज्यादा सूत कातनेवालोंमें अेक बा भी होती थीं। कितने ही समय तक अस्वस्थ रहने पर भी बापू तथा आश्रमको छोड़कर जलवायु परिवर्तन करना या अपने पुत्र तथा स्नेहियोंके पास जाना अुन्होंने कभी पसन्द नहीं किया।

"पूज्य बाके प्रति बापूका अितना आदर था कि जब बा कहीं बाहर जातीं या बाहरसे आतीं तो बापू अपने जरूरीसे जरूरी कामको भी छोड़कर बाको पहुंचाने या अुनका स्वागत करने आश्रमके बाहर तक जाते थे। बापूने कितनी ही बार कहा है, 'मुझे और बाको नजदीकसे जाननेवाले लोगोंमें तो अैसे ही लोग ज्यादा हैं जिन्हें मुझ पर जितनी श्रद्धा है अुससे कहीं ज्यादा बाके अूपर है।' पू० बाके जैसा पवित्र आदर्श जीवन और मृत्यु अीश्वर सबको दे अैसी प्रार्थना करें। अुनकी पवित्र मृत्युका शोक तो हम क्या करें?

मेरा मुझ पर कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा मुझको सौंपते, क्या लागत है मोर?

"बस, बा जिसकी थीं अुसके पास चली गयीं। हम सबको भी अेक दिन जाना है। किसी संतने कहा है: 'अैसा काम करो कि रोते आये थे, हंसते हंसते जाओ।'

"पूज्य बा हंसते हंसते गअीं। वे अितनी अूंची व पवित्रात्मा थीं कि अुनकी आत्माको हमेशा ही शांति थी। और अिसमें संदेह नहीं कि वे भगवानकी गोदमें शान्तिपूर्वक विश्राम करेंगी।

२३-२-'४४

आपके भाअी
बलवन्तसिंहके सादर प्रणाम"

* * *

अब मैं पूज्य बाकी डायरीके कुछ नमूने यहां देता हूं:

ता० ४-२-'३३

५ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। ८ बजे परिषदका कार्यक्रम था। अुसम जाते समय ७ बहिनोंको पकड़ा। पीछे पुलिस चौकी पर ले गये। नाम लिख लिये। अुसके बाद भोजनके लिअे पूछा। भोजन गांवमें से आया।

भोजन करके स्टेशनके लिओ निकली। १२ बजे थाना स्टेशन पर अुतरी। थानेदारने आकर पानी वगैराके लिओ पूछा। पीछे स्टेशन पर ही बिठाया। नाम लिखा। गाड़ीमें बैठी। बोरसद आते समय स्टेशन पर भाओी-बहन मिलने आये थे। ५ बजे बोरसद आओी। स्टेशनसे चलकर हवालातमें आओी। मैजिस्ट्रेटसे मिली। प्रार्थना।

साबरमती जेल, ता० १६–२–'३३

मैं यहां आओी तब मीराबहन अुसी दिन सुबह आओी थी। अिससे आनन्द हुआ। हम दोनों साथमें ही रहती हैं। मैं और मीराबहन ठीक ४ के घण्टे पर प्रार्थना करती हैं। अुसके बाद सो जाती हूं। अुसके बाद नित्यकर्म, नहाना-धोना वगैरा, कॉफी पीना। दस साढ़े दस बजे सुपरिन्टेन्डेन्ट रोज आते हैं। सुबह डॉक्टर आता है। ११ बजे भोजन, अेक घण्टा आराम। दोसे साढ़े चार तक हिन्दी पढ़ना। धुनना, चरखा कातना। साढ़े पांच पर भोजन। अुसके बाद घूमना। सात पर प्रार्थना। वाचन। बातचीत और ९ बजे सो जाना। काता तार २००।

ता० ७–३–'३३

३॥ बजे अुठी। प्रार्थना। बादमें सो गओी। ६ बजे अुठी। नित्यकर्म। आफिसमें बुलाया। कलेक्टरने सब बहनोंको नोटिस दिया कि घन्टेभरमें जेल छोड़कर चली जायें तथा आश्रम और फलड़ीके बीचमें रहें। नदी पार नहीं करें। मैंने और दूसरी बहनोंने जेलकी हदमें रहकर ही नोटिसका भंग किया। हमको पकड़कर नाम-ठाम लिखकर मजिस्ट्रेटके सामने खड़ा किया। फिर जेलमें ले गये। १२ बजे भोजन किया। काता नहीं। थक गओी थी। सो नहीं सकी।

ता० ३१–३–'३३, रात

४॥ बजे पुलिससे भरी तीन मोटरें आओीं। मुझे, बालको और महादेव भाओीको अेक मोटरमें ले गये। बापूजीको अलग मोटरमें ले गये और जेलमें बन्द कर लिया। आश्रमसे दूसरी बहनोंको भी ले आये। अुसी दिन रातको बापूजीको ले गये। दूसरे दिन अखबारमें पढ़ा कि बापूजीके साथ महादेवभाओीको भी यरवडा ले गये हैं।

ता० ७–४–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। ९ बजे अखबार पढ़ा। ११ बजे भोजन। ४०० तार काते। २ बजे हिन्दी। ३ बजे दूसरी बहन आती है। ४ के बाद गुजराती लिखती हूं। ५।। भोजन। ६।। बजे बहनोंको बन्द कर देते हैं। ७ बजे प्रार्थना। भजन। भागवत सुनती हूं।

ता० ४–५–'३३, गुरुवार

४ बजे प्रार्थना। गीता। नित्यकर्म। काता। अभी अखबार नहीं आया। मीराबहन रोटी बनाती है। बापूजीके पास जानेके लिअे बहुत चिंता करती है। बापूजीका यह अुपवास, यह तपश्चर्या, बहुत कठिन है।

ता० ८–५–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। आजसे बापूजीका महायज्ञ शुरू होता है। यहां हमने प्रार्थना की थी। आशा रखी थी कि मुझे बापूजीके पास ले जायेंगे। परन्तु अभी तक मुझे बुलाया नहीं है।

ता० १०–५–'३३

कल रामदास मिलने आया था। अुसके साथ मनु थी। अिस बार मेरा नसीब फूट गया है। नहीं तो मुझे क्यों न ले जायें? चिंता बहुत ही होती है। अिस बार भी मैं दूर बैठी हूं। ४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। ५०० तार काते।

ता० ११–५–'३३

प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। बापूजीको तार किया कि मुझे आपके पास आना है। अुनका तार आया कि धीरज रखना। फिर दूसरा तार आया कि खुद सरकारसे अिजाजत नहीं मांगी जा सकती। शान्ति रखना। बादको मैं कातती रही। प्रार्थना करती रही। दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।

ता० १३–५–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। कॉफी पी। १० बजे अडवाणी आये। कहा, आपको छोड़ा जाता है। तयार होकर बाहर आअी। दरवाजे पर रामदास था। फिर मैं आश्रममें गअी। शामकी प्रार्थना करके पूनाके लिअे निकली।

ता० १४-५-'३३

प्रार्थना। गीता पढ़ी। सुबहसे चलकर डेढ़ बजे हमारी गाड़ी दादर आओी। वहांसे पूना आओी। प्रेमलीलाबहन और मथुरादास आया था। मेरे साथ हरिपाल था। मैं बापूजीसे खुशीसे मिली। रोओी नहीं थी। परन्तु अब बापूजी बहुत कमजोर हो गये हैं।

ता० १५-५-'३३

४ बजे प्रार्थना। नित्यकर्म। अब तो चलते-फिरते बापूजीको देखते रहना है। बने अुतनी सेवा करनी है। बहुत सूख गये हैं। परन्तु अेक भी शब्द मुखसे नहीं निकलता है। मुझे दुःख होता है कि अिसमें क्या होगा। यह भी नहीं बोलते हैं। ४०० तार काते।

ता० २१-५-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता। नित्यकर्म। अिसी प्रकार चलता रहता है। बम्बअीके डॉक्टर ४ बार आ गये। अिसमें कोओी कुछ नहीं कर सकता है। अिसमें तो ओीश्वरकी ही मददकी जरूरत है। वह (मदद) दे रहा है अैसा मुझे लग रहा है।

ता० २९-५-'३३

४ बजे प्रार्थना। नित्यकर्म। बापूजीका किसी दिन सिरदर्द नहीं करता है। बापूजीका यज्ञ बहुत अच्छी तरहसे चलता है। अिनका मन बहुत दृढ़ था। अिसलिअे अग्नि-प्रवेशमें से ओीश्वरने अिन्हें मुक्त किया है।

ता० १७-७-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता। नित्यकर्म। ६ बजे बापूजीको नाश्ता। मुझे अैसा लगता कि बापूजीको मैं खाना दूं। प्रेमाको अैसा लगता कि मैं दूं। अिसलिअे होड़ चलती थी। अिससे मैं हारकर बैठ जाती थी।

बापूजी भी कहते हैं कि बाको कुछ काम नहीं है। परन्तु मैं क्या करूं? मुझे बापूजीके पास खाली बैठना पसन्द नहीं है।

ता० २३-७-'३३

मुझे बहुत विचार आते हैं, परन्तु अमल नहीं कर पाती हूं। सत्याग्रहकी लड़ाओीमें क्या होगा अिसका पता नहीं है।

ता० १८–८–'३३

अखबारमें पढ़ा कि अभी तो बापूजीका अुपवास चल रहा है। खूब चिन्ता होती है। अपना कुछ चलनेवाला नहीं है। अीश्वर करेगा सो होगा। बादमें मैंने शुक्रवारको बापूजीको तार किया कि अखबार द्वारा सुना है कि आपका आज तीसरा अुपवास है तो खबर दें कि तबीयत कैसी है।

ता० १९–८–'३३, शनिवार

परन्तु जवाब न आया। मुझे शामके पौने सात बजे कहा कि तैयार हो जाओ, आपको जाना है। मैं समझ गअी कि मुझे यरवडा ले जायेंगे।

ता० २१–८–'३३

मुझे आफिसमें बुलाया और कलेक्टरने कहा, आपको छोड़ दिया गया है। मैंने पूछा, गांधीजी छूटे हैं? अुसने कहा, गांधीजी अस्पतालमें हैं। वहां आपको जाने देंगे। मैं आअी। बहनोंसे मिली। सामान बांधने मथुरादास आया था। पर्णकुटी गअी। फिर बापूजीके पास अस्पतालमें गअी। वहां बहुत खड़ा रहना पड़ा। बम्बअीका बड़ा पुलिस अफसर आया। अुसने मुझसे पूछा, आपको गांधीजीके पास जाना है? मैंने हां कहा। फिर मैं गअी। फिर मुझसे कहा गया कि रातके ८ के बाद यहां नहीं रहना है। मैं पर्णकुटी आअी।

ता० २३–८–'३३

मीरा आअी। मैं अस्पतालमें गअी। मैंने सामानकी गठरी बांधी थी। वह खोली। बापूजीने कहा, सारा सामान अस्पतालमें दे दो। मैंने सारा सामान दे दिया। बापूजीको अुलटी हुअी थी। सुबह बहुत कमजोरी आ गअी थी। "अब मैं अिस बिस्तरमें से अुठनेवाला नहीं हूं। तुमने कुछ फिकर नहीं करना। तुमको तो मगरूरी रखना है। सत्य अिसीको कहते हैं।" बापूजीने मुझसे कहा। परन्तु अीश्वर दयालु है। अुसने अपने भक्तोंको तारा है। परन्तु जो होनेवाला होगा वह होगा। ३ बजे पर्णकुटीमें आये हैं।

ता० ९–९–'३३

शनिवारको पौने सात बजे पंडित जवाहरलाल यहां आये हैं। रवि-वारसे बातें चल रही हैं।

अिसमें आनन्द आता है। अिनकी माताजीकी तबीयत अच्छी नहीं है। लखनअू अस्पतालमें हैं। अिनकी पत्नी भी बीमार है।

ता० १२–९–'३३

बापूजीकी, पं० जवाहरलालकी, कृपालानीकी, मिसेस नायडूकी, अिन् सबकी मुलाकात चलती है। आशा है कि बुधवारको पूरी हो जायगी। यहां सब आनन्दमें हैं। रामदासका पोस्टकार्ड आया है। देवदासका तार आया था कि बापूजीकी तबीयत कैसी है? यहांसे तार किया है। १६० तार काते।

ता० १३–९–'३३

पौने चार बजे अुठी। प्रार्थना। गीता चन्द्रशेखर पढ़ता है। बापूजीको थकान लगती है। परन्तु वे काम छोड़ते ही नहीं हैं। रातको ११ बजे सोते हैं। वजन घटता बढ़ता है। अैसा ही चलता है। अिनका जीवन अैसे ही जायगा। अिनको हरिजनोंकी बहुत चिन्ता है। अिसे तो अीश्वर ही दूर करे तो होगी। हिन्दुस्तानमें अेकताकी कमी है। २०० तार काते।

* * *

सन् १९४४ के मअीमें बापूजी जेलसे छूट गये और कुछ दिन आरामके लिअे जूहू चले गये। मैंने बंगालसे बापूजीको लिखा कि आपसे मिलनेकी अिच्छा होती है, लेकिन मनको रोकनेकी कोशिश करता हूं। बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। थोड़े शब्द तो तुमको भी लिखूं, क्योंकि थोड़ा थोड़ा प्रियजनोंको लिखता हूं। तुम्हारा वहां ठीक जम गया है। सतीशबाबूको मदद मिलती है, देनी चाहिये। अच्छे रहो। मेरे पास आनेकी अिच्छाको रोको।

जूहू, ३१–५–'४४ बापूके आशीर्वाद

मैं बंगालसे ता० २१–९–'४४ को सेवाग्राम वापिस आया। बापूजी गांधी-जिन्ना वार्ताके लिअे बम्बअी गये थे। वहांसे ता० १–१०–'४४ को वापिस आये। मैंने बापूजीको बंगालका अनुभव और १९४२ के आन्दोलनमें बाहर क्या क्या हुआ अुसका सब हाल सुनाया। वे कुछ नहीं बोले। अुन्होंने दुःखसे अेक लम्बी सांस ली। मैंने दीपावलीके दूसरे दिन बापूजीको अपने मनकी

स्थिति बतलायी। संस्कृत पढ़नेकी अिच्छा प्रकट की और अंग्रेजीके विषयमें अुनकी राय जाननी चाही। बापूजीने लिखा :

संस्कृत अवश्य पढ़ो। अुच्चारण शुद्ध बनानेमें किया हुआ प्रयत्न व्यर्थ नहीं जायगा। प्रत्येक भाषाके अुच्चारण शुद्ध होने चाहिये, परन्तु संस्कृत भाषाके लिअे शायद शुद्ध अुच्चारण अत्यावश्यक है। अंग्रेजीका अभ्यास तुम्हारे लिअे बिलकुल आवश्यक नहीं है। जो ज्ञान है अुसे व्यवस्थित करो और अुसमें वृद्धि करो।

मेरे आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ हैं ही।

२१–१०–'४४ बापू

दूसरे दिन आश्रमवासियोंके सामने बापूजीने आश्रमकी विश्व-कुटुम्ब भावना और ग्रामसेवाकी कमीके अूपर गम्भीर प्रवचन दिया। अन्तमें अुन्होंने कहा, "अगर हम सेवाका तेज न बता सकें, तो प्रजाका पैसा खाकर यहां रहना अच्छा नहीं है।"

बापूजीके मनमें यह विचार चल रहा था कि अब आश्रमको बिखेर देना चाहिये। वे चाहते थे कि आश्रमसे जो लोग बाहर जाकर अधिक काम कर सकते हैं, वे बाहर जाकर अधिक काम करें। अिस विषयमें बापूजीके साथ हमारी खूब चर्चा होती थी। मैंने बापूको अेक लम्बा पत्र लिखा, जिसका आशय यह था कि आपने यहां सब संस्थाओंको बसाकर ठीक नहीं किया है। अुनमें आपसमें कुछ न कुछ संघर्ष चलता है और देहातका काम भी अेक दृष्टिसे नहीं हो पाता है। आपके रोज नये नये परिवर्तन चलते रहते हैं। अैसे ही आपने साबरमती आश्रमका परिवर्तन किया। अब अिसका भी करना चाहते हैं। यदि ये संस्थाअें अलग अलग गांवमें बसतीं और स्वतंत्र रीतिसे काम करतीं, तो अिससे गांवोंकी अधिक सेवा होती। बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अुसमें तुमने बुद्धिका बल नहीं बताया है। खादी-विद्यालय आदि लाकर मैंने बिगाड़ा नहीं है। मेरी ही बनाअी हुअी संस्थाओंको मेरे नजदीकमें ही कार्य करना था। अगर अुनके सब सेवक अेक कुटुम्ब होकर न रह सकें तो दोष किसका? मेरा? हो सकता है। कि दोष देखनेवालेका? मैंने समझ-बूझकर साबरमती

सत्याग्रह आश्रमका परिवर्तन किया। मेरा विश्वास है कि सच्चे होकर हमने कुछ भी गंवाया नहीं है। आज जो मंथन हुआ अुससे भी कुछ हानि नहीं हुअी है। हम सोते थे, जाग्रत हुअे।

कल जो हुआ अुसका नतीजा यह है कि हम अैसे ही रहेंगे तो ठीक नहीं होगा। जो बाहर जाकर ज्यादा सेवा कर सकते हैं अुन्हें जाना ही चाहिये। मेरे कार्य और परिवर्तनको जो न समझ सकें, वे मेरे सान्निध्यसे क्या लाभ अुठा सकते हैं? फायर-बकेट बनो तब तो मूक हो जाओ, नम्र बनो, सबको आश्वासनरूप बनो और यह सब समझकर बनो। संस्कृत अभ्यास बराबर करो। प्रथम कार्य तुम्हारा यह है कि तुम्हारे खतमें जो विचारदोष है अुसे दुरुस्त करना। किशोर-लालसे मशविरा करो। मेरे साथ संवाद करना है तो समय मांगो।

२७-१०-'४४ बापूके आशीर्वाद

मुझे सतीशबाबूने वहांकी गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे कलकत्ता बुलाया था। आश्रमके कामकाजके बारेमें बापूजीके सामने कुछ सुझाव रखने थे। बापूजीको मैंने लिखकर बताया। अुसके जवाबमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुमने ठीक सावधान किया है। जो हो सके करूंगा। जैसे हम समग्र हैं, अैसा ही फल आयेगा।

कौन जानता है कल क्या होगा? रामजीने नहीं जाना था कि प्रातःकालमें क्या होनेवाला है। वहांका काम ठीक करके निश्चित होकर वापिस आ जाओ।

सेवाग्राम, २०-११-'४४ बापूके आशीर्वाद

सचमुच बापूके बारेमें तो अैसा ही हुआ। किसको पता था कि ३० जनवरी, १९४८ की सायंप्रार्थना बापूजी नहीं कर सकेंगे? लेकिन मेरा अेक अेक क्षण अीश्वरके हाथमें है, अैसा अुनका अटल विश्वास था। अिसीलिअे अुनके मुंहसे अन्तमें रामका नाम ही निकला।

२६

महादेवभाओी और पूज्य बाके पुण्यस्मरण

जब बापूजीकी तबीयत ठीक रहती थी तब आश्रममें शुरू शुरूमें तकलीसे सूत्रयज्ञ आरम्भ हुआ और बापूजी अुसमें मौजूद रहते थे। अुस समयका गाम्भीर्य देखने लायक होता था। सारा वातावरण यज्ञमय बन जाता था। आगाखां महलसे छूटनेके बाद बापूजी जब सेवाग्राममें रहते थे तब यह सूत्र-यज्ञ महादेवभाअीके अुस कमरेमें चलता था, जिसमें बैठकर महादेवभाअी अपना सारा काम करते थे। भगवान अपने भक्तकी किस तरह सेवा करता है, यह महादेवभाअीके प्रति बापूजीके जीते-जागते प्रेमसे प्रत्यक्ष दिखाअी देता था। अुस समय अैसा प्रतीत होता था जैसे बापूजी महादेवभाअीका जप कर रहे हैं और महादेवभाअी बापूके सामने हंस रहे हैं। क्योंकि महादेवभाअी सूत्रयज्ञके बारेमें बहुत दृढ़ और नियमित थे। कितना भी काम क्यों न हो, ३७५ तार तो वे कातते ही थे। आश्रममें सूत्रयज्ञका यह क्रम काफी दिन तक चला।

२२ फरवरी, १९४५ को बाकी पहली बरसीके समय बापूजी सेवाग्राममें ही थे। अुस रोज सुबहसे ही गीता-पारायण हुआ। सूत्रयज्ञ तो चला ही। मैंने बापूसे कहा कि बाको रामायण बहुत प्रिय थी, अिसलिअे अुसका पाठ होना चाहिये। अतः रामायणका पाठ भी सारे दिन चला। शामको सामूहिक प्रार्थना हुअी। बापूजीने अुसमें बाके प्रति हृदयकी गहरी श्रद्धा व्यक्त करते हुअे कहा:

"सूर्यकी गतिके हिसाबसे आज बाको गये अेक वर्ष पूरा होता है। चन्द्रकी गतिसे महाशिवरात्रिके दिन अवसान हुआ था। यह खेदका प्रकरण नहीं है बल्कि जन्मके दिनकी तरह बड़ा आनन्द होना चाहिये। मैं जन्म और मृत्युमें बड़ा फर्क नहीं मानता। आत्माका न जन्म है न मृत्यु। हम बाकी आत्माको चाहते थे। अुसका तो कभी हनन नहीं होता है।

"अैसे दिन बाह्य रूपसे तो हम धार्मिक क्रियामें ही बिताते हैं। आज २४ घंटे चरखा चला। वह मेरे लिअे धार्मिक विधि है। बलवन्तसिंहकी प्रेरणासे दिनभर रामायण भी चली। सुबह गीता-पारायण हुआ। मगर

अिससे हमारा पेट नहीं भरता। हम लोग सोच-समझकर धार्मिक क्रिया करें, अीश्वरको स्वीकार करें। अीश्वर अूपर नहीं, नीचे नहीं, हृदयस्थ है। सचमुच तो वह हर जगह है। शास्त्रमें जो लिखा है कि चन्द चीजें खाली हो सकती हैं, वह हवासे खाली होनेकी बात हो सकती है। हवासे खाली करो तो भी कुछ तो रह ही जाती है। भौतिक शास्त्रवालोंने तो यह देख लिया है कि हवासे भी सूक्ष्म कोअी चीज है। आध्यात्मिक शास्त्रवालोंने देख लिया है कि अीश्वर सब जगह है। हमारी सब धार्मिक क्रियाओंका वह अीश्वर साक्षी है।

"कल मैंने कहा कि पहले हमें अपना पाप धोना है। कल विवाह* था। पहले पांच मिनट मैं पाखाना देखने गया। वहां बदबू थी, आंखोंने मैला देखा। मैला क्या भौतिक पाप नहीं है? मैला रखनेमें हमने बड़ी गलती की है। अैसे ही पाप हमने यहां भी किये होंगे। तो हमें देखना है कि हमारे पाखाने और रसोअीघर बिलकुल साफ हैं या नहीं? रसोअीका काम बराबर चलता है या नहीं? क्यों हम अेक-दूसरेको दु:ख देते हैं? क्यों मच्छर-मक्खी बढ़ते हैं? यह हमारे पापकी निशानी है। अिनके बढ़नेका कारण अभी तक मेरे हाथमें नहीं आया। लेकिन अिससे हमारा पाप मिट नहीं जाता।

"अिस शुभ दिन हमने चरखा चलाया, दूसरा धर्मकार्य किया। अुसके हम लायक थे या नहीं, अुसका चिह्न यह है कि हम सफाअी रखते हैं या नहीं। अिसे पाप न कहो, दोष कहो। मगर मेरे सामने वह अेक ही चीज है। अिस पापका बदला आगामी जन्ममें नहीं, अिसी जन्ममें मिल जाता है। अिस तरह देखें तो हमारा जीवन सरल और आनन्दमय बन जाता है।

"कान्तिका पत्र था। अुसमें दो विद्वानोंका अुल्लेख किया है। अेकने कहा, 'चरखा चलाना मैं धर्म नहीं मानता। यह तो रूढ़ि हो गअी है, अिसलिअे चलाता हूं।' किसीको देखकर चरखा चलानेसे वह धर्मकार्य नहीं होगा, अुससे स्वराज्य नहीं आवेगा। वह तब होगा जब हम अुसके शास्त्रको, अुसकी शक्तिको समझ लें। अिस तरह बिना विश्वास चरखा चलानेवाले आश्रममें तो नहीं होने चाहिये। यहां सब चरखा नहीं चलाते हैं। वह मैं सहन करता हूं। देखकर करनेवालोंको मैं मना नहीं कर सकता। मगर अितना बता देता हूं कि अुससे कार्यसिद्धि नहीं होगी।

---

* कनु गांधी और आभा गांधीका विवाह ।

"दूसरे विद्वानने कहा, 'प्रार्थनामें मैं मानता नहीं।' वह अुनका दोष नहीं। अुसका कारण यह है कि हम प्रार्थना करनेवाले प्रार्थनाको जीवनमें ओतप्रोत नहीं करते। अुन्होंने मुझे चेतावनी दी कि तुम्हारे आसपास क्या सच्चे आदमी हैं या धोखा देनेवाले; तुम्हारे नसीबमें निराशा ही निराशा है। मुझे निराशा नहीं। मैं तो अपना धर्म पालन करता हूं, बता देता हूं। पीछे मुझे क्या? वह विद्वान गीता पर प्रवचन देते हैं, प्रार्थनामें बैठते हैं, मगर रिवाजके कारण करते हैं।

"अगर प्रार्थनामें मन घूमता रहे, अीश्वरमें न रहे, तो प्रार्थनामें हाजिरी मात्र भले ही हो, हम वहां नहीं हैं। हमारे शरीर और मनमें द्वन्द्व चलता है। आखिर मन जीत जाता है। यह सब कहनेका हेतु अितना ही है कि आज जिसे हम धर्मदिन मानते हैं, अेक स्वच्छ अनपढ़ बूढ़ी औरतके नामसे, अुसके स्मरणसे जो करते हैं अुसे पूरे मनसे करें, वह सच्ची चीज हो।"

अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी आश्रममें आयी। अुस रोज रातको तो समय नहीं मिला, लेकिन २३ तारीखको सुबह मैं अुसे बापूके पास ले गया। वह तो सिर्फ बापूजीके दर्शन करनेके लिअे और अुनको अेक चद्दर भेंट करने आयी थी। मैंने बापूजीसे कहा, "बापूजी, आप अिस लड़कीको पहचानते हैं?" १९३९ में वह दिल्लीमें बापूजीसे मिल चुकी थी। बापूजीने कहा, "हां, क्यों नहीं।" और हंसकर बोले, "क्यों अब तो नहीं जायगी?" अुसका सेवाग्राममें रहनेका कोअी अिरादा नहीं था, लेकिन बापूके अिस वचनने अुसको बांध लिया। अुसने कहा, "हां, आप रखेंगे तो रहूंगी आपके पास।" बापूने कहा, "अब तो यहीं रहना है।" बापूके अुस वचनका अितना चमत्कारिक असर अुस पर हुआ कि कुटुम्बके सब लोगोंका विरोध सहन करके भी वह आश्रममें रही। अिस तरह न मालूम कितने लोगोंको बापूजीने अपनी प्रेमडोरीमें बांधा था। वे कहा करते थे कि अेक बार जो मेरी चिमटीमें आ जाता है वह निकल नहीं सकता है। बात सच थी। क्योंकि आदमीको जो चाहिये अुसकी पूरी पूरी सुविधा बापूजी अुसके लिअे कर देते थे, और अुसका अुचित अुपयोग भी कर लेते थे। फिर आदमी जाय तो क्या बहाना लेकर जाय?

बापूजी कलकत्ता जा रहे थे। अुसी दिन महिलाश्रममें कोअी अुत्सव था, जिसमें अुनको आशीर्वाद देने बुलाया गया था। सुबह ही बापूजी महिला-

श्रम गये। मैं भी बापूजीके साथ था। बाके नामसे बापूजीको दो साड़ियां भेंट दी गयीं। साड़ियां हाथमें लेकर अुन्होंने बोलना शुरू किया :

"आप लोगोंने बाके निमित्तसे मुझे दो साड़ियां दी हैं यह अच्छा है। बा अनपढ़ थी तो भी अुसका दिल स्त्रियोंकी अुन्नतिके लिअे काफी तड़-पता था। अुसका जीवन सादा और अेक देहातीका-सा था। अुसका आचार-विचार भी हमारी संस्कृतिका प्रतीकरूप था। बा मेरे हर संकटके समय मेरे साथ खड़ी रही और निरक्षर होने पर भी मेरे बड़े बड़े मेहमानोंका सत्कार करनेमें और मेरी बड़ी बड़ी लड़ाअियोंमें शामिल होकर साथ देनेमें कभी पीछे न रही। अन्तमें अेक अन्तिम लड़ाअीके मोर्चे पर मुझे अकेला छोड़कर चली गअी!" यह कहते कहते बापूका गला भर आया और वाणी बन्द हो गयी। आंखोंसे अश्रुधारा बहने लगी। बाके लिअे पहली ही बार मैंने बापूको अिस तरह रोते देखा।

महिलाश्रमकी लड़कियोंका दिल भर आया और कअीके आंसू निकलने लगे। अुसके बाद बापू अधिक नहीं बोल सके। धीरेसे कहा, "आज बंगालमें क्या चल रहा है? वहां लाखों लोग भूखसे मर गये। अभी भी वहांकी हालत सुधरी नहीं है। हिन्दू-मुस्लिम झगड़े भी चलते हैं। मैं अिसमें क्या कर सकूंगा यह तो अीश्वर ही जाने।"

फिर बापूजी बंगाल गये और शीघ्र ही लौट आये। २२ मार्चका दिन था। सुबहकी घंटी पर श्री कृष्णचन्द्रजी गीता लेने आये। मैं जगा। रामनामकी जगह पू० बाका नाम मनमें स्फुरा। साथ ही रामायणमें से अुस दिनके लिअे विषय खोजने लगा। अहल्याका अुद्धार सामने आकर खड़ा हो गया और साथ ही पू० बाकी वात्सल्य-मूर्ति। मैं स्वप्न नहीं देख रहा था। जाग्रत था। परन्तु बिलकुल स्पष्ट मैंने नहीं देखा। बाने बोलना आरम्भ किया: "जो बळवन्त, अहल्या कोअी पथ्थरनी शिला न हती जे रामनी पदरज लागवाथी स्त्री बनीने आकाशमां अुड़ी गअी. अे तो मारा जेवी कोअी भोळी अने अभण बाअी हशे. अेनी जड़बुद्धिने लीधे तुलसीदासे अेने पथरा जेवी वर्णवी हशे. अेने कांअी आघात के समाजनो दंड लाग्यो हशे. कांअीक भूल पण थअी हशे. अेणे रामनी पदरज अेटले पदसेवा अने सत्संगना प्रतापे पवित्र अने बुद्धिशाली थअी समाजमां अुच्च स्थान प्राप्त कर्युं हशे. अे ज अेनो अुद्धार.

जो ना, हुं पण पथरा जेवी ज हती ना? पण बापुनी सेवाने प्रतापे आज जगत मारी पूजा करे छे ना?* "

'मुझे बाकी दलीलने मंत्रमुग्ध कर दिया। मन आनन्द-सागरमें गोते खाने लगा। आंखें बाके प्रेमसे भीनी हो गअीं। हृदय गद्गद हो गया। मैं मोहवश बासे पूछ बैठा, "अच्छा बा! आप बापूको अकेला और आश्रमको सूना बनाकर क्यों चली गअीं?"

बाने तुरन्त ही जवाब दिया, "देखो बलवन्त, यह तुम्हारा मोह है। मैंने जो किया वह करना मेरा धर्म था। अब मेरा शरीर जर्जरित हो गया था, अुसे अच्छी अवस्थामें रखना असंभव हो गया था। बापूके लिअे, तुम सबके लिअे, मित्रोंके लिअे, देश-विदेशके अुन सब लोगोंके लिअे, जो बापूको पहचानते हैं, मैं चिन्तारूप बन गअी थी। और बापूजीकी कुछ भी सेवा करनेके लिअे मेरा शरीर निकम्मा बन गया था। मेरे लिअे यही अेक मार्ग था। जिस प्रकार मैंने बापूकी सेवा करके अुनके कामोंमें मदद की थी, अुसी प्रकारसे अपनी शारीरिक सेवाका भार अुनके अूपरसे अुठाकर भी क्या मैंने अुनकी सेवा नहीं की है? और देखो, आज तो मैं बापू और तुम सबके लिअे सच्चे रूपमें सहज प्राप्त हो गअी हूं। जब मेरा शरीर था तब तो आश्रममें, आगाखां महलमें, या और किसी स्थान पर रहनेसे दूसरे स्थानमें मेरा अभाव

---

* बाने तो शायद सारी बात गुजरातीमें ही कही होगी, किन्तु वे मुझसे हिन्दीमें भी बोलती थीं। आज यह संस्मरण लिखते समय मुझे पता नहीं है कि अुन्होंने क्या क्या बातें गुजरातीमें कहीं और क्या क्या हिन्दीमें। लेकिन अुस दिनकी मेरी डायरीमें जैसा लिखा है वैसा अविकल रूपमें मैंने यहां दिया है। गुजराती वाक्योंका अर्थ: "देखो बलवन्त, अहल्या कोअी पत्थरकी शिला न थी जो रामकी पदरज लगनेसे स्त्री बनकर आकाशमें अुड़ गअी। वह तो मेरे समान कोअी भोली और अनपढ़ बाअी थी। अुसकी जड़बुद्धिके कारण तुलसीदासने अुसका पत्थर जैसा वर्णन किया होगा। अुसे कोअी आघात लगा होगा या समाजका दंड मिला होगा। कुछ भूल भी हुअी होगी। अुसने रामकी पदरज यानी पदसेवा और सत्संगके प्रतापसे पवित्र और बुद्धिशालिनी बनकर समाजमें अुच्च स्थान प्राप्त किया होगा। यही अुसका अुद्धार है। देखो, मैं भी तो पत्थर जैसी ही थी न? बापूकी सेवाके प्रतापसे आज संसार मेरी पूजा करता है न?"

रहता था। तुमको सब कामोंसे छुट्टी लेकर या काम अधूरे छोड़कर मुझे रामायण सुनानेके लिअे मेरे पास आना पड़ता था। अब तो मैं सबके लिअे सब स्थानोंमें सहज प्राप्त हूं न? अच्छा, तुम बताओ कि अब मुझे रामायण सुनानेके लिअे तुमको झंझट करनी पड़ती है? या कुछ भी काम छोड़कर अिधरसे अुधर जाना पड़ता है? यां मुझे समझानेकी कोशिश करनी पड़ती है? तुम्हारे मनमें जब मेरा स्मरण होता है और रामायणका मनन चलता है तब मैं समझती हूं और खुश होकर तुमको आशीर्वाद देती हूं। अितना ही नहीं, तब तो तुम मुझे अर्थ समझाते थे, अब तो मैं भी तुमको समझाती हूं। तो तुम ही बताओ कि तुमको मेरा शरीर रहते हुअे जो लाभ था अुससे आज कम है या अधिक?"

मेरे पास क्या दलील थी जो मैं बाके शरीरकी सार्थकता सिद्ध कर सकता? आखिर बाके मुंहकी तरफ देखता रहा। बाका चेहरा अुगते हुअे सूर्यके समान स्वच्छ और तेजमय था, लेकिन आंखें भरकर देखा जा सके अितना शान्त था। मुख पर किसी प्रकारकी अुदासी या बुढ़ापेकी झलक नहीं थी। बा फिर बोलीं, "देखो, तुम गायोंसे दूर रहते हो यह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। मैंने तो अुस समय भी बापूके साथ झगड़ा किया था। पण तारा गुस्साथी बापु मूंझाय. बीजानी साथे झघडानो भय रह्या करे. अने बधी वातो तो बापु बारीकीथी क्यां छाणे? पण अेने कांअी नथी। तुं गुस्सो छोड. आज भले गायथी अलग छे, पण गायने मनथी वीसरजे मा. गाय तो आपणी साची मा छे. गाय न होय तो आपणे अेक डगलुं चाली शकीअे नही."*

मुझे विचार आया कि रामकृष्ण परमहंसके जीवनमें जो कालीके दर्शनकी बातें आती हैं वे अिसी तरहकी हुअी होंगी। सच बात तो यह है कि हमारा मन ही सब कुछ है। मनमें जिस प्रकारके संस्कार और संकल्प होते हैं वैसे ही हम होते हैं। मैंने जो बाके दर्शनकी बात लिखी है यह कोअी स्वप्न

---

* परन्तु तेरे गुस्सेसे बापू घबराते हैं। दूसरोंके साथ झगड़ेका भय रहता है। सारी बातें तो बापूजी बारीकीसे नहीं देख सकते हैं। पर अिसका कुछ नहीं। तू गुस्सा छोड़। आज भले ही तू गायसे अलग है, पर गायको मनसे मत भूलना। गाय तो हमारी सच्ची मां है। गाय न हो तो हम अेक कदम भी नहीं चल सकते।

नहीं है, न मेरी गढ़ी हुआी बात है। मैं तो अुस समय शून्यवत् हो गया था। थोड़ी देरके लिअे अपने आपको भूल गया था।

मैंने बापूजीके सामने यह सारी बात रखी और पूछा कि अहल्याके बारेमें अुनका क्या मत है? बापूजीने लिखा :

> अहल्या आख्यानका जो अर्थ बाने दिया वह ठीक है। वह अेक है। दूसरे भी अर्थ हो सकते हैं। जितने भक्त और अुनके भाव अितने और अैसे अर्थ होते हैं।

२२–३–'४५ बापू

२७

कुछ महत्त्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना

मुन्नालालजीने बापूजीके सामने अेक अैसी योजना रखी कि आश्रमके जो नौकर हैं वे भी आश्रमके भोजनालयमें भोजन करें। अुनको अूपरके खर्चके लिअे थोड़ासा पैसा दिया जाय और अुनके भोजनादिमें जो अधिक खर्च हो वह आश्रम सहन करे। अिससे अुनके साथ भाअीचारा बढ़ सकेगा और हम अुनके जीवनमें प्रवेश कर सकेंगे।

मुझे यह योजना अव्यवहार्य लगती थी। अुसी समय मीराबहन मुझे किसान आश्रम, मूलदासपुर (हरद्वार और रुड़कीके बीच) में गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे बुला रही थीं। लेकिन मेरी भतीजी होशियारी थोड़े ही दिन पहले आश्रममें आयी थी और अुसे मेरे बिना अकेले रहना अटपटा-सा लगता था। अिस नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैंने अपनी शंका बापूजीको बताअी थी और मीराबहनके पास जानेके बारेमें अुनसे पूछा था। पंचगनीसे बापूजीका अुत्तर आया :

> चि० बलवन्तसिंह,
>
> अब होशियारीको मत सताओ। मेरे आने तक ठहर जाओ। मीराबहनको लिखो। होशियारीका दुःख मैं समझ सकता हूं। मैंने मीराबहनको अेक खत अिसके पहले लिखा है। जो प्रयोग मुन्नालाल

नौकरोंके मार्फत करते हैं अच्छा है। अैसा ही करना चाहिये। निष्फल हो सकता है तो अर्थ होगा कि हमारी अहिंसा बहुत अधूरी है। गलती समझमें है। नौकरोंको हम नौकर न समझें, हमारे सगे भाअी समझें। कुछ बिगाड़ें, कुछ चोरें, ज्यादा खर्च हो जाय, यह सब व्यर्थ नहीं होगा, अगर हम अुनको कुटुंबी समझें तो। अिसे सोचो।

मैंने संचालनकी सूचना चिमनलालको की है। अुसे सोचो और हो सके तो संचालक प्रतिमास बदलो।

१२–५–'४५ बापूके आशीर्वाद

होशियारीको मैंने खादीके अध्ययनके लिअे खादी-विद्यालयमें भेज दिया, जहां अुसका मन काममें लग गया। नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैं अब तक सहमत न हो सका था। मैंने यह सब बापूजीको लिखा। अुनका अुत्तर आया :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अब होशियारीको शांति देना, काम और अभ्यास करने देना।

नौकरोंके बारेमें जो मुन्नालाल करते हैं अुसमें सलाह मेरी है। अच्छे हेतु रखते हुअे अुस मुताबिक हम न चलें तो दोष हमारा है। हेतुकी निर्मलता मलिन नहीं होती है। काम कठिन है। मैं चाहता हूं कि सब अुसमें मदद दें। नौकरोंको अपने आचारसे बतायें कि वे नौकर नहीं हैं लेकिन हमारे भाअी-बहन हैं। हम अपना काम करें, शरीरको आलस्यसे बचावें, अिस शिक्षणमें तनिक भी फरक नहीं हुआ है। धैर्यसे अिसे समझो। न समझमें आये तो मुझे बार बार पूछो।

२५–५–'४५ बापूके आशीर्वाद

यह नौकरोंका प्रयोग थोड़े दिन तक चला। मुन्नालालभाअीने अिसके पीछे बहुत मेहनत की। नौकरों पर कुछ असर भी हुआ। लेकिन धीरे धीरे वह बन्द हो गया।

साबरमतीमें बापूजीने आश्रममें रसोअी आदिके सामूहिक कामके लिअे नौकरोंसे काम न लेनेका नियम रखा था। लेकिन सेवाग्राममें तो

जान-बूझकर आश्रमके रसोअी आदिके काममें हरिजन नौकर रखे गये थे। अिसमें बापूजीका अुद्देश्य हरिजन और देहातियोंके साथ घुलमिल जानेका था, जिससे देहातियोंकी आश्रमके साथ अेकरूपता सध सके। अैसी स्थिति साबरमतीमें नहीं थी। सेवाग्राममें बापूजी देहातियोंके साथ बिलकुल अेकरूप होनेका प्रयत्न करते थे। छोटी छोटी बातोंमें बापूजी बहुत तत्पर और सावधान रहते थे और जिसको अेक बार अपना लिया अुसको फिर मांकी तरह ममत्वसे पकड़े रखते थे।

चि० होशियारी आश्रममें आअी तो सही लेकिन मेरे भाअी और भाभीको यह पसन्द नहीं था। मेरे भाअी अुसको वापिस ले जानेके लिअे आये। होशियारीने कहा कि मैं बापूजीकी अिजाजतके बिना वापिस नहीं जा सकती। अुसने बापूजीको तार दिया। मैंने पत्र लिखा। बापूजीका अुत्तर आया:

चि० बलवन्तसिंह,

चि० होशियारीका तार मिला था और कल शामको तुम्हारा खत भी मिला।

होशियारीके पिताजीको मेरी सलाह है कि वे मेरे आने तक होशियारीको ले जानेकी चेष्टा न करें। और क्योंकि आश्रममें आ गये हैं तो मेरे आने तक ठहर जावें और आश्रमके काममें पूरा हिस्सा लें, जिससे वे कुछ सीखेंगे, आश्रमका अनुभव लेंगे और आश्रम पर बोझ भी नहीं पड़ेगा। होशियारी मुझे तो अुतनी ही प्रिय है जितनी अपने पिताको। अगर होशियारीको असंतोष रहता तो मैं कुछ भी नहीं कहता। लेकिन होशियारीको संपूर्ण संतोष है। वह शिक्षा ले रही है और अूंचे चढ़ती जाती है। आश्रम संपूर्ण नहीं है, लेकिन आश्रम बुरा नहीं है। आश्रमने किसीका बिगाड़ा नहीं है। कअी लोग आश्रममें रहकर अूंचे चढ़े हैं। जो अच्छे हैं अुनको कभी कष्टदायी सिद्ध नहीं हुआ। अिसलिअे होशियारीके पिताजी अितना अितमी-नान रखें कि आश्रममें रहकर होशियारीका अनिष्ट कभी नहीं होगा। अधिक तो मेरे आने पर मुलतवी रखता हूं। आज तो मेरा अितना ही विनय है कि होशियारीके पिताजी महीना भर आश्रममें न भी रह सकें तो भी होशियारीको न ले जावें। मेरे आनेके बाद

अैसा निर्णय होगा कि होशियारीको वापिस जाना ही चाहिये तो तुम ही अुसको ले जाओगे।

आश्रम-व्यवहार ठीक चलता होगा। नौकरोंके बारेमें हम बातें करेंगे।

पंचगनी, ७–६–'४५ बापूके आशीर्वाद

अिस पत्रमें बापूजीका साधकके लिअे कितना प्रेम और अुदारता है और अुनके रास्ते न आनेवालोंके लिअे कितना विनय भरा है? 'अैसो को अुदार जग मांही? बिनु सेवा जो द्रवे दीन पर, राम सरिस कोअु नाहीं।' तुलसीदासका यह पद सभी महापुरुषोंके लिअे लागू होता है।

अुसी समय मैं सेवाग्रामसे मीराबहनके किसान-आश्रमके लिअे चल दिया और मेरे गांवमें कुछ झगड़ा था, अुसको निबटानेके लिअे रास्तेमें ठहरा।

होशियारी अपने बच्चे गजराजको घर छोड़ आयी थी। अुसके पिताजी अुस बच्चेको अिस कारण नहीं भेजना चाहते थे कि अुसका खयाल करके वह आश्रमसे घर चली आयेगी। होशियारीके मनमें द्वन्द्व चल रहा था। वह लड़केके बिना भी नहीं रह सकती थी और आश्रम भी नहीं छोड़ सकती थी।

बापूजीने अुसे समझाया कि लड़केको भूल जाओ। अगर तुम्हारी सच्ची तपश्चर्या होगी तो तुम्हारे लड़केको तुम्हारे पिताजी तुम्हारे पास छोड़ जायेंगे। वह समझ गअी और यह निश्चय हो गया कि अब वह लड़केको लेने घर नहीं जायगी। लेकिन मैंने लड़केकी खराब हालत देखकर बापूजीको लिखा तो अुन्होंने पहली ट्रेनसे ही अुसे लड़केको लानेके लिअे भेजा। पहली रातको बापूजी अिस बात पर अटल थे कि अुसे लड़केको लेने जानेकी जरूरत नहीं है, लेकिन मेरा पत्र पहुंचते ही अुन्होंने तुरंत अुसको रवाना कर दिया। मुझे बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे खत मिले। वहांका झगड़ा तुम्हारी हाजरीसे मिटे तो बहुत अच्छा है।

होशियारी बहादुर है, सफलता अुसे मिलेगी। अच्छा है तुम भी वहीं हो। मुझे अच्छा रहता है। मीराबहन तुम्हारे लिअे तड़प रही है।

डॉ० शर्मा*ने जो बनाया है अुसे देखना। अच्छा होगा। अुनकी प्रवृत्ति भी देख लो। यहांका काम ठीक चलता है। तुमने जो रास्ता बनाया है वहांसे बालकृष्णके यहां जा नहीं सकते।

सेवाग्राम, २७–७–'४५ बापूके आशीर्वाद

डॉ० हीरालाल शर्माके पीछे बापूजीने काफी खर्च किया था। अुनको आशा थी कि वे प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा देशकी सेवा करेंगे। अुन्हें सेवाग्राममें रखनेका भी खूब प्रयत्न किया था। अुन्होंने खुर्जाके पास अेक देहातमें प्राकृतिक चिकित्सालय खोला था। अुसके लिअे बापूजीने काफी आर्थिक सहायता दिलाअी थी। अुसीको देखनेके लिअे मुझे लिखा था। मैं वहां डॉ० शर्माको सूचना देकर देखने गया, तो देखा कि कुछ टूटी-फूटी फूसकी झोंपड़ियां थीं। अेक मकान कुछ ठीक था। अुसमें कुछ पुस्तकें आदि सामान था, जिस पर धूल जमी थी। जब मैं वहां पहुंचा अुसी समय दो-तीन मुसलमान स्त्रियां आअीं। मैंने अुनसे पूछा कि क्यों आअी हो, तो अुन्होंने बताया कि शर्माजीने यहां आनेको कहा था। मुझे रोगी दिखानेकी दृष्टिसे अुनको अुसी रोज खास आग्रहसे बुलाया गया था। परन्तु वहां पर चिकित्साका कुछ भी काम नहीं चलता था। अिससे वहांकी परिस्थिति स्पष्ट हो जाती थी। यह सब देखकर मुझे काफी दुःख हुआ। शर्माजीसे जब मैंने थोड़ी जानकारी मांगी तो वे अुत्तेजित हो गये। मैंने सब हाल बापूजीको दुःखके साथ लिखा। तो बापूजीका अुत्तर आया :

सेवाग्राम, वर्धा,
६–८–'४५

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। डॉ० शर्माकी जगह पर हो आये अच्छा किया। मेरा संबंध (आर्थिक) टूट गया है। चि० होशियारी कल रातको आ गअी। बच्चा भी साथ है। दोनों खुश हैं। मीराबहनके पास जाओ।

बापूके आशीर्वाद

---

* डॉ० हीरालाल शर्माने खुर्जाके पास अेक प्राकृतिक चिकित्सालय खोला था। बापूजीने अिस चिकित्साके अभ्यासके लिअे अुन्हें अमेरिका आदि भी भेजा था।

होशियारी गजराजको ले आओी और पहले अुसे आश्रममें रखा। बापूजी अुसे तालीमी संघके छात्रालयमें रखना चाहते थे, क्योंकि आश्रममें अुसकी पढ़ाओी ठीकसे नहीं चल रही थी। बापूजीने होशियारीसे पूछा कि मैं गजराजको छात्रालयमें रखना चाहता हूं, तुम्हारा क्या कहना है? अुसने कहा, "जो आपको ठीक लगे वही मुझे पसंद है।" दूसरे दिन होशियारी गजराजको समझा-बुझाकर छात्रालयमें पहुंचा आओी। अेक रोज बाद वह छात्रालयसे वापिस आ गया और वहां जानेसे अुसने अिनकार कर दिया। जब होशियारीने कारण पूछा तो अुसने कहा कि "वहांके लड़के बहुत गंदे रहते हैं। अुनके साथ मैं क्या सीखूंगा?" यद्यपि गजराज सात-आठ सालका था, पर अुसे आश्रममें साफ-सुथरा रहनेकी आदत पड़ गओी थी। बापूजीको होशियारीने सब हाल बताया। बापूजी हंसकर बोले, "तू मां तो बन गओी है, लेकिन कुछ नहीं जानती। अुसे मेरे पास भेज दे।"

बापूजीने गजराजसे पूछा, "तू छात्रालयमें क्यों नहीं जाता?" गजराजने वही बात दुहराओी। बापूजीने अुसे समझाया। अुसने कहा, "आप अेक बार छात्रालय आकर देख लें, फिर मैं जानेको तैयार हूं।" बापूजीने कहा, "बस अितनी ही शर्त है? मंजूर है।" फिर होशियारीको हंसकर कहा, "देखो, गजराज तैयार हो गया।"

दूसरे रोज बापूजी घूमने निकले। जब छात्रालयके पास पहुंचे तो बोले कि मैंने गजराजको वचन दिया है अिसलिअे अुसके स्कूलमें पांच मिनिट हो आअूं। और बापूजी अुधर घूम गये। वहां जाते ही हर चीजको बारीकीसे देखने लगे। वे गये तो थे ५ मिनिटके लिअे, लेकिन लग गया पौन घंटा। निरीक्षणके बाद बापूजीने स्कूलके अधिकारियोंको जो पत्र लिखा वह यह है:

> कल मैं तालीमी संघका छात्रावास देखने चला गया। आश्रममें होशियारीबहन है न? अुसके लड़के गजराजको तुम्हारे स्कूलमें भेजा है। अुसका आग्रह था कि मैं अुसका स्कूल देख लूं। कल सबेरे भी वह आया और पूछा कि आओगे न? मैंने कहा कि तुम्हारे स्कूलमें आकर क्या करूंगा? मैं वह जगह देखूंगा जहां तुम्हें सोना है। मेरा विचार तो अुसकी मांको भी भेजनेका था, पर खैर। सो अपनी प्रतिज्ञा पालन करनेके लिअे सबेरे घूमनेके बाद वहां चला गया। मैंने वहां जो देखा अुससे मुझे दुःख हुआ। मेरी आंखोंने नहीं होनी चाहिये वैसी गंदगी

और अव्यवस्थाका दर्शन किया। मैं ज्यादा समय देना नहीं चाहता था, लेकिन जो मैंने देखा वह मुझसे बरदाश्त न हो सका और आधा-पौन घण्टा . . . को समझानेमें लग गया। मैंने देखा कि बच्चोंके अस्पतालके बरामदेके आगे पानी पड़ा था। मेरी आंखोंको खटका। वहां लड़के हाथ-मुंह धोते हैं। अिससे मच्छर पैदा होते हैं। अितना पानी व्यर्थ जाता है। हम किसी बरतनमें ले लें, नहीं तो पास वृक्ष खड़े हैं अुनमें धोअें। अगर हजार लड़के हों तो आफत हो जाय। कमरेसे गुजरकर दूसरी तरफ बरामदेके सामने भी वही हाल था।

फिर मैं वहां गया जहां बच्चे सोते हैं। बाहर ही काफी कचरा था। अंदर गया। चटाअियां व्यवस्थित ढंगसे न थीं। अेक बिस्तर खुलवाया। बहुत गंदा था। चादर फटी हुअी थी। अेक दो जगह सी भी थी, पर सिलाअी बहुत भद्दी थी। बाकी जगह वैसी ही फटी थी। थिगला लगाना चाहिये था। बहुत फट गअी थी तो दोहरी करके सी ली होती। मैंने तो जेलमें कअी दफा अैसी गुदड़ी बनाअी थी। वह गरम हो जाती है और पक्की भी। गद्देकी रुअी दब चुकी थी। अेक मोटी भारी चीज बन गअी थी। गरम नहीं थी। अुसकी रुअी निकालकर फिरसे धुनना चाहिये था। गद्देके नीचेसे बहुतसे कपड़ेके टुकड़े निकले जो बहुत गंदे थे। मैं अुनको साफ रखता, थिगली लगानेके काम लाता। चटाअी बहुत गंदी थी। अुसे धोना चाहिये था।

जमीन देखी। सोनेकी जगह है। पर बहुत बुरी हालतमें, सब टूटी-फूटी है। . . . ने कहा गोबर नहीं मिलता। गोबर हो तो अच्छा है, पर अिसके बिना भी काम चलता है। साअुथ अफ्रीकामें गोबर कहां था? केवल मिट्टीसे काम चलता था। दीवार पर चीजें रखनेके लिअे लकड़ी लगी थी। अुस पर हाथ लगाया तो मिट्टीसे भर गया। . . . के हाथोंसे अपना हाथ मला। अुसका हाथ मिट्टीसे भर गया। लड़केने कलमदान चटाअी पर रखा था। कहां रखे बेचारा? क्योंकि रखनेके लिअे कोअी ढंग न था। अेक अेक कलम और निबको देखा। दवात देखी। मेरा तो यही तरीका है न? और नअी तालीमका भी होना चाहिये। मेरी दृष्टिसे सब गलत था। छोटी छोटी चीजें हैं, पर छोटी चीजोंसे बड़ी बनती हैं। अिसमें पैसेकी जरूरत नहीं है।

दृष्टिकी सूक्ष्मता होनी चाहिये, कला होनी चाहिये। यह सिखाना हमारा फर्ज है। नअी तालीमका अुद्देश्य है। अगर नहीं किया तो शिक्षकका दोष है। तुम्हारा दोष है। मैं तो यह भी मानूंगा कि मेरा दोष है, क्योंकि नअी तालीमको चलानेवाला तो मैं ही हूं न? शुरू किया और छोड़ दिया। अगर कोअी यह कहे कि अिस तरह तो मैं अेक ही लड़केको संभाल सकता हूं। तो मैं कहूंगा कि अेक ही लो। ज्यादा न लो। ज्यादा लेने हैं और संभाल नहीं सकते, तो अुसमें असत्य आ जाता है। बाहर निकला तो मेरी नजर अुन टट्टों पर पड़ी जो तुमने बरामदेके बाहर लगा रखे हैं। अिसके लिअे तुमसे लड़ना है। बरामदा तो हवा और धूपके लिअे होता है। अुसमें टट्टे बांधनेसे दोनों रुक जाते हैं। पिछला कमरा तो बिलकुल निकम्मा हो जाता है। अगर यह कहो कि लड़के ज्यादा हों तो क्या करें। तो मैं कहूंगा कि हम अुतने ही लें जितनोंका प्रबंध कर सकें। ज्यादा न लें। . . .की मांको देखा। निहायत गंदे कपड़े पहने थी। नौकरानी-सी लगती थी। और हिन्दुस्तानी भी नहीं जानती थी। अुसे हमारे बीचमें दो महीने हो गये। . . . के अपने कपड़े भी ठीक न थे।* गला खुला था। कफ भी खुले थे। हम मजदूर हैं, कुर्तेकी बाहें आधी होनी चाहिये। पीतल या कांचके बटन हमारे लिअे निकम्मे हैं। आशादेवीसे कुछ थोड़ी बातें हुअीं। लेकिन पूरा लिखता हूं, क्योंकि चीजें हैं बहुत छोटी छोटी, पर महत्त्वपूर्ण हैं। अिनके बिना हम अपने अुद्देश्यसे बहुत दूर जा पड़ते हैं।

३०–११–'४५ बापूके आशीर्वाद

*

अेक बार बापूजीकी तंदुरुस्ती कुछ कमजोर थी। पेटमें भारीपन होनेसे अुन्होंने केस्टर आअिलका जुलाब लिया था। आभाबहन अुनको स्नान करा रही थी। स्नानघरमें से अेकाअेक आभाके चिल्लानेकी आवाज आयी: दौड़ो, दौड़ो, बापूजी गिर गये। मैं स्नानघरके नजदीक ही था। दौड़कर गया तो देखा कि टबके पास जमीन पर बापूजी बेहोश होकर निश्चेष्ट पड़े हैं। यह

* यों कपड़े तो बढ़िया थे, लेकिन अव्यवस्थित थे। अिसलिअे बापूजीने होशियारीके सूतके बटन बताकर कहा कि हमें तो अैसे बटन चाहिये।

देखकर मेरा मुंह पीला पड़ गया और मैंने समझा कि बापू हमेशाके लिअे चले गये। मैं न तो किसी दूसरेको आवाज दे सका, न कुछ बोल सका। स्तब्ध होकर बापूके माथे पर हाथ धरकर बैठ गया। दो मिनटमें बापूजीको होश आया। आभा जो बिलकुल सूख गअी थी, वह भी खुश हुअी। बापूजीने हमसे कहा कि अिसकी कोअी चर्चा नहीं करना है। मैंने अीश्वरको अनेक धन्यवाद दिये और अैसा ही समझा कि बापू जाते जाते रह गये।

अिसके पश्चात् बापूजी दिल्ली चले गये, क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम अपने निष्कर्ष पर पहुंच रहा था। अुसके बाद अुन्हें सेवाग्राममें रहनेका अवसर बहुत ही कम मिला।

*

पू. किशोरलालभाअीकी तबीयत काफी कमजोर थी। कुछ मानसिक बेचैनी भी अुन्हें थी। अुनकी अिस स्थितिसे मुझे दुःख और चिन्ता हो रही थी। मैंने बापूजीको लिखा था कि आप अुनकी तरफ ध्यान दीजिये। अिसके अुत्तरमें बापूजीने मुझे लिखा:

सेवाग्राम, वर्धा,
२५-२-'४६

चि० बलवंतसिंह,

चि० किशोरलालका अिलाज कलसे मैंने शुरू तो किया है। देखें क्या होता है।

तुम्हारे नवधा भक्तिका मनन करके अपना कर्त्तव्य पालन करना है। पाखाना और रसोड़ा हमारे जीवनकी चाबी हैं। बाकी सब यह दो करें तो आता है।

बापूके आशीर्वाद

बापूजीने अिस छोटेसे पत्रमें जीवनकी सम्पूर्ण साधनाका योग बता दिया है। आध्यात्मिक दृष्टिसे नवधा भक्तिमें सब कुछ आ जाता है। व्यावहारिक जीवनमें पाखाना-सफाअी और भोजनालयकी व्यवस्था तथा स्वच्छतामें जीवनकी व्यवस्था और स्वच्छता आ जाती है। अगर बापूजीका सारा साहित्य और अुनकी बताअी सारी अुत्तम बातें विस्मृत हो जायं और सिर्फ अेक यह पत्र ही रह जाय, तो चिन्तन, मनन और साधनाके लिअे

अितनी सामग्री अिसमें भरी है कि अेक नहीं अनेक जन्मोंमें भी अिस स्थितिको प्राप्त किया जा सके तो जीवन सफल हो जाय। 'पाखाना और रसोड़ा (भोजनालय) हमारे जीवनकी चाबी हैं' — बापूके अिस वचन पर मैं सोचता हूं तो लगता है कि अिसमें ग्राम-साधना, स्वच्छता, अूंच-नीच भावका निराकरण सब कुछ आ जाता है। नवधा भक्तिकी बात लिखकर तो मानो बापूने जो भी कुछ मुझे कहना था वह सब कह दिया है। बापूजी मुझे कहां ले जाना चाहते थे, मेरे लिअे अुनकी कितनी गहरी शुभ कामनायें थीं, यह सोचकर मेरा हृदय और दिमाग चकित रह जाता है। कहां मैं और कहां बापूका अहैतुक प्रेम !

*

आश्रमके बगीचेमें तीन चार प्रकारके आमके पेड़ थे। अुनमें अेक पेड़के आम बहुत ही मीठे और स्वादिष्ठ होते थे। अुसके फल भी बहुत कम और सो भी हमेशा नहीं आते थे। अिस बार वह पेड़ खूब फला और फल भी अच्छे आये। मेरे मनमें लालच हुआ कि ये आम बापूजीको खिलाने चाहिये। बापूजी दिल्लीमें थे। मैंने सोचा किसी दिल्ली जानेवाले आदमीके साथ भेज दूं। वर्धामें कुछ परिचित मित्रोंसे पूछताछ की कि कोअी दिल्ली जानेवाला हो तो मुझे बतायें। श्री गंगाविशनजी बजाजने मुझसे कहा कि आप स्टेशन पर आम ले आना। कोअी न कोअी परिचित मिल ही जायगा। मैं भेजनेका प्रबंध कर दूंगा। मैं स्टेशन पर आमकी टोकरी ले गया, लेकिन कोअी मुसाफिर अैसा अपना परिचित नहीं मिला जो आम बापूजीके पास पहुंचा सके। रेलमें जो भोजनका डिब्बा होता है अुसके व्यवस्थापकसे गंगाविशनजीका परिचय था। अुन्होंने अुससे कहा और वह पहुंचानेको राजी हो गया। अुसने आम तो पहुंचाये लेकिन बापूका थोड़ा समय भी लिया। बापू बहुत काममें थे तो भी जब अुस आदमीने मेरा नाम लिया तो अुन्होंने थोड़ा समय दे ही दिया। अिस पर बापूजीने अुससे तो कुछ नहीं कहा, लेकिन मुझे अेक पत्र लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। आम मिले। आम क्यों भेजे ? सेवाग्रामकी कोअी खाद्य वस्तु मुझे भेजनेसे क्या फायदा ? नुकसान तो बराबर है ही। नुकसान यों कि जिस चीजका वहां बहुत ही अुपयोग है अुसे

जहां वह अनावश्यक है वहां भेजनेसे अविचार ही सिद्ध होता है। और हम विचारहीन कभी न बनें। मैंने आम खाये। अच्छे थे। लेकिन जो फल हिन्दुस्तानमें कहीं भी मिलते हैं वह सब फल मेरे पास रखे जाते हैं। अैसी हालतमें सेवाग्रामके आमकी क्या जरूरत? अब सुनता हूं कि वहांसे भाजी भेजते हो। अगर नहीं भेजी है तो मत भेजो। अिसमें कितना समय जाता है? हमारे पास जो समय है वह प्रजाका है। और रेलवेवालोंका अनुग्रह भी अैसी बातमें क्यों लें? यह सब फटकारके रूपमें नहीं है, लेकिन सावधानीके लिअे है अैसा समझो।

होशियारी और गजराज ६ दिनसे यहां हैं। मैंने तो कहा था कि यहां आना नहीं चाहिये था। फजूल समय गया है और गजराजका तो नुकसान ही हुआ है। कहती है आज चली जायगी।

मेरे ठहरनेका शायद आज निश्चित हो जायगा।

नअी दिल्ली, २५–५–’४६ बापूके आशीर्वाद

आमके बारेमें मैंने अपनी भूल समझी और बापूजीके सामने अुसे स्वीकार किया और आअिन्दा अैसी कोअी चीज न भेजनेकी बात अुन्हें लिखी। अिसके जवाबमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। आमके बारेमें समझ गये वह काफी है। सारा जीवन सावधानीसे ही अच्छा चल सकता है।

होशियारीका खत आया कि वह भाअीकी शादीके बाद आश्रममें जायगी। मैं अुससे बहुत बात नहीं कर सकता था। किसीके सामने देखनेकी फुरसत दिल्लीमें नहीं मिलती थी। मुसीबतसे गजराजके बारेमें बात कर सका था। और अुसे मेरे पीछे पीछे जहां रहूं वहां आनेका मोह छोड़नेको कहा था। अुसके परिणाममें वह घर चली गअी। मुझे लगता है कि आश्रममें वह शायद ही अब आगे बढ़ सके। वापिस आवे तो आश्रमसे नहीं जानेकी मुरादसे और गजराजको सुधारनेके ही लिअे आवे। अवलोकनसे मैंने पाया है कि गजराजको होशियारीने ही बिगाड़ा है। वह बिचारी दूसरा जानती ही नहीं है तो करे क्या? लेकिन गजराज तो बिगड़ता ही है।

तांत वहीं बना लेते हैं वह बहुत ही अच्छा है। और बगीचा भी अच्छा कर रहे हैं अैसा अनन्तरामजी लिखते हैं।

मसूरी, ४–६–'४६ बापूके आशीर्वाद

*

आश्रमके भाअी अनन्तरामजीकी तबीयत खराब रहती थी। खास तौरसे अुनका दिमाग परसे काबू चला जाता था और वे कुछ भी बोलने लगते थे। वे आश्रमकी खेतीमें मेरे साथ ही काम करते थे। अुन्होंने बीमारी और खेतीके बारेमें बापूजीको खत लिखा। बापूजीका अुत्तर आया:

मसूरी, ५–६–'४६

चि० अनन्तराम,

तुम्हारा खत मिला। किसानोंको आसमानी आपत्तिका सामना करना पड़ता है। यह करते हुअे भी वही मुख्य साधन है जिस पर जगत निर्भर रहता है। अिसलिअे तुम दोनों काम कर रहे हो यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। . . . तुम्हारी चित्तशांतिके लिअे अब तो मैं सिवा रामनामके और कोअी अिलाज नहीं बता सकता हूं। यह अनुभवसे पाया है। अुसकी शर्त दो हैं। पहली, वह नाम हृदयसे लेना चाहिये। और दूसरी, वह लेनेके जो कानून मैंने बताये हैं अुनका पालन होना चाहिये। अुनका पालन बहुत ही आसान है।

बापूके आशीर्वाद

*

अनाजकी कमीसे सेगांवमें कुछ लोगोंकी स्थिति बहुत खराब होती जा रही थी। लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि आश्रमकी तरफसे कुछ मदद होनी चाहिये। आश्रममें अिस प्रकारकी कोअी व्यवस्था नहीं थी कि किसीको आर्थिक मदद दी जा सके। मैंने लोगोंसे कहा कि मैं कोशिश करूंगा कि दुकान (श्री जमनालालजीकी) की तरफसे आपको कुछ मदद मिल सके। लेकिन दुकानवाले भी बादमें कुछ ढीलेसे पड़ गये। मैंने बापूजीको लिखा कि सेवाग्रामकी स्थिति खराब होती जा रही है। लोगोंको कुछ मददकी जरूरत है। यह विपत्ति अभी देखनेमें छोटी लगती है, लेकिन आगे चलकर यह बड़ी हो सकती है। आप संभाजी (जो जमनालालजीकी

तरफसे सेवाग्रामका काम देखते थे) को लिखें तो कुछ हो सकता है। बापूजीने मुझे लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। बिलकुल ठीक है। जो आपत्ति है अुसको छोटी समझनेकी कोअी आवश्यकता नहीं है। जो छोटी समझकर आवश्यक वस्तुको छोड़ देता है वह अन्तमें कुछ नहीं कर पाता है। तुमने जो वचन दिया है अुसका पालन करना ही होगा। अब मैं जो करना है वह शुरू कर देता हूं। अिसके साथ संभाजीका खत है वह पढ़ो और ठीक हो तो अुन्हें भेज दो।

मसूरी, ६–६–'४६ बापूके आशीर्वाद

*

बापूजी बंगालमें थे। नोआखलीका तूफान शुरू हो गया था और अुसमें पड़नेके लिअे बापूजी वहां चले गये थे। मैंने भी वहां जानेकी बापूजीसे अिजाजत मांगी। बापूजीका अुत्तर आया :

चि० बलवन्तसिंह,

मैं खुद तो लेटे-लेटे क्या लिख सकता था? जो अैसा काम करनेवाले थे अुनको अलग अलग कर दिया। अब खेंच (कामके बोझ)के कारण मनु मेरे पास पड़ी है और काम दे रही है। तुम्हारे खतका सब अुत्तर मैं नहीं लिखवा सकूंगा। याद भी नहीं है। यहां आनेके बारेमें अगर मैं नहीं लिख चुका तो लिखवाता हूं कि अिस वक्त वहीं रहो। वही तुम्हारा धर्म है। स्वस्थचित्तसे गुस्सेको रोककर स्थितप्रज्ञ जैसे रहना है।

श्रीरामपुर, २६–१२–'४६ बापूके आशीर्वाद

बापूजी बिहार और बंगालके दंगोंके मामलेमें अितने फंस गये थे कि सेवाग्राम वापिस आना अुनका असंभव बन रहा था। अुक्त पत्रसे भी बापूका बंगाल-बिहारके हिन्दू-मुसलमानोंके पागलपनके विषयमें दुःख टपकता है। अेक भाअीको अुन्होंने लिखा, "या तो बंगालमें सफल होअूंगा या यहीं पर देह छोडूंगा।" अिस दृढ़ निश्चयके साथ बापूजी अुस आगमें कूदे थे।

*

सेवाग्राममें मेरे पास कोओी खास काम नहीं था। मैंने सोचा कि मैं खुर्जाके आसपासके देहातोंमें जाकर वहीं बैठ जाअूं। आश्रमकी गोशाला गोसेवा-संघके पास चली गओी थी और अब वहांसे भी तालीमी संघके पास जा रही थी। अुसकी हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। यह भी मुझे अच्छा नहीं लगता था और अन्य भी अैसे प्रश्न थे जिनको बापूजी ही सुधार कर सकते थे। मैंने बापूजीको लिखा कि या तो आप यहां आकर अिन सबको ठीक कीजिये और नहीं तो मुझे जानेकी अिजाजत दीजिये। बापूजीने लिखा:

पटना, १७–४–'४७, शामको

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। होशियारीके बारेमें समझा। अुसके लिअे भी खत अिसके साथ रखता हूं। मेरा खयाल है कि तुम्हारे खुर्जा जानेकी कोओी जरूरत नहीं है। तुम्हारा धर्म सेवाग्राममें रहकर जो काम हो सके वही करनेका है। गजराजका ठीक चल रहा होगा। कृष्णचंद्र विनोबाजीके साथ रहकर प्रगति कर रहा है, यह मुझे बहुत भाता है। गोशालाका तो क्या कहूं? मेरा आजकलमें सेवाग्राम आना करीब करीब असंभव है। अगर बिहार तथा नोआखलीसे छूट सकूं तो सब संभवित हो सकता है। यहां गरमी बहुत सख्त पड़ रही है। देखें, अीश्वर मुझे कैसे रखता है।

बापूके आशीर्वाद

*

अुसी समय आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाओीकी तबीयत बहुत खराब थी और वे आश्रमका भार नहीं संभाल सकते थे। अुनकी कमजोरी और आग्रहके कारण व्यवस्थाका काम मुझे सौंपा गया था। आश्रमके बगीचेकी बाड़की लकड़ी अेक छोटासा लड़का निकाल रहा था। मैं पास ही खड़ा था। यह देखकर मुझे अुस बच्चे पर गुस्सा आ गया और मैंने अुसको दो-चार चांटे लगा दिये। बच्चा आश्रममें ही काम करनेवाले हरिका भानजा था। अिस बातका हरिको भी दुःख हुआ। मुझे भी खूब दुःख हुआ और मैंने बच्चेके माता-पिताके सामने अुसको मारनेकी भूलके लिअे क्षमा मांगी।

मैंने बापूजीको लिखा कि अैसी छोटी छोटी बातों पर मुझे गुस्सा आ जाता है, तो मैं आश्रमका व्यवस्थापक कैसे बन सकता हूं। बल्कि मुझे तो आश्रम छोड़ देना चाहिये। बापूजीने लिखा:

दिल्ली, ५-५-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे हाथ बड़ी जिम्मेदारी आयी है। मुझे विश्वास है कि तुम यह बोझ अच्छी तरह अुठा लोगे। क्रोधको जीतना होगा। यह काम जंगलोंमें होता नहीं है। क्रोधका मौका आने पर भी जब अंकुशमें रहता है तब ही दबता है कि नहीं यह समझमें आ सकता है। जो दृष्टान्त तुमने क्रोधका दिया है अुसमें मुझे आश्चर्य नहीं होता है। लेकिन जो पद तुमने लिया है वह तुम्हें बचा लेगा। लड़केके माता-पितासे सरलतासे क्षमा मांग ली सो बहुत अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

२८

'सेवाग्रामके सेवकोंके लिअे'

बापूजीने सेवाग्राम आश्रमके सेवकोंको किसी विषयमें मार्गदर्शन देनेके लिअे अेक सूचना-बही बना ली थी। जब अुनके मनमें कोअी सूचना करनेका विचार आता वे बहीमें लिख देते और आश्रमके व्यवस्थापक अुसकी नकल करके सब आश्रमवासियोंको सुना देते थे। ये सूचनायें अैसी हैं जो सामूहिक जीवन जीनेवाली सार्वजनिक संस्थाओं, परिवारों और अन्य सबके लिअे भी अुपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अिसलिअे मैं यहां बापूजीकी अैसी कुछ कीमती सूचनाओंका नमूना पाठकोंके सामने रखता हूं।

सेवाग्रामके सेवकोंके लिअे

मुझे पूछा गया है कि यहां किसी बारेमें नियम हैं क्या? हैं, क्योंकि जब साबरमती आश्रम बन्द किया, तब मैंने बताया कि हम सब जंगम आश्रम बनते हैं और कहीं भी जायं आश्रम-जीवन और अुसके नियम साथ

लेकर चलते हैं। असलिअे प्रार्थना आदि ज्योंकी त्यों कायम है। अुठनेका समय भी कायम रहा है। अवश्य संयोगवशात् सिद्धान्तोंको छोड़कर दूसरी बातोंमें परिवर्तन कर सकते हैं। जैसे कि यहां किया है। हम जान-बूझकर हरिजन नौकरोंको रखते हैं। क्योंकि अुसमें अुनकी सेवाकी भावना है। लेकिन यद्यपि नौकर रखते हैं तो भी अुनको हमारे भाअी समझकर बरताव करना चाहिये। असलिअे जो कार्य मजदूरीका भी हम कर सकते हैं वह हम ही करें। जो हमसे नहीं हो सके तो हम दूसरे साथीकी मारफत करावें। अुनसे भी न हो सके तो वही हरिजनोंसे लेवें।

ता० ६–६–'३८ बापू

जिस कमरे (आदि-निवास) में हम बैठते हैं, अुसमें सुघड़ता नहीं है। बहुत सामान मैंने देखा वह निकम्मा है। निरीक्षण करके अुसे हटाना चाहिये। जिधर मैं बैठता था वहां जो केस पड़ी है वह अनावश्यक है। संदूक पर सब सामान जा सकता है। हमारा परिग्रह कमसे कम होना चाहिये। याद रखा जाय कि ११ व्रतोंमें अपरिग्रह भी है।

ता० १२–६–'३८ बापू

आज दुःखद बीना (घटना) बन गअी। अेक लड़का हमारे खेतके नजदीक गैया चराता था। अुसको रोकनेकी चेष्टा की गअी। वह नहीं माना। बलवन्त-सिंहने अुसको धक्का मारा। यह बात हमारे लिअे शरमकी है। मैंने ग्राम-वासियोंको कह दिया है कि अगर दुबारा अैसा बलवन्तसिंहसे हो जायगा तो वे सेगांव छोड़ेंगे। हमें समझना चाहिये कि हम सेवक हैं, मालिक नहीं। ग्रामवासियोंकी दयासे ही रह सकते हैं। हमको किसीको गाली देनेका या स्पर्श करनेका कुछ भी अधिकार नहीं है।

ता० १९–७–'३८ बापू

अितनी बातें हम याद रखें:

१. थूक भी मल है। असलिअे जिस जगह हम थूकें या मैले हाथ धोवें वहां बरतन कभी साफ न करें।

२. टेपसे सीधा पानी अिस्तेमाल न करें। अिसमें अधिक पानीका खर्च होता है और ज्यादा आदमी अेक टेपसे अेक ही वक्तमें पानी नहीं ले

सकते हैं। अिसलिअे अपने लोटेमें पानी निकालें और लोटेके पानीसे मुंह साफ करें। फिर लोटे साफ जगह रखनेकी व्यवस्था भी होनी चाहिये।

ता० ६–८–'३८ बापू

मेरी सलाह है कि सब नियमपूर्वक सूत्रयज्ञ करें। अिस बातमें हमें बहुत सावधान रहना चाहिये।

ता० ६–१–'४० बापू

खानेके बारेमें हरअेकको मर्यादा रखना आवश्यक है। गुड़का, घीका, दूधका, भाजीका प्रमाण होना चाहिये। भाजी अेक समयके लिअे आठ औंस काफी समझी जाय। भोजनमें कुछ बिगड़े तो अुसकी टीका खानेके समय करना असभ्यता है। अिसलिअे हिंसा है। खानेके बाद चिट्ठी लिखकर व्यवस्थापकको बताया जाय। कोअी चीज कच्ची रह जाय तो छोड़ देना। अितनी भूख रह जाय तो कोअी हानि नहीं होगी, लेकिन गुस्सा न किया जाय।

सब काम सावधानीसे होना चाहिये। हम सब अेक कुटुम्ब हैं, अैसी भावनासे काम लेना आवश्यक है।

ता० २२–१–'४० बापू

आजकल मैं जो कुछ लिखता हूं अुसको आज्ञारूप न माना जाय। सब अपनी बुद्धिका अुपयोग करके जो करें वही सही माना जाय।

ता० २४–१–'४० बापू

नमक भी चाहिये अुतना ही लेवें। पानी तक निकम्मा खर्च न करें। मैं आशा करता हूं सब (लोग) आश्रमकी हरअेक चीज अपनी और गरीबकी है अैसा समझकर चलेंगे।

ता० ३०–१–'४० बापू

सबको जानना चाहिये कि सेगांवमें काफी जहरी सांप रहते हैं। अीश्वरकी कृपा समझें कि अब तक किसीको सांपने नहीं काटा है। लेकिन सावधान रहना हमारा धर्म है। अीश्वर सावधानको ही सहायता देता है। अिसलिअे मेरी सलाह है कि जब तक हो सके लालटेनका सहाय लें। अिसी तरह अंधेरेमें जूते भी पहनें।

ता० १३–२–'४० बापू

मैं सुनता हूं कि कअी सज्जन जब खाना छोड़ते हैं तो अुसकी खबर रसोड़ेमें पहुंचाते नहीं हैं। अिसका नतीजा यह आता है कि खाना पड़ा रहता है। अिसलिअे प्रार्थना है कि जो पहलेसे जानते हैं कि अमुक समय खाना छोड़ना है वे वक्त पर रसोड़ेमें खबर भेज दें। यह नोंध और दूसरी जो नित्यकी है अुसे दीवाल पर रखना चाहिये।

ता० ७–३–'४० बापू

मेरी आशा है कि सब अुबला हुआ पानी ही पीते हैं। वर्षा ऋतुमें हमारे कुअेंके पानीमें काफी खराबियां रहती हैं। मलेरियासे बचनेके लिअे सब रातको हाथ-पैरों पर मिट्टीका तेल लगाकर सोवें। सिर पर भी लगाना चाहिये। खाना चबाकर खाया जाय। दस्त हमेशा साफ आना ही चाहिये। न आवे तो अेरंडीके तेलका जुलाब लेवें। धूपसे बचना, काम करते समय सर पर टोपी या कुछ कपड़ा होना चाहिये।

ता० ६–७–'४० बापू

जो सूत्रयज्ञ चल रहा है (राष्ट्रीय सप्ताहके संबंधमें १२ घंटेके दो अखण्ड और ता० ६ तथा १३ को २४ घंटेके अखण्ड) अुसमें अितना किया जाय :

(१) हरअेककी पूनीका वजन।

(२) अुसमें कितना वजन सूत निकला।

(३) कचरा कितना रहा। सब टूटा हुआ सूत अिकट्ठा किया जाय। अुसका अुपयोग है।

(४) तारका आंक, मजबूती, समानता।

(५) प्रत्येक गुंडी पर कातनेवालेका नाम दिया जाय।

ता० ७–४–'४१ बापू

लड़के या बड़े आपसमें या लड़कियोंसे निरर्थक मजाक न करें। कामकी बातमें निर्दोष विनोदको जगह है। वह अेक कला है। प्रथम तो बगैर कारण मौन ही धारण करना शुद्ध बोलीकी जड़ है।

आश्रममें अिर्दगिर्द बहुत गंदगी रहती है। अिसलिअे अेक आश्रमवासीको जिम्मेवारी सिर पर लेनी चाहिये। . . . अहिंसामें शौच तो आता ही है।

ता० १५–४–'४१ बापू

मेरा बी० पी० (ब्लड प्रेशर) तभी कम रहेगा जब यहांके लोग अपना-अपना काम ठीक तरहसे चलावें और कोअी भी आपसमें झगड़ा न करें। यहांका सब काम मेरे आदर्शके अनुसार चलावें और चलें।

ता० २८-१०-'४१ बापू

अेकादश व्रतोंसे फलित होनेवाले और सुव्यवस्थाके लिअे अन्य अुपनियम निम्नलिखित हैं :

सब निवासी स्थायी या अस्थायी अपना अेक भी क्षण निकम्मा नहीं जाने देंगे। यहां रहनेवाले आश्रमकी सब सामाजिक सेवामें हिस्सा लेंगे और जब आश्रमका कुछ काम नहीं रहता है तब कातेंगे या रुअीकी किसी क्रियामें अपना समय देंगे। स्वाध्याय रातको ८ से ९ तक कर सकते हैं और दिनमें (अुस समय) जब आश्रमका कुछ कार्य नहीं दिया गया है और कमसे कम अेक घंट तक कात लिया हो।

बीमारी या अनिवार्य कारणके लिअे कातनेसे मुक्ति होगी।

बगैर कारण कोअी वार्तालाप नहीं करेंगे। अूंची आवाजसे कोअी नहीं बोलेंगे। आश्रममें नित्य शांतिकी छाप पड़नी चाहिये। अैसे ही सत्यताकी छाप। अेक-दूसरेके साथ हमारा व्यवहार प्रेममय और मर्यादामय होना चाहिये। और अतिथि या देखनेवालोंके साथ सभ्यताका। कोअी कैसा भी वेश पहनकर आवें, गरीब-से लगें, तो भी अुनके प्रति आदरसे बरताव होना चाहिये। अूंच-नीच, गरीब-अमीरका भाव नहीं होना चाहिये। अिसका मतलब यह नहीं है कि कोअी नाजुक अतिथि आ जावे तो अुसकी तरफसे अैसी आशा रखें कि वह भी हमारी जैसी सादगीसे रह सकता है। आतिथ्यमें अतिथिके रहन-सहनका हमें हमेशा खयाल रखना होगा। अिसीका नाम सच्ची सभ्यता है। आश्रममें कोअी अनजान मनुष्य आ जावे तो अुसके आनेका प्रयोजन पूछना चाहिये। और आवश्यकता होने पर व्यवस्थापकके पास अुसको ले जाना चाहिये। यह धर्म सब आश्रममें रहनेवालोंका है। क्योंकि किससे पहली भेंट अैसे लोगोंकी होगी, अिसका हमें पता नहीं चल सकता।

हरअेक मनुष्य जो कुछ करे, कहे, सोच-विचारकर करे। जो कुछ करे अुसमें ध्यानावस्थित और तन्मय हो जाय। सब खाना औषध समझकर और शरीरको आरोग्यवान रखनेके लिअे खाया जाय और शरीरकी रक्षा

भी सेवाकार्यके लिअे ही की जाय। अिस दृष्टिसे मनुष्यको मिताहारी अथवा अल्पाहारी होना चाहिये।

खाना जो मिले अुससे संतोष माना जाय। कुछ खाना कच्चा या बिगड़ा हुआ लगे तो अुसी समय शिकायत न की जाय, लेकिन बादमें विनयपूर्वक रसोड़ेके व्यवस्थापकको बताया जाय। बिगड़ा हुआ या कच्चा खाना छोड़ दिया जाय। खानेमें आवाज न किया जाय। आहिस्ते आहिस्ते मर्यादा और स्वच्छतापूर्वक अीश्वरका अनुग्रह मानते हुअे खाना चाहिये।

हरअेक मनुष्य अपने बरतन बराबर साफ करे और बताअी हुअी जगह पर रखे।

अतिथि या दूसरे अपनी थाली, लोटा, दो कटोरी और चम्मच साथमें लावें। अपनी लालटेन, बालटी और बिस्तरा भी। कपड़े वगैरा आवश्यकतासे अधिक न होने चाहिये। कपड़े सब खादीके होने चाहिये। अन्य वस्तुअें यथासंभव देहाती या कमसे कम स्वदेशी होनी चाहियें।

सब हरअेक वस्तु अपनी जगह पर रखें और कचरा कचरेकी जगह पर। पानीका भी दुर्व्यय न किया जाय।

पीनेका पानी अुबला हुआ रहता है और बरतन भी अंतमें अुबले पानीसे धोने चाहियें। कुअेंका कच्चा पानी पीने योग्य नहीं माना जाता है। अुबलते हुअे पानी और गरम पानीका भेद समझना आवश्यक है। अुबलता हुआ पानी वह है जिसमें दाल पक सकती है, जिसमें से काफी भाप निकलती है। अुबलता पानी कोअी भी पी नहीं सकता।

कोअी रास्तेमें न थूके, न नाक साफ करे। अैसी क्रिया अेकांत जगहमें जहां किसीका चलना फिरना नहीं होता वहीं की जाय।

पाखाना-पेशाब भी नियत जगह पर ही किया जाय। अिन दोनों क्रियाओंके बाद सफाअी होना आवश्यक है। पाखानेका बरतन हमेशा अलग ही रहता है, रहना चाहिये। पाखाना जाकर साफ मिट्टीसे हाथ धोने चाहिये और धोनेके बाद साफ कपड़ेसे पोंछने चाहिये। पाखाने पर सूखी मिट्टी अितनी डालनी चाहिये कि अुस पर मक्खी न बैठ सके और देखनेमें सिर्फ सूखी मिट्टी ही नजर आवे।

पाखाना बैठते समय ध्यानसे बैठना चाहिये, जिससे बैठक न बिगड़े और पाखाना अपनी जगह पर ही पड़े। अंधेरेमें लालटेन जरूर ले जायं।

कोअी चीज जिस पर मक्खी बैठ सकती है ढंकना आवश्यक है।

दतौन अेक जगह बैठकर शांत चित्तसे करना चाहिये। खूब चबा चबाकर बारीक कूंची करके दांत और मसूड़ोंको आगे-पीछे घिसना चाहिये। घिसते समय जो थूक पैदा होता है थूक देना चाहिये। निगलना नहीं चाहिये। दांत अच्छी तरह साफ होनेके बाद दतौन चीरकर दोनों चीरोंसे जीभ अच्छी तरह साफ करना और बादमें मुंह खूब साफ करना और नाक भी पानी चढ़ाकर साफ करना चाहिये। दतौनकी चीर पानीसे अच्छी तरह धोना और अुसे अेक बरतनमें अिकट्ठी करना चाहिये। सूख जाने पर अुसे जलानेके काममें लाना चाहिये। नियम यह है कि कोअी चीज व्यर्थ नहीं जानी चाहिये।

निकम्मे कागजात जो दूसरी तरफ लिखनेके काममें नहीं आ सकते अुन्हें जला देना चाहिये। कागजके साथ और कोअी चीज नहीं मिलाना चाहिये।

भाजी वगैरा साफ करनेसे जो कचरा बचता है अुसे अलग रखकर खाद बनाना चाहिये।

फूटा कांच अेक निश्चित जगह किसी खोकेमें डाला जाय, अिधर अुधर हरगिज नहीं।

कोअी आश्रम देखनेको आते हैं अथवा हमारे अतिथि होते हैं तो अुनसे हम मोहब्बत करें। अुनको परायापन नहीं लगना चाहिये।

आश्रममें सब वस्तु अपनी जगह पर होनी चाहिये और कोना-कोना साफ होना चाहिये। दरवाजे पर धूल नहीं होनी चाहिये। वह चिकने नहीं होने चाहिये।

जो काम जिसके सिर है अुसे वह बड़ी सावधानीसे करे।

सामुदायिक काममें सब पूरी हाजिरी भरें, बरतन मांजनेमें खूब सफ़ाअी होनी चाहिये।

पाखाने हमेशा सूखे होने चाहिये। मैले पर सूखी धूल हमेशा होनी चाहिये।

पानीकी कोठीके नजदीक बहुत पानी रहता है। वह ठीक नहीं है। खाना हमेशा ढंका होना चाहिये। मक्खी न बैठने पावे।

खानेमें सब अस्वाद-व्रत ध्यानमें रखें और सब वस्तु औषध समझकर खायं। कोअी समय (कभी) कुछ कम मिले तो अस्वस्थ न बनें। जो मिले वह औश्वर-कृपा समझकर ग्रहण करें।

प्रार्थनामें जो कुछ है अुसका अर्थ बराबर समझें। आश्रमकी सब वस्तु निजी है अैसा समझकर अुसकी रक्षा करें और अुसको अिस्तेमाल करें।

ता० ८–१२–'४१ बापू

मेरा खयाल है कि कमसे कम अेक समयके लिअे कच्ची भाजियां ही खानेसे बड़ा फायदा होता है। भाजियोंमें पालक या लूनीकी पत्तियां, शलगम, गाजर, गोबी, मूली, टमाटर ले सकते हैं। अिसमें क्षार मिलते हैं, दांत मजबूत होते हैं, हाजमे पर अच्छा असर होता है। और पकी खाते हैं अुससे चौथे हिस्सेमें काम निपटता है। बराबर चबानेकी आदत होती है, स्वाद पकी भाजीसे अधिक रहता है। मैंने तो दो महीने तक यह प्रयोग किया है। जिनको खास हरज नहीं है वे प्रयोग करके देखें।

सब अपने अपने काममें अधिक जाग्रत रहें। जैसा व्यवस्थित काम होना चाहिये वैसा नहीं हुआ है। स्वच्छताके बारेमें काफी सुधारणाको स्थान है।

ता० ७–२–'४२ बापू

मेरी सलाह है कि आवश्यकतासे अधिक (बरतन) किसीके पास न रहें और जिनके पास नये बरतन हैं वे पुराने लें, जिससे मेहमानोंके लिअे अच्छे रह सकें।

ता० ८–२–'४२ बापू

आश्रममें हममें से कोअी स्वादके लिअे न खाय, जीनेके लिअे खाय। जीना भी जीनेके कारण नहीं लेकिन सेवाके लिअे। अिसलिअे अेकका देखकर दूसरे न करें। जैसे कि अगर किसीको भातकी आवश्यकता है तो अुसके लिअे पकाया जाय, अिसलिअे दूसरे भी मांगें अैसा नहीं होना चाहिये। सामान्यतया कोअी रोटी और भात दोनों न खाय, लेकिन किसीके लिअे आवश्यक है तो दोनों दिये जावें। नियम वही है, स्वाद नहीं।

अिसमें से यह तो सहज प्राप्त होता है कि जिनको औश्वरने धन दिया है वे हकसे स्वाद न करें। यहां रहनेका सब फायदा वे गुमा देंगे, अगर स्वादके कारण कुछ भी चीज खरीदेंगे।
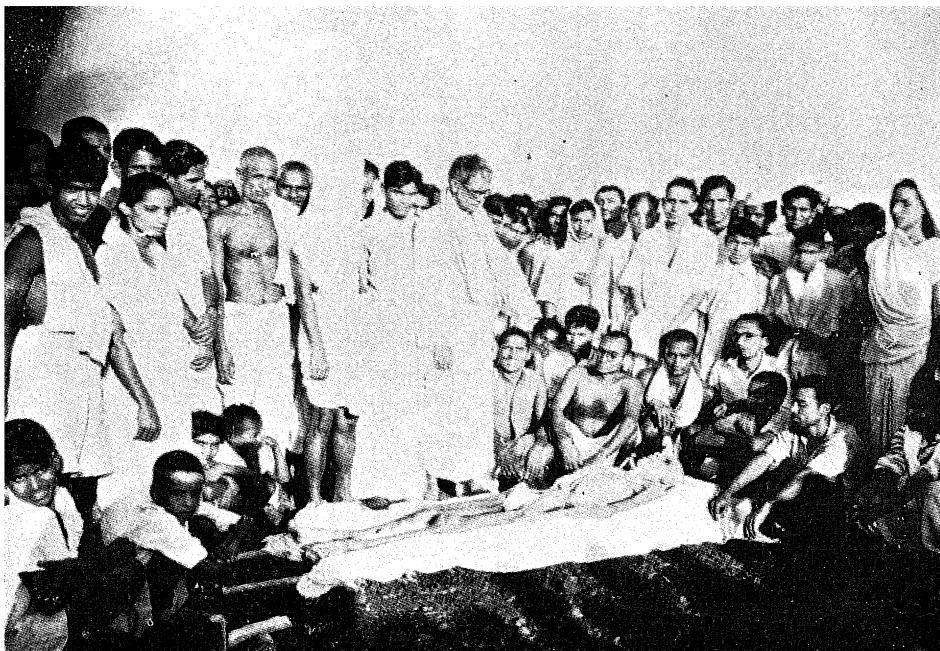
अुपवास करके देह छोड़नेवाले श्री धर्मानन्द कौशाम्बीका अंतिम दर्शन ।

चक्कर आते थे। अुसकी डॉक्टरी परीक्षा करानेके लिअे बंबअी भेजनेका निश्चय हुआ। यह सब मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीका अुत्तर आया :

सोदपुर, १२–५–'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीनों खत मेरे सामने हैं। चिमनलालभाअीकी तबीयत अच्छी रहे या न रहे, मुझे अच्छा लगेगा कि वह वहीं रहनेका निश्चय करें। दुबेजीको बुलानेसे कुछ भी फायदा नहीं होगा। दूध, फल और कच्ची-पक्की भाजी काफी खुराक है। मूंगफली खानी हो तो पानीमें ३६ घंटा रखकर खायें। ठंडे पानीमें बैठनेसे फायदा हो सकता है। यह सब करते हुअे, रामनाम लेते हुअे, जो हो सो होने देना। अुरुलीका विचार अुनके लिअे नहीं कर सकता हूं।

कौशाम्बीजी कुछ भी हजम नहीं कर सकते हैं तो भले पानी पर रहें। पानी न पी सकें तो भले देह जाय। भीतरी शांति है तो सब कुछ है। फिर भी जैसे विनोबा कहें सो करो। यह सब अुन्हें सुनाओ।

चक्रैया बम्बअी पहुंच गया है, अैसा खत लीलावतीबहनका है। मैंने चक्रैयाको लिखा है। डॉ० पुरंधरको भी, जो आंख देखते हैं।

होशियारीका भीतर ठीक है तो दुबारा बीमार होनी नहीं चाहिये। तुम्हारी परीक्षा ठीक हो रही है।

राह न देखी जाय। लेकिन कौशाम्बीजीके विषयमें खबर दी जाय। मैं तो दहन पसन्द करूंगा। लेकिन अुस बारेमें मेरा आग्रह नहीं।

बापूके आशीर्वाद

कौशाम्बीजी विनोबाजीकी सलाहसे अल्पाहार कर रहे थे। ता० ४–५–'४७ को वह भी अुनकी अनुज्ञा लेकर अुन्होंने बन्द कर दिया। अुनका शरीर धीरे धीरे क्षीण हो रहा था। किन्तु अुनकी चित्तकी प्रसन्नता और बुद्धिकी तीव्रतामें लेशमात्र भी फर्क नहीं पड़ा था। वे आनन्दके साथ प्रयाणकी तैयारी कर रहे थे। धर्मानन्दजी बौद्ध थे। लेकिन सचमुच अीश्वरकी शक्तिमें अुनकी अपार निष्ठा थी। अुन्होंने योगाभ्यास भी काफी किया था। अपनी मृत्युका दर्शन वे स्पष्ट रूपसें वैसे ही कर रहे थे, जैसे कोअी सामने खड़े हुअे आदमीको

देख सकता है। अुसके बारेमें छोटी छोटी सूचनाअें भी हमको वे करते थे। अपना अनुभव भी सुनाते थे। अेक दिन प्रार्थनाके पश्चात् मुझसे कहने लगे: "आपके बारेमें मुझे यह कहना है कि आप क्षत्रिय हैं, बुद्ध भी क्षत्रिय थे। आपको बौद्ध धर्मके कुछ वाक्य बताना चाहता हूं।" अुन्होंने जो कुछ बोला वह अिस प्रकार था: "यो वे अुप्पतितं कोधं रथं भन्तं व धारये। तमहं सारथिं ब्रूमि रस्मिग्गाहो अितरो जनो।। (जो लोग अुछलते क्रोधको चक्राकार घूमनेवाले रथकी तरह नियंत्रणमें रखते हैं, अुन्हें मैं सारथि कहता हूं; दूसरे तो केवल रस्सी पकड़नेवाले हैं।)" कहने लगे, "आपको भगवानका वचन सुनाया है। अिसको ध्यानमें रखकर कुछ रोज अभ्यास करना चाहिये। अभी तो आपके पास काफी समय है। अितनेसे आप काफी कर सकते हैं। आप मेरे पाससे कुछ चाहते थे, अिसलिअे मेरी अिच्छा हुअी कि आपको कुछ बताना ही चाहिये। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं। आपका कल्याण होगा।" फिर अुन्होंने अपने ध्यानका अनुभव सुनाया और बोले, "आज जो अितनी शांतिका अनुभव मैं कर रहा हूं वह अुस साधनाका ही फल है। मनुष्यकी परीक्षा मृत्युके समय ही होती है। अगर अुसकी कुछ साधना सफल होगी तो अुस समय अुसके अवश्य ही काम आयेगी और वह शांतिका अनुभव करता करता शरीर छोड़ेगा। हमको अपनी कीर्तिके लिअे कुछ भी नहीं करना चाहिये। जो करना है सो अच्छे गुणोंके विकासके लिअे करना चाहिये। क्रोध सबको आता है। जिसमें क्रोध नहीं वह मनुष्य किसी कामका नहीं। लेकिन जो क्रोधके वशमें होकर अपना काबू खो बैठता है वह अुससे भी बुरा है। क्रोधको अपने काबूमें रखकर मर्यादासे बाहर न जाने देना ही पुरुषार्थ है। बापूजीमें यही शक्ति है। क्रोधको काबूमें रखनेका अभ्यास आपको करना है और निष्काम भावसे खूब काम करते जाना है। अिसीसे आपका कल्याण हो जायगा। मेरी आत्मा आपसे बड़ी खुश है कि आप जिज्ञासु हैं। जिज्ञासु होनेसे मनुष्य कितना ही बुरा हो अेक रोज सत्पुरुष बन ही जाता है।"

कौशाम्बीजीका दिल प्रेमसे सराबोर था। मुझे अुनकी वाणीमें साक्षात् भगवानकी कृपा बरसती मालूम हुअी। वे आगे कहने लगे:

"बापूजीने मेरा अनशन छुड़वाया। अुस समय मुझे कोअी तकलीफ नहीं थी, खुजली भी नहीं थी और अुस समय मैं आरामसे मर सकता था। लेकिन बापूजीने मेरे अूपर दया करनेके लिअे, मुझे अुपवाससे निवृत्त करनेके

लिअे तार दिये। मैंने अुनकी प्रेरणासे पिछले २३ सितम्बरको अनशन छोड़ दिया और तबसे आज तक काफी दुःख पाया और अन्तमें फिर वही अनशन करना पड़ा। लेकिन अिसमें बापूका तनिक भी दोष नहीं है, क्योंकि बापूजीने सब दयाभावसे ही किया था। अिसमें मुझे जरा भी दुःख नहीं है, क्योंकि भगवान बुद्धने कहा है कि 'खन्ती परमं तपो तितिक्खा।' (तितिक्षारूपी क्षमा ही परम तप है।)

"बापूजीकी कृपासे मुझे अिस तितिक्षाका अवसर मिला। अिसमें मेरी कसौटी हो गयी। मुझे जो खुजली आती है अुसे सहन करनेमें आनन्द मानता हूं। यह सब बापूजीकी कृपा है। मेरी अिस प्रकारकी मृत्युसे बापूजीको आनन्द मानना चाहिये, क्योंकि अुनका अेक भक्त अिस कसौटीमें से गुजर रहा है और शान्तिपूर्वक प्रयत्न कर रहा है। अन्तके क्षण तक क्या होगा यह तो भगवान ही जाने।"

मैंने यह सब वर्णन बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया:

पटना, १६-५-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत प्रार्थनाके पहले लिखा हुआ मिला। कौशाम्बीजीका पढ़कर आनन्द होता है। साथमें अुनके लिअे खत रखता हूं। मिलने तक देह होगा तो खत अुनको दे देना या पढ़ा देना।

अुनके आश्रममें रहनेसे आश्रम पवित्र होता है, अिसमें मुझको कोअी शक नहीं है।

शंकरन्‌का खत अिसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

अन्त्येष्टि संस्कारके विषयमें कौशाम्बीजीने सब बापूजी पर छोड़ा दिया था। अतअेव बापूजीका दूसरा पत्र आया:

पटना, २०-५-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। अिससे पहले अैसा कोअी खत मिला नहीं है जिसमें कौशाम्बीजीके शरीरका मृत्युके बाद क्या करना यह पूछा हो।

लेकिन आज शंकरन्‌का खत है। अुसमें सब विगतें दी हैं। कौशाम्बीजी आखिरका निर्णय हम पर छोड़ते हैं तो अग्नि-संस्कार ही सबसे अच्छी क्रिया है। यह बात जगत-मान्य हो रही है। अुसमें खर्च भी ज्यादा नहीं है, न होना चाहिये। दफन करनेमें भी शास्त्रीय तरीकेसे करें तो काफी खर्च होता है। बाकी चीजें तो अुन्होंने लिखवाओी हैं। पाली अित्यादिके बारेमें अुनका अमल होगा ही अैसा अुनको कहा जाय। मेरी अुनसे प्रार्थना है कि अब अैसी बातोंको भूल जायं और अंतरध्यान होकर देह छूटना है तो छूटे, रहना है तो रहे। अुनसे यह भी कहना कि पाली भाषा तो लंकामें सीखी जायगी। लेकिन बौद्ध धर्म सीखनेका क्षेत्र लंका है अैसा मेरा दिल नहीं मानता। बौद्ध धर्मकी अूपरी बात जाननेसे रहस्यका ज्ञान होता नहीं है।

गोविन्द रेड्डीका खत आया है। अुसका अुत्तर पढ़ो और जो निर्णय करना है सो करो।

दस्तखत ता० २१ को प्रात: बापूके आशीर्वाद

धर्मानन्दजीने बापूको लिखवाया था कि अुनकी मृत्युके बाद कुछ विद्यार्थियोंको हर साल लंका भेजा जाय, जो पाली भाषा सीखकर बौद्ध धर्मका प्रचार भारतवर्षमें करें। अिसके अुत्तरमें ही बापूजीका अुपर्युक्त अुत्तर था। अुक्त पत्रके अुत्तरमें कौशाम्बीजीने लिखवाया :

सेवाग्राम, २५–५–'४७

पू० बापूजी,

सादर प्रणाम। यदि श्री कमलनयन बजाज आग्रहसे मेरे अूपर अेक हजार रुपयेका बोझा न छोड़ जाते तो स्मारकके बारेमें मेरे दिलमें कोअी विचार नहीं आता। पैसा आनेके बाद जो विचार मुझे सूझे, लिखवाये। लेकिन अुसकी जरा भी चिन्ता नहीं है। मैं तो सर्व भार आपके अूपर छोड़कर संतुष्ट रहता हूं। रातको आकाश देखकर बहुत सुख पाता हूं। यह सब आपके आशीर्वादका ही सुफल समझता हूं। सिलोनमें बौद्ध धर्मका रहस्य नहीं रहा है यह मैं भी जानता हूं। अुन लोगोंके साथ अेक बरस रहकर मैंने बहुत अनुभव लिया है। लेकिन अुनके साथ रहनेसे भगवान बुद्धके जमानेकी कुछ कुछ याद कर

सकता था और अुससे मुझे बहुत लाभ हुआ है। अभी तक अुसकी यादसे बहुत आनन्द मिलता है। बाकी सब भूल गया हूं। आम और नीम अेक ही जमीनमें बढ़ते हैं। लेकिन आमका फल अलग होता है, नीमका अलग।

अशोकके शिलालेखोंका अर्थ अंग्रेज आनेसे पहले हम भूल गये थे। पाश्चात्य विद्वानोंके प्रयत्नसे ही अुनका अर्थ हम लोग समझ सके हैं। हमारे विद्वानोंने भी पाश्चात्योंका अनुकरण करके बहुत कुछ लिखा है। लेकिन अशोक राजाके अत्यंत सहृदय वचनोंको पढ़कर कितने पंडितोंका हृदय कंपित होता होगा? अिसलिअे मेरा कहना है कि प्राचीन संस्कृत खंडहरोंमें मिल गया है तो भी सज्जन अुससे बहुत सबक सीख सकते हैं।

अभी जो आदमी सिलोन जानेवाला है वह अैसा भक्त थोड़ा ही हो सकता है? वह यहांकी डिग्री लेकर वहां सिर्फ ज्ञान बढ़ानेके लिअे जायगा। तो भी हमारा कर्तव्य है कि अुसका गुजारा वहां पर अच्छी तरहसे चल सके अिसलिअे काटछांट न करके अुसके गुजारेके लिअे काफी पैसा मिलना चाहिये। आजकल जो शिक्षायंत्र चल रहा है अुससे जो फायदा अुठा सकते हैं वह अुठाना चाहिये।

भवदीय
धर्मानंद कौशाम्बी

अुसी दिन किशोरलालभाअीका पत्र बारडोलीसे आया:

बारडोली
दिनांक, २५-५-'४७

प्रिय बलवन्तसिंहजी,

आपका विस्तृत पत्र मिला। श्री कौशाम्बीजीकी सारी सूचनाअें लिख भेजीं अिससे खुशी हुअी। अुनमें से जिनका पू० बापूजीसे संबंध है वे अुनको लिख भेजी होंगी। मुझे दुःख है कि मैं अुनके अंतिम दिवसोंमें अुनका लाभ अुठा नहीं सक रहा हूं। जूनमें वर्धा पहुंचनेका विचार तो है, लेकिन अुतने दिन तक अुनके शरीरका टिकना मुश्किल है। और मैं अैसी कठोर अिच्छा भी कैसे करूं कि सिर्फ मैं अुनको मिल

सकूं अिसलिअे अुनकी यातना बढ़ती रहे। अिसलिअे मन ही मन अुन्हें दूरसे नमस्कार भेजता हूं।

अुनकी 'आपवीती' (गुजराती) आपने पढ़ी है या नहीं? बहुत पढ़ने योग्य है। सत्यधर्मकी खोजके लिअे पुरुषार्थी मुमुक्षु क्या क्या करेगा और कितने कष्ट अुठायेगा अिसकी अुसमें तवारीख है। और बादमें जो अुन्होंने प्राप्त किया अुसे जगतको वितरण करनेके लिअे भी अुन्होंने जीवन थक जाय तब तक परिश्रम किया है। बहुत बड़े भंडारमें से अच्छेसे अच्छे मोती चुन चुन कर अुन्होंने हमें दिखा दिये हैं। वे बड़े संत पुरुष हैं। यह अेक भाषालंकार नहीं, सच बात है। अुनकी जन्म-तारीख आपने मालूम कर ली होगी। न की हो तो कर ली जाय।

श्री चिमनलालभाअी बहुत कमजोर हो गये हैं यह जानकर खेद होता है। अच्छा होता गर्मीमें वे थोड़े दिन पूना जाते। अब भी जायं तो ठीक रहेगा अैसा मेरा खयाल है।

चि० होशियारीकी तबीयत अच्छी हो रही है जानकर संतोष हुआ। चि० गजराजके लिअे कुछ अच्छी तरहसे सोच लेना चाहिये। अुसकी नाक ठीक हो जानी चाहिये।

आपके कुअेंको अभिनन्दन। अब बहुत धान्य बढ़ा होगा।

गर्मी यहां पर बहुत है। लेकिन यहां लू नहीं बरसती। हवा अकसर चलती रहती है। फिर भी यहांकी हवा बम्बअीके जैसी है। अिसलिअे पसीना सूख नहीं पाता और ठंड भी मालूम होती है। और रातको हवा बन्द हो जाती है तब तीन चार घंटा बुरा मालूम होता है। गर्मीके कारण मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक है। और गोमतीको भी यहां बहुत तकलीफ जैसी नहीं हुअी है। हां, अपनी अंगुली या शरीरके किसी भागको अिजा कर ले तो अुसका क्या किया जाय?

अब यहांसे निकलनेकी अिच्छा कर रहा हूं। पर सेवाग्रामवालोंके जो पत्र आते हैं वे आनेसे रोकते हैं। आज ही श्री जाजूजीका बम्बअीसे पत्र है कि अिस वक्त सेवाग्राम न जाना अच्छा है।

आपका

किशोरलाल

मु० कौशाम्बीजीको मेरा प्रणाम कहना। चि० होशियारी और गजराजको आशीर्वाद।

लि० गोमती

किशोरलालभाअीको मैंने पू० कौशाम्बीजीका सारा समाचार लिखा था। और भी आश्रमके समाचार लिखे थे। अुसके जवाबमें अुनका भावना, विवेचना, मनोरंजन, गंभीरता तथा व्यावहारिकतासे भरा अूपरका पत्र आया। गोमतीबहनके हाथमें शाक काटते समय चाकू लग गया होगा तो अुसका भी जिक्र कर दिया। पू० कौशाम्बीजीके लिअे अुनके दिलमें बड़ा आदर था। परन्तु अुनसे मिलनेकी तीव्र अिच्छा होते हुअे भी वे वापिस आवें तब तक जीवित रहकर कौशाम्बीजीको यातना सहन करनी पड़े अैसा न चाहनेमें कितनी अुदात्तता है! यह पत्र मैंने कौशाम्बीजीको सुनाया तो वे बहुत खुश हुअे और बोले, "किशोरलालजी तो बड़े विवेकशील पुरुष हैं। अुनको लिखो कि मुझसे न मिलनेका दु:ख न मानें। आखिर तो हमारी आत्मा अेक ही है और वह मिली हुअी है।"

आश्रमके ११ सालके जीवनमें कौशाम्बीजीकी मृत्यु पहली मृत्यु थी। अैसी आदर्श मृत्यु मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं देखी। वे रातको अपने पास सोनेको मुझे कभी नहीं कहते थे। लेकिन मृत्युकी पहली रातको मुझसे कहने लगे, "आज तुम मेरे पास ही सोओ। रातको बारह बजे जब चन्द्र सिर पर आयेगा तब मेरी मृत्यु होना संभव है। तुम सावधान रहना। मेरे कफनके लिअे नये कपड़ेका अिस्तेमाल नहीं करना। मेरे जो पुराने कपड़े हैं, अुनका ही अिस्तेमाल करना है।" वे सब कपड़े धो-धाकर साफ रखे हुअे थे।

अुन्होंने अपना सारा सामान आश्रमके सुपुर्द कर दिया था। सिर्फ अेक घड़ी अपने लड़केके लिअे अिसलिअे रखी थी कि शायद वह अुनका कुछ चिह्न रखना पसन्द करे। अुनके लड़के और लड़कीके बार बार बम्बअीसे पत्र आते थे और वे अुनको देखनेके लिअे सेवाग्राम आना चाहते थे। लेकिन कौशाम्बीजीने आग्रहपूर्वक अुनको नहीं आने दिया। ३ जूनको रातके बारह बजे तक मैं अुनके पास था।

अुस समय गोआमें अेकांतमें अुन्होंने जो योगाभ्यास किया था अुसका बहुतसा वर्णन अुन्होंने सुनाया। मृत्युका पहलेसे पता कैसे चल सकता है,

अिसकी साधना भी अुन्होंने की थी। अपना पुराना बहुतसा अनुभव भी मुझे लिखाया। अुन्होंने 'आनापान' भावनाकी बात बतायी, जिसकी पूरी साधनासे मनुष्य अपने अन्तिम श्वासको भी अच्छी तरह जान सकता है। वे बोले :

"जैसा योग रहता है वैसी ही आनापान भावना रहती है। लेकिन अुस भावनामें कुम्भक श्वास रोकना, पूरक श्वास भीतर ग्रहण करना और रेचक श्वास छोड़ना नहीं होता है। सिर्फ श्वासोच्छ्वासका खयाल रखना पड़ता है। अिसका संक्षिप्त वर्णन 'समाधि-मार्ग' में मैंने किया है। विस्तृत वर्णन पाली ग्रंथोंमें, विशेषतः 'विशुद्धि-मार्ग' में है। यद्यपि यह भावना अलग है तो भी अिसका अुपयोग अन्य कअी भावनाओंमें होता ही है। अिस भावनाका मैंने विशेष अभ्यास नहीं किया है। थोड़ासा तो करना ही पड़ा था, लेकिन अुसका अभी अच्छा फल मिल रहा है।

"रातको मुझे जरासी नींद आती है तब मेरा मुंह खुल पड़ता है और जीभ बिलकुल सूख जाती है और अुस पर कांटे खड़े हो जाते हैं। जब अेकाअेक जागता हूं तब क्या करना और क्या नहीं करना अुसका भी खयाल नहीं रहता है। कल-परसोंसे अुस आनापान भावनाकी मददसे अिस कष्टके अूपर काबू कर रहा हूं।

"अुस भावनाके वर्णनमें यह कहा गया है कि जो यह भावना पूरी तौरसे करेगा वह अपना अंतिम श्वास भी जान सकेगा। अुसका अेक अुदाहरण भी वहां दिया है। लेकिन मेरा तो पूरा अभ्यास नहीं है। मैं नहीं जानता हूं, अन्त क्या होगा।

"यह डॉ० वारदेकरजी अथवा काकासाहबको बतलाना। वे अिसका अुपयोग कर सकते हैं। अुनके पास अेक कापी दे देना।"

अुनकी आज्ञानुसार मैंने अेक कापी डॉ० वारदेकरजीको दी थी।

अुन्होंने कअी कुअें और विहार बनवाये थे, जिसका बहुत दिलचस्प वर्णन अुन्होंने मुझे बताया था। अुनको कुओंसे बड़ा ही प्रेम था। अुसी समय आश्रमके खेतमें दक्षिणकी ओर जो बड़ा अंडाकार कुआं है वह बन रहा था। अुस कुअेंको देखनेकी अिच्छा अुन्होंने प्रकट की। मेरी अिच्छा तो पहलेसे ही अैसी थी कि कौशाम्बीजीके हाथसे ही अुसका शिलान्यास कराअूं। परन्तु अैसी कमजोर हालतमें अुन्हें वहां तक कैसे ले जाअूं, यही संकोच मेरे मनमें था। जब अुन्होंने स्वयं अुत्साह बताया तो मैं स्ट्रेचर पर अुनको कुअेंके

पास ले गया। अुनके हाथसे अुसमें अेक पत्थर लगवाया। अुस कुअेंका नाम 'कौशाम्बी-कूप' रखा। अुसमें अुनके जन्म और मृत्युकी तारीख पत्थरमें खुदाकर लगवानेकी बात थी। अिस संबंधमें बादको कुअें पर अिस प्रकार स्मृतिपत्र खुदवाया गया :

"जिनका सलिल-सा निर्मल जीवन था, ४ मअीसे आमरण अुपवास द्वारा आमंत्रित मृत्युदेवको अतिथिवत् क्षणभर विश्रामके लिअे छोड़ जिन्होंने २२ मअीको जीवनके अिस सनातन स्रोतको आशीर्वाद दिया, अुन श्री धर्मानन्दजी कौशाम्बीकी पावन स्मृतिमें।

जन्म : गोआ — निर्वाण : सेवाग्राम

९–२०–१८७६ — ४–६–१९४७"

अुस रातको बारह बज गये। मैं जाग रहा था। अुन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम सो सकते हो। आज रातको तो मैं नहीं मरूंगा। मैं जाकर सो गया। प्रातः अुनके पास गया तो वे प्रसन्न थे। करीब १२ बजे अुन्होंने कहा कि मेरी जानेकी तैयारी है। दो बजे थोड़ा पानी लिया और मकानके सब दरवाजे खोलनेके लिअे कहा, मानो अुनको अैसा प्रतीत हो रहा हो कि कोअी अुनको लेनेके लिअे आया है, अथवा अुनके जानेके लिअे दरवाजे खोल देने चाहिये। अिस प्रकारसे वे कभी दरवाजे नहीं खुलवाते थे। धीरे धीरे शरीर शिथिल होता गया और ठीक २॥ बजे वे शांत हो गये। अुनका अंतका सांस निकलने और सावधानीसे बात करनेके बीचमें बेहोशीका अन्तर दस मिनटसे ज्यादा नहीं रहा।

५ बजे अुनके भौतिक शरीरका दाह-संस्कार हुआ। काकासाहब और विनोबा मौजूद थे। विनोबा वेदमंत्रका पाठ कर रहे थे। बड़ा ही भव्य दृश्य था। जितना भव्य कौशाम्बीजीका जीवन था, वैसी ही भव्य अुनकी मृत्यु हुअी।

कबीरका यह भजन अुनके जीवनको और मृत्युको पूरी तरह लागू होता है :

'दास कबीर जतनसे ओढ़ी,
त्योंकी त्यों धरि दीनी चदरिया।'

अुनकी मृत्युका सारा वर्णन मैंने बापूको दिल्ली लिख भेजा था। अुन्होंने ता० ५–६–'४७ के अपने प्रार्थना-प्रवचनमें कौशाम्बीजीको अंजली

देते हुअे कहा था: "जो अपनी डोंडी पीटते-पिटवाते हैं, अुन्हें तो हम बहुत चढ़ाते हैं। पर जो मूक सेवक हैं, धर्मकी सेवा करते हैं, अुन्हें लोग पहचानते भी नहीं। अैसे अेक आचार्य कौशाम्बीजी थे। वे हिन्दुस्तानके (बौद्धधर्म और पालीके) प्रमुख विद्वान थे। अुन्होंने स्वयं फकीरी पसन्द की थी। वे प्रार्थनामय थे। ओश्वर करे हम सब अुनका अनुकरण करें।"

अुनकी सेवा और मृत्युसे मुझे आश्रमके अस्तित्वकी सार्थकताका प्रत्यक्ष भान हुआ। आश्रमके बल पर बापूजी किसी भी आदमीको आश्रममें आकर रहनेका खुले दिलसे निमंत्रण दे सकते थे। अिसीलिअे बापूजी कहा करते थे कि चरखा-संघ जैसी सब संस्थाअें मैंने ही बनायी हैं, लेकिन आश्रम जैसी दूसरी संस्था तो मैं भी नहीं बना सका।

अिसमें हम आश्रममें रहनेवालोंकी विशेषता नहीं थी। विशेषता बापूजीके अुस शुभ संकल्पकी थी। बाहरसे हमारे ही लोग आश्रमकी अनेक प्रकारकी आलोचनायें करते थे और करते हैं, परन्तु मैं नम्रतासे और साथ ही दृढ़तासे यह कह सकता हूं कि वे आश्रमके महत्त्वको समझनेमें असमर्थ रहे हैं। मैं आज आश्रमसे अितनी दूर बैठा हूं, लेकिन देखता हूं कि आश्रम मेरे चारों तरफ लिपटा हुआ है।

बापूजीकी पूर्ण कल्पनाका पूरी तरह अमल अिस जीवनमें करना शायद संभव न भी हो। लेकिन अुसका थोड़ासा जो स्पर्श हो सका है, अुस परसे बापूजी आश्रमके मारफत क्या करना चाहते थे अिसका खयाल करके अुनकी महनता और अपनी कमजोरीका भान मुझे होता है।

३०

विविध प्रश्नोंका बापूजीका हल

पिछले प्रकरणमें चक्रैयाका जिक्र आ चुका है। वह बम्बअी गया था। अुसके साथ प्रभाकरजी किसी डॉक्टरको भेजना या खुद जाना चाहते थे, क्योंकि अुसकी बीमारी खतरनाक थी। बापूने बम्बअीके डॉक्टरोंसे लिखा-पढ़ी करके सब व्यवस्था कर दी थी। मैंने बापूजीको अिस बारेमें लिखकर पूछा तो बापूजीने जवाब दिया :

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
२४–५–'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। मैंने जो टेलीफोनसे कहला भेजा था वह यह था कि चक्रैयाके लिअे जो कुछ भी हो सकता है सब हो रहा है। अिसलिअे अुसके पास किसीको भेजनेकी आवश्यकता नहीं है। फिर भी मैं मनाअी करना नहीं चाहता। अुनके दिलमें लगे कि जाना ही चाहिये तो जा सकते हैं। और अब गया तो है ही। अस्पतालमें लड़कियोंके लिअे हम फिक्र न करें। विजयाबहन तो है ही। चांद, जोहरा वगैरा अच्छी लड़कियां हैं। फिर तो हमारा जैसा नसीब।

बापूके आशीर्वाद

परीक्षा करने पर चक्रैयाके मगजमें फोड़ा निकला। अुसका ऑपरेशन किया गया और दुर्भाग्यसे टेबल पर ही अुसकी मृत्यु हो गयी। अिससे बापूजीको काफी दुःख हुआ। अधिक दुःख तो अिस बातका हुआ कि चक्रैया प्राकृतिक चिकित्सामें विश्वास रखता था और अिस प्रकारके ऑपरेशन आदिकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहता था।

अुसने बापूजीको अेक पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा करते करते यदि मेरा शरीर चला जाय तो अुसकी चिन्ता नहीं है। लेकिन दुर्भाग्यसे वह पत्र बापूजीके हाथमें तब पहुंचा जब चक्रैया अिस लोकसे

बिदा हो चुका था। अगर पत्र पहले मिल जाता तो बापूजी तारसे अुसका ऑपरेशन रोक देते। लेकिन अीश्वरको यही मंजूर था।

चक्रैया प्रयत्नशील, नम्र और बड़ा अच्छा सेवक था। जन्मभर आश्रम-जीवन जीनेका और सेवा करनेका अुसका दृढ़ निश्चय था। अुसके बारेमें बापूजीने दिल्लीकी प्रार्थना-सभामें दुःख प्रकट किया और कहा था: "वह सेवाग्राममें मेरा बेटा बन गया था। अुसका चरित्र आदर्श था। कुदरती अिलाजमें अुसका विश्वास था। मुझे यह कहनेमें गौरव मालूम होता है कि चक्रैया सचेत हालतमें रामनाम जपते हुअे ही मरा।"

*

गोशालाका ट्रान्सफर गोसेवा-संघसे तालीमी संघको हो गया। लेकिन तालीमी संघवाले गायें नहीं रख रहे थे। या गोसेवा-संघवाले नहीं दे रहे थे। गायें वहांसे जायं यह मुझे पसन्द नहीं था। अुन लोगोंको मैं नहीं समझा सका। अिसलिअे बापूजीको लिखा। बापूजीका पत्र आया:

नअी दिल्ली, २८–६–'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। . . . गोशालाके बारेमें तुमने भले लिखा। मैं तो कहूंगा कि तुम्हारे स्पष्ट रूपमें तुम्हारा अभिप्राय आर्यनायकम्‌जीको लिखकर बता देना चाहिये। दूसरे अिसका क्या अनर्थ करेंगे, अुससे कुछ भी सम्बन्ध होना नहीं चाहिये। हम शुद्ध हैं तो दूसरे हमको अशुद्ध मानें अुसका अर्थ तो अितना ही होगा न कि हमारी शुद्धिमें और भी वृद्धि करें? दृढ़ बनें? स्पष्ट रूपसे आर्यनायकम्‌जीको कह दोगे, अुसमें सच्ची मित्र-भावना रहेगी।

सकरीबहन आ जायगी सो अच्छी बात है। चिमनलालको कुछ राहत मिलेगी।

ब्रह्मचर्यकी जो बाड़ मानी गअी है अुसमें पशुओंके बीचमें और नपुंसकोंके बीचमें नहीं रहना चाहिये यह भी है। अुसका मैंने निषेध किया है। होशियारी अच्छी हो रही है सो ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

सेगांवमें बहुत लोग पटवेका काम करते थे और अुसमें से कंठियां वगैरा पिरोते समय कुछ सोनेके मनके चुरा लेते थे। अेक गोंड कुछ चीज कहींसे चुराकर लाया, अैसा गांवके लोगोंको पता चला। गांवकी पंचायत हुअी और अुसको कोड़ोंकी सजा दी गअी। अुस गांवका अेक राजपूत तहसीलदार था। अुसने अपने हाथसे अुस गोंडको खूब पीटा। यह सब किस्सा मुन्नालालभाअीने बापूजीको लिखा। बापूजीने लिखा कि यह सारा किस्सा क्या है, कैसे हुआ, क्यों हुआ? बापूजी गोंडको भी हरिजन समझते थे। मैंने सारा किस्सा बापूजीको लिखा और बताया कि वह गोंड था, लेकिन गोंड हरिजन नहीं होते हैं। बापूजीने लिखा:

नअी दिल्ली,
१४-७-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। गोंडके बारेमें दुःखद किस्सा है। हम अहिंसासे बहुत दूर हैं, प्रयत्नशील रहें।

दूसरा लिखनेका समय नहीं है। वहां जो हो सके किया करो। गलतियां होंगी ही। अुन्हें दुरुस्त करना और आगे बढ़ना हमारा धर्म है।

गोंड हरिजनका भेद मैं भूल गया था। कोड़े और बेंतका भेद भी न किया।

बापूके आशीर्वाद

*

अेक रोज आश्रमकी गाड़ीमें माल भरकर मैं वर्धा शहरमें बेचने जा रहा था। रास्तेमें बैलका पेट फूला और वह तुरंत मर गया। अिसका मुझे बहुत दुःख हुआ। यह सारा किस्सा मैंने बापूजीको लिखा और अपना दुःख भी बताया। बापूजीने लिखा:

नअी दिल्ली,
२४-७-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

बैलके बारेमें पढ़कर दुःख हुआ। मैं समझता हूं कि किसानको बैल पुत्रवत् होता है। गोवंश-वृद्धिका शास्त्र बहुत कठिन है। काश्त-

कारी सहयोगसे ही फलदायी होगी। बहुत हिस्सा अंग-मेहनतसे होना चाहिये। मैंने नोआखलीमें तो अंग-मेहनतसे खेत साफ करनेको कहा है। वहां बैल मिलते ही नहीं हैं। बहुत मारे गये। नया बैल खरीदना नहीं अैसा मेरा अभिप्राय रहेगा। कहां तक खरीदते जायं? यह सारा शास्त्र विचारणीय है।

तुम्हारा स्वप्न सुन्दर था। अैसा ही हम वर्तन करें तो मामला शीघ्र ही हल हो जायगा।[1]

'साधो मनका मान त्यागो' भजनका मनन करो।

बापूके आशीर्वाद

*

आश्रममें और सेवाग्राममें गायका दूध कम पड़ रहा था। चम्पाबहन,[2] जो आश्रमके ही मकानमें रहती थीं, भैंसका दूध लेनेकी अिजाजत चाहती थीं। मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया:

नअी दिल्ली,
२७-७-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। अब तक आश्रममें या तो सेवाग्राममें कहीं भी गायके दूधका घाटा रहे. यह असहनीय है। घाटा

---

१. मैंने अेक रातको यह स्वप्न देखा था कि मुझे दो मुसलमान अेक बड़े मकानमें बुलाकर ले गये और मेरे पीछेसे अुन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया। फिर अुनमें से अेकने छुरा निकाला और मुझसे बोला कि हम तुम्हें मारेंगे। मैं अुससे भयभीत नहीं हुआ। और स्वस्थ रहते हुअे मैंने अुत्तर दिया कि भले तुम मुझे मार दो, लेकिन अिसका परिणाम अच्छा न होगा; तुम्हें पछताना पड़ेगा। क्योंकि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं, बल्कि दोस्त हूं। अितना सुनते ही अुसका चेहरा प्रसन्न हो गया और वह बोला कि हम तो तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। यह स्वप्न मैंने बापूजीको लिखा था और यह भी लिखा था कि अगर प्रसंग आने पर जागृतिमें भी अितना धीरज रख सकूं तो कितना अच्छा हो।

२. बापूजीके घनिष्ठ मित्र डा० प्राणजावन महेताकी पुत्रवधू।

दूर करनेके लिअे जो अिलाज लेने चाहिये सो लो। चम्पाबहनको भैंसका दूध लेना पड़े यह हमारी शर्म माननी चाहिये। अगर अुसको रहने दें तो हम किसी दामसे भी गायका दूध न दे सकें तब तो लाचारीसे अुसको भैंसका दूध देना होगा। जाजूजीसे मिलकर अिसका निचोड़ लाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

*

भारतीय स्वतंत्रताके दिन पास आ गये थे। देशमें रक्तकी होली और साम्प्रदायिक पागलपन जोरों पर था। अिस दावानलको पीते हुअे भी बापू आश्रमको नहीं भूले थे। आश्रमकी गोशाला नष्ट-सी हो रही थी, क्योंकि तालीमी संघ गायें नहीं रखना चाहता था। मैंने बापूजीको लिखा कि अितनी मुसीबतसे मैंने गोशाला जमाअी थी और अब वह बन्द हो रही है। अिससे मुझको दुःख होता है। बापूजीने लिखा :

हैदरी मैन्शन, कलकत्ता,
१५-८-'४७

चि० बलवंतसिंह,

मैं तो यहां बड़े हजूममें पड़ा हूं। मेरी परीक्षा हो रही है। नोआखाली अब तो छूट गया है।

गोशालाके बारेमें सब पढ़ गया। यहांसे मैं क्या राय दूं? मैं अितना जानता हूं कि सेवाग्राममें गाय रहनी चाहिये। गोशाला चलनी चाहिये। वह कैसे हो सके, नहीं जानता हूं। मैं आर्यनायकम्‌जीको लिखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

गोशाला तालीमी संघके हाथमें जानेसे स्थिति अैसी हो गअी थी कि आश्रमको दूध मिलना मुश्किल हो गया था और सेवाग्रामकी दूधकी सारी व्यवस्था छिन्नभिन्न हो गअी थी। मेरे मनमें अैसा विचार आया कि क्यों न गायका दूध पीना ही छोड़ दूं। अपने मनका यह मन्थन मैंने बापूजीको लिखा था। बापूजीकी तरफसे मनु गांधीका पत्र आया :

नअी दिल्ली,
२०–९–'४७

मु० बलवंतसिंहजी,

आपका पत्र बापूको मिला। बापू तो जवाब नहीं लिख सकते हैं। अुनके पास अेक मिनटकी फुरसत नहीं है। बापूजीने जो कहा है मैं लिख देती हूं।

'गोशालाके लिअे दुःख नहीं मानना चाहिये। जो हुआ सो हुआ। अीशावास्यका श्लोक क्या है? अपना कुछ नहीं है, सब कुछ अीश्वरका है। गायका दूध नहीं छोड़ना चाहिये। गायका दूध छोड़कर बकरीका लें तो अुसमें गायकी सेवा नहीं है। देहातसे गायका दूध आता है सो अच्छा है। और देहाती गायोंकी सेवा करो, अुनका दूध बढ़ाओ। और अिर्दगिर्दके देहातोंकी गायोंको बढ़ाना, अुनको कौनसा चारा दें तो अच्छा दूध निकले और कौनसी अच्छी वनस्पति दें तो अच्छा दूध निकले यह सब देखो। और वही सच्चा आदर्श है। तुमको वहांसे कहीं नहीं जाना है। वहां कुछ हो जाय तो जरूर मरना। वहां जो हो सके करो। काफी काम तो पड़ा है।'

यह बापूजीने बताया था सो लिख दिया है। पू० बापूजी वैसे तो ठीक हैं। लेकिन थकान बहुत जल्दी लगती है। आप सब अच्छे होंगे। और सब हाल सुशीलाबहनने बताया ही होगा।

मनुका सादर प्रणाम

मैं गोशालाके विषयमें निराश हो गया था और अपने कठोर परिश्रमसे बनाअी हुअी चीजको अिस तरह बिगड़ते देखकर सचमुच मुझे दुःख होता था। मैंने मनुके मारफत बापूजीको लिखा। अुसके जवाबमें सुशीलाबहनने लिखा:

बिड़ला हाअुस, नअी दिल्ली,
२५–१०–'४७

श्री बलवंतसिंहजी,

आपका मनुकी ओरका पत्र बापूजीको पढ़कर सुनाया। वे कहते हैं कि आप क्यों अिस तरह निराश होते हैं? गोशाला बन्द कहां

हुअी? विस्तृत हो गयी। सब गांवके ढोरोंकी अुन्नति करना, दूध अच्छा हो, ढोरोंकी नसल अच्छी हो, लोग प्रामाणिक मनसे दूध बेचना सीखें, दूधमें पानीकी मिलावटके लिअे परीक्षा-विज्ञान — यह सब आप कर सकते हैं, करना चाहिये। अुसे वे सच्ची गोसेवा मानते हैं। आप कुशल होंगे। अब जल्दी मुलाकात होगी। बापू अब अच्छे हैं।

सुशीलाका प्रणाम

३१

शांतियज्ञमें प्राणार्पण

बापूजीकी सेवाग्राम आनेकी बात चल रही थी। सन् १९४६ के अगस्त मासमें बापूजीने सेवाग्राम छोड़ा था। अुस समय किसको पता था कि अब बापूजी यहां कभी वापिस नहीं आयेंगे? अितने लम्बे समयके लिअे जेलको छोड़कर बापूजी सेवाग्रामसे कभी बाहर नहीं रहे थे। चरखा-संघ, तालीमी संघ वगैरा संस्थाअें भी चाहती थीं कि बापू अेक बार सेवाग्राम आ जायं तो वे अपने बहुतसे प्रश्न अुनके सामने रखकर हल कर लें। हम लोग भी यही चाहते थे। लेकिन अेकके बाद अेक संकट बापूजीके अूपर अैसा आता रहा कि अुनके लिअे सेवाग्राम आना असंभव बन गया। ११ फरवरी, १९४८ को जमनालालजीकी पुण्यतिथिके निमित्तसे तथा और भी दूसरे कामोंसे बापूजीको सेवाग्राम आनेका आग्रह किया गया। बापूजीने अुसे स्वीकार भी किया। अखबारोंमें भी अैसी खबर आने लगी कि 'बापूजी वर्धा जा रहे हैं।' लेकिन बापूजीकी ओरसे हमें कोअी सीधी सूचना नहीं मिली थी।

२७ जनवरीको हमने प्यारेलालजीको तार दिया कि बापूजीके आनेकी तारीख़ निश्चित कर दें, ताकि हम अुनका कमरा आदि ठीक कर लें। तारका भी कुछ जवाब नहीं मिला। फिर भी हमने तैयारी तो शुरू कर ही दी। बापूजी सेवाग्राम आयें यह तो सब लोग चाहते ही थे। दूसरे लोगोंकी भी अुत्कट अिच्छा रही होगी। लेकिन मैं तो बिलकुल अधीर हो रहा था।

*

रातको मैंने स्वप्न देखा कि नागपुरमें शामके समय बापूजीका बड़ा भारी जुलूस निकल रहा है। देखनेकी अिच्छासे मैं भी अुधर बढ़ा तो देखा

कि जुलूसके सब लोग लौट गये हैं और बापूजी अकेले ठंडका अनुभव कर रहे हैं। कपड़े भी पासमें नहीं है। मुझे बापूजीको अिस प्रकार अकेला देखकर दुःख और आश्चर्य हुआ। मैं दौड़ा और बापूजीको सहारा देकर अेक किसानके घर ले गया। अुससे स्थान और कपड़े मांगे। दिन छिप चुका था। ठंड बढ़ रही थी। मैं अुसके घरमें बापूजीके लायक स्वच्छ स्थान खोजने लगा। बापूजी कुछ बोलते नहीं थे। अिसका भी मुझे आश्चर्य हो रहा था। अिस प्रकारकी विचित्र अवस्थामें मैंने बापूजीको कभी नहीं देखा था। अितनेमें आंख खुल गअी। सोचने लगा, बापूजी पर कोअी संकट तो नहीं आ पड़ा है? दिल्ली चलूं क्या? किसीको कुछ खबर कर दूं क्या? अगर दूं तो क्या दूं? आखिर स्वप्नकी बात है यह सोचकर रह गया।

(ता० २८-१-’४८ की डायरीसे)

सेवाग्राम छोड़े बापूजीको बहुत समय हो गया था। अिस बीचमें मैंने नये नकशेका अेक कुआं बनवाया था। वह २१ फुट लम्बा और १० फुट चौड़ा अंडाकार था, जिसमें लोग तैरना चाहें तो तैर सकें। बड़ा ही सुन्दर दीखता था। सेवाग्राममें रहते तब बापूजी बाहरकी सड़क पर घूमने निकला करते थे। अुस सड़क पर बहुत धूल अुड़ती थी। अिसलिअे अिस कुअेंवाले खेतमें ही बापूजीके घूमनेके लिअे मैंने रास्ते बनाये थे। खेतीमें और भी कअी प्रकारके सुधार किये थे, जिन्हें बापूजीको दिखानेका मेरे मनमें बड़ा अुत्साह था। मैं सोच रहा था कि बापूजी कब आवें और कब यह सब देखकर प्रसन्न हों और मेरा श्रम सफल करें। अुनके शीघ्र आनेकी आशा रखकर मैंने खेतवाले रास्ते साफ कर दिये थे, और अुनकी आवश्यक मरम्मत कर दी थी। अब मैं सफाअीमें लगा था। कूड़े-करकटको अेकत्र करके कम्पोस्ट खादके गड्ढोंमें गाड़ना चाहता था। ३० जनवरी, १९४८ के दिन मैं यही काम कर रहा था। वर्धाके सरकारी कम्पोस्ट खाद विभागका अेक कर्मचारी भी मेरा साथ दे रहा था। मनमें यह अुल्लास था कि बापूजी अिन रास्तों पर चलकर आनन्दित होंगे तथा कम्पोस्ट खादके गड्ढोंको देखकर अपने ‘धूलमें से धन’ पैदा करनेके सूत्रको कार्यान्वित हुआ देखकर सन्तुष्ट होंगे। अिस अुल्लासने मुझे सतत श्रमकी थकावटका अनुभव नहीं होने दिया था।

शामका भोजन करनेके बाद मैं अपने कमरेके सामने खड़ा था कि श्रीपत बाबाजी घबराये हुअे मेरी तरफ आये और अुन्होंने यह संवाद

सुनाया : 'भाअू, बापूजी गेले !' (भाअी, बापूजी गये !) मैंने समझा बापूके कराची जानेकी सम्भावना थी, वहीं गये होंगे। अिसलिअे यह प्रश्न किया कि वे कहां गये? तब बाबाजीने अत्यंत करुण स्वरमें यह सुनाया कि ३ गोलियां मारकर किसी आदमीने बापूजीकी हत्या कर दी। मुझे सहसा अिस पर विश्वास न हुआ। तुरन्त ही मैं प्रार्थना-भूमिकी ओर गया। वहां यह संवाद मिला कि वर्धासे श्री करंदीकरका टेलिफोन आया था कि शामकी प्रार्थना-सभामें जाते समय किसीने बापूजीको गोलीसे मार दिया। यह रेडियो पर सुना गया था, फिर भी विश्वास बैठा नहीं।

जब रातको ८ बजे रेडियो पर पं० जवाहरलाल नेहरू तथा सरदार वल्लभभाअी पटेलके वक्तव्य सुने तब कहीं लाचारीसे विश्वास करना पड़ा। सोचने लगा दैवकी कैसी लीला है! महात्मा सुकरातको अुनके देशवासियोंने जहर पिलाकर अुनके प्राण लिये। महात्मा ओसाको अुन्हींके देशवासियोंने फांसीकी सजा देकर परलोकवासी बनाया। यही दशा बापूजीकी हुअी! लेकिन मैं यह नहीं सोच पाता था कि बापूजी जैसे अहिंसक महात्माको मारनेके लिअे क्यों कर हत्यारेका हाथ चला होगा।

हमने प्रार्थना की। तत्पश्चात् सब साथ बैठे। वर्धाके कलेक्टर तथा पुलिस कप्तान हमारे पास आये और अुन्होंने सहानुभूति प्रगट की। भाअी मुन्नालालजीने यह सूचना रखी कि किसीको दिल्ली जाना चाहिये और तदर्थ अपनी तैयारी बताअी। वे दिल्ली गये। मैं यह सोचकर रह गया कि अुनकी आत्मा मुझे रोता देखकर कहीं यह पूछ बैठे कि 'मेरे साथ रहकर तुमने यही सीखा है? अिस मृतदेहको देखनेके लिअे गायोंको छोड़कर यहां कैसे आ गअे?' तो मैं अपने हृदयका समाधान कैसे करूंगा? दूसरे, अब वहां पुलिसका कड़ा पहरा होगा। अुसमें अन्दर प्रवेश कठिनाअीसे होगा। अब वे मुझे स्वयं तो बुला नहीं सकते, न प्यारकी चपत ही लगा सकते हैं। तो जानेसे लाभ भी क्या? अित्यादि विचारोंमें मैं मग्न हो गया।

मैंने बहुतेरी विधवाओंके प्रति सहानुभूति प्रगट की होगी। परंतु विधवाकी वास्तविक मनोदशाका अनुभव मुझे अिसी समय हुआ। बापूजीके चले जानेसे मेरे सींग व दांत दोनों गायब हो गये थे। अैसा प्रतीत हो रहा था मानो मैं सारी शक्ति खो बैठा हूं। जीवनमें अेक लंबे अर्सेके बाद नितान्त शून्यता-सी लगने लगी। लगता था कि अब किसकी प्रसन्नता और

आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिअे यह शरीर श्रम करेगा? फिर अुस हत्यारे मानवका खयाल आया। मनने कहा, अुसने बापूजीको मारकर समस्त मानव-ााति पर प्रहार किया है और अपनी आत्माका भी साथ ही साथ हनन कया है। बापूजीकी आत्माको तो अुस पर दया आअी ही होगी और अुनकी ोरसे अुसे क्षमा मिल ही चुकी होगी। मन और आगे बढ़ा: दैवकी अच्छाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता। बापूजी हिन्दू-मुसलमानोंकी मार-ाटको रोकनेके लिअे अपने प्राणोंकी बाजी अिससे पहले दो बार लगा ही ुके थे। परंतु त्रिकालदर्शी दैवको विदित था कि शांतिका मूल्य अुनके ूल्यवान प्राण ही हैं। तभी दवने हत्यारेको यह कार्य करनेकी बुद्धि और ाहस दिया होगा। यह विचार भी आया कि बापूजीने सत्य, अहिंसा, प्रेम, याग, वैराग्य अेवं लोकहितार्थ जीवन अित्यादि सर्वोत्कृष्ट दैवी संपत्तियोंका ो पवित्र मंदिर निर्माण किया था, अुस पर 'प्राणार्पण' का कलश चढ़ना ोष था। सो भी आज चढ़ गया। अब वह मंदिर अेक अत्यंत देदीप्यमान कलशसे सुशोभित हो गया है।

बापूजी यदि किसी अुपवासके कारण या असाधारण बीमारीके कारण मृत्यु प्राप्त करते तो अुसके पहले कितना घटाटोप छा जाता? सारे देशमें कितनी दौड़धूप मचती, अुनकी सेवाके लिअे कितनी होड़ लगती? कोअी अपनेको सेवाका प्रथम अधिकारी मानता और सेवाका कोअी अधिकारी सेवासे वंचित रह जाता। परन्तु दैवको यह बात प्रिय न थी, अिसलिअे किसीको अुसने अेक क्षणका भी अवसर नहीं दिया। अिस प्रकारके विचारोंसे मैं सान्त्वना प्राप्त करनेका प्रयत्न करता रहा। अितनी शून्यता मैंने जीवनमें कभी किसी प्रियजनके मरने पर अनुभव नहीं की थी जितनी अुस दिन अनुभव की।

कृष्णके जानेके बाद अर्जुन अितना शक्तिहीन हो गया था कि भीलोंने थप्पड़ मारकर अुससे गोपियोंको छीन लिया था। अुसके बाहु तथा गाण्डीव ज्योंके त्यों थे, परंतु कृष्णका पीठबल चला गया था। अैसा ही हाल हम सेवाग्राम आश्रमवालोंका बापूजीके चले जानेसे हो गया।

*

अब ३० जनवरीकी दुर्घटनाके बारेमें सोचता हूं तो दो दिन पहले आये स्वप्नका मेल अुसके साथ बैठता है। अुस दिन ठीक शामके समय बापूजी

सबसे अलग होकर अेकान्तमें यमुनाके किनारे राजघाट पर चिरनिद्रामें सो गअे। मनमें विचार आता है कि अगर मैंने अुस स्वप्नको थोड़ा महत्त्व दिया होता और दिल्ली जाकर कुछ सावधानी रखनेकी व्यवस्था की होती तो शायद बापूजीको बचा लेता। यह भी लगता है कि अगर अुस रोज मैं अुनके साथ होता तो गोडसेकी पिस्तौलसे दूसरी गोली न चलने देता। लेकिन यह विचार भी स्वप्न जैसा ही है। विधिका विधान कौन टाल सकता है? मुझे तो यह भी लगता है कि बापूजी पूर्ण ज्ञानके साथ भगवानमें लीन हुअे थे। अुनको जानेका आभास मिल गया था। और अुनके मनमें जानेका संकल्प भी हो गया था। मानव-जातिको अहिंसाका सही रास्ता बतानेका यह अन्तिम अुपाय अुनके पास था, सो भी जगतके सामने रखकर अपना कार्य पूरा करके वे चले गये। जगतके लिअे अिससे बड़ी देन अुनके पास नहीं थी। भगवानके पास भी अुनके लिअे अिससे अच्छी मृत्युकी देन और क्या हो सकती थी? भक्तके लिअे भगवानके पास कुछ भी अदेय नहीं है और वह जो करता है भक्तकी सलाहसे, अुसके अन्तरको जानकर ही करता है। यह भी बापूजीकी मृत्युने सिद्ध कर दिया है।

> ‘जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं।
> अन्त राम कहि आवत नाहीं॥’

भक्तकी परीक्षाकी भी अिससे बड़ी कसौटी और क्या हो सकती है कि अन्तका अेक शब्द भी निकले तो वह रामनाम ही निकले? सच पूछा जाय तो भगवान और भक्त दोनों खिलाड़ी हैं और अेक-दूसरेकी कसौटी करनेके अनेक खेल खेलते हैं। तभी तो तुकारामने गाया है:

> माझें मन पाहे कसून। चित्त न ढळे तुझ पाया पासून॥
> कापूनि देअी न शिर। पहा कृपण कीं अुदार॥
> मजवरी घाली घण। परि मी न सोडी चरण॥
> तुका म्हणे अति। तुजवाचून नाही गति॥

(मेरा मन कसकर देख। चित्त तेरे पाससे नहीं हटेगा। मैं सिर काटकर दे सकता हूं। तू देख कि मैं कृपण हूं या अुदार। मेरे सिर पर घन पड़ेगा तो भी मैं तेरे पैर नहीं छोड़ूंगा। तुकाराम कहते हैं कि अन्तमें तेरे बिना मेरी गति नहीं है।)

यह भक्त और भगवानका नाता है, जिसे बापूजीने अपने जीवन और अपनी मृत्युसे सिद्ध करके दिखाया।

*

ता० २९-१-'४८ को बापूजीका नअी दिल्लीसे लिखाया हुआ नीचेका पत्र अुनके अवसानके बाद मुझे मिला था। यह मेरे नाम अुनका अंतिम पत्र था, अिसलिअे यहां दे रहा हूं।

नअी दिल्ली,
२९-१-'४८

श्री बलवंतसिंहजी,

बापूजीने कहा सो मेरे शब्दोंमें लिख रहा हूं। होशियारीबहन बीचमें यहांसे खुर्जा जा आअीं। कल ही वापिस आअी हैं। और आज ही खुर्जा वापिस जायेंगी। कारण यह है कि वे कहती हैं कि वहां कोअी वैद्यराज हैं जो अेक महीनेमें अुन्हें अच्छी कर देनेके लिअे कहते हैं। होशियारीबहनने अुनका अुपचार लेना पसंद किया है और बापूजीने भी अुसे ठीक समझा है। बापूजीने कहा कि 'होशियारी चंगी हो जावे तभी सेवाके काममें दिल लगा सकेगी, अिसलिअे मैंने अुसके लिअे वैद्यराजकी दवा कराना कबूल किया है।' यह पत्र चिमनलालभाअीको भी दिखा देंगे।

बाकी चिमनलालभाअीके खतमें से पढ़ना। अिति।

सेवक
बिसेनके नमस्ते

*

कअी दिनोंके बाद श्री रामकृष्ण बजाज दिल्लीसे अेक पात्रमें बापूजीकी भस्मका अेक भाग लेकर सेवाग्राम आये। जहां पूज्य बापूजीकी दिव्य मूर्तिके दर्शनोंकी लालसा सेवाग्रामवासियोंके मनमें थी और अुनकी प्रेमभरी चपत खानेको सब तरस रहे थे, वहां ताम्रपात्रमें अेक मुट्ठीभर भस्म आती देखकर सबका धीरज टूट गया।

जब अुस पवित्र कलशको मैंने संभाला तो मेरे शरीरमें बिजली-सी दौड़ गअी और आंखोंके सामने अंधेरा-सा छा गया। मैं सोचने लगा कि

बापूको हंसते हुअे आते देखकर हम सब लोग हंसते थे। प्रत्येकके मिलनमें अपनी अपनी खूबी होती थी। मैं तो सबके पीछे चुपकेसे जाकर अुनके चरणोंमें पड़ा करता था। जब अुनकी नजर मुझ पर पड़ती वे चपत लगाते और पूछते, "अच्छा आ गया? तेरा गो-परिवार कैसा है?" मैं सारी कथा सुनाता कि अितनी गायें ब्याअी हैं, अितने बच्चे हैं, अितना दूध होता है, अित्यादि।

आज यह सब किसको सुनाअूं? मैं बापूजीको नया कुआं दिखाना चाहता था, नये रास्तों पर अुनको चलाना चाहता था। अब अुस पवित्र कलशको लेकर अुन्हीं रास्तोंसे होकर मैं कुअें तक गया। दूसरे लोगोंको यह सब अटपटा लगा होगा। लेकिन मैं विवश था। मैं पुकार पुकार कर कह रहा था, "बापू, यह सब देख लीजिये।" मैं नहीं जानता था कि लोग मेरे पागलपनको देख रहे थे या नहीं। मैं खूब जोरसे रो भी रहा था। लोगोंकी आंखे भी सजल थीं।

अुसी समय मुन्नालालजीके बड़े भाअी चुन्नीलालजी बरहानपुरसे बड़े ही विह्वल होकर बरहानपुरके लिअे भस्मका थोड़ा भाग मांगने आये थे। अुन्होंने दूसरी जगहसे भी भस्म लानेका प्रयत्न किया था। लेकिन सफलता न मिलनेके कारण वे बड़े बेचैन थे। अुनके हृदयकी श्रद्धा और भावनाका हमने आदर किया और भस्मका थोड़ासा अंश अुन्हें देना मंजूर किया। वे चांदीके पात्रमें बड़ी श्रद्धासे भस्म ले गये। भस्मको बरहानपुरके नजदीक ताप्ती नदीमें प्रवाहित किया गया और आज वहां हर साल बहुत बड़ा मेला लगता है। जिस बरहानपुरसे अेकमात्र मुन्नालालभाअी बापूके निकट संपर्कमें आये थे, वहां आज हजारों लोग अुनके सम्पर्कमें आते हैं। जो काम बापू जिन्दा रहते हुअे नहीं कर सके, वह काम अुनकी अस्थियोंने किया। दधीचि अृषिकी हड्डियोंका अुपयोग राक्षसोंका संहार करनेमें हुआ था, तो बापूजीकी हड्डियोंका अुपयोग सद्वृत्तियोंको जाग्रत करनेमें हुआ। अगर बापूजीकी मृत्यु सहज रूपसे होती, तो जो प्रेरणा आज लोगोंको मिल रही है वह हरगिज न मिलती।

बापूने हमको जन्मभर यह पाठ पढ़ानेका प्रयत्न किया था कि जिस प्रकार किसीका जन्म लेना खास सुखका कारण नहीं है अुसी प्रकार मृत्यु भी दुःखका कारण नहीं है; बल्कि मृत्यु तो हमारा परम मित्र है। अुसके

आनेसे रोना क्या? आज वह सारा अुपदेश न जाने कहां चला गया था। हृदयकी बनावटमें भगवानने कुछ अिस प्रकारके पुर्जे लगाये हैं कि अुनके तारोंको अमुक प्रकारका स्पर्श होते ही आंखोंकी नालियां बहने लगती हैं। अिसका क्या किया जाय?

३२

बापूके अमूल्य विचार

[अिस प्रकरणमें बापूजीके विचार-सागरमें से चुनकर कुछ अैसे विचार दिये जाते हैं जो मानव-जातिके सुख, सन्तोष और प्रगतिके लिअे अमूल्य माने जायंगे और जो भावी पीढ़ियोंको जमानों तक सात्त्विक प्रेरणा देते रहेंगे।]

ज्ञानी पुरुषके विचार-स्वभावमें लोक-संग्रह आवश्यक है। अिसका अपवाद नहीं ही हो सकता। मनको निर्विचार मैं कितनी देर तक रख सकता हूं, यह कह नहीं सकता। क्योंकि अैसा माप मैंने निकाल कर देखा नहीं। पर अितना जानता हूं कि मेरे मनमें निकम्मे विचार स्थान नहीं ले सकते। आ जायं तो अुन्हें चोरकी तरह भागना पड़ता है।

*

ब्राह्मी-स्थितिमें किसीके दुःखसे दुःखी होनेकी बात नहीं है, क्योंकि किसीके सुखसे सुखी होनेकी बात नहीं है। सुतार टूटी हुअी नावको अच्छी करते समय सुख-दुःखका अनुभव नहीं करता, अुसी तरह 'ब्राह्मण' को भी सुख-दुःखका अनुभव नहीं होता। ब्राह्मी-स्थितिवाला ब्राह्मण कहा जायगा?

*

अमुक हद तक आत्मनिन्दा अत्यावश्यक है। पर मैंने देखा है कि कुछको अतिशय आत्मनिन्दा करनेकी टेव पड़ जाती है और फिर वे आगे बढ़ ही नहीं सकते। आत्मनिन्दाका अुपयोग आगे बढ़नेके लिअे ही हो सकता है। भूतकालमें किये हुअे महादोष आज यदि हम न करते हों तो अुनका विचार कर करके आत्माको निचोना यह दोषमें वृद्धि करनेके बराबर है। महादोष प्रकट कर देना चाहिये यह मैं स्वीकार करता हूं। सत्यका पुजारी दूसरा कुछ नहीं कर सकता। पर अुस दोषको स्वीकार करते हुअे मन पर

किसी भी प्रकारका बोझ न होना चाहिये। चढ़ा हुआ मैल धो डालनेके बाद फिर अुसी मैलका बोझ अपने पर कोअी रखेगा भला?

*

ब्राह्मी-स्थिति आदि अवस्थाओंमें मैं भेद नहीं करता। जो अनुभव आया है वह अैसा कहता है कि राग-द्वेष-रहितता ही आत्म-दर्शन है। अिस स्थितिका वर्णन मैं कर नहीं सकता। बुद्धि अुसे पहचानती है। अनुभव रोज अुसकी झांकी करता है। अिसलिअे मेरा कथन निश्चयात्मक है। यदि राग-द्वेषसे मैं सर्वथा मुक्त हो जाअूं तो आजकी प्रवृत्तियोंमें रहते हुअे भी सम्पूर्ण आत्मानन्द अनुभव कर सकूं। आज मैं अुसका अनुभव नहीं करता। परन्तु जिस अंश तक आज अनुभव करता हूं, अुस परसे राग-द्वेषका पूर्ण क्षय होने पर कैसी स्थिति होगी अुसका भान आ सकता है।

*

मेरा आदर्श शुकदेवजी हैं; अिसका अर्थ अैसा नहीं कि अुनके जैसा मुंह हो, अुनकी तरह सोया जाय, बैठा जाय, खाया जाय और हिमालयकी शरण ली जाय। अुसका अर्थ अितना है कि अुनका ब्रह्मचर्य जैसा था वैसा मेरा हो। और यदि तुम अैसा कहो कि संसारमें रहकर सेवा करनेवालेका वह आदर्श नहीं हो सकता, अथवा अुसे वह पहुंच नहीं सकता, तो शुकदेवजीके जैसे ब्रह्मचर्यकी कोअी क़ीमत नहीं रहती। पूर्ण ब्रह्मचारीकी निर्विकारता चाहे जैसी स्थितिमें निभनी ही चाहिये। यदि तुम कहो कि अैसी निर्विकारताको आज तक कोअी पहुंचा ही नहीं और पहुंच भी नहीं सकता, तो ब्रह्मचर्यका प्रयत्न छोड़ना चाहिये अैसा सिद्ध होगा। और यह ठीक हो तो अहिंसाको पहुंचा ही नहीं जा सकता।

*

मैला रहना आत्माका गुण नहीं — अिससे मैल गया कि गया। पापीसे पापी भी जब स्वच्छ हो जाय तब जिसने कभी पाप नहीं किया अुसके साथ खड़ा रह सकता है। मोक्षमें दरजे नहीं होते। वह अेक ही अवर्णनीय दशा प्राप्त हो तब सबके लिअे वह अेकसी ही होती है। पाप हम सब करते हैं। पर अुसे देखनेमें, अुसे कबूल करनेमें, अुसका नाश करनेमें पुरुषार्थ है।

रामरक्षा कौन कर सकता है? जो ब्रह्मचारी है, जिसने निद्रा जीत ली है, जो अल्पाहारी है, जो निर्व्यसनी है, जो सत्यवादी है, जो अल्पभाषी है, और जो परदु:खका ही विचार करके दु:खी होता है और दूसरोंको न मिले अैसी चीजका त्याग करनेकी अिच्छा रखनेवाला होकर सदा अपरिग्रही रहता है।

*

जो हमारी बात न मानें अुन्हें प्रेमसे जीतना यह धार्मिक वृत्ति है; अुन पर रोष करना यह राक्षसी — नास्तिक वृत्ति है। अिसलिअे हमारा बड़ेसे बड़ा काम प्रेमका बरसाद बरसानेका है। प्रेम बरसाना यानी मिल जाना अैसा नहीं। यह तो मोह कहा जायगा। हम जिनका विरोध करते हों, अुन पर भी प्रेम रखना, अुनको मूर्ख न मानना, अुनकी सेवा करना, यह प्रेम है। हिन्दू हिन्दू पर प्रेम बतावे अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं, पर हिन्दू मुसलमान पर भी अुतना ही प्रेम रखे, अुसके रीत-रिवाजोंको बरदाश्त करे। अिसमें भलाअी रही है। सहकारी सहकारी साथ मिलें अिसमें क्या आश्चर्य है? परन्तु असहकारी सहकारी पर, तीव्र मतभेद होते हुअे भी, प्रेम करे, धीरज रखे — अिसमें वीरता है, नम्रता है। अुन्हें दूसरोंकी नजरमें गिरा देना, अुनका तिरस्कार करना, अुनकी मश्करी अुड़ाना अिसमें बड़ाअी नहीं है। परन्तु अुनके यहां खुले पांव जाकर अुनकी सेवा करना अिसमें बड़ाअी है।

*

आत्मशुद्धिके लिअे निरंतर अीश्वर-स्मरण करना चाहिये। आस्तिक मानता है कि अीश्वर अन्तर्यामी है, निद्रामें भी वह हमारी चेष्टायें देखता है। अिसलिअे हमें चौबीस घंटे सावधान रहना चाहिये। हरअेक मानसिक या शारीरिक क्रिया करते हुअे अीश्वरका नाम कभी न भूलना। अुसका नाम सब पापोंको हरता है। थोड़े अभ्यासके बाद हर आदमी अनुभव कर सकता कि सब काम करते समय, सारे विचार करते समय अीश्वर-स्मरण संभवित है। अेक समय मनुष्य अेक ही विचार कर सके, यह नियम अीश्वर-स्मरणको ही लागू नहीं होता; क्योंकि अीश्वर-स्मरण आत्माका स्वाभाविक गुण है। दूसरे विचार तो अुपाधिरूप हैं। अीश्वर सब कुछ करता है अैसा जानकर

जो आदमी अुसमें लीन हो जाता है, अुसे विचारने या करनेका क्या रह जाता है? वह स्वयं मिटकर अीश्वरके हाथमें भाजनमात्र बन जाता है।

*

कायाको पत्थररूप मान कर जो विहार करता है वह अेक ही जगह बैठकर भी जगतको हिलाया ही करता है। पत्थरको कौन मार सकता है? पत्थरकी रज कर डालो तो भी वह माफी नहीं मांगेगा। पर वह घर भी नहीं चुनेगा। अुसे जितना मारोगे अुतना थकोगे। जितना मारोगे अुतना वह घर चुननेके लिअे ना कहेगा। अैसी जिसने अपनी काया बना ली हो अुसे हरानेवाला अिस जगतमें कौन हो सकता है? मनुष्यमें पत्थरका और अीश्वरका मिलाप होता है। मनुष्य यानी चेतनामय पत्थर; अिसीलिअे शास्त्रोंने सिखाया है कि वही मनुष्य पूरा जीता हुआ माना जायगा जिसने पूरा देह-दमन किया है। अिसलिअे शांतिका अर्थ देह-दमन हुआ। अिससे हम जिस हद तक शरीरका मोह छोड़ेंगे, अुसी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे।

*

जिसने अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्यमें पूर्णता प्राप्त नहीं की और जिसने सब प्रकारकी मालिकी और धन-वैभवका त्याग नहीं किया, अैसा कोअी भी मनुष्य शास्त्रोंका सच्चा अर्थ समझ नहीं सकता। अिस धर्म-सूत्रमें मेरी पूर्ण श्रद्धा है। मैं गुरुकी प्रथाको मानता हूं। लेकिन साथ साथ यह भी देखता हूं कि अभी तो लाखों मनुष्योंको गुरुके बिना ही जीवन-यात्रा पूरी करनी होगी। कारण, सम्पूर्ण ज्ञानके साथ अुतने ही सम्पूर्ण सदाचारका संगम अिस जमानेमें होना दुर्लभ है।

*

मुझे अितना ही सन्तोष है कि मैं सत्यका आग्रह रखनेके सिवा अिस व्रतके बारेमें अधिक दावा करता ही नहीं। मैं जानकर असत्य भाषण कर ही नहीं सकता। सत्य कहना और करना यह मेरा स्वभाव बन गया है। परन्तु जिस सत्यको मैं परोक्ष रूपमें पहचानता हूं अुस सत्यका पालन करनेका दावा मुझसे नहीं किया जा सकता। मुझसे अनजानमें भी अति-शयोक्ति हो जाय, किये हुअे कार्यका ब्रर्णन करनेमें मुझे रस आ जाय, तो अिस सबमें असत्यकी छाया है और वह सत्यकी कसौटी पर नहीं चढ़ सकता। जिसका जीवन सत्यमय है वह तो शुद्ध स्फटिक-मणिके जैसा होगा।

अुसके पास असत्य अेक क्षण भी नहीं निभ सकता। सत्याचरणीको कोअी धोखा दे ही नहीं सकता। क्योंकि अुसके सामने असत्य बोलना असंभव होना चाहिये। जगतमें कठिनसे कठिन व्रत सत्यका है। लाखों प्रयत्न करें, परन्तु अुनमें से कोअी विरला ही अुसी जन्ममें अिस व्रतमें पार अुतर सकता है। मेरे सामने जब कोअी असत्य बोलता है तब मुझे अुस पर क्रोध चढ़नेके बजाय खुद अपने पर ज्यादा क्रोध चढ़ता है। क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझमें अभी असत्यका वास गहराअीमें पड़ा ही हुआ है। . . . मैं सत्यकी सेवाका प्रयत्न कर रहा हूं। अुसके खातिर हिमालयकी चोटी परसे नीचे गिरनेकी हिम्मत मुझमें है अैसा मैं मानता हूं। फिर भी अभी मैं अुससे बहुत दूर हूं, अिसका मुझे भान है। जैसे जैसे मैं नजदीक पहुंचता जाता हूं वैसे वैसे मुझे मेरी अशक्तिका भान अधिकाधिक होता जाता है। और वैसे वैसे वह ज्ञान मुझे अधिक नम्र बनाता है। अपनी तुच्छताको न जानना और अभिमान रखना, यह संभव है। परन्तु जो जानता है अुसका गर्व अुतर जाता है। मेरा तो कभीका अुतर गया है। वह (सत्यका) मार्ग शूरोंका मार्ग है, कायरोंका वहां काम नहीं है। चौबीस घंटे जो प्रयत्न करता है, खाते, बैठते, सोते, कातते, शौच जाते — हरअेक क्रिया करते हुअे जो केवल सत्यका ही चिन्तन करता है वह जरूर सत्यमय बन सकता है। जब सत्यका सूर्य किसीमें सम्पूर्ण प्रकाशित होता है तब वह छिपा नहीं रहता। तब अुसके लिअे कोअी बात बोलने या समझानेकी नहीं रह जाती। अथवा अुसके वचनमें अितनी शक्ति भर जाती है, अितना प्राण भर जाता है, कि अुसका असर लोगों पर तुरन्त होता है।

*

संस्थाम रहनेके नालायक कोअी नहीं हो सकता। जगत ही तो संस्था है। जगतके बाहर कौन रह सकता है? कुटुम्ब भी संस्था है। वह पेटा-संस्था है। और कुटुम्ब और जगतके बीचमें हमारे जैसी संस्थायें हैं। सब अपूर्ण हैं। जगत भी अपूर्ण है। संपूर्ण संस्था जैसी कोअी वस्तु ही नहीं है। क्योंकि संस्था अपूर्ण मानवियोंकी बनी हुअी है। संपूर्ण अेकमात्र अीश्वर है।

*

रामनामका स्मरण जब श्वासोच्छ्वासवत् स्वाभाविक होता है तब दूसरे कामोंमें विघ्नकर नहीं होता बल्कि बल देता है। तंबूरेका सुर दूसरे

सुरोंको बल देता है वैसे। अिसमें दो काम अेकसाथ करनेका दोष नहीं आता। आंख अपना काम करती है, कान अपना। सब अेकसाथ होता है।

अब समझमें आ सकता है कि मेरे दूसरे कामोंको रामनाम सरल करता है, सफल भी। अुसका स्वरूप अवर्णनीय है, अनुभवगम्य है।

ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप हैं, अिस बारेमें मुझे भी शंका थी। अब नहीं है। दोनोंका सम्बन्ध शरीरके साथ है। मनोविकारका असर शरीर पर जाता है। अैसे ही क्रोधादि हिंसक विकारोंका। अगर शरीर न हो तो अहिंसा और ब्रह्मचर्य अर्थविहीन हो जाते हैं। अर्थात् दोनों शरीरके धर्म हैं और दूसरे शरीरके साथ सम्बन्ध रखते हैं।

*

प्रेमकी परीक्षा तब ही हो सकती है जब प्रेम स्वतंत्रतासे काम कर सके।

*

अहिंसक संस्थामें कानून कानून मिट जाता है और अुसका बोझ हम कभी महसूस नहीं करते। अिसलिअे जब कोअी कानून भंग करता है तो हम अुसके प्रति अुदार रहते हैं।

*

ब्रह्मचर्य और अहिंसाका सम्बन्ध शरीरके साथ है, अिसलिअे अुनको शारीरिक तप कहा है। अिसका मतलब यह नहीं है कि मानसिक व्यभिचार क्षन्तव्य है या कम है।

नाम-स्मरण यज्ञोंका राजा अेक ही दृष्टिसे है। कष्ट (शारीरिक) नहींवत् और परिणाम सबसे अधिक।

*

जो आवश्यक नहीं है वह करना आध्यात्मिक दृष्टिसे हानिकर है।

*

मेरा स्मरण २४ घंटे चलता है। अुसका मतलब यह नहीं है कि मैं जानता हूं, लेकिन संकल्प है कि २४ घंटे तक चले और चलता है, जैसे श्वासोच्छ्वास।

*

हां, शरीर-श्रम तो हमारे व्रतोंमें है हो। अुसको जितना महत्त्व दिया जाय कम है।

*

'पुरुष निर्विकार बननेसे स्त्रीरूप बन जाता है।' यानी स्त्रीको अपनेमें समा लेता है। यही बात निर्विकार स्त्रीके बारेमें है। निर्विकारताकी कल्पना मनमें करनेसे मेरा अर्थ स्पष्ट हो जायगा। अैसे स्त्री-पुरुष देखनेमें नहीं आते हैं यह दूसरी बात है।

*

सन्तानोत्पत्तिकी अिच्छा कब योग्य मानी जाय अैसे प्रश्नका अुत्तर यही हो सकता है कि जब दम्पतीको भोगेच्छा नहीं है तो भी सन्ततिकी अिच्छा होती है। जैसा दशरथके लिअे माना गया है। सारे कार्यको धर्मका रूप दिया गया है।

*

स्वादको नहीं जीता है तो ब्रह्मचर्यका शुद्ध पालन अशक्य-सा समझा जाय।

*

सच्ची प्रतिष्ठा वह जो सत्यादिका पालन करते हुअे सेवासे आती है।

*

जो मनुष्य अीश्वर पर विश्वास करता है वह ज्योतिषीके पास कभी नहीं जायगा।

*

मेरी मृत्यु किसी निमित्तको लेकर हो, अिस कल्पनामात्रमें भी मैं अभिमान देखता हूं। यदि मुझसे पूछा जाये कि सेवा करते करते मरना पसन्द करोगे या खटिया पर रोगी होकर पड़े पड़े, तो मैं यही कहूंगा कि जैसी प्रभुकी अिच्छा हो अुसी तरहसे। मैं कैसे मरूं अिसका विचार करना यह मेरा काम नहीं, मेरे करतारका काम है। और मेरे लिअे अिस सम्बन्धमें कुछ भी कामना करना अभिमान है।

*

अहिंसक अधिकारी अपने अधिकारको ज्यादा सेवाके लिअे अिस्तेमाल करता है। अुसके द्वारा ज्यादा प्रेम बताता है। जब अधिकारका अुपयोग आज्ञा करनेमें होता है तब प्रेमकी न्यूनता समझना चाहिये।

*

नम्रता सीखी नहीं जाती परन्तु अहिंसाकी साधनामें से नम्रता फूलकी कलीकी तरह फूट निकलती है। सीखी हुअी नम्रता सभ्य लोगोंका विनय है। अुसका अहिंसाके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। लेकिन जहां शुद्ध अहिंसा है वहां नम्रता होनी ही चाहिये। अथवा अहिंसा नाममात्रकी है। अहिंसामें 'हमें' मिट जाना है। हम हैं तब तक हिंसा तो है ही। हम गअे तो हिंसा भी गअी। अिसलिअे अहिंसा सीखते सीखते नम्रताकी सुगंध किसी दिन अपने-आप फैल जायगी।

*

'ध्रुवं जन्म मृतस्य च'—जिसने अेक देह छोड़ा है अुसे दूसरा मिलने ही वाला है। यहां मोक्षकी बात नहीं कही। सामान्य नियमकी बात कही है। मुक्तको मृत्यु नहीं है अिसलिअे जन्म भी नहीं है।

*

दो या ज्यादा भी आदमी बात करते हैं और हम गुजरते हैं तब विनय मांगता है कि हम अुनकी बातें न सुनें, न अुनमें बगैर निमंत्रण हिस्सा लें। अगर वे हमारी बात करते हैं अैसा आभास भी आवे तो हम वहांसे शीघ्रातिशीघ्र हट जायं

*

भंगीकाम बढ़ानेमें यह भी समझो कि भंगी सबके नीचे रहते हुअे सबसे अच्छा काम (सफाअीका) करता है। और अुसी हकसे वह अीश्वरके आगे सबसे अूंचा है।

*

रामनाम कितना बुलन्द है यह अनुभव लेनेके लिअे विचारकी शुद्धि चाहिये। हृदयसे वह निकल नहीं सकता जब तक हृदय शुद्ध न हो। वह शुद्धि आ गअी तो रामनाम अुच्चार करनेकी भी जरूरत नहीं।

*

अीश्वरके पास हीं पूरा सत्य रहता है। हमारे सापेक्ष सत्यके लिअे हम मर जावें तो हम तो बच जाते हैं।

*

जब हम सचमुच क्रोधरहित होते हैं तब हमें सीधा रास्ता मिल जाता है।

*

विवाहित दम्पतीके लिअे केवल श्रेष्ठ प्रकारकी संतति पैदा करना यही जननेन्द्रियका सच्चा अुपयोग है। जब दोनों जन संभोग नहीं परन्तु संभोगका फल — प्रजोत्पत्ति — चाहें तभी संभोग हो सकता है और होना चाहिये। अिसलिअे प्रजोत्पत्तिकी अिच्छाके बिना संभोगकी अिच्छा अधर्म्य है और अिसलिअे अुसे रोकना चाहिये।

३३

बापूके अन्तेवासी विभिन्न सेवाक्षेत्रोंमें

आखिर बापूका सदाका वियोग भी सहना पड़ा और आश्रमके विषयमें गंभीरतासे कअी बातें सोची गअीं। आश्रमवासियोंने मिलकर यह निश्चय कर लिया था कि अबसे हम लोग आश्रमके लिअे किसीसे चन्देकी याचना नहीं करेंगे। खेती करते हुअे स्वावलम्बी रहनेका यत्न करेंगे और जो भी कष्ट अुठाने पड़ें अुन्हें अुठाते हुअे अन्त तक आश्रमको निभायेंगे।

यह प्रश्न विनोबाजीके सामने गया, क्योंकि बापूजीके बाद हमने विनोबाजीसे मार्गदर्शनकी याचना की थी और अुन्होंने कृपापूर्वक आश्रमका मार्गदर्शन करते रहना स्वीकार कर लिया था।

विनोबाजीने हमारे प्रश्नका अेक गंभीर और अुदात्त हल ढूंढ़ निकाला — सूतांजलिका। अिसके दो शुभ परिणाम हुअे। आश्रमको थोड़ी रकम मिलने लगी तथा सूत्रयज्ञकी भावनाने जनताका मानसिक स्तर अूंचा अुठाया।

हमारे लिअे यह बड़े संतोषका विषय है कि तभीसे आश्रम अपनी खेतीके बल पर ही बिना बाहरी चन्देके चल रहा है। रेड्डीजीने खेतीमें अनेक प्रयोगों और अथक परिश्रमके द्वारा खूब प्रगति कर ली है, जिससे अुत्पत्ति काफी बढ़ गअी है।

बापूजीके सामने ही आश्रमवासियोंको अुन्हें सतानेवाले अपंग तथा रोगियोंकी अेक जमात समझा जाता था। पर वास्तवमें अैसा था नहीं। जहां अेक ओर रोगियोंकी सेवा करना बापूजीके आश्रम-जीवनका अेक विशेष कार्यक्रम था, वहां दूसरी ओर अुनके आसपासके कार्यकर्ता बापूजीको अपना जीवन अर्पण करके वहां रहते थे और अुनकी आज्ञानुसार कार्य करनेमें अपनेको धन्य मानते थे। वे बापूजीके हृदयमें अुत्पन्न होनेवाले अनेक विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेवाले थे, अिसलिअे मानो अुनकी जीती-जागती प्रयोग-शाला थे। बापूजी स्वयं ही अुन्हें वात्सल्यमयी मांकी तरह अपनी छातीसे लगाये रहनेकी ममतासे मुक्त नहीं थे। परंतु यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुनमें से प्रत्येक कार्यकर्ता बापूजीका आदेश मिलने पर कहीं भी जाकर चाहे जैसा कार्य अुठा लेनेकी क्षमता रखता था।

बापूजीने अेक बार अेक प्रतिज्ञा-पत्र निकालकर यह आदेश दिया था कि जो आश्रमवासी अुनके मरनेके बाद आश्रममें मरण-पर्यन्त सेवा करनेके निश्चयवाले हों, वे अुस पर हस्ताक्षर कर दें।

प्रतिज्ञा-पत्र अिस प्रकार था :

"यह संस्था क्या चीज है, और अिसके क्या नियम हैं, अिस बारेमें मेरे सामने प्रश्न काफी दफा आया है। मैंने अुसे टाला है। लेकिन मैं देखता हूं कि अब टालना नहीं चाहिये। संस्था कैसे बनी, सो तो मैंने काफी दफा कहा है; आज जानने योग्य बात तो यह संस्था क्या है, अुसे हम सोचें। अुसका नाम तो सेवाग्राम आश्रम हो गया है। भले अैसा ही रहे।

"स्थायी आश्रम-निवासी वे हैं जो अेकादश-व्रतोंकी आवश्यकता मानते हैं और अुनका अमल करनेका भरसक प्रयत्न करते हैं; और आश्रममें मेरी मृत्युके बाद भी जो मरणान्त तक रहेंगे और सेवा करेंगे। अिस तरह रहनेवालोंके नाम लिख लेना चाहिये। वे निम्नलिखित पुर्जे पर दस्तखत करें।

> हम नीचे दस्तखत करनेवाले अेकादश-व्रतोंकी आवश्यकता मानते हैं और अुनके पालनका भरसक प्रयत्न करेंगे। हम अिस आश्रममें गांधीजीकी मृत्युके बाद भी मरने तक रहेंगे और जो सेवा हमें सुपुर्द की जायगी अुसे करते रहेंगे।

"दूसरे रहनेवाले, जो सेवार्थ आये हैं, वे अस्थायी गिने जायेंगे। और तीसरे अतिथि, जो थोड़े दिनोंके लिअे ही आये हैं।

"स्थायी आश्रमवासियोंमें से अेक व्यवस्थापक रहेगा जिसको गांधीजी पसंद करेंगे। अुनकी मृत्युके बाद और मजकूर व्यवस्थापकके किसी कारणसे न रहने पर नयेकी पसंदगी स्थायी आश्रम-निवासी करेंगे। अुसका अधिकार आश्रमकी सब अंदरूनी व्यवस्था करनेका और सब निवासियोंके कार्य नियत करनेका होगा। व्यवस्थापक यथासंभव स्थायी निवासियोंकी स्वीकृति पानेकी कोशिश करेगा।

"आश्रमका हिसाब ठीक तौर पर रखा जायगा। अुस हिसाबका निरीक्षण प्रतिवर्ष करवाया जायगा। वह हिसाब आश्रम-भूमिके संरक्षकों और गांधी-सेवा-संघके अध्यक्षके पास भेजा जायगा।

बापू"

कुछ भाअियोंने अुस पर हस्ताक्षर किये थे। मैंने सिर्फ अिसलिअे नहीं किये कि बापूजीके बाद न मालूम परिस्थितियां क्या हों, यद्यपि निश्चय तो मेरा भी वैसा ही था। बापूजीको विश्वास हो गया था कि चिमनलाल, मुन्नालाल, कृष्णचन्द्र, बलवन्तसिंह, पारनेरकर ये सब लोग यहीं रहनेवाले हैं। हम लोग सेवाग्रामको अपना घर मानने लगे थे। बापूजीके बाद जब जवाहरलालजी सेवाग्राम पधारे तब अुन्होंने यह जानना चाहा कि यदि बाहर जाकर कार्य करनेकी आवश्यकता आ पड़े तो हम लोग जानेको तत्पर हैं या नहीं। तब मैंने सबकी तत्परता बतलाते हुअे यह स्पष्ट कर दिया था कि हम कहीं भी जाकर काम करें, लेकिन सेवाग्राम ही मरण-पर्यन्त हमारा घर बना रहेगा।

अिसी निश्चयके अनुसार विनोबाजीने मुझे राजस्थानमें गोसेवाके कार्यके निमित्त भेजनेकी बात कही, तो मुझे बहुत ही अटपटा लगा। और आश्रम छूटनेका दुःख होने लगा। चि० होशियारी अुरुलीकांचन चली गअी थी, अिसलिअे गजराजको संभालनेका प्रश्न भी मेरे सामने था। बापूजीके ये शब्द भी मेरे कानोंमें गूंज रहे थे: "मेरे मरनेके बाद जो मरने तक आश्रममें रहें वे अिस (प्रतिज्ञा-पत्र) पर दस्तखत करें।" मैंने अपनी मनोभूमिका विनोबाजीको स्पष्ट लिखी, तो अुनका अुत्तर आया। अुसीके अनुसार गो-

माताकी जो सेवा मुझसे हो सकती है वह करनेके प्रयत्नमें मैं लगा हुआ हूं। विनोबाजीका अुत्तर अिस प्रकार था :

परंधाम, पवनार,
६–२–'५०

श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। साफ दिलसे लिखा हुआ और जिम्मेदारीकी भावनासे भरा हुआ।

आश्रमके बाहर काम करनेका सोचते हैं तो हम लोगोंके मनमें थोड़ी झिझक मालूम होती है। यह मोह या आसक्ति नहीं है, बल्कि आश्रम-निष्ठा है।

लेकिन आश्रम-निष्ठा छोड़नेका सवाल ही नहीं है। कल आपकी तनखाहकी बात निकली, तो आपने दो सौ रुपये सुझाये। आपको दो सौ रुपये तो कोअी भी दे सकते हैं। अुतनी आपकी योग्यता बाजारमें है, और वह बहुत ज्यादा भी नहीं है। फिर भी मैंने हिसाब बारीकीसे करके अेक सौ पचहत्तर सुझाये, वह अिसीलिअे ना कि आश्रमके व्रतोंकी चिन्ता हमें रखनी थी। नहीं तो दो सौ और अेक सौ पचहत्तरमें अितना बड़ा अन्तर भी क्या था? आप आश्रमवासी हैं और मैं भी। अिसीलिअे यह बारीकी हमने सोची। सारांश, आश्रम-निष्ठा हमें जरा भी ढीली करनी नहीं है।

अितना तो मैंने दोपहरको लिख दिया। बादमें समय नहीं रहा। दूसरे काममें रह गया। अब यह रातको लिखवा रहा हूं।

हम बरसोंसे अेकत्र काम किये हुअे आश्रमवासी हैं। हमें हमारा सम्बन्ध तोड़ना नहीं है, बल्कि अधिक दृढ़ करना है। मैंने तो जिन्दगीभर जिसका सम्बन्ध जोड़ा अुसका मेरी ओरसे कभी तोड़ा नहीं है। आपको गोसेवा-संघका मैंने सुझाया, क्योंकि अुसमें मेरा भी चलनेवाला है। राधाकिशन और आपके बीचमें कभी विचार-भेद हुआ तो निपटारेके लिअे वह मेरे पास आनेवाला है।

गोसेवा-संघको आपका बहुत अुपयोग है। राधाकिशनसे कल मेरी बात हो गअी है। किसीके बगैर काम अड़ा है यह सवाल ही

और कॉलेजमें पड़े बुरे संस्कारोंके खिलाफ युद्ध करते करते अपने मन और शरीरको भी तपश्चर्याकी अग्निमें जैसे तपाया है, अुसे देखकर अुनके साथी भी परेशान हो अुठते थे। अुन्होंने मुझे हिन्दी पढ़ानेमें गुरुका पार्ट तो अदा किया ही है। लेकिन हमेशा मेरे छोटे भाअीकी तरह नम्रतासे मेरी डांट-फटकार भी सरलतासे सही है। सेवाभाव तो अुनका गजबका है। जब कभी मैं बहुत थक जाता था, या मुझे कोअी शारीरिक पीड़ा होती थी, तब शरीर और पैर दबानेकी सेवा अुनसे लेनेमें मनको जरा भी संकोच नहीं होता था। आज भी नहीं होता है। अुनकी कार्य-तत्परता, अुनकी सरलता, अध्ययन-चिन्तनकी सतत लगन, शारीरिक तप और स्वच्छताकी सूक्ष्म दृष्टि आदि सब वृत्तियोंमें बापूजीके प्रति अुनकी अपार श्रद्धा और अुनके बताये मार्ग पर अपने आपको खपा देनेकी सतत जागृतिसे अुनका जीवन कुन्दनकी तरह निखरता जा रहा है। बापूजीने अुनसे जो आशायें रखी थीं अुन्हें पूरा करनेमें वे अंतिम घड़ी तक जूझते रहेंगे, यह अुनके आजके कार्यक्रम और जीवनसे स्पष्ट हो रहा है। हालांकि अुनके प्रति मेरी ममताके कारण शरीरके प्रति अुनकी कठोरतासे मुझे कष्ट होता है, कभी कभी वह अुनका पागलपन भी लगता है। लेकिन 'मांहि पड्या ते महासुख माणे, देखनारा दाझे जोने' — जो तपकी भट्टीमें पड़ा है अुसे तो महासुख है; देखनेवाला घबराता है।

पारनेरकरजी अृषिकेशमें पशुलोकका संचालन कर रहे हैं। चिमनलालभाअी तथा मुन्नालालभाअी सेवाग्राममें ही हैं। अीश्वर-कृपासे यह सिद्ध हो गया है कि हममें से कोअी वैसा पंगु सिद्ध नहीं हुआ जैसा कि लोगोंका खयाल था। बापूजीके सामने आपसमें हमारे बीच स्वभाव-भिन्नताके कारण कभी कभी चकमक झड़ जाती थी। लेकिन आज अेक-दूसरेसे सैकड़ों मील दूर होते हुअे भी हमारे बीचका स्नेह सगे भाअी-बहनोंके स्नेहसे भी कहीं अधिक गहरा है।

आश्रमकी बहनोंका मैं स्वयं परिहास किया करता था कि बापूके बाद आप लोगोंके हाल कैसे होंगे? जब मैं अुनसे पूछता कि बापूजीके मरनेके बाद आप लोग क्या करेंगी, तो वे बेहद चिढ़तीं और कहतीं अैसे अमंगल वचन क्यों मुंहसे निकालते हो। लीलावतीबहन और अमतुलबहन तो लड़ने पर आमादा हो जातीं। आज सभी यह देख सकते हैं कि अिन बहनोंके काम हम भाअियोंके कामोंसे भी ज्यादा चमक रहे हैं।

लीलावतीबहनने ३२ वर्षकी अवस्थामें पढ़ना शुरू किया और डॉक्टरीकी सनद हासिल की। राजकुमारीबहन, जो सचमुच बापूकी राजकुमारी थीं, आजकल भारतकी केन्द्रीय स्वास्थ्य-मंत्रिणी हैं और अुनकी सेवा सराहनीय है। सुशीलाबहन अेक कुशल डॉक्टर हैं। दिल्लीकी प्रादेशिक विधानसभाके अध्यक्ष-पद पर भारतमें ही नहीं बल्कि सारी दुनियामें पहुंचनेवाली वे सर्वप्रथम महिला हैं। आजकल वे विनोबाजीके भूदान-आन्दोलनमें प्रमुख भाग ले रही हैं।

बहन अमतुस्सलामकी तो बात ही क्या कहनी? मृत्युको धोखा देनेमें वे सिद्धहस्त हैं और यह देखकर आश्चर्य होता है कि न मालूम किस आन्तरिक शक्तिके आधार पर वे अितना काम कर लेती हैं। अपने साथी कार्यकर्ताओंके प्रति अुनका माता जैसा स्नेह होता है। वे सतत सेवाकार्यमें लगी रहती हैं। किसी काममें थकने या निराश होनेका तो अुनके जीवनमें स्थान ही नहीं है। अुनके प्रत्येक सेवाकार्यमें बापूजी और बाके प्रति अुनकी जीती-जागती श्रद्धाका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अुनके व्यक्तित्व और वाणीमें अितना प्रभाव है कि कोअी भी अुनकी बातको टालनेकी हिम्मत नहीं कर सकता। अुन्होंने हिन्दू-मुसलमानोंके बीचकी दरारको भरनेके लिअे सीमेन्टका काम किया है। पू० राजगोपालाचार्यजीके शब्दोंमें "अमतुलने भावलपुरसे हिन्दू लड़कियोंको मुसलमानोंके घरोंमें से जिस तरह निकाला है अुसका यह काम अितिहासमें सोनेके अक्षरोंमें लिखा जायगा।" नोआखलीमें अेक मशहूर गुंडेकी तलवार रखवानेके लिअे अुन्होंने अपने प्राणोंको दाव पर लगा कर सफलता प्राप्त की थी। बापू और बाके प्रति अुनकी श्रद्धाने तो हम सबकी चोटी पर हाथ फेर दिया है। राजपुरामें अुन्होंने सेवाग्रामके ही नमूनेकी बापू-कुटी, बा-कुटी और आदि-निवास बनवाया है। बापू-कुटीमें रामायण, गुरु-ग्रन्थसाहब और कुरानशरीफका नित्यपाठ चलता है। बा-कुटीमें बाल-मंदिर चलता है। आदि-निवासमें सेवाकार्य चलता है।

अुनका जीवन धर्म-समन्वयका अनोखा दृष्टांत बन गया है। वे जितनी पक्की मुसलमान हैं अुतनी ही श्रद्धालु हिन्दू भी हैं। सिख, अीसाअी, पारसी आदि सब धर्मोंके प्रति अुनके मनमें आदर और श्रद्धा है। और सबकी सेवा समान रूपसे करनेके लिअे वे अपना जीवन समर्पण कर चुकी हैं। बापूजीको यदि मैं कुम्हारकी अुपमा दूं, तो अमतुस्सलामबहनने अपने आपको मिट्टी

बनाकर अुनको सौंप दिया था। अुस कुम्हारने अुस मिट्टीकी खूब अच्छी तरहसे पिटाअी की। अुस मिट्टीका वे अैसा पक्का घड़ा बनाकर रख गये हैं जो अुनके कामका भार अुठानेमें न रात देखता है न दिन; जिसे न भूखकी चिन्ता है न प्यासकी; न बीमारीकी न मरनेकी। और अुस पर किसी प्रकारके भेदभावकी तो बूंद ठहरती ही नहीं है। राजपुरामें हिन्दू शरणार्थी बहनों, बच्चों, बड़ोंकी अुन्होंने जो सेवा की है और आज भी कर रही हैं अुसकी मिसाल मिलना कठिन है। कितनी ही हिन्दू-मुसलमान लड़कियोंको अुन्होंने अच्छी तालीम देकर तेजस्वी कार्यकर्त्री बना दिया है।

वहां पर अेक सुन्दर गोशाला बनानेके लिअे वे अधीर हैं। मुझे बार बार लिखती रहती हैं कि "मेरे जीवनका यह काम अधूरा रह गया तो अिसका पाप आपको लगेगा।" मैं भी हंसीमें लिख देता हूं कि जब हम दोनों बापूजीके पास चलेंगे तो झगड़ा अुनकी अदालतमें पेश होगा। तब मैं यह कहकर साफ बच जाअूंगा कि 'अिन्होंने दुनियाभरकी आफतें अपने सिर पर रख ली थीं और गाय अेकनिष्ठ सेवक चाहती है। अिसलिअे मैं अिनके गलेमें गाय बांधनेमें संकोच करता रहा।' लेकिन वे मेरी अेक न चलने देंगी और गोशाला बनाकर ही रहेंगी। अुनकी अिस सेवामय सर्वधर्म-समभावकी पवित्र भावना और सतत सेवा-परायणताको देखकर मुझसे छोटी बहन होने पर भी अुनके चरणोंमें मेरा सिर झुक जाता है। जिस प्रकार मीरा भगवानके पीछे पागल थी अुसी प्रकार वे बापूजीके कामके पीछे पागल हैं।

'निकसत नाहिं बहुत पचि हारी, रोम रोम अुरझानी।'

सचमुच ही बापूजी और बाका प्रेम अुनके रोम रोममें अुलझ गया है। अिसीका नाम है:

'सो अनन्य गति जाके मति न टर हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवंत॥'

बापूजीने बहनोंकी अपार शक्तिको प्रगट करनेका जो महान प्रयत्न किया था, अुसका जीवित दृष्टान्त अमतुस्सलामबहनका कार्य और जीवन है।

मीराबहन तो पांडवोंकी तरह हिमालय पर चढ़नेमें मशगूल हैं। पहले हरद्वारमें अुन्होंने किसान-आश्रमकी और अृषिकेशमें पशुलोककी स्थापना की, क्योंकि गौओंके पीछे वे पागल हैं। अृषिकेशसे आगे बढ़कर टेहरी गढ़वालमें

अुन्होंने पक्षिकुंजकी स्थापना की और पशुसेवा तथा गोसेवाका काम किया। जब मैं हिमालय-दर्शनके लिअे गया तो मैंने देखा कि हिमालयका वह भाग अुनकी सेवाकी सुगन्धसे महक रहा है। वहांकी जनता तो अुन्हें अपनी सेवाके लिअे प्रेषित अीश्वरका दूत ही मानती थी। अब वे हिमालयमें अन्दरकी ओर बढ़ गअी हैं और काश्मीरमें गोसेवाका कार्य कर रही हैं।

मेरी भतीजी होशियारीने मेरे मना करने पर भी अपने अिकलौते बेटेका मोह त्याग कर निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकांचनमें कुशल सेविकाका काम करनेकी योग्यता प्राप्त कर ली है। और अुसकी सेवाकी शक्ति अैसी बढ़ गअी है जिसकी मुझे स्वप्नमें भी आशा नहीं थी। अुसे तो आंतोंका टी० बी० हो गया था। मुझे डर था कि वह कहीं चली न जाय। कारण, अुसके दो भाअी टी० बी० से मर चुके थे। लेकिन आज अुसकी स्वस्थ तबीयत और सेवाकी शक्ति देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है। अक्षरज्ञान और भाषाज्ञानकी दृष्टिसे तो वह मुझसे भी ठोठ थी। लेकिन आज वह मेरी भूलें निकालती है। आध्यात्मिक दृष्टिसे भी अुसने काफी प्रगति कर ली है। अुसे गुरु भी बालकोबाजी जैसे प्रखर साधक और साधु पुरुष मिल गये हैं। वे अुसे गीता और योगसूत्र जैसे गूढ़ शास्त्रोंका अध्ययन बड़ी अुत्कटतासे करा रहे हैं। आत्मा और परमात्माका वेदान्त-तत्त्वज्ञान समझनेकी अुसकी भूखको देखकर सानन्द आश्चर्य होता है। अगर अुसकी लिखनेकी शक्ति प्रकट हुअी तो वह मुझसे भी बड़ी और सुन्दर पुस्तकें किसी दिन लिख सकेगी। आज हृदयसे सहज ही निकल पड़ता है: 'पुत्रि पवित्र किये कुल दोअू।' यह सब बापूजीकी आशा और आशीर्वादका ही फल है।

पुष्पाबहन १९४२ के आन्दोलनके बाद बम्बअीके वातावरणमें से निकल कर अविवाहित रहनेके अपने निश्चय द्वारा माता-पिताको गहन चिन्तामें छोड़कर आश्रममें आअी थीं। कअी लोगोंको अैसा लगा था कि वे आश्रमके कठिन जीवनको ग्रहण करनेमें असमर्थ रहेंगी। लेकिन वे डटी हुअी हैं और नागपुरके निकट टाकली ग्राममें भंसालीभाअीके साथ अुत्तम ग्रामसेवाका काम कर रही हैं।

अिन समस्त बहनोंकी सेवाभावनाके सामने अनायास ही मेरा मस्तक झुक जाता है। यह सब बापूजीके आशीर्वादोंका और हम लोगोंसे अुन्होंने जो आशायें रखी थीं अुनका ही शुभ परिणाम है अैसा मानना चाहिये।

३४

अुपसंहार

काफी लिख जाने पर भी मेरा हृदय बापूजीके सत्संग और अपने २५ वर्षके आश्रम-जीवनके संस्मरणोंसे अभी और छलाछल भरा हुआ है, जिन्हें लेखनीबद्ध करना कठिन है। अिन संस्मरणोंके जरिये बापूजीके पावन चरित्रके महज अेक छोटेसे अंगका ही स्पर्श हुआ है। अुनका चरित्र अितना महान और विशाल था कि मेरा यह प्रयास कुछ कुछ अुस हाथीकी बात जैसा सिद्ध होगा, जिसे अनेक अंधोंने स्पर्श द्वारा पहचान कर अनेक आकृतिवाला बताया था। अपने अपने कथनमें वे सब सच्चे थे, लेकिन पूर्ण सत्यसे बहुत दूर थे।

मैं नहीं जानता कि मेरा यह अल्प-सा प्रयास पाठकोंके लिअे कितना अुपयोगी सिद्ध होगा। परन्तु स्वयं अपने लिअे कहूं तो अिन पंक्तियोंको लिखते हुअे मुझे भगवन्-नाम-स्मरणके पावन प्रभावका सच्चा महत्त्व समझमें आया है। कहा जा सकता है कि अिस प्रयासमें मानसिक जप और ध्यानकी महिमाकी झांकी भी मुझे हुअी है। व्यास भगवानको श्रीमद्‌भागवत लिखकर जैसी शांतिका अनुभव हुआ था, वैसी ही शांतिका अनुभव मुझे बापूजीके अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंको लिखकर हुआ है। अिस प्रयत्नमें अपने आध्यात्मिक पिता बापूजीके बहुत बड़े ॠणसे यत्किंचित् अुॠण होनेका संतोष भी मेरी आत्माको हुआ है, जिनका हृदय रामके निवासके योग्य था, जो राममय थे। यह वस्तु अुनके जीवन और मृत्युसे सिद्ध हो चुकी है। बापूजीके जीवनका सार हमें अिन पंक्तियोंमें मिलता है:

> काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
> जिनके कपट दंभ नहीं माया। तिन्हके हृदय बसहु रघुराया॥
> सबके प्रिय सबके हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
> कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
> तुम्हहिं छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिनके मन माहीं॥
> जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव विष तें विष भारी॥

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेखी।।
जिन्हहि राम तुम प्रानपिआरे। तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे।।

अिन संस्मरणोंको लिखते समय जहां मुझे आध्यात्मिक आनंद और आध्यात्मिक खुराक मिली है, वहां मैं बापूजीके प्यार और ममताका स्मरण करके रोया भी खूब हूं। मुझे तो अैसा ही प्रतीत होता है कि:

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ।।
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहार शय्यासनभोजनेषु ।
अेकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ।।

ये सब अपराध मैंने बापूजीके साथके अपने व्यवहारमें अज्ञानवश किये थे। अिसके लिअे मेरा हृदय निरन्तर बापूसे क्षमा-याचना करता ही रहता है।

अधिक क्या कहूं? 'जड़ चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार। संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार।।' अिस नियमके अनुसार मेरे आत्मवत् पाठकवृन्द मेरे दोषोंकी तरफ ध्यान न देकर अिसमें से बापूजीके गुणरूपी दूधको ग्रहण करके संतोष मानेंगे। और मेरी त्रुटियोंके लिअे मुझे अुदारतापूर्वक क्षमा करेंगे।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी।

परिशिष्ट – १

मेरी अभिलाषा

बापूजीके जानेके बाद मैं असहाय-सा बन गया था। अन्दर ही अन्दर दुःखका कीड़ा घुनकी तरह दिलको खाता रहता था और कभी यह दुःख बाहर भी आता था तो साथी कहते थे कि अगर आप अिस प्रकारसे धीरज खोयेंगे तो हमसे क्या होगा। अिसलिअे भी मैं अपने मनको दबाकर रखता था। जब विनोबाजीने गोसेवाके निमित्तसे मुझे राजस्थान भेजनेकी बात निकाली, तो मैंने अपनी अनिच्छा तो बताअी, लेकिन जिस प्रकार मैं बापूजीके सामने अड़ जाता था, अुस प्रकार अड़नेकी हिम्मत मैं अब खो बैठा था। बापूजीके बाद आश्रमका मार्गदर्शन विनोबाजीको सौंपा गया था, अिसलिअे विनोबाजीकी बात टालना मुझे अुचित नहीं लगता था। अेक विचार और भी मेरे मनमें काम कर रहा था। जब बापूजीके सामने आश्रमवासियोंके बाहर जानेकी बात निकलती तब मैं अगर विरोध करता, तो लोगोंको लगता था कि हम लोग पंगु बन गये हैं और बापूजीके साथ चिपके रहना चाहते हैं। अिसलिअे भी अब बाहर जाकर अपने पैरोंको आजमा देखना मेरे लिअे जरूरी हो गया था। विनोबाजीके कहनेसे मैं राजस्थानमें आकर गोसेवाका काम तो करने लगा था, लेकिन मेरा मन तो आश्रममें ही था। क्योंकि आश्रमको मैंने अपना घर बना लिया था और बापूजीकी अिच्छा तो स्पष्ट ही थी कि अुनके बाद हम लोग आश्रम न छोड़ें। अैसी मन-स्थितिमें ता० २१-४-'५५ को अखबारमें पढ़ा कि सेवाग्राम आश्रम और बापूजीकी कुटी बंद करके आश्रमवासी भूदान-यज्ञमें भाग लेंगे; अिसलिअे दोनों बन्द कर दिये गअे हैं। अिस समाचारसे मुझे गहरी चोट लगी, लेकिन मन मसोसकर मैं चुप बैठा रहा। अिसके बाद सेवाग्रामसे मुझे भाअी प्रभाकरजीका पत्र मिला। साथमें विनोबाजीके दो पत्रोंकी नकल भी मिली। अुस परसे मैं समझा कि यह सब विनोबाजीकी प्रेरणासे हुआ है।

वे पत्र यहां दिये जाते हैं:

(१)

सेवाग्राम (वर्धा),
दिनांक १८–४–'५५

प्रिय भाओी बलवन्तसिंहजी,

नमस्कार।

साथ विनोबाजीके दो पत्रोंकी नकलें हैं। आज शामको ५–३० बजे सामूहिक कताओी और प्रार्थनाके बाद आश्रम और बापू-कुटी बन्द रहेगी। श्री चिमनलालभाओी, अनन्तरामजी, मुन्नालालजी दवाखानेमें रहेंगे। कंचनबहन फिलहाल बरहानपुर जा रही हैं।

विनोबाजी आजके प्रार्थना-प्रवचनमें आश्रम-आहुतिके बारेमें बोलेंगे। शायद अखबारोंमें वह आयेगा। १ मओीसे दो टुकड़ी निकलेंगी। भूदान-कार्य समाप्त होने तक टोलियां घूमती रहेंगी। विनोबाजीका आदेश आनेके बाद फिर टोलियां आश्रममें आवेंगी। लेकिन वह दिन कब आवेगा प्रभु जाने।

आप तो अच्छे होंगे। मैं १ मओीको दक्षिणके भागमें जा रहा हूं। फिर राम जाने।

आपका
प्रभाकर

(२)

पड़ाव, ताराबोओी,
अुत्कल पदयात्रा, १३–४–'५५

श्री चिमनलालभाओी,

भूदान-यज्ञ कार्यमें आश्रम होमनेकी कल्पना आप लोगोंको रुची, यह जानकर खुशी हुओी। दिनांक १८ को आश्रम खाली किया जाय। आप और अनंतरामजी फिलहाल दवाखानेमें जायं। अनन्तरामजी आपकी कुछ सेवा भी करेंगे।

बापू-कुटी बन्द करके कुंजी छगनलालभाओीके पास दी जाय। आगेकी व्यवस्था सर्व-सेवा-संघ सोचेगा। तब तक देखनेके लिओे आनेवाले कुटीको बाहरसे देखेंगे और भूदानके कार्यमें लगनेका आदेश

असुसे असुनको मिल जायगा। बाद सर्व-सेवा-संघसे परामर्श कर सोचा जायेगा।

हमारी तरफसे छगनलालभाअी थोड़े दिन कुंजी संभालनेकी जिम्मेवारी असुठा लेंगे अैसी मैं आशा करता हूं। बापूके सबसे पुराने साथी शायद आज वे ही हैं।

विनोबाके प्रणाम

(३)

पड़ाव, ताराबोअी,
१३-४-'५५

श्री छगनभाअी,

चिमनलालभाअीको लिखे पत्रकी नकल साथ है। अिस कदमका रहस्य आप तो समझ लेंगे। बापूने कअी बार अैसे प्रयोग किये हैं। आज यह आहुति अपरिहार्य हुअी है। कुंजी संभालनेका कार्य थोड़े दिनके लिअे आप असुठा लेंगे। बाद सर्व-सेवा-संघ देख लेगा।

विनोबाके प्रणाम

मैंने प्रभाकरजीको जो पत्र लिखा वह भी यहां देता हूं:

गोसेवा-आश्रम, सीकर,
दिनांक २२-४-'५५

प्रिय भाअी प्रभाकरजी,

आपके पत्रके साथ विनोबाजीके पत्रोंकी नकल भी मिली। यह समाचार मैंने अखबारमें पढ़ लिया था। यह जानकर मुझे तो धक्का-सा लगा है। मेरा मत आप लोगोंसे भिन्न है। मैं किसी भी कीमत पर आश्रमको बन्द करनेके पक्षमें नहीं हूं। आप लोगोंका कदम मुझे बिलकुल नहीं रुचता है। मनमें आया कि खुद आकर आश्रमको खोलूं। लेकिन यहांके कामको छोड़कर भागूं तो वही होगा जो आप लोग कर रहे हैं। सब कामोंसे अधिक मेरी ममता आश्रमसे है, लेकिन मेरे साथ विनोबाजीने और आप लोगोंने जो बरताव किया है असुससे मेरा मन खट्टा हो गया है।

श्री चिमनलालभाअी और अनन्तरामजी तो अपनी तबीयतको जैसे तैसे चला रहे थे। अुनके शरीरमें शक्ति तो है ही नहीं। आश्रमकी रक्षा करना ही अुनके जीवनका सर्वोत्तम अुपयोग था। लेकिन अुनको अैसा ही जंचा है तो क्या किया जावे? अिससे भूदानमें कितनी मदद मिलेगी यह तो अनुभव बतायेगा। हां, आप आंध्र जायें यह ठीक है। मुन्नालालजी भी बाहर निकल सकते थे। लेकिन आश्रम बन्द करना मेरी नम्र रायमें मैं भूल मानता हूं। आप लोगोंको आश्रम बन्द करनेका अधिकार है तो मुझे अपनी राय देनेका तो अधिकार है ही। भावनाके वेगको शान्त करके गंभीरतासे विचार करनेकी नम्र सूचना है।

आप लोगोंका पुराना साथी लेकिन आजका विरोधी,
बळवन्तसिंहके सबको प्रणाम

फिर अुनका कोअी जवाब नहीं मिला। मैं मन ही मन कुढ़ने और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। मनमें आता कि सेवाग्राम चलकर बापूजीकी कुटीको खोलकर वहीं बैठ जाअूं। लेकिन कुछ तो सीकरका काम और कुछ यह विचार मुझे रोकता था कि विनोबाजी और दूसरे आश्रम-वासियोंने जो किया है अुसके बीचमें मैं क्यों पड़ूं।

ता० २५–६–'५५ को हैदराबादमें गोसेवकोंकी सभा थी। मुझे अुसमें जाना था। वर्धा बीचमें पड़ता था। मेरे मनमें द्वंद्व चला कि वर्धा अुतरूं या नहीं? क्योंकि बापूजीकी कुटी और आश्रमको बन्द देखनेकी मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैंने आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाअीको पत्र लिखा कि मैं हैदराबाद जा रहा हूं। २४ तारीखको वर्धासे गुजरूंगा। लौटते समय अुतरनेका विचार तो नहीं है। अगर अुतरा तो सीधा आश्रममें ही आअूंगा। वहीं ठहरूंगा और वहीं खाअूंगा। मैं हैदराबादसे २८ जूनको लौट सका। श्री चिमनलालभाअीने अिस डरसे कि मैं कहीं सीधा ही न चला जाअूं मुझे गाड़ीसे अुतारनेके लिअे स्टेशन पर श्री कंचनबहनको भेजा। मैं अुतरा और सेवाग्राम गया। अुस समय चिमनलालभाअी और दूसरे आश्रमवासी कस्तूरबा दवाखानेमें रहते थे। मुझे वहीं पर अुतारनेकी सूचना थी, लेकिन मेरा निश्चय सीधा आश्रम जानेका था। अिसलिअे मैं

आश्रममें ही गया। आश्रमको खाली और बापूजीकी कुटीको बन्द देखकर मुझे तीव्र वेदना हुअी। मैंने हरिभाअूसे कुटीकी चाबी मांगी तो अुसने बताया कि चाबी चिमनलालभाअीके पास है। मैंने लानेको कहा और मैं बरामदेमें बैठकर प्रार्थना करने लगा। अितनेमें हरिभाअू चाबी ले आया और कुटी खोली। मैंने 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' भजन आरम्भ ही किया था कि मेरे धीरजका बांध टूट गया। मैं बापूजीके बैठनेकी जगह पर औंधा पछाड़ खाकर गिर पड़ा और जोरसे चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। अितनेमें चिमनलालभाअी दूसरे आश्रमवासियोंके साथ वहां आ गये। मेरे बुरे हाल देखकर सबकी आंखें गीली हो गअीं। चिमनलालभाअी मुझे अुठाने और धीरज बंधानेका प्रयत्न करने लगे तो मैंने अुनको सुनाया कि क्या हमें बापूजीने अिसलिअे पाला था कि हम अुनके बाद आश्रम और कुटीको बन्द करके चले जायं? रोना बन्द करना मेरे काबूसे बाहर हो गया था। मेरा मगज फटा जा रहा था। मुझे तो डर था ही, दूसरे साथियोंको भी डर हो गया था कि कहीं मेरे हृदयकी गति न रुक जाय। लेकिन अितने पुण्य नहीं थे अिसलिअे सिर पर पानी और भीगा कपड़ा रखने पर मैं कठिनाअीसे रोना रोक सका। बादमें सबने मिलकर प्रार्थना की।

मेरे जीवनमें अिस प्रकारका यह पहला आघात था। मैंने अनेक कुटुम्बीजनों और मित्रोंको खोया है। लेकिन मेरा धीरज कभी अितना टूटा हो और किसीके लिअे भी मैं अितना रोया होअूं अैसा याद नहीं आता। मैंने निश्चय किया कि आजसे कुटी खुली रहेगी। और आश्रममें दोनों समय प्रार्थना और सूत्रयज्ञ भी चलेगा। कोअी न आया तो मैं अकेला ही यह काम करूंगा। अितना निश्चय करनेके बाद मेरा दिल कुछ हलका हुआ। अिस निश्चयके अनुसार शामको आश्रमकी प्रार्थना-भूमि पर प्रतिदिन प्रार्थना होने और बापूकी कुटी खुली रहनेकी मैंने घोषणा कर दी। प्रार्थनामें गांवके ५०-६० व्यक्ति आये थे। अुन्हें अिससे बड़ी खुशी हुअी। लेकिन आश्रमके श्री अनन्तरामजी और मुन्नालालजी ही अुस दिन प्रार्थनामें शरीक हुअे। दूसरे दिन २९ तारीखको मगनवाड़ीमें सर्व-सेवा-संघकी कार्यकारिणीकी सभा थी और अुसमें कुटीके प्रश्न पर चर्चा होनेवाली थी। भाअी राधाकृष्णजी बजाजने आग्रहके साथ सूचना की कि मैं और चिमनलालभाअी सभामें आयें। मेरी अिच्छा तो नहीं थी, लेकिन अुनके आग्रहसे मैं गया। जब सभामें

कुटीका प्रसंग निकला तो मैंने कहा कि पहले थोड़ी बात मेरी सुन लीजिये, बादमें आगेका विचार करना ठीक होगा। लोगोंने मेरी बात सुनना कबूल किया। मैंने कहा कि कुटी तो मैंने कल खोल दी है। अुसकी तीन शर्तें भी रख दी हैं :

१. कुटी हर समय खुली रहेगी।
२. आश्रममें दोनों समय प्रार्थना चलेगी।
३. सूत्रयज्ञ नियमित रूपसे होगा।

अिस पर सब लोग चौंके। क्योंकि मेरा नाम राय देनेवालों या कुटीका निर्णय करनेवालोंकी अुनकी सूचीमें नहीं था। लेकिन संघके अध्यक्ष धीरेन्द्रभाअी मजूमदारने बड़ी खूबीसे काम लिया। वे बोले, "बस कुटी तो खुल ही गअी है। खुली जाहिर कर दो।" भाअी राधाकृष्णजीने कहा कि कल ३० तारीखसे खोलना ठीक होगा। धीरेन्द्रभाअीने कहा, "कलसे क्यों? आजसे क्यों नहीं?" वे चुप रहे। शंकरराव देवने कहा कि अभी तो बलवन्तसिंहजीके दो प्रश्न हल करने बाकी हैं। प्रार्थना और सूत्रयज्ञ कौन करेगा? अितनेमें आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी खड़े होकर बोले कि अिन दो बातोंकी जवाबदारी हम लेते हैं। सबके चेहरे खुशीसे खिल अुठे। मेरी खुशीका तो पार न रहा। आशाबहन और आर्यनायकम्‌जी अुसी समय सभासे अुठकर सेवाग्राम चले गये। अुन्होंने बापूजीकी कुटीको सजाया और शामको बड़ी ही प्रसन्नताके साथ सबने प्रार्थना की। सेवाग्रामके लोग भी खुश हो गअे, क्योंकि कुटी बन्द होनेका अुनको भी बड़ा दुःख था।

मेरी तीनों शर्तें स्वीकार हो जानेसे मेरी आत्माको काफी शांति मिली और सन्तोष हुआ। लेकिन मेरी हार्दिक अभिलाषा यही थी और है कि सारा आश्रम फिरसे खोल दिया जाय और बापूजीके कुछ योग्य साथी वहीं रहें, जो आश्रमकी मुलाकात लेनेवाले भाअी-बहनोंके सजीव सम्पर्कमें रहकर बापूजीके अुस पुण्य कार्यक्षेत्रकी रक्षा करते रहें। मेरी यह नम्र सूचना मैंने विनोबाजीके सामने आग्रहपूर्वक रखी है, लेकिन अभी तक अुन्होंने अुस पर गौर नहीं किया है। आज भी मैं बार-बार विनयपूर्वक अुनसे और सर्व-सेवा-संघसे यह विनय करता हूं कि वे मेरी सूचना पर गहरा विचार करें और सेवाग्राम आश्रमको खोल दें। बापूजीने जो प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया था, अुसमें लिखा था : "मेरे मरनेके बाद अपने मरने तक जो आश्रममें ही

रहें वे ही अिस पर सही करें।" मेरी नम्र रायमें तो अुसका यही अर्थ होता है कि बापूजीके मरनेके बाद भी आश्रम अुनके सहयोगियोंके जीवन-काल तक तो कमसे कम चलता रहे और भावी पीढ़ीको सच्चे आश्रम-जीवनकी और अुदात्त जनसेवाकी प्रेरणा देता रहे।

आज आश्रम और बापू-कुटीकी देखरेख तथा रक्षाका काम सर्व-सेवा-संघके हाथमें है। श्री अुका बाबाजी कुटीकी सेवा बड़ी ही श्रद्धा और तत्परतासे कर रहे हैं। हरिभाअू और नामदेव आश्रमकी साफ-सफाअीका काम अुसी श्रद्धासे कर रहे हैं। आश्रमकी खेती सहकारिताके आधार पर भाअी नामदेव राणे बड़ी लगनसे चला रहे हैं। भाअी अनन्तरामजी अपनी कमजोर तबीयत रहते हुअे भी कस्तूरबा दवाखानेसे जाकर अुनको कीमती सहायता देते रहते हैं। श्री चिमनलालभाअी अत्यन्त दुर्बल अवस्थामें भी आश्रमके मकान और खेती आदि सब चीजोंकी देखभाल बड़ी चिन्ताके साथ करते हैं और आश्रम-परिवारके जो लोग बाहर हैं अुनके साथ पत्रव्यवहार द्वारा सजीव संपर्क बनाये रखते हैं। आश्रमकी मुलाकात लेनेवालोंकी आव-भगतका भार भी अुन्हींके सिर पर है। वे सन् १९१७ से अन्त तक बापूजीके साथी रहे और अुनके अनन्य भक्त हैं।

भले अिसे कोअी ममत्व कहे, लेकिन मेरी ममता और श्रद्धा बापूकी अिस तपोभूमिके प्रति अपनी मांके जैसी ही है। सचमुच आज भी मुझे अुससे आश्वासन मिलता रहता है। मैं मानता हूं कि मेरे ही जैसी श्रद्धा और भक्ति देश-विदेशके अनेक श्रद्धालु जनोंकी भी अुस तपोभूमिके प्रति है और सदा बनी रहेगी।

१

बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना

प्रातःकालकी प्रार्थना

बौद्धमंत्र

नं म्यो हो रें गे क्यो।
नं म्यो हो रें गे क्यो।
नं म्यो हो रें गे क्यो॥

नित्यपाठ

हरिः ॐ।
ओशावास्यम् अिदम् सर्वम् यत् किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्मतत्त्वम्
सत्-चित्-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूत-संघः॥१॥
प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुस्
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अग्र्यम्॥२॥
प्रातर् नमामि तमसः परम् अर्कवर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम्।

यस्मिन् अिदम् जगद् अशेषम् अशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजंगम अिव प्रतिभासितं वै ।।३।।

समुद्रवसने ! देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले !
विष्णु-पत्नि ! नमस् तुभ्यम् पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।४।।

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डित-करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वंदिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।५।।

वक्रतुण्ड ! महाकाय ! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ !
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! शुभ-कार्येषु सर्वदा ।।६।।

गुरुर् ब्रह्मा, गुरुर् विष्णुर्, गुरुर् देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।७।।

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्वलोकैकनाथम् ।।८।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितम् अविहितं वा सर्वम् अेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे ! श्री महादेव ! शम्भो ! ।।९।।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःख-तप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम् ।।१०।।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।
गो-ब्राह्मणेभ्यः शुभम् अस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ।।११।।

नमस् ते सते ते जगत्कारणाय
नमस् ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।

नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१२॥
त्वम् अेकं शरण्यं त्वम् अेकं वरेण्यम्
त्वम् अेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वम् अेकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वम् अेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥१३॥
भयानां भयं, भीषणं भीषणानाम्
गतिः प्राणिनां, पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वम् अेकम्
परेषां परं, रक्षणं रक्षणानाम् ॥१४॥
वयं त्वां स्मरामो, वयं त्वां भजामो
वयं त्वां जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
सद् अेकं निधानं निरालंबम् अीशम्
भवाम्भोधि-पोतं शरण्यं व्रजामः ॥१५॥

अेकादश-व्रत

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह ।
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना ।
हीं अेकादश सेवावीं नम्रत्वें व्रतनिश्चयें ॥

क़ुरानसे प्रार्थना

अअूज़ु बिल्लाहि मिनश् शैत्वानिर् रजीम् ।
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम ।
अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन ।
अर् रहमानिर् रहीम, मालिकि यौमिद् दीन ।
अीयाक नअ़बुदु व अीयाक नस्तअ़ीन ।
अिह्दिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम ।
सिरातल् लज़ीन अन् अ़म्त अ़लैहिम;
ग़ैरिल् मगज़ूबे अ़लैहिम व लज़्ज़ुआल्लीन ॥
आमीन

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।
क़ुल हुवल्लाहु अहद्। अल्लाहुस्समद्।
लम् यलिद्, वलम् यूलद्;
व लम् यकुल्लहू कुफ़वन् अहद्॥

जरथोस्ती गाथा

(पारसी प्रार्थना)

मज़दा अत मोअि वहिश्ता
स्रवा ओस्वा श्योथनाचा वओचा।
ता—तू वहू मनंधहा
अशाचा अिषुदेम स्तुतो
क्षमा का श्रथ्रा अहूरा फेरषेम्
वस्ना हअि श्येम् दाओ अहूम्॥

[नोट: अिसके बाद भजन, धुन और साप्ताहिक **गीता-पारायण होता था।**]

सायंकालकी प्रार्थना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुत: स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवैर्
वेदै: सांगपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगा:।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम:॥

स्थितप्रज्ञ-लक्षणानि

अर्जुन अुवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधी: किं प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम्॥१॥

श्री भगवान् अुवाच

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्ट: स्थितप्रज्ञस् तदोच्यते॥२॥
दु:खेष्वनुद्विग्न-मना: सुखेषु विगतस्पृह:।
वीत-राग-भय-क्रोध: स्थितधीर् मुनिर् अुच्यते॥३॥

यः सर्वत्रानभिस्नेहस् तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।४।।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
अिन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।५।।
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।।६।।
यततो ह्यपि कौन्तेय! पुरुषस्य विपश्चितः ।
अिन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।।७।।
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। ८ ।।
ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस् तेषूपजायते ।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ।। ९ ।।
क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति-विभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।। १० ।।
राग-द्वेष-वियुक्तैस् तु विषयान् अिन्द्रियैश् चरन् ।
आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति ।। ११ ।।
प्रसादे सर्वदुःखानाम् हानिर् अस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ।। १२ ।।
नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिर् अशान्तस्य कुतः सुखम् ।। १३ ।।
अिन्द्रियाणां हि चरताम् यन् मनोऽनुविधीयते ।
तद् अस्य हरति प्रज्ञाम् वायुर् नावम् अिवाम्भसि ।।१४।।
तस्माद् यस्य महाबाहो! निगृहीतानि सर्वशः ।
अिन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।१५।।
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ।। १६ ।।

आपूर्यमाणम् अचल-प्रतिष्ठं
समुद्रम् आपः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिम् आप्नोति न कामकामी ।। १७ ।।

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश् चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम् अधिगच्छति ।। १८ ।।
अेषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वाऽस्याम् अन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणम् अृच्छति ।। १९ ।।

(श्रीभगवद्गीता, २ : ५४-७२)

[नोट : प्रार्थनाके अन्तमें भजन, धुन और रामायणका पाठ होता था।]

२

वर्तमानकालीन प्रार्थना

प्रातःकालकी अुपासना

नं म्यो हो रें गे क्यो ।
नं म्यो हो रें गे क्यो ।
नं म्यो हो रें गे क्यो ।।

अीशावास्य अुपनिषद्

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण हो रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१. हरिः ॐ अीशका आवास यह सारा जगत्
जीवन यहां जो कुछ अुसीसे व्याप्त है।
अतअेव करके त्याग अुसके नामसे
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धनकी किसीके भी न रख तू वासना।

२. करते हुअे ही कर्म अिस संसारमें
शत वर्षका जीवन हमारा अिष्ट हो।
तुझ देहधारीके लिअे पथ अेक यह
अतिरिक्त अिससे दूसरा पथ है नहीं।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्मसे,
अुससे चिपटती मात्र फलकी वासना।

३. मानी गयी है योनियां जो आसुरी
छाया हुआ जिनमें, तिमिर घनघोर है,
मुड़ते अुन्हींकी ओर मरकर वे मनुज
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञानके।

४. चलता नहीं, फिरता नहीं, है अेक ही,
वह आत्मतत्त्व सवेग मनसे भी अधिक,
अुसको कहीं भी देव धर पाते नहीं,
अुनको कभीका वह स्वयं ही है धरे।
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया।
वह 'है', तभी तो संचरित है प्राण यह,
जो कर रहा क्रीड़ा प्रकृतिकी गोदमें।

५. वह चल रहा है और वह चलता नहीं
वह दूर है, फिर भी निरंतर पास है।
भीतर सभीके बस रहा सर्वत्र ही
बाहर सभीके है तदपि वह सर्वदा।

६. जब जो निरन्तर देखता है, भूत सब
आत्मस्थ ही हैं, और आत्मा दीखता
सम्पूर्ण भूतोंमें जिसे, तब वह पुरुष
अूबा किसीके प्रति नहीं रहता कहीं।

७. ये सर्वभूत हुअे जिसे हैं आत्ममय,
अेकत्वका दर्शन निरन्तर जो करे,
तब अुस दशामें अुस सुधीजनके लिअे
कैसा कहां क्या मोह, कैसा शोक क्या?

८. सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सो
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता अुसे —
जो तेजसे परिपूर्ण है, अशरीर है
यों मुक्त है तनुके व्रणादिक दोषसे,
त्यों स्नायु आदिक देहगुणसे भी रहित —
जो शुद्ध है, वेधा नहीं अघने जिसे।
वह क्रान्तदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतन्त्र

सब अर्थ अुसके सध गये हैं ठीकसे
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन कालमें।

९. जो जन अविद्यामें निरन्तर मग्न हैं,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्धमें।
जो मनुज विद्यामें सदा रममाण हैं
वे और घन तमसान्धमें मानो धंसे।

१०. वह आत्मतत्त्व विभिन्न विद्यासे कथित
अेवं अविद्यासे कथित है भिन्न वह।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषोंसे सुना,
जिनसे हुआ अुस तत्त्वका दर्शन हमें।

११. विद्या-अविद्या — अिन अुभयके साथमें,
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञानको
अिसके सहारे तर अविद्यासे मरण
वे प्राप्त विद्यासे अमृत करते सदा।

१२. जो मनुज करते हैं निरोध अुपासना
वे डूब जाते हैं घने तमसान्धमें
जो जन सदैव विकासमें रममाण हैं
वे और घन तमसान्धमें मानो धंसे।

१३. वह आत्मतत्त्व विकाससे है भिन्न ही
कहते अुसे अेवं विभिन्न निरोधसे।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषोंसे सुना
जिनसे हुआ अुस तत्त्वका दर्शन हमें।

१४. ये जो विकास-निरोध, अिन दोके सहित
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञानको
अिसके सहारे मरण पैर निरोधसे
पाते सदैव विकासके द्वारा अमृत।

१५. मुख आवरित है सत्यका अुस पात्रसे
जो हेममय है, विश्व-पोषक हे प्रभो,
मुझ सत्यधर्माके लिअे वह आवरण
तू दूर कर, जिससे कि दर्शन कर सकूं।

१६. तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक अेक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा
पालन सभीका हो रहा तुझसे प्रजाकी भांति है।
निज पोषणादिक रश्मियां तू खोलकर मुझको दिखा
फिरसे दिखा अेकत्र त्यों ही जोड़ करके तू अुन्हें।
अब देखता हूं रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम
वह जो परात्पर पुरुष है, मैं हूं वही।

१७. यह प्राण अुस चेतन अमृतमय तत्त्वमें
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो।
ले नाम ओश्वरका अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, अुसका किया तू स्मरण कर।
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह अुसे।

१८. हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्त्व जो जगमें ग्रथित।
ले जा परम आनन्दमयकी ओर तू
अृजुमार्गसे हमको कुटिल अघसे बचा।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुझे।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुझे।

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सायंकालकी अुपासना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।

स्थितप्रज्ञके लक्षण

अर्जुनने कहा

१. स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता।

श्री भगवानने कहा

२. मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आपमें आप हो तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी।
३. दुःखमें जो अनुद्विग्न, सुखमें नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही।
४. जो शुभाशुभको पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
५. कूर्म ज्यों निज अंगोंको, अिन्द्रियोंको समेट ले —
सर्वशः विषयोंसे जो, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
६. भोग तो छूट जाते हैं निराहारी मनुष्यके
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है आत्म-लाभसे।
७. यत्नयुक्त सुधीकी भी अिन्द्रियां ये प्रमत्त जो
मनको हर लेती हैं, अपने बलसे हठात्।
८. अिन्हें संयमसे रोके, मुझीमें रत, युक्त हो,
अिन्द्रियां जिसने जीतीं, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
९. भोग-चिन्तन होनेसे होता अुत्पन्न संग है,
संगसे काम होता है, कामसे क्रोध भारत।
१०. क्रोधसे मोह होता है, मोहसे स्मृति-विभ्रम,
अुससे बुद्धिका नाश, बुद्धिनाश विनाश है।
११. राग-द्वेष-परित्यागी करे अिन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्तिसे पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।
१२. प्रसाद-युत होनेसे छूटते सब दुःख हैं,
होती प्रसन्नचेताकी बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।
१३. नहीं बुद्धि अयोगीके, भावना अुसमें कहां,
अभावन कहां शान्त, कैसे सुख अशान्तको।

१४. मन जो दौड़ता पीछे अिन्द्रियोंके विहारमें,
खींचता जनकी प्रज्ञा, जलमें नाव वायु ज्यों।

१५. अतअेव महाबाहो, अिन्द्रियोंको समेट ले—
सर्वथा विषयोंसे जो, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।

१६. निशा जो सर्वभूतोंकी, संयमी जागते वहां,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्त्वज्ञकी निशा।

१७. नदी-नदोंसे भरता हुआ भी,
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ,
त्यों काम जिसमें सारे समावें,
पाता वही शान्ति, न कामकामी।

१८. सर्व-काम-परित्यागी, विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शान्ति सो।

१९. ब्राह्मी स्थिति यही पार्थ, अिसे पाके न मोह है,
टिकती अन्तमें भी है, ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

नाम-माला

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोतम गुरु तू,
सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक, सविता पावक तू।
ब्रह्म मज़्द तू, यह्व शक्ति तू, अीशु-पिता प्रभु तू,
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू,
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय, आत्म-लिंग शिव तू।

अेकादश-व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रतनिष्ठासे ये अेकादश सेव्य हैं।